UYUNUL HIKAAYAAT, HISSA 2 (MUTARJAM)

सह़ाबए किराम, ताबेईन, तबए़ ताबेईन और औलियाए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم
की मुबारक ज़िन्दगियों के बा'ज़ गोशों की झलक पर मुश्तमिल एक नादिर तालीफ़

(मुतर्जम)

उ़यूनुल ह़िकायात

(ह़िस्सा दुवुम)

मुअल्लिफ़ :- इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी علیہ رحمۃ اللہ القوی
(अल मुतवफ़्फ़ा 597 हि.)

मुतर्जिमीन : मदनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

-: नाशिर :-

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी,

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكربيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساكر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने येह किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात हिस्सा 2 (मुतर्जम)**" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा **(हिन्दी–गुजराती)** ने इस किताब को हिन्द की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**TRANSLATION**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**TRANSLITERATION**) या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :–

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराहि़ल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :–
(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये **हिन्दी** के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** (**SPELLING**) रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है।
मषलन **उ़–लमा** (عُلَمَاء) में "**–ल**" मफ़्तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

﴿4﴾ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं भी ऐ़न साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴿5﴾ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और "رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ـْ	ु = ـُ	ि = ـِ	- = ـَ	ी = ئ	ु = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद,

सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

सह़ाबए किराम, ताबेईन, तबए़ ताबेईन और औलियाए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم
की मुबारक ज़िन्दगियों के बा'ज़ गोशों की झलक पर मुश्तमिल
एक नादिर तालीफ़

(मुतर्जम)

उ़यूनुल हि़कायात

(हि़स्सए दुवुम)

-: मुअल्लिफ़ :-

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللہِ الۡقَوِی

(अल मुतवफ़्फ़ा 597 हि.)

मुतर्जिमीन : मदनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

-: नाशिर :-

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-110006

फ़ोन : 011-23284560

E-mail : maktabadelhi@gmail.com

الصلوۃ والسلام علیک یا رسول اللہ　　وعلیٰ الک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : ऊ़यूनुल हिकायात (हिस्सा 2) (मुतर्जम)

मुअल्लिफ़ : इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

मुतर्जिमीन : मदनी ऊ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक, सि.1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6, फ़ोन : 011-23284560

क़ीमत : - - -

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 8, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सि. 1430 हि.　　ह़वाला : 156

الحمد للّٰہ رب العلمین و الصلوۃ و السلام علیٰ سید المرسلین وعلی الہ و اصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि अ़रबी किताब "ऊ़यूनुल हिकायात" के उर्दू तर्जमे "ऊ़यूनुल हिकायात (हिस्सा 2) (मुतर्जम)" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
04-02-2009

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of Dawateislami

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

"फ़ैज़ाने औलिया से ज़िन्दगी संवारो" के 23 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "23 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ یا'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:۵۹۴۲،ج۶،ص۱۸۵)

दो मदनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता । ﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा ।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा । (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) । (5) रिज़ाए इलाही عزوجل के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा । (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा । (8) क़ुरआनी आयात और (9)अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा । (10) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عزوجل और (11) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم और (12) जहां जहां किसी सह़ाबी या बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رضی اللہ تعالٰی عنہ या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ पढ़ूंगा । (13) इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले षवाब करूंगा । (14) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा । (15) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के)"याद दाश्त" वाले सफ़्ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा । (16) औलिया की सिफ़ात को अपनाऊंगा । (17) अपनी इस्लाह़ के लिये इस किताब के ज़रीए इ़ल्म ह़ासिल करूंगा । (18) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा । (19) इस ह़दीषे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी ।﴾موطاامام مالک، الحدیث:۱۷۳۱،ج۲،ص۴۰۷﴿ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा । (20) इस किताब के मुत़ालए़ का षवाब सारी उम्मत को ईषाल करूंगा । (21) अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करूंगा और हर मदनी (इस्लामी) माह की 10 तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा और (22) आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा । (23) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा ।

﴾नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता ।﴿

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हु़स्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही़ कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये !

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ अपने रिसाले **"गुलदस्तए अ़त्तारिय्या"** के सफ़्ह़ा **7** पर किसी दाना का क़ौल नक़्ल करते हैं : قَصَصُ الْاَوَّلِیْنَ مَوَاعِظُ الْاٰخِرِیْنَ या'नी अगलों के क़िस्से पिछलों (या'नी बा'द वालों) के लिये नसीह़त होते हैं।"

ज़ेरे नज़र किताब **"उ़यूनुल ह़िकायात"** छटी सिने हिजरी के अ़ज़ीम मुह़द्दिष व मुबल्लिग़, **इमाम अबुल फ़रज जमालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी** علیہ رحمۃ اللہ القوی की तालीफ़ है। जिस में जगह ब जगह बुज़ुर्गाने दीन رحمہم اللہ تعالٰی के ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा, इ़बादत व रियाज़त, ज़ोहदो वरअ़, शर्मो ह़या, सख़ावत व शुजाअ़त, शौक़े शहादत, सब्र व इस्तिक़ामत, बाहमी शफ़्क़त व मह़ब्बत, अदब व ता'ज़ीम, और जज़्बए एह़याए दीन पर मुश्तमिल वाक़िआ़त व ह़िकायात अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रही हैं और अपने पढ़ने वाले को अ़मल की भरपूर दा'वत दे रही हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मुबारक किताब के "ह़िस्सए अव्वल" का तर्जमा बनाम **"उ़यूनुल ह़िकायात** (मुतर्जम)" शव्वालुल मुकर्रम **1428** हि. ब मुत़ाबिक़ अक्तूबर **2007** ई. को **"दा'वते इस्लामी"** की ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की जिसे उ़-लमाए अहले सुन्नत کَثَّرَھُمُ اللہ تعالٰی मुबल्लिग़ीन और आ़म इस्लामी भाइयों ने ख़ूब सराहा, ख़ुद भी पढ़ा और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी मुत़ालआ़ करने की भरपूर तरग़ीब दी। और अब **रब्बे रह़ीम** عَزَّوَجَلَّ और उस के **मह़बूबे करीम** صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رحمہم اللہ تعالٰی की इ़नायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دامت برکاتہم العالیہ की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं के नतीजे में इस किताब का "ह़िस्सए दुवुम" पेशे ख़िदमत है।

तर्जमे के लिये दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या बैरूत का नुस्ख़ा (मत़बूआ़ 1424 हि./2003 ई.) इस्ति'माल किया गया है और तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ुसूसी ख़याल रखा गया है :

★......कोशिश की गई है कि पढ़ने वालों तक वोही कैफ़िय्यत मुन्तक़िल की जाए जो अस्ल किताब में जल्वे लुटा रही है।

★......इस सिलसिले में बा'ज़ मक़ामात पर तम्हीदी जुम्लों का इज़ाफ़ा किया गया है। यूं इस किताब की ह़ैषिय्यत मह़ज़ तह़्तुल लफ़्ज़ तर्जमे की नहीं, बल्कि तर्जुमानी की है।

★......ह़िकायात व वाक़िआ़त की अस्ल ज़मीन बर क़रार रखी गई है।

★.....अ़रबी उ़न्वानात को सामने रखते हुवे मुस्तक़िल उर्दू उ़न्वानात क़ाइम किये गए हैं।

★......इस के इ़लावा (मफ़्हूमे ह़िकायत को मद्दे नज़र रखते हुवे) कई ह़िकायात के बा'द हिलालैन (.....) में तरग़ीबात का इज़ाफ़ा भी किया गया है।

★......हर हि़कायत को अ़लाहि़दा एक मुस्तक़िल नाम दिया गया है

★......अकषर हि़कायात के आखि़र में मुनक़्क़श ब्रेकेट ﴿....﴾ के अन्दर **दुआ़इय्या कलिमात** ज़िक्र किये गए हैं।

★......हि़कायात के नम्बर अ़रबी मतन के ए'तिबार से नहीं बल्कि तर्जमे की तरतीब के मुत़ाबिक़ दिये गए हैं।

★......आयाते मुक़द्दसा का तर्जमा मुजद्दिदे आ'ज़म, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से दर्ज किया गया है।

★......अह़ादीषे मुबारका की तख़्रीज अस्ल माख़ज़ से करने की कोशिश की गई है।

★......जहां हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर या इस्मे गिरामी आया है, वहां **प्यारे प्यारे अल्क़ाबात** लगाए गए हैं।

★......सह़ाबए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम के नामों के साथ "**ह़ज़रते सय्यिदुना**" के अल्फ़ाज़ और दुआ़ईया कलिमात का एहतिमाम किया गया है।

★......तर्जमे में ह़त्तल इम्कान आसान और आ़म फ़हम अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गये हैं। और कई अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगा दिये गए हैं।

★......मौक़अ़ की मुनासबत से **इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **और आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, आफ़्ताबे क़ादिरिय्यत, माहताबे रज़विय्यत, बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **और दीगर उ़-लमाए अहले सुन्नत** دامت فیوضھم العالیہ के अश्आ़र लिखे गए हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को दिन पच्चीस्वीं रात छब्बीस्वीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

__दा'वते इस्लामी__ के सुन्नतों की तरबिय्यत के __मदनी क़ाफ़िलों__ में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए __मदनी इन्आ़मात__ का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से __पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने__ और __ईमान की ह़िफ़ाज़त__ के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा नम्बर	उ़नवान	सफ़्हा नम्बर
हिकायत नम्बर 204 : मोह़ताजी का ख़ौफ़	14	हिकायत नम्बर 223 : नेक लोगों की नज़र में ओ़हदे की हैषिय्यत	36
हिकायत नम्बर 205 : बेटे की मौत की तमन्ना	14	हिकायत नम्बर 224 : ह़क़ फ़ैसले पर क़ाइम रहने का सिला	38
हिकायत नम्बर 206 : जवानी हो तो ऐसी !	15	हिकायत नम्बर 225 : मेरा दिल उसे क़ुबूल नहीं करता	41
हिकायत नम्बर 207 : दोस्ती का तक़ाज़ा	16	हिकायत नम्बर 226 : लश्करे इस्लाम का अ़ज़ीम मुजाहिद	41
हिकायत नम्बर 208 : ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तौबा	17	हिकायत नम्बर 227 : बा ह़या नौजवान	42
हिकायत नम्बर 209 : पुर असरार शख़्स	18	हिकायत नम्बर 228 : ईषार की अनोखी मिषाल	45
हिकायत नम्बर 210 : वलिय्युल्लाह की चादर पर आग अषर न कर सकी	19	हिकायत नम्बर 229 : मुसीबत ज़दों का मस्कन	45
हिकायत नम्बर 211 : बुज़ुर्गों की निगाह में ओ़हदए क़ज़ा की हैषिय्यत	20	हिकायत नम्बर 230 : अनोखी सज़ा	46
हिकायत नम्बर 212 : दरयाए रह़मते इलाही का जोश	21	हिकायत नम्बर 231 : बा करामत नौजवान बुज़ुर्ग	47
हिकायत नम्बर 213 : मुह़द्दिष और वली की मुलाक़ात	24	हिकायत नम्बर 232 : सख़्त गर्मी में नफ़्ली रोज़े रखने वाला आ'राबी	49
हिकायत नम्बर 214 : मुराक़बे की बरकत	25	हिकायत नम्बर 233 : नसीह़त आमोज़ कलाम	50
हिकायत नम्बर 215 : नसीह़त भरा जवाब	26	हिकायत नम्बर 234 : मालो दौलत का बेहतरीन इस्ति'माल	51
हिकायत नम्बर 216 : एक लुक़्मा सदक़ा करने की बरकत	26	हिकायत नम्बर 235 : एक आ़रिफ़ा की मा'रिफ़त भरी गुफ़्तगू	53
हिकायत नम्बर 217 : वा'दा निभाने की अनोखी मिषाल	27	हिकायत नम्बर 236 : बा अ़मल मुरीदनी का बेटा डूब कर भी बच गया	54
हिकायत नम्बर 218 : जन्नती मह़ल की ज़मानत	29	हिकायत नम्बर 237 : सत्ताइस साल मुसलसल जिहाद करने वाला	55
हिकायत नम्बर 219 : लाख दिरहम के बदले जन्नती मह़ल	30	हिकायत नम्बर 238 : जज़्बए शहादत	57
हिकायत नम्बर 220 : कमसिन बच्चों में भी औलियाउल्लाह होते हैं	33	हिकायत नम्बर 239 : समझदार व पारसा औ़रत	58
हिकायत नम्बर 221 : मुर्शिद पर मुरीद का ह़ाल पोशीदा नहीं होता	34	हिकायत नम्बर 240 : मर्दे क़लन्दर की ईमान अफ़्रोज़ तक़रीर	58
हिकायत नम्बर 222 : अच्छे अश्आ़र बख़्शिश का ज़रीआ़ बन गए	35	हिकायत नम्बर 241 : फ़सीहो बलीग़ कलाम करने वाला मुतवक्किल अज़्दहा	60

हिकायत नम्बर 242 : बा करामत नौजवान	62	हिकायत नम्बर 263 : तैरती हुई हन्डया	83
हिकायत नम्बर 243 : ना'रए तक्बीर की बरकत	63	हिकायत नम्बर 264 : मातहूतों की ज़बरदस्त ख़ैरख़्वाही	84
हिकायत नम्बर 244 : ख़ूब सूरत दुल्हा और बद सूरत दुल्हन	64	हिकायत नम्बर 265 : उस्ताज़ हो तो ऐसा.....!	85
हिकायत नम्बर 245 : उख़रवी हिसाब का ख़ौफ़	65	हिकायत नम्बर 266 : उड़ता हुवा दस्तर ख़्वान	86
हिकायत नम्बर 246 : एक तवज्जोह से सारे बरतन भर गए	66	हिकायत नम्बर 267 : ज़िक्रे इलाही की बरकत	87
हिकायत नम्बर 247 : सालेह मुर्री عَلَيْهِ الرَّحْمَة की ख़लीफ़ा महदी को नसीहत	66	हिकायत नम्बर 268 : अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़	88
हिकायत नम्बर 248 : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की निशानियां	67	हिकायत नम्बर 269 : मामून की ज़हानत	90
हिकायत नम्बर 249 : काश ! तेरी मां मुझे न जनती	68	हिकायत नम्बर 270 : एक इबादत गुज़ार ख़ादिमा	90
हिकायत नम्बर 250 : अमीरे क़ाफ़िला हो तो ऐसा......!	69	हिकायत नम्बर 271 : दर्से ज़ोहद व तवक्कुल	91
हिकायत नम्बर 251 : हक़ फ़ैसले की ज़बरदस्त मिषाल	70	हिकायत नम्बर 272 : बेटे का क़ातिल आज़ाद कर दिया	93
हिकायत नम्बर 252 : समन्दर पर नमाज़ पढ़ने वाला आ़रिफ़	73	हिकायत नम्बर 273 : बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत	94
हिकायत नम्बर 253 : इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ الرَّحْمَة का सफ़रे मदीना	74	हिकायत नम्बर 274 : आस्मानी ज़न्जीर	95
हिकायत नम्बर 254 : हज़रते अबू ज़र्र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का विसाले बा कमाल	75	हिकायत नम्बर 275 : फ़ुक़रा के तीन कामयाब तृबक़े	96
हिकायत नम्बर 255 : ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से आंख निकाल दी	77	हिकायत नम्बर 276 : अनोखा मुसाफ़िर	97
हिकायत नम्बर 256 : शाने औलिया	78	हिकायत नम्बर 277 : इन्साफ़ पसन्द चीफ़ जस्टीस	98
हिकायत नम्बर 257 : कफ़न की वापसी	78	हिकायत नम्बर 278 : क़ाज़ी अबू हाज़िम عَلَيْهِ الرَّحْمَة का अ़दलो इन्साफ़	99
हिकायत नम्बर 258 : वक़्त के क़द्रदां	79	हिकायत नम्बर 279 : अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी	101
हिकायत नम्बर 259 : दो अ़ज़ीम बुज़ुर्ग	80	हिकायत नम्बर 280 : शाही माल का वबाल	102
हिकायत नम्बर 260 : अचानक दीवार शक़ हो गई	80	हिकायत नम्बर 281 : क़नाअ़त पसन्द सूफ़ी	104
हिकायत नम्बर 261 : ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब	81	हिकायत नम्बर 282 : शैतान मेरा ख़ादिम है	105
हिकायत नम्बर 262 : मक्कए मुअ़ज़्ज़मा की शान	82	हिकायत नम्बर 283 : एक कनीज़ का आ़रिफ़ाना कलाम	106

हिकायत नम्बर 284 : इमाम कुसाई की इल्मी महारत	107	हिकायत नम्बर 305 : जा ! हम ने तुझे बख़्श दिया	134
हिकायत नम्बर 285 : कुरआन सुन कर रूह निकल गई	109	हिकायत नम्बर 306 : दीन के लिये बेहतरीन सहारा	135
हिकायत नम्बर 286 : अज़ीम बाप की अज़ीम बेटियां	111	हिकायत नम्बर 307 : इस्मे आ'ज़म के मुतमन्नी का इम्तिहान	136
हिकायत नम्बर 287 : हक़ पर क़ाइम रहने का इन्आम	113	हिकायत नम्बर 308 : दो अज़ीम मुहद्दिष	138
हिकायत नम्बर 288 : सारा घराना मुसलमान हो गया	113	हिकायत नम्बर 309 : जान की कुरबानी देने वाली मोमिना	139
हिकायत नम्बर 289 : नसीहत आमोज़ बातें	114	हिकायत नम्बर 310 : कफ़न चोर का इन्किशाफ़	143
हिकायत नम्बर 290 : मामूनुर्रशीद का अ़दलो इन्साफ़	115	हिकायत नम्बर 311 : दो बुज़ुर्ग और दो परन्दे	144
हिकायत नम्बर 291 : हम खुद को खिलाते तो येह मछली न निकलती	116	हिकायत नम्बर 312 : बद बख़्त हुक्मरान	145
हिकायत नम्बर 292 : बद अख़्लाक़ी पर भी हुस्ने सुलूक	117	हिकायत नम्बर 313 : इब्ने मुबारक عَلَيْهِ الرَّحْمَة और सियाह फ़ाम गुलाम	147
हिकायत नम्बर 293 : ख़ौफ़े खुदा से खजूरें क़बूल न कीं	120	हिकायत नम्बर 314 : गुलामिये सादात की बरकात	151
हिकायत नम्बर 294 : अन्डे और रोटी खाने की ख़्वाहिश	121	हिकायत नम्बर 315 : शरीर जिन्न	155
हिकायत नम्बर 295 : ग़ैबी आवाज़	122	हिकायत नम्बर 316 : नहर की सदाएं	156
हिकायत नम्बर 296 : ग़ैरत मन्द शोहर	123	हिकायत नम्बर 317 : हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मजज़ूम عَلَيْهِ الرَّحْمَة	158
हिकायत नम्बर 297 : मग़्फ़िरत का सबब	124	हिकायत नम्बर 318 : नाफ़रमान बेटे का इब्रत नाक अन्जाम	160
हिकायत नम्बर 298 : हज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की बरकत	125	हिकायत नम्बर 319 : अक़्ल मन्द शहज़ादा	162
हिकायत नम्बर 299 : مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ कहने पर इन्आम	127	हिकायत नम्बर 320 : अह़कामाते इलाही को पामाल करने का अन्जाम	165
हिकायत नम्बर 300 : मुफ़्लिसी व तंगदस्ती दूर करने का वज़ीफ़ा	129	हिकायत नम्बर 321 : हज़रते बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की हमशीरा	168
हिकायत नम्बर 301 : दुआ़ की बरकत	130	हिकायत नम्बर 322 : तक़्वा हो तो ऐसा हो......!	169
हिकायत नम्बर 302 : इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ الرَّحْمَة की निगाहे बसीरत	131	हिकायत नम्बर 323 : हज़रते इसा बिन ज़ाज़ान عَلَيْهِ الرَّحْمَة की बख़्शिश	170
हिकायत नम्बर 303 : खुश बख़्तों का हिस्सा	133	हिकायत नम्बर 324 : गाए पर टेक्स	171
हिकायत नम्बर 304 : आरिज़ी ऐशो इशरत	134	हिकायत नम्बर 325 : बुढ़े मुजाहिद की दुआ़	173

हिकायत नम्बर 326 : आ़लिमे रब्बानी	174	हिकायत नम्बर 347 : बा बरकत इजतिमाअ़ के सदके़ मग़्फ़िरत	201
हिकायत नम्बर 327 : साबिरा ख़ातून	179	हिकायत नम्बर 348 : शैख़ैने करीमैन के गुस्ताख़ का इब्रतनाक अन्जाम	204
हिकायत नम्बर 328 : दर्से सब्रो शुक्र	180	हिकायत नम्बर 349 : तीन इ़बादत गुज़ार इस्राईली	206
हिकायत नम्बर 329 : हाए ! मैं तो नमाज़ पढ़ता था	181	हिकायत नम्बर 350 : तिलावत हो तो ऐसी हो....!	207
हिकायत नम्बर 330 : रह़मते इलाही की बरसात	182	हिकायत नम्बर 351 : चांदी के बदले सोना	209
हिकायत नम्बर 331 : बादशाहों की खोपड़ियां	183	हिकायत नम्बर 352 : इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ الرَّحْمَة का जज़्बए ख़ैर ख़्वाही	210
हिकायत नम्बर 332 : मुर्दा बोल उठा	185	हिकायत नम्बर 353 : पुर असरार बुज़ुर्ग	212
हिकायत नम्बर 333 : सई़द व शक़ी की पहचान का अनोखा का त़रीक़ा	186	हिकायत नम्बर 354 : जुरअत मन्द ह़ाजी	215
हिकायत नम्बर 334 : पेशाब के छींटों से न बचने का वबाल	187	हिकायत नम्बर 355 : ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا की सख़ावत	217
हिकायत नम्बर 335 : उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة का तक़्वा	188	हिकायत नम्बर 356 : ख़च्चर कैसे ज़िन्दा हुवा....?	219
हिकायत नम्बर 336 : ह़याते बरज़ख़ी	189	हिकायत नम्बर 357 : ख़ूंख़्वार रूमी	219
हिकायत नम्बर 337 : वीरान मह़ल	190	हिकायत नम्बर 358 : दुआ़ की तासीर	220
हिकायत नम्बर 338 : हाए ! मेरा दिल कहां है .....?	191	हिकायत नम्बर 359 : बुख़्ल का भयानक अन्जाम	221
हिकायत नम्बर 339 : अचानक क़ब्र खुल गई	193	हिकायत नम्बर 360 : आदमी ख़रगोश कैसे बना....?	222
हिकायत नम्बर 340 : सादात की दस्तगीरी पर इन्आ़म	194	हिकायत नम्बर 361 : जब बुलाया आक़ा ने ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए	223
हिकायत नम्बर 341 : बीमारी बुलन्दिये दरजात का सबब	196	हिकायत नम्बर 362 : सब से ख़ूब सूरत ह़ूर	226
हिकायत नम्बर 342 : दुआ़ क़बूल न होने का सबब	196	हिकायत नम्बर 363 : अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ की जां निसारी	228
हिकायत नम्बर 343 : सदके़ की रोटी ने अज़्दहे से बचा लिया	197	हिकायत नम्बर 364 : एक मुजाहिद की दुआ़ए शहादत	229
हिकायत नम्बर 344 : मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मेहमान	198	हिकायत नम्बर 365 : ख़ुशियों का घर	230
हिकायत नम्बर 345 : इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ الرَّحْمَة की चादर	199	हिकायत नम्बर 366 : नफ़्स परस्ती का इब्रतनाक अन्जाम	231
हिकायत नम्बर 346 : इमामे वक़्त के दीदार की तड़प	200	हिकायत नम्बर 367 : पुर असरार क़त्ल	233

हिकायत नम्बर 368 : चांदी का लिबास	234	हिकायत नम्बर 389 : खन्डरात का मकीन	255
हिकायत नम्बर 369 : ह़ज़रते बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَة और नौजवान आ़बिद	235	हिकायत नम्बर 390 : सियाह फ़ाम ख़ादिमा की नसीह़त भरी गुफ़्तगू	256
हिकायत नम्बर 370 : ओ़हदए क़ज़ा को ठुकराने वाला मर्दे क़लन्दर	236	हिकायत नम्बर 391 : मुर्दा बोल उठा.....!	257
हिकायत नम्बर 371 : अजनबी मुसाफ़िरों की ज़बरदस्त ख़ैर ख़्वाही	237	हिकायत नम्बर 392 : अहले एलया पर ग़ज़बे जब्बार	258
हिकायत नम्बर 372 : मेज़बान हो तो ऐसा ....!	238	हिकायत नम्बर 393 : सुलैमान तमीमी عَلَيْهِ الرَّحْمَة का दिल नशीन कलाम	259
हिकायत नम्बर 373 : अ़रबी गुलाम की सख़ावत	240	हिकायत नम्बर 394 : कफ़न चोर की तौबा	260
हिकायत नम्बर 374 : ह़ातिम त़ाई की सख़ावत	240	हिकायत नम्बर 395 : कनीज़ का इल्मी मक़ाम	261
हिकायत नम्बर 375 : ह़ज़रते दावूद त़ाई عَلَيْهِ الرَّحْمَة की बे नियाज़ी	242	हिकायत नम्बर 396 : मह़ब्बत का लिबास	262
हिकायत नम्बर 376 : बा हिम्मत क़ाज़ी	242	हिकायत नम्बर 397 : अहले सुन्नत पर करमे खुदावन्दी की बरसात	263
हिकायत नम्बर 377 : ह़सद का इलाज	243	हिकायत नम्बर 398 : पूरी सल्त़नत की क़ीमत पानी का एक गिलास	264
हिकायत नम्बर 378 : शहादत है मत़लूब व मक़्सूदे मोमिन	244	हिकायत नम्बर 399 : उम्मते मुह़म्मदिय्या के पांच त़बक़े	266
हिकायत नम्बर 379 : जन्नती का जनाज़ा	245	हिकायत नम्बर 400 : ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ الرَّحْمَة और मह़ब्बते इलाही	267
हिकायत नम्बर 380 : लकड़ियां सोना कैसे बनीं .....?	246	हिकायत नम्बर 401 : शैत़ान को कमज़ोर करने वाले लोग	267
हिकायत नम्बर 381 : जुरअत मन्द इमाम	247	हिकायत नम्बर 402 : हिक्मत व दानाई की बातें	268
हिकायत नम्बर 382 : मुतबर्रक तरबूज़	248	हिकायत नम्बर 403 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम बिशर हाफ़ी के नाम	269
हिकायत नम्बर 383 : शाफ़ी लुआ़बे दहन	249	हिकायत नम्बर 404 : जन्नते अ़दन की बादशाहत	270
हिकायत नम्बर 384 : ग़ैबी कुंवें का क़ैदी	250	हिकायत नम्बर 405 : अमीर की सख़ावत	271
हिकायत नम्बर 385 : माल जम्अ़ करना तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं	251	हिकायत नम्बर 406 : सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुश्किल कुशाई फ़रमाई	272
हिकायत नम्बर 386 : सोने का मह़ल	252	हिकायत नम्बर 407 : आ़रिफ़ीन की शान	276
हिकायत नम्बर 387 : एक वलिय्या का आ़रिफ़ाना कलाम	253	हिकायत नम्बर 408 : इबादत की लज़्ज़त जाती रही	277
हिकायत नम्बर 388 : दर्दे दिल की दवा	254	हिकायत नम्बर 409 : एक बदवी की इल्तिजाएं	278

हिकायत नम्बर 410 : इस्राईली आ़बिद और शैत़ान का जाल	279	हिकायत नम्बर 431 : मैं सदके़ या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	308
हिकायत नम्बर 411 : बच्चों की फ़रयाद और बुढ़े का तवक्कुल	280	हिकायत नम्बर 432 : फ़िक्रे आख़िरत	309
हिकायत नम्बर 412 : अनमोल ग़ैबी पियाला	281	हिकायत नम्बर 433 : उड़ने वाला तख़्त	311
हिकायत नम्बर 413 : क़ीमती ख़ज़ाना	282	हिकायत नम्बर 434 : मुजाहिदीन के लिये अ़ज़ीम इन्आ़म	311
हिकायत नम्बर 414 : ह़क़ीक़ी इ़ज़्ज़त और ह़क़ीक़ी बादशाहत	282	हिकायत नम्बर 435 : ग़ीबत के अस्बाब	313
हिकायत नम्बर 415 : क़ाज़ी सरीक की जुरअत व बहादुरी	283	हिकायत नम्बर 436 : ख़ौफ़े ख़ुदा की आ'ला मिषाल	315
हिकायत नम्बर 416 : मददगार अज़्दहा	285	हिकायत नम्बर 437 : ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की वसिय्यतें	318
हिकायत नम्बर 417 : मोमिन की नसीह़त	286	हिकायत नम्बर 438 : सब से बड़ी बद बख़्ती	323
हिकायत नम्बर 418 : ह़ज़रते सय्यिदुना सव्वार और नाबीना नौजवान	287	हिकायत नम्बर 439 : षरीद का प्याला	324
हिकायत नम्बर 419 : पाक दामन मलिका	289	हिकायत नम्बर 440 : दानिशमन्द आ'राबी	325
हिकायत नम्बर 420 : आईने जवां मर्दी, ह़क़ गोई व बेबाकी	294	हिकायत नम्बर 441 : वली की वली को नसीह़त	326
हिकायत नम्बर 421 : शद्दाद की जन्नत	295	हिकायत नम्बर 442 : अल्लाह वालों की बातें	328
हिकायत नम्बर 422 : अनोखी रस्सियां	300	हिकायत नम्बर 443 : ख़ाइफ़ नौजवान की अनोखी मौत	330
हिकायत नम्बर 423 : बादशाह दुरवेश कैसे बना.....?	300	हिकायत नम्बर 444 : एह़सान फ़रामोश	331
हिकायत नम्बर 424 : अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की आख़िरी वसिय्यत	302	हिकायत नम्बर 445 : जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रखे उसे कौन चखे	332
हिकायत नम्बर 425 : जुलक़रनैन عَلَيْهِ الرَّحْمَة और दाना शख़्स	304	हिकायत नम्बर 446 : आग से बचने का बेहतरीन त़रीक़ा	333
हिकायत नम्बर 426 : सब से अ़क़्लमन्द शहज़ादा	304	हिकायत नम्बर 447 : सदक़ा व ख़ैरात से बलाएं टलती हैं	334
हिकायत नम्बर 427 : अधूरा कफ़न	305	हिकायत नम्बर 448 : दोस्त को खाना खिलाने की बरकत	335
हिकायत नम्बर 428 : बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िरी का ख़ौफ़	306	हिकायत नम्बर 449 : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ عنہ की सादगी	336
हिकायत नम्बर 429 : बा ह़या ख़ातून	307	हिकायत नम्बर 450 : लोगों को गुमराह करने की सज़ा	337
हिकायत नम्बर 430 : रह़मते ह़क़ बहाना ढूंडती है	308	हिकायत नम्बर 451 : फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ عنہ का ख़ौफ़े आख़िरत	338

www.dawateislami.net

हिकायत नम्बर 452 : मीज़ाने अ़मल में रोटी का वज़्न	339	हिकायत नम्बर 473 : बा बरकत गुलाम	365
हिकायत नम्बर 453 : शैत़ान के तीन हथयार	341	हिकायत नम्बर 474 : ह़ज़रते फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ عنہ का तक़्वा	367
हिकायत नम्बर 454 : एक इस्राईली आ़बिद की शहादत	342	हिकायत नम्बर 475 : कुत्ते ने मालिक की जान कैसे बचाई ?	368
हिकायत नम्बर 455 : मर्हूम वालिदैन पर अवलाद के आ'माल की पेशी	343	हिकायत नम्बर 476 : जां निषार कुत्ते की क़ब्र	369
हिकायत नम्बर 456 : गुलाम को आज़ादी कैसे मिली....?	344	हिकायत नम्बर 477 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ : हर जगह रिज़्क़ देता है	370
हिकायत नम्बर 457 : अनोखा मुबल्लिग़	345	हिकायत नम्बर 478 : बेवफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार	371
हिकायत नम्बर 458 : जन्नती हूर और मदनी नौजवान	346	हिकायत नम्बर 479 : फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ عنہ का इन्साफ़	372
हिकायत नम्बर 459 : तीन ग़ैबी ख़बरें	347	हिकायत नम्बर 480 : शाहे ईरान का लिबास	373
हिकायत नम्बर 460 : बादशाह की तौबा	348	हिकायत नम्बर 481 : ख़लीफ़ा को नेकी की दा'वत	374
हिकायत नम्बर 461 : सांप नुमा जिन्न	350	हिकायत नम्बर 482 : मग़रूर बादशाह की मौत	375
हिकायत नम्बर 462 : एह़सान मन्द सांप	351	हिकायत नम्बर 483 : रिआ़या की ख़बरगीरी का अनोखा वाक़िआ़	377
हिकायत नम्बर 463 : परन्दे के ज़रीए रिज़्क़	353	हिकायत नम्बर 484 : एक मज़्लूम की ह़िक्मत भरी बातें	379
हिकायत नम्बर 464 : सात बा बरकत कलिमात	353	हिकायत नम्बर 485 : मुक़र्रबीन की आ़जिज़ी	380
हिकायत नम्बर 465 : ह़कीम का काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं होता	354	हिकायत नम्बर 486 : मौत की याद	380
हिकायत नम्बर 466 : मुर्दों को ज़िन्दों के नेक आ'माल का फ़ाइदा	355	हिकायत नम्बर 487 : कनीज़ की मह़ब्बत में हाथ जला डाला	381
हिकायत नम्बर 467 : अंगूरों का बाग़	356	हिकायत नम्बर 488 : अनोखी क़नाअ़त	382
हिकायत नम्बर 468 : तीन क़ब्रों का अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़	357	हिकायत नम्बर 489 : मिल्लते इब्राहीमी का पैरूकार	384
हिकायत नम्बर 469 : नुमैर की शहादत	361	हिकायत नम्बर 490 : बा इख़्तियार दरज़ी और ज़ालिम अफ़्सर	385
हिकायत नम्बर 470 : ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ौफ़े आख़िरत	362	हिकायत नम्बर 491 : ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह की ह़िक्मते अ़मली	389
हिकायत नम्बर 471 : ह़ज़रते ह़ातिमे असम عَلَيْهِ الرَّحْمَة की नमाज़	363	हिकायत नम्बर 492 : बस ! अब मैं जवाब का मुन्तज़िर हूं	390
हिकायत नम्बर 472 : दर्दभरी ह़क़ीक़त	364	हिकायत नम्बर 493 : मुख़्लिस बन्दे	391

हिकायत नम्बर 494 : एक हाजत मन्द और अमीर शख़्स	392	बनावटी राहिब की हलाकत	404
हिकायत नम्बर 495 : हुकूमत के त़लबगारों को नसीहतें	393	नाबीने की ख़्वाहिश	406
सोने का अन्डा देने वाला सांप	396	और वोह ग़र्क़ हो गया	406
तीन मज़दूरों का क़िस्सा	398	सफ़रे आख़िरत का तौशा तय्यार करो.....!	407
कश्ती बनाने वाला कैसे हलाक हुवा.....?	400	माख़ज़ो मराजेअ़	409
मछलियों का शिकारी	402	याददाश्त सफ़्हा बराए मुत़ालआ़	410
यहूदी और नसरानी की हलाकत	402	याददाश्त सफ़्हा बराए मुत़ालआ़	411

सुब्ह़ो शाम का इन्तिज़ार न करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : "दुन्या में एक **अजनबी** और **मुसाफ़िर** बन कर रहो।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब तू **शाम** करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर, और जब **सुब्ह़** करे तो **शाम** का मुन्तज़िर न रह और **ह़ालते सिह़्ह़त** में **बीमारी** के लिये और **ज़िन्दगी** में **मौत** के लिये तय्यारी कर ले।" (صحیح البخاری،الحدیث:٦٤١٦،ص٥٣٩)

उ़ज़्र क़बूल न होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स का उ़ज़्र क़बूल नहीं फ़रमाएगा जिस की मौत को मुअख़्ख़र कर दिया ह़त्ता कि उसे साठ साल तक पहुंचा दिया।" (मत़लब येह कि वोह इस उ़म्र में भी गुनाहों से बाज़ न आया) (صحیح البخاری،الحدیث:٦٤١٩،ص٥٣٩)

हि़कायत नम्बर : 204

मोह़ताजी का ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम बिन जबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इतने शदीद बीमार हुवे कि क़रीबुल मर्ग हो गए। मैं उन के पास गया तो फ़रमाया : "ऐ अबू क़ासिम ! मैं और मेरी बेटी एक अम्रे अ़ज़ीम में मुब्तला हैं।" फिर अपनी साह़िबज़ादी से फ़रमाया : "बेटी ! येह तुम्हारे चचा हैं इन के पास जाओ और गुफ़्तगू करो।"

उस ने चेहरे पर नक़ाब डाला और मेरे क़रीब आ कर कहा : "ऐ मेरे चचा ! हम बहुत बड़ी मुसीबत में मुब्तला हैं, अ़र्सए दराज़ से हम ख़ुश्क रोटी के टुकड़े और नमक खा कर गुज़ारा कर रहे हैं। कल ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह की त़रफ़ से मेरे वालिदे मोह़तरम को एक हज़ार दीनार और एक क़ीमती मोती भेजा गया लेकिन इन्हों ने क़बूल करने से इन्कार कर दिया। फ़ुलां फ़ुलां ने तह़ाइफ़ वग़ैरा भिजवाए लेकिन इन्हों ने वोह भी क़बूल न किये।" अपनी बेटी की येह बात सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुस्कुरा कर इस की त़रफ़ देखा और फ़रमाया : "ऐ मेरी बेटी ! क्या तुम्हें मोह़ताजी का ख़ौफ़ है ?" कहा : "हां।" फ़रमाया : "मेरे पास अपने हाथ से लिखे हुवे बारह हज़ार अ़रबी मख़्त़ूते हैं। मेरे मरने के बा'द रोज़ाना एक वरक़, एक दिरहम के बदले बेच दिया करना। मेरी बेटी ! अब बताओ कि जिस के पास इतनी क़ीमती अश्या मौजूद हों क्या वोह मोह़ताज हो सकता है ? ऐसा शख़्स हरगिज़ मुफ़्लिस व मोह़ताज नहीं, लिहाज़ा तुम मुफ़्लिसी व मोह़ताजी से बे ख़ौफ़ हो जाओ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हि़कायत नम्बर : 205

बेटे की मौत की तमन्ना

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ख़लफ़ वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का ग्यारह साला इकलौता बेटा ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, दीनी मसाइल से वाक़िफ़ बहुत ही फ़रमां बरदार और ज़हीन था। अचानक उस का इन्तिक़ाल हो गया। मैं ने ता'ज़िय्यत की तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं तो ख़ुद उस की मौत का मुतमन्नी (या'नी तमन्ना करने वाला) था।' मैं ने कहा : "आप साह़िबे इ़ल्म हो कर भी अपने फ़रमां बरदार और ज़हीन बेटे के बारे में ऐसी बातें कर रहे हैं ! ह़ालांकि वोह तो क़ुरआनो ह़दीष और फ़िक़्ह का जानने वाला था।"

फ़रमाया : "मैं ने ख़्वाब देखा कि क़ियामत बरपा हो गई। और मैदाने मह़शर में गर्मी अपनी इन्तिहा को पहुंच चुकी थी। छोटे छोटे बच्चे अपने हाथों में पियाले लिये, बढ़ बढ़ कर लोगों को पानी पिला रहे हैं। मैं ने एक बच्चे से कहा : "बेटा ! मुझे भी पानी पिलाओ।" बच्चे ने मेरी त़रफ़ देख कर कहा : "तुम मेरे वालिद नहीं हो (मैं तुम्हें पानी नहीं पिला सकता)।" मैं ने पूछा :

"तुम कौन हो ?" कहा : "हमारा इन्तिक़ाल छोटी उ़म्र में हो गया था और हम अपने वालिदैन को दुन्या में छोड़ कर यहां आ गए। अब उन के इन्तिज़ार में हैं कि वोह कब हमारे पास आते हैं ?" जब वोह आते हैं तो हर बच्चा अपने वालिदैन को पानी पिलाता है।" ख़्वाब बयान करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ह़रबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने फ़रमाया : "मैं इसी लिये अपने बेटे की मौत का मुतमन्नी था।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 206 जवानी हो तो ऐसी !

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मुहल्लब عليه رحمة الله الرّب फ़रमाते हैं : "दौराने सफ़र मैं एक वीरान जंगल से गुज़रा तो एक लड़के को नमाज़ में मश्ग़ूल पाया। जब उस ने नमाज़ मुकम्मल कर ली तो मैं ने कहा : "इस वीरान जंगल में तुम्हारा कोई मूनिस व ग़मख़्वार भी है ?" कहा : "क्यूं नहीं ! बिल्कुल है।" मैं ने कहा : "कहां है ?" कहा : "मेरे दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे, आगे पीछे हर त़रफ़।"

मैं समझ गया कि येह लड़का अहले मा'रिफ़त में से है। मैं ने कहा : "क्या तुम्हारे पास ज़ादे राह भी है ?" कहा : "क्यूं नहीं।" मैं ने कहा : "तुम्हारा ज़ादे राह क्या है ?" कहा : "इख़्लास, तौह़ीद, हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत का इक़रार, ईमाने सादिक़, और पुख़्ता तवक्कुल मेरा ज़ादे राह है।" मैं ने कहा : "मेरे बेटे ! क्या तुम मेरे साथ रहना पसन्द करोगे ?" कहा : "जब किसी को कोई रफ़ीक़ मिल जाए तो वोह उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल कर देता है और मैं किसी भी ऐसे शख़्स की रफ़ाक़त नहीं चाहता जिस की वजह से लम्ह़ा भर के लिये भी अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल हो कर इ़बादत की उस लज़्ज़त से मह़रूम हो जाऊं जिसे मैं अब मह़सूस कर रहा हूं।" मैं ने कहा : "इस ख़त़रनाक वीरान जंगल में अकेले रहते हुवे तुम्हें वह़शत नहीं होती ?" कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की दौलत ऐसी दौलत है कि उस ने मुझ से हर वह़शत दूर कर दी है। और अब येह ह़ाल है कि दरिन्दों के दरमियान भी ख़ौफ़ व वह़शत मह़सूस नहीं होती।" मैं ने कहा : "तुम खाते कहां से हो ?" कहा : जिस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मां के पेट की तारीकियों में रिज़्क़ दिया, वोही परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अब भी मुझे रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है।"

मैं ने पूछा : "तुम्हारे खाने का इन्तिज़ाम कब और किस त़रह़ होता है ?" कहा : "मुझे मुक़र्ररा वक़्त पर खाना मिल जाता है चाहे मैं कहीं भी होऊं, मेरा रिज़्क़ मुझ तक ज़रूर पहुंचता है, मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि मुझे किस वक़्त किस चीज़ की ह़ाजत है। वोह पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे ह़ालात से बे ख़बर नहीं, वोह हर जगह मेरा मुह़ाफ़िज़ व वाली है।" मैं ने कहा : "तुम्हारी

कोई हाजत है जिसे मैं पूरा करूं ?" कहा : "हां एक हाजत है और वोह येह कि अगर दोबारा मुझे देखो तो मुझ से गुफ़्तगू न करना और न ही मेरे बारे में किसी को बताना।" मैं ने कहा : "जैसे तुम्हारी मरज़ी, इस के इलावा कोई और हाजत हो तो बताओ ?" कहा : हां ! अगर हो सके तो दुआओं में याद रखना, जब भी ग़मगीन व परेशान हो कर दुआ करो तो मेरे लिये भी दुआ ज़रूर करना।"

मैं ने कहा : "मेरे बेटे ! मैं तुम्हारे लिये किस तरह दुआ करूं जब कि तुम मुझ से अफ़्ज़ल हो क्यूंकि ख़ौफ़े ख़ुदा और तवक्कुल तुम में मुझ से बहुत ज़ियादा है।" कहा : "इस तरह न कहिये, क्यूंकि आप उम्र में मुझ से बड़े हैं, आप को दौलते ईमान मुझ से पहले नसीब हुई, आप की नमाज़ें और रोज़े मुझ से ज़ियादा होंगे।" मैं ने कहा : "मुझे भी तुम से काम है।" उस ने कहा : "बताइये ! क्या काम है ?" मैं ने कहा : "मेरे लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ करो।" उस ने येह दुआ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को हर लम्हा गुनाहों से महफ़ूज़ रखे, ऐसा ग़म अता फ़रमाए जिस में उस की रिज़ा पोशीदा हो। और इस के इलावा कोई और ग़म न हो।" मैं ने कहा : "ऐ मेरे लख़्ते जिगर ! अब दोबारा मुलाक़ात कब होगी ? मैं तुझे कहां तलाश करूं ?" कहा : "दुन्या में मुझ से मुलाक़ात की उम्मीद न रखना, और आख़िरत में मुझ से मिलना चाहो तो हर उस काम से बचना जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ फ़रमाया है। और किसी भी ऐसे काम में उस की नाफ़रमानी न करना जिस का उस ने हुक्म दिया। आख़िरत मुत्तक़ीन के जम्अ होने की जगह है। अगर वहां मुझ से मिलना चाहो तो उन लोगों में तलाश करना, जो दीदारे इलाही कर रहे हों मैं आप को उन्हीं लोगों में मिलूंगा।"

मैं ने कहा : "तुम्हें कैसे मा'लूम है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हें येह मर्तबा मिलेगा ?" कहा : "इस लिये कि मैं उस की हराम कर्दा अश्या से बुग़्ज़ रखता हूं, हर गुनाह और हर उस काम से बचता हूं जिस से बचने का उस ने हुक्म दिया है। और मैं ने अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से येह दुआ की है कि मुझे जन्नत में अपने दीदार की दौलते ला ज़वाल अता फ़रमाए।" इतना कहने के बा'द उस लड़के ने चीख़ मार कर एक तरफ़ दौड़ लगा दी और नज़रों से ओझल हो गया।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}*

हिकायत नम्बर : 207

दोस्ती का तक़ाज़ा

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन दावूद عليه رحمة الله الودود फ़रमाते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र फ़ूती और हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आदमी رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْهِمَا को येह फ़रमाते हुवे सुना :

"हम दोनों, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर एक दूसरे से मह़ब्बत करते थे। एक मरतबा हम उ़रूसुल बलाद (बग़दाद शरीफ़) से कूफ़ा की जानिब रवाना हुवे। रास्ते में एक जगह दो ख़ूं ख़्वार दरिन्दे बैठे हुवे थे।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने अबू अ़म्र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से कहा : ऐ अबू अ़म्र ! मैं उ़म्र में तुम से बड़ा हूं, तुम मेरे पीछे चलो मैं आगे चलता हूं ताकि अगर येह ख़ूं ख़्वार दरिन्दे ह़म्ला करें तो मैं इन की ज़द में आ जाऊं और तुम बच जाओ।" हज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : "अगर मैं ने ऐसा किया तो मेरा ज़मीर मुझे कभी मुआ़फ़ नहीं करेगा। मैं हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकता। आओ हम दोनों एक साथ चलते हैं अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई ह़ादिषा पेश आया तो हम दोनों को ही आएगा।" चुनान्चे, हम चले और दरिन्दों के दरमियान से गुज़र गए। ह़म्ला तो कुजा उन्हों ने ह़रकत तक न की।"

इब्ने जहज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "दोस्ती का येही तक़ाज़ा है।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 208 हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب की तौबा

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ह़शरम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "मुझे हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب के एक पड़ोसी ने बताया कि : "तौबा से क़ब्ल हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب इतने बड़े और ख़त़रनाक डाकू थे कि पूरे पूरे क़ाफ़िले को अकेले ही लूट लेते। एक मरतबा एक क़ाफ़िला आप के अ़लाक़े के क़रीब से गुज़रा, उन्हें वहीं रात हो गई। आप डाका डालने की निय्यत से जब क़ाफ़िले के क़रीब पहुंचे तो बा'ज़ क़ाफ़िले वालों को येह कहते हुवे सुना : "तुम इस बस्ती की त़रफ़ न जाओ बल्कि कोई और रास्ता इख़्तियार कर लो यहां फ़ुज़ैल नामी एक ख़त़रनाक डाकू रहता है।"

जब क़ाफ़िले वालों की येह आवाज़ सुनी तो आप पर कपकपी त़ारी हो गई और बुलन्द आवाज़ से कहा : "ऐ लोगो ! मैं फ़ुज़ैल बिन इयाज़ तुम्हारे सामने मौजूद हूं, जाओ ! बे ख़ौफ़ो ख़त़र गुज़र जाओ, तुम मुझ से मह़फ़ूज़ हो। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम आज के बा'द मैं कभी भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।" इतना कह कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वहां से चले गए और अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के राहे ह़क़ के मुसाफ़िरों में शामिल हो गए।

एक क़ौल येह है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस रात क़ाफ़िले वालों की दा'वत की और फ़रमाया : "तुम फ़ुज़ैल बिन इयाज़ से अपने आप को मह़फ़ूज़ समझो, फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उन

के जानवरों के लिये चारा वग़ैरा लेने चले गए जब वापस आए तो किसी को कुरआने पाक की येह आयते मुबारका तिलावत करते हुवे सुना :

اَلَمۡ یَاۡنِ لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ تَخۡشَعَ قُلُوۡبُهُمۡ لِذِکۡرِ اللّٰهِ (پ۲۷،الحدید:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद के लिये।

कुरआने करीम की येह आयत ताषीर का तीर बन कर आप के सीने में उतर गई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ कर दी और अपने कपड़ों पर मिट्टी डालते हुवे कहा : "हां ! क्यूं नहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब वक़्त आ गया, अब वक़्त आ गया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इसी त़रह़ रोते रहे और फिर अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हि़कायत नम्बर : 209 पुर असरार शख़्स

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं ने उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मश्हूर वली हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى को येह फ़रमाते हुवे सुना : मेरे उस्ताज़ हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने फ़रमाया : "सर्दियों के दिन थे, मैं मस्जिद के दरवाज़े के क़रीब बैठा हुवा था कि मेरे क़रीब से एक शख़्स गुज़रा जिस ने दो गुदड़ियां ओढ़ रखीं थीं। मेरे दिल में येह बात आई कि शायद येह उन में से है जो भीक मांगते हैं। क्या ही अच्छा होता अगर येह अपने हाथ से कमा कर खाता ? जब मैं सोया तो ख़्वाब में देखा कि मेरे पास दो फ़िरिश्ते आए, मुझे बाज़ू से पकड़ा और उसी मस्जिद में ले गए। मैं ने देखा कि क़रीब ही एक शख़्स दो गुदड़ियां ओढ़े सो रहा है। जब उस के चेहरे से गुदड़ी हटाई गई तो मैं ह़ैरान रह गया कि येह वोही शख़्स है जो मेरे क़रीब से गुज़रा था। फ़िरिश्तों ने मुझ से कहा : "इस का गोश्त खाओ।" मैं ने कहा : मैं ने तो इस की ग़ीबत नहीं की।" कहा : "क्यूं नहीं ! तेरे नफ़्स ने इस की ग़ीबत की और तू ने इस को ह़क़ीर जाना और इस से नाख़ुश हुवा।"

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : "फिर मेरी आंख खुल गई ख़ौफ़ की वजह से मुझ पर लर्ज़ा त़ारी हो गया। मैं मुसलसल तीस (30) दिन उसी मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा रहा, सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ के लिये वहां से उठता। मैं दुआ़ करता कि दोबारा वोह शख़्स मुझे नज़र आ जाए ताकि उस से मुआ़फ़ी मांगूं। एक माह बा'द वोह पुर असरार शख़्स इस ह़ाल में नज़र आया कि उस के जिस्म पर पहले की त़रह़ दो गुदड़ियां थीं। मैं फ़ौरन उस की त़रफ़ लपका, मुझे देख कर वोह तेज़ तेज़ चलने लगा, मैं भी उस के पीछे हो लिया।

जब मुझे मह़सूस हुवा कि शायद मैं उस के क़रीब न पहुंच सकूंगा और येह मुझ से दूर चला जाएगा तो मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मैं तुझ से कुछ बात करना चाहता हूं।" उस ने कहा : "ऐ इब्राहीम ! क्या तुम भी उन लोगों में से हो जो दिल के ज़रीए़ मोअमिनीन की ग़ीबत करते हैं ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : "उस की बात सुन कर मैं बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब इफ़ाक़ा हुवा तो वोह शख़्स मेरे सिरहाने खड़ा था।" उस ने कहा : "क्या दोबारा ऐसा करोगे ?" मैं ने कहा : "नहीं, अब कभी भी ऐसा नहीं करूंगा।" फिर वोह पुर अस्रार शख़्स मेरी नज़रों से ओझल हो गया और दोबारा कभी नज़र न आया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 210 वलिय्युल्लाह की चादर पर आग असर न कर सकी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं एक यहूदी का मक़रूज़ था वोह क़र्ज़ वुसूल करने मेरे पास आया और कहा : "मुझे कोई ऐसी करामत दिखाओ जिस से मैं इस्लाम की अ़ज़मत जान जाऊं और मुझ पर येह बात ज़ाहिर हो जाए कि दीने इस्लाम, यहूदियों के दीन से बेहतर है। अगर तुम कोई करामत दिखा दो तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा।" मैं ने कहा : "क्या तुम वाक़ेई मुसलमान हो जाओगे ?" उस ने कहा : "हां।" उसे दीने इस्लाम की त़रफ़ राग़िब होता देख कर मैं ने उस की चादर, अपनी चादर में लपेटी और ईंटों के भट्टे में डाल दी। फिर मैं खुद भट्टे में दाख़िल हुवा और जलती हुई आग से चादरें निकाल लाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा एक बाल भी न जला। जब मैं ने उस यहूदी के सामने अपनी चादर खोली तो वोह बिल्कुल सह़ीह़ व सालिम थी और यहूदी की चादर अन्दर होने के बा वुजूद जल कर राख हो गई थी। इस्लाम की येह ह़क़्क़ानिय्यत देख कर वोह यहूदी कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया।"

येह ह़िकायत ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी सग़ीर علیہ رحمۃ اللہ الکبیر के मुतअ़ल्लिक़ है। एक बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर علیہ رحمۃ اللہ الکبیر भी थे जिन का ज़िक्र पिछली ह़िकायत में गुज़रा येह दोनों अपने दौर के ज़बरदस्त वली और साह़िबे करामत बुज़ुर्ग थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 211 बुज़ुर्गों की निगाह में ओ़हदए क़ज़ा की हैसि़य्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा और ह़म्माद बिन जै़द رَحْمَةُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِما से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ गन्दुम की तिजारत किया करते थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाया करते : "अगर पांच बुज़ुर्ग न होते तो मैं तिजारत न करता।" पूछा गया कि वोह पांच बुज़ुर्ग कौन से हैं जिन की ख़ातिर आप तिजारत करते हैं ?" फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना, ह़ज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सम्माक, और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़लय्या (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ तिजारत की ग़रज़ से ख़ुरासान की त़रफ़ जाते, जो नफ़्अ़ ह़ासिल होता उस से अहलो इ़याल का ख़र्चा और ह़ज के लिये ज़ादे राह वग़ैरा निकाल कर बक़िय्या सारी रक़म इन पांच दोस्तों की त़रफ़ भिजवा देते। एक साल आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को ख़बर मिली कि इब्ने उ़लय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने ओ़हदए क़ज़ा क़बूल कर लिया है। इस इत्तिलाअ़ के बा'द आप न तो इब्ने उ़लय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ से मिलने गए और न ही उन्हें रक़म भिजवाई। जब इब्ने उ़लय्या को ख़बर मिली कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ हमारे शहर में आए हुवे हैं तो फ़ौरन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने न तो उन की त़रफ़ देखा न ही कलाम फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़लय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ वापस चले गए, और दूसरे दिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को एक रुक़्आ़ लिखा जिस की इ़बारत कुछ इस त़रह़ थी :

"بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को हमेशा अपनी इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में रखे और सआ़दत मन्दी अ़त़ा फ़रमाए, मैं तो आप के एह़सान और सिलए रह़्मी का कब से मुन्तज़िर था, कल मैं आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा लेकिन आप ने मुझ से कलाम तक न फ़रमाया। मैं मह़सूस कर रहा हूं कि शायद आप मुझ से ख़फ़ा हैं। मैं आप की इ़नायतों से मह़रूम हो रहा हूं। ख़ुदारा ! मुझे बताइये कि मेरी कौन सी बात आप को नापसन्द है ताकि मैं अपनी इस्लाह़ करूं और आप से मुआ़फ़ी मांगूं।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को इब्ने उ़लय्या का रुक़्आ़ मिला तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने जवाबन चन्द अश्आ़र लिख कर भेजे। जिन का तर्जमा येह है :

"بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ऐ दीन को बाज़ बना कर मसाकीन का माल शिकार करने वाले ! तू ने फ़ानी दुन्या और इस की लज़्ज़तों को ऐसे ह़ीले के ज़रीए़ अपने लिये जाइज़ क़रार दिया जिस की वजह से दीन चला गया। तू तो बे वक़ूफ़ों का इ़लाज करने वाला था लेकिन अब ख़ुद मजनून हो गया। कहां गईं तेरी वोह रिवायतों की लड़ियां जो इब्ने औ़न और इब्ने सीरीन के बारे में थीं ? कहां हैं तेरी वोह रिवायातें और बातें जो सलात़ीने दुन्या के दरवाज़ों को छोड़ने के बारे में थीं ? अगर तू येह कहे कि मुझे तो मजबूरन क़ाज़ी बनाया गया है तो येह **बात़िल** है।"

इब्ने उ़लय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह रुक़्आ़ मिला तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मजलिसे क़ज़ा से उठ कर हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد के पास आए और कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मेरे बुढ़ापे पर रह़्म फ़रमाएं, अब मैं ओ़हदए क़ज़ा की ज़िम्मेदारी नहीं निभा सकता, बराए करम मुझ से येह ज़िम्मेदारी वापस ले लें ।" ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد ने कहा : "शायद उस दीवाने (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने तुझे इस बात पर उभारा है और तेरे दिल में खलबली मचा दी है ।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन्हों ने मुझे बचा लिया, उन्हों ने मुझे बचा लिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को भी हर मुसीबत से नजात अ़त़ा फ़रमाए । आप मुझे इस ओ़हदे से बर त़रफ़ कर दें ।" चुनान्चे, ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इस्ति'फ़ा क़बूल कर लिया । जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इस वाक़िए का इ़ल्म हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इब्ने उ़लय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को वोह रक़म भिजवा दी जो हर साल भिजवाया करते थे, इब्ने उ़लय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम इस्माईल बिन इब्राहीम बिन असदी था, आप बसरा के रहने वाले थे ।

एक रिवायत येह है कि शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह नख़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मश्वरा त़लब किया कि क्या मैं क़ज़ा का ओ़हदा क़बूल कर लूं ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सख़्ती से मन्अ़ फ़रमा दिया, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन के पास से वापस चले गए तो इन्हों ने क़ाज़ी का ओ़हदा क़बूल कर लिया और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़त़ लिखा कि मुझे जबरदस्ती क़ाज़ी बनाया गया है, शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह नख़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह ख़त़ पढ़ कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मज़्कूरा अश्आ़र लिख कर भेजे ।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 212 दरयाए रह़मते इलाही का जोश

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन इब्राहीम फ़ेहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के मुबारक ज़माने में एक नौजवान गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था । इसी बद मस्ती के आ़लम में इसे सख़्त बीमारी लाह़िक़ हो गई और मिर्गी के दोरे पड़ने लगे । जब कमज़ोरी ह़द से बढ़ने लगी तो इन्तिहाई रन्जो ग़म के आ़लम में बहुत ही ख़फ़ीफ़ आवाज़ के साथ अपने रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ इल्तिजा की :

"ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा, मुझे इस बीमारी से छुटकारा अ़त़ा फ़रमा । ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ अब मैं कभी भी गुनाह न करूंगा ।"

इस की दुआ़ क़बूल हुई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दी। लेकिन सिह़्ह़तयाबी के बा'द वोह दोबारा गुनाहों में मुनहमिक हो गया। और पहले से ज़ियादा नाफ़रमानी करने लगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दोबारा उस पर बीमारी मुसल्लत़ फ़रमा दी। वोह फिर गिड़ गिड़ाने लगा और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा। "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस मरतबा मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमा दे अब दोबारा कोई गुनाह न करूंगा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे फिर तन्दुरुस्ती अ़ता फ़रमा दी। लेकिन उस की आंखों पर फिर ग़फ़्लत का पर्दा पड़ गया और गुनाहों की त़रफ़ माइल हो कर पहले से भी और ज़ियादा नाफ़रमान हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे फिर बीमारी में मुब्तला कर दिया। इस मरतबा मरज़ बहुत शदीद था। उस ने बड़ी नक़ाहत भरी ग़मगीन आवाज़ में ख़ुदाए रह़मानो रह़ीम को पुकारा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों को बख़्श दे, मुझ पर रह़्म फ़रमा और मुझे बीमारी से शिफ़ा अ़ता फ़रमा। मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मैं फिर कभी तेरी नाफ़रमानी न करूंगा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने करम किया और फिर सिह़्ह़त अ़ता फ़रमा दी। तन्दुरुस्त होते ही वोह फिर गुनाहों में मुब्तला हुवा और बहुत ज़ियादा नाफ़रमान हो गया। एक मरतबा अचानक उस की मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी, अय्यूब सख़्तियानी, मालिक बिन दीनार और सालेह़ मुर्री (رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) से हुई। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने उस नौजवान को गुनाहों में मुन्हमिक देखा तो फ़रमाया। "ऐ नौजवान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस त़रह़ डर गोया कि तू उसे देख रहा है। अगर तू उसे नहीं देख सकता, तो येह मत भूल कि वोह तुझे देख रहा है !"

येह सुन कर उस नौजवान ने कहा : "ऐ अबू सईद ! मुझ से दूर रहिये, बेशक मैं तो मुसीबत व आफ़त में हूं और दुन्या को ख़ूब ज़ाहिर करना चाहता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने रुफ़क़ा की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक इस नौजवान की मौत क़रीब है। मौत के वक़्त इसे बहुत परेशानी होगी। नज़्अ़ की सख़्तियां इसे बहुत तंग करेंगी।" इस वाक़िए के कुछ ही दिन बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى रुफ़क़ा के साथ बैठे हुवे थे कि उस गुनाहगार नौजवान का भाई आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ऐ अबू सईद ! मैं उसी नौजवान का भाई हूं जिसे आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने नसीह़त फ़रमाई थी। मेरे भाई पर मौत के साए गहरे होते जा रहे हैं, उस पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी है और बड़ी मुसीबत में मुब्तला है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया : "आओ ! चल कर देखते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाता है ?" चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه अपने साथियों के हमराह उस के घर पहुंचे। दरवाज़े पर दस्तक दी तो उस की बुढ़ी मां ने पूछा : "कौन है ?" फ़रमाया : "ह़सन।" आप رَحْمَةُ اللهِ تعَالٰی عَلَيْه की आवाज़ सुन कर बुढ़ी मां ने कहा : "ऐ अबू सईद ! आप जैसे नेक शख़्स को क्या चीज़ मेरे बेटे के पास खींच लाई ह़ालांकि येह तो हमेशा गुनाहों का मुर्तकिब रहा और ह़राम कामों में पड़ा रहा ?" फ़रमाया : "मोह़तरमा ! आप हमें अपने बेटे के पास आने की इजाज़त दें, बेशक हमारा पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ गुनाहों को बख़्शने वाला और ख़त़ाओं को मिटाने वाला है।"

बुढ़ी मां ने अपने बेटे को बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى दरवाज़े पर खड़े हैं वोह अन्दर आना चाहते हैं। कहा : "ऐ मेरी प्यारी मां ! ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى या तो मेरी इ़यादत करने आए हैं या फिर ज़ज्रो तौबीख़ करने। बहर ह़ाल आप दरवाज़ा खोल दें।" जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अन्दर तशरीफ़ लाए तो देखा कि नौजवान नज़्अ़ की सख़्तियों में मुब्तला है। उस पर नाउम्मीदी व रन्जो अलम के साए गहरे होते जा रहे हैं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी त़लब कर ! बेशक वोह रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे गुनाहों को बख़्श देगा।" नौजवान ने कहा : ऐ अबू सई़द ! अब वोह मेरे गुनाहों को नहीं बख़्शेगा।" फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! क्या तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये बुख़्ल षाबित करना चाहते हो ? वोह पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तो बहुत ज़ियादा करीमो जव्वाद है। उस की रह़मत से मायूस क्यूं होते हो।"

कहा : "ऐ अबू सई़द ! मैं ने रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की, तो उस ने मुझे बीमारी में मुब्तला कर दिया। मैं ने शिफ़ा त़लब की तो उस ने शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई। मैं ने फिर नाफ़रमानी की तो दोबारा बीमारी में मुब्तला हो गया। फिर गुनाहों से मुआ़फ़ी त़लब की और सिह़ह़तयाबी की दुआ़ मांगी। उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी। मैं इसी त़रह़ गुनाह करता रहा और वोह मुआ़फ़ करता रहा। अब पांचवीं मरतबा बीमार हुवा हूं, मैं ने इस मरतबा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब की और सिह़ह़तयाबी के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हुवा तो अपने घर के कोने से येह ग़ैबी आवाज़ सुनी : "तेरी दुआ़ व मुनाजात क़बूल नहीं हम ने तुझे कई मरतबा आज़माया मगर हर मरतबा तुझे झूटा पाया।"

नौजवान की येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى ने अपने साथियों से फ़रमाया : "चलो वापस चलते हैं।" येह कह कर आप वहां से तशरीफ़ ले गए। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के जाने के बा'द उस नौजवान ने अपनी वालिदा से कहा : "ऐ मेरी मां ! येह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى थे शायद येह मेरी त़रफ़ से मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से नाउम्मीद हो गए हैं ह़ालांकि मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ तो गुनाहों को बख़्शने वाला और ख़त़ाओं से दरगुज़र फ़रमाने वाला है। वोह अपने बन्दों की तौबा ज़रूर क़बूल फ़रमाता है। ऐ मेरी प्यारी मां ! मेरी मौत का वक़्त क़रीब है। जब सांस उखड़ने लगे और मेरा जिस्म बे जान होने लगे, मेरी आंखें बन्द हो जाएं, जिस्म पीला पड़ जाए, आवाज़ बन्द हो जाए और मेरी रूह़ दारुल फ़ना से दारुल बक़ा की त़रफ़ परवाज़ करने लगे तो मेरा गिरेबान पकड़ कर मुझे घसीटना, मेरा चेहरा ख़ाक आलूद कर देना। फिर मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मेरे गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब करना। बेशक वोह रह़मानो रह़ीम मौला عَزَّوَجَلَّ गुनाहों को बख़्शने वाला है। मैं उस की रह़मत से नाउम्मीद नहीं। इतना कह कर नौजवान ख़ामोश हो गया। उस की बुढ़ी मां ने ह़स्बे वसिय्यत उस के गले में रस्सी डाल कर घसीटा, उस के चेहरे पर मिट्टी डाली। फिर अपने हाथ आस्मान की त़रफ़ बुलन्द किये और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ फ़रयाद करने लगी :

"ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी उस रह़मत का सुवाल करती हूं जो तू ने ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नाज़िल फ़रमाई और उन के बेटे को उन से मिला दिया। ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ तुझे उसी रह़मत का वासित़ा जो तू ने ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नाज़िल फ़रमाई और उन की आज़्माइश को दूर फ़रमा दिया। मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरे बेटे पर भी रह़्म फ़रमा। इस के गुनाहों से दर गुज़र फ़रमा कर इसे भी मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

जब उस नौजवान का इन्तिक़ाल हो गया तो उस की वालिदा ने हातिफ़े ग़ैबी से येह आवाज़ सुनी "तेरे बेटे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रह़्म फ़रमाया और इस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये" इसी त़रह़ एक आवाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को सुनाई दी, कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ अबू सईद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस नौजवान पर रह़्म फ़रमा कर उस के गुनाहों को बख़्श दिया, अब वोह जन्नती है।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने साथियों के हमराह उस नौजवान के जनाज़े में शिर्कत के लिये तशरीफ़ ले गए।

रह़मत दा दरया इलाही हर दम व गदा तेरा — जे इक क़त़रा बख़्शे मैनूं कम बन जावे मेरा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 213 मुह़द्दिष और वली की मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन ह़र्ब علیہ رحمۃ اللہ الرب फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی की ज़ियारत का बहुत मुश्ताक़ था। लेकिन अभी तक मेरी येह ख़्वाहिश पूरी न हो सकी थी। एक दिन मस्जिद जाते हुवे देखा कि एक घने बालों वाला शख़्स पुरानी सी चादर ओढ़े दीवार की जानिब मुंह किये थेले से सूखी रोटी के टुकड़े निकाल कर खा रहा था। मैं ने उस से पूछा : "क्या तुम ख़ुरासान के रहने वाले हो।" कहा : "नहीं, बल्कि बग़दाद का रहने वाला हूं।" मैं ने कहा : "तुम यहां किस लिये आए हो ?" कहा : "आप से ह़दीष सुनने आया हूं।" मैं ने कहा : "तुम्हारा नाम क्या है ?" कहा : "आप मेरा नाम पूछ कर क्या करेंगे।" मैं ने कहा : "मेरी ख़्वाहिश है कि तुम्हारा नाम जानूं।" कहा : "मैं अबू नस्र हूं।" मैं ने कहा : "मैं आप का नाम जानना चाहता हूं कुन्यत नहीं।" कहा : "मैं आप को अपना नाम नहीं बताऊंगा क्यूंकि अगर मैं ने अपना नाम बता दिया तो मैं आप से ह़दीष नहीं सुन सकूंगा।" मैं ने कहा : "तुम अपना नाम बता दो, इस के बा'द तुम ह़दीष सुनना चाहो तो मैं तुम्हें ज़रूर सुनाऊंगा और अगर न सुनना चाहो तो तुम्हारी मरज़ी।" उस ने कहा : "मेरा नाम "बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी है।"

मैं ने खुश होते हुवे कहा : "शुक्र है उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का जिस ने मुझे जीते जी आप से मुलाक़ात का शरफ़ अ़ता़ फ़रमाया।" मैं उन के क़रीब बैठ कर रोने लगा। फिर हम ह़दीष की तक़रार करने लगे, काफ़ी देर ह़ल्क़ए दर्से ह़दीष जारी रहा। मैं ने कहा : "अब जब कि आप हमारे शहर में आ गए हैं तो क्या मेरे घर नहीं चलेंगे ?" फ़रमाया : "मेरे लिये कोई मुस्तक़िल रिहाइश गाह नहीं। मैं मुसाफ़िर हूं किसी एक जगह नहीं ठहर सकता।" येह सुन कर मैं रोने लगा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه भी रो दिये। फिर सलाम किया और मुझे रोता छोड़ कर अपनी अगली मन्ज़िल की जानिब रवाना हो गए।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हि़कायत नम्बर : 214 मुराक़बे की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र दक़्क़ाक़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से मन्क़ूल है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ईसा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से सुना कि "एक मरतबा मैं सह़रा में जा रहा था कि अचानक चरवाहों के दस शिकारी कुत्तों पर मेरी नज़र पड़ी। मुझे देख कर वोह मेरी जानिब लपके, जब क़रीब आए तो मैं ने मुराक़बा शुरूअ़ कर दिया (या'नी दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा का तसव्वुर जमाया)। अचानक उन के दरमियान से एक सफ़ेद रंग का कुत्ता निकला और उन कुत्तों पर ह़म्ला कर के मुसलसल मेरा दफ़ाअ़ करता रहा। जब मैं उन कुत्तों से काफ़ी दूर हो गया तो उस सफ़ेद कुत्ते को देखने के लिये मुड़ा मगर वोह कहीं नज़र न आया, न जाने कहां ग़ाइब हो गया। मैं कुत्तों से इस त़रह़ मह़फ़ूज़ रहा क्यूंकि मेरे एक उस्ताज़ मुझे ख़ौफ़ से मुतअ़ल्लिक़ सिखाया करते थे, एक दिन उन्हों ने मुझ से कहा : "आज मैं तुम्हें एक ऐसे ख़ौफ़ के बारे में बताऊंगा जिस से तमाम उमूरे ख़ैर तुम्हारे लिये जम्अ़ हो जाएंगे।" मैं ने पूछा : "वोह क्या है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिल में बिठा लेना।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 215 नसीह़त भरा जवाब

अबू ख़लीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "बसरा में अबू सुलैमान हाशिमी नामी एक बहुत बड़ा ताजिर रहता था। जिस की रोज़ाना की आमदनी अस्सी हज़ार (**80,000**) दिरहम थी। उस ने उ़-लमाए किराम से पूछा कि "बसरा" की कौन सी नेक औ़रत से शादी करना मेरे ह़क़ में बेहतर रहेगा। उ़-लमाए किराम ने मश्वरा देते हुवे कहा : "राबिआ़ अ़दविय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا से शादी करना तुम्हारे ह़क़ में बेहतर षाबित होगा। ताजिर ने फ़ौरन ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا को येह ख़त़ भेजा :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

امابعد : "(ऐ राबिआ़ अ़दविय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا) मेरी रोज़ाना की आमदनी अस्सी हज़ार (**80,000**) दिरहम है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कुछ ही दिनों में एक लाख दिरहम हो जाएगी। मैं आप से निकाह करना चाहता हूं। आप राज़ी हो जाएं तो मैं एक लाख दिरहम बत़ौरे मेहर देने को तय्यार हूं, शादी के बा'द इतने दिरहम मज़ीद दूंगा। अगर आप राज़ी हों तो मुझे इत्तिलाअ़ कर दें।

ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا ने जब ताजिर का ख़त़ पढ़ा तो जवाब लिखा :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

امابعد : "बेशक दुन्या से किनारा कशी बदन और दिल को तक़्विय्यत बख़्शती है। और दुन्या की त़रफ़ रग़बत, रन्जो मलाल का बाइ़ष है। मेरा येह ख़त़ मिलते ही आख़िरत की तय्यारी में कोशिश शुरूअ़ कर दो। सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह इकठ्ठा करने में मश्ग़ूल हो जाओ। अपना माल आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा करो। अपने लिये ख़ुद वसिय्यत करने वाले बन जाओ। अपने ग़ैर को वसी न बनाना। मुसलसल रोज़े रखना। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे तुझ से दुगना माल दे दे और मैं इस माल की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से लम्ह़ा भर भी ग़ाफ़िल हो जाऊं तो येह मुझे हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं। मैं इसी ह़ाल में ख़ुश हूं। **वस्सलाम**।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 216 एक लुक़्मा सदक़ा करने की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि : "एक औ़रत खाना खा रही थी, इतने में साइल ने सदा लगाई : "मुझे खाना खिलाओ, मुझे खाना खिलाओ।" औ़रत के पास सिर्फ़

एक लुक़्मा बचा था जैसे ही उस ने मुंह खोला साइल ने दोबारा सदा लगाई। हमदर्द व नेक औ़रत ने वोह लुक़्मा साइल को खिला दिया। कुछ अ़र्से बा'द वोही औ़रत अपने नन्हे मुन्ने बच्चे के साथ कहीं सफ़र पर जा रही थी कि रास्ते में एक शेर उस का बच्चा छीन कर ले गया। अभी शेर थोड़ी ही दूर गया था कि अचानक एक शख़्स नुमूदार हुवा और शेर की त़रफ़ बढ़ा, फिर शेर के दोनों जबड़े पकड़ के फाड़ डाले और बच्चा उस के मुंह से निकाल कर औ़रत के ह़वाले करते हुवे कहा : "लुक़्मे के बदले लुक़्मा। या'नी तू ने जो एक लुक़्मा साइल को खिलाया था इस की बरकत से तेरा बच्चा शेर का लुक़्मा बनने से बच गया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक औ़रत के मुंह में लुक़्मा था इतने में साइल ने सदा लगाई उस ने वोह लुक़्मा साइल को खिला दिया। कुछ अ़र्से बा'द उस के हां एक बच्चे की विलादत हुई, जब वोह कुछ बड़ा हुवा तो उसे भेड़िया उठा कर ले गया औ़रत उस भेड़िये के पीछे भागती हुई पुकार रही थी "मेरा बेटा, मेरा बेटा" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ते को हुक्म दिया कि भेड़िये से बच्चा छीन लो (और उस की मां के ह़वाले कर दो) और उस से कहो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर सलाम भेजा है और फ़रमाया है कि **येह लुक़्मा लुक़्मे के बदले है।**"

(المجالسة و جواهر العلم، الجزء السادس و العشرون، الحديث ٣٦٢٢، ج٣، ص٢٧٧)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم*

ह़िकायत नम्बर : 217 वा'दा निभाने की अनोखी मिषाल

इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम मौसिली के वालिद से मन्क़ूल है : "एक मरतबा ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد और जा'फ़र बिन यह़्या बर्मकी ह़ज के लिये रवाना हुवे, मैं भी साथ था। जब हम मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पहुंचे तो जा'फ़र बिन यह़्या ने मुझ से कहा : "क्या तुम मेरे लिये कोई ऐसी लौंडी तलाश कर सकते हो जो हुस्नो जमाल और ज़हानत में बे मिषाल, नग़्मा गुनगुनाने में बा कमाल और इन्तिहाई बा अदब हो।" मैं ने कहा : "कोशिश करता हूं कि ऐसी लौंडी कहीं मिल जाए।" चुनान्चे, मैं ऐसी सिफ़ात की ह़ामिल लौंडी की तलाश में लग गया। बिल आख़िर मुझे मा'लूम हुवा कि फ़ुलां शख़्स के पास ऐसी लौंडी मिल सकती है।

मैं मत़्लूबा शख़्स के पास पहुंचा और अपने आने का मक़्सद बयान किया। उस ने एक लौंडी मुझे दिखाई तो मैं उसे देखता ही रह गया। इतनी ख़ूब सूरत व बा अदब लौंडी मैं ने आज तक न देखी थी। उस के चेहरे की चमक दमक आंखों को ख़ीरा कर रही थी। जब उस ने नग़्मा गुनगुनाया तो आवाज़ बड़ी दिलकश व सुरीली थी। मुझे वोह बहुत पसन्द आई, मैं ने उस के मालिक से कहा : "बताओ ! इस की क्या क़ीमत लोगे ?" मालिक ने कहा : "मैं एक दाम

बताऊंगा और इस से एक पैसा भी कम न करूंगा।" मैं ने कहा : "बताओ।" कहा : "चालीस हज़ार दीनार।" मैं ने कहा : "ठीक है, येह लौंडी हमारी हो गई तुम कुछ इन्तिज़ार करो मैं रक़म का इन्तिज़ाम करता हूं।" कहा : "ठीक है येह लौंडी तुम्हारी है, तुम रक़म ले आओ।"

चुनान्चे, मैं जा'फ़र बिन यह्या के पास आया और कहा : "जैसी लौंडी आप को मत़्लूब थी वोह मिल गई है उस में वोह तमाम सिफ़ात बदरजए अतम पाई जाती हैं जो आप ने बताई थीं। वोह इन्तिहाई ह़सीनो जमील, सुरीली आवाज़ की मालिक, बेहतरीन रंग व रूप वाली और इन्तिहाई बा अदब है। मैं सौदा तै कर आया हूं आप मज़दूरों को हुक्म दें कि रक़म उठाएं।" मज़दूरों ने दिरहमों की थैलियां उठाईं और मेरे साथ लौंडी के मालिक के पास आ गए, जा'फ़र बिन यह्या कुछ देर बा'द अकेला ही वहां पहुंचा। जब लौंडी के हुस्नो जमाल को देखा बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा और देखता ही रह गया। उसे मा'लूम हो गया कि मैं ने उस के लिये अच्छी चीज़ का इन्तिख़ाब किया है। लौंडी ने अपनी दिलकश व सुरीली आवाज़ में नग़मा गुनगुनाया तो जा'फ़र बिन यह्या बहुत ख़ुश हुवा और मुझ से कहा : "तुम्हारा इन्तिख़ाब हमें बहुत पसन्द आया। जल्दी से लौंडी की क़ीमत अदा कर दो।"

मैं ने मालिक से कहा : "येह पूरे चालीस हज़ार (**40,000**) दीनार हम ने इन का वज़्न कर लिया है अगर तुम चाहो तो दोबारा वज़्न कर लो।" उस ने कहा : "हमें तुम पर भरोसा है।" जब लौंडी ने हमारी गुफ़्त्गू सुनी तो अपने मालिक से कहने लगी : "मेरे सरदार ! येह आप क्या कर रहे हैं ? क्या आप मुझे बेचना चाहते हैं ?" उस ने कहा : "तू तो जानती है कि हम कितनी ख़ुशह़ाल ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, अभी हमारे ह़ालात बहुत अच्छे हैं, लेकिन ह़ालात बदलते देर नहीं लगती अगर हम पर तंगी के दिन आ गए तो क्या बनेगा ? मैं तो किसी के सामने कभी भी हाथ नहीं फैला सकता, लिहाज़ा ह़ालात के पेशे नज़र मैं ने येही फ़ैसला किया कि तुझे किसी ऐसे शख़्स के हाथों फ़रोख़्त कर दूं जो तुझे हमेशा ख़ुश रखे और वहां तेरी तमाम ख़्वाहिशात पूरी हो सकें।" लौंडी ने बड़ी ग़मगीन आवाज़ में कहा : "मेरे आक़ा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर आप की जगह मैं होती और मेरी जगह आप होते तो मैं तमाम दुन्या की दौलत के बदले भी आप को फ़रोख़्त न करती। क्या आप को अपना वा'दा याद नहीं ? आप ने ही तो वा'दा किया था कि कभी भी तुझे बेच कर तेरी रक़म नहीं खाऊंगा।"

लौंडी की दर्दमन्दाना गुफ़्त्गू सुन कर मालिक की आंखों में आंसू भर आए, उस ने रोते हुवे कहा : "तुम सब गवाह हो जाओ कि येह लौंडी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर आज़ाद है अब मैं इस से निकाह़ करता हूं और मेरा घर इस का मेहर है।" जब अ़क़्दे निकाह़ हो गया तो जा'फ़र बिन यह्या ने मुझ से कहा : "चलो वापस चलते हैं।" मैं ने मज़दूरों को हुक्म दिया कि तमाम रक़म वापस ले चलो।" जा'फ़र बिन यह्या ने कहा : "नहीं ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब इस रक़म से एक दिरहम भी वापस नहीं जाएगा।" फिर लौंडी के मालिक की त़रफ़ मुतवज्जेह

हो कर कहा : "येह तमाम रक़म तुझे मुबारक हो, इस से अपनी और अपनी नई मन्कूह़ा की ज़रूरियात पूरी करो।" येह कह कर जा'फ़र बिन यह़्या ने हमें साथ लिया और चालीस हज़ार दीनार वहीं छोड़ कर वापस चला आया।

ह़िकायत नम्बर : 218 ## जन्नती मह़ल की ज़मानत

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि "एक शख़्स ख़ुरासान से बसरा आया और वहीं रहने लगा। उस के पास दस हज़ार दिरहम थे, जब ह़ज का पुर बहार मौसिम आया तो उस ख़ुरासानी ने अपनी ज़ौजा के साथ ह़ज पर जाने का इरादा किया। अब येह मस्अला दरपेश हुवा कि येह दस हज़ार दिरहम किस के पास अमानत रखे जाएं? लोगों से मश्वरा किया तो उन्हों ने कहा : "तुम अपनी रक़म अबू मुह़म्मद ह़बीब अजमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास रख दो।" चुनान्चे, वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास आया और कहा : "हु़ज़ूर ! मैं और मेरी अहलिया ह़ज का इरादा रखते हैं। हमारे पास दस हज़ार दिरहम हैं आप येह दिरहम रख लें और हमारे लिये बसरा में एक अच्छा सा घर ख़रीद लें।" येह कह कर उस ने सारी रक़म आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले की और अपनी ज़ौजा के हमराह ह़ज के लिये रवाना हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अपने साथियों से मश्वरा किया कि अगर हम इन दस हज़ार दिरहम का आटा ख़रीद लें और फ़क़ीरों पर सदक़ा कर दें तो कैसा रहेगा? लोगों ने कहा : "हु़ज़ूर ! येह रक़म तो उस शख़्स ने आप के पास इस लिये रखवाई थी कि आप कोई मकान उस के लिये ख़रीद लें।" इरशाद फ़रमाया : मैं येह तमाम रक़म सदक़ा कर के उस शख़्स के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जन्नत में घर ख़रीदूंगा, अगर वोह इस घर पर राज़ी हुवा तो ठीक, वरना हम उस की रक़म वापस कर देंगे।" फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आटा और रोटियां मंगवा कर फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दीं।"

जब वोह ख़ुरासानी, हज कर के वापस बसरा आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मैं ने दस हज़ार दिरहम आप के पास रखवाए थे कि आप मेरे लिये मकान ख़रीद लें अगर आप ने मकान नहीं ख़रीदा तो मेरी रक़म मुझे वापस कर दें ताकि मैं ख़ुद कोई मकान ख़रीद लूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "मेरे भाई ! मैं ने तेरे लिये ऐसा शानदार घर ख़रीदा है जिस में बहुत उ़म्दा मह़ल, नहरें, मेवे और फलदार दरख़्त हैं।" येह सुन कर वोह ख़ुरासानी अपनी ज़ौजा के पास गया और कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने हमारे लिये हमारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से जन्नत में एक घर ख़रीद लिया है।" उस की ज़ौजा ने कहा : "ठीक है येह तो बहुत अच्छा हुवा। मैं उम्मीद रखती हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के अ़हद को पूरा फ़रमाएगा। लेकिन क्या मा'लूम कि हम इन से पहले ही सफ़रे आख़िरत की त़रफ़

रवाना हो जाएं, तुम ऐसा करो ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى से एक रुक़्आ़ लिखवा लो कि वोह हमें जन्नत में एक घर दिलवाने के ज़ामिन हैं।''

चुनान्चे, वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आया और कहा : ''ऐ अबू मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आप ने जो घर हमारे लिये ख़रीदा है वोह हमें क़बूल है, आप हमारे लिये रुक़्आ़ लिख दें कि आप जन्नत में घर दिलवाने के ज़ामिन हैं।'' फ़रमाया : ''ठीक है, मैं रुक़्आ़ लिख देता हूं। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस त़रह़ रुक़्आ़ लिखा :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

''येह ज़मानत नामा है इस बात का कि अबू मुह़म्मद ह़बीब ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से फ़ुलां ख़ुरासानी शख़्स के लिये दस हज़ार दिरहम के इ़वज़ जन्नत में एक ऐसा घर ख़रीदा है जिस में मह़ल्लात, नहरें और फलदार दरख़्त हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि फ़ुलां शख़्स को ऐसी सिफ़ात से मुत्तसिफ़ घर दे कर ह़बीब अ़जमी को इस अ़हद से बरी कर दे।''

ख़ुरासानी वोह रुक़्आ़ ले कर ख़ुशी ख़ुशी अपने घर आ गया। अभी इस वाकिए़ को चालीस (40) दिन ही हुवे थे कि वोह बीमार हो गया। उस ने अपनी ज़ौजा को वसिय्यत की ''जब मुझे ग़ुस्ल दे कर कफ़न पहनाया जाए तो येह रुक़्आ़ मेरे कफ़न में रखवा देना।'' ह़स्बे वसिय्यत रुक़्आ़ उस के कफ़न में रख दिया गया। दफ़्न के बा'द लोगों को उस की क़ब्र पर एक पर्चा मिला जिस पर लिखा था :

''येह ह़बीब अ़जमी के लिये उस घर का बराअत नामा है जिसे उस ने फ़ुलां शख़्स के लिये ख़रीदा था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुरासानी को ऐसा घर दे दिया है जिस का ह़बीब अ़जमी ने अ़हद किया था।''

लोग येह पर्चा ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वोह रुक़्आ़ पढ़ कर रोने लगे फिर अपने साथियों के पास आए और फ़रमाया : ''येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मेरे लिये बराअत नामा है।''

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 219 लाख दिरहम के बदले जन्नती मह़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ''एक मरतबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار के साथ जा रहा था। एक जगह एक अ़ज़ीमुश्शान मह़ल की ता'मीर जारी थी। एक ह़सीनो जमील नौजवान मज़्दूरों, मे'मारों को ता'मीर से मुतअ़ल्लिक़ हुक्म दे रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने मुझ से फ़रमाया : ''ऐ जा'फ़र (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) देखो तो सही ! येह नौजवान इस मह़ल की ता'मीर में कितनी दिलचस्पी ले रहा है। मैं अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करूंगा कि वोह इसे

दुन्यवी मह़ब्बत से छुटकारा अ़त़ा फ़रमाए। मुझे उम्मीद है कि मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ इस नौजवान को जन्नती नौजवानों की सफ़ में शामिल फ़रमाएगा। आओ ! हम इसे नेकी की दा'वत देते हैं।"

हम नौजवान के पास आए और सलाम किया। उस ने बैठे बैठे ही सलाम का जवाब दिया वोह नहीं जानता था कि उस के सामने एक वलिय्ये कामिल खड़ा है। जब लोगों ने बताया कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار हैं तो वोह फ़ौरन खड़ा हुवा और बड़े मुअद्दबाना अन्दाज़ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "हुज़ूर ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मुझ से कोई काम है ?" फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! तेरा इस मह़ल की ता'मीर पर कितनी रक़म ख़र्च करने का इरादा है ?" कहा : "एक लाख दिरहम।" फ़रमाया : "क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम एक लाख दिरहम मुझे दे दो और मैं येह तमाम रक़म इस के ह़क़दारों, यतीमों और मसाकीन में तक़्सीम कर दूं और इस के बदले एक ऐसे मह़ल का ज़ामिन बन जाऊं जिस में बेहतरीन ख़िदमत गुज़ार, सुर्ख़ याक़ूत के कुब्बे और उ़म्दा कुमक़े होंगे, वहां की मिट्टी ज़ा'फ़रान की और फ़र्श मुश्क का होगा, वोह मह़ल तेरे इस मह़ल से बहुत ज़ियादा वसीअ़ व आ़ली होगा, उस के दरो दीवार मैले न होंगे, उसे मे'मारों और मज़दूरों ने नहीं बनाया बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म फ़रमाया और वोह मह़ल बन गया। बताओ तुम्हें येह सौदा मन्ज़ूर है ?"

नौजवान ने कहा : "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक रात की मोहलत दे दें, कल सुब्ह़ मैं आप को बताऊंगा कि मैं ने क्या फ़ैसला किया।" ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि : वोह रात ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने बड़ी बे चैनी के आ़लम में गुज़ारी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه सारी रात उसी नौजवान के बारे में सोचते रहे, तहज्जुद के वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में उस नौजवान के लिये ख़ूब दुआ़ की। फ़ज्र की नमाज़ के बा'द हम दोबारा उस के पास गए। वोह हमारा मुन्तज़िर था जैसे ही उस की नज़र ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار पर पड़ी वोह इन्तिहाई ख़ुशी के आ़लम में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रफ़ लपका और बड़ी गर्मजोशी से मुलाक़ात की, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ऐ नौजवान ! तू ने क्या फ़ैसला किया ? उस ने एक लाख दिरहम आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में पेश करते हुवे कहा : "मुझे जन्नती मह़ल का सौदा मन्ज़ूर है, आप मुझे ज़मानत नामा लिख दीजिये।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने क़लम, दवात मंगवा कर एक काग़ज़ पर येह अल्फ़ाज़ लिखे :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

"येह ज़मानत नामा इस बात का है कि मालिक बिन दीनार ने फ़ुलां बिन फ़ुलां से येह इक़रार किया कि "बेशक मैं इस बात का ज़ामिन हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे इस मह़ल के बदले एक ऐसा मह़ल अ़त़ा फ़रमाएगा जो इस से बदरजा बेहतर होगा। और उस की येह, येह सिफ़ात होंगी। मैं ने अल्लाह तबारक व तआ़ला से तेरे लिये इस माल के ज़रीए़ जन्नत में एक ऐसा मह़ल ख़रीदा है जो अ़र्श के क़रीब है।"

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोह काग़ज़ नौजवान को दिया। और शाम से पहले पहले तमाम माल फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दिया। इस वाक़िए के चालीस दिन बा'द आप को मस्जिद की मेह़राब में एक पर्चा मिला, देखा तो बड़े ह़ैरान हुवे क्यूंकि येह वोही पर्चा था जो उस नौजवान को लिख कर दिया था। इस की दूसरी त़रफ़ बिग़ैर रोशनाई के येह अल्फ़ाज़ लिखे हुवे थे :

"येह बराअत नामा, खुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की जानिब से मालिक बिन दीनार के लिये है। बेशक हम ने उस नौजवान को वोह तमाम चीज़ें दे दीं हैं जिन का मालिक बिन दीनार ने उस से इक़रार किया था बल्कि हम ने इस से सत्तर गुना ज़ियादा दिया।" हम वोह रुक़्आ़ ले कर उस नौजवान के घर गए तो वहां से रोने की आवाज़ें आ रही थीं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने लोगों से नौजवान के बारे में पूछा तो पता चला कि कल उस नौजवान का इन्तिक़ाल हो गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस की मौत की ख़बर सुन कर बहुत ग़मगीन हुवे फिर ग़स्साल को बुला कर पूछा : क्या तू ने इस नौजवान को ग़ुस्ल दिया ?" कहा : "हां।" फ़रमाया : "नौजवान की मौत का पूरा वाक़िआ़ बयान करो।"

कहा : "मरने से पहले इस नौजवान ने मुझ से कहा था कि जब मैं मर जाऊं और ग़ुस्ल के बा'द मुझे कफ़न देने लगें तो येह पर्चा मेरे बदन और कफ़न के दरमियान रख देना, मैं कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से वोह चीज़ त़लब करूंगा जिस की ज़मानत ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने मुझे दी थी।" मैं ने ह़स्बे वसिय्यत पर्चा उस के कफ़न में रख दिया, ग़स्साल की येह बात सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पर्चा निकाला और ग़स्साल को दिखाया, वोह पुकार उठा :"येह वोही पर्चा है, क़सम है उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मैं ने खुद अपने हाथों से येह पर्चा उस नौजवान के कफ़न में रखा था।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। लोग भी रोने लगे। इतने में एक नौजवान खड़ा हुवा और कहा : "ऐ मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار आप मुझ से दो लाख दिरहम ले लें और उस नौजवान की त़रह़ मुझे भी ज़मानत नामा लिख दें।" फ़रमाया : "अफ़्सोस ! अब वोह वक़्त गुज़र चुका, अब जो होना था वोह हो गया, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त जिस त़रह़ चाहता है अपनी मख़्लूक़ में फ़ैसला फ़रमाता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار को जब भी उस नौजवान का वाक़िआ़ याद आता आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़ारो क़ित़ार रोने लगते और उस के लिये दुआ़ फ़रमाते।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खुश्नूदी, जन्नत की दाइमी ने'मतों के ह़ुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से "**मदनी इन्आ़मात**" नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये। और अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते

इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ तौर पर मदनी इन्क़िलाब बरपा होता देखेंगे।)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

हिकायत नम्बर : 220 कमसिन बच्चों में भी औलियाउल्लाह होते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि "एक मरतबा मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास बैठा था। एक शख़्स आया और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा : "ऐ अबू महफ़ूज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आज एक अ़जीब वाक़िआ़ पेश आया।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए बताओ क्या वाक़िआ़ पेश आया ?" उस ने अपना वाक़िआ़ कुछ इस तरह़ बयान किया :

"मेरे घर वालों ने मुझ से मछली खाने की फ़रमाइश की। मैं ने बाज़ार जा कर मछली ख़रीदी और उसे घर पहुंचाने के लिये एक कमसिन मज़दूर बुलाया, उस ने मछली उठाई और मेरे पीछे पीछे चल दिया। रास्ते में अज़ान की आवाज़ सुनाई दी उस मज़दूर लड़के ने कहा : "चचा जान ! अज़ान हो रही है क्या हम नमाज़ न पढ़ लें ?" उस की येह बात सुन कर मुझे ऐसा लगा जैसे वोह नौ उ़म्र लड़का मुझे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार कर रहा है। मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ! आओ पहले नमाज़ पढ़ लेते हैं।"

उस ने मछली वुज़ू ख़ाने पर रखी और मस्जिद में दाख़िल हो गया। हम ने बा जमाअ़त नमाज़ अदा की और घर की त़रफ़ चल दिये। घर पहुंच कर मैं ने घर वालों को उस नेक कमसिन मज़दूर के बारे में बताया तो वोह कहने लगे : उस से कहो आज दोपहर का खाना हमारे साथ खा ले।" मैं ने उसे दा'वत दी तो उस ने कहा कि : "मेरा रोज़ा है।" मैं ने कहा : "इफ़्त़ारी हमारे साथ कर लेना।" कहा : "ठीक है, आप मुझे मस्जिद का रास्ता बता दें।" मैं ने उसे मस्जिद पहुंचा दिया वोह मग़रिब तक मस्जिद ही में रहा। नमाज़ के बा'द मैं ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए, आओ घर चलते हैं। उस ने कहा : "क्या हम इशा की नमाज़ पढ़ कर न चलें ?" मैं ने अपने दिल में कहा : "इस की बात मान लेने ही में भलाई है।"

चुनान्चे, मैं मस्जिद में रुक गया, नमाज़े इशा के बा'द हम घर आए। हमारे घर में तीन कमरे थे एक में, मैं और मेरी ज़ौजा रहते थे। दूसरे कमरे में एक पैदाइशी मा'ज़ूर लड़की रहती थी जो चलने फिरने से बिल्कुल आ़जिज़ थी और इसी ह़ालत में बीस साल गुज़र चुके थे। तीसरा

कमरा मेहमानों के लिये था, हम सब ने खाना खाया और अपने अपने कमरों में सो गए नौउ़म्र नेक लड़के को हम ने मेहमानों वाले कमरे में सुला दिया। रात के आख़िरी पहर दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी, मैं ने कहा : "कौन है ?" उस ने अपना नाम बता कर कहा : "मैं फ़ुलां लड़की हूं।" मैं ने कहा : "वोह तो चलने फिरने से बिल्कुल आ़जिज़ है, गोया वोह तो गोश्त के टुकड़े की त़रह़ है और हर वक़्त अपने कमरे ही में रहती है तुम वोह कैसे हो सकती हो ?" उस ने कहा : "मैं वोही हूं तुम दरवाज़ा तो खोलो।" हम ने दरवाज़ा खोला तो वाक़ेई हमारे सामने वोही लड़की मौजूद थी। मैं ने कहा : "तुम ठीक कैसे हो गई हो ?" कहा : "मैं ने तुम्हारी आवाज़ें सुनीं थीं कि आज हमारे हां एक नेक मेहमान आया है, मेरे दिल में ख़याल आया कि इस नेक मेहमान के वसीले से दुआ़ करूं शायद इसी के सदक़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दे।"

लिहाज़ा मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस त़रह़ दुआ़ की : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस मेहमान के सदक़े बीमारी को ज़ाइल कर दे और मुझे तन्दुरुस्ती अ़त़ा फ़रमा।" येह दुआ़ करते ही मैं फ़ौरन ठीक हो गई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मेरे हाथ पाऊं में ह़रकत शुरूअ़ हो गई, देखो मैं तुम्हारे सामने सह़ीह़ व सालिम मौजूद हूं। मैं खुद चल कर यहां आई हूं।" लड़की की येह बात सुन कर मैं फ़ौरन उस कमरे की त़रफ़ गया जिस में वोह नौ उ़म्र मज़दूर लड़का था। देखा तो कमरा बिल्कुल ख़ाली था उस में कोई भी नहीं। मैं बाहर दरवाज़े की त़रफ़ गया तो वोह भी बन्द था, न जाने हमारा नौ उ़म्र मेहमान कहां ग़ाइब हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने येह वाक़िआ़ सुन कर मुझ से फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया में कम उ़म्र बच्चे भी होते हैं और बड़ी उ़म्र वाले भी वोह लड़का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली था।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 221

मुर्शिद पर मुरीद का ह़ाल पोशीदा नहीं होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बिन अ़ल्वान عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं किसी काम से "**रह़बा**" के बाज़ार में गया। देखा कि कुछ लोग जनाज़ा उठाए जा रहे हैं। मैं नमाज़े जनाज़ा के इरादे से उन के साथ हो लिया। तदफ़ीन के बा'द जब वापस हुवा तो बिला इरादा एक ह़सीनो जमील औ़रत पर नज़र पड़ गई और मैं उसे देखने लगा फिर नादिम हो कर "اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن" कहते हुवे निगाह फेर ली। और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ से अपने इस फ़े'ल की मुआ़फ़ी चाहते हुवे घर चला आया।

घर पहुंचा तो बुढ़ी ख़ादिमा ने ह़ैरान होते हुवे कहा : "येह आप का चेहरा सियाह क्यूं हो गया ?" मैं ने घबरा कर आईना देखा तो वाक़ेई मेरा चेहरा सियाह हो चुका था। मैं सोचने लगा

कि आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह सरज़द हो गया जिस की नुहूसत से मुझ पर येह मुसीबत आ पड़ी ? फिर ख़याल आया कि उस ग़ैर औ़रत को देखने की वजह से इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुवा हूं। चुनान्चे, मैं चालीस रोज़ तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता रहा। फिर ख़याल आया कि मुझे अपने मुर्शिदे कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की बारगाह में ह़ाज़िर होना चाहिये। चुनान्चे, मैं उ़रूसुल बलाद **"बग़दाद शरीफ़"** की जानिब चल दिया। जब मुर्शिदे कामिल के आस्तानए आ़लिय्या पर पहुंच कर दरवाज़ा खट खटाया तो शैख़े कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की आवाज़ सुनाई दी :

"ऐ अबू उ़मर ! अन्दर आ जाओ तुम ने "**रह़बा**" में गुनाह किया, और हम यहां बग़दाद में तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 222 अच्छे अश्आ़र बख़्शिश का ज़रीआ़ बन गए

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नाफ़ेअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अबू नव्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق मेरे क़रीबी दोस्त थे। हम एक ही अ़लाके़ में रहा करते थे। फिर वोह दूसरे शहर चले गए और आख़िरी उ़म्र तक उन से मुलाक़ात न हो सकी। एक दिन इत्तिलाअ़ मिली कि अबू नव्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق का इन्तिक़ाल हो गया है। इस ख़बर ने मुझे बहुत ग़मगीन किया, मैं बहुत ज़ियादा परेशान था, इसी ह़ाल में मुझे ऊंघ आ गई। मैं ने अबू नव्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को देखा तो पुकार कर कहा : "अबू नव्वास ?" उन्हों ने कहा : "यहां कुन्यत नहीं।" मैं ने कहा : "आप ह़सन बिन हानी हैं ?" कहा : "हां।" मैं ने पूछा : **ما فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟** (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?) कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मेरे उन चन्द अश्आ़र की वजह से बख़्श दिया जो मैं ने अपनी मौत से कुछ देर क़ब्ल कहे थे।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नाफ़ेअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "फिर मेरी आंख खुल गई, मैं फ़ौरन उन के घर पहुंचा। जब अहले ख़ाना ने मुझे देखा तो उन का ग़म ताज़ा हो गया और वोह बिलक बिलक कर रोने लगे। मैं ने उन्हें तसल्ली दी और पूछा : "क्या मेरे भाई अबू नव्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ने इन्तिक़ाल से क़ब्ल कुछ अश्आ़र लिखे थे ?" उन्हों ने कहा : "हमें नहीं मा'लूम, हां ! इतना ज़रूर है कि मौत से क़ब्ल उन्हों ने क़लम, दवात और वरक़ मंगवाए थे। मैं ने कहा : "मुझे उन की ख़्वाब गाह (या'नी आराम के कमरे) में जाने की इजाज़त दो ताकि उन अवराक़ को ढूंड सकूं।" घर वालों ने मुझे उन की ख़्वाबगाह तक पहुंचाया। मैं ने तकया हटा कर देखा तो वहां कोई चीज़ न मिली फिर दोबारा तकया हटाया तो वहां एक पर्चा मिला जिस पर येह अश्आ़र लिखे हुवे थे :

يَـارَبِّ اِنْ عَـظُـمَـتْ ذُنُـوبِـىْ كَثْرَةً   فَـلَـقَـدْ عَـلِـمْـتُ بِـاَنَّ عَفْوَكَ اَعْظَمُ

اِنْ كَـانَ لَايَـرْجُـوْكَ اِلَّامُـحْسِنٌ   فَـمَـنِ الَّـذِىْ يَـدْعُـوْوَيَرْجُـوالْمُجْرِمُ

اَدْعُـوْكَ رَبِّ كَـمَـااَمَـرْتَ تَضَـرُّعًـا   فَـاِذَا رَدَدْتَّ يَـدِىْ فَـمَـنْ ذَايَـرْحَـمُ

مَـالِـىْ اِلَيْكَ وَسِيْلَةٌ اِلَّاالـرَّجَـا   وَجَـمِـيْـلُ عَـفْـوِكَ ثُـمَّ اِنِّىْ مُسْلِمُ

तर्जमा (1).....ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ बेशक मेरे गुनाह बे शुमार हो गए, मगर मैं जानता हूं कि तेरा अ़फ़्वो करम सब से बढ़ कर है।

(2)......अगर नेक लोग ही तुझ से उम्मीद रख सकते हैं तो फिर मुजरिम किसे पुकारें ? और किस से उम्मीद रखें ?

(3)......ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे हुक्म के मुताबिक़ गिर्या व ज़ारी करते हुवे तेरी बारगाह में फ़रयाद करता हूं अगर तू ने मुझे ख़ाली हाथ लौटा दिया तो फिर कौन रह़म करेगा ?

(4)......तेरी बारगाह में बारयाबी के लिये मेरे पास उम्मीद और तेरे अ़फ़्वो करम के सिवा कोई वसीला नहीं फिर येह कि मैं तुझे मानने वाला हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**प्यारे इस्लामी भाइयो :** इस ह़िकायत में उन शो'राए किराम के लिये मसर्रत का सामान है जो क़ुरआनो सुन्नत की रोशनी में अच्छे अश्आ़र (या'नी ह़म्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ, षनाए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और नसीह़त भरे अश्आ़र) लिखते हैं। और यक़ीनन ऐसों के लिखे हुवे अश्आ़र पढ़ने और सुनने से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत मिलती, ह़िफ़ाज़ते ईमान के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता और नेक बनने का जज़्बा मिलता है। इस की एक मिषाल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के लिखे हुवे कलाम भी हैं जो दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से "**वसाइले बख़्शिश**" के नाम से हदिय्यतन ख़रीदे जा सकते हैं।)

ह़िकायत नम्बर : 223 नेक लोगों की नज़र में ओ़हदे की ह़ैषिय्यत

ह़म्माद बिन मुअम्मल अबू जा'फ़र कल्बी कहते हैं कि "मुझे मेरे शैख़ ने बताया : "एक मरतबा मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से पूछा : "ह़ुज़ूर ! कुछ अ़र्से क़ब्ल ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد ने आप तीनों या'नी वकीअ़, इब्ने इदरीस और ह़फ़्स बिन ग़ियाष رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى को शाही दरबार में क्यूं बुलवाया था ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम ने मुझ से वोह सुवाल किया है जो तुम से पहले किसी ने नहीं किया, चलो मैं तुम्हें सारा वाक़िआ़ बताता

हूं : "हुवा यूं कि अमीरुल मोअमिनीन हारूनुर्रशीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد ने हम तीनों को अपने दरबार में बुला कर शाही मस्नदों पर बिठाया, फिर मुझे अपने पास बुलाया और कहा : "ऐ वकीअ़ !" मैं ने कहा : "अमीरल मोअमिनीन ! वकीअ़ ह़ाज़िर है ।"

खलीफ़ा ने कहा : "तुम्हारे शहर वालों ने मुझ से एक क़ाज़ी त़लब किया है, उन्हों ने मुझे जिन लोगों के नाम दिये उन में तुम्हारा नाम भी है, मैं चाहता हूं कि तुम्हें अपनी अमानत और रिआ़या की भलाई के कामों में मुआ़विन बना लूं । मैं तुम्हें क़ाज़ी बनाता हूं, जाओ ! और अपना ओ़हदा संभालो ।" मैं ने कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मेरी एक आंख की बीनाई ख़त्म हो चुकी है और दूसरी से बहुत कम दिखाई देता है अब मेरी उ़म्र भी काफ़ी हो गई है, लिहाज़ा मुझे इस ओ़हदे से मुआ़फ़ी दें ।" अमीरुल मोअमिनीन ने कहा : "तुम येह ओ़हदा क़बूल कर लो ।" मैं ने कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं अपने बयान में सच्चा हूं तो चाहिये के मेरा उ़ज्र क़बूल किया जाए और मुझे येह ओ़हदा न दिया जाए । अगर झूटा हूं तो झूटा शख़्स इस लाइक़ नहीं कि उसे क़ाज़ी बनाया जाए ।" ख़लीफ़ा ने झुन्झला कर कहा : "जाओ ! यहां से चले जाओ ।" मैं ने मौक़अ़ ग़नीमत जाना और फ़ौरन चला आया ।

फिर अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को अपने पास बुलाया, आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने बहुत धीमी आवाज़ में ख़लीफ़ा को सलाम किया । ख़लीफ़ा ने कहा : "क्या तुम जानते हो कि हम ने तुम्हें क्यूं बुलाया ?" फ़रमाया : "नहीं ।" ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد ने कहा : "तुम्हारे शहर वालों ने मुझ से एक क़ाज़ी त़लब किया है, और जिन लोगों के नाम भिजवाए हैं उन में तुम्हारा नाम भी है । मैं तुम्हें तुम्हारे शहर का क़ाज़ी बनाता हूं, जाओ ! और अपना ओ़हदा संभालो ।" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने कहा : "मैं इस ओ़हदे के लाइक़ नहीं ।" ख़लीफ़ा ने ग़ज़बनाक हो कर कहा : "चले जाओ ! मैं तुम्हारा चेहरा भी नहीं देखना चाहता ।" ख़लीफ़ा की येह बात सुन कर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने भी इन्तिहाई जुरअत मन्दी से जवाब दिया : "ऐ ख़लीफ़ा ! मेरी भी येह ख़्वाहिश है कि मैं तुम्हारा चेहरा न देखूं ।" इतना कह कर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه वहां से चले आए ।

फिर ह़फ़्स बिन ग़ियाष को बुलाया गया तो उन्हों ने येह ओ़हदा क़बूल कर लिया । फिर हम तीनों वापस अपने शहर की त़रफ़ चल दिये । इतने में एक ख़ादिम तीन थेलियां ले कर आया, हर थेली में पांच पांच हज़ार दिरहम थे । ख़ादिम ने थेलियां हमें देते हुवे कहा : "अमीरुल मोअमिनीन ने आप तीनों को सलाम कहा है और कहा है कि "आप को यहां आने तक सफ़र की सऊबतें बरदाश्त करना पड़ीं, येह कुछ रक़म ले लो ताकि दौराने सफ़र काम आ सके ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने थेली वापस करते हुवे कहा : "मेरी त़रफ़ से अमीरुल मोअमिनीन को सलाम कहना और कहना कि आप का हदिय्या हम तक पहुंच चुका है, फ़िल ह़ाल मुझे इन दिरहमों की ज़रूरत नहीं । आप की रिआ़या में जो मोह़ताज हो येह रक़म उसे दे दीजिये ।" जब ख़ादिम ने दिरहमों की थेली अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को दी तो आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहा : "यहां से चले जाओ, मुझे येह रक़म नहीं

चाहिये, फिर ह़फ़्स बिन ग़ियाष को थेली दी गई तो उन्हों ने क़बूल कर ली। ख़ादिम ने एक रुक़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दिया जिस में येह कलिमात लिखे थे :

"ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे और आप को सलामत रखे, हम ने सुवाल किया कि हमारे कामों में हमारे मुआ़विन बन जाओ लेकिन आप ने इन्कार किया, फिर हम ने माल भिजवाया आप ने वोह भी क़बूल न किया, मेरी एक बात ज़रूर मान लेना, जब तुम्हारे पास मेरा बेटा मामून आए तो उसे इ़ल्मे ह़दीष सिखाना।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रुक़्आ़ पढ़ कर ख़ादिम से कहा : "ख़लीफ़ा से कह देना कि अगर तुम्हारा लड़का सब लोगों के साथ मिल कर पढ़ना चाहे तो उसे भेज दें, मैं अ़लाह़िदा से उसे नहीं पढ़ाऊंगा। अगर दूसरे त़ालिबे इ़ल्मों के साथ मिल कर पढ़ेगा तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर इ़ल्मे ह़दीष सिखाऊंगा।"

फिर हम वहां से चल दिये एक जगह नमाज़ के लिये रुके तो सिपाही को सोते हुवे देखा जो सर्दी से ठिठरा जा रहा था। मैं ने अपनी चादर उस पर डालते हुवे कहा : "जब तक हम वुज़ू व नमाज़ से फ़राग़त पाएं तब तक मेरी येह चादर इस के जिस्म को सर्दी से बचाए रखेगी।" इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी आ गए उन्हों ने ह़फ़्स बिन ग़ियाष को मुख़ात़ब कर के कहा : "ऐ ह़फ़्स ! अपने शहर से चलते वक़्त जब तुम अपनी दाढ़ी को मेहंदी लगा कर हम्माम में गए थे तो मैं उसी वक़्त समझ गया था कि अ़नक़रीब तुम्हें क़ाज़ी का ओ़हदा पेश किया जाएगा और तुम उसे क़बूल कर लोगे, देखो ऐसा ही हुवा। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मरते दम तक मैं तुम से कलाम नहीं करूंगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : "फिर वाक़ेई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाब बिन इदरीस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मरते दम तक ह़फ़्स बिन ग़ियाष से गुफ़्त्गू न की।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 224 ह़क़ फ़ैसले पर क़ाइम रहने का सिला

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन लैष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है : "एक ख़ुरासानी शख़्स ने उम्मे जा'फ़र (ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद के वज़ीर जा'फ़र बिन यह़्या की मां) के मजूसी वकील "**मरज़बान**" को अपने ऊंट, तीस हज़ार दिरहम के बदले बेचे। मजूसी वकील ने रक़म देने में शशो पन्ज से काम लिया। ख़ुरासानी जब भी रक़म का मुत़ालबा करता मजूसी उसे टाल देता। बार बार मुत़ालबा करने पर मजूसी ने सिर्फ़ एक हज़ार दिरहम दिये। बिल आख़िर परेशान हो कर ख़ुरासानी अपने एक दोस्त के पास गया और सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। उस के दोस्त ने कहा : "तुम दोबारा मरज़बान मजूसी के पास जाओ और कहो कि कल क़ाज़ी की अ़दालत में ह़ाज़िर हो जाना, मैं ने अपने माल की वुसूली के लिये फ़ुलां शख़्स को वकील बना दिया है।" फिर जब मरज़बान मजूसी क़ाज़ी की अ़दालत में आए तो तुम दा'वा करना कि इस पर मेरा इतना इतना माल, क़र्ज़ है। जब मरजबान क़ाज़ी के सामने इक़रार कर लेगा और रक़म नहीं देगा तो वोह उसे गिरिफ़्तार कर के तुझे तेरा माल दिलवा देगा।"

खुरासानी फ़ौरन मरज़बान के पास गया और कहा : "कल क़ाज़ी की अ़दालत में हाज़िर हो जाना मैं अपने माल की वुसूली के लिये फ़ुलां शख़्स को अपना वकील बना रहा हूं।" सुब्ह जब मरज़बान और खुरासानी क़ाज़ी ह़फ़्स बिन ग़ियाष की अ़दालत में पहुंचे तो खुरासानी ने कहा : "क़ाज़ी साहिब ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को सलामत रखे, इस शख़्स पर मेरे उन्तीस (29) हज़ार दिरहम हैं।" क़ाज़ी साहिब ने मजूसी से कहा : "ऐ मजूसी तुम क्या कहते हो ? क्या इस का दा'वा दुरुस्त है ?" मजूसी ने कहा : "क़ाज़ी साहिब ! अल्लाह तआ़ला आप को सलामत रखे इस शख़्स का दा'वा दुरूस्त है।" क़ाज़ी साहिब ने कहा : "ऐ खुरासानी ! इस ने तुम्हारे माल का इक़रार कर लिया है, अब तुम क्या चाहते हो ?" कहा : "हुज़ूर ! इस से मेरा माल दिलवा दीजिये।" क़ाज़ी साहिब ने कहा : "ऐ मजूसी इस का माल अदा करो।" मजूसी ने कहा : "माल की अदाएगी तो वज़ीर (जा'फ़र बिन यह्या) की वालिदा के ज़िम्मे है।" क़ाज़ी साहिब ने उसे डांटते हुवे कहा : "तू तो अह़मक़ है, अभी तू ने इक़रार किया है और अब कह रहा है कि वज़ीर की वालिदा के ज़िम्मे है। ऐ खुरासानी ! तुम बताओ अब इस मजूसी का क्या किया जाए ?" कहा : "हुज़ूर ! अगर येह मेरा माल अदा करता है तो ठीक, वरना इसे क़ैद कर लीजिये।" क़ाज़ी साहिब ने कहा : "तुम क्या कहते हो ?" उस ने फिर वोही जवाब दिया कि माल तो वज़ीर की वालिदा के ज़िम्मे है।" क़ाज़ी साहिब ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसे क़ैद कर लो।

जब उम्मे जा'फ़र को मजूसी की ख़बर हुई तो बड़ी ग़ज़बनाक हुई और जेलर की त़रफ़ येह पैग़ाम भेजा : "क़ाज़ी ने मरज़बान को गिरिफ़्तार कर लिया है, उस की त़रफ़ तवज्जोह करो और उसे रिहा कर दो।" जैसे ही जेलर को उम्मे जा'फ़र का हुक्म मिला उस ने फ़ौरन मरज़बान मजूसी को रिहा कर दिया। जब क़ाज़ी ह़फ़्स बिन ग़ियाष को मा'लूम हुवा कि मजूसी को रिहा कर दिया गया है तो उस ने कहा : "मैं क़ैद करता हूं और जेलर आज़ाद कर देता है। अब मैं उस वक़्त तक अ़दालत न जाऊंगा जब तक मरज़बान मजूसी दोबारा क़ैद में न आ जाए।" जेलर को क़ाज़ी साहिब की येह बात मा'लूम हुई तो फ़ौरन उम्मे जा'फ़र के पास गया और कहा : "मैं तो बड़ी मुसीबत में फंस गया हूं, अगर अमीरुल मोमिनीन ने मुझ से पूछ लिया कि तुम ने किस के हुक्म से मरज़बान मजूसी को आज़ाद किया है ? तो मैं क्या जवाब दूंगा ? बराए करम मरज़बान को वापस जेल भेज दें।" चुनान्चे, मरज़बान दोबारा क़ैद कर लिया गया।

उम्मे जा'फ़र ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد के पास गई और कहा : "आप का क़ाज़ी नादान है, उस ने मेरे वकील को गिरिफ़्तार कर के बहुद ज़लीलो रुस्वा किया है। आप क़ाज़ी को हुक्म दें कि वोह येह मुक़द्दमा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़दालत में भेज दे।" हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد ने उम्मे जा'फ़र के इस्रार पर हुक्म जारी फ़रमा दिया कि तुम येह मुक़द्दमा, इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले कर दो। और मजूसी का येह मुक़द्दमा सरकारी रजिस्टरों में दर्ज न किया जाए। जब क़ाज़ी ह़फ़्स बिन ग़ियाष को मा'लूम हुवा कि ख़लीफ़ा ने येह हुक्म जारी किया है और क़ासिद मेरे पास पहुंचने ही वाला है तो फ़ौरन वोह अ़दालत गए और उस

मजूसी के ख़िलाफ़ तमाम रेकॉर्ड सरकारी काग़ज़ात में लिखने लगे। अभी येह काम जारी था कि ख़लीफ़ा का क़ासिद आ गया उस ने आते ही कहा : "अमीरुल मोमिनीन की त़रफ़ से आप को पैग़ाम आया है। क़ाज़ी ने कहा : "थोड़ी देर रुक जाओ मैं एक बहुत अहम काम में मसरूफ़ हूं इस से फ़ारिग़ हो कर ख़त़ पढ़ूंगा।" क़ासिद ने कहा : "आप पहले येह ख़त़ पढ़ लें कि इस में अमीरुल मोमिनीन ने आप को क्या हुक्म दिया है।" लेकिन क़ाज़ी ह़फ़्स बिन ग़ियाष अपने काम में मसरूफ़ रहे।

जब तमाम रेकॉर्ड सरकारी काग़ज़ात में दर्ज कर दिये तो क़ासिद से ख़त़ ले कर पढ़ा और कहा : "अमीरुल मोमिनीन को मेरा सलाम कहना और अ़र्ज़ करना कि आप का ख़त़ पढ़ने से पहले ही मैं तमाम रेकॉर्ड दर्ज कर चुका था।" क़ासिद ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप जानते हैं कि आप ने क्या किया है, आप ने अमीरुल मोअमिनीन के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है।" कहा : "जाओ और जो तुम्हें पसन्द हो वोही अमीरुल मोअमिनीन से कह देना।" क़ासिद ख़लीफ़ा के पास आया और सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। क़ासिद की बात सुन कर अमीरुल मोअमिनीन ने हंसते हुवे कहा : "कोई ऐसा शख़्स ले कर आओ जो ह़फ़्स बिन ग़ियाष के पास तीस हज़ार दिरहम पहुंचा दे।" पैग़ाम मिलते ही यह़्या बिन ख़ालिद ह़ाज़िर हुवा और रक़म ले कर क़ाज़ी ह़फ़्स बिन ग़ियाष के पास पहुंचा, आप अ़दालत से वापस आ रहे थे। यह़्या ने कहा : "क़ाज़ी साहि़ब ! आज तो तुम ने अमीरुल मोअमिनीन को खुश कर दिया है और उन्हों ने तुम्हारे लिये तीस हज़ार दिरहम भिजवाए हैं, आख़िर तुम ने ऐसा कौन सा अ़मल किया है ?" क़ाज़ी साहि़ब ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोअमिनीन की ख़ुशियां दोबाला करे और उन की हि़फ़ाज़त फ़रमाए। मैं ने तो रोज़ाना के मा'मूलात से ज़ियादा कोई काम नहीं किया।"

यह़्या बिन ख़ालिद ने कहा : "ज़रा सोचो ! तुम ने ज़रूर कोई ख़ास काम किया है।" क़ाज़ी साहि़ब ने ग़ौरो फ़िक्र कर के कहा : "और तो कुछ ख़ास काम नहीं किया, हां ! इतना ज़रूर है कि आज मैं ने मजूसी के ख़िलाफ़ रेकॉर्ड सरकारी काग़ज़ात में दर्ज किया है कि उस ने नाह़क़ एक ख़ुरासानी की रक़म दबाई हुई थी।" यह़्या बिन ख़ालिद ने कहा : "बस तेरे इसी काम ने अमीरुल मोमिनीन को खुश किया है।" येह सुन कर क़ाज़ी साहि़ब ने अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का शुक्र अदा किया।

जब उम्मे जा'फ़र को मा'लूम हुवा कि क़ाज़ी साहि़ब को इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा है तो वोह ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد के पास गई और कहा : "अमीरल मोअमिनीन ! आप क़ाज़ी को मा'ज़ूल कर दें।" हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने इन्कार किया। वोह इस्रार करती रही। बिल आख़िर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जगह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू युसूफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया और आप को कूफ़ा का क़ाज़ी बना दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तेरह साल तक कूफ़ा के क़ाज़ी रहे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 225 मेरा दिल उसे क़बूल नहीं करता

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد नक़्ल फ़रमाते हैं : ''मेरे चचा हज़रते सय्यिदुना हारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَارِث बहुत ज़ियादा ग़मगीन रहने वाले बुज़ुर्ग थे। एक मरतबा मैं अपने घर के दरवाज़े के क़रीब बैठा था कि हज़रते सय्यिदुना हारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَارِث का वहां से गुज़र हुवा, मैं ने देखा कि भूक की वजह से उन के चेहरे पर तक्लीफ़ के आषार नुमायां हैं। मैं ने फ़ौरन क़रीब जा कर अ़र्ज़ की : ''चचाजान ! आप हमारे घर तशरीफ़ ला कर ख़िदमत का मौक़अ़ दीजिये।'' चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ ले आए। मेरे चचा का घर हमारे घर से काफ़ी बड़ा था और उन के घर हर वक़्त अन्वाओ़ अक़्साम के खाने मौजूद रहते। मैं फ़ौरन वहां से क़िस्म क़िस्म के खाने ले आया।

हज़रते सय्यिदुना हारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَارِث ने हाथ बढ़ा कर एक लुक़्मा लिया, मैं ने देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लुक़्मे को चबाते रहे लेकिन ह़ल्क़ से नीचे न उतार पाए। फिर लुक़्मा मुंह से बाहर निकाला और मुझ से कोई बात किये बिग़ैर तशरीफ़ ले गए। जब दूसरे दिन मुलाक़ात हुई तो मैं ने अ़र्ज़ की : ''चचाजान ! कल आप ने हमारे घर क़दम रंजा फ़रमा कर हमें ख़ुश किया, फिर अचानक क्या हुवा ? क्यूं तशरीफ़ ले गए ?'' फ़रमाया : ''ऐ मेरे बेटे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर ख़ास करम है कि जब कोई ऐसा खाना मेरे सामने आता है जिस में उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा शामिल न हो तो उस खाने से एक बू निकलती है और **मेरा दिल उसे क़बूल नहीं करता**। जैसे ही मैं ने तुम्हारे पेश कर्दा खाने से एक लुक़्मा लिया तो मुझे वोही बू महसूस हुई लिहाज़ा मैं ने वोह लुक़्मा न खाया और तुम्हारे घर के बाहर फेंक कर वापस चला आया।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

हिकायत नम्बर : 226 लश्करे इस्लाम का अ़ज़ीम मुजाहिद

हज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन सुब्हान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि मैं जंगे क़ादिसिय्या में शरीक हुवा। हमारे दुश्मन ''मदाइन'' की त़रफ़ भागे तो हम ने उन का तआ़क़ुब (पीछा) किया। रास्ते में दरयाए ''दिजला'' ह़ाइल था। दुश्मन ने पुल तोड़ दिया और कश्तियों में सुवार हो कर दरया उ़बूर कर लिया। जब हम पुल के क़रीब पहुंचे तो वोह पानी में बह रहा था। कोई राह नज़र न आई। कश्तियां थीं नहीं कि उन के ज़रीए दरया उ़बूर करते। बिल आख़िर लश्करे इस्लाम में से एक अ़ज़ीम मुजाहिद ने अपना घोड़ा लश्कर से निकाला और दरया में दौड़ा दिया वोह मर्दे मुजादिह क़ुरआने पाक की येह आयत पढ़ता जा रहा था :

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ط (پ٤، اٰل عمران:١٤٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कोई जान बे हुक्मे खुदा मर नहीं सकती सब का वक़्त लिखा रखा है।*

देखते ही देखते उस अ़ज़ीम मुजाहिद ने दरया उ़बूर कर लिया। उस के पीछे पीछे तमाम लश्कर ने अपनी अपनी सुवारियां दरया में उतार दीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से सब लश्कर बमअ़ साज़ो सामान सह़ीह़ व सालिम दूसरे किनारे पर पहुंच गया। यहां तक कि किसी की रस्सी या एक तीर भी गुम न हुवा। जब दुश्मन ने हमें देखा तो उन का पूरा लश्कर बिग़ैर जंग किये बहुत सारा माले ग़नीमत छोड़ कर भाग गया। लश्करे इस्लाम में से हर मुजाहिद को तेरह तेरह जानवर और बहुत से सोने चांदी के बरतन मिले। बिग़ैर जंग किये मुसलमानों को येह अ़ज़ीम फ़त्ह़ ह़ासिल हुई और माले ग़नीमत भी बे इन्तिहा मिला।

दश्त तो दश्त हैं दरया भी न छोड़े हम ने — बह़रे ज़ुल्मात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم

हिकायत नम्बर : 227 **बा ह़या नौजवान**

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد अपने वालिदे मोह़तरम से नक़्ल करते हैं : "कूफ़ा में एक इबादत गुज़ार, खूब सूरत व नेक सीरत नौजवान रहता था। वोह अपना ज़ियादा तर वक़्त मस्जिद में गुज़ारता और हर वक़्त यादे इलाही में मश्ग़ूल रहता। एक मरतबा एक ह़सीनो जमील और अ़क़्ल मन्द औ़रत ने उसे देख लिया। देखते ही उस पर आ़शिक़ हो गई और उसी के ख़याल में गुम रहने लगी। बिल आख़िर जब उस की मह़ब्बत शिद्दत इख़्तियार कर गई तो वोह रास्ते में खड़ी हो गई। कुछ देर बा'द वोह इबादत गुज़ार नौजवान मस्जिद की त़रफ़ जाता दिखाई दिया। वोह उस की त़रफ़ लपकी और कहा : "ऐ नौजवान ! मैं तुझ से एक बात कहना चाहती हूं, मेरी बात सुन लो, फिर जो चाहे करना।" उस शर्मो ह़या के पैकर नौजवान ने जब एक ग़ैर मह़रम अजनबिय्या औ़रत की आवाज़ सुनी तो उस त़रफ़ बिल्कुल मुतवज्जेह न हुवा और निगाहें झुकाए तेज़ी से मस्जिद की त़रफ़ बढ़ गया।"

जब मस्जिद से घर की त़रफ़ आने लगा तो वोही औ़रत मिली और कहने लगी : "ऐ नौजवान ! मेरी बात सुन ! मैं तुझ से कुछ कहना चाहती हूं।" नौजवान ने निगाहें झुकाए जवाब दिया : "येह तोहमत की जगह है, मैं नहीं चाहता कि लोग मुझ पर तोहमत लगाने में मुब्तला हों।" औ़रत ने कहा : "वल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी ह़ालत से अच्छी त़रह ख़बरदार हूं, लेकिन मैं अपने नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर यहां आई हूं, मैं ख़ूब जानती हूं कि इतना मा'मूली सा तअ़ल्लुक़ भी लोगों के नजदीक बहुत बड़ा है, तुझ जैसे नेक ख़स्लत और पाकीज़ा लोग आईने की मिस्ल होते हैं कि अदना सी ग़लती भी उन को ऐ़बदार बना देती है। लेकिन क्या करूं मैं इस मुआ़मले में बे बस

हूं, मेरे दिल का ह़ाल येह है कि हर वक़्त तेरी याद में तड़पता है और मेरे जिस्म के तमाम आ'ज़ा तेरी ही त़रफ़ मुतवज्जेह हैं।" नौजवान उस की येह गुफ़्त्गू सुन कर कुछ कहे बिग़ैर अपने घर की जानिब चला गया। घर जा कर उस ने नमाज़ पढ़ना चाही लेकिन उसे ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल न हो सका। बिल आख़िर उस ने एक ख़त़ लिखा और बाहर आया तो देखा कि वोह औ़रत उसी जगह खड़ी है। नौजवान ने जल्दी से ख़त़ उस की त़रफ़ फेंका और वापस चला गया। औ़रत ने ख़त़ उठाया और बे ताब हो कर पढ़ने लगी तो उस में लिखा था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

"ऐ औ़रत ! येह बात अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर ले कि बन्दा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करता है तो वोह उस से दरगुज़र फ़रमाता है। जब दोबारा गुनाह करता है तो उस की पर्दा पोशी फ़रमाता है लेकिन जब बन्दा इतना नाफ़रमान हो जाता है कि गुनाहों को अपना ओढ़ना बिछौना बना लेता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से सख़्त नाराज़ होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी को ज़मीनो आस्मान, पहाड़, जानवर, शजरो ह़जर कोई भी चीज़ बरदाश्त नहीं कर सकती फिर किस में हिम्मत है कि वोह उस की नाराज़ी का सामना करे। ऐ औ़रत ! अगर तू अपने बयान में झूटी है तो मैं तुझे वोह दिन याद दिलाता हूं कि जिस दिन आस्मान पिघल जाएगा और पहाड़ रूई की त़रह़ हो जाएंगे, और तमाम मख़्लूक़ अल्लाह जब्बार व क़ह्हार के सामने घुटने टेक देगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तो अपनी इस्लाह़ में कमज़ोर हूं फिर भला मैं दूसरों की इस्लाह़ कैसे कर सकता हूं ? और अगर तू अपनी बातों में सच्ची है और वाक़ेई तेरी कैफ़िय्यत वोही है जो तू ने बयान की, तो मैं तुझे एक ऐसे त़बीब का पता बताता हूं जो उन दिलों का बेहतरीन इ़लाज जानता है जो मरज़े इ़श्क़ की वजह से ज़ख़्मी हो गए हों और उन ज़ख़्मों का इ़लाज करना भी ख़ूब जानता है जो रन्जो अलम की बीमारी में मुब्तला कर देते हैं। जान ले ! वोह त़बीबे ह़क़ीक़ी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, तू सच्ची त़लब के साथ उस की बारगाह में ह़ाज़िर हो जा। बेशक मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान की वजह से तुझ से तअ़ल्लुक़ नहीं रख सकता :

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ۬ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ﴿۱۸﴾ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾

(پ۲۴،المؤمن:۱۸۔۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाएंगे ग़म में भरे और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए, अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।*

ऐ औ़रत ! जब येह मुआ़मला है तो ख़ुद सोच ले कि भागने की जगह कहां है और राहे फ़िरार क्यूं कर मुमकिन है ?

औ़रत ने ख़त़ पढ़ कर अपने पास रख लिया। कुछ दिनों बा'द फिर उसी रास्ते पर खड़ी हो गई। जब नौजवान की नज़र उस पर पड़ी तो वोह वापस अपने घर की त़रफ़ जाने लगा। औ़रत ने पुकार कर कहा : "ऐ नौजवान ! वापस न जा, इस मुलाक़ात के बा'द फिर कभी हमारी मुलाक़ात न होगी, सिवाए इस के कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारी मुलाक़ात हो। इतना कह कर वोह ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। और रोते हुवे कहने लगी। "जिस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दस्ते क़ुदरत में तेरे दिल के इख़्तियारात हैं, मैं उसी से सुवाल करती हूं कि तेरे बारे में मुझ पर जो मुआ़मला मुश्किल हो गया है वोह इसे आसान फ़रमा दे।" फिर वोह औ़रत नौजवान के क़रीब आई और बोली : "मुझ पर एह़सान कर और कोई ऐसी नसीह़त कर जिस पर अ़मल कर सकूं। बा ह़या नौजवान ने सर झुकाए निगाहें नीची किये जवाब दिया : ख़ुद को अपने नफ़्स से बाज़ रख, नफ़्स की ख़्वाहिशात से बच। मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान याद दिलाता हूं :

وَهُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَ یَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ (پ۷،الانعام:٦٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ।*

येह आयते करीमा सुन कर औ़रत ने अपना सर झुका लिया और पहले से भी ज़ियादा ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो देखा कि नौजवान जा चुका था। वोह अपने घर चली आई और फिर इ़बादत व रियाज़त को अपना मश्ग़ला बना लिया। और हर वक़्त यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहने लगी। जब भी नौजवान की याद आती उस का ख़त़ मंगवा कर आंखों से लगा लेती। एक मरतबा किसी ने पूछा : "तुझे इस त़रह़ करने से क्या मिलता है ?" कहा : "क्या करूं, क्या मेरे लिये इस के इ़लावा भी कोई इ़लाज है ?" वोह दिन भर यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ रहती। जब रात हो जाती तो नवाफ़िल में मश्ग़ूल हो जाती और बिल आख़िर इसी त़रह़ इ़बादत व रियाज़त करते करते इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गई।"

येह भी मन्क़ूल है कि वोह औ़रत एक ख़त़रनाक बीमारी में मुब्तला हो गई जिस की वजह से उस के जिस्म से मुतअष्षिर ह़िस्सा काट दिया जाता। वरना वोह बीमारी पूरे जिस्म में फैल जाती। त़बीब उस के जिस्म से गोश्त काटते तो औ़रत को बहुत तक्लीफ़ होती और वोह उन्हें रोक देती लेकिन जब उस के सामने नौजवान का ज़िक्र किया जाता तो उसे तक्लीफ़ मह़सूस न होती और त़बीब आराम से उस का गोश्त काट लेते। बिल आख़िर इसी बमारी में उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई।

हिकायत नम्बर : 228 ईषार की अनोखी मिषाल

हज़रते सय्यिदुना अबू ईसा मुहम्मद बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيْم से मन्कूल है, मैं ने अबू हनीफ़ा मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को येह फ़रमाते हुवे सुना : "ईद क़रीब थी, मेरे पास उन दिनों सिर्फ़ तीन हज़ार दिरहम थे। मेरे एक बहुत क़रीबी दोस्त हकम बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पैग़ाम भिजवाया कि मेरे पास ख़र्चे के लिये रक़म वग़ैरा नहीं, अगर तुम्हारे पास कुछ रक़म हो तो भिजवा दो। पैग़ाम मिलते ही मैं ने तीन हज़ार दिरहम उन की तरफ़ भिजवा दिये। जब उन के पास रक़म पहुंची तो उन्हें ख़ल्लाद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم का पैग़ाम मिला कि मुझे ईद के ख़र्चे के लिये रक़म की ज़रूरत है, हो सके तो मुझे कुछ रक़म भिजवा दो। पैग़ाम मिलते ही उन्हों ने दिरहमों की तमाम थेलियां बिग़ैर खोले ख़ल्लाद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की तरफ़ भिजवा दीं।

अब मेरे पास बिल्कुल भी ख़र्चा वग़ैरा न था। मैं ने ख़ल्लाद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم को पैग़ाम भिजवा दिया कि अगर तुम्हारे पास कुछ रक़म हो तो भिजवा दो ताकि हम ईद के मौक़अ़ पर अहलो इयाल के लिये अश्याए ख़ुर्दो नौश ख़रीद सकें। उन्हों ने दिरहमों की थेलियां भिजवाईं। जब मैं ने उन्हें खोलना चाहा तो येह देख कर हैरान रह गया कि येह थेलियां तो वोही थीं जो मैं ने हकम बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को भिजवाई थीं। मैं फ़ौरन ख़ल्लाद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के पास गया, सारा वाक़िआ़ सुनाया और पूछा : "आप के पास येह रक़म कहां से आई ?" उन्हों ने फ़रमाया : "मुझे हकम बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भिजवाई थी।" अब मैं सारा मुआ़मला समझ चुका था कि येह दिरहमों की थेलियां वापस मुझ तक कैसे पहुंचीं। मैं हकम बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास गया और उन्हें एक हज़ार दिरहम दिये। फिर ख़ल्लाद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم को एक हज़ार दिरहम भिजवाए और बक़िय्या एक हज़ार दिरहम अपने पास रख लिये। इस तरह हम तीनों को ईद के अख़राजात के लिये कुछ न कुछ रक़म मयस्सर आ गई।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 229 मुसीबत ज़दों का मस्कन

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ علیہ رحمۃ اللہ الرفیق से मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना अबू तालिब ख़ज़रज बिन अ़ली शीराज तशरीफ़ लाए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत ज़ियादा बीमार थे, मैं इन की ख़िदमत किया करता। उन दिनों मैं बहुत ज़ियादा रियाज़त किया करता था, और बाक़ला (या'नी मटर और लोबिया) की चन्द ख़ुश्क फल्लियां चबा कर गुज़ारा कर लेता। मैं

दांतों से बाक़लाअ़ की खुश्क फल्लियां काटने लगा तो उस की आवाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ज़रज बिन अ़ली عَلَيۡهِ رَحۡمَۃُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने सुन ली। उन्हों ने पूछा : "येह क्या मुआ़मला है ?" मैं ने उन्हें बताया : "इन दिनों मैं रियाज़त कर रहा हूं और इफ़्त़ार के वक़्त सिर्फ़ बाक़ला की चन्द फल्लियां खा लेता हूं।"

उन्हों ने रोते हुवे फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! अपने इस फ़े'ल पर षाबित क़दम रहना। पहले मैं भी तुम्हारी त़रह़ रियाज़त किया करता था। एक रात अपने दोस्तों के साथ किसी दा'वत पर बग़दाद गया। वहां हमारी ज़ियाफ़त में ऊंट का भुना हुवा गोश्त पेश किया गया। सब खाने लगे लेकिन मैं ने अपना हाथ रोके रखा। जब मेरे दोस्तों ने देखा तो कहा : तुम क्यूं नहीं खाते ? बिला तकल्लुफ़ खाओ। मैं ने उन के इस्रार पर एक लुक़्मा खा लिया। इस के बा'द से ऐसा मह़सूस करता हूं जैसे चालीस साल पीछे चला गया हूं।" इब्ने ख़फ़ीफ़ عليه رحمة الله الرفيق फ़रमाते हैं : "फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ज़रज बिन अ़ली عَلَيۡهِ رَحۡمَۃُ اللّٰهِ الۡقَوِی बाहर तशरीफ़ ले गए और एक देहात में जा कर पुराने से मकान में रिहाइश इख़्तियार कर ली और पूरे घर को अन्दर और बाहर से सियाह कर दिया। और फ़रमाया : "मुसीबत ज़दों की रिहाइश गाहें ऐसी ही होती हैं, फिर इसी मकान में अपनी सारी ज़िन्दगी गुज़ार दी और यहीं आप رَحۡمَۃُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का इन्तिक़ाल हुवा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم

हिकायत नम्बर : 230 अनोखी सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र ख़ुल्दी رَحۡمَۃُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से मन्क़ूल है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैरुन्नसाज عَلَيۡهِ رَحۡمَۃُ اللّٰهِ الرَّزَّاق से पूछा गया : "आप ख़ैरुन्नसाज के नाम से क्यूं मश्हूर हैं ? क्या निसाज (या'नी कपड़ा बुनना) आप का पेशा रहा है ?" उन्हों ने नफ़ी में सर हिला दिया। मैं ने पूछा : "फिर येह नाम कैसे पड़ा ?" फ़रमाया : "मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अ़हद कर रखा था कि कभी भी नफ़्स की ख़्वाहिश पर ताज़ा खजूर नहीं खाऊंगा। काफ़ी अ़र्से में अपने अ़हद पर क़ाइम रहा। एक मरतबा नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर मैं ने कुछ खजूरें ख़रीदीं और खाने के लिये बैठ गया, अभी एक ही खजूर खाई थी कि एक शख़्स मेरी त़रफ़ बड़ी कड़ी निगाहों से देखने लगा। फिर मेरे पास आया और कहा : ऐ ख़ैर ! तू तो मेरा भागा हुवा गुलाम है।" मैं बहुत ह़ैरान हुवा कि आख़िर येह क्या मुआ़मला है। फिर मुझे समझ आ गया कि इस शख़्स का एक गुलाम था जो भाग गया था और इस के शुबे में येह मुझे अपना गुलाम ख़याल कर रहा है और वाक़िअ़तन मेरी रंगत उस गुलाम जैसी हो गई थी। वोह शख़्स ज़ोर ज़ोर से कह रहा था कि तू तो मेरा भागा हुवा गुलाम है। शोर सुन कर बहुत सारे लोग जम्अ़ हो गए। जैसे ही उन्हों ने मुझे देखा तो बयक ज़बान बोले : "वल्लाह (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम) ! येह तो तेरा गुलाम "ख़ैर" है।"

मैं अच्छी त़रह़ समझ गया कि मुझे किस जुर्म की सज़ा मिल रही है। वोह शख़्स मुझे अपना ग़ुलाम समझ कर अपनी दुकान पर ले गया वहां उस के और भी ग़ुलाम मौजूद थे जो कपड़े बुनते थे। मुझे देख कर दूसरे ग़ुलाम कहने लगे : ऐ बुरे ग़ुलाम ! तू अपने आक़ा से भागता है ? चल, यहां आ, और अपना वोह काम कर जो तू किया करता था।" फिर मालिक ने मुझे हुक्म दिया कि जाओ और फ़ुलां कपड़ा बुनो। जैसे ही मैं कपड़ा बुनने लगा तो ऐसा मह़सूस हुवा जैसे मैं बहुत माहिर कारी गर हूं और कई सालों से येह काम कर रहा हूं। चुनान्चे, मैं दूसरे ग़ुलामों के साथ मिल कर काम करने लगा। वहां काम करते हुवे जब कई महीने गुज़र गए तो एक रात मैं ने ख़ूब नवाफ़िल पढ़े और सारी रात इ़बादत में गुज़ार दी फिर सजदे में जा कर येह दुआ़ की : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे अब कभी भी अपने अ़हद से न फिरूंगा। इसी त़रह़ दुआ़ करता रहा, जब सुब्ह़ हुई तो देखा कि मैं अपनी अस्ली सूरत में आ चुका था। फिर मुझे छोड़ दिया गया। बस इस त़रह़ मेरा नाम "ख़ैरुन्नसाज" पड़ गया।"

(سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللہُ تَعَالٰی कैसे कैसे मुजाहदात किया करते थे। वोह ह़राम ग़िज़ा से तो हर दम बचते ही थे। साथ साथ ह़लाल चीज़ें भी रिज़ाए इलाही के लिये तर्क कर दिया करते, नफ़्सानी ख़्वाहिशात की हरगिज़ इत्तिबाअ़ न करते। हर काम में हुक्मे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को पेशे नज़र रखते। पेट का बल्कि, हर हर उ़ज़्व का क़ुफ़्ले मदीना लगाते।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का मुश्कबार मदनी माह़ोल हमें बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللہُ الْمُبِیْن की याद दिलाता है। इस माह़ोल में आ कर हर हर उ़ज़्व का क़ुफ़्ले मदीना लगाने का ज़ेह्न बनता है। दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में "अपने पेट को ह़राम ग़िज़ा से बचाना और ह़लाल ख़ूराक भी भूक से कम खाना पेट का "**क़ुफ़्ले मदीना**" कहलाता है।)

या इलाही पेट का क़ुफ़्ले मदीना कर अ़त़ा   अज़ पए ग़ौसो रज़ा कर भूक का गौहर अ़त़ा

हि़कायत नम्बर : 231   बा करामत नौजवान बुज़ुर्ग

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन दावूद दीनवरी علیہ رحمۃ اللہ الجلی कहते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को फ़रमाते हुवे सुना : "कि एक मरतबा जब मैं "**असविया**" से "**रमलह**" की त़रफ़ जा रहा था तो रास्ते में एक ऐसा शख़्स मिला जो नंगे पाउं, नंगे सर था। उस के पास दो चादरें थीं एक का तहबन्द बांधा हुवा था और एक कन्धों तक ओढ़ी हुई थी। मौसिमे गर्मा उ़रूज पर था, मैं उस शख़्स को देख कर बहुत ह़ैरान था कि इस क़दर गर्मी में इस की येह ह़ालत ! उस के पास न तो ज़ादे राह था और न ही कोई ऐसा बरतन या पियाला

वग़ैरा जिसे ब वक़्ते ज़रूरत इस्ति'माल कर सके। मैं ने अपने दिल में कहा : "अगर इस शख़्स के पास रस्सी और डोल होता जिस के ज़रीए़ येह पानी निकाल कर वुज़ू वग़ैरा कर सकता तो येह इस के लिये बेहतर था।"

मैं दोपहर के वक़्त उस के पास गया और कहा : "ऐ नौजवान ! तू ने जो चादर अपने कन्धों तक ओढ़ी हुई है अगर इसे सर पर ओढ़ लेता तो सूरज की तपिश से बच जाता। मेरी बात सुन कर वोह ख़ामोश रहा और आगे चल दिया। कुछ देर बा'द मैं ने फिर कहा : तुम इतनी सख़्त गर्मी में नंगे पाउं हो, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कुछ देर मैं जूते पहन लूं और कुछ देर तुम ?" उस ने कहा : "तुम बहुत फ़ुज़ूल गो हो, क्या तुम ने कभी ह़दीषे पाक लिखी है ?" मैं ने कहा : "हां !" बोला : "क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी शख़्स के इस्लाम की ख़ूबी येह है कि जो बात काम की न हो उसे छोड़ दे।" (جامع الترمذی،ابواب الزھد،باب من حسن اسلام المرء ترکہ مالا یعنیہ،الحدیث۲۳۱۷)

येह ह़दीषे पाक सुना कर वोह कुछ देर ख़ामोश खड़ा रहा फिर आगे चल दिया। अब मेरे पास पानी ख़त्म हो चुका था। जब मैं साहि़ले समन्दर के पास पहुंचा तो प्यास लगने लगी। वोह मेरी त़रफ़ आया और कहा : "क्या तुम प्यासे हो ?" मैं ने नफ़ी में सर हिला दिया। येह देख कर वोह आगे चल दिया, चलते चलते मुझे बहुत ज़ियादा प्यास मह़सूस होने लगी। वोह फिर मेरी त़रफ़ आया और कहा : "क्या तुम्हें बहुत ज़ियादा प्यास लगी है ?" मैं ने कहा : "हां लेकिन तुम यहां मीठा पानी कहां से लाओगे ?" उस ने कोई जवाब न दिया और मेरा डोल उठा कर समन्दर में डाल दिया और उसे भर कर मेरे पास ले आया फिर कहा : "पानी पी लो।" मैं ने पिया तो समन्दर का वोह खारा पानी दरयाए "नील" के मीठे और साफ़ पानी से ज़ियादा शीरीं और उ़म्दा था। उस डोल में थोड़ी सी घास पड़ी हुई थी। मैं ने कहा : "येह शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली मा'लूम होता है। मैं ज़रूर इस की सोह़बत इख़्तियार करूंगा।

चुनान्चे, मन्ज़िल पर पहुंच कर मैं ने उस से कहा : "मैं तुम्हारे साथ सफ़र करना चाहता हूं।" कहा : "अच्छा तुम्हें क्या पसन्द है, तुम आगे चलोगे या मैं ?" मैं ने कहा : "अगर तुम आगे चलोगे तो मुझे बहुत पीछे छोड़ दोगे।" चुनान्चे, मैं आगे आगे चलने लगा। मैं थोड़ी दूर चल कर आराम के लिये रुक जाता फिर चलने लगता। मैं इसी त़रह़ चलता रहा। जब वोह मेरे क़रीब आया तो मैं ने कहा : "मैं तुम्हारे साथ चलना चाहता हूं, मुझे अपने साथ रख लीजिये।"

उस ने कहा : "ऐ अबू बक्र ! अगर तुम इस बात पर राज़ी हो कि तुम चलते रहो और मैं बा'ज़ जगह बैठ जाऊं फिर तो ठीक है वरना तुम मेरे रफ़ीक़ नहीं बन सकते।" फिर वोह मुझे छोड़ कर चल दिया और मन्ज़िल पर पहुंच कर क़ियाम किया। वहां मेरे कुछ दोस्त रहते थे। उन के पास एक बीमार शख़्स था मैं ने उन से कहा : "इस बीमार पर डोल में मौजूद पानी के कुछ छींटे डालो।" उन्हों ने जैसे ही पानी उस के ऊपर ड़ाला वोह फ़ौरन सिह़ह़त याब हो गया और उस

की बीमारी दूर हो गई। फिर मैं ने अपने दोस्तों से उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ पूछा कि वोह कहां है तो उन्हों ने जवाब दिया हमें तो वोह कहीं भी नज़र नहीं आ रहा। मैं हैरान था कि न जाने वोह बा करामत बुज़ुर्ग कहां चला गया था।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 232 सख़्त गर्मी में नफ़्ली रोज़े रखने वाला आ'राबी

ह़ज़रते सईद बिन अबी उ़र्वा से मन्क़ूल है कि एक मरतबा "**ह़ज्जाज**" नामी शख़्स ह़ज के इरादे से निकला। मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के दरमियान पानी के क़रीब क़ियाम किया। फिर दस्तरख़्वान बिछवा कर खाना मंगवाया और अपने ख़ादिम से कहा। "जाओ ! देखो ! आस पास कोई शख़्स नज़र आए तो उसे मेरे पास ले आओ, ताकि वोह मेरे साथ खाना खा ले और मैं उस से कुछ गुफ़्तगू कर लूं।" ख़ादिम किसी आदमी की तलाश में इधर उधर घूमने लगा। बिल आख़िर पहाड़ के करीब उसे एक आ'राबी, बकरी के बालों की चादर ओढ़े सोया हुवा नज़र आया। उस ने पाउं मार कर आ'राबी को जगाया और कहा : "चलो, तुम्हें हमारा अमीर बुला रहा है।" वोह आ'राबी ह़ज्जाज के पास आया तो उस ने कहा : "अपने हाथ धो लो और मेरे साथ खाना खाओ।" आ'राबी ने जवाब दिया : "तुझ से पहले मैं एक ऐसी हस्ती की दा'वत क़बूल कर चुका हूं जो तुझ से बेहतर है।"

ह़ज्जाज ने पूछा : "वोह कौन है ?" आ'राबी ने कहा : "वोह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला है। उस ने मुझे रोज़ा रखने की दा'वत दी और मैं ने उस की दा'वत क़बूल करते हुवे रोज़ा रख लिया।" ह़ज्जाज ने कहा : "इतनी शदीद गर्मी में तू ने रोज़ा रखा है ?" कहा : "हां ! मैं ने रोज़े मह़शर की गर्मी के पेशे नज़र रोज़ा रखा है जो आज के दिन से बहुत ज़ियादा होगी।" ह़ज्जाज ने कहा : "तू अभी खाना खा ले, कल रोज़े की क़ज़ा कर लेना।" आ'राबी ने कहा : "क्या तुम इस बात की ज़मानत देते हो कि मैं कल तक ज़िन्दा रहूंगा ?" ह़ज्जाज ने कहा : "मैं भला इस बात की ज़मानत कैसे दे सकता हूं ?" आ'राबी ने कहा : "अगर तुम इस बात की ज़मानत नहीं दे सकते तो फिर मुझे ऐसी मुद्दत की उम्मीद क्यूं दिलाते हो जिस पर तुम क़ादिर ही नहीं ?"

ह़ज्जाज ने कहा : "खाओ ! येह खाना बहुत उ़म्दा है।" आ'राबी ने कहा : "न तो तू ने इसे उम्दा किया है और न ही बावर्ची ने लेकिन उ़म्दा तो येह उस वक़्त होगा जब बुराई से बचाए, इतना कह कर आ'राबी वहां से चला गया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 233 नसीह़त आमोज़ कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हैषम ख़ालिद बिन अबू सक्र सदूसी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद के ह़वाले से बयान करते हैं कि "जब ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन नस्र त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق तशरीफ़ लाए और आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्र के क़रीब बैठ गए। फिर लोगों को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : "ऐ लोगो ! बेशक दुन्या से बे रग़बत रहने वाले दुन्या में भी आराम व सुकून से रहते हैं और कल बरोज़े क़ियामत उन पर ह़िसाबो किताब भी आसान होगा। और दुन्या में रग़बत करने वाले दुन्यादार लोग यहां भी थकन से चूर चूर हैं और कल क़ियामत में उन पर ह़िसाबो किताब भी सख़्त होगा। दुन्या से बे रग़बती दुन्या और आख़िरत में राह़त व सुकून का बाइ़ष और इस में रग़बत करना दुन्या व आख़िरत में थकावट और परेशानी का बाइ़ष है।"

फिर कहने लगे : "ऐ अबू सलमान ! **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुझ पर रह़्म फ़रमाए, तेरा मर्तबा कितना बुलन्द है कि तू ने अपने नफ़्स पर सब्र को लाज़िम कर लिया, यहां तक कि नफ़्स तेरा ताबेअ़ हो गया। तू ने नफ़्स को भूका व प्यासा रखा अगर तू चाहता तो इसे खिला पिला सकता था। तू ने अपना खाना इन्तिहाई सादा रखा अगर तू चाहता तो उ़म्दा खाना खा सकता था। तू ने खुर्दुरा लिबास पहना अगर चाहता तो नर्म लिबास पहन सकता था।

ऐ अबू सलमान ! तू ने न तो ठन्डा पानी त़लब किया। न ही कभी नर्म व उ़म्दा लिबास और उ़म्दा खाने की ख़्वाहिश की। तू ने तमाम चीज़ें आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लीं। मैं तो येही ख़याल करता हूं कि तू अपनी त़लब में कामयाब हो गया। जो तू ने चाहा तुझे मिल गया। ऐसा कौन है जिस ने तेरे जैसा अ़ज़्म किया और तेरी त़रह़ सब्र किया ? तू ने अह़ादीषे मुबारका सुनीं और लोगों को ह़दीष बयान करता हुवा छोड़ आया। तूने दीन की समझ बूझ ह़ासिल की और लोगों को फ़तवा देता हुवा छोड़ आया। ह़िर्स व तम्अ़ तुझे तेरे रास्ते से न बहका सके। न तो तू ने लोगों के कारोबार में दिलचस्पी ली, न अच्छे लोगों से ह़सद किया, न उ़म्दा लोगों को ऐ़ब लगाया और न ही बादशाहों और दोस्तों के तह़ाइफ़ वग़ैरा क़बूल किये। तू ने अपने आप को अपने घर में क़ैद रखा, न कोई तुझ से गुफ़्तगू करने वाला था और न ही तेरे लिये कोई नया वाक़िआ़ रूनुमा हुवा। तेरे घर के दरवाज़े पर पर्दा तक न था, न तो तेरे पास पानी ठन्डा करने के लिये मटका था न ही रात का खाना ठन्डा करने के लिये कोई बड़ा पियाला था। अगर तू अपने जनाज़े में शिर्कत करने वालों और अपनी पैरवी करने वालों को देख लेता तो तुझे मा'लूम हो जाता कि उन्हों ने तेरी कितनी ता'ज़ीमो तौक़ीर की। तू ने हमेशा ज़ोहद की चादर ओढ़े रखी।

ऐ लोगो ! तुम में से कोई शख़्स भी दुन्या में रहने की रग़बत न करे मगर इस जैसे लोगों से मह़ब्बत करे। यक़ीनन बड़ा फ़रमां बरदार वोह है जो ह़क़ीक़ी ज़ाहिद और उमूरे आख़िरत के लिये ख़ूब कोशिश करने वाला हो। पाकी है उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के लिये जो फ़रमां

बरदारों का अज्र ज़ाएअ़ नहीं करता और न ही किसी के अ़मल को भूलता है। मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ बड़ी अ़ज़्मतों वाला है।'' इतना कहने के बा'द इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق लोगों के हमराह क़ब्रिस्तान से वापस चले आए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 234 मालो दौलत का बेहतरीन इस्ति'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुसैन अह़मद बिन हुसैन वाइज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि ''अबू अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मूसा हाशिमी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی के पास एक यतीम बच्चे के दस हज़ार दीनार अमानत रखे गए, उन्हें तंगदस्ती ने आ लिया और नौबत फ़ाक़ों तक पहुंचने लगी। बिल आख़िर मजबूर हो कर अमानत रखी हुई रक़म अपने इस्ति'माल में ले आए। जब यतीम बच्चा बड़ा हो गया तो सुलत़ान ने हुक्म दिया कि इस का माल इस के सिपुर्द कर दिया जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा हाशिमी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : ''जब मुझे येह हुक्म मिला तो मैं बहुत परेशान हुवा, ज़मीन अपनी तमाम तर वुस्अ़त के बा वुजूद मुझ पर तंग होने लगी। समझ में नहीं आ रहा था कि मैं कहां जाऊं और किस त़रह़ रक़म की अदाएगी करूं। इसी परेशानी के आ़लम में सुब्ह़ सुब्ह़ घर से निकला और अपने ख़च्चर पर सुवार हो गया। मेरा इरादा था कि मैं ''कर्ख़'' जाऊं शायद कोई राह निकल आए। मैं बे ख़याली के आ़लम में अपने ख़च्चर पर सुवार न जाने किस सम्त जा रहा था। बिल आख़िर मेरा ख़च्चर ''**सलुल्ली**'' की सम्त जाने वाले रास्ते पर चलता हुवा ह़ज़रते सय्यिदुना दा'लज बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد की मस्जिद के दरवाज़े के पास रुक गया। मैं नीचे उतरा और मस्जिद में दाख़िल हो गया। फ़ज्र की नमाज़ मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना दा'लज बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد की इक़्तिदा में अदा की। नमाज़ के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मेरी त़रफ़ आए। मुझे ख़ुश आमदीद कहा और अपने घर ले गए। हम अभी बैठे ही थे कि एक लौंडी बेहतरीन दस्तरख़्वान ले आई फिर हरीसा (या'नी गोश्त और कुटी हुई गन्दुम मिला कर पकाया हुवा सालन) ले आई, ह़ज़रते सय्यिदुना दा'लज बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد ने फ़रमाया : खाइये ! मैं ने बुझे बुझे दिल से चन्द लुक़्मे खाए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मेरी येह ह़ालत देखी तो फ़रमाया : आप खाना क्यूं नहीं खा रहे और इतने परेशान क्यूं हैं ?''

मैं ने उन्हें सारा वाक़िआ़ बता दिया और कहा : ''अब मैं परेशान हूं कि इतना माल कहां से लाऊं ?'' मेरी रूदाद सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तसल्ली देते हुवे फ़रमाया : ''आप बे फ़िक्र हो कर खाना खाएं, आप की ह़ाजत पूरी कर दी जाएगी।'' फिर उन्हों ने मीठा मंगवाया हम ने मिल कर खाना खाया फिर हाथ धोए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी लौंडी से फ़रमाया : ''फ़ुलां कमरे का दरवाज़ा खोलो जैसे ही दरवाज़ा खोला तो मैं येह देख कर हैरान रह गया कि वहां बहुत से थैले और दीनारों से भरे हुवे काफ़ी सारे टोकरे रखे थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वहां से कुछ थैले ले आए और मेरे सामने ला कर खोले तो वोह दीनारों से भरे हुवे थे। फिर ग़ुलाम को हुक्म दिया कि तराज़ू

ले आओ। गुलाम तराज़ू ले आया और दस हज़ार दीनार वज़्न कर के थैलियों में भर दिये गए।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "रक़म ले जाइये और अपना क़र्ज़ अदा कीजिये।"

मैं ने एह़सान मन्दाना अन्दाज़ में कहा : "आप की येह रक़म मुझ पर क़र्ज़ है। मैं येह ज़रूर वापस करूंगा।" फिर मैं उन का शुक्रिया अदा करते हुवे वहां से चला आया। घर पहुंच कर सब्ज़ उ़म्दा चादर ओढ़ी, ख़च्चर पर सुवार हुवा और बादशाह के दरबार में पहुंच कर बड़े पुर वक़ार अन्दाज़ में कहा : "मेरे मुतअ़ल्लिक़ लोगों में येह बात मश्हूर हो गई कि मैं यतीम का माल खा कर भाग गया हूं। येह देखिये ! येह सारा माल ह़ाज़िरे ख़िदमत है।" येह देख कर बादशाह ने क़ाज़ी, गवाह और तमाम रेकोर्ड त़लब किये। फिर तमाम माल उस यतीम को अदा कर दिया। फिर मेरी ता'रीफ़ करते हुवे शुक्रिया अदा किया और मुझे घर जाने की इजाज़त दे दी।

जब मैं घर पहुंचा तो एक रईस ज़ादे ने मुझे बुलाया और कहा : "मैं अपनी ज़मीन तुझे ठेके पर देता हूं, इस से जो फ़सल होगी हम एक मुक़र्ररा मिक़्दार में आपस में तक़्सीम कर लेंगे। क्या तुम राज़ी हो ?" मैं ने हां कर दी और ज़मीन की देख भाल करने लगा। एक साल पूरा हुवा तो मैं ने फ़सल उस के ह़वाले कर दी उसे उस साल काफ़ी नफ़्अ़ हुवा, मैं ने तीन साल के लिये उस की ज़मीन ली थी, तीन साल बा'द जब मैं ने ह़िसाब लगाया तो मेरे ह़िस्से में तीस हज़ार दीनार आए। मैं ने दस हज़ार दीनार लिये और ह़ज़रते सय्यिदुना दा'लज बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد की त़रफ़ चल दिया। सुब्ह़ की नमाज़ उन की इक़्तिदा में अदा की। नमाज़ के बा'द वोह मुझे अपने घर ले गए। दस्तरख़्वान बिछाया गया और हमारे सामने "हरीसा" रख दिया गया। मैं ने इत़्मीनान और ख़ुश दिली से खाना खाया। जब फ़रागत़ पा चुके तो ह़ज़रते सय्यिदुना दा'लज बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد ने फ़रमाया : "आप का क्या ह़ाल है और क्या ख़बर है ?" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम और आप के तआ़वुन से मैं ने तमाम क़र्ज़ा उतार दिया और इस वक़्त मेरी मिल्किय्यत में तीस हज़ार दीनार हैं। जो दस हज़ार दीनार मैं ने आप से क़र्ज़ लिये थे वोह वापस करने आया हूं।"

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस वक़्त मैं ने रक़म दी थी तो इस निय्यत से न दी थी कि वापस लूंगा। जाइये ! और येह तमाम रक़म अपने बच्चों पर ख़र्च कीजिये।" मैं ने ह़ैरान हो कर पूछा : "ऐ शैख़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) आख़िर इतना माल आप के पास कहां से आया कि आप दस हज़ार दीनार मुझे हदिय्या दे रहे हैं ?" फ़रमाया : "बात दर अस्ल येह है कि मैं ने छोटी उ़म्र में ही क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर लिया था। फिर अह़ादीषे करीमा याद कीं। इस त़रह़ मैं मश्हूर हो गया, फिर मुझे एक बहुत मालदार बह़री ताजिर मिला। उस ने मुझ से पूछा : "क्या तुम ही दा'लज बिन अह़मद हो ?"

मैं ने कहा : "हां।" तो वोह कहने लगा : "मैं चाहता हूं कि अपना माल तुम्हें दूं ताकि तुम इस के ज़रीए़ तिजारत करो। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें जो भी नफ़्अ़ देगा वोह हम दोनों के दरमियान बराबर बराबर तक़्सीम होगा। फिर मेरे माल से मज़ीद तिजारत करते रहना।" फिर उस ने हज़ार हज़ार दिरहम की थेलियां देते हुवे कहा : "येह सारा माल अपने पास रखो और

तिजारत शुरूअ़ कर दो। और येह मज़ीद कुछ रक़म रखो। जहां तुम देखो कि ख़र्च करना मुनासिब है बिला झिझक ख़र्च करना और जो तुम्हें मुस्तहिक़ नज़र आए उसे दे देना।'' चुनान्चे, मैं ने तिजारत शुरूअ़ कर दी। जितना नफ़अ़ होता मैं उस में से निस्फ़ उसे भिजवा देता और वोह उतना ही माल मज़ीद उस में शामिल कर के वापस मेरी त़रफ़ भेज देता। इसी त़रह़ कई साल गुज़र गए। मुआ़हदे का आख़िरी साल आया तो वोह ताजिर मेरे पास आया और कहा : ''मैं अकषर समन्दरी सफ़र में रहता हूं। बेशक मुझे भी मौत आनी है जो वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुक़र्रर किया है वोह ज़रूर मुझ पर भी आएगा। येह सारा माल तुम रख लो, इस में से सदक़ा करो, मसाजिद बनाओ और ख़ैर के कामों में ख़र्च करो।'' इतना कहा और बे इन्तिहा माल छोड़ कर वापस चला गया। बस इस त़रह़ मेरे पास येह सारा माल आया और मैं इसे ऐसे ही नेक कामों में ख़र्च करता हूं। सारा वाक़िआ़ सुनाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना दा'लज बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد ने फ़रमाया : ''ऐ अबू मूसा ! जब तक मैं ज़िन्दा रहूं तब तक येह बात किसी को न बताना।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 235 एक आ़रिफ़ा की मा'रिफ़त भरी गुफ़्तगू

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बिन मसरूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुवे सुना : एक मरतबा दौराने सफ़र एक औ़रत ने मुझ से पूछा : ''तुम्हारा तअ़ल्लुक़ कहां से है ?'' मैं ने कहा : ''मैं परदेसी हूं।'' बोली : ''अफ़्सोस है तुम पर ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के होते हुवे भी तुम्हें अजनबिय्यत मह़सूस हो रही है, वोह पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तो कमज़ोरों और ग़रीबों का मूनिस व मददगार है।'' येह सुन कर मैं रोने लगा। उस ने कहा : ''तुम्हें कौन सी चीज़ रुला रही है ?'' मैं ने कहा : ''मेरे ज़ख़्मी दिल पर मरहम रख दी गई है, अब मैं जल्दी नजात पा जाऊंगा।'' कहा : ''अगर तू अपनी बात में सच्चा है तो फिर रोया क्यूं ?'' मैं ने कहा : ''क्या सच्चा शख़्स रोता नहीं ?'' कहा : ''नहीं !'' क्यूं कि आंसू बह जाने के बा'द दिल को सुकून मिल जाता है।''

उस की इस बात ने मुझे तअ़ज्जुब में डाल दिया। फिर वोह कहने लगी : ''तुम इतने ह़ैरान क्यूं हो रहे हो ?'' मैं ने कहा : ''मुझे तुम्हारी बातों से बहुत तअ़ज्जुब हो रहा है।'' कहा : ''क्या तुम अपने ज़ख़्म को भूल गए ?'' मैं ने कहा : नहीं, मैं अपने ज़ख़्मों को नहीं भुला। तुम मुझे कोई ऐसी बात बताओ जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे नफ़अ़ दे।'' कहा : ''जो फ़ाइदा तुझे हुकमा की बातें सुन कर हुवा क्या वोह तुम्हारे लिये काफ़ी नहीं ?'' मैं ने कहा : ''नहीं, मैं अभी नेक बातों की त़लब से बे नियाज़ नहीं हुवा।'' कहा : ''तू ने सच कहा, पस अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सच्ची मह़ब्बत कर, उस का सच्चा आ़शिक़ बन जा। कल बरोज़े क़ियामत जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने औलियाए

किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِم को अपनी मह़ब्बत के जाम पिलाएगा तो फिर वोह कभी भी प्यास मह़सूस नहीं करेंगे।" मैं रोने लगा और मेरे सीने से घुटी घुटी सी आवाज़ आने लगी। फिर वोह औ़रत मुझे वहीं रोता छोड़ कर येह कहती हुई चली गई : "ऐ मेरे आक़ा ! तू कब तक मुझे ऐसे घर में बाक़ी रखेगा जहां मैं किसी भी ऐसे शख़्स को नहीं पाती जो रोने में मेरा मददगार षाबित हो।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ}

हिकायत नम्बर : 236 बा अ़मल मुरीदनी का बेटा डूब कर भी बच गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان से मन्क़ूल है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना सरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की एक मुरीदनी का लड़का मद्रसे जाता था। एक दिन उस्ताज़ ने आटा पिसवाने के लिये उसे चक्की पर भेजा। रास्ते में नहर थी। जब वोह नहर से गुज़रने लगा तो उस में डूब गया। जब उस्दाज़ को उस के डूबने की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह बहुत पेरशान हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "आओ मेरे साथ चलो !" हम चल दिये। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वहां पहुंच कर उस औ़रत को सब्र के फ़ज़ाइल बताए। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहने की तरग़ीब दिलाई।

औ़रत ने कहा : "हुज़ूर ! आज आप मुझे सब्रो रिज़ा के मुतअ़ल्लिक़ ख़ास तौ़र पर नसीह़त कर रहे हैं, इस में क्या ह़िक्मत है ?" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी मुरीदनी से फ़रमाया : "तुम्हारा बेटा नहर में डूब गया है।" उस ने मुतअ़ज्जिब हो कर पूछा : "मेरा बेटा ?" फ़रमाया : "हां।" औ़रत ने कहा : "बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा नहीं किया होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی उसे सब्रो रिज़ा की तल्क़ीन करने लगे। औ़रत ने कहा : "आओ ! मेरे साथ चलो। चुनान्चे तमाम लोग उस औ़रत के साथ चल दिये। जब नहर पर पहुंचे तो औ़रत ने लोगों से पूछा : "बताओ ! वोह कहां है ?" लोगों ने बताया : "तुम्हारा लड़का फुलां जगह डूबा है।" औ़रत ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : "ऐ मेरे बेटे मुह़म्मद !" फ़ौरन नहर से उस के बेटे ने पुकार कर कहा : "अम्मी जान ! मैं यहां हूं, अम्मी जान ! मैं यहां हूं।" औ़रत फ़ौरन नहर में उतरी, अपने बेटे का हाथ पकड़ कर बाहर ले आई और ख़ुशी ख़ुशी अपने घर चली गई।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के पास गए और पूछा येह क्या मुआ़मला है, और ऐसा क्यूंकर हुवा ? ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से फ़रमाया : "कहो, क़ुल।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "क़ुल" कहा।

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی ने फ़रमाया : "बात दर अस्ल येह है कि वोह औ़रत अह़कामाते इलाहिय्या عَزَّوَجَلَّ को पूरा करने वाली थी और जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात पर अ़मल पैरा हो उसे कोई ऐसा ह़ादिषा पेश नहीं आता जिसे वोह न जानता हो। जब उस औ़रत का बेटा डूबा तो उसे मा'लूम न था, इस लिये उसे यक़ीन न आया और उस ने कहा : बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा नहीं किया। उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर यक़ीने कामिल था। इस लिये उस का बेटा उसे वापस कर दिया गया।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ﴿

ह़िकायत नम्बर : 237 सत्ताईस साल मुसलसल जिहाद करने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ता ख़फ़्फ़ाफ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق से मरवी है कि "मुझे मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के मशाइख़ ने बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान फ़र्रुख़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बनू उमय्या के दौरे ख़िलाफ़त में सरह़दों की ह़िफ़ाज़त के लिये ख़ुरासान गए। आप की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا उम्मीद से थीं और आप का बेटा रबीआ़ मां के पेट में था। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी ज़ौजा के पास तीस (30) हज़ार दीनार छोड़ कर गए। सत्ताईस साल बा'द आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वापस मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا आए। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथ में नेज़ा था और आप घोड़े पर सुवार थे। घर पहुंच कर नेज़े से दरवाज़ा अन्दर धकेला तो ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बाहर निकले। जैसे ही उन्हों ने एक मुसल्लह़ शख़्स को देखा तो बड़े ग़ज़ब नाक अन्दाज़ में बोले : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या तू मेरे घर पर ह़म्ला करना चाहता है ?"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़र्रुख़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "नहीं, मैं ह़म्ला नहीं करना चाहता। तुम येह बताओ कि तुम्हें मेरे घर में दाख़िल होने की जुरअत कैसे हुई।" फिर दोनों में तल्ख़ कलामी होने लगी। क़रीब था कि दोनों दस्तो गिरेबान हो जाते। लेकिन हमसाए बीच में आ गए और लड़ाई न हुई। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और दूसरे बुज़ुर्ग ह़ज़रात को ख़बर हुई तो वोह फ़ौरन चले आए। लोग उन्हें देख कर ख़ामोश हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस शख़्स से कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस वक़्त तक तुम्हें न छोड़ूंगा जब तक तुम्हें सुल्त़ान की अ़दालत में न ले जाऊं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़र्रुख़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी तुझे सुल्त़ान की अ़दालत में ले जाए बिग़ैर न छोड़ूंगा। एक तो तुम मेरे घर में बिला इजाज़त दाख़िल हुवे और फिर मुझी से झगड़ा कर रहे हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान फ़र्रुख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़रमाया : "ऐ शैख़ ! येह घर तुम्हारा नहीं है।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरा नाम फ़र्रुख़ है और येह मेरा ही घर है।" येह सुन कर आप की ज़ौजए मोह़तरमा जो दरवाज़े के पीछे सारी गुफ़्तगू सुन रही थीं, बाहर आईं और कहा : "येह मेरे शोहर हैं और रबीआ़ इन का बेटा है। जिस वक़्त येह जिहाद पर गए थे तो रबीआ़ मेरे पेट में था।" येह सुन कर दोनों बाप बेटे गले मिले और उन की आंखों से ख़ुशी के आंसू छलक पड़े। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान फ़र्रुख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुशी ख़ुशी घर में दाख़िल हुवे और ख़ुश होते हुवे अपनी ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا से पूछा : "येह मेरा बेटा है ?" उन्हों ने फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह तुम्हारा ही बेटा है।"

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : "अच्छा वोह तीस हज़ार दीनार कहा हैं जो मैं छोड़ कर गया था ?" अ़र्ज़ की : "वोह मैं ने एक जगह दफ़्ना दिये थे, कुछ दिन बा'द निकाल लूंगी।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मस्जिद चले गए और अपने ह़ल्क़ए दर्स में बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस, ह़सन बिन ज़ैद, इब्ने अबी अ़ली लहबी, मुसाह़िक़ी और मदीना शरीफ़ के दूसरे मुअ़ज़्ज़ज़ ह़ज़रात رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इर्द गिर्द बैठ गए। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दर्स ह़दीष देने लगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़र्रुख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه घर ही में थे कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने कहा : "आप मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में जा कर नमाज़ अदा फ़रमा लें।" चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मस्जिद में गए तो देखा कि एक ह़ल्क़ा लगा हुवा है और लोग बड़े अदब व तवज्जोह से इल्मे दीन सीख रहे हैं और एक ख़ूबरू नौजवान उन्हें दर्स दे रहा है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क़रीब गए तो लोगों ने आप के लिये जगह कुशादा की। आप बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपना सर थोड़ा नीचे कर लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान फ़र्रुख़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इन को पहचान न सके। आप ने लोगों से पूछा : "येह कौन साह़िब हैं, जो इल्म के मोती लुटा रहे हैं ?" लोगों ने बताया : "येह रबीआ़ बिन अ़ब्दुर्रह़मान हैं।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बेह़द ख़ुश हुवे और फ़रमाया : "**अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मेरे बेटे को कैसा अ़ज़ीम मर्तबा अ़ता फ़रमाया है।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुशी ख़ुशी घर तशरीफ़ लाए और अपनी ज़ौजा से फ़रमाया : "मैं ने तुम्हारे लख़्ते जिगर को आज ऐसे अ़ज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ देखा कि इस से पहले मैं ने किसी इल्म वाले को ऐसे मर्तबे पर नहीं देखा। वोह तो इल्म के मोती लुटाने वाला समन्दर है।"

आप की ज़ौजए मोह़तरमा ने कहा : "आप को अपने तीस हज़ार दीनार चाहिये या अपने बेटे की येह अ़ज़्मत व रिफ़्अ़त।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे तो अपने बेटे की इस अ़ज़ीम ने'मत के बदले कुछ भी नहीं चाहिये।" आप की ज़ौजए मोह़तरमा ने कहा : "तो फिर सुनिये ! मैं ने वोह तमाम माल तुम्हारे बेटे पर ख़र्च कर के इसे इल्मे

दीन सिखाया।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ने माल ज़ाएअ़ नहीं किया बल्कि बहुत अच्छी जगह ख़र्च किया है।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿

(اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ) तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम इल्मो अ़मल की दौलत लोगों को मुन्तक़िल करने के लिये कई जामिआ़त व मदारिस बनाम **जामिअ़तुल मदीना** और **मद्रसतुल मदीना** क़ाइम हैं। यहां न सिर्फ़ इ़ल्म की लाज़वाल दौलत तक़्सीम होती है बल्कि अ़मल का जज़्बा भी दिया जाता है। हज़ारहा त़लबा व त़ालिबात यहां से फ़ैज़याब हो कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मसरूफ़े अ़मल हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को दिन दुगनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

हि़कायत नम्बर : 238

जज़्बए शहादत

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन उ़षमान जवई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है कि "मै ने एक शख़्स को त़वाफ़ करते हुवे देखा उस की ज़बान पर बस येही दुआ़ जारी थी : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू ही मोह़ताजों की ह़ाजतें पूरी फ़रमाता है, लोगों की ह़ाजतें तूने पूरी कर दीं, मेरी ह़ाजत अभी तक पूरी नहीं हुई।"

वोह शख़्स बार बार येही कह रहा था इस के इ़लावा कुछ और न कहता। मैं ने पूछा : "भाई ! तुम इस के इ़लावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ?" कहा : "मैं तुम्हें सारा वाक़िआ़ बताता हूं। बात दरअस्ल येह है कि हम सात मुजाहिद मुख़्तलिफ़ शहरों से जम्अ़ हो कर एक ग़ज़्वे में शरीक हुवे, दुश्मन हमें क़ैद कर के अपने सरदार के पास ले गए। वोह हमें शहीद करने एक वीरान सी जगह ले गए। मेरी नज़र आस्मान की त़रफ़ उठी तो देखा कि सात दरवाज़े खुले हुवे हैं और हर दरवाज़े पर एक हूर खड़ी है। जब हम सात मुजाहिदों में से एक को दुश्मनों ने शहीद कर दिया। तो मैं ने देखा कि आस्मान से एक हूर अपने हाथों में रूमाल लिये ज़मीन की त़रफ़ उतरी। फिर दूसरे मुजाहिद को भी शहीद कर दिया गया। अब दूसरी हूर इस त़रह़ हाथो में रूमाल लिये ज़मीन की त़रफ़ उतरी। अल ग़रज़ मेरे छे रुफ़क़ा को बारी बारी इसी त़रह़ शहीद किया गया। जब भी कोई मुजाहिद शहीद होता तो फ़ौरन एक हूर हाथों में रूमाल लिये ज़मीन की त़रफ़ उतरती। बिल आख़िर मेरा नम्बर भी आ गया। अब सिर्फ़ एक दरवाज़ा खुला था और उस पर एक हूर बाक़ी थी। जब मुझे शहीद किया जाने लगा तो बा'ज़ लोगों ने फ़िदया दे कर मुझे छुड़ा लिया। उस हूर को मैं ने येह कहते हुवे सुना :

"ऐ मह़रूम ! तुझे किस चीज़ ने पीछे रखा ?" इतना कह कर उस ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। ऐ मेरे भाई ! मैं उस वक़्त से आज तक इस फ़ज़ीलत के न मिलने पर अफ़्सुर्दा व ग़मगीन हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम जवई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं इस शख़्स को उन सब से अफ़्ज़ल समझता हूं क्यूं कि इस ने वोह चीज़ देख ली जो उन्हों ने न देखी। अब येह ह़सरत ज़दा छोड़ दिया गया ताकि उस ने'मत के ह़ुसूल की ख़ातिर अ़मल करता रहे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 239 समझदार व पारसा औ़रत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि बसरा में एक मालदार शख़्स रहता था। एक दिन जब वोह अपने बाग़ में गया तो देखा कि उस का नोकर अपनी ह़सीनो जमील बीवी के साथ बाग़ में मौजूद है। नोकर की ख़ूब सूरत बीवी को देख कर मालदार की निय्यत ख़राब हो गई। उस ने औ़रत को मह़ल में भेजा और नोकर से कहा : जाओ ! हमारे लिये खजूरें तोड़ लाओ, जब ख़जूरें तोड़ चुको तो फ़ुलां फ़ुलां को मेरे पास बुला लाना।" नोकर हुक्म पाते ही खजूरें लेने चला गया। अब येह अपने मह़ल में आया और नोकर की बीवी से कहा : "तमाम दरवाज़े बन्द कर दो।" औ़रत ने तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये तो मालदार ने कहा : "क्या तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये ?"

समझदार नेक औ़रत ने कहा : "सिर्फ़ एक दरवाज़ा मैं बन्द न कर सकी।" मालदार ने कहा : "कौन सा दरवाज़ा तू ने बन्द नहीं किया ?" उस ने कहा : "वोह दरवाज़ा जो हमारे और हमारे रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान है, मैं उसे बन्द नहीं कर सकी।" येह जुम्ला उस मालदार के दिल में तासीर का तीर बन कर पैवस्त हो गया। वोह गुनाह से बच गया और रो रो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हुवा वहां से चला गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 240 मर्दे क़लन्दर की ईमान अफ़रोज़ तक़रीर

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि "रूम की जंग में दूसरे मुसलमानों के साथ सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को भी क़ैद कर लिया गया। रूमी सरदार ने तमाम मुसलमानों को अपने दरबार में बुलाया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कहा : "नस्रानी हो जाओ, वरना मैं तुम्हें तांबे की देग में डाल कर जला दूंगा।"

येह सुन कर सहाबिये रसूल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जुरअत मन्दाना जवाब दिया : “ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता, मैं कभी भी नस्रानी नहीं बनूंगा।” ज़ालिम सरदार ने जब येह सुना तो तांबे की देग मंगवा कर उस में तेल डलवाया, फिर उस के नीचे आग जलाने का हुक्म दिया। जब तेल ख़ूब गर्म हो कर उबलने लगा तो एक मुसलमान क़ैदी को बुला कर कहा : “नसरानी हो जाओ, उस मर्दे मुजाहिद ने इन्कार किया तो उसे उबलते हुवे तेल में डलवा दिया। देखते ही देखते उस का सारा गोश्त जल गया और हड्डियां ऊपर तैरने लगीं।”

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा गया : “ईसाई हो जाओ, वरना इस शख़्स की त़रह़ तुम्हें भी इस उबलते हुवे तेल में डाल दिया जाएगा। सहाबिये रसूल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने साफ़ इन्कार कर दिया। ज़ालिम सरदार ने हुक्म दिया कि इसे भी तेल की देग में डाल दो। हुक्म पाते ही जल्लादों ने आप को पकड़ा और उबलते हुवे तेल में डालने के लिये ले चले। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अचानक रोना शुरूअ़ कर दिया। जल्लाद ज़ालिम सरदार के पास आए और बताया कि वोह क़ैदी रो रहा है। सरदार बहुत ख़ुश हुवा और हुक्म दिया कि उसे हमारे पास ले आओ। वोह येह समझ रहा था कि शायद आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मौत के डर से उस की बात मानने के लिये तय्यार हो गए हैं। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के सामने आए तो फ़रमाया : “क्या तुम लोग येह समझ रहे हो कि मैं मौत के ख़ौफ़ से रो रहा हूं। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं मौत के ख़ौफ़ से नहीं बल्कि मैं तो इस लिये रो रहा हूं कि मेरे जिस्म में सिर्फ़ एक जान है जो मैं दीने इस्लाम के लिये क़ुरबान कर रहा हूं। मुझे तो येह पसन्द था कि मेरे जिस्म में अगर सो जानें होतीं तो एक एक कर के सब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर क़ुरबान कर देता।”

येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों तेरे नाम पे सब को वारा करूं मैं

सरदार आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ईमान अफ़्रोज़ तक़रीर सुन कर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा कि इस मर्दे क़लन्दर के अन्दर अपने दीन की कितनी मह़ब्बत है और येह ख़ुशी से दीन की ख़ातिर अपनी जान क़ुरबान करने के लिये तय्यार है। सरदार ने लालच देते हुवे कहा : “अगर तुम नसरानी हो जाओ तो मैं अपनी बेटी की शादी तुम से कर दूंगा और हुकूमत में भी तुम्हें हिस्सा दूंगा।” आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की येह पेशकश भी ठुकरा दी और साफ़ इन्कार कर दिया। फिर उस ने कहा : “अच्छा इस त़रह़ करो कि तुम मेरे सर पर बोसा दो अगर तुम येह करोगे तो मैं तुम्हें भी आज़ाद कर दूंगा और तुम्हारे साथ तुम्हारे अस्सी (80) मुसलमान क़ैदियों को भी आज़ाद कर दूंगा।”

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : “अगर वाक़ेई तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हारे सर पर बोसा देने के लिये तय्यार हूं।” सरदार ने यक़ीन दहानी कराई कि मैं अपनी बात ज़रूर पूरी करूंगा। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों की अज़ादी की ख़ातिर उस ज़ालिम के सर का बोसा लिया। सरदार ने ह़स्बे वा'दा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को और अस्सी मुसलमान क़ैदियों को आज़ाद कर दिया।

जब येह तमाम मुजाहिदीन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पहुंचे तो अमीरुल मोअमिनीन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर खड़े हो गए और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर का बोसा लिया और बहुत खुश हुवे।"

﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।* آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿

ह़िकायत नम्बर : 241 फ़सीह़ो बलिग़ कलाम करने वाला मुतवक्किल अज़्दहा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ामिद अस्वद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَحَد नक़्ल फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق को येह फ़रमाते हुवे सुना : "तवक्कुल के बारे में मेरे यक़ीन की पुख़्तगी की इब्तिदा इस त़रह़ हुई कि मैं जंगलों और सह़राओं में सफ़र करता और अपने तवक्कुल को पुख़्ता करता। मुझे वीरान और ग़ैर आबाद अ़लाक़ों से मह़ब्बत हो गई। एक दिन मैं एक वीरान जंगल की त़रफ़ गया और उस जंगल में तीन दिन तीन रात क़ियाम किया। जब चौथी सुब्ह़ हुई तो भूक व प्यास की वजह से कमज़ोरी मह़सूस होने लगी। ब तक़ाज़ए बशरिय्यत मुझे रिज़्क़ के मुआ़मले में कुछ तरद्दुद होने लगा। मैं बड़ा दिलगीर (ग़मगीन) हुवा। अचानक मेरे सामने चार बड़े बड़े अज़्दहे नुमूदार हुवे। वोह अपने मुंह से सीटी की सी आवाज़ निकालने लगे फिर भनभनाहट सी सुनाई देने लगी। उन की इस आवाज़ में ऐसा ग़म व सोज़ था कि ऐसी ग़मगीन आवाज़ मैं ने आज तक न सुनी थी। मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए। वोह चारों मेरी त़रफ़ आए, उन में से एक ने अपना सर बुलन्द किया और बड़ा फ़सीह़ो बलीग़ कलाम करता हुवा मुझ से यूं गोया हुवा : "ऐ इब्राहीम (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) क्या तू अपने ख़ालिक़ के बारे में शक में मुब्तला है ?"

मैं ने कहा : "नहीं ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बिल्कुल मुत़मइन हूं।" उस ने कहा : "फिर तू रिज़्क़ के बारे में शक में क्यूं मुब्तला हुवा ?" वोह अज़्दहा मेरी ह़ालत से वाक़िफ़ हो गया था। मैं ने मुतअ़ज्जिब हो कर पूछा : "तुम मेरे ह़ाल से कैसे वाक़िफ़ हुवे ?" उस ने कहा : "मुझे उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने आगाह किया जो हर वक़्त मेरे साथ है। सुनो ! हम चार अज़्दहे मुख़्तलिफ़ मक़ामात के रहने वाले हैं और हम तवक्कुल जम्अ़ करने आए हैं।"

मैं ने कहा : "येह तो बहुत ज़रूरी है। बेशक मैं ने भी खाने पीने के मुतअ़ल्लिक़ तवक्कुल किया। इस दौरान अकषर अवक़ात भूक व प्यास का सामना करना पड़ता है ?" उस ने कहा : ऐ इब्राहीम ! पोशीदा बातों की टोह में न पड़ो। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ ऐसे बन्दे भी होते हैं जिन्हें उस का ज़िक्र सैराब करता है और इस से उन की भूक जाती रहती है। फिर वोह किसी ऐसी चीज़ की परवाह नहीं करते जिस के ज़रीए़ दूसरे लोग अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और उन लोगों के दिलों में ऐसी चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ कभी परेशानी नहीं होती जिस के न मिलने पर दूसरों

को परेशानी लाहि़क़ होती है। हां ! वोह तो सिर्फ़ फ़ितना व फ़साद से डरते हैं।'' उस अज़्दहे का ऐसा फ़सीह़ो बलीग़ कलाम सुन कर मैं ने अपने दिल में कहा : ''سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ यह अज़्दहा कितना प्यारा कलाम कर रहा है और मैं इस की बात को कितनी अच्छी त़रह़ समझ रहा हूं।''

फिर मैं रोने लगा। मैं येह बातें सोच ही रहा था कि वोह अज़्दहा फिर बोला : ''ऐ इब्राहीम पोशीदा बातों की टोह में न रहो, क्या तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में किसी को ह़क़ीर समझते हो ? बेशक मुझे क़ुव्वते गोयाई उसी पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने अ़त़ा फ़रमाई है जिस ने तुम्हारे बाप आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मिट्टी से पैदा फ़रमाया। तुम मेरे बोलने से मुतअ़ज्जिब हो रहे हो ? ह़ालांकि ज़ियादा तअ़ज्जुब की बात तो येह है कि हम एक ऐसी वादी से तेरे पास आए हैं जो यहां से एक माह की मसाफ़त पर है। हमें हमारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने यहां भेजा है।''

येह सुन कर मैं बहुत ह़ैरान हुवा और उस अज़्दहे से पूछा : ''क्या वजह है कि इन चारों अज़्दहों में से सिर्फ़ तुम ही कलाम कर रहे हो और बाक़ी सब ख़ामोश हैं ?'' उस ने कहा : ''ऐ अबू इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق बेशक ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की मख़्लूक़ के दरमियान ह़िजाब है। मख़्लूक़ में कुछ लोग एक दूसरे के गहरे दोस्त हैं। कुछ वुज़रा और कुछ लोग बा'ज़ के शागिर्द व मुरीद हैं। इन चारों अज़्दहों ने मुझे अपना अमीर मान लिया और अपने आप को मेरे ह़वाले कर दिया है। अब मैं ही इन की नुमाइन्दगी व रहबरी कर रहा हूं। मेरी एक बात तवज्जोह से सुन लीजिये ! अगर आप किसी के अमीर बनो और तुम्हारे रुफ़क़ा आदाबे सफ़र मल्ह़ूज़ रखें तो अ़नक़रीब तुम और तुम्हारे तमाम रुफ़क़ा सिद्क़ व इख़्लास की आ'ला मनाज़िल तक रसाई ह़ासिल कर लोगे। लेकिन जब अमीरे क़ाफ़िला ही राह से भटक जाए और उस के रुफ़क़ा उस पर बरतरी चाहें तो समझो कि वोह क़ाफ़िला नाकाम हो गया। नाकामी की सब से बड़ी निशानी येह है कि मातह़्त अपने अमीर पर ग़ालिब आ जाएं और उस की त़रफ़ तवज्जोह न दें। जब तुम देखो कि मातह़्त अपने अमीर व निगरान के सामने बड़ी बे बाक़ी से बोल रहा है और अमीर व निगरान ख़ुश है तो समझ लो कि अब बरकत उठा ली गई।''

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : ''इतना कहने के बा'द अचानक वोह चारों अज़्दहे मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गए। फिर मैं चालीस रोज़ उसी विरान व ग़ैर आबाद वादी में रहा और जो मन्ज़र मैं ने देखा उस के बारे में सोच सोच कर ह़ैरान होता रहा। येह चालीस दिन ऐसे गुज़रे कि न तो मुझे खाने पीने की फ़िक्र रही और न ही किसी और क़िस्म की ह़ाजत दरपेश आई। मैं चालीस दिन तक बिल्कुल न सोया और कई दिन तक एक ही वुज़ू से नमाज़ पढ़ता रहा। येह वादी बहुत ज़ियादा ग़ैर आबाद और वीरान थी। कोई चीज़ इस में ऐसी न थी जिस से उनसिय्यत ह़ासिल की जाती। बहर ह़ाल चालीस दिन बा'द एक सुब्ह़ वोह चारों अज़्दहे फिर मेरे सामने ज़ाहिर हुवे। उन्हों ने मुझे सलाम किया। मैं ने सलाम का जवाब दिया। उन में से वोही अज़्दहा जो पहले मुझ से मुख़ात़िब हुवा था, कहने लगा : ''ऐ अबू इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق मेरा गुमान

था कि इन चालीस दिनों में किसी न किसी दिन तो मुन्तख़ब कर लिया जाएगा मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ की थी कि वोह तुझे सादिक़ीन की बा'ज़ ग़िज़ा का ज़ाइक़ा चखा दे और अब मैं तेरा ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले करता हूं।"

फिर उस अज़्दहे ने अपने मुंह से नरगिस के कुछ फूल मेरी त़रफ़ फेंके। मैं ने उन्हें उठा लिया। जब सामने देखा तो वोह तमाम अज़्दहे ग़ाइब हो चुके थे। मैं उन की जुदाई से बड़ा ग़मगीन हुवा। फिर चालीस दिन तक मैं कैफ़ो सुरूर के आ़लम में रहा, न तो मुझे भूक लगी न प्यास, और मेरे जिस्म से ऐसी ख़ुश्बू आती थी जैसे मैं ने पूरे जिस्म पर इत्र लगाया हुवा हो। इसी त़रह़ वोह पूरी वादी ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र और मुअ़म्बर रही। येह वोह पहला वाक़िआ़ था जो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मेरे लिये ज़ाहिर फ़रमाया और मुझे अ़जीबो ग़रीब चीज़ें दिखाईं।

ह़िकायत नम्बर : 242

बा करामत नौजवान

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अ़ली अख़्मीमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मन्क़ूल है कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की मह़फ़िल में ह़ाज़िर थे। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की करामात के मुतअ़ल्लिक़ इर्शादात फ़रमा रहे थे। इतने में ह़ाज़िरीन में से किसी ने पूछा : "ऐ अबू फ़ैज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ! क्या आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने किसी साह़िबे करामत वली को देखा है ?" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی यूं गोया हुवे : एक मरतबा एक ख़ुरासानी नौजवान सात दिन तक मेरे साथ मस्जिद में रहा। इस दौरान उस ने कुछ भी न खाया। मैं ने कई मरतबा खाने की दा'वत दी मगर उस ने हर बार इन्कार कर दिया। एक मरतबा एक साइल ने कोई चीज़ मांगी तो ख़ुरासानी नौजवान ने कहा : "अगर तू मख़्लूक़ को छोड़ कर ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ से मांगता तो वोह तुझे मख़्लूक़ से बे नियाज़ कर देता।"

साइल ने कहा : मैं अभी उस मक़ाम तक नहीं पहुंचा। कहा : बता तू क्या चाहता है ? कहा : "मेरा फ़ाक़ा दूर हो जाए और मेरी सित्रपोशी रहे।" ख़ुरासानी नौजवान ने मेह़राब की जानिब जा कर दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। जब वापस आया तो उ़म्दा फलों से भरा हुवा थाल और बिल्कुल नए कपड़े उस के पास थे, जो उस ने साइल को थमा दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने नौजवान से कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इतना बुलन्द मर्तबा होने के बा वुजूद तू ने एक लुक़्मा भी नहीं खाया ह़ालांकि तू सात दिन से भूका है।" मेरी येह बात सुन कर उसे मतली सी होने लगी। फिर मुझ से कहा : "ऐ अबू फ़ैज़ ! येह कैसे हो सकता है कि दिल रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के नूर से मुनव्वर हो फिर भी ज़बान उस से कोई चीज़ त़लब करे ?" मैं ने कहा : "जो लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी हों क्या वोह उस से सुवाल नहीं करते ?" कहा : "रिज़ा के कई दरजे हैं। बा'ज़ लोग उस दरजे में हैं कि वलवलए शौक़ व मह़ब्बत में उस से सुवाल करते हैं, बा'ज़ ऐसे हैं कि किसी त़रह़ सुवाल नहीं करते, बा'ज़ ऐसे हैं कि अपने लिये तो उस से कुछ नहीं मांगते लेकिन दूसरों पर रह़्म करते हुवे उन के लिये सुवाल करते हैं।"

अभी गुफ़्तगू जारी थी कि जमाअ़त खड़ी हो गई। उस ने हमारे साथ इशा की नमाज़ अदा की। फिर पानी का बरतन उठा कर मस्जिद से बाहर चला गया, ऐसा मा'लूम हो रहा था जैसे वोह तहारत के लिये जा रहा हो लेकिन फिर वोह वापस न आया और न ही दोबारा मैं ने कभी उसे देखा।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ﴿

हिकायत नम्बर : 243

ना'रए तक्बीर की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद समीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين फ़रमाते हैं : अय्यामे रियाज़त में मेरी कैफ़िय्यत येह थी कि जो भी अ़मल करता उसे मुस्तक़िल करता। एक मरतबा मैं मुजाहिदीन के एक लश्कर के साथ जिहाद पर गया। दुश्मनों के बहुत बड़े रूमी लश्कर ने मुसलमानों पर ज़बरदस्त ह़म्ला किया और ग़ालिब आने की भरपूर कोशिश करने लगे। रूमी लश्कर की कषरत देख कर मुसलमान मुजाहिदीन पर ख़ौफ़ की सी कैफ़िय्यत त़ारी होने लगी। मैं भी ख़ौफ़ मह़सूस कर रहा था, मेरा नफ़्स मुझे अपने वत़न की याद दिला रहा था। जब नफ़्स ने बहुत ज़ियादा बुज़दिली का मुज़ाहरा किया तो मैं ने इसे डांटा और शर्म दिलाते हुवे कहा : "ऐ नफ़्से कज़्ज़ाब ! तू दा'वा करता था कि तू बहुत इबादत गुज़ार और मुजाहदात का शौक़ीन है। अब जब वत़न से दूर आ गया है तो बुज़दिली का मुज़ाहरा कर रहा है ह़ालांकि येही तो मौक़अ़ है कि तू अपने शौक़ का मुज़ाहरा करे लेकिन मुआ़मला इस के बर अ़क्स है ! तुझे शर्म आनी चाहिये।"

फिर मेरे दिल में ख़याल आया कि सामने नहर में उतर जाऊं और ग़ुस्ल करूं। चुनान्चे, मैं ने ग़ुस्ल किया और बाहर आ गया। अब मेरी कैफ़िय्यत ही कुछ और थी, जज़्बए शौक़ मेरे रूएं रूएं से इयां था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर मेरे अन्दर इतना जज़्बा कहां से आ गया। मैं ने अपना अस्लह़ा ज़ेबेतन किया और मैदाने जंग में घुस कर बड़ी शिद्दत से दुश्मनों की सफ़ों पर ह़म्ला किया। मैं ख़ुद नहीं जानता था कि किस त़रह़ लड़ रहा हूं। मैं दुश्मन की सफ़ों को चीरता हुवा उन के पीछे चला गया और नहर के क़रीब पहुंच कर اَللّٰهُ اَكْبَر, اَللّٰهُ اَكْبَر, اَللّٰهُ اَكْبَر की सदाएं बुलन्द कीं। दुश्मनों ने तकबीर की आवाज़ सुनी तो उन के होश उड़ गए, वोह समझे कि शायद मुसलमानों की कुमुक (या'नी मदद) के लिये मुजाहिदीन की फ़ौज पहुंच चुकी है। फिर रूमी फ़ौज के पाउं उखड़ गए और वोह दुम दबा कर भाग गए। मुसलमान मुजाहिदीन ने उन पर भरपूर ह़म्ला किया। ना'रए तक्बीर की बरकत से इस जंग में रूमियों के चार हज़ार सिपाही मारे गए और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मेरे इस ना'रे को मुसलमानों की फ़त्ह़ व नुस्रत का सबब बना दिया।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ﴿

हिकायत नम्बर : 244 ख़ूब सूरत दुल्हा और बद सूरत दुल्हन

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नुएैम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपनी वालिदा के हवाले से फ़रमाते हैं कि "मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू उ़षमान ह़ीरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की ज़ौजए मोह़तरमा हज़रते सय्यिदतुना मरयम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہَا को येह कहते हुवे सुना : "एक मरतबा मुझे मेरे सरताज हज़रते सय्यिदी अबू उ़षमान ह़ीरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی के साथ तन्हाई मयस्सर आई तो मैं ने मौक़अ़ ग़नीमत जान कर पूछा : "ऐ अबू उ़षमान ! अपनी ज़िन्दगी का कौन सा अ़मल आप को सब से ज़ियादा प्यारा और मह़बूब है ? फ़रमाया : "ऐ मरयम ! जब मैं आ़लमे शबाब में था तो उस वक़्त मेरी रिहाइश "रै" में थी। लोग मुझे बहुत पसन्द करते। सब की ख़्वाहिश थी कि मेरी शादी उन के घर हो जाए लेकिन मैं सब को इन्कार कर देता। एक दिन एक औ़रत मेरे पास आई और यूं गोया हुई : "मैं तेरी मह़ब्बत में बहुत ज़ियादा बेक़रार हो गई हूं, मेरी रात की नींदें और दिन का चैन बरबाद हो गया है, मैं तुझे उस का वासित़ा दे कर इल्तिजा करती हूं जो दिलों को फेरने वाला है कि तू मुझ से शादी कर ले।"

उस के येह जज़्बात देख कर मैं ने पूछा : "क्या तुम्हारा बाप ज़िन्दा है ?" उस ने कहा : "जी हां, मेरा बाप दरज़ी है और फ़ुलां मह़ल्ले में रहता है। मैं ने उस के वालिद को निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया तो वोह बहुत ख़ुश हुवा, उस ने फ़ौरन गाऊं के मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों को बुला कर मेरा निकाह़ अपनी बेटी से कर दिया। जब मैं ह़ुजरए अ़रूसी में दाख़िल हुवा तो देखा कि मेरी नई नवेली दुल्हन एक आंख से मह़रूम, पाउं से लंगड़ी और इन्तिहाई बद शक्ल थी, उसे देख कर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे कहा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं तू ने जो मेरा मुक़द्दर बनाया मैं इस पर तेरा शुक्र गुज़ार हूं।" फिर जब मेरे घर वालों को मेरी ज़ौजा की कैफ़िय्यत मा'लूम हुई तो मुझे बुरा भला कहा और ख़ूब डांटा। लेकिन मैं ने अपनी ज़ौजा से कभी कोई ऐसी बात न की जो उसे बुरी लगती बल्कि मैं उस पर बहुत ज़ियादा मेहरबान हो गया और उसे ज़रूरत की हर शै मुहय्या करता।

मेरी मह़ब्बत व शफ़्क़त की वजह से उस की येह ह़ालत हो गई कि लम्ह़ाभर के लिये भी मुझ से जुदाई बरदाश्त न करती। चुनान्चे, अपनी इस मजबूर व बेकस, मह़ब्बत की प्यासी और मा'ज़ूर बीवी की ख़ात़िर मैं ने दोस्तों की मह़फ़िल में जाना छोड़ दिया और ज़ियादा वक़्त उसी के पास गुज़ारने लगा, ताकि इस बेचारी का दिल ख़ुश रहे और येह एह़सासे कमतरी का शिकार न हो। और इस त़रह़ मैं ने अपनी ज़िन्दगी के **पन्दरह साल** अपनी इस मा'ज़ूर बीवी के साथ गुज़ार दिये। बा'ज़ अवक़ात मुझे इतनी तक्लीफ़ होती जैसे मुझे सुलगते अंगारों पर डाल दिया गया हो लेकिन मैं ने कभी भी इस कैफ़िय्यत का इज़्हार उस पर न किया। यहां तक कि पन्दरह साल बा'द वोह इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गई। मेरी इस मा'ज़ूर बीवी को मुझ से जो मह़ब्बत थी उसे निभाने और इस को हर त़रह़ से ख़ुश रखने की ख़ात़िर मैं ने जो **अ़मल** किया वोह मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब है।

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 245 उख़रवी हिसाब का ख़ौफ़

हज़रते सय्यिदुना मुबारक बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد से मन्क़ूल है कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के पास सात सात हज़ार दीनार की दो थैलियां ले कर हाज़िर हुवा। उस शख़्स का वालिद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बहुत गहरा दोस्त था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अकषर उस के पास जा कर क़ैलूला फ़रमाते और वोह भी अकषर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आया करता था। दीनार लाने वाले ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क्या आप के दिल में मेरे वालिद की कुछ महब्बत है ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस के वालिद की ख़ूब ता'रीफ़ की और फ़रमाया : "अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हारे वालिद पर रह़्म करे, वोह बहुत अच्छे इन्सान और बहुत सी ख़ूबियों के ह़ामिल थे।" कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه आप तो जानते ही हैं कि येह माल मेरे पास कैसे आया ? अब मैं चाहता हूं कि आप येह तमाम दीनार क़बूल फ़रमा लें और इन के ज़रीए़ अपने अहलो इ़याल की कफ़ालत पर मदद ह़ासिल करें।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस से सारी रक़म ले ली। जब वोह जाने लगा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : "जाओ और उस को मेरे पास बुला लाओ।" मैं गया और उसे बुला लाया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ भतीजे ! तुम्हारा माल मैं ने क़बूल कर लिया, अब मेरी ख़्वाहिश है कि येह माल तुम क़बूल कर लो।" उस ने इन्कार करते हुवे कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه क्या आप के दिल में इस माल के बारे में कोई खटका है ?" फ़रमाया : "नहीं, लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम येह वापस ले लो।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इसी त़रह़ तकरार करते रहे यहां तक कि उस ने माल वापस ले लिया।

जब वोह चला गया तो मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आया, उस वक़्त मेरे पास कुछ भी न था मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने खड़ा हुवा और कहा : "ऐ भाई ! अफ़्सोस है ! आप का दिल कैसा है ? क्या आप के अहलो इ़याल नहीं ? क्या आप मुझ पर रह़्म नहीं करेंगे ? क्या आप हमारे बच्चों पर रह़्म नहीं करेंगे ? आप हमारे लिये ही वोह माल क़बूल कर लेते, मैं काफ़ी देर तक आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इसी त़रह़ कहता रहा, बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो वोह माल ले लो और ख़ुश दिली से खाओ, मैं कभी भी उसे क़बूल नहीं करूंगा, क्यूंकि अगर मैं ने वोह क़बूल कर लिया तो उस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल भी मुझ ही से होगा, किसी और से नहीं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم

हिकायत नम्बर : 246 एक तवज्जोह से सारे बरतन भर गए

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बिन जा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : जिस रात हज़रते सय्यिदुना शुरैह़ बिन यूनुस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हां बच्चे की विलादत हुई । उस रात वोह मेरे पास तशरीफ़ लाए और तीन दिरहम देते हुवे कहा : "एक दिरहम का शहद, एक का घी और एक दिरहम के सत्तू दे दो ।" मेरे पास उस वक़्त तमाम अश्या ख़त्म हो चुकी थीं और मैं तमाम बरतन ख़ाली कर चुका था ताकि सुब्ह़ सवेरे बाज़ार से अश्या ला कर इन में रखूं । मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर इस वक़्त तमाम सामान ख़त्म हो चुका है और दुकान के सारे बरतन ख़ाली हैं । मैं सुब्ह़ सवेरे सामान ख़रीदने जाऊंगा, इस वक़्त आप की मत़लूबा अश्या मेरे पास मौजूद नहीं ।"

फ़रमाया : "**जाओ, देखो तो सही ! शायद बरतनों में कोई चीज़ मिल जाए ।**" मैं ने देखा तो सब बरतन भरे हुवे थे और सत्तूओं का थैला भी भरा हुवा है । मैं ने बहुत सारे सत्तू और दीगर अश्या आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने ला कर रख दीं । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तुम तो कह रहे थे कि तमाम बरतन ख़ाली हैं, अब येह सामान इतनी जल्दी कहां से आ गया ?" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! आप सुकूत फ़रमाएं और अपनी मत़लूबा अश्या ले जाएं ।" फ़रमाया : "सच सच बताओ, मुआ़मला क्या है ? वरना मैं येह चीज़ें हरगिज़ नहीं लूंगा ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इस फ़रमान के बा'द कि "**जाओ, देखो तो सही ! शायद बरतनों में कुछ मिल जाए**" जब मैं ने बरतन देखे तो सब के सब भरे हुवे थे और येह सब कुछ आप ही की बरकत से हुवा । फ़रमाया : "ख़बरदार ! जब तक मैं ज़िन्दा रहूं, येह वाक़िआ़ किसी को न बताना ।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}

हिकायत नम्बर : 247 हज़रते सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ख़लीफ़ा महदी को नसीह़त

हज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं ख़लीफ़ा महदी के पास गया और कहा : "आज मेरी गुफ़्तगू बरदाश्त करना, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में लोगों में से ज़ियादा क़ुर्ब वाला शख़्स वोह है जो लोगों की सख़्त नसीह़तों पर सब्र करे, और जिसे हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़राबत का रिश्ता हो तो वोह इस बात का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ को अपनाए और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल पैरा हो ।

ऐ ख़लीफ़ा ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे इ़ल्म की फ़हम और वाज़ेह़ दलाइल का वारिष बनाया और अब तेरा उ़ज़्र ख़त्म हो चुका है, हुज्जतें क़ाइम होती रहेंगी, अगर अब भी तू शुब्हात में पड़ा रहे तो कोई दलील व हुज्जत तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से नहीं बचा सकेगी। जब तुझे इ़ल्म मिल गया तो जहालत का उ़ज़्र क़ाबिले क़बूल नहीं। येह बात अच्छी त़रह़ समझ ले कि जो शख़्स हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में मुख़ालफ़त और फ़साद पैदा करे और लोगों को दीनी अह़काम से बेज़ार करे, तो वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दुश्मन है और जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दुश्मन है, वोह अल्लाह तबारक व तआ़ला का दुश्मन है। लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुश्मनी से बच और ऐसी निशानियां अपना ले जो तेरी नजात का बाइ़ष बनें। अगर तू ने इस का उलट किया तो समझ ले कि अपने आप को हलाकत के लिये पेश कर दिया।

ऐ ख़लीफ़ा ! जान ले, बेशक पछाड़ने वाले त़ाक़त वरों में कमज़ोर तरीन शख़्स वोह है जो ऐसे शख़्स को पछाड़े जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाने वाला हो। बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में सब से ज़ियादा षाबित क़दम वोह होगा जिस ने किताबुल्लाह और सुन्नते नबवी को मज़बूती से थामा। और तेरे जैसे लोग मा'सिय्यत (مَعْصِیَت) की वजह से ग़ालिब नहीं आ सकते। हां येह है कि नाफ़रमान के लिये बुराई नेकी का रूप धार कर ज़ाहिर होती है। ऐसों से बे तवज्जोही बरतना और उन्हें नेकी की दा'वत न देना उन के लिये सहारा बनता है। मेरी इन बातों को अच्छी त़रह़ समझ कर मह़फ़ूज़ कर ले। बेशक मैं ने तुझे अह़सन अन्दाज़ में समझा दिया है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی फ़रमाते हैं : येह बातें सुन कर ख़लीफ़ा महदी ज़ारो क़ित़ार रोने लगा। अबू हिमाम कहते हैं : "मुझे बा'ज़ कातिबों ने बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی का येह नसीह़त आमोज़ कलाम हम ने ख़लीफ़ा महदी के ख़ास रजिस्टरों में लिखा हुवा देखा।"

औलियाए किराम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

हिकायत नम्बर : 248 औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की निशानियां

ह़ज़रते सय्यिदुना औफ़ा बिन दलहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم से मन्क़ूल है कि "अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "इ़ल्म ह़ासिल करो इस के ज़रीए़ तुम्हारी पहचान होगी, इ़ल्म पर अ़मल करो तुम इस के अहल हो जाओगे, बेशक तुम्हारे बा'द ऐसा ज़माना आएगा, जिस में ह़क़ नव हि़स्से गुमनाम हो जाएगा, उस वक़्त वोही लोग नजात पाएंगे जो लोगों से अलग थलग रहेंगे और गोशा नशीन हो जाएंगे। येही लोग हिदायत याफ़्ता लोगों के इमाम और इ़ल्म के चराग़ हैं, येह फ़ह़्ह़ाशी फैलाने वाले, फ़ुज़ूल ख़र्च और जल्द

बाज़ नहीं। दुन्या पीठ फेर चुकी और आख़िरत बिल्कुल सामने है। दुन्या और आख़िरत दोनों के मुहिब्बीन (या'नी महब्बत करने वाले) मौजूद हैं। तुम आख़िरत चाहने वालों में होना, दुन्या के आ़शिक़ हरगिज़ न बनना। जो लोग दुन्या से बे रग़बत हो चुके हैं उन्हों ने ज़मीन को चटाई, मिट्टी को बिछौना और पानी को ख़ुश्बू बना लिया। जो शख़्स जन्नत का मुश्ताक़ है वोह शहवात से बचता है, जो जहन्नम की आग से ख़ौफ़ज़दा है वोह हमेशा ह़राम चीज़ों से बचता है और जो दुन्या से बे रग़बत हो जाए मुसीबतें उस पर आसान हो जाती हैं।

ख़ूब तवज्जोह से सुनो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ ऐसे ख़ुश नसीब बन्दे हैं गोया वोह अहले जन्नत को उस की दाइमी ने'मतों में और जहन्नमियों को आग के अ़ज़ाब में देख रहे हैं। येह लोग फ़ितना व फ़साद नहीं फैलाते। लोग इन की त़रफ़ से अम्न में हैं। इन के दिल ग़मों से पुर हैं और येह पाक दामन व नेक सीरत लोग हैं। इन की ह़ाजात बहुत कम हैं, येह आख़िरत की त़वील राह़त की ख़ात़िर दुन्या की चन्द रोज़ा मुसीबतों पर सब्र कर लेते हैं। इन की रात इस त़रह़ गुज़रती है कि अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ब ह़ालते क़ियाम खड़े रहते हैं, आंसू इन के रुख़्सारों पर बहते हैं और येह गिड़गिड़ा कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को यूं पुकारते हैं : "ऐ हमारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमें जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ रख, इस की क़ैद से बचा।" जब दिन होता है तो येह बेहतरीन उ़-लमा, बुर्दबार, नेकूकार और लोगों के राहनुमा होते हैं, इन की जिस्मानी ह़ालत ऐसी होती है कि देखने वाला इन को बीमार समझता है ह़ालांकि इन्हें कोई बिमारी नहीं होती, लोग इन्हें मजनून समझते हैं, ह़ालांकि आख़िरत के अ़ज़ीम दिन के ख़ौफ़ से इन के होश उड़ जाते हैं और इन की येह ह़ालत हो जाती है।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 249 काश ! तेरी मां मुझे न जनती

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ बिन शख़्रफ़ علیہ رحمۃ الرَّب से मरवी है कि "मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي के भांजे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बताया : "भूक की वजह से मेरे मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي के पेट में शदीद दर्द हुवा और पहलू में भी बहुत तक्लीफ़ हुई। मेरी वालिदए मोह़तरमा से उन की येह तक्लीफ़ देखी न गई तो कहा : "भाई जान ! अगर आप इजाज़त दें तो मैं अपने हाथों से कुछ जव पीस कर दलिया पका लाऊं, नर्म ग़िज़ा पेट में जाएगी तो तक्लीफ़ में कमी हो जाएगी।"

फ़रमाया : "अफ़्सोस ! मुझे तो येह ख़ौफ़ है, अगर मुझ से पूछ लिया गया कि तेरे पास येह जव का आटा कहां से आया ? तो मैं क्या जवाब दूंगा ?" फिर उन्हों ने दलिया पकाने से मन्अ़ कर दिया। मेरी वालिदा उन की येह ह़ालत देख कर रोने लगी, मामूं भी रोने लगे और उन के साथ

मैं भी रो दिया। उन का सांस घुट घुट कर आ रहा था, बड़ी बे कसी का आ़लम था। मेरी वालिदा ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! काश मेरी मां ने तुझे न जना होता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप की तक्लीफ़ व ग़म देख कर मेरा जिगर टुकड़े टुकड़े हो गया है।" मेरी वालिदा की येह बात सुन कर मामूंजान ने कहा : "ऐ काश ! ऐसा ही होता कि तेरी मां मुझे न जनती और जब मैं पैदा हो ही गया था तो काश ! वोह मुझे दूध ही न पिलाती।"

हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मेरी वालिदा मेरे मामूं की ह़ालत देख कर दिन रात रोती रहती थी।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 250 अमीरे क़ाफ़िला हो तो ऐसा......!

हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : एक मरतबा ज़माने के मश्हूर वली हज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह रिबाती़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی बग़दाद तशरीफ़ लाए, उन का मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا जाने का इरादा था। काफ़ी अ़र्से से मेरी ख़्वाहिश थी कि उन की रफ़ाक़त में सफ़रे ह़रमैन किया जाए। अब मौक़अ़ अच्छा था, मैं फ़ौरन आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो गया और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मुझे अपनी रफ़ाक़त में सफ़र करने की इजाज़त अ़ता फ़रमा दें।" मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस साल मुझे अपनी रफ़ाक़त अ़ता न फ़रमाई। दूसरे साल भी मुझे येह सआ़दत नसीब न हो सकी। तीसरे साल मैं फिर ह़ाज़िर हुवा और अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "इस शर्त़ पर तुम मेरे साथ सफ़र कर सकते हो कि हम में से एक अमीर होगा और उस की इत़ाअ़त लाज़िम होगी। मैं ने ब ख़ुशी येह शर्त़ क़बूल कर ली और कहा : हुज़ूर आप अमीर हैं। फ़रमाया : "नहीं, बल्कि तुम अमीर हो।" मैं ने फिर अ़र्ज़ की : "हुज़ूर आप का मक़ाम व मर्तबा बड़ा है लिहाज़ा आप ही अमीर हैं।" फ़रमाया : "ठीक है, मैं ही अमीर हूं लेकिन मेरी नाफ़रमानी न करना।" मैं ने कहा : "ठीक है मैं हरगिज़ आप की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।"

फिर मैं इस वलिय्ये कामिल के हमराह सूए ह़रम चल दिया। जब खाने का वक़्त हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझे बिठाया और ख़ुद बड़ी आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ मेरे लिये खाना लाए। मैं ने चाहा कि उन्हें रोकूं और उन की ख़िदमत करूं लेकिन मुआ़मला बर अ़क्स था। वोह मुझे बहुत ज़ियादा ता'ज़ीम दे रहे थे। मैं जब भी उन्हें रोकना चाहता तो फ़रमाते : क्या तुम ने येह शर्त़ मन्ज़ूर न की थी कि तुम हुक्म अ़दूली नहीं करोगे ?" इसी त़रह़ वोह मेरा सब काम करते रहे। मेरा सारा सामान भी उन्हों ने उठाए रखा। अब मैं दिल में कहने लगा कि मेरी वजह से इन्हें बहुत तक्लीफ़ हो रही है। ऐ काश ! मैं इन का रफ़ीक़े सफ़र न बनता मगर अब मजबूर हूं, क्या करूं ?

सफ़र तै होता रहा और वोह वलिय्ये कामिल हर तृरह से मेरी ख़ातिर मदारात करते रहे। फिर ऐसा हुवा कि दौराने सफ़र हमें बारिश ने आ लिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ अबू अह़मद (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) मील (या'नी रास्ते की पहचान के लिये बनाए हुवे निशानात) तलाश करो, जब हम मील (निशान) के क़रीब पहुंच गए तो मुझे छोटी सी बुरजी (या'नी गुम्बद या सुतून) की आड़ में बिठाया और ख़ुद मुझ पर चादर तान कर खड़े हो गए। मेरे मन्अ़ करने के बा वुजूद ख़ुद सख़्त सर्दी में भीगते रहे लेकिन मुझे न भिगने दिया। मैं कुछ अ़र्ज़ करता तो फ़रमाते, मैं तुम्हारा अमीर हूं और हम ने येह बात तै कर ली थी कि तुम मेरे हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं करोगे, लिहाज़ा जो मैं कहूं तुम्हें उस पर अ़मल करना होगा। अब मैं उन की रफ़ाक़त पर बहुत पछता रहा था कि मेरी वजह से इन्हें कितनी दुश्वारी हो रही है। ऐ काश ! मैं उन का रफ़ीक़ न बना होता। अल ग़रज़ बग़दाद शरीफ़ से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا तक वोह नेक ख़स्लत वलिय्ये कामिल मेरी हर तृरह से ख़ातिर मदारात करते रहे यहां तक कि हम मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में दाख़िल हो गए।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन पर अपनी करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए और इन के सदक़े हमें अपने मुसलमान भाइयों की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत व ख़ैर ख़्वाही करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।")

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हि़कायत नम्बर : 251

हक़ फ़ैसले की ज़बरदस्त मिषाल

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हय्याज बिन सईद علیہ رحمۃ اللہ الوحید से मन्क़ूल है कि एक मरतबा इस्लाम के नामवर क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कमरए अ़दालत में मस्नदे क़ज़ा पर जल्वा फ़रमा थे, इतने में एक औ़रत ह़ाज़िरे ख़िदमत हुई और इस तृरह फ़रयाद की : "मैं पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहती हूं फिर क़ाज़ी की, मुझ मज़्लूमा को मेरा ह़क़ दिलवाया जाए।" क़ाज़ी शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस औ़रत की फ़रयाद सुन कर बेचैन हो गए और फ़रमाया : "बिला झिजक बताओ, तुम पर किस ने ज़ुल्म किया है ?" कहा : "अमीर मूसा बिन ई़सा ने। दरयाए फ़ुरात के कनारे मेरा खजूरों का एक बाग़ है जो हमें विराषत में मिला है, मैं ने अपने भाइयों से अपना ह़िस्सा अ़लाह़िदा कर के दरमियान में दीवार ता'मीर करवा दी और एक फ़ारसी शख़्स को उस की निगहबानी के लिये मुक़र्रर कर दिया। अमीर मूसा बिन ई़सा ने मेरे भाइयों से उन के ह़िस्से का तमाम बाग़ ख़रीद लिया, फिर उस ने मुझे भी अपना ह़िस्सा बेचने को कहा और ख़तीर (बहुत) रक़म का लालच दिया, मैं ने अपना ह़िस्सा बेचने से इन्कार कर दिया, उस ने कल रात पांच सो आदमी भेज कर उस दीवार को गिरवा दिया, मैं ने सुब्ह़ जा कर देखा तो दीवार बिल्कुल ख़त्म कर दी गई थी और अब मेरे और मेरे भाइयों के दरख़्तों में कोई निशानी बाक़ी न रही। ख़ुदारा ! मुझे इन्साफ़ दिलाइये।"

उस मज़्लूमा की फ़रयाद सुन कर वोह अ़ज़ीम क़ाज़ी बेताब हो गया और ख़ादिम को हुक्म फ़रमाया : मिट्टी और मुहर लाओ। फिर मुहर लगा कर हुक्म नामा उस औ़रत के सिपुर्द कर दिया और कहा : "तुम अमीर मूसा बिन ईसा के पास जाओ और येह हुक्म नामा दे कर कहो कि क़ाज़ी साहि़ब की अ़दालत में ह़ाज़िर हो जाओ।" चुनान्चे, वोह औ़रत हुक्म नामा ले कर मूसा बिन ईसा की रिहाइश गाह पर पहुंची और उस के दरबान को क़ाज़ी साहि़ब का पैग़ाम दिया। दरबान हुक्म नामा ले कर मूसा बिन ईसा के पास गया और कहा : "आप के ख़िलाफ़ क़ाज़ी शरीक की अ़दालत में दा'वा किया जा चुका है, आप को अ़दालत में त़लब किया गया है, येह देखिये ! क़ाज़ी साहि़ब की त़रफ़ से मुहर शुदा हुक्म नामा आया है।" मूसा बिन ईसा ने दरबान से कहा : "जाओ और शहर के पुलीस ऑफ़ीसर को हमारे पास बुला लाओ।" जब पुलीस अफ़्सर आया तो कहा : "तुम क़ाज़ी शरीक के पास जाओ और कहो कि तुम से ज़ियादा अ़जीब मुआ़मला मैं ने किसी का नहीं देखा। एक औ़रत ने मुझ पर नाह़क़ दा'वा किया और तुम उस के दा'वे पर मुझे अ़दालत में त़लब कर के उस की मदद कर रहे हो।" पुलीस अफ़्सर ने डरते हुवे कहा : "हुज़ूर मुझे इस मुआ़मले से दूर ही रखें तो बेहतर होगा।" अमीर ने ग़ज़बनाक हो कर कहा : "जाओ और हमारे हुक्म पर अ़मल करो।"

मजबूरन उसे जाना ही पड़ा। जाते हुवे उस ने अपने ग़ुलामों से कह दिया कि मेरे लिये जेल में बिस्तर वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर दो। आज मैं ज़रूर जेल भेज दिया जाऊंगा। पुलीस अफ़्सर को मा'लूम था कि इस्लाम का येह इन्साफ़ पसन्द क़ाज़ी एक मुजरिम का पैग़ाम लाने पर मुझे ज़रूर क़ैद में डाल देगा। जब पुलीस ऑफ़ीसर ने क़ाज़ी शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अमीर मूसा बिन ईसा का पैग़ाम दिया तो क़ाज़ी साहि़ब ने सिपाही को हुक्म दिया : "इसे गिरिफ़्तार कर के क़ैद खाने में डाल दो।" अफ़्सर ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे मा'लूम था कि आप ऐसा ही करेंगे, इस लिये जेल में जाने के लिये पहले ही इन्तिज़ाम कर के आया हूं।" जब अमीर मूसा बिन ईसा को अपने पुलीस अफ़्सर की गिरिफ़्तारी की ख़बर पहुंची तो उस ने दरबान को बुला कर क़ाज़ी साहि़ब के पास येह पैग़ाम दे कर भेजा : "आप ने हमारे क़ासिद को गिरिफ़्तार कर लिया, उस ने तो सिर्फ़ पैग़ाम पहुंचाया था, उस का क़ुसूर क्या है ?" पैग़ाम पा कर क़ाज़ी साहि़ब ने हुक्म दिया कि इसे भी इस के साथी के पास पहुंचा दो।

चुनान्चे, उसे भी क़ैद कर लिया गया। मूसा बिन ईसा को अपने दरबाने ख़ास की गिरिफ़्तारी की इत्तिलाअ़ भी पहुंच गई। उस ने अ़स्र की नमाज़ के बा'द कूफ़ा के बाअषर व नुमायां लोगों के गुरौह (जिन में क़ाज़ी साहि़ब के दोस्त इस्ह़ाक़ बिन सब्बाह़ अशअ़षी भी शामिल थे), को पैग़ाम भेजा कि जाओ क़ाज़ी साहि़ब को मेरा सलाम कहना और उन्हें आगाह कर देना कि आप ने मेरी बे इ़ज़्ज़ती की है, मैं कोई आ़म आदमी नहीं। कूफ़ा के बाअषर लोगों की येह जमाअ़त क़ाज़ी साहि़ब के पास आई, तो उन्हें मस्जिद में पाया। उन लोगों ने सलाम व आदाब के बा'द अमीर का पैग़ाम सुनाना शुरूअ़ किया। जैसे ही उन का कलाम ख़त्म हुवा। फ़रमाया : "क्या बात है कि मैं तुम्हें एक ऐसे शख़्स की त़रफ़दारी में कलाम करते हुवे देख रहा हूं जो ह़क़ पर नहीं। फिर

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ब आवाज़े बुलन्द फ़रमाया : क्या यहां क़बीले के जवान मौजूद हैं ? अगर हों तो जल्दी से आ जाएं, थोड़ी ही देर में चन्द नौजवान आ गए। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : "एक एक का हाथ पकड़ो और जेल पहुंचा दो। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज की रात येह लोग जेल में गुज़ारेंगे।" कहा : "क्या आप सच मुच हमें जेल भिजवा रहे हैं?" फ़रमाया : "हां ! वाक़ेई मैं तुम्हें जेल भिजवा रहा हूं ताकि आइन्दा तुम किसी ज़ालिम की त़रफ़दारी करते हुवे उस का पैग़ाम न लाओ।"

अमीर मूसा बिन ईसा को उन की गिरिफ़्तारी की इत्तिलाअ़ मिली तो बहुत ग़ज़बनाक हुवा और खुद जा कर जेल का दरवाज़ा खोला और सब को रिहा कर दिया। सुब्ह़ जब इन्साफ़ पसन्द, जुरअत मन्द क़ाज़ी कमरए अ़दालत में जल्वागर हुवा तो दारोग़ए जेल ने गुज़श्ता रात का तमाम वाक़िआ़ कह सुनाया। क़ाज़ी साहिब ने रजिस्टर मंगवा कर मोहर लगाई और तमाम रेकॉर्ड घर भिजवा कर ग़ुलाम को सुवारी लाने का हुक्म दिया और कहा : "अब हम कूफ़ा में नहीं रहेंगे, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ने अमीरुल मोअमिनीन से येह ओ़हदा त़लब नहीं किया था बल्कि हमें तो मजबूर किया गया था और हमारी हिफ़ाज़त व सरपरस्ती की ज़िम्मेदारी ली गई थी। अब कूफ़ा में इन्साफ़ क़ाइम करना मुश्किल हो गया है लिहाज़ा मुझे येह ओ़हदा नहीं चाहिये। येह कह कर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कूफ़ा के उस पुल की त़रफ़ चल दिये जो बग़दाद जाता था। जब मूसा बिन ईसा को क़ाज़ी साहिब के जाने की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह फ़ौरन आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की त़रफ़ दौड़ा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा देते हुवे कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! रुक जाइये। खुदारा ! आप बग़दाद न जाएं, देखें तो सही कि आप ने अपने ही भाइयों को क़ैद कर दिया था।" फ़रमाया : "हां ! जब उन्हों ने एक ऐसे मुआ़मले में दख़्ल अन्दाज़ी की जिस की उन्हें इजाज़त न थी तो मैं ने उन्हें क़ैद कर दिया लेकिन तुम ने उन्हें आज़ाद कर दिया है, जब तक वोह सब के सब वापस जेल में न भेज दिये जाएं मैं हरगिज़ वापस न जाऊंगा और बग़दाद जा कर अमीरुल मोअमिनीन की त़रफ़ से दी जाने वाली इस ज़िम्मेदारी से इस्ति'फ़ा दे दूंगा।"

अमीर मूसा बिन ईसा ने क़ाज़ी साहिब का येह पुर अ़ज़्म फ़ैसला सुना तो सिपाहियों को हुक्म दिया कि जिन जिन को मैं ने रिहा किया था उन सब को वापस जेल भेज दिया जाए। हुक्म पाते ही सिपाही शहर की त़रफ़ चले गए लेकिन क़ाज़ी साहिब उसी जगह खड़े रहे। जब दारोग़ए जेल ने आ कर इत्तिलाअ़ दी कि उन तमाम को जेल में भेज दिया गया है तब आप वहां से वापस पलटे।

अमीर मूसा बिन ईसा ने अपने एक ग़ुलाम से कहा : "क़ाज़ी साहिब की सुवारी की लगाम पकड़ कर आगे आगे चलो। चुनान्चे, वहां मौजूद तमाम लोग और अमीर मूसा बिन ईसा क़ाज़ी साहिब के पीछे पीछे चल दिये। मस्जिद में पहुंच कर क़ाज़ी साहिब ने मजलिसे क़ज़ा क़ाइम की, अमीर मूसा बिन ईसा को मज़लूम औ़रत के बराबर खड़ा किया और औ़रत से फ़रमाया : "जिस पर तुम ने दा'वा किया था वोह तुम्हारे सामने मौजूद है। अमीर मूसा बिन ईसा ने कहा : "ऐ इन्साफ़

पसन्द क़ाज़ी ! अब मैं खुद ह़ाज़िर हूं लिहाज़ा मेरी वजह से क़ैद किये जाने वालों को आज़ाद किया जाए।" फ़रमाया : "हां ! अब उन्हें आज़ाद किया जाता है।" येह कह कर उन की रिहाई का परवाना जारी कर दिया और फ़रमाया : "ऐ मूसा बिन ईसा ! इस औ़रत ने तुम पर जो दा'वा किया है इस बारे में क्या कहते हो ?" कहा : "येह सच कहती है।" फ़रमाया : "वोह तमाम चीजे़ं जो इस से ली गई थीं इसे वापस की जाएं और जो दीवार गिराई गई थी उसे फ़ौरन ता'मीर करवाया जाए।" अमीर ने कहा : "ठीक है मैं अभी येह काम करवा देता हूं, क्या इस के इ़लावा भी कोई दा'वा है ?" क़ाज़ी साहि़ब ने उस औ़रत से पूछा : "क्या तुम्हारा कोई और दा'वा है ?" कहा : "हां ! मेरे फ़ारसी ख़ादिम का घर भी गिरा दिया गया था और उस का सामान भी टूट फूट गया था। अमीर ने कहा : "मैं उस नुक़्सान का भी इज़ाला किये देता हूं।" क़ाज़ी साहि़ब ने फिर पूछा : "क्या कोई और दा'वा बाक़ी है ?" औ़रत ने कहा : "अब मेरा कोई दा'वा बाक़ी नहीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए।" फिर वोह औ़रत दुआ़एं देती हुई चली गई।

अब ह़क़ ज़ाहिर हो गया था और मज़्लूम को उस का ह़क़ मिल चुका था। चुनान्चे, क़ाज़ी साहि़ब फ़ौरन उठ खड़े हुवे और अमीर मूसा बिन ईसा का हाथ थाम कर अपनी निशस्त पर बिठाया, खुद उस के सामने खड़े हो गए और कहा : "ऐ अमीर ! ऐ मूसा बिन ईसा ! السلام علیکم, शरई फ़ैसला हो गया है, अब आप अमीर हैं, मेरे लाइक़ कोई हुक्म हो तो इरशाद फ़रमाइयें।" अमीर मूसा बिन ईसा ने हंसते हुवे कहा : "अब आप को क्या हुक्म दूं ?" फिर इस्लाम के इस अ़ज़ीम क़ाज़ी की अ़दालत से चला गया।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 252 समन्दर पर नमाज़ पढ़ने वाला आ़रिफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष औलासी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَکْرِیْمًا से शाम की त़रफ़ रवाना हुवा, दौराने सफ़र एक क़ाफ़िला नज़र आया, मैं क़रीब गया तो सब लोग किसी बात पर गुफ़्त्गू कर रहे थे, मैं ने सलाम किया और कहा : "मैं भी आप के हमराह सफ़र करना चाहता हूं, क्या आप मुझे अपने साथ रखने को तय्यार हैं ?" कहा : "जैसे तुम्हारी मरज़ी। हमें कोई ए'तिराज़ नहीं।" चुनान्चे, मैं भी उस क़ाफ़िले में शामिल हो गया। मुसाफ़िर अपनी अपनी मत़्लूबा मन्ज़िल पर ठहरते रहे। आख़िर में मेरे साथ सिर्फ़ एक शख़्स बचा। उस ने मुझ से पूछा : "ऐ जवान ! कहां का इरादा है ? मैं ने कहा : "मुल्के शाम में "**कोहे लुकाम**" मेरी मन्ज़िल है, वहां ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन सा'द अल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ज़ियारत के लिये जा रहा हूं।"

मेरा वोह रफ़ीक़ चन्द दिन मेरे साथ रहा फिर मुझ से जुदा हो गया। मैं अकेला ही सफ़र करता हुवा "**औलास**" पहुंचा और समन्दर की जानिब चला गया, वहां का मन्ज़र ही अ़जीब था। एक शख़्स समन्दर की लहरों पर इतने सुकून से नमाज़ पढ़ रहा था गोया ज़मीन पर है। येह अ़जीबो ग़रीब मन्ज़र देख कर मुझ पर हैबत त़ारी होने लगी। जब उस ने मह़सूस किया कि कोई मुझे देख रहा है तो नमाज़ को मुख़्तसर कर के मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा। मैं ने देखा तो फ़ौरन उन्हें पहचान लिया वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन सा'द अ़ल्वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی थे। उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "अभी तुम यहां से चले जाओ तीन दिन बा'द आना।" मैं फ़ौरन वापस चला आया और ह़स्बे इरशाद (हुक्म के मुत़ाबिक़) तीन दिन बा'द दोबारा साह़िले समन्दर पर पहुंचा तो देखा कि वोह नमाज़ पढ़ रहे हैं। मेरे क़दमों की आहट सुन कर उन्हों ने नमाज़ मुख़्तसर की और फ़रागत के बा'द मेरा हाथ पकड़ कर समन्दर के पानी के बिल्कुल क़रीब खड़ा कर दिया। फिर उन के होटों ने जुम्बिश (या'नी ह़रकत) की और वोह आहिस्ता आहिस्ता कुछ पढ़ने लगे, मैं ने दिल में कहा : "अगर आज येह समन्दर के पानी पर चले तो मुझे भी इन के साथ समन्दर के पानी पर चलने का मौक़अ़ मिल जाएगा।" मैं येह सोच ही रहा था कि अचानक समन्दर के पानी में दो अज़्दहे ज़ाहिर हुवे। वोह सर उठाए मुंह खोले हमारी त़रफ़ बढ़ने लगे, मैं ने अपने दिल में कहा : "काश ! यहां कोई शिकारी होता जो इन्हें पकड़ लेता।" जैसे ही मेरे दिल में येह ख़याल आया, फ़ौरन दोनों अज़्दहे पानी में ग़ाइब हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन सा'द अ़ल्वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : "यहां से चले जाओ, अभी तुम अपनी त़लब को नहीं पहुंच सकते। जाओ, अभी पहाड़ों में गोशा नशीनी इख़्तियार करो, दुन्यवी ज़िन्दगी को बहुत कम समझो और जो कुछ मिल जाए उसी पर सब्र करो यहां तक कि तुम्हें पैग़ामे अजल आ जाए। इतना कह कर आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुझे वहीं छोड़ कर एक सम्त तशरीफ़ ले गए।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 253 ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का सफ़रे मदीना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद सीरवानी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق को येह फ़रमाते हुवे सुना : एक मरतबा एक वादी में मुझे बहुत ज़ियादा प्यास लगी, शिद्दते प्यास से मैं नीम बेहोश हो कर गिर पड़ा, अचानक मेरे चेहरे पर पानी के क़तरे गिरे जिन की ठन्डक मैं ने अपने दिल पर मह़सूस की। आंखें खोलीं तो ख़ूब सूरत सफ़ेद घोड़े पर सुवार सब्ज़ कपड़े ज़ेबेतन किये, ज़र्द इमामे का ताज सर पर सजाए एक शकील व जमील नौजवान नज़र आया। जिस के हाथ में एक पियाला था ऐसा ख़ूब सूरत नौजवान मैं ने आज तक न देखा था। उस ने मुझे पियाले में से शरबत पिलाया और कहा : "मेरे पीछे सुवार हो जाओ।" मैं घोड़े पर उस के पीछे सुवार हो गया। अभी वोह घोड़ा अपनी जगह से चला ही

था कि उस नौजवान ने मुझ से पूछा : "तुम सामने क्या देख रहे हो।" मैं ने कहा : "मेरे सामने इस वक़्त मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا का पुर कैफ़ नज़्ज़ारा है سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं तो अपने आक़ा व मौला मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहर में पहुंच चुका हूं।"

नौजवान ने कहा : "अब उतर जाओ, और जब रौज़ए रसूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ह़ाज़िरी हो तो मेरा भी बा अदब सलाम अ़र्ज़ कर देना और कहना : "रिज़्वाने जन्नत आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार, बिइज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ख़ूब ख़ूब सलाम अ़र्ज़ करता है।" इतना कह कर वोह नज़रों से ओझल हो गया।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه وآله وسلم}

हि़कायत नम्बर : 254 ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का विसाले बा कमाल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अश्तर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْبَر अपने वालिदे मोह़तरम के ह़वाले से फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप सह़राई सफ़र पर थे, मैं भी उन के साथ थी, मैं रोने लगी। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : क्यूं रोती हो ? मैं ने कहा : "आप इस बे आबो गिया वीरान सह़रा में इन्तिक़ाल कर रहे हैं और इस वक़्त न तो मेरे पास कोई ऐसी चीज़ है जिस से आप के कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम हो सके और न ही आप के पास, फिर मैं क्यूं न रोऊं ?" फ़रमाया : "रोना छोड़, तेरे लिये ख़ुश ख़बरी है।" हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कोई भी दो मुसलमान जिन के दो या तीन बच्चे फ़ौत हो जाएं और वोह इस पर सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखें तो वोह कभी भी जहन्नम में दाख़िल न होंगे।" और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बिइज़्ने परवर दगार, ग़ैबो पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम चन्द लोगों को मुख़ात़ब कर के (ग़ैब की ख़बर देते हुवे) इरशाद फ़रमाया : "तुम में से एक शख़्स सह़रा में मरेगा और उस की वफ़ात के वक़्त मोअमिनीन का एक गुरौह उस के पास पहुंचेगा।"

(مسند احمد،حديث ابى ذر الغفارى،الحديث ٢١٤٣١ ،ج٨،ص٦٠٨ ـ الطبقات الكبرى لابن سعد،ابوذرجندب بن جنادة، الرقم٤٣٢، ج٤، ص١٧٦)

अब उन तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से कोई ज़िन्दा नहीं रहा। सिर्फ़ मैं अकेला बाक़ी हूं और उन सब की वफ़ात या तो शहर में हुई या आबादी में। और मैं सह़रा में फ़ौत हो रहा हूं। यक़ीनन वोह शख़्स मैं ही हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! न मैं ने झूट कहा और न ही मुझे झूटी ख़बर मिली, तू जा और देख, ज़रूर कोई न कोई हमारी मदद को आएगा।"

मैं ने कहा : "अब तो हुज्जाजे किराम भी जा चुके और रास्ता बन्द हो गया।" फ़रमाया : "तू जा कर देख तो सही।" चुनान्चे, मैं रैत के टीले पर चढ़ी और रास्ते की त़रफ़ देखने लगी,

थोड़ी देर बा'द वापस उन के पास आ गई और तीमार दारी करने लगी फिर दोबारा टीले पर चढ़ कर राह तकने लगी । अचानक कुछ दूर मुझे चन्द सुवार नज़र आए, मैं ने कपड़ा हिला कर उन्हें इस त़रफ़ मुतवज्जेह किया तो वोह बड़ी तेज़ी से मेरी त़रफ़ आए और पूछा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! क्या बात है ?" मैं ने कहा : "मुसलमानों में से एक मर्द, दाइये अजल को लब्बैक कहने वाला है, क्या तुम उसे कफ़न दे सकते हो ?" उन्हों ने कहा : "वोह कौन है ?" मैं ने कहा : "अबू ज़र्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।" कहा : "वोही अबू ज़र्र जो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी हैं ?" मैं ने कहा : "हां ! वोही अबू ज़र्र जो सह़ाबिये रसूल हैं ।" येह सुनते ही वोह कहने लगे : "हमारे मां बाप उन पर कु़रबान ! वोह अ़ज़ीम हस्ती कहां है ?" मैं ने उन्हें बताया तो वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ तेज़ी से लपके और ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर सलाम अ़र्ज़ किया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब देते हुवे उन्हें "मरह़बा" कहा और फ़रमाया : "तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो ! मैं ने मदीने के ताजदार, ग़ैबों पर ख़बरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना : "कोई भी दो मुसलमान जिन के दो या तीन बच्चे फ़ौत हो जाएं और वोह इस पर सब्र करें और अज्र की उम्मीद रखें तो वोह कभी भी जहन्नम में दाख़िल न होंगे ।" और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक गुरौहे मुस्लिमीन से मुख़ात़ब हो कर फ़रमा रहे थे जिस में मैं भी मौजूद था कि "तुम में से एक शख़्स सह़रा में वफ़ात पाएगा और मोअमिनीन का एक क़ाफ़िला उस के पास पहुंच जाएगा ।" (المرجع السابق)

अब मेरे इलावा इन में से कोई ज़िन्दा नहीं, इन में से हर एक या तो आबादी में फ़ौत हुवा या फिर किसी बस्ती में, अब मैं ही वोह अकेला शख़्स हूं जो सह़रा में इन्तिक़ाल कर रहा हूं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! न मैं ने झूट बोला और न ही मुझे झूट बताया गया । जब मैं मर जाऊं और मेरे पास या मेरी ज़ौजा के पास कफ़न का कपड़ा हो तो मुझे उसी में कफ़ना देना अगर हमारे पास कफ़न का कपड़ा न मिले तो मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम देता हूं कि तुम में से जो शख़्स हुकूमती ओ़हदेदार हो या किसी अमीर का दरबान हो या किसी भी हुकूमती ओ़हदे पर हो तो वोह मुझे हरगिज़ हरगिज़ कफ़न न दे । इत्तिफ़ाक़ की बात थी कि उन में से हर एक किसी न किसी हुकूमती ओ़हदे पर रह चुका था या अभी ओ़हदे पर क़ाइम था । सिर्फ़ एक अन्सारी जवान बचा जो किसी त़रह़ भी हुकूमत का नुमाइन्दा न था । वोह नौजवान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और कहने लगा : "मेरे पास एक चादर और दो कपड़े हैं जिन्हें मेरी वालिदा ने काट कर बनाया है, मैं इन्हीं कपड़ों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कफ़न दूंगा ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हां ! तुम ही मुझे कफ़न देना ।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया तो उसी अन्सारी नौजवान ने कफ़न दिया और नमाज़े जनाज़ा के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहीं दफ़्ना दिया गया ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 255 ख़ौफे़ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से आंख निकाल दी

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में बनी इस्राईल क़ह़त़ साली में मुब्तला हो गए। उस साल बारिश बिल्कुल न हुई। लोग परेशानी के आ़लम में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "आप عَلَیْہِ السَّلَام हमारे लिये बारिश की दुआ़ फ़रमाएं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "तुम लोग मेरे साथ फुलां पहाड़ की त़रफ़ चलो।" चुनान्चे, लोग आप عَلَیْہِ السَّلَام के साथ चल दिये। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने पहाड़ पर चढ़ कर इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी ऐसा शख़्स मेरे साथ न रहे जिस ने कभी कोई गुनाह किया हो। येह सुन कर आधे से ज़ियादा लोग वापस पलट गए। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने दोबारा इरशाद फ़रमाया : जिस से कभी भी कोई गुनाह सरज़द हुवा हो वोह वापस पलट जाए, सब वापस चले गए। सिर्फ़ "बर्ख़" नामी शख़्स बाक़ी बचा। जिस की एक आंख ज़ाएअ़ हो चुकी थी। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : क्या तुम ने मेरी बात नहीं सुनी ?" अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं आप عَلَیْہِ السَّلَام की बात सुन चुका हूं।" फ़रमाया : "क्या तुम से कभी कोई गुनाह सरज़द नहीं हुवा ?" कहा : "हुज़ूर ! मुझ से एक फे़'ल सरज़द हुवा है। मैं आप عَلَیْہِ السَّلَام के सामने अ़र्ज़ किये देता हूं, अगर वोह गुनाह है तो मैं वापस चला जाऊंगा।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "बताओ, तुम से कौन सा फे़'ल सरज़द हुवा है ?" कहा : " एक मरतबा मैं एक ऐसे घर के क़रीब से गुज़रा जिस का दरवाज़ा खुला हुवा था। अचानक मेरी नज़र घर में मौजूद एक शख़्स पर पड़ी, मैं नहीं जानता कि वोह मर्द था या औ़रत। मुझे एह़सास हुवा तो मैं ने अपनी आंख से कहा : "तू ने एक ग़लत़ काम में जल्दी की, अब तू मेरे साथ नहीं रह सकती। चुनान्चे, मैं ने अपनी वोह आंख निकाल डाली। अगर मेरा देखना गुनाह था तो मैं वापस चला जाता हूं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "तुम्हारा येह फे़'ल गुनाह नहीं, अब तुम ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बारिश त़लब करो। येह सुन कर उस "**बर्ख़**" नामी आ़बिद ने दुआ़ के लिये हाथ बुलन्द कर दिये और बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा।

"**या क़ुद्दूस** عَزَّوَجَلَّ ! **या क़ुद्दूस** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं, अगर तू कोई चीज़ अ़त़ा फ़रमा दे तो तेरे ख़ज़ानों में कमी न होगी। मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ तू बुख़्ल से पाक है, कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसे तू न जानता हो। मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ हमें बाराने रह़मत से सैराब कर दे।" अभी दुआ़ ख़त्म भी न होने पाई थी कि छमा छम रह़मत की बरसात होने लगी। हर त़रफ़ जल थल हो गया और येह दोनों ह़ज़रात बारिश में भीगते हुवे वापस पलटे।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 256 शाने औलिया

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन वासिल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَادِر से मन्क़ूल है, एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना सहल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : "ऐ अबू मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लोग कहते हैं कि दुन्या में ऐसे अ़ज़ीम बुज़ुर्ग भी हैं जिन की सुब्ह़ "बसरा" होती है और शाम मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में। क्या वाक़ेई ऐसा है ?" फ़रमाया : "हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ ऐसे बन्दे भी हैं, जो पहलू के बल लैटे होते हैं और करवट बदलते हैं तो जहां चाहते हैं पहुंच जाते हैं।" फिर कुछ देर ख़ामोश रहे और फ़रमाया : "क्या हम देखते नहीं कि बादशाह अपने वज़ीरों और मुशीरों में से जिसे ज़ियादा फ़रमां बरदार, बहादुर और अच्छी निय्यत वाला देखते हैं उसे अपने ख़ज़ानों की चाबियां दे देते हैं और इजाज़त दे देते हैं कि उमूरे ममलुकत में जो चाहे करो, तुम बा इख़्तियार हो। इसी तरह़ बन्दा जब अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त व फ़रमां बरदारी करता रहता है, जिन कामों का हुक्म दिया गया उन्हें बजा लाता है। जिन से मन्अ़ किया गया उन से बाज़ रहता है और हर उस काम को ब ख़ुशी करता है जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपना मुक़र्रब बना लेता है।

ऐ लोगो ! बेशक तुम ग़फ़्लत का शिकार हो। अरे ! येह दुन्या तो तुम से रुख़्सत होने वाली और तुम इस से कूच करने वाले हो। जल्दी करो, ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो जाओ। बेशक मुआ़मला (आख़िरत) बहुत क़रीब है जो कुछ करना है जल्दी जल्दी कर लो।"

कूच, हां ! ऐ बे ख़बर होने को है — कब तलक ग़फ़्लत सह़र होने को है
कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले — कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िन्दगी का

हिकायत नम्बर : 257 कफ़न की वापसी

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी और मशाइख़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के एक गुरौह से मन्क़ूल है : "हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र दीनवरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का एक भाई "**मुल्के शाम**" में रहता था। वोह किसी भी बस्ती या शहर में एक दिन या एक रात से ज़ियादा न ठहरता। एक मरतबा वोह एक गाऊं में गया तो बीमार हो गया। सात दिन बीमार रहा, न तो गाऊं वालों में से कोई उस की बीमार पुर्सी के लिये आया न ही खाने पीने का पूछा। आठवीं रात भूक व प्यास की शिद्दत में उस का इन्तिक़ाल हो गया। सुब्ह़ गाऊं वालों ने उसे मुर्दा पाया तो ग़ुस्ल दे कर ख़ुश्बू लगाई, कफ़न पहनाया और नमाज़े जनाज़ा अदा करने चल पड़े, इतने में आस पास की बस्तियों के लोग जूक़ दर जूक़ वहां पहुंच गए और कहने लगे : "हम ने आज एक ग़ैबी आवाज़ सुनी, कोई कहने वाला कह रहा था : "तुम में से जो कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली के जनाज़े में ह़ाज़िर होना चाहे

वोह फ़ुलां बस्ती में चला जाए।'' बस वोही आवाज़ सुन कर हम यहां आए हैं।'' फिर सब ने नमाज़े जनाज़ा अदा की और उस वली को दफ़्ना कर अपने अपने घरों को लौट आए।

सुब्ह़ की नमाज़ के बा'द लोगों ने मस्जिद की मेह़राब में एक कफ़न देखा और साथ ही एक पर्चा था जिस पर येह लिखा हुवा था : ''तुम्हारे दरमियान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली सात दिन तक भूका प्यासा और बीमार पड़ा रहा, मगर तुम ने उस का ह़ाल तक न पूछा न उस की बीमार पुर्सी की, न ही खाना वग़ैरा खिलाया। हमें तुम्हारे कफ़न की कोई ह़ाजत नहीं, तुम्हारा कफ़न तुम्हें वापस किया जा रहा है।''

लोगों ने येह रुक़्आ़ पढ़ा तो बहुत शर्मिन्दा हुवे। फिर अपने अ़लाक़े में एक उ़म्दा मकान बना कर मेहमानों और मुसाफ़िरों के लिये ख़ास कर दिया। मेहमानों और मुसाफ़िरों की ख़ूब ख़ातिर मदारात करने लगे।''

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 258

वक़्त के क़द्र दां

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बिन ज़ियाद علیہ رحمۃ اللہ الجواد से मन्क़ूल है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र **अ़त्तार** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار को येह फ़रमाते हुवे सुना : ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं और मेरे कुछ रुफ़क़ा वहां मौजूद थे, हम ने देखा कि इन्तिक़ाल से कुछ देर क़ब्ल ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) की वजह से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे थे। आप के दोनों पाउं मुतवर्रम (या'नी सूजे हुवे) थे। जब रुकूअ़ व सुजूद करते तो एक पाउं मोड़ लेते जिस की वजह से बहुत तक्लीफ़ और परेशानी होती। दोस्तों ने येह ह़ालत देखी तो कहा : ''ऐ अबू क़ासिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم येह क्या है ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पाउं मुतवर्रम क्यूं हैं ?'' फ़रमाया : ''**अल्लाहु अक्बर**, येह तो ने'मत है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़रीरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : ''ऐ अबू क़ासिम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم अगर आप लैट जाएं तो क्या हरज है ?'' फ़रमाया : ''अभी वक़्त है जिस में कुछ नेकियां कर ली जाएं, इस के बा'द कहां मौक़अ़ मिलेगा ?'' फिर **अल्लाहु अक्बर** कहा और आप की रूह़ इस दारे फ़ानी से आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई।'' येह भी मन्क़ूल है कि ''जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा गया : हुज़ूर ! अपनी जान पर कुछ नर्मी कीजिये, तो फ़रमाया : अब मेरा नामए आ'माल बन्द किया जा रहा है, इस वक़्त नेक आ'माल का मुझ से ज़ियादा कौन ह़ाजत मन्द होगा।''

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 259 दो अज़ीम बुज़ुर्ग

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा मरअ़शी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मरवी है कि "जब हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا आए तो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم भी वहां मौजूद थे, दोनों अ़ज़ीम बुज़ुर्ग मस्जिदे ह़राम में जम्अ़ हुवे। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से पूछा : "रिज़्क़ के मुआ़मले में तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" फ़रमाया : "जब खाने को मिल जाता है तो खा लेते हैं, अगर न मिले तो सब्र करते हैं।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने फ़रमाया : "येह ह़ाल तो हमारे बल्ख़ के कुत्तों का है कि जब खाने को मिल जाए तो खा लेते हैं और न मिले तो सब्र करते हैं।" फिर हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने पूछा : "अच्छा, आप की इस मुआ़मले में आ़दत क्या है ?" फ़रमाया : "हमारा तो ह़ाल येह है कि कोई चीज़ खाने को मिले तो सदक़ा कर देते हैं और जब भूके रहते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ बजा लाते और शुक्र अदा करते हैं।" जब हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने येह सुना तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने बैठ गए और कहा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق आज से आप हमारे उस्ताज़ हैं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبی الامين صلى الله عليه وسلم

हिकायत नम्बर : 260 अचानक दीवार शक हो गई

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन सूफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मरवी है कि मैं ने अपने उस्ताज़ हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन अबू शैबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को फ़रमाते हुवे सुना : "एक मरतबा मैं बैतुल मुक़द्दस में था। मेरी ख़्वाहिश थी कि आज रात मस्जिद में ही क़ियाम करूं और तन्हा इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ रहूं। लेकिन मुझे वहां रात गुज़ारने की इजाज़त न मिली। कुछ दिनों बा'द दोबारा मस्जिद में गया तो बर आमदे में कुछ चटाइयां रखी देखीं, मैं इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा कर के चटाइयों के पीछे छुप गया। नमाज़ियों के चले जाने के बा'द दरवाज़े बन्द कर दिये गए। जब मुझे इत़मीनान हो गया कि अब कोई नहीं तो मैं सह़न में आ गया। अचानक मेह़राब की दीवार शक हुई और एक शख़्स अन्दर दाख़िल हुवा फिर दूसरा और तीसरा इसी त़रह़ सात आदमी वहां जम्अ़ हो कर नमाज़ पढ़ने लगे। उन्हें देख कर मुझ पर हैबत त़ारी हो रही थी। मैं सक्ते के आ़लम में अपनी जगह खड़ा उन्हें देखता रहा। फिर सुब्ह़ सादिक़ से कुछ देर क़ब्ल वोह जिस रास्ते से आए थे उसी से बाहर चले गए फिर दीवार बराबर हो गई।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبی الامين صلى الله عليه وسلم

हिकायत नम्बर : 261

ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब

हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "एक मरतबा रात के पिछले पहर मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में मौलिदे रसूल (या'नी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैदाइश की जगह) के क़रीब मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم से हुई। वोह एक जगह बैठे रो रहे थे, मैं उन के क़रीब जा कर बैठ गया और कहा : "ऐ अबू इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق ख़ैरिय्यत तो है, आप क्यूं रो रहे हैं ?" मैं ने दो तीन मरतबा पूछा तो फ़रमाया : "ऐ शक़ीक़ عليه رحمة الله الرفيق अगर मैं बता दूं तो मेरे मुआ़मले को छुपाए रखोगे या लोगों से बयान कर दोगे ?" मैं ने कहा : "आप बे फ़िक्र हो कर बताएं।" फ़रमाया : "मेरा नफ़्स तीस साल से मुसलसल सिक्बाज (या'नी गोश्त और सिर्का मिला कर पकाया हुवा सालन) खाने की ख़्वाहिश कर रहा था। मैं ने इसे तीस साल तक रोके रखा, आज रात बैठे बैठे मुझे ऊंघ आई तो देखा कि एक नौजवान हाथों में सब्ज़ पियाला लिये खड़ा है जिस से गर्म गर्म सिक्बाज की ख़ुश्बू आ रही है, नौजवान ने वोह पियाला मेरे क़रीब करते हुवे कहा : "ऐ इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْم येह सिक्बाज खा लो।" मैं ने कहा : "जिस चीज़ को मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये तर्क कर चुका हूं उसे हरगिज़ नहीं खाऊंगा।"

वोह कहने लगा : "अगर येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से नहीं मिला तो बेशक न खाओ, अरे ! येह भी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ता कर्दा है फिर तुम क्यूं नहीं खा रहे।" अब मेरे पास रोने के सिवा कोई जवाब न था। मैं ज़ारो क़ितार रोने लगा तो उस ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे, येह खा लो।" मैं ने कहा : "हमें येह ताकीद की गई है कि जब तक मा'लूम न हो कि खाना किन ज़राएअ़ से ह़ासिल किया गया है तब तक उस की त़रफ़ हाथ न बढ़ाओ।" कहा : ऐ इब्राहीम عليه رحمة الله الرحيم मुझे येह खाना दे कर कहा गया : "ऐ ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام येह खाना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم के पास ले जा कर उसे खिलाओ। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की जान पर रह़्म किया क्यूंकि उन्हों ने अ़र्सए दराज़ तक अपने नफ़्स को सिक्बाज न खिलाया और सब्र से काम लिया।" ऐ इब्राहीम عليه رحمة الله الرحيم मैं ने मलाइका को येह कहते हुवे सुना : "ऐसा कौन होगा कि रिज़्क़ दिया जाए और वोह क़बूल न करे और ऐसा कौन है जो त़लब करे और उसे अ़ता न किया जाए ?" मैं ने नौजवान से कहा : "अगर वाक़ेई येह खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आया है और मुआ़मला इसी त़रह़ है जिस त़रह़ आप ने बताया तो फिर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत से इन्कार नहीं कर सकता। फिर मैं खाने की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो अचानक एक और नौजवान नुमूदार हुवा। उस ने पहले नौजवान (हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام) से कहा : "ऐ ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام आप अपने मुबारक हाथों से इन्हें येह खाना खिलाएं।"

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने मुबारक हाथों से मुझे खिलाना शुरूअ़ किया यहां तक कि मैं ख़ूब सैर हो गया। फिर मेरी आंख खुल गई लेकिन उस खाने की मिठास अब तक मैं अपने मुंह में मह़सूस कर रहा हूं। हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बिन

इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येह ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब सुन कर मैं ने इन की हथेली चूम ली और बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस वलिय्ये कामिल को वसीला बनाते हुवे इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ऐ भूकों को उन की पसन्दीदा अश्या खिलाने वाले ! ऐ मुहि़ब्बीन को अपनी मह़ब्बत के जाम भर भर कर पिलाने वाले ! क्या तेरे हां शक़ीक़ का कोई मर्तबा है ? ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तुझे अपने इस वली और इस के हाथ का वासित़ा ! और तुझे तेरे उस करम का वासित़ा जो तू ने अपने इस वली पर फ़रमाया अपने इस बन्दे पर भी एक निगाहे करम फ़रमा दे जो तेरे फ़ज़्ल और एह़सान का मोह़ताज है, अगर्चे वोह इस क़ाबिल नहीं कि उस को येह ने'मत अ़त़ा की जाएं तू मह़ज़ अपनी रह़मत से फ़ज़्ल फ़रमा दे।" जब मैं दुआ़ से फ़ारिग़ हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم उठ कर मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ चल दिये और मैं भी उन के साथ साथ चलने लगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 262 मक्कए मुअ़ज़्ज़मा की शान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अहवाज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : "बेशक किसी वली का लोगों से मैल जोल रखना उस के लिये ज़िल्लत का बाइ़स है और लोगों से अ़लाह़िदगी बाइ़से इ़ज़्ज़त। औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में से बहुत कम ऐसे होंगे जिन्हों ने गोशा नशीनी इख़्तियार न की हो। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल वली थे, इन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत अ़त़ाएं थीं, वोह लोगों से दूर रहना पसन्द करते इसी लिये कभी किसी शहर में तो कभी किसी शहर में होते। बिल आख़िर वोह मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَكْرِيْمًا में आए और वहीं मुक़ीम हो गए। मैं उन की आ़दत से वाक़िफ़ था कि येह किसी शहर में ज़ियादा दिन नहीं ठहरते लेकिन मक्का शरीफ़ में क़ियाम किये हुवे उन्हें काफ़ी दिन गुज़र चुके थे, मैं ने पूछा : "आप तो किसी शहर में इतना ज़ियादा रुकते ही नहीं फिर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में इतने दिन क्यूं रुक गए ?"

फ़रमाया : "भला मैं इस अ़ज़मतों वाले शहर में क्यूं न रुकूं ? मैं ने कोई ऐसा शहर नहीं देखा जिस में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से ज़ियादा रह़मतों और बरकतों का नुज़ूल होता हो। लिहाज़ा मुझे येह बात मह़बूब है कि मैं ऐसे बा बरकत शहर में ठहरूं जहां दिन रात मलाइका की आमदो रफ़्त रहती है, बेशक यहां बहुत से अ़जाइबात हैं। मलाइका मुख़्तलिफ़ सूरतों में ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते रहते हैं। अगर मैं वोह तमाम बातें बता दूं जो मैं ने देखी हैं तो लोग इन पर यक़ीन न करें।" मैं ने कहा : "ख़ुदारा ! इन बातों में से मुझे भी कुछ बताइये।

फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हर वोह बन्दा जो विलायते कामिला के दरजे पर फ़ाइज़ हो वोह हर जुमा'रात को इस बा बरकत शहर में आता है और कभी भी नाग़ा नहीं करता। मैं इसी लिये यहां रुका हुवा हूं ताकि उन औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में से किसी वलिय्ये कामिल की ज़ियारत से फ़ैज़याब हो सकूं। मैं ने मालिक बिन क़ासिम जबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى नामी एक शख़्स को देखा उन के हाथ में कुछ खजूरें थीं, मैं ने उन से कहा : "क्या आप खाना खा कर आ रहे हैं?" उन्हों ने कहा "اَسْتَغْفِرُاللّٰه" मैं ने तो कई हफ़्तों से कुछ भी नहीं खाया, हां ! मैं ने अपनी वालिदा को खजूरें खिलाई हैं और अब फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के लिये ह़रम शरीफ़ आया हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहते हैं कि ह़रम शरीफ़ और उस के घर का दरमियानी फ़ासिला सात सो (700) फ़रसख़ (या'नी 2100 मील) था, वोह वहां से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने मस्जिदे ह़राम में आया था, क्या तुम इस बात पर यक़ीन कर लोगे? मैं ने कहा : क्यूं नहीं, फ़रमाया : "तमाम ता'रीफ़ें उसी पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे ऐसे मुसलमान शख़्स से मिलवाया जो औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की करामात का मानने वाला और उन्हें ह़क़ जानने वाला है।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبی الامين صلی اللہ عليہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 263

तैरती हुई हन्डिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन सालिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को येह फ़रमाते हुवे सुना : "एक मरतबा मैं अपने एक दोस्त के साथ "त़रसूस" की त़रफ़ रवाना हुवा, जब वहां पहुंचे तो जिहाद के लिये सदाएं बुलन्द हो रही थीं, कुफ़्फ़ार से लड़ने के लिये त़रसूस के मुजाहिद रूम की त़रफ़ जा रहे थे। हम भी मुजाहिदीन के साथ दुश्मन की सरकोबी के लिये रवाना हो गए, रूम के किसी अ़लाक़े में मेरा रफ़ीक़ बीमार हो गया, मैं ने उस से पूछा : "क्या तुम्हें किसी चीज़ की ख़्वाहिश है?"

कहा : "हां ! मैं भुनी हुई बकरी और अख़रोट खाना चाहता हूं।" मैं ने कहा : "बीमारी की वजह से तुम्हारा दिमाग़ चल गया है, इस लिये ऐसी बातें कर रहे हो? ज़रा सोचो तो सही, हम इस वक़्त दुश्मनों के अ़लाक़े में हैं और तुम भुनी हुई बकरी की ख़्वाहिश कर रहे हो, येह बहुत मुश्किल है कि तुम्हारी ख़्वाहिश पूरी हो जाए।" कहा : "आप ने मेरी ख़्वाहिश पूछी तो मैं ने इज़्हार कर दिया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन सालिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक जगह मुजाहिदीन के लश्कर ने क़ियाम किया, मैं अपने घोड़े को पानी पिलाने क़रीबी नहर पर ले गया। मैं ने नहर के पानी पर एक हन्डियां तैरती देखी जिस के ऊपर छे (6) अख़रोट थे। मैं दोड़ता हुवा अपने

दोस्त के पास गया सारा वाक़िआ़ सुनाया और उसे अपने साथ ले कर वापस नहर पर आया। उस ने हन्डिया देखी तो उस में बकरी का भुना हुवा गोश्त था और अख़रोट हन्डिया के ऊपर रखे हुवे थे। उस ने अख़रोटों को उलट पलट करते हुवे कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी त़लब पूरी हो गई जो चीज़ मैं ने चाही मुझे मिल गई।"

फिर अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के कहा : "ऐ नफ़्स ! तू ने जिस चीज़ की ख़्वाहिश की वोह तेरे सामने मौजूद है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुझे इस में से कुछ भी न चखाऊंगा।" येह कह कर वोह वापस पलट आया और उस में से कुछ भी न खाया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 264 मातह़तों की ज़बरदस्त ख़ैरख़्वाही

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली बिन ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिद को येह फ़रमाते हुवे सुना : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जब ह़ज का इरादा किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के रुफ़क़ा "**अहले मर्व**" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आए और कहने लगे : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان हम ह़रमैन शरीफ़ैन का सफ़र आप के साथ करना चाहते हैं, आप हमें अपनी रफ़ाक़त की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दीजिये।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अपना तमाम ज़ादे राह मेरे पास ले आओ।" वोह अपना ज़ादे राह ले आए, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तमाम ज़ादे राह लिया और एक सन्दूक़ में बन्द कर के ताला लगा कर एक मह़फ़ूज़ जगह रख दिया। फिर उन के लिये सुवारियां किराए पर लीं और येह क़ाफ़िला आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अमारत (या'नी निगरानी) में सूए ह़रम चल दिया।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन के खाने पीने का इन्तिज़ाम अपनी त़रफ़ से करते रहते, उन्हें उ़म्दा से उ़म्दा खाना खिलाते, बेहतरीन पानी फ़राहम करते। जब येह क़ाफ़िला बग़दाद पहुंचा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तमाम क़ाफ़िले वालों के लिये बेहतरीन लिबास ख़रीदा। और खाने पीने का वाफ़िर सामान साथ ले कर येह क़ाफ़िला दोबारा जानिबे मन्ज़िल चल दिया। बिल आख़िर येह क़ाफ़िला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक वलिय्ये कामिल की रहनुमाई में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक शहर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا पहुंचा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने हर हर रफ़ीक़ से पूछा : "तुम्हारे घर वालों ने तुम्हें मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से कौन सा तोह़फ़ा लाने को कहा ?" हर एक ने अपनी अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया। तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हर एक को उस की मत़्लूबा शै ख़रीद कर देते रहे।

फिर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की पुरनूर फ़ज़ाओं में पहुंच कर मनासिके ह़ज अदा किये, ह़ज मुकम्मल हो जाने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया :

"बताओ, तुम्हारे घर वालों ने मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से क्या चीज़ ख़रीद कर लाने को कहा था, इसी त़रह़ आप ने हर एक से पूछा : जिस ने जो चीज़ बताई आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़रीद कर दी। वापसी पर भी दिल खोल कर ख़र्च किया। जब येह क़ाफ़िला अपने अ़लाक़े में पहुंच गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन के घरों पर प्लास्तर करवा कर चूना करवाया, तीन दिन बा'द अपने तमाम रुफ़क़ाए सफ़र की दा'वत की और उन्हें बेहतरीन कपड़े पहनाए। जब वोह खाना खा चुके तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सन्दूक़ मंगवा कर खोला और हर एक का ज़ादे राह वापस कर दिया।

रावी कहते हैं, मेरे वालिद ने मुझे बताया : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के एक ख़ादिम ने मुझे बताया कि "आख़िरी सफ़र के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने रुफ़क़ा की दा'वत की और उस में 25 दस्तरख़्वानों पर फ़ालूदा रखा गया। (रावी मज़ीद फ़रमाते हैं कि) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق से फ़रमाया : "अगर आप और आप के रुफ़क़ा न होते तो मैं तिजारत न करता।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه हर साल फ़ुक़रा पर एक लाख दिरहम ख़र्च किया करते।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 265

उस्ताज़ हो तो ऐसा.....!

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ईसा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अकषर "**त़रसूस**" की त़रफ़ जाते और वहां एक मुसाफ़िर ख़ाने में ठहरते, एक नौजवान आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ह़दीष सुना करता, जब भी आप "रिक़्क़ह" (नामी शहर में) तशरीफ़ लाते वोह नौजवान ह़ाज़िरे ख़िदमत हो जाता। एक मरतबा जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "रिक़्क़ह" पहुंचे तो उस नौजवान को न पाया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस वक़्त जल्दी में थे क्यूंकि मुसलमानों का एक लश्कर जिहाद के लिये गया हुवा था आप भी उस में शिर्कत के लिये आए थे। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه लश्कर में शामिल हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों को फ़त्ह़ हुई और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ग़ाज़ी बन कर वापस त़रसूस आए और "रिक़्क़ह" पहुंच कर अपने उस नौजवान शागिर्द के बारे में पूछा तो पता चला कि नौजवान मक़रूज़ था और उस के पास इतनी रक़म न थी कि वोह क़र्ज़ अदा करता लिहाज़ा क़र्ज़ अदा न करने की वजह से उसे गिरिफ़्तार कर लिया गया है।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : "मेरे उस नौजवान शागिर्द पर कितना क़र्ज़ था ?" कहा : "दस हज़ार दिरहम।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पूछते पूछते क़र्ज़ ख़्वाह के घर पहुंचे, उसे दस हज़ार दिरहम दे कर अपने शागिर्द की रिहाई का मुत़ालबा किया और कहा : "जब तक मैं ज़िन्दा रहूं

उस वक़्त तक किसी को भी इस वाक़िए़ की ख़बर न देना।" फिर रातों रात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वहां से रुख़्सत हो गए। क़र्ज़ ख़्वाह ने सुब्ह़ होते ही मक़रूज़ नौजवान को रिहा कर दिया। नौजवान जब बाहर आया तो लोगों ने कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आप के मुतअ़ल्लिक़ पूछ रहे थे, अब वोह वापस जा चुके हैं, येह सुन कर नौजवान आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तलाश में निकल पड़ा और तीन दिन की मसाफ़त तै कर के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास पहुंचा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसे देखा तो पूछा : "ऐ नौजवान तुम कहां थे ? मैं ने तुम्हें मुसाफ़िर खाने में नहीं पाया।" नौजवान ने कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان मुझे क़र्ज़ के इवज़ क़ैद कर लिया गया था।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "फिर तुम्हारी रिहाई का क्या सबब बना ?" कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी नेक बन्दे ने मेरा क़र्ज़ अदा कर दिया, इस त़रह़ मुझे रिहाई मिल गई।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो कि उस ने किसी को तेरा क़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ दी और तुझे रिहाई अ़त़ा फ़रमाई।"

रावी कहते हैं : जब तक ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ज़िन्दा रहे तब तक उस क़र्ज़ ख़्वाह ने कीसी को भी ख़बर न दी कि नौजवान का क़र्ज़ किस ने अदा किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के विसाल के बा'द उस ने सारा वाक़िआ़ लोगों को बता दिया।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 266 उड़ता हुवा दस्तरख़्वान

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुवे सुना : "मैं मुल्के शाम के पहाड़ी अ़लाक़ों में था। वहां चन्द ऐसे लोगों को देखा जिन्हों ने ऊनी चोग़े पहने हुवे थे, हर एक के हाथ में पानी पीने का डोल और लाठी थी। उन्हों ने मुझे देखा तो कहने लगे : आओ, अबू फ़ैज़ ज़ुन्नून मिस्री की त़रफ़ चलते हैं। वोह मेरे पास आए और सलाम किया : मैं ने जवाब दिया और पूछा : "तुम कहां से आए हो ?" एक ने जवाब दिया : "हम उल्फ़त व मह़ब्बत के बाग़ात से आए हैं।" मैं ने पूछा : "किस की मदद से तुम यहां पहुंचे ?" कहा : "उस परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की मदद से जो बहुत ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाने वाला है।"

मैं ने पूछा : "तुम वहां क्या करते हो ?" दूसरे शख़्स ने कहा : "हम वहां वज्द के पियालों से उ़ल्फ़त व मह़ब्बत के जाम पीते हैं।" मैं ने कहा : "आख़िर वोह कौन है जो इस मुआ़मले में तुम्हारी मदद करता है ?" कहा : "दिलों को बुज़ुर्गी बख़्शने वाली, मह़बूब की हमदर्दी पैदा करने वाली, ख़ालिस कोशिश और इन्तिहाई अश्कबारी इस मुआ़मले में हमारी मददगार है। जब हम

मह़ब्बत का जाम पी लेते हैं तो इस के सबब ग़फ़्लत के अन्धेरे हम से दूर हो जाते और अब्रे रह़मत हम पर छमा छम बरसते हैं।" फिर वोह आपस में कहने लगे : "येह ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى हैं जो उ़ल्फ़त व मह़ब्बत के बारे में बेहतरीन कलाम करने वाले हैं।" वोह लोग येह बात कर ही रहे थे कि बहुत तेज़ हवा चली, मैं ने देखा कि हवा अपने साथ एक बड़ा **दस्तरख़्वान** ले कर आई जिस पर अन्वाओ़ अक़्साम के खाने बहुत सलीक़े से रखे हुवे थे। वोह दस्तरख़्वान हमारे सामने आ कर बिछ गया। मैं ने कहा : "पाक है वोह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जो अपने औलिया की ज़ियाफ़त करने वाला और उन पर करम फ़रमाने वाला है।" फिर वोह लोग मुझ से कहने लगे : "ऐ ज़ुन्नून ! तुम तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली हो।"

मैं ने कहा : "मैं अपने आप को इस क़ाबिल नहीं समझता कि दर्जए विलायत मुझे मिल जाए।" येह सुन कर उन्हों ने मुझे बड़ी गहरी नज़रों से देखा। मैं ने कहा : "मुझे नसीह़त करो और मेरे लिये ख़ुसूसी दुआ़ करो।" अभी हम येह बातें कर ही रहे थे कि पहाड़ से कुछ नौजवान हमारी त़रफ़ आए, सलाम किया और कहा :

"ऐ हमारे भाइयो ! नाकारा ज़ुन्नून का क्या ह़ाल है ? उस की ख़्वाहिशें पूरी ही नहीं होतीं और न वोह अपनी ख़्वाहिशात से बाज़ आता है।" इतना कह कर वोह सब दस्तरख़्वान के गिर्द बैठ गए और खाना शुरूअ़ कर दिया। दूसरे लोग भी उन नौजवानों के साथ बैठ कर खाना खाने लगे, लेकिन मुझे किसी ने भी न बुलाया, फिर उन नौजवानों ने मुझ से कहा : "ऐ ज़ुन्नून मिस्री ! अगर तुम कमज़ोर यक़ीन वाले हो तो ह़क़ की मह़ाफ़िल में ह़ाज़िर क्यूं नहीं होते ? और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की सोह़बत में क्यूं नहीं बैठते।" खाना खा कर वोह सब तो चले गए लेकिन मैं ह़ैरान व मुतअ़ज्जिब वहीं खड़ा रहा।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 267

ज़िक्रे इलाही की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद हल्वानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى से मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق "रै" की जामेअ़ मस्जिद में अपने रुफ़क़ा के साथ बैठे हुवे थे, इतने में एक हमसाए के घर से गाने बाजे की आवाज़ सुनाई दी, इस आवाज़ से मस्जिद में मौजूद तमाम लोग परेशान हो गए। किसी ने कहा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق अब क्या किया जाए ?" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्जिद से निकले और उस घर की त़रफ़ चल दिये जहां से गाने की आवाज़ आ रही थी, आप गली का मोड़ मुड़ने लगे तो सामने एक बीमार व कमज़ोर सा कुत्ता बैठा हुवा नज़र आया। जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के क़रीब से गुज़रे तो वोह

खड़ा हो कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर भोंकने लगा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वापस मस्जिद में आ गए और कुछ सोचने लगे। थोड़ी देर बा'द दोबारा उसी मकान की त़रफ़ चल दिये। जब उसी कमज़ोर व ज़ईफ़ कुत्ते के क़रीब से गुज़रे तो वोह दुम हिलाने लगा और बिल्कुल न भोंका। जब उस घर के पास पहुंचे जहां से गाने की आवाज़ आ रही थी तो एक ख़ूब सूरत नौजवान बाहर आया और कहा : "ऐ मोह़तरम बुज़ुर्ग ! आप परेशान क्यूं हैं ? मुझे जब आप के एक साथी ने बताया कि मेरी वजह से आप लोगों को परेशानी हो रही है तो उसी वक़्त मैं ने अपने गुनाहों से तौबा कर ली, अब आप जो चाहेंगे मैं वोही करूंगा। मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अ़हद कर लिया है कि अब कभी भी शराब न पियूंगा। इस के बा'द उस नौजवान ने तमाम आलाते लह्व लइ़ब और शराब के बरतन तोड़ दिये और नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार कर के आ'माले सालेह़ा की त़रफ़ राग़िब होने की निय्यत कर ली।"

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वापस मस्जिद आए तो लोगों ने पूछा : "हुज़ूर ! पहली मरतबा कमज़ोर कुत्ता आप पर भोंका और दूसरी मरतबा चापलूसी करते हुवे दुम हिलाने लगा, इस की क्या वजह है ?" फ़रमाया : "जब मैं पहली मरतबा बाहर गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किये हुवे वा'दे में कोताही हुई और मैं ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल हो गया, इसी लिये वोह कमज़ोर सा कुत्ता भी मुझ पर दिलेर हो कर भोंकने लगा। जब कोताही का एह़सास हुवा तो मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी इस ग़लती की मुआ़फ़ी मांगी, फिर दोबारा गया तो वोही कुत्ता मेरी चापलूसी करने लगा और तुम येह सब अपनी आंखों से देख चुके हो। याद रखो ! हर वोह शख़्स जो किसी बुरी चीज़ के ख़ातिमे के लिये जाए और अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किये हुवे किसी वा'दे में उस से कोताही हो जाए तो तमाम चीज़ें उस पर दिलेर हो जाती हैं। लेकिन जब वोह इस ग़लती व कोताही का इज़ाला कर ले तो कोई चीज़ उसे नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और येह दोनों बातें तुम अपनी आंखों से देख चुके हो।"

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ कितने ख़ुश क़िस्मत हैं वोह लोग जो हर घड़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में रहते हैं। उन अ़ज़ीम लोगों के लिये ख़ुशख़बरी है जो हर घड़ी हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ की बजा आवरी के लिये कोशां रहते हैं और उन्हें राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 268 — अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़

अ़ल्लामा वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मन्क़ूल है, एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने क़बीला "**जुर्हुमी**" के एक शख़्स से फ़रमाया : "अगर तुम ने अपनी ज़िन्दगी में कोई अ़जीबो ग़रीब बात देखी हो तो उस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताओ।"

उस ने अपना अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ बयान किया कि "एक मरतबा मैं एक वादी में गया तो देखा कि लोग "बनी उ़ज़्रह" के "ह़र्ब" नामी एक शख़्स का जनाज़ा लिये जा रहे थे, मैं भी उन के साथ चल दिया जब उसे क़ब्र में उतार दिया गया तो मैं लोगों से एक त़रफ़ हो गया। मुझे उस शख़्स की मौत पर खुद ब खुद न जाने क्यूं रोना आ रहा था, मेरी आंखों से सैले अश्क रवां था, मुझे किसी शाइ़र के चन्द अश्आ़र अ़र्सए दराज़ से याद थे लेकिन शाइ़र के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम न था उस शख़्स की मौत से मुझ पर ग़म त़ारी था।

चुनान्चे, मैं येह अश्आ़र पढ़ने लगा जिन का मफ़्हूम येह है :

(1)......मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छे नसीब की भीक मांगी, और मैं उस की अ़त़ा पर राज़ी हूं, जब बार बार आसानियां मिलती हैं तो तंगी भी क़रीब है।

(2)......इन्सान जब दुन्या में होता है तो खुश ह़ाल और क़ाबिले रश्क होता है, जब क़ब्र में पहुंच जाता है तो ज़माने की तुन्दो तेज़ हवाएं उसे ज़मीन में छुपा देती हैं।

(3)......(मौत के बा'द) उस की क़ब्र पर एक मुसाफ़िर तो आंसू बहाता है ह़ालांकि वोह उसे जानता भी नहीं। लेकिन मरने वाले के अ़ज़ीज़ो अक़ारिब उस की मौत पर खुश नज़र आते हैं।

रावी कहते हैं : "मैं इन्हीं अश्आ़र का तकरार कर रहा था जब मेरे क़रीब खड़े एक शख़्स ने येह अश्आ़र सुने तो कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या तुझे मा'लूम है कि येह किस के अश्आ़र हैं ?" मैं ने कहा : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह अश्आ़र मुझे अ़र्सए दराज़ से याद हैं लेकिन येह नहीं जानता कि येह किस शाइ़र के हैं ?" येह सुन कर उस शख़्स ने एक अ़जीबो ग़रीब इन्किशाफ़ करते हुवे कहा : "ऐ मुसाफ़िर ! उस ज़ात की क़सम जिस की तू ने क़सम खाई है ! बेशक येह अश्आ़र हमारे इसी रफ़ीक़ ने कहे थे जिसे हम ने तुम्हारे सामने अभी अभी क़ब्र में उतारा है, फिर उस ने चन्द लोगों की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : "वोह इस के क़रीबी रिश्तेदार हैं जो इस की मौत पर मसरूर हैं, और तुम एक मुसाफ़िर हो लेकिन फिर भी आंसू बहा रहे हो। आज बिल्कुल ऐसा ही हो गया जैसा उस ने अश्आ़र की सूरत में बयान किया।" मुझे इस अ़जीबो ग़रीब बात से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, ऐसा लगता है जैसे शाइ़र को अपनी मौत के बा'द का इ़ल्म हो गया था कि मेरे साथ येह सुलूक किया जाएगा। (फिर उस शख़्स ने कहा :) "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! येह वाक़िआ़ मेरी ज़िन्दगी का सब से अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ है।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 269 मामून की ज़हानत

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मह़मूद फ़रमाते हैं : मैं ने क़ाज़ी यह़्या बिन अकषम को येह कहते हुवे सुना : "मैं ने मामूनुर्रशीद से ज़ियादा फ़हम व तजरिबा कार शख़्स कोई नहीं देखा। एक रात मैं मामूनुर्रशीद के साथ अह़ादीष और दीगर मसाइल का तकरार कर रहा था। उस पर नींद का ग़लबा हुवा और वोह सो गया। अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि घबरा कर उठ बैठा और मुझ से कहा : ऐ यह़्या ! देखो मेरे पाउं के पास कोई चीज़ है ? मैं ने देखा तो मुझे कोई चीज़ नज़र न आई, मैं ने कहा : यहां कोई चीज़ नहीं, शायद ! आप का वहम है। मेरे इस जवाब से वोह मुत़मइन न हुवा और ख़ादिमों को बुला कर कहा : "मेरे बिस्तर को अच्छी त़रह़ देखो कि इस में कोई मूज़ी शै तो नहीं ?" ख़ादिमों ने जब बिस्तर उठाया तो उस के नीचे एक सांप निकला जिसे ख़ादिमों ने मार डाला।

मैं ने मामूनुर्रशीद से कहा : "वैसे ही आप हर फ़न में माहिर और जामेए़ कमालात हैं, अब तो आप की त़रफ़ ग़ैब जानने की निस्बत भी की जा सकती है। मामूनुर्रशीद ने कहा : مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ मुझ में ऐसी कोई बात नहीं। बात दर अस्ल येह है कि जब मैं सोया तो हातिफ़े ग़ैबी से मैं ने येह आवाज़ सुनी :

يَـا رَاقِـدَ الـلَّـيْـلِ اِنْتَبِـهْ اِنَّ　　　الْـخُـطُـوْبَ لَهَـا سُـرَى

ثِـقَةُ الْـفَتٰـى بِـزَمَـانِـهٖ　　　ثِـقَةٌ مُـحَـلِّـلَةُ الْـعُـرَى

तर्मजा : ऐ सोने वाले ! बेदार हो जा ! बेशक मुसीबतें रात हीं में आती हैं। नौजवान का अपने ज़माने पर ए'तिमाद करना आफ़त व मुसीबत पर ए'तिमाद करना है।

येह अश्आ़र सुन कर मेरी आंख खुल गई और मैं समझ गया कि अभी या कुछ देर बा'द कोई बड़ा मुआ़मला पेश होने वाला है, लिहाज़ा मैं ने अपने इर्द गिर्द का जाइज़ा लिया तो जो कुछ हुवा वोह सब तू ने देख लिया।"

हिकायत नम्बर : 270 एक इबादत गुज़ार ख़ादिमा

बसरा के क़ाज़ी उ़बैदुल्लाह बिन ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि "मेरे पास एक ह़सीनो जमील अ़जमी लौंडी थी, उस के हुस्नो जमाल ने मुझे ह़ैरत में डाल रखा था। एक रात वोह सो रही थी। जब रात गए मेरी आंख खुली तो उसे बिस्तर पर न पा कर मैं ने कहा : "येह तो बहुत बुरा हुवा।" फिर मैं उसे ढूंडने के लिये जाने लगा तो देखा कि वोह अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ

की इबादत में मश्गूल है। उस की नूरानी पेशानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा रेज़ थी। वोह अपनी पुरसोज़ आवाज़ से बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार थी : ऐ मेरे ख़ालिक़ ! तुझे मुझ से जो मह़ब्बत है मैं उसी का वासित़ा दे कर इल्तिजा करती हूं कि तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे।" जब मैं ने येह सुना तो कहा : "इस त़रह़ न कह, बल्कि यूं कह : "ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ तुझे उस मह़ब्बत का वासित़ा जो मुझे तुझ से है, तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे।" येह सुन कर वोह आ़बिदा ज़ाहिदा व लौंडी जो ह़क़ीक़त में मलिका बनने के लाइक़ थी कहने लगी : "ऐ ग़ाफ़िल शख़्स ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को मुझ से मह़ब्बत है इसी लिये तो उस करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे शिर्क की अन्धेरी वादियों से निकाल कर इस्लाम के नूरबार शहर में दाख़िल किया, उस की मह़ब्बत ही तो है कि उस ने अपनी याद में मेरी आंखों को जगाया और तुझे सुलाए रखा। अगर उसे मुझ से मह़ब्बत न होती तो वोह मुझे अपनी बारगाह में ह़ाज़िरी की हरगिज़ इजाज़त न देता।" क़ाज़ी उ़बैदुल्लाह बिन ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : "मैं उस के हुस्नो जमाल और चेहरे की नूरानिय्यत से पहले ही बहुत मुतअष्षिर था। अब जब उस की येह आ़रिफ़ाना गुफ़्त्गू सुनी तो मेरी ह़ैरानगी में मज़ीद इज़ाफ़ा हुवा और मैं समझ गया कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वलिय्या है।

मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नेक बन्दी ! जा तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद है। जब लौंडी ने येह सुना तो कहा : "मेरे आक़ा ! येह आप ने अच्छा नहीं किया कि मुझे आज़ाद कर दिया। अब तक मुझे दोहरा अज्र मिल रहा था (या'नी एक आप की इत़ाअ़त का और दूसरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त का) लेकिन अब आज़ादी के बा'द मुझे सिर्फ़ एक अज्र मिलेगा।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने नेक और मुह़िब्बीन बन्दों के सदक़े हमें भी अपनी मह़ब्बत की दौलते उ़ज़्मा से माला माल फ़रमा कर दिन रात इबादत करने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा।")

तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे   मेरे ग़ौष का वासित़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

हिकायत नम्बर : 271

दर्से ज़ोहद व तवक्कुल

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को येह फ़रमाते हुवे सुना : "एक मरतबा मैं "**लुकाम**" के पहाड़ों में गया, वहां एक नौजवान अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस त़रह़ मुनाजात कर रहा था : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ऐ उम्मीदों को पूरा करने वाले ! ऐ उम्मीद दिलाने वाले ! ऐ वोह ज़ात जिस की अ़त़ा से मेरे आ'माल मुकम्मल होते हैं ! मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह चाहता हूं

उस दुआ़ से जो तेरी बारगाह तक न पहुंचे। मैं तेरी पनाह चाहता हूं उस बदन से जो तेरी इ़बादत के लिये खड़ा न हो। इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं पनाह चाहता हूं ऐसे दिल से जो तेरा मुश्ताक़ न हो, मैं पनाह चाहता हूं ऐसी आंख से जो तेरी याद में न रोए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं: "जब मैं ने उस का येह जुम्ला सुना "मैं पनाह चाहता हूं ऐसी आंख से जो तेरी याद में न रोए" तो मैं समझ गया कि इस शख़्स को मक़ामे मा'रिफ़त ह़ासिल है। मैं ने कहा: "ऐ नौजवान! बेशक आ़रिफ़ीन के लिये मक़ामात व मरातिब और मुश्ताक़ों के लिये निशानियां हैं।" नौजवान ने पूछा: वोह अ़लामतें और मरातिब क्या हैं? मैं ने कहा: "मसाइब को छुपाना, करामात दिखाने से बचना।" कहा: "मुझे कुछ और नसीह़त कीजिये।" मैं ने कहा: "अभी तशरीफ़ ले जाइये और उस (पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ) के इ़लावा किसी की त़रफ़ न जाओ और उस के इ़लावा किसी से उम्मीद न रखो। उस रास्ते में फ़क़्र ग़िना है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आने वाली आज़माइश दर ह़क़ीक़त शिफ़ा है। और तवक्कुल ज़िन्दगी का बेहतरीन सरमाया है, बेशक हर मुसीबत का एक मुक़र्ररा वक़्त है। न उस की त़रफ़ से मिलने वाली ख़ैर को ठुकरा, न ही उस की अ़त़ाकर्दा अश्या में बुख़्ल कर। दुन्यवी ख़्वाहिशात की त़रफ़ हरगिज़ न जा।" मेरी येह बातें सुन कर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और आहो ज़ारी करने लगा। मैं उसे इसी ह़ालत में छोड़ कर आगे बढ़ गया। कुछ दूर मुझे एक और नौजवान सोया हुवा नज़र आया, मैं ने उसे जगा कर कहा: "ऐ नौजवान! अब बेदार हो जा, बेशक मरने के बा'द दोबारा दुन्या में नहीं आना, मरने के बा'द आराम कर लेना।"

जागना है तो जाग ले अफ़्लाक के साए तले   ह़श्र तक सोता रहेगा ख़ाक के साए तले

नौजवान ने मेरी आवाज़ सुन कर सर उठाया और कहा: "ऐ अबू सलमान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن मरने के बा'द मौत से भी ज़ियादा सख़्तियां हैं।" मैं ने कहा: "ऐ नौजवान! जो मौत पर यक़ीन रखता है वोह आ'माले सालेह़ा के लिये हरदम कोशां रहता और अपने आप को तय्यार रखता है और फिर उसे दुन्यवी ने'मतों की ख़्वाहिश नहीं होती।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो**! यक़ीनन ख़ुश नसीब व ख़ुश बख़्त हैं वोह लोग जो आने वाले वक़्त से क़ब्ल उस की तय्यारी कर लेते हैं। जिसे हर वक़्त मौत का डर हो उस के लिये आ'माले सालेह़ा की कोशिश आसान हो जाती हैं। जिसे इस बात की फ़िक्र हो कि मौत तमाम आसाइशों को ख़त्म कर देगी उस का दिल दुन्यवी चीज़ों की त़रफ़ माइल नहीं होता। जिसे फ़िक्रे आख़िरत हो उसे दुन्यवी अफ़्कार से नजात मिल जाती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें दुन्यावी फ़िक्रों से नजात अ़त़ा फ़रमा कर फ़िक्रे आख़िरत अ़त़ा फ़रमाए। नफ़्सानी ख़्वाहिशात के शर से हरदम हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 272 बेटे का क़ातिल आज़ाद कर दिया

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बिन अ़ला और हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ला رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से मन्क़ूल है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अहनफ़ बिन क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया : "आप ने हि़ल्म व बुर्दबारी कहां से सीखी ?" फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन आ़सिम मिन्क़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से। वोह हि़ल्म व बुर्दबारी में यगानए रोज़गार थे।" हम हि़ल्म व बुर्दबारी के हुसूल की ख़ातिर उन की बारगाह में इस त़रह़ ह़ाज़िर रहते जैसा कि एक फ़िक़्ह का त़ालिब किसी फ़क़ीह के पास ह़ाज़िर रहता है। एक मरतबा हम हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन आ़सिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, वोह अपनी चादर से इह़तिबा किये (या'नी घुटने खड़े कर के चादर से बांध कर सुरीन पर) बैठे हुवे थे। अचानक कुछ लोग आए, उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा "हुज़ूर ! आप के बेटे को आप के चचा ज़ाद भाई ने क़त्ल कर दिया है, येह देखें आप के बेटे की लाश और येह आप के चचाज़ाद भाई है, हम इसे रस्सियों से बांध कर आप के पास ले आए हैं।"

रावी क़सम खा कर कहते हैं कि "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह ग़मनाक ख़बर सुन कर बिल्कुल चीख़ो पुकार न की बल्कि लोगों की पूरी बात तवज्जोह से सुनी फिर घुटनों पर बंधी हुई चादर खोली और मस्जिद की त़रफ़ चल दिये। वहां पहुंच कर अपने बड़े बेटे से कहा : "जाओ, मेरे चचाज़ाद भाई को आज़ाद कर दो और अपने भाई की तजहीज़ व तक्फ़ीन करो। और मेरे चचाज़ाद भाई की वालिदा के लिये सो ऊंट हदिय्यतन ले जाओ, वोह बीचारी इन्तिहाई ग़रीब व तंगदस्त है।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दर्जे ज़ैल अश्आ़र पढ़े :

तर्जमा : (1)....मैं ऐसा मर्द हूं कि जिस की ख़ानदानी शराफ़त को किसी भी गन्दगी व ऐ़ब ने दाग़दार नहीं किया।

(2)....मैं मुन्क़र क़बीले के इन्तिहाई मुअ़ज़्ज़ज़ घराने का मुअ़ज़्ज़ज़ फ़र्द हूं और टहनियों के गिर्द टहनियां ही निकलती हैं।

(3)....और मैं उन फ़ुसह़ा में से हूं कि जब उन में से कोई कलाम करता है तो बेहतरीन चेहरे वाला और फ़सीह़ ज़बान वाला होता है।

(4)....वोह पड़ोसियों के ऐ़बों को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं और इन के साथ हुस्ने सुलूक करना जानते हैं।

जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी शाइ़र ने आप की शान में येह अश्आ़र कहे :

तर्जमा : (1) ऐ क़ैस बिन आ़सिम ! तुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सलामती हो और उस की रह़मत हो जब तक वोह रह़्म करना चाहे।

(2) मुबारक हो उसे जिस ने ग़ज़ब व नाराज़ी और शदीद ग़ुस्सा दिलाने वाला काम किया लेकिन फिर भी तुझ से ने'मतें पाईं और अम्नो सुकून में रहा।

(3) क़ैस की वफ़ात सिर्फ़ उस अकेले कि वफ़ात नहीं बल्कि वोह तो पूरी क़ौम की इमारत था जो उस की वफ़ात से मुन्हदिम हो गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ क्या हिल्म है मेरे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों का कि अपने बेटे के क़ातिल को न सिर्फ़ मुआफ़ किया बल्कि उस की वालिदा को सो ऊंट तोह़फ़तन भिजवाए ह़ालांकि उन्हें इख़्तियार था कि अपने बेटे के क़त्ल के बदले क़ातिल से क़िसास लेते (या'नी क़त्ल के बदले क़त्ल करते) या फिर दियत (या'नी सो ऊंटों) पर सुल्ह़ कर लेते लेकिन येह दोनों काम न किये बल्कि सो ऊंट उन के घर वालों के लिये भिजवाए। येह बुज़ुर्ग वाक़ेई ह़िल्म व बुर्दबारी के आ'ला दरजे पर फ़ाइज़ थे। येह बुज़ुर्ग उस करीम आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम हैं जो दुश्मनों के लिये भी चादर बिछा देते, ज़ुल्म करने वालों को दुआएं देते, जिन की त़रफ़ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मसाइब के पहाड़ टूटे उन्हें प्यार व मह़ब्बत से नवाज़ा, जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ किया आप ने उन से तअ़ल्लुक़ जोड़ा। जिन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ छीना उन्हें बहुत कुछ अ़त़ा फ़रमाया।

(अल ग़रज़ सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरापा ह़िल्म थे इसी लिये इन के ग़ुलामों ने भी ह़िल्म अपना कर ऐसी मिषालें क़ाइम कीं जिन की नज़ीर बहुत कम मिलती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन बुज़ुर्ग हस्तियों के सदक़े हमें भी उस प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, जिन के ख़ुल्क़ को ख़ुद ख़ालिक़े काइनात ने अ़ज़ीम कहा और जिन की ख़िल्क़ को ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी ने जमील किया और हमें भी अख़्लाक़े सालेह़ा और ह़िल्म व बुर्दबारी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 273 बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर क़वारीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : "मैं ने हमेशा इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की, मगर अफ़्सोस ! एक मरतबा मेरी इ़शा की जमाअ़त फ़ौत हो गई। इस का सबब येह हुवा कि मेरे हां एक मेहमान आया, मैं उस की ख़ात़िर मुदारात (मेहमान नवाज़ी) में लगा रहा। फ़राग़त के बा'द जब मस्जिद पहुंचा तो जमाअ़त हो चुकी थी। अब मैं सोचने लगा कि ऐसा कौन सा अ़मल किया जाए जिस से इस नुक़्सान की तलाफ़ी हो। यका यक मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान याद आया कि "बा जमाअ़त नमाज़, मुन्फ़रिद की नमाज़ पर इक्कीस दरजे फ़ज़ीलत रखती है।" (इसी त़रह़ पच्चीस और सत्ताईस दरजे फ़ज़ीलत की ह़दीष भी मरवी है)"

(صحیح البخاری، کِتَابُ الاذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، الحدیث ٦٤٥-٦٤٦، ص ٥٢، "لم اجد" باحدی وعشرین")

मैं ने सोचा, अगर मैं सत्ताईस मरतबा नमाज़ पढ़ लूं तो शायद जमाअ़त फ़ौत हो जाने से जो कमी हुई वोह पूरी हो जाए। चुनान्चे, मैं ने सत्ताईस मरतबा इ़शा की नमाज़ पढ़ी, फिर मुझे नींद ने आ लिया। मैं ने अपने आप को चन्द घुड़ सुवारों के साथ देखा, हम सब कहीं जा रहे थे। इतने में एक घुड़ सुवार ने मुझ से कहा : "तुम अपने घोड़े को मशक़्क़त में न डालो, बेशक तुम हम

से नहीं मिल सकते।" मैं ने कहा : "मैं आप के साथ क्यूं नहीं मिल सकता ?" कहा : "इस लिये कि हम ने इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की है।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! बा जमाअ़त नमाज़ की सआ़दत बहुत बड़ी दौलत है। नेकियों के ह़रीस के लिये जमाअ़त से मह़रूम होना ऐसा नुक़्सान है जिस की तलाफ़ी बहुत मुश्किल है। उस बुज़ुर्ग का जज़्बा देखें कि एक मजबूरी की बिना पर उन की जमाअ़त निकल गई तो उन्हों ने अपनी नमाज़ सत्ताईस मरतबा इस उम्मीद पर दोहराई कि शायद ! मुझे जमाअ़त की फ़ज़ीलत मिल जाए। लेकिन ऐसा न हुवा। जमाअ़त की अपनी ही बरकतें हैं और जो वक़्त हाथ से निकल जाए फिर ह़ासिल नहीं होता।) बक़ौले शाइ़र :

सदा ऐ़श दौरां दिखाता नहीं — गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं

हिकायत नम्बर : 274

आस्मानी ज़न्जीर

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन क़तादा मरअ़शी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی से मन्क़ूल है : "हमारा बहरी जहाज़ झूमता हुवा सूए मन्ज़िल चला जा रहा था। मुसाफ़िरों की नज़रें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बनाई हुई अश्या को देख रही थीं, समन्दर का सुकूत माह़ोल को सोगवार बना रहा था। अचानक तुन्दो तेज़ हवाओं ने जहाज़ को तबाह कर दिया। मुसाफ़िरों में से एक औ़रत और मैं जैसे तैसे एक टूटे हुवे तख़्ते तक पहुंच कर उस पर बैठ गए। हम सात दिन भूके प्यासे आस्मान की छत तले समन्दर के सीने पर तख़्ते के सहारे इधर उधर घूमते रहे। प्यास की मारी औ़रत ने मजबूर हो कर कहा "मैं बहुत प्यासी हूं अगर कुछ कर सकते हो तो करो।" मुझे उस पर बड़ा तरस आया, मैं ने बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "इलाही عَزَّوَجَلَّ इस बे कसो मजबूर औ़रत की प्यास बुझा दे" अभी मैं दुआ़ से फ़ारिग़ भी न हुवा था कि आस्मान से एक ज़न्जीर आई जिस के साथ उ़म्दा पानी से भरा एक डोल लटक रहा था। औ़रत ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे वोह पानी पी लिया। मैं उस ज़न्जीर को देखने लगा मुझे फ़ज़ा में एक शख़्स बैठा हुवा दिखाई दिया। मैं ने उस से पूछा : "तुम कौन हो ?" कहा : "मैं एक इन्सान हूं।" मैं ने कहा : "तुम्हें येह मर्तबा किस अ़मल के सबब मिला।" कहा : "मैं ने हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात को अपनी ख़्वाहिशात पर तरजीह़ दी तो उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह मक़ाम अ़ता फ़रमाया जो तुम देख रहे हो।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो शख़्स अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ के फ़रामीन को अपनी ख़्वाहिशात पर तरजीह़ दे तो उसे ऐसे ऐसे इन्आ़मात मिलते हैं जिन्हें देख कर अ़क़्लें दंग रह जाती हैं। अगर उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के अह़काम की पैरवी की जाए तो इन्सान के लिये हवाएं, दरया, पहाड़, बर्ग व बार सब मुसख़्ख़र कर दिये जाते हैं। मगर नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत बेह़द ज़रूरी है, जिस की त़लब सच्ची हो वोह अपना मत़लूब पा लेता है।)

हि़कायत नम्बर : 275 फ़ुक़रा के तीन कामयाब त़बक़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन दिहक़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان कहते हैं कि मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ज़य्यात رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बताया : एक मरतबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی की बारगाह में ह़ाज़िर था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सब्र व रिज़ा का दर्स दे रहे थे। अचानक एक सूफ़ी ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मुख़ात़ब कर के कहा : "ऐ अबू नस्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहीं तुम हुब्बे जाह की ख़ात़िर तो लोगों के सामने नेक आ'माल नहीं करते ? अगर तुम ज़ोह्द में कामिल हो गए हो तो दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार कर लो और लोगों के अ़त़िय्यात वग़ैरा क़बूल करो, ताकि उन के नज़्दीक तुम्हारा जो मक़ाम है उस में कमी वाक़ेअ़ हो। उन की त़रफ़ से जो चीज़ें तुम्हें बत़ौरे नज़राना मिलें उन्हें फ़ुक़रा पर ख़र्च कर दो। और तवक्कुल की रस्सी मज़बूती से थाम लो अगर ऐसा करोगे तो ग़ैब से रिज़्क़ दिया जाएगा।" उस सूफ़ी का येह अन्दाज़े गुफ़्त्गू आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मो'तक़िदीन पर बहुत गिरां गुज़रा। लेकिन वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अदब की वजह से ख़ामोश रहे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! बेशक फ़ुक़रा तीन त़रह़ के होते हैं :

(1).....एक फ़क़ीर तो वोह है जो सुवाल नहीं करता, अगर बिग़ैर सुवाल किये कुछ मिल जाए तो उसे भी क़बूल नहीं करता। ऐसा शख़्स पाकीज़ा ख़स्लत वली है। जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किसी चीज़ का सुवाल करता है तो रह़मानो रह़ीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ उस की त़लब पूरी फ़रमा देता है। अगर वोह किसी बात की क़सम खा ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की क़सम को पूरा फ़रमा देता है।

(2).......दूसरा फ़क़ीर वोह है जो सुवाल तो नहीं करता लेकिन बिग़ैर सुवाल किये कुछ मिल जाए तो क़बूल कर लेता है। ऐसा शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करने वालों में दरमियानी दरजे पर है। येह उन लोगों में से है जिन्हें हु़ज़ूरिये दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत ह़ासिल है।

(3).....तीसरा फ़क़ीर वोह है जो सब्र पर यक़ीन रखता है और बसा अवक़ात ह़ालात से भी मुवाफ़क़त कर लेता है। जब उसे कोई शदीद ह़ाजत दरपेश होती है तो लोगों से बक़दरे ह़ाजत ले लेता है, लेकिन उस का दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही से मांग रहा होता है। लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

से किये जाने वाले सुवाल की सच्चाई, मख़्लूक़ से किये हुवे सुवाल का कफ़्फ़ारा हो जाती है। और फ़ुक़रा के येह तीनों त़बक़े कामयाब हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 276

अनोखा मुसाफ़िर

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "एक मरतबा दौराने सफ़र एक वादी में मेरी मुलाक़ात एक ऐसे अजनबी से हुई जो बिल्कुल तन्हा था। पहने हुवे लिबास के इलावा उस के पास कोई चीज़ न थी। मैं ने उसे सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया, मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म करे ! कहां का इरादा है ?" कहा : "मैं नहीं जानता।" मैं ने कहा : "क्या तू ने कभी किसी ऐसे शख़्स को देखा है जो किसी ना मा'लूम जगह जा रहा हो ?" कहा : "जी हां ! मैं उन्हीं में से एक हूं।" मैं ने कहा : "फिर भी तुम्हारा कहां का इरादा है ?" कहा : "मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا।" मैं ने कहा : "तू मक्का शरीफ़ की निय्यत किये हुवे है लेकिन तू जानता नहीं कि किस त़रफ़ जाना है ?" उस ने कहा : "हां ! वाक़ेई ऐसा मुआ़मला है क्यूंकि बारहा ऐसा हुवा कि मैं **मक्का शरीफ़** के क़स्द से चला लेकिन "**त़रसूस**" पहुंच गया। और कई मरतबा ऐसा हुवा कि मैं **त़रसूस** की त़रफ़ चला लेकिन "**मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا पहुंच गया। और ऐसा भी हुवा की मैं बसरा कि त़रफ़ चला लेकिन किसी और मक़ाम पर जा पहुंचा। ऐसे मुआ़मलात मेरे साथ होते रहते हैं, इस मरतबा भी मक्का शरीफ़ के क़स्द से चला हूं, देखो ! अब कहां पहुंचता हूं।"

मैं ने कहा : "तुम्हारे खाने का इन्तिज़ाम कैसे होता है ?" कहा : "येह मुआ़मला एक करीम के ज़िम्मए करम पर है। जब वोह मुझे भूका रखना चाहता है तो खाना मौजूद होने के बा वुजूद मैं भूका ही रहता हूं। जब खिलाना चाहता है तो बिग़ैर खाने के भी मैं सैर हो जाता हूं। कभी वोह मेरी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाता है तो कभी आज़माइश में मुब्तला करता है। कभी कभी मुझे येह ग़ैबी आवाज़ सुनवाता है : "ऐ चोर ! ज़मीन पर तुझ से बड़ा शरीर कोई नहीं।" और कभी येह आवाज़ सुनाई देती है : "ज़मीन पर तेरी मिष्ल कोई नहीं और न ही तुझ से बढ़ कर कोई ज़ाहिद है।" मेरा मालिक कभी तो मुझे बेहतरीन बिस्तर पर सुलाता है, कभी उस से दूर फेंक कर वीरान जगहों में सुलाता है।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए ! वोह कौन है जिस के मुतअ़ल्लिक़ तू गुफ़्तगू कर रहा है ?" कहा : "वोह तमाम जहानों का पालने वाला, ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर है, उस ने मुझे ऐसे समन्दर में डाल दिया है जिस का कोई किनारा नहीं।" इतना कह कर वोह शख़्स ज़ारो क़ित़ार रोने लगा, मुझे उस पर बड़ा तरस आया यहां तक कि उस के रोने ने मुझे भी रुला दिया। फिर मैं ने आस पास की तमाम वादियों से रोने की आवाज़ सुनी ह़ालांकि

बज़ाहिर वहां कोई शख़्स मौजूद न था। मैं ने हैरान हो कर उस से कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह्म फ़रमाए, मैं तेरे इलावा दीगर रोने वालों की आवाज़ें भी सुन रहा हूं, येह आवाज़ें कहां से आ रही हैं ?" कहा : "कुछ जिन्नात मेरे गहरे दोस्त हैं, जब भी मैं रोता हूं वोह भी मेरे साथ रोने लग जाते हैं।"

हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इतना कहने के बाद वोह शख़्स वहां से ग़ाइब हो गया और मैं अकेला हैरान व परेशान खड़ा रहा। उस वक़्त मैं अपने आप को बहुत कमतर महसूस कर रहा था। थोड़ी देर बा'द वोह दोबारा नुमूदार हुवा तो मैं ने कहा : "मुझे ज़रा तफ़्सील से बताओ कि तुम्हारे साथ येह मुआमलात क्यूं और कैसे होते हैं ?" येह सुन कर वोह बहुत घबराया और चोंक कर बड़े सख़्त लहजे में कहा : "ऐ चोर ! क्या तू मेरे और मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ के दरमियान रुकावट बनना चाहता है, ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर عَزَّوَجَلَّ और उस की इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं अपना राज़ हरगिज़ उस के इलावा किसी और को बताना पसन्द नहीं करता। इतना कह कर वोह बन्दए ख़ुदा दोबारा ग़ाइब हो गया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने बन्दों को त़रह़ त़रह़ की सिफ़ात से मुत्तसिफ़ फ़रमाता और त़रह़ त़रह़ से उन पर अपनी रह़मतें निछावर फ़रमाता है। किसी को रुलाता है तो किसी को हंसाता है। कभी ख़ुशियों से दामन भर देता है तो कभी रंजो ग़म में मुब्तला फ़रमा देता है। कभी भूक व प्यास के ज़रीए़ अपने औलिया के दरजात बुलन्द फ़रमाता है तो कभी ऐसी ऐसी जगह से रिज़्क़ के ख़ज़ाने अ़ता फ़रमाता है जहां से वहम व गुमान भी नहीं होता। बेहतरीन इन्सान वोही है जो उस की रिज़ा पर राज़ी रहे और उस के हुक्म पर अपनी तमाम ख़्वाहिशात क़ुरबान कर दे। जो ख़ुश नसीब ऐसा करते हैं वोह दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़ रू हो जाते हैं और हर क़दम पर कामयाबी उन के क़दम चूम लेती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी दाइमी रिज़ा से माला माल फ़रमाए और ना शुक्री से बचाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 277 इन्साफ़ पसन्द चीफ़ जस्टीस

हज़रते सय्यिदुना ह़बीब ज़ारिअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि हम ओ़हदे शबाब में क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير के साथ रहा करते थे। ओ़हदए क़ज़ा से पहले भी हम उन्हें क़ाजी गुमान किया करते इस लिये लड़ाई झगड़ों के फ़ैसले उन्हीं से करवाते। फिर कुछ ही अ़र्से बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्नदे क़ज़ा पर मुतमक्किन हो गए। अ़ब्दुल वाह़िद बिन मुह़म्मद ख़सीबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم इन्साफ़ के मुआमले में बहुत सख़्त थे। आप हमेशा ह़क़ बात कहते और दुरुस्त फ़ैसले फ़रमाते। एक मरतबा ख़लीफ़ए वक़्त "मो'तज़िद बिल्लाह" ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रफ़ पैग़ाम भेजा :

"फ़ुला ताजिर ने हम से बैअ़ की और नक़्द रक़म न दी। वोह मेरे इ़लावा दूसरों का भी मक़रूज़ है, मुझे ख़बर पहुंची है कि दूसरे क़र्ज़ ख़्वाहों ने आप के पास गवाह पेश किये तो आप ने उस ताजिर का माल उन में तक़सीम कर दिया है। मुझे उस माल से कुछ भी नहीं मिला हा़लांकि जिस त़रह़ वोह दूसरों का मक़रूज़ था इसी त़रह़ मेरा भी था, लिहाज़ा मेरा हि़स्सा भी दिया जाए।"

पैग़ाम पा कर क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने क़ासिद से कहा : "ख़लीफ़ा से कहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की उ़म्र दराज़ फ़रमाए, वोह वक़्त याद करो जब आप ने मुझ से कहा था कि मैं ने फ़ैसलों की ज़िम्मेदारी का बोझ अपनी गर्दन से उतार कर तुम्हारे गले में डाल दिया है। ऐ ख़लीफ़ा ! अब मैं फ़ैसला करने का मुख़्तार हूं और मेरे लिये जाइज़ नहीं कि गवाहों के बिग़ैर किसी मुद्दई के ह़क़ में फ़ैसला करूं।" क़ासिद ने क़ाज़ी साहि़ब का पैग़ाम सुनाया तो ख़लीफ़ा ने कहा : "जाओ ! क़ाज़ी साहि़ब से कहो कि मेरे पास बहुत मो'तबर और मुअ़ज़्ज़ज़ गवाह मौजूद हैं।" जब क़ाज़ी साहि़ब को येह पैग़ाम मिला तो फ़रमाया : "गवाह मेरे सामने आ कर गवाही दें, मैं उन से पूछ गछ करूंगा शहादत के तक़ाज़ों पर पूरे उतरे तो उन की गवाही क़बूल कर लूंगा वरना वोही फ़ैसला क़ाबिले अ़मल रहेगा जो मैं कर चुका हूं।"

जब गवाहों को क़ाज़ी साहि़ब का येह पैग़ाम पहुंचा तो उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से ख़ौफ़ खाते हुवे अ़दालत आने से इन्कार कर दिया। लिहाज़ा क़ाज़ी साहि़ब ने ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह का दा'वा रद्द करते हुवे उसे कुछ भी न भिजवाया।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हि़कायत नम्बर : 278 क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का अ़दलो इन्साफ़

क़ाज़ी वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मन्क़ूल है कि "मो'तज़िद बिल्लाह के ज़मानए ख़िलाफ़त में क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने ह़सन बिन सहल की वक़्फ़ कर्दा ज़रई ज़मीन की देख भाल और दीगर मुआ़मलात पर मुझे निगहबान मुक़र्रर कर दिया। इस से जो आमदनी होती मैं उसे शरई अह़काम के मुत़ाबिक़ बैतुल माल और ग़ुरबा वग़ैरा में तक़्सीम कर देता। जब ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह ने अपने लिये मह़ल ता'मीर करवाया तो ह़सन बिन सहल की कुछ मौक़ूफ़ा (या'नी वक़्फ़ की हुई) ज़मीन भी इमारत में शामिल कर ली। साल ख़त्म होने पर मैं ने तमाम ज़मीन का ह़िसाब कर के माल वुसूल कर लिया, सिर्फ़ शाही मह़ल में शामिल की गई ज़मीन का ह़िसाब बाक़ी था। ख़लीफ़ा से उस ज़मीन की आमदनी का मुत़ालबा करने की मुझे जुरअत न हुई। मैं तमाम जम्अ़ शुदा माल व ग़ल्ला ले कर क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के पास आया और कहा : "मैं ने अवक़ाफ़ की तमाम ज़मीन से ग़ल्ला वग़ैरा वुसूल कर लिया है और तमाम आमदनी मेरे पास मौजूद है, आप मुझे इसे तक़्सीम करने की इजाज़त दें ताकि जितना ग़ल्ला बीज के लिये दरकार है इतना अ़लाहि़दा कर के बाक़ी मुस्तह़िक़ीन में तक़्सीम कर दूं।"

क़ाज़ी साहिब ने कहा : "क्या जो ज़मीन ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह ने अपने महल के इहाते में शामिल की है, उस की आमदनी भी वुसूल कर ली गई है ?" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! ख़लीफ़ा से कौन मुतालबा कर सकता है ?" फ़रमाया : "ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की क़सम ! मैं उस वक़्त तक कचहेरी ख़त्म न करूंगा जब तक वोह तमाम रक़म वुसूल न कर लूं जो ख़लीफ़ए वक़्त के ज़िम्मे है, ब ख़ुदा अगर ख़लीफ़ा ने ग़ल्ला या उस की क़ीमत अदा न की तो मैं कभी भी ओ़हदए क़ज़ा क़बूल न करूंगा। ऐ वकीअ़ ! तुम फ़ौरन ख़लीफ़ा के पास जाओ और रक़म का मुतालबा करो !" मैं ने कहा : "मुझे दरबारे शाही तक कौन पहुंचाएगा ?" फ़रमाया : फ़ुलां सरकारी नुमाइन्दे के पास जाओ और कहो कि "मैं क़ाज़ी साहिब का क़ासिद हूं, एक बहुत ही अहम काम के सिलसिले में इसी वक़्त ख़लीफ़ा के पास हाज़िर होना चाहता हूं तुम मुझे दरबारे शाही तक ले चलो।" वकीअ़ कहते हैं कि मैं उस सरकारी नुमाइन्दे के पास पहुंचा तो वोह मुझे ले कर ख़लीफ़ा के महल पहुंचा। रात का आख़िरी पहर था, हर तरफ़ सन्नाटा छाया हुवा था। पूरा शहर ख़्वाबे ख़रगोश के मज़े ले रहा था। जब ख़लीफ़ा को बताया गया कि एक बहुत ज़रूरी काम के सिलसिले में क़ाज़ी अबू हाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का क़ासिद आया है तो ख़लीफ़ा ने फ़ौरन मुझे अपने पास बुला लिया और कहा : ऐसा कौन सा ज़रूरी काम है जिस की ख़ातिर इतनी रात गए आना पड़ा। मैं ने कहा : "हुज़ूर ! आज मैं ने तमाम मौक़ूफ़ा ज़मीनों का हिसाब किया और उन की आमदनी क़ाज़ी अबू हाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم तक पहुंचा कर मुस्तहिक़ीन में तक़्सीम करने की इजाज़त तलब की, क़ाज़ी साहिब ने तफ़्तीश की तो उस ज़मीन की आमदनी उस माल में शामिल न थी जो आप के महल के इहाते में दाख़िल कर दी गई है, क़ाज़ी साहिब ने फ़रमाया : उस वक़्त तक येह आमदनी कहीं भी सर्फ़ न होगी जब तक ख़लीफ़ा के महल में शामिल कर्दा ज़मीन की आमदनी वुसूल न हो जाए। बस इसी सिलसिले में हाज़िर हुवा हूं।"

ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह कुछ देर ख़ामोश रहा, फिर कहा : "बेशक क़ाज़ी साहिब ने सहीह किया, और वोह हक़ को पहुंच गया।" येह कह कर उस ने ख़ादिमीन से कहा, जाओ और फ़ुलां सन्दूक़ उठा लाओ, हुक्म की ता'मील हुई दराहिम व दनानीर से भरा सन्दूक़ लाया गया, ख़लीफ़ा ने कहा : "बताओ, हमारे ज़िम्मे कितना माल है ?" मैं ने कहा : "जब से वोह ज़मीन महल में शामिल की गई है उस वक़्त से अब तक उस ज़मीन से तक़रीबन चार सो दीनार आमदनी हो सकती थी, आप उतनी ही रक़म अदा कर दें।" ख़लीफ़ा ने कहा : "बताओ गिन कर अदा करूं या वज़्न करवा कर ?" मैं ने कहा : जो तरीक़ा ज़ियादा बेहतर हो वोही इख़्तियार फ़रमाइये।" ख़लीफ़ा ने तराज़ू मंगवाया और चार सो दीनार तोल कर मेरे हवाले कर दिये गए। मैं तमाम रक़म ले कर क़ाज़ी अबू हाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के पास पहुंचा और सारा वाक़िआ़ कह सुनाया।" फ़रमाया : "येह रक़म फ़ौरन वक़्फ़ की आमदनी में शामिल कर दो और सुब्ह होते ही बीज के लिये ग़ल्ला निकाल कर बक़िय्या माल मुस्तहिक़ीन में तक़्सीम कर देना। ख़बरदार ! इस मुआ़मले में ज़रा सी भी ताख़ीर न करना।"

क़ाज़ी वकीअ़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم कहते हैं : "जब लोगों को क़ाज़ी अबू हाज़िम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم की जुरअत मन्दी, अ़द्लो इन्साफ़ और ख़लीफ़ए वक़्त से ह़क़दारों का ह़क़ लेने के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम हुवा तो उन्हों ने क़ाज़ी साहि़ब को ख़ूब दाद दी और पूरे शहर में क़ाज़ी साहि़ब की जुरअत मन्दी और ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह के अ़द्लो इन्साफ़ का शोहरा हो गया। और लोग क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم के लिये बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दस्ते दुआ़ दराज़ करते हुवे नज़र आने लगे।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبى الامين صلى الله عليه وسلم}

(سُبۡحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कैसे जुरअत मन्द व ह़क़ गो हुवा करते थे हमारे अस्लाफ़। इन्हें ह़क़ गोई और इन्साफ़ पसन्दी से कोई न रोक सकता था। बड़ी से बड़ी त़ाक़त भी इन्हें اَمۡرٌ بِالۡمَعۡرُوۡف और نَهۡىٌ عَنِ الۡمُنۡكَر से न रोक सकती। तारीख़ गवाह है कि इस्लाम के ऐसे सपूत भी इस मादरे गैती पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे जो बज़ाहिर आ़म से ओ़हदे पर फ़ाइज़ थे लेकिन बादशाहे वक़्त से भी ह़क़ के मुआ़मले में न घबराते, किसी भी रिआ़यत के बिग़ैर उन के बारे में भी वोही फ़ैसला करते जो एक आ़म ग़रीब के साथ किया जाता। फिर इन लोगों की बे लोष ख़िदमत और बे ग़रज़ कोशिशें रंग भी लाईं। ऐसे बड़े बड़े उमरा कि जिन के एक इशारे पर गर्दनें उड़ा दी जातीं, जिन के ग़ैज़ो ग़ज़ब के सामने बड़े बड़े दिलैर लरज़ते थे, लेकिन इन मर्दाने ह़क़ के सामने उन का रो'ब व दबदबा दब जाता और ह़क़ बात पर उन्हें सुल्ह़ करना ही पड़ती, ह़क़ दार को उन का ह़क़ देना ही पड़ता, बल्कि येह उमरा व ख़ुलफ़ा इन मर्दाने ह़क़ से ख़ाइफ़ रहते, बिला तअम्मुल इन के फ़ैसलों पर सरे तस्लीम ख़म कर देते।)

ह़िकायत नम्बर : 279 अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी

क़ाज़ी अबू त़ाहिर मुह़म्मद बिन अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नस्र رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه कहते हैं : "मुझे येह ख़बर पहुंची कि जिस अ़लाक़े में ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم क़ाज़ी थे, वहां के दो शख़्स आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के पास अपने झगड़े का फ़ैसला करवाने आए, उन का झगड़ा इन्तिहा को पहुंच चुका था, वोह कमरए अ़दालत में भी एक दूसरे पर झपट रहे थे। क़ाज़ी साहि़ब के होते हुवे कमरए अ़दालत में एक दूसरे पर झपटना एक मज़मूम ह़रकत थी। उन की येह ह़रकतें बढ़ती गईं बिल आख़िर उन में से एक शख़्स ने कोई ऐसी नाज़ैबा ह़रकत की जो सख़्त तादीबी कारवाई के लाइक़ थी। चुनान्चे, क़ाज़ी साहि़ब ने हुक्म दिया कि उसे तौहीने अ़दालत की सज़ा दी जाए ताकि उसे मा'लूम हो कि अदब कितना ज़रूरी है। सिपाहियों ने उसे सज़ा दी तो इत्तिफ़ाक़न उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई और मौत का सबब तादीबी कारवाई बनी। क़ाज़ी साहि़ब ने जब येह सूरते ह़ाल देखी तो ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह को येह ख़त़ भेजा :

"**अल्लाह** तबारक व तआ़ला ख़लीफ़ा की उ़म्र दराज़ फ़रमाए ! मेरे पास दो शख़्स अपना मुक़द्दमा ले कर आए। उन में से एक ने ऐसी ग़लती की जिस पर उसे अदब सिखाने के लिये सज़ा ज़रूरी थी। मैं ने उसे सज़ा दिलवाई तो इत्तिफ़ाक़न वोह हलाक हो गया। जब मुसलमानों की फ़लाह़ व बहबूद और अदब सिखाने के लिये किसी को सज़ा दी जाए और उस की मौत वाक़ेअ़ हो जाए तो उस की दियत, बैतुल माल से अदा की जाती है। हमारे हां भी ऐसा ही हुवा है। लिहाज़ा बैतुल माल से रक़म भिजाव दें ताकि मैं उसे बत़ौरे दियत मक़्तूल के वुरषा को दे दूं। **अल्लाह** तआ़ला आप को उ़म्रे दराज़ अ़त़ा फ़रमाए।" والسّلام

जब ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह के पास क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का येह ख़त़ पहुंचा तो उस ने जवाबन येह पैग़ाम भिजवाया :

"ऐ क़ाज़ी अबू ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم हमें तुम्हारा ख़त़ मिला जिस में दियत भिजवाने का कहा गया। लिहाज़ा मैं तुम्हारी त़रफ़ दियत का माल भिजवा रहा हूं।" والسّلام

ख़लीफ़ा ने दस हज़ार दिरहम क़ाज़ी साहि़ब के पास भिजवाए। क़ाज़ी साहि़ब ने मक़्तूल के वुरषा को बुलवाया और सारी रक़म बत़ौरे दियत उन्हें दे दी।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 280 शाही माल का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَارِث से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की आपस में बहुत गहरी दोस्ती थी और दोनों मुश्तरका कारोबार करते और एक दूसरे का बहुत अदबो एह़तिराम करते। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی हर साल ह़रमैन शरीफ़ैन जाया करते। जब वोह कूफ़ा से गुज़रते तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی काफ़ी दूर तक उन के साथ जाते। और एक मरतबा तो उन्हें अलवदाअ़ कहने नजफ़ शरीफ़ तक गए।

कुछ अ़र्से बा'द जब दोबारा सफ़रे ह़ज का इरादा किया तो किसी अ़लाक़े के लोगों ने ह़ज़रते अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی से शिकायत की, कि "ख़लीफ़ा ने हम पर जो आ़मिल मुक़र्रर किया है वोह इन्साफ़ से काम नहीं लेता। बे जा हमारे कारोबार में दख़ील हो कर हमें परेशान कर रखा है। अगर आप ख़लीफ़ा तक हमारा मस्अला पहुंचा दें तो करम नवाज़ी होगी। लोगों की बात सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कोई जवाब न दिया और जानिबे मन्ज़िल चल दिये। इस वाक़िए़ की ख़बर जब ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی को हुई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उन से मिलने कूफ़ा के पुल पर गए। ख़ूब इन्किसारी से पेश आए और नजफ़ शरीफ़ तक उन के साथ

गए। अगले साल जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى दोबारा ह़ज के इरादे से गुज़रे तो लोगों ने फिर अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! हमें इस आ़मिल से नजात दिलवा दें और ख़लीफ़ा के पास हमारी सिफ़ारिश करें।" इस मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन की दरख़्वास्त क़बूल कर ली और उन का मुआ़मला ह़ल करने के लिये ख़लीफ़ा के दरबान से कहा : "ख़लीफ़ा को पैग़ाम दो कि अबू जा'फ़र आप से मिलना चाहता है।" ख़लीफ़ा को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के आने की ख़बर मिली तो दरबान से कहा : "उन्हें निहायत अदबो एह़तिराम से हमारे पास ले आओ।" चुनान्चे, ख़ुद्दाम फ़ौरन आप को ख़लीफ़ा के पास ले गए। ख़लीफ़ा मन्सूर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से बड़ी आ़जिज़ी व इन्किसारी से पेश आया, ख़ूब ता'ज़ीम व तौक़ीर की। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ह़ाल दरयाफ़्त करते हुवे पूछा : "हुज़ूर ! अगर मेरे लाइक़ कोई ख़िदमत हो तो इरशाद फ़रमाइये ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "हां ! मुझे तुम से एक ज़रूरी गुफ़्तगू करनी है। येह कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सारा क़िस्सा बयान किया।" ख़लीफ़ा ने फ़ौरन कहा : "हम ने उसे मा'ज़ूल किया, अब उस अ़लाक़े वाले जिसे चाहें अपनी ख़ुशी से आ़मिल मुक़र्रर कर लें मुझे उन का मुक़र्रर कर्दा आ़मिल क़बूल होगा।"

ख़लीफ़ा ने येह हुक्म नामा जारी किया और ख़ादिमों से कहा : "ह़ज़रत को हमारी त़रफ़ से दस हज़ार दिरहम बत़ौरे हदिय्या पेश करो। हम इन के अह़सान मन्द हैं कि इन्हों ने हम से किसी काम के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى को रक़म दी गई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हाथ से कुछ दिरहम गिर गए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़ौरन समझ गए कि येह दिरहम क़बूल कर के मैं ने बहुत बड़ी ख़त़ा की है। लगता है येह दौलत मेरे ह़क़ में नुक़्सान देह षाबित होगी। इसी सोच के पेशे नज़र आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मह़ल की दीवार के क़रीब बैठ गए और कुछ कपड़े मंगवा कर थेलियां बनाईं, उन्हें दराहिम से भरा और तमाम रक़म लोगों में तक़्सीम कर दी। जब आप वापस कूफ़ा आए तो उन दराहिम में से कुछ भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास मौजूद न था। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को येह इत्तिलाअ़ मिली कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने शाही ख़ज़ाने से हदिय्या क़बूल किया है तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन से मिलने का इरादा तर्क कर दिया और लोगों को बताए बिग़ैर एक मकान में अ़लाह़िदगी इख़्तियार कर ली।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى कूफ़ा आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को न पा कर लोगों से उन के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो सब ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया। उन्हें बहुत तशवीश हुई। बिल आख़िर काफ़ी तगो दो के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के एक बहुत क़रीबी दोस्त ने उन से पूछा : "क्या आप को ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से कोई बहुत ज़रूरी काम है ?" फ़रमाया : "हां।" कहा : "आप उन के नाम एक रुक़्आ़ लिख दें, मैं वोह रुक़्आ़ उन तक पहुंचा दूंगा। मैं आप के साथ इस से ज़ियादा तआ़वुन नहीं कर सकता।" आप ने एक रुक़्आ़ लिख कर उसे दे दिया।

वोह शख़्स कहता है : “मैं रुक़्आ़ ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के पास पहुंचा तो देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه दीवार से टेक लगाए क़िब्ला रुख़ बैठे थे। मैं ने सलाम किया और रुक़्आ़ निकाल कर दिखाया। फ़रमाया : “येह क्या है ?” मैं ने कहा : “अबू जा'फ़र राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى का ख़त़।” फ़रमाया : “सुनाओ ! इस में क्या लिखा है ?” मैं ने पढ़ कर सुनाया तो फ़रमाया : “इस की दूसरी जानिब जवाब लिखो।” मैं ने दूसरी जानिब بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखी और अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! क्या लिखूं ?” फ़रमाया : “पहले येह आयत लिखो :

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ (پ٦،المائدة:٧٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दावूद की ज़बान पर।*

फिर लिखो : “हमें हमारा माले तिजारत वापस कर दो। हमें अब इस के नफ़्अ़ की कोई ह़ाजत नहीं।”

फिर मुझ से फ़रमाया : “जाओ, येह ख़त़ उन्हें दे आओ।” मैं ख़त़ ले कर उन के पास पहुंचा तो देखा कि बहुत से लोग जम्अ़ हैं। सब ने ख़त़ पढ़ा लेकिन इस का मफ़्हूम कोई भी न समझ सका। बिल आख़िर येह तै हुवा कि दोनों ख़त़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी लैला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास ले चलते हैं ताकि उन की राए मा'लूम हो सके। लेकिन उन्हें बताया न जाए कि येह ख़त़ किस का है। जब उन के पास ख़त़ पहुंचा तो देखते ही फ़रमाया : “जिस ने पहले ख़त़ लिखा वोह ऐसा शख़्स है जिस के क़ौलो फ़े'ल में तज़ाद है और जवाब देने वाला ऐसा शख़्स है जो अपने अ़मल के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का त़ालिब है।”

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

हिकायत नम्बर : 281 — क़नाअ़त पसन्द सूफ़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बज़्ज़ाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : “एक मरतबा आ़शूरा की रात मैं एक मुसाफ़िर ख़ाने में दाख़िल हुवा तो वहां एक दुर्वेश जव की रोटी नमक के साथ खा रहा था। उस की येह ह़ालत देख कर मैं तड़प उठा। मेरे पास उस वक़्त एक हज़ार दीनार थे जो मैं ने इ़बादत गुज़ारों को नज़राना देने की ग़रज़ से जम्अ़ कर रखे थे। मैं ने लोगों से उस दुर्वेश के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो पता चला कि वोह इ़ल्मे तसव्वुफ़ का बहुत बड़ा आ़लिम और यहां के तमाम ज़ाहिदों पर फ़ौक़िय्यत रखता है। मैं ने सोचा कि येह तमाम दीनार उसे दे देने चाहिये क्यूंकि उस से बेहतर कोई नहीं जिस पर माल ख़र्च किया जाए।

चुनान्चे, सुब्ह़ होते ही मैं चन्द रुफ़क़ा के साथ उस दुर्वेश के पास गया। वोह बड़ी ख़न्दा पेशानी से मिला, मैं भी ख़ुश रूई से पेश आया। मैं ने कहा : “कल मैं ने आप को नमक के साथ

जव की रोटी खाते देखा। मेरा ख़याल है कि तुम दिन को रोज़ा रखते हो और इफ़्तारी में सिर्फ़ नमक के साथ जव की रोटी खाते हो। मैं चाहता हूं कि तुम्हें कुछ हदिय्या पेश करूं।'' येह कह कर मैं ने दीनारों की थैली उस की त़रफ़ बढ़ाते हुवे कहा : ''येह एक हज़ार दीनार हैं इन्हें क़बूल फ़रमा कर मुझ पर एह़सान फ़रमाएं।'' येह सुन कर उस दुर्वेश ने मेरी त़रफ़ बड़ी ग़ज़बनाक नज़रों से देखा और कहा : ''अपने दीनार वापस ले जाओ ! बेशक येह तो उस की जज़ा है जिस ने अपना राज़ लोगों पर ज़ाहिर कर दिया हो, जाओ ! हमें तुम्हारा येह माल नहीं चाहिये।'' मैं ने बहुत इस्रार किया लेकिन उस ने एक दीनार भी क़बूल न किया।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

(سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) हमारे बुज़ुर्गाने दीन में कैसी ख़ुद्दारी हुवा करती थी कि नमक के साथ जव की रोटी खाना तो मन्ज़ूर कर लेते लेकिन किसी के सामने दस्ते सुवाल दराज़ न करते। अगर कोई बिन मांगे देता तब भी उस से गुरैज़ करते, ज़रा सा भी ख़याल आ जाता कि येह हदिय्या हमें इस लिये दिया जा रहा है कि लोगों पर हमारी इ़बादत का ह़ाल ज़ाहिर हो गया है और हमारी इ़बादत व रियाज़त से मुतअष्षिर हो कर हदिय्या दिया जा रहा है तो हरगिज़ क़बूल न करते। बस अपने पास जो रिज़्के़ ह़लाल होता उसी पर इक्तिफ़ा कर के साबिरो शाकिर रहते। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के सदके़ हमें भी क़नाअ़त की दौलत से माला माल फ़रमाए और हर ह़ाल में अपना शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हि़कायत नम्बर : 282

शैत़ान मेरा ख़ादिम है

ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब ह़म्माल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मन्क़ूल है कि हमारे अ़लाके़ में एक मुतवक्किल नौजवान रहता था। वोह इ़बादत व रियाज़त और तवक्कुल के मुआ़मले में बहुत मश्हूर था। लोगों से कोई चीज़ न लेता। जब भी खाने की ह़ाजत होती अपने सामने सिक्कों से भरी एक थैली पाता। इसी त़रह़ वोह अपने शबो रोज़ इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में गुज़ारता और उसे ग़ैब से रिज़्क़ दिया जाता। एक दफ़्आ़ लोगों ने उस से कहा : ''ऐ नौजवान ! तू सिक्कों की वोह थैली लेने से डर ! हो सकता है शैत़ान तुझे धोका दे रहा हो और वोह थैली उसी की त़रफ़ से हो।''

नौजवान ने कहा : ''मेरी नज़र तो अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की त़रफ़ होती है, मैं उस के इ़लावा किसी से कोई चीज़ नहीं मांगता, जब मेरा मौला عَزَّوَجَلَّ मुझे रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है तो मैं क़बूल कर लेता हूं। बिलफ़र्ज़ अगर वोह सिक्कों की थैली मेरे दुश्मन शैत़ान की त़रफ़ से हो तो उस में मेरा क्या नुक़्सान बल्कि मुझे फ़ाइदा ही है कि मेरा दुश्मन मेरे लिये मुसख़्ख़र कर दिया गया है। अगर वाके़ई ऐसा है तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसे मेरा ख़ादिम बनाए रखे।

इस से ज़ियादा अच्छी बात और क्या हो सकती है कि मेरा सब से बड़ा दुश्मन ख़ादिम बन कर मेरी ख़िदमत करे और मैं उस की त़रफ़ नज़र न रखूं बल्कि येह समझूं कि मेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे दुश्मन के ज़रीए़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा रहा है। और वाक़ेई तमाम जहानों को वोही ख़ालिक़े काइनात रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है जो मेरा मा'बूद है।'' मुतवक्किल नौजवान की येह बात सुन कर लोग ख़ामोश हो गए और समझ गए कि इस को वाक़ेई ग़ैब से रिज़्क़ दिया जाता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! येह एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त है कि जो शख़्स अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये अपने आप को फ़ारिग़ कर लेता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्यवी परेशानियों से नजात अ़त़ा फ़रमा देता है। जो उस ख़ालिक़े लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ के कामों में लग जाता है तो वोह मुसब्बिबुल अस्बाब उसे ऐसे ऐसे अस्बाब मुहय्या फ़रमाता है कि जिन के बारे में वहम व गुमान भी नहीं होता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी ऐसा यक़ीने कामिल अ़त़ा फ़रमाए कि हमारी नज़र अस्बाब पर न हो बल्कि ख़ालिक़े अस्बाब की त़रफ़ हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें तवक्कुल की दौलत से माला माल फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم))

ह़िकायत नम्बर : 283 एक कनीज़ का आ़रिफ़ाना कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र ख़ुल्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى को येह फ़रमाते हुवे सुना : ''एक मरतबा मैं अकेला ही सफ़रे ह़ज पर रवाना हुवा, मन्ज़िलों पर मन्ज़िलें त़ै करता ह़रम शरीफ़ की मुश्कबार फ़ज़ाओं में जा पहुंचा। जब शाम हुई और रात ने अपने पर फैला दिये तो दिन भर के थके मांदे लोग बिस्तरे आराम पर ख़्वाबे ख़रगोश के मज़े लेने लगे, मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ से सर शार दिल वाले इ़बादत गुज़ारों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आहो ज़ारी करना शुरूअ़ कर दी। मैं भी अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के प्यारे घर ''ख़ानए का'बा'' का त़वाफ़ करने लगा। एक कनीज़ भी त़वाफ़ कर रही थी और उस की ज़बान पर चन्द अ़रबी अश्आ़र जारी थे, जिन का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है :

''मह़ब्बत ने पोशीदा रहने से इन्कार किया और कितनी ही मरतबा मैं ने उसे छुपाया मगर वोह ज़ाहिर हो गई फिर उस ने मेरे ही पास डेरा डाल लिया और मुझे अपना मस्कन बना लिया। जब मेरा शौक़ बढ़ता है तो मेरा दिल उसे याद करने की ख़ूब ख़्वाहिश करता है और जब मैं अपने ह़बीब का क़ुर्ब चाहती हूं तो वोह मेरे क़रीब हो जाता है। और वोह सामने आता है तो मैं फ़ना हो जाती हूं फिर उस की वजह से उसी के लिये ज़िन्दा हो जाती हूं और वोह मेरी मदद करता है यहां तक कि मैं ख़ूब लुत़्फ़ मह़सूस करती हूं और कैफ़ो सुरूर से झूमने लगती हूं।''

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तुझे ख़ौफ़ नहीं आता कि ऐसे बा बरकत मकान में इस त़रह़ का कलाम कर रही है ?" वोह मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुई और इस मफ़्हूम के चन्द अश्आ़र पढ़े :

"अगर उस से मुलाक़ात का मुआ़मला न होता तो तू मुझे पुर सुकून नींद से दूर न देखता, जब वोह मिल गया तो उस ने मुझे वत़न से बहुत दूर कर दिया जैसा कि तू देख रहा है, मैं उसे पाने से डरती हूं लेकिन उस की मह़ब्बत मुझे शौक़ दिलाती है।"

फिर पूछा : "ऐ जुनैद ! तू का'बे का त़वाफ़ कर रहा है या फिर रब्बे का'बा का ?" मैं ने कहा : "ख़ानए का'बा का त़वाफ़ कर रहा हूं।" कनीज़ ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया और कहा : "ऐ पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये पाकी है, तू पाक है तू ने जैसा चाहा अपनी मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया, तेरी ह़िक्मतें बहुत अ़ज़ीम हैं, येह लोग तो पथ्थरों जैसे हैं जिन की नज़र सिर्फ़ मख़्लूक़ तक मह़दूद है। फिर कुछ अश्आ़र पढ़े, जिन का मफ़्हूम येह है :

"लोग कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये त़वाफ़ करते हैं और ह़ाल येह है कि उन के दिल चट्टान से भी ज़ियादा सख़्त होते हैं, वोह चटयल मैदानों में रास्ता भटक कर अपनी पहचान भी खो बैठे और येह गुमान कर लिया कि हम तो बहुत मुक़र्रब हो गए हैं, अगर वोह मह़ब्बत में ख़ालिस हो जाते तो उन की अपनी सिफ़ात ग़ाइब हो जातीं और ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ की बदौलत ह़क़ से मह़ब्बत की सिफ़ात उन में ज़ाहिर हो जाती।"

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "उस का आ़रिफ़ाना कलाम सुन कर मुझ पर ग़शी त़ारी हो गई, जब इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने उसे बहुत तलाशा मगर कहीं न पाया।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين ﷺ}

हिकायत नम्बर : 284 इमाम कुसाई की इ़ल्मी महारत

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ातिम सहल बिन मुह़म्मद सिजिस्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى फ़रमाते हैं : "एक मरतबा कूफ़ा की एक ऐसी शख़्सिय्यत को हम पर आ़मिल (या'नी गवर्नर) मुक़र्रर किया गया कि बसरा के सरकारी ओ़हदे दारों में उस से ज़ियादा ज़हीन और क़ाबिल शख़्स मैं ने कभी न देखा था। मैं मुलाक़ात के लिये गया तो उस ने मुझ से पूछा : "ऐ सिजिस्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى बसरा के मायानाज़ उ़-लमाए किराम कौन हैं ? मैं ने कहा : "हज़रते सय्यिदुना ज़ियादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ह़ाज़िर दिमाग़ी, मुआ़मला फ़हमी और तकल्लुम में सब पर फ़ौक़िय्यत रखते हैं। इ़ल्मे नह़्व में सब से ज़ियादा महारत हज़रते सय्यिदुना अबू उ़षमान माज़िनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى को ह़ासिल है। हज़रते सय्यिदुना हिलाल राई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़िक़्ह में सब से ज़ियादा महारत रखते हैं। इ़ल्मे ह़दीष के सब से बड़े आ़लिम हज़रते सय्यिदुना शाज़कूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى हैं। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर

रह़्म फ़रमाए, कुरआन का बड़ा आ़लिम मुझे समझा जाता है।'' इब्ने कल्बी कातिब तमाम बातें लिख रहा था। आ़मिल ने कातिब (या'नी लिखने वाले) से कहा : ''कल इन तमाम को मेरे हां आने की दा'वत दो, मैं इन उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ज़ियारत करना चाहता हूं।''

दूसरे दिन जब तमाम ह़ज़रात तशरीफ़ लाए तो आ़मिल ने कहा : ''आप में से माज़िनी कौन है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़षमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, मैं यहां हूं।'' कहा : ''येह बताइये कि कफ़्फ़ारए ज़िहार[1] में अगर काना ग़ुलाम आज़ाद कर दिया जाए तो क्या येह किफ़ायत करेगा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना माज़िनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! मैं फ़िक़्ह में महारत नहीं रखता बल्कि मैं तो अ़रबी लुग़त का माहिर हूं।'' आ़मिल ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی से पूछा : ''अगर कोई औ़रत अपने शोहर से महर के तिहाई हिस्से के इ़वज़ ख़ुल्अ़ ले तो इस मस्अले में आप का क्या फ़ैसला है ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने फ़रमाया : ''येह मस्अला मेरे इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ नहीं, इस का सह़ीह़ ह़ल तो हिलाल राई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बताएंगे।'' आ़मिल ने ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल राई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा : ''ऐ हिलाल ! येह बताइये कि इब्ने औ़फ़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कितनी रिवायात ली हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''इस का सह़ीह़ जवाब तो ह़ज़रते सय्यिदुना शाज़कूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ही दे सकते हैं क्यूंकि उन्हें इस इ़ल्म में महारत ह़ासिल है।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शाज़कूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی से कहा : ''ऐ शाज़कूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی येह किस की क़िराअत है।

يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ (پ۱۱،ھود:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपने सीने दोहरे करते (मुंह छुपाते) हैं।*

फ़रमाया : ''मुझे क़िराअत के बारे में ज़ियादा मा'लूमात नहीं, इ़ल्मे क़िराअत के बेहतरीन आ़लिम तो अबू ह़ातिम हैं।'' फिर आ़मिल ने मुझ से कहा : ''ऐ अबू ह़ातिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم अहले बसरा की मोह़ताजी, मुफ़्लिसी, इन की फ़स्लों पर आने वाली मौसिमी बीमारी की इत्तिलाअ़ और अहलियाने बसरा की माली मुआ़वनत के सिलसिले में आप अमीरुल मोअमिनीन को किस त़रह़ पैग़ाम लिखेंगे।'' मैं ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, मैं कातिब व साहिबे बलाग़त नहीं कि अमीरुल मोअमिनीन को फ़साह़त भरा ख़त़ लिख सकूं मैं तो कुरआने करीम का आ़लिम हूं, इस के मुतअ़ल्लिक़ कोई सुवाल करना है तो कीजिये।''

---

1 ......**ज़िहार के येह मा'ना हैं** कि अपनी ज़ौजा या उस के किसी जुज़्वे शाएअ़ या ऐसे जुज़्व को जो कुल से ता'बीर किया जाता हो ऐसी औ़रत से तशबीह देना जो उस पर हमेशा के लिये ह़राम हो या उस के किसी ऐसे उ़ज़्व से तशबीह देना जिस की त़रफ़ देखना ह़राम हो मषलन कहा तू मुझ पर मेरी मां की मिष्ल है या तेरा सर या तेरी गर्दन या तेरा निस्फ़ मेरी मां की पीठ की मिष्ल है। येह ज़िहार कहलाता है, इस का **कफ़्फ़ारा** येह है कि एक सालिम ग़ुलाम आज़ाद करना या मुसलसल दो माह के रोज़े रखना या साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दो वक़्त का खाना खिलाना है।'' (बहारे शरीअ़त, हिस्सा.8, स.52 मुलख़्ख़सन)

येह सुन कर वोह आ़मिल कुछ इस त़रह़ गोया हुवा, इस से ज़ियादा ना पसन्दीदा शख़्स कौन होगा कि पचास साल तक हुसूले इ़ल्म में मश्ग़ूल रहा, फिर भी सिर्फ़ एक फ़न में महारत ह़ासिल की अगर इस फ़न के इलावा किसी और इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ उस से सुवाल किया जाए तो वोह उस का जवाब न दे सके। ऐसा शख़्स लाइक़े अफ़्सोस है, हां ! हमारे कूफ़ा के आ़लिम "**इमाम कुसाई**" ऐसे माहिर आ़लिम हैं कि उन से किसी भी इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ कोई भी सुवाल किया जाता तो वोह उस का तसल्ली बख़्श जवाब देते।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! इ़ल्मे दीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है, पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अ़लीमो ख़बीर है जिसे चाहे इ़ल्मे दीन की दौलत से बेश बहा ख़ज़ाना अ़त़ा फ़रमाए। अ़र्सए दराज़ तक इन्सान किसी क़ाबिल व माहिर उस्ताज़ के सामने ज़ानूए तलम्मुज़ तै करता (या'नी शागिर्दी इख़्तियार करता) है तब उसे किसी फ़न में महारत ह़ासिल होती है, जब तक किसी माहिर तिर्याक की ख़िदमत में रह कर मुसलसल तैराकी की मश्क़ न की जाए तब तक समन्दर की तह में छुपे हुवे जवाहिर (या'नी मोतियों) तक रसाई नहीं हो सकती। किसी भी फ़न में महारते ताम्मा के लिये अनथक मेह़नत बहुत ज़रूरी है। और हर फ़न में महारत ह़ासिल हो जाना अ़तिय्यए ख़ुदावन्दी है।

हर दौर में ऐसे अ़ज़ीम लोग पैदा हुवे जिन की रहनुमाई में कितने भटके हुवों को मन्ज़िले मक़्सूद मिल गई। कितने तिशनगाने इ़ल्म हुसूले इ़ल्म की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे। इन्हीं रहबरों में एक अ़ज़ीम रहबर आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان भी हैं कि जिन के इ़ल्म का डंका चार दांगे आ़लम में बज रहा है। आप ऐसे अ़ज़ीम बुज़ुर्ग थे कि जिस इ़ल्म की त़रफ़ बढ़ते उस के हुसूल में कामयाब हो जाते। आप को बीसियों उ़लूम में महारते ताम्मा ह़ासिल थी। तारीख़ गवाह है कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जहां फ़िक़्ह की दुन्या के शहनशाह हैं, वहीं इ़ल्मे क़ुरआन, इ़ल्मे ह़दीष़, इ़ल्मे हिन्दसा, इ़ल्मे फ़लसफ़ा और मुरव्वजा तमाम उ़लूमो फ़ुनून में महारते ताम्मा ह़ासिल थी, आप अकेले ही अपनी ज़ात में एक अन्जुमन थे, जिस ने भी आप की सीरत का मुत़ालआ़ किया वोह आप की ख़ुदादाद इ़ल्मी सलाह़िय्यत को तस्लीम करने पर मजबूर हो गया।)

हिकायत नम्बर : 285 क़ुरआन सुन कर रूह़ निकल गई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى से मन्क़ूल है कि मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से वापसी पर मैं कई दिन इराक़ के ग़ैर आबाद वीरान जंगलों में फिरता रहा। मुझे कोई शख़्स नज़र न आया जिस की रफ़ाक़त इख़्तियार करता। काफ़ी दिनों बा'द मुझे एक ख़ैमा नज़र आया, ऐसा लगता था जैसे जानवरों के बालों से बनाया गया हो। मैं ख़ैमे के क़रीब गया तो देखा कि वोह एक ख़स्ता ह़ाल पुराना मकान था जिसे कपड़े से ढांप दिया गया था। मैं ने

सलाम किया तो अन्दर से एक बुढ़ी औरत की आवाज़ सुनाई दी, उस ने पूछा : "ऐ इब्ने आदम ! तुम कहां से आ रहे हो ?" मैं ने कहा : "मैं मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا से आ रहा हूं।" पूछा : "कहां का इरादा है ?" मैं ने कहा : "**शाम** जा रहा हूं।"

कहा : "मैं तेरे जैसे इन्सान को झूटा और ग़लत़ दा'वा करने वाला देख रही हूं। क्या तू ऐसा न कर सकता था कि एक कोना संभाल लेता और उसी में बैठ कर इ़बादत व रियाज़त करता यहां तक कि तुझे पैग़ामे अजल आ पहुंचता ? ऐ शख़्स ! तू येही सोच रहा है ना कि येह बुढ़िया इस बयाबान जंगल में एक टूटे फूटे मकान में रहती है, येह खाती कहां से होगी ?" मैं ख़ामोश रहा। उस ने पूछा : "क्या तुम्हें क़ुरआन याद है।" मैं ने कहा : "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे क़ुरआन याद है।" कहा : "सूरए फ़ुरक़ान की आख़िरी आयात पढ़ो।" मैं ने जैसे ही तिलावत शुरूअ़ की वोह चीख़ने लगी और ग़श खा कर गिर पड़ी। काफ़ी देर बा'द रात गए इफ़ाक़ा हुवा तो वोही आयात पढ़ती रही और शदीद आहो ज़ारी करती रही। दोबारा मुझे वोही आयात पढ़ने को कहा। मैं ने तिलावत की तो पहले की त़रह़ फिर बेहोश हो कर गिर पड़ी।

जब काफ़ी देर तक होश न आया तो मैं बहुत परेशान हो गया और सोचने लगा कि कैसे मा'लूम किया जाए कि येह बेहोश है या इन्तिक़ाल कर गई है ? उसे वहीं छोड़ कर मैं एक सम्त चल दिया। तक़रीबन निस्फ़ मील चलने के बा'द मुझे आ'राबियों की एक वादी नज़र आई। जब वहां पहुंचा तो एक लौंडी और दो नौजवान मेरे पास आए। उन में से एक ने मुझ से पूछा : "ऐ मुसाफ़िर ! क्या तू जंगल में मौजूद घर की त़रफ़ से आ रहा है ?" मैं ने कहा : "हां।" पूछा : "क्या तू ने वहां क़ुरआन की तिलावत की।" मैं ने कहा : "हां।" नौजवान ने कहा : "रब्बे का'बा की क़सम ! तू ने उस बुढ़िया को क़त्ल कर दिया" फिर हम उस घर की त़रफ़ आए, लौंडी ने बुढ़िया को देखा तो वोह इस दारे फ़ानी से कूच कर चुकी थी। मुझे नौजवान के अन्दाज़े ने तअ़ज्जुब में डाल दिया, मैं ह़ैरान था कि उस ने कैसे जाना कि क़ुरआन सुन कर बुढ़िया का इन्तिक़ाल हो जाएगा।" मैं ने लौंडी से पूछा : "येह नौजवान कौन है और बुढ़िया से इस का क्या रिश्ता था।" कहा : "येह ख़ुदा रसीदा बुढ़िया इन की बहन थी, तीस साल से इस ने किसी इन्सान से गुफ़्तगू न की, भूकी प्यासी इसी जंगल में इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहती। तीन दिन बा'द थोड़ा सा पानी पी कर और थोड़ा सा खाना खा कर गुज़ारा करती यहां तक कि आज अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिली।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(سُبۡحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ पहले की इस्लामी बहनों में भी इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ का कैसा जज़्बा हुवा करता था। उन्हें क़ुरआन की मह़ब्बत व तिलावत, इ़बादत का ज़ौक़, ख़ल्वत से उल्फ़त, मुजाहदात की त़रफ़ रग़बत और आ'माले सालेह़ा पर इस्तिक़ामत जैसी बेश बहा ने'मतें ह़ासिल थीं। इन तमाम उमूर के ह़ुसूल के लिये ज़रूरी है कि नेकों की सोह़बत इख़्तियार की जाए और ऐसा माह़ोल अपनाया जाए जिस में हर दम क़ुरआनो सुन्नत की बातें सीखी और सिखाई जाती हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के पुर फ़ितन दौर में तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों की इस्लाह़ के लिये भी सुन्नतों भरा पाकीज़ा माह़ोल मुहय्या कर रही है। इस माह़ोल में आ कर न जाने कितने गुनाह गारों को तौबा की तौफ़ीक़ मिली और अब वोह सलातो सुन्नत के पाबन्द हो कर एक बा अ़मल बा किरदार मुसलमान की हैषिय्यत से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को दिन दुगनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। और तमाम उ़-लमाए अहले सुन्नत और बिल ख़ुसूस अमीरे दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتھم العالیہ का सायए शफ़्क़त क़ाइमो दाइम रखे कि गुलशने **दा'वते इस्लामी** की बहारें इन्हीं की अनथक मेह़नत व कोशिश का षमर हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

हिकायत नम्बर : 286

अ़ज़ीम बाप की अ़ज़ीम बेटियां

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सुवैद त़ह़्ह़ान से मन्क़ूल है कि जिस दिन इल्मो अ़मल के पैकर, मर्दे क़लन्दर, इमामे जलील इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ल्क़े कु़रआन के मस्अले पर निहायत बे दर्दी से कोड़े मारे जा रहे थे और आप कोहे इस्तिक़ामत बन कर ज़ुल्मो सितम की ख़त़रनाक आंधियों का सामना कर रहे थे। उस दिन हम ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन अ़ली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास थे। इब्ने उ़बैद क़ासिम बिन सलाम, इब्राहीम बिन अबू लैष के इ़लावा और भी बहुत से लोग वहां मौजूद थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लोगों से फ़रमाया : "क्या तुम में कोई ऐसा मर्दे मुजाहिद है जो मेरे साथ ज़ालिम ह़ाकिम के पास चले, ताकि हम उस से पूछें कि वोह इमामे जलील علیہ رحمۃ اللہ الوکیل पर ज़ुल्मो सितम क्यूं कर रहा है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन अ़ली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के साथ चलने के लिये कोई भी तय्यार न हुवा। ज़ालिम ह़ाकिम के पास जाने से सब गुरेज़ कर रहे थे। इब्राहीम बिन अबू लैष رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ खड़े हुवे और कहा : "ऐ अबल ह़सन ! मैं आप के साथ चलने को तय्यार हूं।"

उन का येह जज़्बा देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन अ़ली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने हैरान होते हुवे कहा : ऐ नौजवान ! क्या तुम मेरे साथ चलोगे ? अच्छी त़रह़ सोच लो कि हम किस के पास जा रहे हैं ?" कहा : "ऐ अबल ह़सन ! मैं ने ख़ूब सोच लिया है, मैं ज़रूर बिज़्ज़रूर आप के साथ उस ज़ालिम ह़ाकिम के पास जाऊंगा। मुझे थोड़ी सी मोहलत दीजिये ताकि घर जा कर अपनी बेटियों को वसिय्यत और उन्हें दिन पर अ़मल पैरा होने की तल्क़ीन कर आऊं।" येह कह कर वोह अपने घर की त़रफ़ चले गए, हम समझ रहे थे कि येह अपने लिये कफ़न वगै़रा का

इन्तिज़ाम करने गए हैं, क्यूंकि ज़ालिम ह़ाकिम के पास जाना मौत को दा'वत देना था। बहर ह़ाल कुछ देर बा'द वापस आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूछा : "क्या तुम तय्यार हो ?" कहा : "हां ! मैं बिल्कुल तय्यार हूं, बच्चियों को नसीह़त कर आया हूं जब मैं ने उन्हें बताया कि मैं ह़ाकिम के पास जा रहा हूं तो वोह रोने लगीं, मैं उन्हें रोता छोड़ आया हूं, अभी येह बातें हो ही रही थीं कि क़ासिद ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन अ़ली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की साहि़ब ज़ादियों का ख़त़ ले कर आया, ख़त़ में लिखा था :

"ऐ हमारे मोह़तरम वालिद ! हमें ख़बर पहुंची है कि एक ज़ालिम शख़्स, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को क़ैद कर के कोड़े लगवा रहा है ताकि वोह येह कहने पर मजबूर हो जाएं कि कलामुल्लाह (या'नी कुरआने पाक) मख़्लूक़ है, ऐ अब्बा जान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरना, हिम्मत व इस्तिक़ामत से काम लेना, बात़िल के सामने हरगिज़ हरगिज़ सर न झुकाना, इमामे जलील علیہ رحمۃ اللہ الوکیل के हौसला व षाबित क़दमी को पेशे नज़र रखना, अगर ह़ाकिमे बद आप को नाह़क़ बात कहलवाना चाहे तो हरगिज़ ग़लत़ बात न करना, ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की क़सम ! आप की मौत की ख़बर आना हमें इस बात से ज़ियादा पसन्द है कि आप मौत के ख़ौफ़ से नाह़क़ बात तस्लीम कर लें। जान जाती है तो जाए मगर ईमान न जाए।"

وَالسَّلَام : अ़ज़ीम बाप की बेटियां

(سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ कैसी अ़ज़ीम अवलाद थी उस अ़ज़ीम वली की, येह सब अच्छी तर्बिय्यत का नतीजा था। ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन अ़ली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने इस्लामी नहज (या'नी त़रीक़े) पर अपनी अ़ज़ीम बेटियों की तर्बिय्यत की। उन्हें दीन की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न दिया, ज़ुल्म व जब्र के सामने न झुकने की तरग़ीब दी, येही वजह थी कि वोही बेटियां अपने बाप का हौसला बढ़ा रही थीं, ज़ालिम के सामने डट जाने की तल्क़ीन कर रही थीं, उन्हें बाप की शहादत उस ज़िन्दगी से अ़ज़ीज़ थी जो ज़ालिम के सामने झुक कर गुज़रती। वोह वाक़ेई अ़ज़ीम बाप की अ़ज़ीम बेटियां थीं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर मुसलमान को तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए कि वोह अपने घर में सुन्नतें अपनाने का ज़ेह्न दे। अपने बच्चों को सलातो सुन्नत का पाबन्द बनाने के लिये ख़ूब तगो दो (या'नी कोशिश) करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी आने वाली नस्लों को ऐसा जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए कि हर दम दीने मतीन की ख़िदमत करें और दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये हर दम कोशां रहें।)

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें   उन्हें नेक तुम बनाना मदनी मदीने वाले !

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 287 हक़ पर क़ाइम रहने का इन्आम

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन हुसैन बिन दीज़ील رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि जिन दिनों ख़ल्क़े क़ुरआन का मस्अला ज़ोरों पर था। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی को सख़्त अज़िय्यतों का सामना था, ज़ालिम ख़लीफ़ा हर उस शख़्स को सख़्त सज़ा दे रहा था जो ख़ल्क़े क़ुरआन के अ़क़ीदे में उस का मुख़ालिफ़ था, हज़रते सय्यिदुना अ़फ़्फ़ान رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को भी शाही दरबार में बुलाया गया। वोह ख़च्चर पर सुवार हुवे, मैं ने ख़च्चर की लगाम थामी और हम दोनों शाही दरबार पहुंचे। भरे दरबार में जब उन से पूछा गया। क्या तुम इस बात के क़ाइल हो कि कलामुल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ है?" उन्हों ने जवाब देने से इन्कार कर दिया और ख़ामोश रहे। उन्हें बार बार मजबूर किया गया कि "कलामुल्लाह को मख़्लूक़ कहो।" लेकिन उन्हों ने येह ग़लत़ बात तस्लीम न की और इस अ़क़ीदे पर डटे रहे कि क़ुरआने पाक, **अल्लाह** तआ़ला का कलाम है और कलाम उस की सिफ़त है न कि मख़्लूक़। उन से कहा गया : अगर तुम ने क़ुरआने पाक को मख़्लूक़ न माना तो एक हज़ार दिरहम जो हर माह तुम्हें बत़ौरे वज़ीफ़ा दिये जाते हैं वोह बन्द कर दिये जाएंगे। आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ (پ۲۶، الذّٰریٰت:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आस्मान में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है।*

फिर आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه घर तशरीफ़ लाए तो घर के तमाम अफ़राद जो कमो बेश चालीस थे सब ने आप से दूरी इख़्तियार कर ली। आप अकेले रह गए। फिर दरवाज़ा खटखटा कर एक अजनबी शख़्स अन्दर आया जो घी फ़रोश लग रहा था। उस के पास हज़ार दिरहम की एक थैली थी उस ने वोह थैली आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सामने रखी और कहा : "ऐ अबू उ़षमान رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जिस त़रह़ आप ने दीन को क़ाइम रखा इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को भी क़ाइम रखे, येह हज़ार दिरहम आप की बारगाह में तोह़फ़तन पेश कर रहा हूं क़बूल फ़रमा लें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ हर माह आप की ख़िदमत में हज़ार दिरहम पेश किया करूंगा। येह कह कर वोह शख़्स वहां से चला गया।"

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم﴿*

हिकायत नम्बर : 288 सारा घराना मुसलमान हो गया

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अ़त़ा رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : "मुझे हज़रते अबू सालेह़ अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बताया कि अबू मह़फ़ूज़ हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللهِ الْقَوِی को बचपन से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی में चुन लिया गया था। आप رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वालिदैन नस्रानी थे इस लिये उन्हों ने आप को और आप के भाई ईसा को एक

नस्रानी आ़लिम के पास भेजना शुरूअ़ कर दिया। वोह नस्रानी मुअ़ल्लिम बच्चों को शिर्क की ता'लीम देता और कहता : "खुदा सिर्फ़ एक नहीं बल्कि तीन हैं (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)।" जब मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने सुना तो पुकार कर कहा : "खुदा सिर्फ़ एक है बाक़ी सब उस की मख़्लूक़ है, उस का कोई शरीक नहीं। "मुअ़ल्लिम ने येह बात सुन कर आप को बहुत मारा। दूसरे दिन फिर उस ने शिर्क की ता'लीम दी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फिर अ़लल ए'लान **अल्लाह** तआ़ला की वह्दानिय्यत का इक़रार किया। नस्रानी मुअ़ल्लिम को बहुत गुस्सा आया और बड़ी बे दर्दी से आप को मारने लगा, आप मार खाते रहे लेकिन कुफ़्रिय्या कलिमात न कहे बल्कि आप की ज़बान पर **अह़द, अह़द** का विर्द जारी रहा। फिर आप वहां से भाग गए।

आप की वालिदा जो अभी ईमान न लाई थी आप की मह़ब्बत में रोती रहती। वोह कहती अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरा बेटा लौटा दे तो मैं भी उस का दीन इख़्तियार कर लूंगी। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा बेटा मेरी आंखों की ठन्डक मुझे वापस कर दे। काफ़ी साल बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने घर तशरीफ़ लाए तो मां ने पूछा : "बेटा ! तुम्हारा कौन सा दीन है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मेरा दीन इस्लाम है और येही दीन सच्चा है।" येह सुन कर इन की वालिदा ने कहा : "मेरे बेटे ! गवाह रहना कि मैं भी नस्रानिय्यत से तौबा करती हूं और कलिमए शहादत "اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ" पढ़ कर इस्लाम क़बूल करती हूं।

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बरकत से आप के तमाम ख़ानदान वाले दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो कर सलातो सुन्नत के पाबन्द बन गए।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبى الامين صلى الله تعالى عليه وسلم}*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने इस वलिय्ये कामिल के सदक़े हमें अपनी दाइमी रिज़ा से शादकाम फ़रमा दे।

बहरे मा'रूफ़ो सरी मा'रूफ़ दे बे ख़ुद सरी — जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे बा सफ़ा के वासिते

हिकायत नम्बर : 289

नसीह़त आमोज़ बातें

अबुल अ़ब्बास वलीद बिन मुस्लिम से मन्क़ूल है, किसी ख़लीफ़ा ने लोगों को इस त़रह़ नसीह़त की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! बक़दरे इस्तिताअ़त (या'नी जितना तुम से हो सके) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो ! उन लोगों की त़रह़ हो जाओ जो सुस्ती व ग़फ़्लत का शिकार थे फिर बेदार हो गए और उन्हों ने येह बात अच्छी त़रह़ समझ ली कि येह दुन्या हमारा दाइमी ठिकाना नहीं। हमें इस से पलट जाना है। इस लिये उन्हों ने आख़िरत की तय्यारी शुरूअ़ कर दी। ऐ बन्दगाने खुदा ! मौत के लिये तय्यार हो जाओ, बेशक वोह तुम पर छाई हुई है। ज़ादे राह तय्यार रखो, कजावे कस लो, बेशक तुम्हें कूच का हुक्म मिल चुका है। बेशक मन्ज़िल लम्ह़ा ब लम्ह़ा क़रीब होती जा रही है। हर हर मिनट त़वील मुद्दत में कमी कर रहा है। ज़िन्दगी की मुद्दत कम होती जा रही है, ज़िन्दगी के क़ल्ए़ को वक़्त की ज़र्बें कमज़ोर कर रही हैं, जाने वाले जा रहे हैं, नए लोग आ रहे हैं। बेशक

दिन और रात बड़ी तेज़ी से वापसी के लिये पर तोल रहे हैं। जो पेश क़दमी का मुज़ाहरा करेगा वोह ज़िन्दगी की दौड़ में कामयाब हो जाएगा और जो ज़िन्दगी के दिनों को गिनने में लगा रहा और बैठे बैठे सोचता रहा वोह यक़ीनन नाकाम हो जाएगा।

समझदार इन्सान अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरता, अपने आप को नसीह़त करता और अपनी तौबा पर षाबित क़दम रहता है। अपनी ख़्वाहिशात के धारे में नहीं बहता बल्कि इन पर ग़ालिब रहता है। बेशक इन्सान की मौत उस से पोशीदा है, लम्बी लम्बी उम्मीदें उसे धोके में रखे हुवे हैं। शैत़ान हर दम इन्सान के साथ रहता है, उसे तौबा की उम्मीद दिला कर मा'सिय्यत में मुब्तला कर देता है। फिर उसे तौबा भी नहीं करने देता और इस त़रह़ टाल मटोल करवाता रहता है कि कल तौबा कर लेना, फ़ुलां वक़्त कर लेना इस त़रह़ की खोखली उम्मीदों में उसे जकड़े रखता है। गुनाह को आरास्ता कर के पेश करता है ताकि इन्सान गुनाहों पर दिलैर हो जाए ह़ालांकि मौत इस पर अचानक छा जाएगी। फिर सिवाए ह़सरत के कुछ न होगा। इन्सान को मौत की त़रफ़ से बे ख़बरी ने ग़ाफ़िल कर रखा है।

ऐ लोगो ! तुम्हारे और जन्नत या दोज़ख़ के दरमियान सिर्फ़ मौत की दीवार आड़ है। जैसे ही येह दीवार गिरी ग़ाफ़िल इन्सान कफ़े अफ़्सोस मलता रह जाएगा। फिर तमन्ना करेगा कि काश ! कुछ वक़्त मोहलत मिल जाए, लेकिन फिर येह ख़्वाहिश कभी पूरी न होगी। अब इन्सान समझ जाएगा कि वक़्त के ज़ियाअ़ ने उसे नाकामी की त़रफ़ धकेल दिया।

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें उन लोगों में से न बनाए जो दुन्यवी ने'मतों के बल बूते पर अकड़ जाते और मग़रूर सरकश हो जाते हैं, बल्कि उन लोगों में से बनाए जो ने'मतों पर मग़रूर नहीं होते, अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं करते, जिन्हें मौत के बा'द ह़सरत व अफ़्सोस नहीं होता। ऐ हमारे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ हमारी दुआओं को क़बूल फ़रमा, बेशक तू दुआओं को क़बूल फ़रमाने वाला, बहुत मेहरबान है ! ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ हमारी ख़ाली झोलियां गोहरे मुराद से भर दे।" (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم))

हिकायत नम्बर : 290 मामूनुर्रशीद का अ़द्लो इन्साफ़

क़ह़त़बा बिन हुमैद बिन हुसैन का बयान है कि एक मरतबा मैं ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद के दरबार में था। ख़लीफ़ा मज़्लूमों की फ़रयाद सुन कर उन्हें ज़ालिमों से बदला दिलवा रहा था। लोग अपने अपने मसाइल ह़ल करवा रहे थे। दोपहर ढलने तक येही सिलसिला रहा, ख़लीफ़ा बड़े अ़द्लो इन्साफ़ से फ़ैसले कर रहा था। मजलिसे क़ज़ा ख़त्म होने वाली थी, अचानक फटे पुराने कपड़ों में मल्बूस एक औ़रत दरबार में आई और ब आवाज़े बुलन्द ख़लीफ़ा को सलाम किया : ख़लीफ़ा ने यह़्या बिन अकषम की त़रफ़ देखा, यह़्या ने औ़रत से कहा : "बताओ, तुम्हारा

मस्अला क्या है ?" औ़रत ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा ! मुझ से मेरी ज़मीन ज़ुल्मन छीन ली गई है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा मेरा कोई ह़ामी व नासिर नहीं ।" येह सुन कर यह़्या बिन अकषम ने कहा : "अभी तो दरबार का वक़्त ख़त्म हो चुका है, जुमा'रात को आ जाना ।"

औ़रत वापस चली गई, मजलिसे क़ज़ा बरख़ास्त कर दी गई, जुमा'रात को ख़लीफ़ए वक़्त फ़ैसला करने तख़्त पर बैठा और कहा : "आज सब से पहले उस औ़रत की फ़रयाद सुनी जाएगी, वोह औ़रत कहां है ?" औ़रत को लाया गया तो ख़लीफ़ा ने कहा : "बताओ, तुम्हारा क्या मुआ़मला है ? तुम पर किस ने ज़ुल्म किया ? अपने मद्दे मुक़ाबिल को सामने लाओ ।" औ़रत ने ख़लीफ़ा के बेटे अ़ब्बास की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : "मेरा दा'वा इसी पर है और येही मेरा मद्दे मुक़ाबिल है ।" ख़लीफ़ा ने अह़मद बिन अबू ख़ालिद को हुक्म दिया कि अ़ब्बास का हाथ पकड़ कर इस औ़रत के साथ खड़ा कर दो ।" हुक्म की ता'मील हुई और ख़लीफ़ए वक़्त के शहज़ादे को मुजरिमों की त़रह़ उस औ़रत के साथ खड़ा कर दिया गया । अ़ब्बास के ख़िलाफ़ बयान देते हुवे औ़रत की अवाज़ बुलन्द होने लगी । जब कि अ़ब्बास दबी दबी आवाज़ में बात कर रहा था । जब औ़रत की आवाज़ मज़ीद बुलन्द हुई तो अह़मद बिन अबू ख़ालिद ने कहा : "मोह़्तरमा ! अपनी आवाज़ पस्त करो तुम्हें मा'लूम नहीं कि इस वक़्त तुम ख़लीफ़ए वक़्त के सामने मौजूद हो, दरबारे शाही में इतनी बुलन्द आवाज़ से बात करना बहुत नाज़ैबा है ।"

ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद ने कहा : "इसे बोलने दो ! बेशक इस की सच्चाई ने इस की आवाज़ को बुलन्द कर दी है और अ़ब्बास के ज़ुल्म ने इस को गूंगा कर दिया है । काफ़ी देर तक अ़ब्बास और उस औ़रत का मुकालमा होता रहा । बिल आख़िर ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया कि इस औ़रत की ज़मीन इसे वापस लौटा दी जाए और इस औ़रत को दस हज़ार दिरहम दिये जाएं । येह फ़ैसला सुन कर वोह मज़्लूमा ख़ुशी ख़ुशी अपने घर चली गई ।

ह़िकायत नम्बर : 291 हम ख़ुद को खिलाते तो येह मछली न निकलती

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बज़्ज़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मन्क़ूल है कि "मैं ने मन्सूर माहीगीर को येह कहते हुवे सुना : "एक मरतबा ई़द के दिन जब मैं मछलियां पकड़ने जा रहा था तो रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से मुलाक़ात हुई वोह ई़द की नमाज़ पढ़ कर आ रहे थे । मुझे देख कर पूछा : आज ई़द के दिन भी तुम मछलियां पकड़ने जा रहे हो ? मैं ने कहा : "ह़ुज़ूर ! क्या करूं हमारे घर मुठ्ठी भर आटा भी नहीं और न ही कोई और ऐसी चीज़ है जिसे पका कर भूक मिटाई जा सके ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "घबराओ मत ! बेशक हमारा पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मदद फ़रमाने वाला है, चलो अपना जाल उठाओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं ।" मैं जाल उठा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ चल दिया । दरया पर पहुंच कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر वुज़ू कर के दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ो ।"

जब मैं नमाज़ पढ़ चुका तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : अब बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर जाल फेंको ! मैं ने बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर जाल फेंका। कुछ ही देर बा'द मह़सूस हुवा कि जाल में कोई भारी चीज़ फंस गई है, मैं समझा कि शायद कोई वज़्नी पथ्थर है। जब जाल खींचा तो बहुत भारी था मैं ने पुकार कर कहा : "ऐ अबू नस्र ! मेरी मदद कीजिये, जाल में कोई भारी चीज़ फंस गई है, मुझे अन्देशा है कि जाल ही न टूट जाए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़ौरन मेरी त़रफ़ आए हम ने मिल कर जाल खींचना शुरूअ़ कर दिया। जब बाहर आया तो उस में एक बहुत बड़ी मछली थी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر इसे बेच कर अपने अहलो इ़याल के लिये ज़रूरत की अश्या ख़रीदो।

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और मछली ले कर बाज़ार की त़रफ़ चल दिया। रास्ते में एक ख़च्चर सुवार मिला उस ने पूछा : "येह मछली कितने में बेचोगे ? मैं ने कहा : दस दिरहम में। उस ने फ़ौरन दस दिरहम अदा किये और मछली ले कर चला गया। मैं खाने का सामान ख़रीद कर घर चला आया, खाना तय्यार हुवा और सब घर वालों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। खाने से फ़ारिग़ हो कर मैं ने घर वालों से कहा : दो चपातियां और ह़ल्वा ले कर आओ ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي की ख़िदमत में पेश करूं, मत़लूबा अश्या तय्यार की गईं। मैं उन्हें ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي के दरवाज़े पर पहुंचा और दस्तक दी, पूछा : कौन ? मैं ने कहा : मन्सूर : फ़रमाया : ऐ मन्सूर ! जो चीज़ें तुम अपने साथ लाए हो उन्हें दरवाज़े के बाहर ही रख दो और ख़ुद अन्दर आ जाओ, मैं ने कहा : "हुज़ूर ! मैं और तमाम घर वाले खाना खा चुके हैं। मैं आप की बारगाह में चपातियां और ह़ल्वा ले कर ह़ाज़िर हुवा हूं, येह क़बूल फ़रमा लें।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر अगर हम अपने आप को खिलाते तो येह मछली हरगिज़ न निकलती, जाओ ! येह चीज़े तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को मुबारक हों, हमें इन की ह़ाजत नहीं।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 292 बद अख़्लाक़ी पर भी हुस्ने सुलूक

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन अ़ब्दुल बाक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي बहुत बड़े ज़मीनदार थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم अपनी सल्त़नत छोड़ कर दुर्वेशी ज़िन्दगी इख़्तियार कर चुके थे और रिज़्क़े ह़लाल के ह़ुसूल के लिये उजरत पर लोगों की खेती वग़ैरा काटा करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन अ़ब्दुल बाक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي के हां आप और आप के एक दोस्त ने मज़दूरी की और बीस दीनार कमाए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने अपने रफ़ीक़ से कहा : "आओ, हम ह़ल्क़ करवा लें (या'नी सर मुन्डवा लें)।" चुनान्चे, दोनों ह़ज्जाम के पास आए, ह़ज्जाम ने उन्हें कोई वक़्अ़त न दी और बड़े तह़क़ीर आमेज़ लहजे में कहा : "तुम लोगों से ज़ियादा नापसन्दीदा मेरे नज़्दीक दुन्या भर में कोई नहीं, क्या मेरे इलावा

कोई और शख़्स तुम्हें न मिला जो तुम्हारी ख़िदमत करता।" येह कह कर वोह दूसरे गाहकों में मसरूफ़ हो गया। आप के रफ़ीक़ को हज्जाम का ज़िल्लत आमेज़ लहजा बहुत बुरा लगा था इस लिये उस ने ह़ल्क़ करवाने से इन्कार कर दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ामोशी से बैठे रहे। जब सब लोग चले गए तो हज्जाम ने नफ़रत भरे लेहजे में कहा : "तुम क्या चाहते हो ?" फ़रमाया : "मैं अपना ह़ल्क़ करवाना चाहता हूं।"

हज्जाम ने बड़ी ह़क़ारत से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ह़ल्क़ किया। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान के दो टके का हज्जाम भी आज इस मर्दे क़लन्दर को दुर्वेशाना लिबास में देख कर ह़क़ारत भरी नज़रों से देख रहा था जिस ने अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर सल्त़नत, शानो शौकत, शाही मह़ल्लात और ज़र व ज़मीन सब कुछ ठुकरा दिया था। किसी ने दुरुस्त कहा है कि मोती की क़द्र जोहरी ही जानता है। वोह नादान हज्जाम इस गोहरे बे बहा की क़द्र न जान सका। बहर ह़ाल जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ल्क़ करवा लिया तो अपने रफ़ीक़ से कहा : "जो बीस दीनार तुम्हारे पास हैं वोह सब इस हज्जाम को दे दो।" उस ने कहा : "हुज़ूर ! येह आप क्या फ़रमा रहे हैं ? इतनी शदीद गर्मी में ख़ून पसीना एक कर के आप ने मज़दूरी की फिर येह रक़म मिली, अब इस हज्जाम को इतनी बड़ी रक़म दे रहे हैं।" फ़रमाया : "येह रक़म इस हज्जाम को दे दो ताकि फिर कभी येह किसी दुर्वेश को ह़क़ीर न जाने।" आप के रफ़ीक़ ने सारी रक़म हज्जाम को दे दी। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه "**त़रसूस**" की त़रफ़ लौट आए। सुब्ह़ हुई तो अपने दोस्त से फ़रमाया : "येह चन्द किताबें किसी के पास रहन रख कर क़र्ज़ लो और खाने के लिये कुछ ख़रीद लाओ।" आप का दोस्त ह़स्बे इरशाद किताबें ले कर बाज़ार की जानिब चल दिया। रास्ते में एक शख़्स को देखा जो बड़ी शानो शौकत से ख़ैमा लगाए बैठा था। उस के सामने ग़ल्ले का ढेर, क़ीमती घोड़े, खच्चर और ऐसे बड़े बड़े सन्दूक़ थे जिन में साठ हज़ार से ज़ियादा दीनार होंगे। वोह शख़्स इस त़रह़ सदाएं बुलन्द कर रहा था, "इन तमाम चीज़ों का मालिक सफ़ेदी माइल सुर्ख़ रंगत वाला शख़्स है जो इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के नाम से मशहूर है। कोई है जो मुझे उस के मुतअ़ल्लिक़ बताए।" येह ए'लान सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का दोस्त उस शख़्स के पास गया और कहा : "जिसे तुम ढूंड रहे हो वोह ऐसी शोहरत व षरवत को पसन्द नहीं करता, आओ, मैं तुम्हें उस के पास ले चलता हूं।"

वोह दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم के पास आए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मज़दूरों के लिबास में देख कर वोह शख़्स हक्का बक्का रह गया, हाथ जोड़ कर अ़र्ज़ की : मेरे आक़ा ! मेरे सरदार ! ख़ुरासान की सल्त़नत छोड़ कर आप इस ह़ालत को पहुंच गए हैं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "इन बातों को छोड़ो और येह बताओ, तुम्हारा मुआ़मला क्या है ?" कहा : "हुज़ूर ! आप के बा'द जो शख़्स तख़्त नशीन हुवा उस का इन्तिक़ाल हो गया।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म फ़रमाए, जिस त़रह़ उसे मौत आई उसी त़रह़ हर ज़ी रूह़ को मौत आएगी। जिस ने ख़ुशियों का गंज पाया वोह मौत

के रन्ज से भी दो चार होगा। अब येह बताओ तुम क्या चाहते हो और यहां क्यूं आए हो ?" कहा : "मेरे आक़ा ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बा'द जब तख़्त नशीन शैख़ का इन्तिक़ाल हो गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सारे ग़ुलामों ने जो चाहा वोह किया, तमाम शाही चीज़ें लोगों ने आपस में तक़्सीम कर लीं। मैं ने भी बहुत सी चीज़ें ले लीं, येह तमाम चीज़ें जो मेरे पास हैं सब आप की हैं और मैं भी आप का भागा हुवा ग़ुलाम हूं। अब मुआ़फ़ी त़लब करने आया हूं, मैं ने उ़-लमाए किराम عليهم رحمة الله المنان से अपने मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "जब तक तुम अपने आक़ा के पास वापस न जाओगे उस वक़्त तक तुम्हारे आ'माल क़बूल न होंगे, तुम मालो मताअ़ ले कर अपने आक़ा के पास जाओ वोह जिस त़रह़ चाहे तुम्हारे साथ मुआ़मला करे।" मेरे आक़ा ! अब मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने ह़ाज़िर हूं, मेरे बारे में जो चाहें फ़ैसला फ़रमाएं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने फ़रमाया : "अगर तुम अपनी बात में सच्चे हो तो मैं ने तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर आज़ाद किया। और जो कुछ मालो मताअ़ तुम्हारे पास है वोह सब तुम्हें दिया, अब जहां चाहो येह माल ख़र्च करो। जाओ ! येह सारा माल तुम्हें मुबारक हो।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने दोस्त की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : "जाओ ! किसी के पास येह किताबें रहन रख कर क़र्ज़ लो और खाने के लिये कुछ ख़रीद लाओ।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

(سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ सद हज़ार आफ़रीं उन मुबारक हस्तियों पर जिन्हों ने ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की रिज़ा के लिये शाही शानो शौकत, मह़ल्लात व बाग़ात, ग़िलमान व ख़ुद्दाम और दुन्यवी ज़ैबो ज़ीनत को ठुकरा कर सादगी व आ़जिज़ी इख़्तियार की। भूक व प्यास की मुसीबतें हंस कर बरदाश्त कीं, कभी भी ह़र्फ़े शिकायत लब पर न लाए और रिज़्क़े ह़लाल की ख़ात़िर मेह़नत मज़दूरी की। यक़ीनन येही वोह लोग हैं जिन्हों ने आख़िरत की क़द्र जान ली। उन पर दुन्या की ह़क़ीक़त आश्कार हो चुकी थी कि दुन्या बेवफ़ा है इस की ने'मतें ज़वाल पज़ीर हैं। इन आ़रिज़ी लज़्ज़तों की ख़ात़िर दाइमी ख़ुशियों को नज़र अन्दाज़ कर देना अ़क़्लमन्दों का काम नहीं। समझदार वोही हैं जो बाक़ी रहने वाली ख़ुशियों को फ़ानी ख़ुशियों पर तरजीह़ देते हैं और दुन्यवी मसाइब व तकालीफ़ को सब्रो शुक्र के साथ बरदाश्त करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पाकीज़ा हस्तियों के सदक़े हमें भी आ'माले सालेह़ा पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। हर ह़ाल में अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। बे सब्री और नाशुक्री से बचा कर सब्रो शुक्र की दौलत से माला माल फ़रमाए।

हर शख़्स को चाहिये कि हर आने वाली मुसीबत पर सब्र कर के अज्र का मुस्तह़िक़ हो। मसाइब व आलाम के ज़रीए़ हमें आज़माया जाता है और मर्दानगी येही है कि इम्तिह़ान व आज़माइश आ जाए तो मुंह न फेरा जाए बल्कि ख़ुश दिली से आज़माइशों से निमटा जाए। मुसीबत ख़ुद न मांगी जाए बल्कि अ़फ़्वो करम की भीक त़लब की जाए। अगर मुसीबत आ जाए तो उस पर सब्र किया जाए। **अल्लाह** करीम हमें अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

मेरी मुश्किलें गर तेरा इम्तिहां हैं तो हर ग़म क़सम से ख़ुशी का समां है
गुनाहों की मेरे अगर येह सज़ा है तू सब मुश्किलों को मिटा मेरे मौला

हिकायत नम्बर : 293 ख़ौफ़े ख़ुदा से खजूरें क़बूल न कीं

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से मन्क़ूल है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना आ़फ़िया क़ाज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى बहुत बड़े आ़बिदो ज़ाहिद थे। ख़लीफ़ा महदी ने उन्हें एक अ़लाक़े का क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया। एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दोपहर के वक़्त ख़लीफ़ा के पास गए। ख़लीफ़ा ने अपने पास बुला कर ह़ाल दरयाफ़्त किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सरकारी काग़ज़ात से भरा हुवा थैला ख़लीफ़ा के सामने रखते हुवे कहा : "ऐ ख़लीफ़ा ! मैं ओ़हदए क़ज़ा से इस्ति'फ़ा देता हूं, आप मेरी जगह जिसे चाहें क़ाज़ी मुक़र्रर कर दें, अब मैं येह ज़िम्मेदारी नहीं संभाल सकता।" ख़लीफ़ा ने सुना तो समझा कि शायद किसी सरकारी नुमाइन्दे या साह़िबे अषर शख़्स ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को तंग किया होगा। ख़लीफ़ा ने पूछा : आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) को किस ने तंग किया ? कौन है ! जो आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) के मुआ़मलात में दख़ील हो कर आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) को तंग कर रहा है कि आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) इस्ति'फ़ा देने को तय्यार हो गए हैं ?"

क़ाज़ी आ़फ़िया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़ा ! ऐसी कोई बात नहीं। अस्ल बात कुछ और है। हुवा यूं कि दो शख़्सों का मुक़द्दमा तक़रीबन दो माह से मेरे पास था। वोह मुक़द्दमा ऐसा मुश्किल व हैरान कुन था कि अभी तक ह़ल नहीं हुवा। उन में से हर एक षुबूत व गवाह पेश कर चुका है। दोनों के पास अपने अपने दा'वे पर दलाइल व गवाह मौजूद हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उन का फ़ैसला किस त़रह़ करूं। दो माह तक येही सिलसिला जारी रहा। बिल आख़िर मैं ने उन से कहा, तुम दोनों अपने अपने दा'वे पर दलाइल व गवाह पेश कर चुके हो, तुम्हारा फ़ैसला कुछ दिन बा'द फ़ुलां तारीख़ को होगा, मैं तुम्हारे मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र करूंगा। जाओ, फ़ुलां दिन आ जाना। वोह दोनों चले गए और मैं ग़ौरो फ़िक्र करने लगा। मैं ने येह मुक़द्दमा इस लिये मुअख़्ख़र किया था कि शायद येह दोनों आपस में सुल्ह़ कर लेंगे वरना कम अज़ कम मुझे इन के मुक़द्दमे में ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिल जाएगा। मुझे ताज़ा और उ़म्दा खजूरें बहुत पसन्द थीं इन दोनों में से एक शख़्स को मेरी इस पसन्द के बारे में मा'लूम हो गया। अभी खजूरें पकना शुरूअ़ ही हुई थीं और ताज़ा खजूरें उन दिनों बड़े बड़े रूसा व उमरा को भी बड़ी मुश्किल से मयस्सर आती थीं। वोह शख़्स न जाने कहां से आ'ला क़िस्म की ताज़ा खजूरों से भरा थाल ले आया। उस ने मेरे ख़ादिम को चन्द दिरहम रिश्वत दे कर इस बात पर राज़ी कर लिया कि खजूरों का वोह थाल मुझ तक पहुंचा दे। उस ने इस बात की परवाह न की, कि मैं येह खजूरें वापस कर दूंगा। उस ने खजूरों का थाल मुझे भिजवा दिया, मैं ने इन में से एक खजूर भी न ली और ख़ादिम से कहा कि जहां से लाए हो वहीं वापस ले जाओ। मैं हरगिज़ क़बूल न करूंगा।

चुनान्चे, वोह शख़्स अपनी खजूरें ले कर वापस चला गया। दूसरे दिन वोह अपने मुख़ालिफ़ फ़रीक़ के साथ मेरे पास आया। आज उन का फ़ैसला होना था जब वोह दोनों मेरे सामने आए, मेरी नज़र और मेरे दिल में वोह दोनों बराबर की हैषिय्यत से न आए। मुझे ऐसा लगा कि मेरी तवज्जोह उस शख़्स की त़रफ़ ज़ियादा हो रही है जो खजूरें ले कर आया था। ऐ ख़लीफ़ा ! मुझे अपनी येह कैफ़िय्यत हरगिज़ हरगिज़ क़बूल नहीं। मैं ने वोह खजूरें क़बूल न कीं तब मेरी येह ह़ालत है। अगर ख़ुदा नख़्वास्ता क़बूल कर लेता तो मेरा क्या बनता ? मैं नहीं चाहता कि किसी वजह से मैं दीनी मुआ़मलात में रूकावट व फ़साद का बाइ़ष बनूं और हलाकत मेरा मुक़द्दर बन जाए। मुझे येह बात बिल्कुल पसन्द नहीं कि मेरी वजह से लोगों में फ़साद व बद अमनी फैले। ख़ुदारा ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमाएं और मेरी जगह किसी और को क़ाज़ी मुक़र्रर कर दें, आप का मुझ पर एह़सान होगा।" ख़लीफ़ा ने जब इन की इख़्लास भरी बातें सुनीं तो इस्ति'फ़ा क़बूल कर के इन की जगह किसी और को क़ाज़ी बना दिया। और आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वहां से इस तरह़ वापस हुवे जैसे बहुत बड़ा बोझ आप के सर से उतर गया हो।"

***अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।* آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم**

अल्लाह* *इस से पहले ईमान पे मौत दे दे* *नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

हि़कायत नम्बर : 294 ## अन्डे और रोटी खाने की ख़्वाहिश

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुवे सुना कि मैं ने कभी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को अपने ऊपर ग़ालिब न होने दिया और हमेशा अपनी ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करता। एक मरतबा दौराने सफ़र मेरे नफ़्स ने बड़ी शिद्दत से रोटी और अन्डा खाने का मुत़ालबा किया, बा वुजूद कोशिश के मैं इस ख़्वाहिश पर क़ाबू न पा सका। नफ़्स बार बार अन्डा और रोटी खाने की ख़्वाहिश कर रहा था। चुनान्चे, मैं एक क़रीबी बस्ती की त़रफ़ गया जैसे ही मैं बस्ती में दाख़िल हुवा एक शख़्स मुझ पर झपटा और शोर मचाने लगा : "पकड़ो ! पकड़ो ! येह भी चोरों का साथी है।" लोग मुझ पर टूट पड़े और कोड़े मारने लगे। जब सत्तर कोड़े मार चुके तो एक जानने वाले शख़्स ने मुझे पहचान लिया और कहा : "ऐ लोगो ! येह तुम किसे मार रहे हो ? अरे ! येह तो ज़माने के मश्हूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی हैं।" जब लोगों ने येह सुना तो मुझे छोड़ दिया और मुआ़फ़ी मांगने लगे। फिर एक शख़्स मुझे अपने घर ले गया और मेरे सामने गर्म गर्म रोटियां और अन्डे ला कर रख दिये। येह देख कर मैं ने अपने नफ़्स से कहा :

"ऐ नफ़्स सत्तर (70) कोड़े खाने के बा'द तेरी ख़्वाहिश पूरी हो गई है, ले ! अब अन्डे और रोटी खा ले ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़ किस त़रह़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करते, ह़राम तो दर कनार मुश्तबा बल्कि मुबाह़ अश्या भी तर्क कर के नफ़्स की मुख़ालफ़त करते हुवे **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाया करते। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में भी येह तरग़ीब दिलाई जाती है कि ह़राम व मुश्तबा चीज़ों से बचा जाए और जाइज़ व मुबाह़ खाने भी भूक से कम खाए जाएं ताकि भूक की बदौलत इ़बादत में दिल लग जाए और बुरे कामों की त़रफ़ ज़ेहन न जाए। जब पेट भरा होता है तो इ़बादत में सुस्ती हो जाती है। इस के बर अ़क्स भूक की ह़ालत में सोज़ो गुदाज़ मज़ीद बढ़ जाता है। आप से गुज़ारिश है मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ कर्दा किताब "**आदाबे तअ़ाम** और **पेट का क़ुफ़्ले मदीना**" का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाएं इस की बरकत से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को खाने के आदाब और भूक से कम खाने से क्या फ़वाइद ह़ासिल होते हैं सीखने को मिलेंगे ।)

ह़िकायत नम्बर : 295

ग़ैबी आवाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद अदम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم से मन्क़ूल है कि एक मरतबा मेरा गुज़र ह़ज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के क़रीब से हुवा तो उन्हों ने मुझे अपने पास बुला कर फ़रमाया : "ऐ सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد येह रजिस्टर लो और इस में उन लोगों के नाम लिख कर लाओ जो हर वक़्त मस्जिद में इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहते हैं। इ़बादत व रियाज़त की वजह से उन्हें कारोबार व तिजारत का वक़्त नहीं मिलता और न ही उन के पास कोई ज़रई ज़मीन है जिस से ग़ल्ला ह़ासिल कर सकें। ऐसे तमाम इ़बादत गुज़ारों के नाम लिखो (ताकि उन का कुछ वज़ीफ़ा वग़ैरा मुक़र्रर किया जा सके) मैं ने येह सुना तो उन का शुक्रिय्या अदा किया, इस फ़े'ले ह़सन पर उन्हें दुआ़एं दीं और रजिस्टर ले कर घर चला आया। इ़शा की नमाज़ के बा'द मैं ने चराग़ की रोशनी में रजिस्टर खोला और ऐसे लोगों के नाम याद करने लगा जिन के बारे में मुझे बताया गया था। एक एक कर के उन तमाम इ़बादत गुज़ारों के नाम मेरे ज़ेहन में आना शुरूअ़ हो गए, मैं ने (रजिस्टर पर) "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" लिखी, अभी मैं पहला नाम लिखने ही लगा था कि एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "ऐ सईद ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ऐसे लोगों का राज़ मुन्कशिफ़ करना चाहते हो जो छुप कर अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं और येह सब कुछ तुम एक आदमी के लिये कर रहे हो, शोऐ़ब बिन लैष मर गया है और क्या येह तमाम लोग अपने मा'बूदे बर ह़क़ की त़रफ़ लौट कर नहीं जाएंगे ।"

येह ग़ैबी आवाज़ सुन कर मैं ने रजिस्टर बन्द कर दिया और किसी का नाम न लिखा। सुब्ह़ जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना लैष बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد के पास गया तो मुझे देख कर उन के चेहरे पर ख़ुशी के आषार नुमायां हो गए, उन्हों ने बड़े शौक़ से रजिस्टर लिया और वरक़ गरदानी शुरूअ़ कर दी। بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم के इलावा उन्हें कोई और चीज़ नज़र न आई। मैं ने कहा : "हुज़ूर ! आप को इस में بِسْمِ الله शरीफ़ के इलावा कुछ नज़र न आएगा क्यूंकि मैं ने सिर्फ़ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ही लिखी है।" येह सुन कर उन्हों ने कहा : "ऐ सई़द ! क्या वजह है ?" तो मैं ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया : मेरी बात सुनते हीं उन्हों ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और तड़पने लगे, येह देख कर लोगों का हुजूम हो गया, उन्हों ने मुझ से पूछा : "ऐ अबू ह़ारिष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث इन्हें क्या हुवा, ख़ैर तो है ?" मैं ने कहा : "हां ! सब ठीक है।" फिर आप मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : "ऐ सई़द ! बहुत अच्छा हुवा कि तुझे मुतनब्बेह (या'नी ख़बरदार) कर दिया गया और हम इस मुआ़मले में न पड़े। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रोते रहे और इस त़रह़ कहते रहे : "लैष मर गया तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ पलट कर जाएगा और हम सब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ लौट कर जाएंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द अदम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के बारे में मश्हूर है कि येह अब्दाल थे।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}*

हि़कायत नम्बर : 296 — ग़ैरत मन्द शोहर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है कि "एक मरतबा मैं "रै" (ईरान के दारुल ख़िलाफ़ा, मौजूदा नाम तेहरान) के क़ाज़ी मूसा बिन इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق की मह़फ़िल में था। क़ाज़ी साह़िब लोगों के मसाइल ह़ल कर रहे थे। इतने में एक औ़रत इन के पास लाई गई, उस के सर पर सत्तूं का दा'वा था कि उस औ़रत के शोहर ने उस का पांच सो दीनार महर अदा नहीं किया। जब उस के शोहर से पूछा गया तो उस ने इन्कार कर दिया और कहा : "मुझ पर महर का दा'वा बे बुन्याद है।" शोहर के इन्कार पर क़ाज़ी साह़िब ने औ़रत से गवाह त़लब किये, गवाह ह़ाज़िर किये गए तो उन में से एक ने कहा : "मैं इस औ़रत को देखना चाहता हूं ताकि इसे पहचान कर गवाही दूं।" चुनान्चे, वोह औ़रत की त़रफ़ बढ़ा और कहा : "तुम अपना निक़ाब हटाओ ताकि तुम्हारी पहचान हो सके।" येह देख कर उस के शोहर ने कहा : "येह शख़्स मेरी ज़ौजा के पास क्यूं आया है ?" वकील ने कहा : "येह गवाह तुम्हारी ज़ौजा का चेहरा देखना चाहता है ताकि पहचान हो जाए।"

येह सुन कर ग़ैरत मन्द शोहर पुकार उठा : "इस शख़्स को रोक दो, मैं क़ाज़ी साह़िब के सामने इक़रार करता हूं कि जो दा'वा मेरी ज़ौजा ने मुझ पर किया है वोह मुझ पर लाज़िम है, मैं पांच सो दीनार अदा करने को तय्यार हूं, ख़ुदारा ! मेरी ज़ौजा का चेहरा किसी ग़ैर मर्द पर ज़ाहिर

न किया जाए।" चुनान्चे, गवाह को रोक दिया गया। जब औ़रत ने अपने ग़ैरत मन्द शोहर का येह जज़्बा देखा तो कहा : "सब गवाह हो जाओ ! मैं ने अपना महर मुआ़फ़ कर दिया, मैं दुन्या व आख़िरत में इस का मुत़ालबा न करूंगी, येह महर मेरे ग़ैरत मन्द शोहर को मुबारक हो।" मह़फ़िल में मौजूद तमाम लोग मियां बीवी के इस फ़ैसले पर अ़श अ़श कर उठे। क़ाज़ी साह़िब ने फ़रमाया : "इन दोनों का येह मुआ़मला बेहतरीन अवसाफ़ और आ'ला अख़्लाक़ पर दलालत करता है।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस वाक़िए़ में हमारे लिये बेहतरीन सबक़ है। कैसा ग़ैरत मन्द था वोह शख़्स ! कि अपने ऊपर लाज़िम पांच सो (500) दीनार का इक़रार तो कर लिया लेकिन उस की ग़ैरत ने येह गवारा न किया कि मेरी ज़ौजा का चेहरा किसी ग़ैर मर्द के सामने ज़ाहिर हो। येह ह़या का आ'ला दरजा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में येह तरग़ीब दिलाई जाती है कि ग़ैर मह़रम से पर्दा किया जाए और बे पर्दगी की नुह़ूसत से खुद भी बचा जाए और अपने घर वालों को भी बचाया जाए। इसी उ़न्वान या'नी पर्दे के बारे में अह़काम से मुतअ़ल्लिक़ अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ की किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल फ़रमाएं खुद भी पढ़ें और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से तोह़फ़तन पेश करें।)

ह़िकायत नम्बर : 297

मग़फ़िरत का सबब

ह़ज़रते अबू बक्र सैदलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی से मन्क़ूल है, मैं ने सुलैम बिन मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار को येह कहते हुवे सुना : मैं ने अपने वालिद मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُور को बा'दे विसाल ख़्वाब में देख कर पूछा : "**ما فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟**" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" उन्हों ने जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी बारगाह में बुलाया और फ़रमाया : "ऐ बद अ़मल बुढ्ढे ! तू जानता है हम ने तुझे क्यूं बख़्शा ?" मैं ने कहा : "ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं नहीं जानता।" फ़रमाया : "एक दिन तू ने इजतिमाअ़ में बयान किया और अहले इजतिमाअ़ को रुला दिया, उस इजतिमाअ़ में मेरा एक ऐसा बन्दा भी मौजूद था जो मेरे ख़ौफ़ से कभी न रोया था, तेरा बयान सुन कर वोह भी मेरे ख़ौफ़ से रोने लगा। पस मैं ने उस की, तेरी और तमाम शुरकाए इजतिमाअ़ की मग़फ़िरत फ़रमा दी।"

एक रिवायत में इस त़रह़ मन्क़ूल है कि किसी ने इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار को ख़्वाब में देख कर पूछा : "**ما فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟**" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" कहा : "मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से उन

तीन सो साठ (360) इजतिमाअ़ात के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जिन में, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान की थी, फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ मन्सूर ! हम ने तुम्हारी तमाम ख़त़ाएं और गुनाह मुआ़फ़ कर दिये। खड़े हो जाओ ! जिस त़रह़ ज़मीन में तुम हमारी पाकी बयान करते थे इसी त़रह़ आस्मान वालों के सामने हमारी पाकी बयान करो।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

रह़मत दा दरया इलाही हर दम वगदा तेरा — जे इक क़त़रा बख़्शें मैनूं कम बन जावे मेरा

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि नेक इजतिमाअ़ात में शिर्कत करना कितनी सआ़दत की बात है। नहीं मा'लूम किस लम्ह़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बरसे और मग़्फ़िरत का ज़रीआ़ बन जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जगह ब जगह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ात होते हैं। हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाएं। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी।)

ह़िकायत नम्बर : 298 ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्बास मुअद्दिब (م.ع.د.ب) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है, "मेरे एक हाशिमी पड़ोसी के मुआ़शी ह़ालात ठीक न थे उन्हों ने अपना एक वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ सुनाया : "हमारे हां बच्चे की विलादत हुई तो घर में कोई ऐसी चीज़ न थी जो अपनी ज़ौजा को खिलाता। उस दुख्यारी ने मुझ से कहा : "मेरे सरताज ! आप मेरी ह़ालत व कैफ़िय्यत से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, इस वक़्त मुझे ग़िज़ा की अशद्द ज़रूरत है ताकि मेरी कमज़ोरी दूर हो, अब मैं मज़ीद सब्र करने की त़ाक़त नहीं रखती। ख़ुदारा ! कुछ कीजिये।" अपनी ज़ौजा की येह ह़ालत देख कर मैं बेताब हो गया और इशा की नमाज़ के बा'द एक दुकानदार के पास गया। मैं ग़ल्ला वग़ैरा उसी से ख़रीदता था, मुझ पर उस का कुछ कर्ज़ भी था। मै ने उसे अपने घर की ह़ालत बताई और कुछ सामाने ख़ुर्दो नोश (या'नी खाने पीने का सामान) त़लब किया और कहा कि मैं जल्द ही इस की क़ीमत अदा कर दूंगा।

लेकिन उस ने साफ़ इन्कार कर दिया। मैं एक दूसरे दुकानदार के पास गया और अपनी ह़ालत से आगाह कर के कुछ चीज़ें त़लब कीं। उस ने भी इन्कार कर दिया। अल ग़रज़ ! जिस जिस से भी उम्मीद थी मैं उस के पास गया लेकिन किसी ने मेरी मदद न की। मैं बहुत रन्जीदा हुवा और सोचने लगा कि अब किस के पास जाऊं, किस से अपनी ह़ाजत त़लब करूं। फिर मैं दरयाए दिजला की त़रफ़ चला गया, मैं ने एक मल्लाह़ को देखा जो अपनी कश्ती में बैठा हुवा मुसाफ़िरों का इन्तिज़ार कर रहा था। मुझे देख कर उस ने आवाज़ लगाई : "मैं फ़ुलां फ़ुलां अ़लाक़े की सुवारियां बिठाता हूं अगर कोई मुसाफ़िर है तो आ जाए।"

मैं उस की त़रफ़ गया तो वोह कश्ती किनारे पर ले आया, मैं कश्ती में सुवार हुवा और हमारी कश्ती दरयाए दिजला का सीना चीरती हुई आगे बढ़ने लगी। मल्लाह़ ने मुझ से पूछा : "तुम कहां जाना चाहते हो ?" मैं ने कहा : "कुछ मा'लूम नहीं।" मल्लाह़ ने मुतअ़ज्जिब हो कर कहा : "तुझ जैसा अ़जीब शख़्स मैं ने नहीं देखा तुम इतनी रात गए मेरे साथ कश्ती में बैठे हो और तुम्हें मा'लूम ही नहीं कि कहां जाना है ?" मल्लाह़ की येह बात सुन कर मैं ने उसे अपनी ह़ालत से आगाह किया तो वोह हमदर्दाना लहजे में बोला : मेरे भाई ! ग़म न करो, मैं फ़ुलां अ़लाक़े में रहता हूं, जहां तक हो सका मैं तुम्हारी परेशानी ह़ल करने की कोशिश करूंगा। फिर उस ने एक जगह कश्ती रोकी और मुझे दरयाए दिजला के किनारे वाक़ेअ़ एक मस्जिद में ले गया और कहा : "मेरे भाई ! इस मस्जिद में ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی दिन रात इबादत में मश्ग़ूल रहते हैं, तुम वुज़ू कर के मस्जिद में चले जाओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस नेक बन्दे से दुआ़ कराओ, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़रूर कोई राह निकल आएगी।"

मैं वुज़ू कर के मस्जिद में दाख़िल हुवा तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی मेह़राब में नमाज़ अदा फ़रमा रहे हैं। मैं ने भी दो रक्अ़त अदा कीं और सलाम कर के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़रीब बैठ गया। फ़रागत के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सलाम का जवाब दिया और कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए ! तुम कौन हो ?" मैं ने अपना वाक़िआ़ कह सुनाया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बड़ी तवज्जोह से मेरी बात सुनी फिर नमाज़ के लिये खड़े हो गए। बाहर मोसिम ख़राब होने लगा, बारिश ज़ोर पकड़ती जा रही थी। मैं बहुत घबराया और सोचने लगा कि मैं अपने घर से कितना दूर आ गया हूं, बारिश बढ़ती ही जा रही है, न जाने घर वाले किस ह़ाल में होंगे। मैं इस शदीद बारिश में अपने घर कैसे पहुंचूंगा। मैं इन्हीं ख़यालात में गुम था कि अचानक मस्जिद से बाहर किसी जानवर की आवाज़ सुनाई दी, एक सुवार अपनी सुवारी से उतर कर मस्जिद में दाख़िल हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی के क़रीब आ कर बैठ गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नमाज़ से फ़रागत के बा'द उस से पूछा "مَنْ اَنْتَ رَحِمَکَ اللّٰهُ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म करे, तुम कौन हो ?"

उस ने कहा : "हुज़ूर ! मैं फ़ुलां शख़्स का क़ासिद हूं, उन्हों ने आप को सलाम भेजा है और कहा है कि "मैं चादर ओढ़ कर सो रहा था, मैं ने अपने आप को अच्छी ह़ालत में देखा और अपने ऊपर ऐसी रह़मत की बरसात देखी है कि उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जितना शुक्र अदा किया जाए कम है, मैं आप की बारगाह में कुछ नज़राना पेश कर रहा हूं, इसे क़बूल फ़रमा कर मुझ पर एह़सान फ़रमाएं, आप जिसे मुस्तह़िक़ पाएं उसे येह रक़म अ़ता फ़रमा दें।"

क़ासिद का पैग़ाम सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "येह सारी रक़म इस हाशिमी शहज़ादे की ख़िदमत में पेश कर दो।" क़ासिद ने कहा : "हुज़ूर ! येह पांच सो (500) दीनार हैं।" फ़रमाया ! हां ! येह सब इसे दे दो।" क़ासिद ने सारी रक़म मुझे दे दी। मैं ने तमाम रक़म

अपनी चादर में रखी, ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का शुक्रिया अदा किया और उसी वक़्त घर की त़रफ़ चल दिया, बारिश में भिगता गिरता पड़ता अपने अ़लाके़ में पहुंचा, सीधा दुकानदार के पास गया और कहा : "येह देखो ! येह पांच सो (500) दीनार हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने रिज़्क़ के ख़ज़ानों में से मुझे अ़त़ा फ़रमाए हैं। तुम्हारा जितना मुझ पर क़र्ज़ है वोह ले लो और मुझे खाने का सामान दे दो। दुकानदार ने कहा : "कल तक येह रक़म अपने पास ही रखो, जो चीज़ें तुम्हें चाहियें वोह ले जाओ। फिर उस ने शहद, शकर, तिलूं का तेल, चावल, चर्बी और बहुत सी खाने की अश्या मुझे देते हुवे कहा : "आप येह तमाम चीज़ें अपने घर ले जाएं।" मैं ने कहा : "इतना सारा सामान में कैसे उठाऊंगा।" कहा : "मैं आप की मदद करूंगा।" कुछ सामान उस ने उठाया कुछ मैं ने फिर हम दोनों घर की त़रफ़ चल दिये। घर पहुंचे तो देखा कि दरवाज़ा खुला हुवा था क्यूंकि मेरी ज़ौजा इतनी कमज़ोर हो गई थी कि दरवाज़ा बन्द करने की त़ाक़त भी न थी। मुझे देख कर शिकवा करते हुवे बोली : "इस नाज़ुक ह़ालत में मुझे छोड़ कर कहां चले गए थे ? भूक और कमज़ोरी से मेरी ह़ालत ख़राब हो गई है।

मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से हमारी परेशानी दूर हो गई, येह देखो ! घी, चर्बी, शकर, तेल और बहुत सी खाने की अश्या कसीर मिक़दार में हमारे घर में मौजूद हैं। येह सुन कर वोह बहुत खुश हुई, उस की तक्लीफ़ जाती रही। मैं ने उसे दीनारों के बारे में न बताया इस ख़ौफ़ से कि कहीं ख़ुशी से हलाक न हो जाए। फिर खाना तय्यार हुवा सब ने खाना खा कर ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का शुक्र अदा किया। सुब्ह़ मैं ने अपनी ज़ौजा को वोह दीनार दिखाए और सारा क़िस्सा सुनाया। वोह बहुत खुश हुई, और इस ग़ैबी इमदाद पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान की। फिर हम ने काश्त के लिये कुछ ज़मीन ख़रीद ली ताकि इस से ह़ासिल शुदा आमदनी के ज़रीए़ हमारे अख़राजात पूरे होते रहें। इस त़रह़ कुछ ही अ़र्से बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमारी तंगदस्ती व मुफ़्लिसी दूर फ़रमा दी और अब हम بفضله تعالى ख़ुशह़ाल ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को हमारी त़रफ़ से अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए।" (آمین بجاہ النبی الامین ﷺ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

हिकायत नम्बर : 299 مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ कहने का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन ज़य्यात رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है कि "एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और कहा : "हुज़ूर ! आज सुब्ह़ हमारे हां बच्चे की विलादत हुई, मैं सब से पहले आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास येह ख़बर ले कर आया हूं ताकि आप की बरकत से हमारे घर में ख़ैर नाज़िल हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़

कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे। यहां बैठ जाओ और सो मरतबा येह अल्फ़ाज़ कहो : مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो चाहा वोही हुवा।" उस ने सो मरतबा येह अल्फ़ाज़ दोहराए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "दोबारा येही अल्फ़ाज़ कहो।" उस ने सो मरतबा फिर वोही अल्फ़ाज़ दोहराए। आप ने फ़रमाया : "फिर वोही अल्फ़ाज़ दोहराओ।" इस त़रह़ पांच मरतबा उस को हुक्म दिया। चुनान्चे, उस ने पांच सो मरतबा वोह अल्फ़ाज़ दोहराए। इतने में वज़ीर की वालिदा उम्मे जा'फ़र का ख़ादिम एक ख़त़ और थैली ले कर ह़ाज़िर हुवा और कहा : "ऐ मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى उम्मे जा'फ़र आप को सलाम कहती है, उस ने येह थैली आप की ख़िदमत में भिजवाई है और कहा है कि ग़ुर्बा व मसाकीन में येह रक़म तक़्सीम फ़रमा दें।"

येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क़ासिद से फ़रमाया : "रक़म की थैली इस शख़्स को दे दो, इस के हां बच्चे की विलादत हुई है।" क़ासिद ने कहा : "येह पांच सो (500) दिरहम हैं, क्या सब इसे दे दूं ?" फ़रमाया : "हां ! सारी रक़म इसे दे दो।" इस ने पांच सो मरतबा مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ कहा था।" फिर उस शख़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : "येह पांच सो दिरहम तुम्हें मुबारक हों, अगर इस से ज़ियादा मरतबा कहते तो हम भी इतनी ही मिक़्दार मज़ीद बढ़ा देते। जाओ ! येह रक़म अपने अहलो इयाल पर ख़र्च करो।"

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! औलियाए किराम के बताए हुवे अवरादो वज़ाइफ़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिफ़ाती अस्मा की भी बहुत ज़ियादा बरकात हैं। इन का विर्द करने से जहां नेकियों का बेश बहा ख़ज़ाना मिलता है वहीं दुन्यवी मसाइल भी ह़ल होते हैं। बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत अबू बिलाल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी के लिये मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के अ़ज़ीम जज़्बे के तह़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बा'ज़ सिफ़ाती नामों की बरकतों पर मुश्तमिल "**चालीस (40) रूह़ानी इलाज**" नामी रिसाला मुरत्तब फ़रमाया है। जिसे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** ने शाएअ़ किया है। इस रिसाले में हमारे मसाइल का रूह़ानी इलाज बताया गया है। चन्द रूह़ानी इलाज दर्जे ज़ैल हैं : "(1)... يَا حَكِيْمُ : जो कोई रोज़ाना पांचो नमाज़ों के बा'द अस्सी (80) बार पढ़े किसी का मोह़ताज न हो। (2)... يَا قَابِضُ : जो कोई हर रोज़ तीस (30) बार पढ़े वोह दुश्मन पर फ़त्ह़ पाए। (3)... يَا مُحْيِى : सात बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लीजिये, गैस हो या पेट या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाए हो जाने का ख़ौफ़ हो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा होगा और (4)... يَا مُمِيْتُ : सात बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जादू असर नहीं करेगा।)

हिकायत नम्बर : 300 मुफ़्लिसी व तंगदस्ती दूर करने का वज़ीफ़ा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने शीरवयह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्कूल है कि "एक दिन मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللهِ القَوِی की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर था, इतने में एक परेशान ह़ाल, तंगदस्त, ग़रीब शख़्स आया और अपनी मुफ़्लिसी की शिकायत की। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे अपनी हिफ़्ज़ो अमान में रखे, अपने अहलो इयाल की त़रफ़ लौट जा और येह अल्फ़ाज़ बार बार पढ़ : "مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो चाहा वोही हुवा) مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ , مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने शीरवयह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि फिर वोह शख़्स चला गया। जब एक पुल के क़रीब पहुंचा तो एक सुवार बहुत तेज़ रफ़्तारी से आता दिखाई दिया। उस ने क़रीब आ कर कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! ठहर जाओ।" तो वोह मोह़ताज व इयाल दार शख़्स ठहर गया, सुवार ने उसे एक थैली दी और चला गया। ग़रीब शख़्स ने अपने रफ़ीक़ से कहा : "देखो ! इस थैली में क्या है ?" जब थैली खोली तो दीनारों से भरी हुई थी, । वोह बहुत खुश हुवा और अपने रफ़ीक़ से कहा : "आओ, हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللهِ القَوِی की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ सुनाते हैं।" चुनान्चे, वोह दोनों हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللهِ القَوِی की बारगाह में पहुंचे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस शख़्स को देखते ही फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! जब तेरी ह़ाजत पूरी हो गई तो वापस आने की क्या ज़रूरत थी ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे, अहलो इयाल की त़रफ़ येह कहते हुवे लौट जाओ : "مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ, مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ, مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! इस हिकायत से हमें दर्स मिला कि जब कभी कोई दीनी या दुन्यवी परेशानी आए तो बुज़ुर्गों की बारगाह में हाज़िर हो कर दुआ़ करवानी चाहिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन नेक हस्तियों के सदक़े हमारी मुसीबतें दूर होंगी, खुशहाली और सुकून की दौलत मयस्सर होगी। येह भी मा'लूम हुवा कि परेशान ह़ालों की मदद करना और उन की परेशानियां दूर करना नेक लोगों का हमेशा से त़रीक़ा रहा है। हर मुसलमान को चाहिये कि जितना हो सके अपने मुसलमान भाइयों, पड़ोसियों और रिश्तेदारों की ख़ैर ख़्वाही करे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में येह सोच दी जाती है कि जहां तक हो सके अपने मुसलमान भाइयों की परेशानियां दूर करनी चाइये। "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़**" के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करते रहते हैं। आप भी इस मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर दारैन की सआ़दतें ह़ासिल करें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर मुसलमान को दीनो दुन्या की भलाइयां अ़त़ा फ़रमाए। हम सब को एक दूसरे की ख़ैर ख़्वाही की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 301

दुआ़ की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान रूमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है, फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़लील सय्याद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد को येह कहते हुवे सुना : "एक मरतबा मेरा बेटा शहर से बाहर खेतों की त़रफ़ गया और गुम हो गया, ख़ूब ढूंडा लेकिन कहीं न मिला, बेटे की जुदाई पर उस की वालिदा ग़म से निढ़ाल हो गई । मैं हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मह़फ़ूज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरा बेटा ला पता हो गया है । उस की वालिदा बेटे की जुदाई में ग़म से हलकान हुई जा रही है ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अब तुम क्या चाहते हो ?" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! दुआ़ फ़रमाइयें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे बेटे को हम से मिलवा दे । येह सुन कर वलिय्ये कामिल, मक़्बूले बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने दुआ़ के लिये हाथ उठाए और इस त़रह़ इल्तिजा की :

"ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ बेशक तमाम आस्मान तेरे हैं, ज़मीन तेरी है और जो कुछ भी इन के दरमियान है सब का मालिको ख़ालिक़ तू ही है । मेरे मालिक ! इन का बच्चा इन्हें लौटा दे ।"

हज़रते सय्यिदुना ख़लील सय्याद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد कहते हैं : "फिर मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इजाज़त से शहर के दरवाज़े पर आया तो अपने बेटे को वहां मौजूद पाया उस का सांस फूल रहा था । मैं ने जब अपने बेटे को देखा तो फ़र्ते मह़ब्बत से पुकारा : "ऐ मुह़म्मद ! ऐ मेरे बेटे !" मेरी आवाज़ सुन कर वोह मेरी त़रफ़ लपका । मैं ने उसे सीने से लगा कर पूछा : "मेरे लख़्ते जिगर ! तुम कहां थे ?" कहा : "अब्बा जान ! मैं गन्दुम के खेतों में मारा मारा फिर रहा था कि अचानक यहां पहुंच गया ।" मैं अपने बच्चे को ले कर ख़ुशी ख़ुशी घर की त़रफ़ चल दिया । येह सब हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की दुआ़ की बरकत थी कि मुझे मेरा बेटा मिल गया ।"

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمين بجاه النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आपने कि नेक लोगों की दुआ़ओं से मुसीबतें कैसे टलती और ग़म दूर होते हैं । **अल्लाह** करीम عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर हर आन करम की बारिश बरसा रहा है जो चाहे इस बाराने रह़मत में नहा ले । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने औलियाए किराम के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । और इन की बरकत से हमारे मसाइब व आलाम दूर फ़रमाए । آمين بجاه النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

दुआ़ए वली में येह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

हिकायत नम्बर : 302 इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की निगाहे बसीरत

करोड़ों ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेशवा, सिराजुल उम्मा, काशिफ़ुल ग़ुम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ या'क़ूब बिन इब्राहीम बिन ह़बीब علیہ رحمۃ اللہ الحبیب अपने बचपन का वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "अभी मैं छोटा सा था कि मेरे सर से बाप का साया उठ गया। घरेलू ह़ालात साज़गार न थे। मेरी वालिदा ने मुझे एक धोबी के पास भेज दिया ताकि वहां काम करूं और जो उजरत मिले उस से घर का ख़र्चा चलता रहे। मैं वहां जाता और काम करता। मैं एक मरतबा इ़ल्मो अ़मल के रोशन चराग़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन षाबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ह़ल्क़ए दर्स में बैठ गया। मुझे इन की बातें बहुत पसन्द आईं। चुनान्चे, मैं ने धोबी के पास जाना छोड़ दिया और उस ह़ल्क़ए दर्स में शरीक होने लगा। मेरी वालिदा को मा'लूम हुवा तो मुझे वहां से ले गई और धोबी के पास छोड़ दिया। मैं छुप छुप कर इमाम साह़िब की बारगाह में ह़ाज़िर होता जैसे ही मेरी वालिदा को मा'लूम होता मुझे वहां से उठा कर धोबी के पास ले जाती। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم मेरा शौक़े इ़ल्मी देख कर मेरी त़रफ़ ख़ास तवज्जोह फ़रमाते।

जब मुआ़मला बढ़ा तो एक दिन मेरी वालिदा उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के पास आई और कहा : "मेरे इस बच्चे को आप ने बिगाड़ दिया है। येह बच्चा यतीम है। कोई ऐसा नहीं जो इस की परवरिश करे। मैं सारा दिन सूत कातती हूं जो उजरत मिलती है उस से इस की परवरिश करती हूं। इस उम्मीद पर कि येह बड़ा हो जाए और कुछ कमा कर लाए। इसी लिये मैं ने इसे धोबी के पास भेजा था कि इस त़रह़ कुछ न कुछ रक़म मिल जाया करेगी और हमारा गुज़ारा होता रहेगा। अब येह सब कुछ छोड़ कर आप के पास आ बैठा है।"

मेरी वालिदा की येह बातें सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ऐ ख़ुशबख़्त ! अपने इस बच्चे को इ़ल्म की दौलत ह़ासिल करने दे, वोह दिन दूर नहीं कि येह बादामों और देसी घी का ह़ल्वा और उ़म्दा फ़ालूदा खाएगा।" येह सुन कर मेरी वालिदा बहुत नाराज़ हुई और कहा : "लगता है बुढ़ापे की वजह से आप का दिमाग़ चल गया है, हम जैसे ग़रीब लोग बादामों और देसी घी का ह़ल्वा कैसे खा सकते हैं ?" येह कह कर मेरी वालिदा घर चली आई। मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की बारगाह में ह़ाज़िर रह कर इ़ल्मे दीन सीखता रहा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुझ पर भरपूर तवज्जोह फ़रमाते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की बरकत से मुझे इ़ल्मो अ़मल की बे इन्तिहा दौलत नसीब हुई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे रिफ़्अ़त व बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाई। मेरे मोह़सिन व मुरब्बी उस्ताज़े मोह़तरम दुन्या से पर्दा फ़रमा चुके थे। फिर वोह वक़्त भी आया जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने ओ़हदए क़ज़ा मेरे सिपुर्द कर दिया।

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد अकषर मेरी दा'वत करते और अपने साथ खाना खिलाते। एक मरतबा ख़लीफ़ा ने पुर तकल्लुफ़ दा'वत का एहतिमाम किया, अन्वाओ़ अक़्साम के खाने चुने गए। ख़लीफ़ा ने बादामों और देसी घी का ह़ल्वा और उ़म्दा फ़ालूदा मेरी त़रफ़ बढ़ाते हुवे कहा : "ऐ इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ येह ह़ल्वा खाइये, रोज़ रोज़ ऐसा ह़ल्वा तय्यार करवाना हमारे लिये आसान नहीं।" येह सुन कर मैं हंसने लगा। पूछा : "आप हंस क्यूं रहे हैं?" मैं ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़लीफ़ा को सलामत रखे, मेरे उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बरसों पहले मेरी वालिदा से फ़रमाया था कि तुम्हारा येह बेटा बादामों और देसी घी का ह़ल्वा और फ़ालूदा खाएगा आज मेरे उस्ताज़े मोह़तरम का फ़रमान पूरा हो गया।" फिर मैं ने अपने बचपन का सारा वाक़िआ ख़लीफ़ा को सुनाया तो वोह बहुत मुतअ़ज्जिब हुवे और फ़रमाया : "बेशक इ़ल्म ज़रूर फ़ाइदा देता और दीनो दुन्या में बुलन्दी दिलवाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर अपनी करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए, **जिस चीज़ को उन के सर की आंख न देख सकती उसे अपनी अ़क़्ल की आंख से देख लिया करते थे।**"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत में हमारे लिये बे शुमार मदनी फूल हैं। इ़ल्मे दीन, दुन्या व आख़िरत में रिफ़्अ़त व सुर्ख़रूई का बाइ़ष है। बड़े बड़े दुन्यादारों को वोह मक़ाम व मर्तबा नहीं मिलता जो दीन के शैदाइयों को ब आसानी ह़ासिल हो जाता है। येह भी मा'लूम हुवा कि औलियाए किराम निगाहे फ़िरासत से आने वाले वाक़िआत को देख लेते हैं। उस्ताज़े कामिल की तवज्जोहे ख़ास इन्सान को क्या से क्या बना देती है। हमें चाहिये कि इ़ल्मे दीन ख़ुद भी सीखें और अपनी अवलाद को भी सिखाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम इ़ल्मो अ़मल की दौलत लोगों को मुन्तक़िल करने के लिये कई जामिआ़त व मदारिस ब नाम **जामिअ़तुल मदीना** और **मद्रसतुल मदीना** क़ाइम हैं। यहां न सिर्फ़ इ़ल्म की ला ज़वाल दौलत तक़्सीम होती है बल्कि अ़मल का जज़्बा भी दिया जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हज़ारहा त़लबा व त़ालिबात इ़ल्मे दीन की दौलत से मुनव्वर हो रहे हैं और सेंकड़ों त़लबा ज़ेवरे इ़ल्मो अ़मल से आरास्ता हो कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मसरूफ़े अ़मल हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को दिन दुगनी रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम ! दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह मेरी झोली भर दे। (आमीन)

हि़कायत नम्बर : 303 ख़ुश बख़्तों का हि़स्सा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुस्समद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवरदगार عَزَّوَجَلَّ तू ने मुझे और मेरे अहलो इ़याल को भूका रखा, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ तू ने मुझे और मेरे अहलो इ़याल को कपड़ों के बिग़ैर रखा, तीन दिन हमें इसी ह़ालत में गुज़र गए, मैं ने और मेरे घर वालों ने तीन दिन से कुछ नहीं खाया, मुसलसल तीन रातें हमारे घर चराग़ न जला, आख़िर मेरा कौन सा अ़मल तेरी बारगाह में मक़्बूल हुवा है जिस की वजह से हमारे साथ ऐसा मुबारक मुआ़मला हो रहा है जो तेरे औलिया के साथ होता है ? ऐसी सआ़दत तो तेरे पसन्दीदा व बर्गुज़ीदा बन्दों को नसीब होती है, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ अगर चौथा दिन भी इसी ह़ालत में गुज़रा तो मैं समझूंगा कि तेरी बारगाह में मेरा भी कुछ मक़ाम व मर्तबा है ।"

रावी कहते हैं : "जब सुब्ह़ हुई और चौथा दिन शुरूअ़ हुवा तो किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : "कौन है ?" जवाब मिला : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ासिद हूं, उन्हों ने आप को दीनारों की येह थैली और एक रुक़्आ़ भिजवाया है ।" जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़त़ पढ़ा तो उस में लिखा था । "इस साल मैं ह़ज के लिये नहीं आ सका, मैं आप को इतने इतने दीनार भिजवा रहा हूं, क़बूल फ़रमा लें ।" وَالسَّلَام

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक

ख़त़ पढ़ कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़ारो क़ित़ार रोने लगे और कहा : "मैं तो पहले ही जानता था कि मैं इतना ख़ुश क़िस्मत नहीं कि मुझे भी वोही ने'मत मिले जो औलियाए किराम को मिला करती है । हम इस क़ाबिल कहां कि हमें फ़क़्र की ला ज़वाल दौलत ह़ासिल हो ।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मसाइब व तकालीफ़ का डट कर मुक़ाबला करना चाहिये और राज़ी ब रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ रहना चाहिये । और येह सआ़दत अहले ह़क़ का हि़स्सा है । उन्हें चाहे कैसी ही मुसीबत पहुंचती, कैसी ही परेशानी लाह़िक़ होती वोह हरगिज़ हरगिज़ नाशुक्री और बे सब्री का मुज़ाहरा न करते बल्कि इस ह़ालत को भी बहुत बड़ी सआ़दत समझते ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में हर त़रह़ की आज़्माइश पर सब्र करने की तरग़ीब दिलाई जाती है । आप भी दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत संवर जाएगी ।)

हिकायत नम्बर : 304 आ़रिज़ी ऐ़शो इ़शरत

मुह़म्मद बिन जा'फ़र बिन यह़्या बिन ख़ालिद बिन बरमक से मन्क़ूल है कि "जब मेरा दादा यह़्या बिन ख़ालिद बिन बरमक क़ैद में था तो मेरे वालिद ने उस से पूछा : "अब्बा जान ! हमें हुकूमत व शानो शौकत मिली, हमारे अह़कामात पर अ़मल किया जाता रहा, हमारी बड़ी ठाठ बाठ थी, अब ज़माने ने हमें क़ैद कर दिया और ऊनी कपड़े पहनने तक नौबत आ गई, इस की क्या वजह है ?" मेरे दादा ने कहा : "ऐ मेरे बेटे ! मज़्लूम की पुकार रात के अन्धेरे में बुलन्द होती रही और हम इस से ग़ाफ़िल रहे, लेकिन अ़लीमो ख़बीर परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस से ग़ाफ़िल नहीं, फिर चन्द अश्आ़र पढ़े। जिन का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है : "कितनी ही ऐसी क़ौमें हैं कि उन के सुब्ह़ो शाम ने'मतों और आसाइशों में गुज़रे और ज़माना उन पर ऐ़शो इ़शरत की ख़ूब बारिश बरसाता रहा, ज़माना उन से ख़ामोश रहा फिर जब बोला तो उन्हें ख़ून के आंसू रुलाने लगा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे, ज़ालिमों से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और मज़्लूमों का साथ देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! इन्सान को हर दम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डरते रहना चाहिये। गुनाहों में हर वक़्त मुस्तग़रक़ रहने के बा वुजूद अगर हमें ढील दी जाती रहे तो इस ढील से खुश नहीं होना चाहिये, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पकड़ से हर दम लर्ज़ां व तरसां रहना चाहिये। बेशक उस की पकड़ बड़ी सख़्त है। त़ाक़त व दौलत के नशे में आ कर किसी ग़रीब व मज़्लूम की बद दुआ़ नहीं लेनी चाहिये, किसी बे गुनाह पर ज़ुल्मो सितम के तीर चलाने वाला ज़ालिम व सख़्त दिल शख़्स जब अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिरिफ़्तार होता है तो उस की सब अकड़ निकल जाती है और मज़्लूम की दुआ़ बहुत जल्द मक़्बूल होती है। हर मुसलमान को चाहिये कि ज़ुल्मो सितम और तमाम बुरे अफ़्आ़ल से इजतिनाब करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से हर दम डरता रहे कि न जाने हमारे बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर क्या है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी दाइमी रिज़ा अ़त़ा फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 305 जा ! हम ने तुझे बख़्श दिया

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सलम ख़व्वास عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق से मन्क़ूल है कि मैं ने क़ाज़ी यह़्या बिन अकषम को ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी बारगाह में खड़ा किया और

फ़रमाया : "ऐ बद अ़मल बुढ्ढे ! अगर तेरे बाल सफ़ेद न होते तो मैं तुझे ज़रूर आग में जलाता।" येह फ़रमान सुन कर मेरी कैफ़िय्यत वोह हो गई जो एक मुजरिम की अपने आक़ा के सामने होती हैं, मैं बुरी त़रह़ कांपने लगा। जब इफ़ाक़ा हुवा तो दोबारा इरशाद हुवा : "ऐ बद अ़मल बुढ्ढे ! तू सफ़ेद रीश न होता तो मैं ज़रूर तुझे आग में जलाता।" मुझ पर फिर हैबत त़ारी हो गई और मैं बुरी त़रह़ कांपने लगा। जब ह़ालत कुछ संभली तो तीसरी मरतबा फिर इसी त़रह़ फ़रमाया। मैं ने बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे ख़ालिक़ो मालिक ! ऐ रह़ीमो करीम ! अ़फ़्वो दरगुज़र फ़रमाने वाले ! मैं ने अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हुमाम से, उन्हों ने मा'मुर बिन राशिद से, उन्हों ने इब्ने शिहाब ज़ोहरी से, उन्हों ने अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से और उन्हों ने तेरे नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़तशम, शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से और उन्हों ने जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام से तेरा येह फ़रमान सुना : "मेरा वोह बन्दा जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आए, उसे जहन्नम का अ़ज़ाब देने से मुझे ह़या आती है।" तो मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, मा'मुर, ज़ोहरी और अनस सब ने सच कहा, मेरे नबी ने सच कहा, जिब्रील ने सच कहा और मेरा क़ौल सच्चा है, ऐ फ़िरिश्तो ! इसे जन्नत में ले जाओ।" (اللآلئ المصنوعة فی الأحادیث الموضوعة، کتاب المبتداء، ج۱، ص۱۲۵)

एक रिवायत में इस त़रह़ है, क़ाज़ी यह़्या बिन अकषम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ बुढ्ढे ! तेरे लिये बुराई है।" अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे नबिय्ये बरह़क़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तू इस बात से ह़या करता है कि अस्सी (80) साल वाले बुढ्ढों को अ़ज़ाब दे। (الجامع الصغیر، الحدیث ۱۸۹۱، ص۱۱۶، مفهومًا) ऐ मेरे ख़ालिक़ ! मैं भी अस्सी साल दुन्या में गुज़ार कर आया हूं, मुझ पर भी करम फ़रमा दे।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "मेरे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ने सच फ़रमाया है, जा ! हम ने तुझे बख़्श दिया।"

हर ख़त़ा तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की — या इलाही मग़फ़िरत कर बे कसो मजबूर की

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 306 — दीन के लिये बेहतरीन सहारा

क़ाज़ी अबू उ़मर मुह़म्मद बिन यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है, एक मरतबा मेरे वालिदे मोह़तरम लोगों के फ़ैसले कर रहे थे। इतने में ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह का ख़ास गुलाम फ़ैसला करवाने के लिये फ़रीक़े मुख़ालिफ़ के साथ कमरए अ़दालत में दाख़िल हुवा। उस का किसी मुआ़मले में एक शख़्स के साथ झगड़ा हो गया था वोह अपने मुख़ालिफ़ फ़रीक़ के साथ खड़ा होने

के बजाए ख़ास लोगों की निशस्त पर जा बैठा। हाजिब (या'नी दरबान) ने उस से कहा : "अ़दालत के उसूलों में से है कि फ़रीक़ैन एक साथ खड़े हों लिहाज़ा आप भी अपने मद्दे मुक़ाबिल के पास उसी जगह चले जाएं जहां वोह खड़ा है।"

हाजिब की बात का उस ने कोई जवाब न दिया और वहीं बैठा रहा, ख़लीफ़ा का ख़ास गुलाम हो कर फ़ैसले के लिये एक आ़म आदमी के साथ खड़ा होना उस के नफ़्स ने गवारा न किया। उस की इस ह़रकत पर मेरे वालिद को बहुत गुस्सा आया, उन्हों ने पुकार कर कहा : "तेरी येह जुरअत कैसे हुई, तुझे तेरे फ़रीक़े मुख़ालिफ़ के साथ खड़े होने को कहा जा रहा है और तू इन्कार कर रहा है? ऐ ख़ादिम! कागज़ लाओ ताकि मैं इस शख़्स को अ़म्र बिन अबू उ़मर के हाथों बेच दूं और उसे लिख दूं कि इस की क़ीमत ख़लीफ़ा को भिजवा दो। फिर हाजिब को हुक्म दिया कि इस का हाथ पकड़ कर उठाओ और दोनों फ़रीक़ों को बराबर खड़ा कर दो।" हाजिब ने उसे ज़बरदस्ती उठाया और फ़रीक़े षानी के साथ खड़ा कर दिया। जब मजलिसे क़ज़ा बरख़ास्त हुई तो वोह गुलाम ख़लीफ़ा के पास जा कर रोने लगा। ख़लीफ़ा ने वजह पूछी तो कहा : "हुज़ूर! क़ाज़ी साहिब ने आज मेरी बहुत बे इ़ज़्ज़ती की और मुझे एक घटया शख़्स के साथ खड़ा कर दिया हालांकि मैं आप का ख़ास ख़ादिम हूं, मेरी एक आ़म आदमी से क्या बराबरी?

ख़लीफ़ा ने ग़ज़बनाक हो कर कहा : "अगर क़ाज़ी साहिब तुझे बेच देते तो मैं इस बैअ़ को नाफ़िज़ रखता और कभी भी तुझे अपने पास न बुलाता। मेरे हां तेरा ख़ास मक़ाम होना अ़द्लो इन्साफ़ के लिये आड़ नहीं बन सकता। **बेशक अ़द्लो इन्साफ़ सुल्तानों के लिये मज़बूत सुतून और दीन के लिये बेहतरीन सहारा है,** क़ाज़ी साहिब ने जो किया दुरुस्त किया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर मुसलमान को ह़क़गोई और ह़क़ का साथ देने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 307 इस्मे आ'ज़म के मुतमन्नी का इम्तिह़ान

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन ह़सन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मुझे बताया गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى **"इस्मे आ'ज़म"** जानते हैं। चुनान्चे, मैं मिस्र की त़रफ़ रवाना हुवा। सफ़र की सऊ़बतें बरदाश्त करता हुवा बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। मेरी दाढ़ी काफ़ी बढ़ी हुई थी। एक बड़ा सा पियाला मेरे पास था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक नज़र मेरी त़रफ़ देखा फिर दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए फिर मेरी त़रफ़ बिल्कुल इल्तिफ़ात न फ़रमाया। मैं भी आस लगाए बैठा रहा कि कभी न कभी तो नज़रे करम ज़रूर फ़रमाएंगे, इसी आस में काफ़ी दिन गुज़र गए।

एक दिन एक तेज़ त़राज़ चर्ब ज़बान शख़्स जो इ़ल्मे कलाम में माहिर था आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास आया और मुनाज़रा करने लगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दलाइल से गुफ़्तगू की लेकिन वोह अपनी चर्ब ज़बानी की वजह से क़ाबू में न आया। जब मैं ने येह सूरते ह़ाल देखी तो उस से मुनाज़रा किया और उसे ला जवाब कर दिया, वोह शिकस्त खा कर वहां से चला गया। अब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی मेरा मक़ाम जान चुके थे, आप मेरे पास आए, मुझे गले से लगाया और मेरे सामने बैठ गए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़ईफ़ुल उ़म्र जब कि मैं आ़लमे शबाब में था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कमाले इन्किसारी का मुज़ाहरा किया और मा'ज़िरत करते हुवे फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! मैं तुझे पहचान न सका मैं अपने रविय्ये पर मा'ज़िरत ख़्वाह हूं।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! कोई बात नहीं, मैं आप की ख़िदमत करना चाहता हूं।"

चुनान्चे, एक साल तक मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत करता रहा, एक दिन मौक़अ़ पा कर मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं एक साल मुसलसल आप की ख़िदमत करता रहा हूं, अब मेरा ह़क़ आप पर लाज़िम हो गया है, मुझे बताया गया है कि आप "**इस्मे आ'ज़म**" जानते हैं। एक साल के अ़र्से में आप मुझे अच्छी त़रह़ जान चुके होंगे, हुज़ूर ! मुझे यक़ीन है कि मेरी मिष्ल आप किसी ऐसे को न पाएंगे जिसे इस्मे आ'ज़म सिखाया जाए, मैं चाहता हूं कि आप मुझे "**इस्मे आ'ज़म**" की ता'लीम दे दें।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया लेकिन मुझे ऐसा मह़सूस हुवा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझे "**इस्मे आ'ज़म**" सिखाने के लिये राज़ी हो तो गए हैं।

मैं छे माह तक मज़ीद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत करता रहा, एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक थाल और रूमाल में बंधी हुई कोई चीज़ दे कर फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! शहरे फ़ुस्त़ात़ में रहने वाले हमारे फ़ुलां दोस्त को तुम जानते हो ?" मैं ने कहा "जी हां।" फ़रमाया : "हमारी ख़्वाहिश है कि तुम येह थाल उस तक पहुंचा दो, मैं ने वोह थाल उठाया और फ़ुस्त़ात़ की त़रफ़ चल पड़ा, मैं सोच रहा था कि ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی जैसा शख़्स फ़ुलां शख़्स को हदिय्या भेज रहा है, इस थाल में ज़रूर कोई ख़ास चीज़ होगी, देखूं तो सही कि आख़िर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने दोस्त को क्या तोह़फ़ा भिजवाया है। मैं बे सब्रा हो गया, एक पुल के क़रीब पहुंच कर थाल नीचे रखा उस में न जाने क्या चीज़ थी जिसे रूमाल से बांध दिया गया था, मैं ने रूमाल खोल कर ऊपर उठाया तो एक चूहा निकल कर भागा येह देख कर मुझे बहुत ग़ुस्सा आया और दिल में कहने लगा : "ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی जैसे बन्दे ने मुझ जैसे शख़्स के हाथों अपने दोस्त को तोह़फ़े में चूहा भिजवा कर मेरे साथ मज़ाक़ किया है।" चुनान्चे, इसी ग़ुस्से की ह़ालत में, मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास पहुंचा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मेरी ह़ालत देख कर फ़रमाया : "ऐ नादान ! हम ने तुझे आज़माया और एक चूहा तेरे पास अमानत रखवाया लेकिन तू चूहे के मुआ़मले में भी ख़यानत कर बैठा, अगर मैं ने "**इस्मे आ'ज़म**" अमानतन तेरे पास रख दिया तो तेरा क्या ह़ाल होगा, जा मुझ से दूर हो जा। तू इस क़ाबिल नहीं कि तुझे येह दौलत दी जाए।"

हिकायत नम्बर : 308

दो अ़ज़ीम मुहद्दिष

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्ज़िर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मश्हूर मुह़द्दिष ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पड़ोस में रहा करते थे। उन का बयान है कि "एक मरतबा ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने दोनों बेटों अमीन और मामून को साथ ले कर ह़ज के लिये रवाना हुवे, जब "**कूफ़ा**" पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा : "कूफ़ा के तमाम मुह़द्दिषीन (مُحَدِّثِین) को पैग़ाम भिजवाएं कि वोह हमारे पास आ कर ह़दीष सुनाएं। ख़लीफ़ा का पैग़ाम सुन कर सिवाए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने यूनुस के तमाम मुह़द्दिषीन ख़लीफ़ा के पास पहुंच गए और ह़दीषे बयान कीं। अमीन और मामून को जब मा'लूम हुवा कि दो मुह़द्दिष ख़लीफ़ा के पास नहीं आए तो उन्हों ने ख़ुद उन की बारगाह में ह़ाज़िर होने का इरादा किया। पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास पहुंच कर ह़दीषे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन्हें **100** ह़दीषें सुनाईं। ह़दीष सुनने के बा'द मामून ने कहा : "चचा जान ! अगर आप इजाज़त अ़ता फ़रमाएं तो येह सो ह़दीषें आप को सुनाएं।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इजाज़त दी तो मामून ने जैसे सुनी थीं ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ इसी त़रह़ सुना दीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो ख़ुद बहुत ज़ियादा मज़बूत ह़ाफ़िज़ा के मालिक थे। मामूनुर्रशीद की ज़हानत व फ़त़ानत देख कर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवे। मामून ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा : "चचा जान ! आप की मस्जिद के बराबर में दो घर हैं अगर आप इजाज़त अ़ता फ़रमाएं तो उन्हें ख़रीद कर आप की मस्जिद को वसीअ़ कर दिया जाए।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "जिस ने मुझ से पहले वालों की किफ़ायत की वोह मेरी भी किफ़ायत करेगा, मुझे उन घरों की ख़रीदारी की रग़बत नहीं।" मामूनुर्रशीद ने देखा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जिस्म पर फुन्सी निकली हुई है तो कहा : "चचा जान ! हमारे साथ माहिर त़बीब और बेहतरीन दवाएं हैं, अगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इजाज़त दें तो हम किसी माहिर त़बीब को बुला लाएं जो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इलाज करे ?" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्कार करते हुवे फ़रमाया : "पहले भी इस की मिष्ल ज़ख़्म हुवा था, जो ख़ुद ब ख़ुद ठीक हो गया, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह भी ठीक हो जाएगा।" मामून ने बहुत सा माल आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देना चाहा लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लेने से इन्कार कर दिया और एक दिरहम भी क़बूल न किया।

फिर अमीन व मामून ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने यूनुस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अह़ादीष सुनीं। जब वापस होने लगे तो ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने यूनुस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को दस हज़ार दिरहम पेश किये जाएं।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्कार कर दिया, मामून ने समझा कि शायद दस हज़ार दिरहम कम हैं इस लिये आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन्कार फ़रमा रहे हैं। चुनान्चे, उस ने बीस हज़ार दिरहम पेश किये, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लेने से इन्कार

कर दिया और कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ह़दीषे नबवी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनाने के इ़वज़ पानी के चन्द घूंट और रोटी का टुकड़ा भी क़बूल नहीं करूंगा, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम इस मस्जिद को छत तक सोने से भर दो तब भी मैं ह़दीष के इ़वज़ येह दौलत क़बूल नहीं करूंगा।" येह सुन कर अमीन व मामून उस अ़ज़ीम मुह़द्दिष के पास से वापस चले आए, उस मर्दे क़लन्दर ने उन से एक दिरहम भी नहीं लिया।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

(سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे बुज़ुर्गाने दीन कैसे खुद्दार और मुतवक्किल हुवा करते थे। इन की नज़रों में दुन्यवी दौलत व शोहरत की कुछ भी अहम्मिय्यत न थी। वोह किसी भी दुन्यादार की दुन्यवी आसाइशों और ने'मतों को देख कर मरऊ़ब न होते बल्कि बड़े बड़े उमरा व वुज़रा पर इन बुज़ुर्ग हस्तियों का रो'ब व दबदबा होता। सच है कि जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता है हर चीज़ उस से डरती है, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करता है उसे किसी की मोह़ताजी नहीं होती। हमारे अस्लाफ़ अपने दीनी मन्सब को कभी भी अपने दुन्यवी फ़ाइदे के लिये इस्ति'माल न करते। उन्हें अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ पर यक़ीने कामिल था।)

हिकायत नम्बर : 309 जान की क़ुरबानी देने वाली मोमिना

ह़ज़रते सय्यिदुना सदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى से मन्क़ूल है कि "एक बादशाह बड़ी ऐ़शो इ़शरत से शाहाना ज़िन्दगी गुज़ार रहा था। उस का एक ही बेटा था जिस का नाम "ख़िज़्र" था। वोह बहुत मुत्तक़ी व परहेज़गार था। एक दिन बादशाह के पास उस का भाई इल्यास गया और कहा : "भाई जान ! अब आप की उ़म्र बहुत हो गई है, आप का बेटा ख़िज़्र हुकूमत में कोई दिलचस्पी नहीं रखता, आप ख़िज़्र की शादी करा दें ताकि उस की अवलाद में से कोई आप का जा नशीन बन कर तख़्ते शाही संभाल ले और इस त़रह़ हुकूमत हमारे ही ख़ानदान में रहे।" भाई की बात बादशाह को पसन्द आई उस ने अपने बेटे को बुला कर कहा : "बेटा ! तुम शादी कर लो।" शहज़ादे ने इन्कार किया तो बादशाह ने कहा : "तुम्हें शादी ज़रूर करना पड़ेगी। सआ़दत मन्द बेटे ने जब बाप का इस्रार देखा तो शादी के लिये तय्यार हो गया। बादशाह ने एक दोशीज़ा से उस की शादी कर दी। शहज़ादा अपनी रफ़ीक़ए ह़यात के पास गया और कहा : "मुझे औ़रतों में कुछ रग़बत नहीं, अगर तू चाहे तो मेरे साथ रह और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत कर, तेरा नान व नफ़्क़ा शाही ख़ज़ाने से अदा किया जाएगा। लेकिन हमारे दरमियान अज़्दवाजी तअ़ल्लुक़ क़ाइम न हो सकेगा, अगर इस बात पर राज़ी है तो मेरे साथ रह और अगर चाहे तो मैं तुझे त़लाक़ दे देता हूं ?"

सआ़दत मन्द बीवी ने कहा : "मेरे सरताज ! आप से दूरी मुझे गवारा नहीं, मैं आप के साथ रह कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करूंगी।" शहज़ादे ने कहा : "अगर येही बात है तो मेरा राज़ किसी पर ज़ाहिर न करना, अगर तू मेरा राज़ छुपाएगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखेगा। अगर मेरा राज़ फ़ाश करेगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हलाकत में

मुब्तला कर देगा।" उस ने यक़ीन दहानी कराई कि मैं येह राज़ पोशीदा रखूंगी। चुनान्चे, दोनों मियां बीवी दिन रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल रहने लगे। एक साल गुज़रने के बा वुजूद उन के हां अवलाद न हुई तो बादशाह ने अपनी बहु को बुलाया और कहा : "मेरा बेटा बिल्कुल नौजवान है तुम भी जवान हो, फिर भी तुम्हारे हां अवलाद क्यूं न हुई ?" सआ़दत मन्द व वफ़ा शिआ़र बीवी ने कहा : "अवलाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से होती है, जब वोह चाहेगा अवलाद अ़ता फ़रमाएगा।" फिर बादशाह ने अपने बेटे ख़िज़्र को बुलाया और कहा : "एक साल गुज़रने के बा वुजूद तुम्हारे हां अवलाद क्यूं न हुई ?" कहा : "अवलाद हुक्मे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से होती है, जब वोह चाहेगा अ़ता फ़रमा देगा।"

फिर बादशाह से कहा गया : शायद ! येह औ़रत बांझ है इसी लिये अवलाद न हुई, आप शहज़ादे की शादी किसी ऐसी औ़रत से कराएं जो बांझ न हो और उस के हां अवलाद हो चुकी हो। बादशाह ने शहज़ादे को बुलाया और हुक्म दिया कि अपनी बीवी को त़लाक़ दे दो, शहज़ादे ने कहा : "अब्बा जान ! उसे मुझ से जुदा न करें, वोह बड़ी बा बरकत और क़ाबिले रश्क औ़रत है।" बादशाह ने कहा : "तुझे मेरी बात मानना पड़ेगी, बिल आख़िर शहज़ादे ने सरे तस्लीम ख़म करते हुवे मजबूरन त़लाक़ दे दी।" बादशाह ने शहज़ादे की शादी एक बेवा से करा दी जिस के हां पहले भी अवलाद हो चुकी थी। शहज़ादा जब अपनी नई दुल्हन के पास पहुंचा तो उस से भी वोह बात कही जो पहली बीवी से कही थी। उस ने भी शहज़ादे के साथ रह कर इ़बादत करना मन्ज़ूर कर ली, दिन रात दोनों इ़बादते इलाही में मसरूफ़ रहते, उन के दरमियान एक मरतबा भी अज़्दवाजी तअ़ल्लुक़ क़ाइम न हुवा। साल गुज़रने के बा वुजूद जब अवलाद के आषार नज़र न आए तो बादशाह ने उस औ़रत को अपने पास बुलाया और कहा : "अपने पहले ख़ावन्द से तेरे हां अवलाद हुई, अब मेरे बेटे की अवलाद तुझ से क्यूं न हुई ? ह़ालांकि मेरा बेटा ख़ूबरू नौजवान है और तू बांझ भी नहीं।" उस ने कहा : "अवलाद जभी होती है जब मियां बीवी के दरमियान अज़्दवाजी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो आप का बेटा तो हर वक़्त इ़बादत व रियाज़त में मश्ग़ूल रहता है, उस ने एक मरतबा भी वज़ीफ़ए ज़ौजिय्यत अदा नहीं किया।"

बादशाह येह सुन कर बहुत ग़ुस्से हुवा, उस ने ख़ादिम भेज कर शहज़ादे को बुलवाया, लेकिन शहज़ादा वहां से भाग गया। तीन सिपाही उस के पीछे गए तो शहज़ादा मिल गया। सिपाहियों ने बादशाह के पास ले जाना चाहा तो उस ने जाने से इन्कार कर दिया। दो सिपाही ले जाने पर ब ज़िद रहे तो तीसरे ने कहा : "शहज़ादे पर सख़्ती न करो, अगर हम इस वक़्त इसे बादशाह के पास ले गए तो हो सकता है कि बादशाह ग़ुस्से में आ कर अपने इस नेक बेटे को क़त्ल करवा दे । बेहतरी इसी में है कि शहज़ादे को इस के ह़ाल पर छोड़ दिया जाए।" दोनों सिपाही तीसरे की बात से मुत्तफ़िक़ हो गए और शहज़ादे को वहीं छोड़ कर बादशाह के पास पहुंचे। बादशाह ने शहज़ादे के मुतअ़ल्लिक़ पूछा : तो दो सिपाही कहने लगे : आ़ली जाह ! हम ने तो उसे पकड़ लिया था लेकिन हमारे रफ़ीक़ ने उसे छुड़वा दिया। बादशाह ने ग़ुस्से में आ कर तीसरे सिपाही

को क़ैद में डाल दिया। फिर बादशाह शहज़ादे के मुतअ़ल्लिक़ सोचने लगा, अचानक उस ने दोनों सिपाहियों को बुलवाया, जब वोह सामने आए तो कहा : "तुम दोनों ने मेरे बेटे को ख़ौफ़ज़दा किया इसी लिये वोह मुझ से दूर चला गया, ऐ जल्लाद ! इन्हें पकड़ कर ले जा और इन के सर क़लम कर दे।" फिर शहज़ादे की दूसरी बीवी को बुलवाया और कहा : "तू ने मेरे बेटे का राज़ फ़ाश किया, तेरी वजह से वोह मुझ से दूर चला गया अगर तू उस के राज़ को छुपाती तो आज वोह मेरी आंखों के सामने होता, ऐ जल्लाद ! इसे भी क़त्ल कर दे।" फिर बादशाह ने तीसरे सिपाही और शहज़ादे की मुत़ल्लक़ा को बुलाया और कहा : "तुम दोनों जहां चाहो जाओ, मेरी त़रफ़ से तुम आज़ाद हो।"

वोह नेक सीरत औ़रत अपने शहर के दरवाज़े के पास एक छोटी सी झोंपड़ी में रहने लगी। जंगल से लकड़ियां काट कर बेचती और अपना गुज़ारा करती। एक दिन एक ग़रीब शख़्स उस त़रफ़ आ निकला उस ने झोंपड़ी देखी तो क़रीब आया और "بِسۡمِ اللہ" शरीफ़ पढ़ने लगा, औ़रत उस की आवाज़ सुन कर बाहर आई और कहा : "ऐ मुसाफ़िर ! क्या तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुतअ़ल्लिक़ जानता है ? क्या तू उस "وَحدَہٗ لَاشَرِیک" ज़ात पर ईमान रखता है ?" उस ने कहा : "हां मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को मानता हूं, मैं शहज़ादे ख़िज़्र का दोस्त हूं।" औ़रत ने येह सुना तो कहा : "मैं ख़िज़्र की मुत़ल्लक़ा हूं।" फिर इन दोनों ने शादी कर ली, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इन्हें अवलाद की दौलत से नवाज़ा इस त़रह़ इन की ज़िन्दगी के शबो रोज़ ख़ैरिय्यत से गुज़रते रहे।

उस औ़रत को फ़िरऔ़न की बेटी ने अपनी ख़ादिमा रख लिया, एक दिन उस के सर में कंघी करते हुवे कंघी हाथ से गिर गई, तो उस नेक सीरत औ़रत की ज़बान से बे इख़्तियार سُبۡحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ की सदा बुलन्द हुई, फ़िरऔ़न की काफ़िरा बेटी ने जब येह आवाज़ सुनी तो कहा : "क्या तू ने मेरे बाप फ़िरऔ़न की ता'रीफ़ की है ?" उस मोमिना ने जवाबन कहा : "नहीं ! मैं ने तेरे बाप की ता'रीफ़ नहीं की बल्कि मैं ने तो उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान की है जो मेरा, तेरे बाप फ़िरऔ़न का और तमाम काइनात का ख़ालिक़ है, इ़बादत के लाइक़ सिर्फ़ वोही "وَحدَہٗ لَاشَرِیک" ज़ात है।" उस मोमिना की ईमान भरी गुफ़्त्गू सुन कर फ़िरऔ़न की बेटी ने कहा : "मैं तुम्हारे बारे में अपने वालिद को बताऊंगी कि तुम उसे ख़ुदा नहीं मानती।" औ़रत ने कहा : "बेशक बता दो।" फ़िरऔ़न की बेटी ने अपने बाप को बताया तो उस नेक सीरत मोमिना को अपने पास बुलाया और कहा : "हम ने सुना है कि तू हमारे इ़लावा किसी और को ख़ुदा मानती है, तेरी सलामती इसी में है कि तू इस नए मज़हब को छोड़ कर हमारी इ़बादत कर और हमें ख़ुदा मान वरना तुझे दर्दनाक सज़ा दी जाएगी।" औ़रत ने कहा : "जो चाहे कर, मैं कभी भी शिर्क की त़रफ़ न आऊंगी।" फ़िरऔ़न ने जब एक ईमान दार और नेक सीरत औ़रत की ईमान अफ़रोज़ गुफ़्त्गू सुनी तो बहुत ग़ज़ब नाक हुवा और तांबे की देग में तेल गर्म करने का हुक्म दिया। जब तेल ख़ूब खोलने लगा तो उस के बच्चे को उबलते हुवे तेल में डाल दिया, कुछ ही देर में बच्चे की हड्डियां तेल पर तैरने लगीं। ज़ालिम फ़िरऔ़न ने औ़रत से कहा : "क्या तू मुझे ख़ुदा मानती है ?" उस ने कहा : "हरगिज़ नहीं, मेरा ख़ुदा वोही है जो तमाम जहानों का ख़ालिक़ो मालिक है।"

फ़िरऔ़न ने उस का दूसरा लड़का मंगवाया और उबलती हुई देग में डाल दिया। फिर उस औ़रत को शिर्क की दा'वत दी तो उस ने साफ़ इन्कार कर दिया। फ़िरऔ़न ने उस के एक और बच्चे को तेल में डाल दिया। इसी त़रह़ उस बा हिम्मत साबिरा व शाकिरा औ़रत के तमाम बच्चों को उबलते हुवे तेल में डाल दिया लेकिन उस ने अपना ईमान न छोड़ा। ज़ालिम फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि इसे भी इस के बच्चों की त़रह़ तेल में डाल दो ! सिपाही जब उसे ले जाने लगे तो फ़िरऔ़न ने कहा : "अगर तुम्हारी कोई आरज़ू हो तो बताओ।" कहा : "हां ! मेरी एक ख़्वाहिश है अगर हो सके तो येह करना कि जब मुझे तेल की उबलती हुई देग में डाल दिया जाए और मेरा सारा गोश्त जल जाए तो उस देग को शहर के दरवाज़े पर भिजवा देना वहां मेरी एक झोंपड़ी है देग उस में रखवा कर झोंपड़ी गिरा देना ताकि हमारा घर ही हमारे लिये क़ब्रिस्तान बन जाए।" फ़िरऔ़न ने कहा : "ठीक है, तुम्हारी इस ख़्वाहिश को पूरा करना हमारे ज़िम्मे है।" फिर उस जुरअत मन्द, मोमिना को उबलते हुवे तेल में डाल दिया गया कुछ ही देर बा'द उस की हड्डियां भी तेल की सत़ह़ पर तैरने लगीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि "नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम, शाफ़ेए उमम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शबे मे'राज, मैं ने एक बेहतरीन ख़ुश्बू सूंघी तो कहा : ऐ जिब्रील (عَلَیۡہِ السَّلَام) ! येह ख़ुश्बू कैसी ? कहा : फ़िरऔ़न की बेटी की ख़ादिमा और उस के बच्चों की ख़ुश्बू है।"

(كنزالعمال، كتاب الفضائل،باب فى فضائل من ليسوا من الصحابة وذكرهم ،الحديث ٣٧٨٣٤،ج١٤،ص٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(سُبۡحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) कैसा पुख़्ता ईमान था उस मोमिना, साबिरा व शाकिरा औ़रत का कि अपनी आंखों के सामने अपने जिगर के टुकड़ों को एक एक कर के शहीद होता देखा लेकिन फिर भी उस के पाए षबात में लग़्ज़िश न आई। ख़ुद अपनी जान दे दी लेकिन ईमान की दौलत हाथ से न जाने दी। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिन्हें ईमान की क़द्र मा'लूम होती है वोह किसी भी क़ीमत पर लम्ह़ा भर के लिये भी ईमान नहीं छोड़ते, उन्हें दीनो ईमान की ख़ात़िर सर कटाने में लज़्ज़ते ईमानी मिलती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जान देना उन्हें मह़बूब होता है, दुन्या की तमाम मुसीबतें और ग़म उस वक़्त काफ़ूर हो जाएंगे जब जन्नत की ने'मतों में ग़ौत़ा दिया जाएगा।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर दुन्या में इन्सान के पास दुन्यवी ने'मतों की बहुत ज़ियादा कमी हो लेकिन ईमान की दौलत उस के सीने में हो और ईमान सलामत ले कर दुन्या से चला जाए तो वोह कामयाब है। हर मुसलमान को अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त करना बहुत ज़रूरी है। गुनाहों की नुह़ूसत से ईमान ख़त़रे में पड़ जाता है। जब भी कोई गुनाह सरज़द हो फ़ौरन सच्चे दिल से तौबा कर लेनी चाहिये। हो सके तो सोने से पहले "सलातुत्तौबा" पढ़ ली जाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे और अपनी दाइमी रिज़ा से माला माल फ़रमाए और सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सच्चा इश्क़ अ़त़ा फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हि़कायत नम्बर : 310 कफ़्न चोर का इन्किशाफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने हुबैक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिद से नक़्ल करते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد एक ऐसे नौजवान से मुलाक़ात के लिये जाते जो तने तन्हा एक जज़ीरे में रहा करता था। दस साल तक उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد से गुफ़्त्गू न की। जब कभी दिन या रात में आप उस से मिलने जाते उसे रोता गिड़ गिड़ाता हुवा पाते। एक दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से पूछा : "ऐ नौजवान ! क्या बात है ? मैं हर वक़्त तुझे रोता और गिड़ गिड़ाता हुवा देखता हूं, आख़िर तुम इतना क्यूं रोते हो ?" नौजवान ने अपना ह़ाले दिल बयान करते हुवे कहा : "तौबा से क़ब्ल मैं लोगों के कफ़्न चुराया करता था।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : "जब तू क़ब्र खोदता तो मुर्दे को किस ह़ालत में पाता ?" कहा : "मैं ने जब भी क़ब्र खोदी सिवाए चन्द के अकषर के मुंह क़िब्ले से फिरे हुवे देखे।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह सुना तो बहुत ग़मगीन हुवे और आप के मुंह से बे इख़्तियार निकला : "सिवाए चन्द के अकषर के मुंह फिरे हुवे थे !"

इस ख़बर से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दिमाग़ पर बहुत अषर हुवा ह़त्ता कि सदमे की वजह से आप की अ़क़्ल ज़ाइल हो गई। अब ज़रूरत थी कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इलाज करवाया जाए। चुनान्चे, हम ने मश्हूर त़बीब सुलैमान को बुलाया। त़बीब ने देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जब भी इफ़ाक़ा होता येही कहते : "सिवाए चन्द के अकषर के मुंह क़िब्ले से फिरे हुवे थे।" त़बीब ने आप का इलाज शुरूअ़ किया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा मिल गई। सिह़्ह़तयाबी के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हम से पूछा : "मेरा इलाज करने पर त़बीब को क्या दोगे ?" हम ने कहा : "हुज़ूर ! वोह त़बीब आप के इलाज पर कुछ भी उजरत नहीं चाहता।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुम मेरे इलाज के लिये शाही त़बीब ले कर आए, येह कैसे हो सकता है कि मैं उसे कुछ भी न दूं।" हम ने कहा : "अगर देना ही चाहते हैं तो सोने की एक अशरफ़ी दे दें।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक थैली हमारी त़रफ़ बढ़ाते हुवे कहा : "येह उस त़बीब को दे देना और कहना कि इस वक़्त मेरे पास सिर्फ़ इतना ही माल है येह न समझना कि हम मुरुव्वत में बादशाहों से कम हैं, अगर मेरे पास इस वक़्त मज़ीद माल होता तो तेरी उजरत में इज़ाफ़ा कर देता।" जब हम ने थैली खोल कर देखी तो उस में पन्दरह (15) अशरफ़ियां थीं, हम ने वोह रक़म त़बीब को दे दी।

रावी कहते हैं : “ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡجَوَاد अपने हाथों से खजूर के पत्तों की टोकरियां बना कर रिज़्क़े ह़लाल कमाया करते और मरते दम तक येही काम करते रहे।”

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 311 दो बुज़ुर्ग और दो परन्दे

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الرَّحِيۡم से मन्क़ूल है, एक मरतबा दो अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمَا मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا पहुंचे। जब दोनों की मुलाक़ात हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَعۡظَم ने ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ علیہ رحمۃ اللہ الرفیق से पूछा : “वोह कौन सा पहला वाक़िआ़ है जिस की वजह से आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه को येह अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी नसीब हुई ?”

आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने फ़रमाया : एक मरतबा मैं जंगल में था, अचानक मुझे एक परन्दा नज़र आया जिस के पर टूटे हुवे थे, मैं ने अपने दिल में कहा : येह परन्दा अपनी ग़िज़ा कैसे ह़ासिल करता होगा ? बस इस ख़याल के आते ही मैं वहीं खड़ा हो गया और इरादा किया कि आज येह देख कर जाऊंगा कि इस परन्दे को ग़िज़ा कहां से मिलती है ? मैं वही खड़ा सोचता रहा। कुछ देर बा'द एक परन्दा अपनी चोंच में एक टिड्डी पकड़े हुवे वहां आया और उस टूटे परों वाले परन्दे के मुंह में वोह टिड्डी डाल कर वापस उड़ गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस शाने रज़्ज़ाक़ी पर मैं अश अश कर उठा और अपने नफ़्स से कहा : “ऐ नफ़्स ! जिस ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर, ख़ालिक़ो मालिक ने सह़ीह़ व सालिम परन्दे के ज़रीए जंगलो बयाबान में इस पर टूटे हुवे परन्दे को रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाया वोह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाने पर क़ादिर है, चाहे मैं कहीं भी होऊं।” बस उस दिन से मैं ने तमाम दुन्यवी मशाग़िल तर्क कर दिये और इ़बादते इलाही में मसरूफ़ हो गया और आज आप के सामने हूं।”

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَعۡظَم ने फ़रमाया : “ऐ शक़ीक़ علیہ رحمۃ اللہ الرفیق तुम उस परन्दे की त़रह़ क्यूं न हो गए जो तन्दुरुस्त था और बीमार परन्दे तक उस का रिज़्क़ पहुंचा रहा था। अगर तुम उस जैसे होते तो तुम्हारे लिये बहुत अच्छा था, क्या तुम ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने तक़र्रुब निशान नहीं सुना : “**ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।**” (صحیح البخاری، کِتَابُ الزَّکَاۃِ، باب لَا صَدَقَةَ إِلَّا عَنْ ظَهْرِ غِنًى، الحدیث ۱۴۲۷، ص ۱۱۲)

ऐ शक़ीक़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ اللَّطِيۡف मोमिन की एक निशानी येह है कि वोह अपने तमाम उमूर में उस मर्तबे व मक़ाम को पसन्द करता है जो आ'ला व नफ़ीस हो यहां तक कि वोह नेकूकारों के मर्तबे तक पहुंच जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَعۡظَم की ह़िक्मत भरी बातें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का हाथ पकड़ा और बड़ी महब्बत से बोसा देते हुवे कहा : "ह़ुज़ूर ! आज से आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه उस्ताज़ और मैं शागिर्द हूं।"

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم﴿

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर तमाम जहानों का पालने वाला अपनी तमाम मख़्लूक़ को रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है। जिसे जैसे चाहता है रिज़्क़ देता है। इन्सान को इस मुआ़मले में तवक्कुल करना चाहिये क्यूंकि जिस के मुक़द्दर में जो है वोह उसे ज़रूर मिल कर रहेगा। बस इन्सान अपनी सी कोशिश करता रहे, रिज़्क़े ह़लाल के लिये तगो दो करता रहे लेकिन येह ख़याल ज़रूर रखे कि फ़राइज़ व वाजिबात को हरगिज़ हरगिज़ तर्क न करे वरना ख़सारा ही ख़सारा है। रिज़्क़ वोही अच्छा जिस की वजह से आ'माले सालेह़ा में तक़विय्यत मिले, अगर मुआ़मला बर अ़क्स हो या'नी माल व कारोबार की वजह से आ'माले दीनिया में कमी हो रही हो तो ऐसा माल व कारोबार कुछ काम न आएगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह हमें रिज़्क़े ह़लाल अ़ता फ़रमाए, दुन्यवी और उख़रवी ज़िन्दगी में सलामती अ़ता फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم)

ह़िकायत नम्बर : 312

बद बख़्त ह़ुक्मरान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुस्समद बिन मा'क़िल رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से मन्क़ूल है कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को फ़रमाते हुवे सुना : "बनी इस्राईल का एक नौजवान तख़्ते शाही पर मुतमक्किन हुवा। एक दिन उस ने सोचा : "मुझे तो अपनी ह़ुकूमत व ममलुकत में बहुत कैफ़ो सुरूर मह़सूस होता है। क्या मेरी रिआ़या भी मेरी ह़ुकूमत और तख़्त नशीनी से इसी त़रह़ ख़ुश है ? जब तक मुझे मा'लूम न हो जाए कि लोग मेरी ह़ुकूमत से ख़ुश हैं और मैं उन के दरमियान फ़ैसलों में अ़दलो इन्साफ़ से काम लेता हूं उस वक़्त तक मुझे सुकून मयस्सर न आएगा।" लोगों ने कहा : "अ़वामुन्नास भी मुल्क की बेहतरी चाहते हैं, बस आप अ़दलो इन्साफ़ से काम लीजिये।"

बादशाह ने कहा : "वोह कौन सी चीज़ है जिसे मैं इख़्तियार करूं तो मेरे तमाम मुआ़मलात दुरुस्त हो जाएं ?" कहा गया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमांबरदारी करना और उस की नाफ़रमानी से हर दम बचना, येह अ़मल आप को फ़लाह़ो कामरानी की त़रफ़ ले जाएगा।" बादशाह ने शहर के नेक लोगों को बुलाया और कहा : "आप लोग मेरे शाही दरबार में बैठा करें, जब आप कोई

नेक अ़मल देखें तो मुझे उसे इख़्तियार करने का हुक्म दें, अगर मैं कोई बुरा काम करूं तो मुझे ज़ज्रो तौबीख़ करें, मैं आप की बातों पर दिलो जान से अ़मल करूंगा।"

चुनान्चे, येह नेक लोग बादशाह के पास रहते जब भी वोह कोई काम करता तो इन बुज़ुर्गों से मश्वरा करता अगर इजाज़त देते तो करता वरना तर्क कर देता। इस त़रह़ उस के मुल्क में अम्नो अमान क़ाइम हो गया। वोह मुल्क हर त़रह़ से मज़बूत़ व मुस्तह़्कम हो गया। चार सो साल तक येह बादशाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में रह कर हुकूमत करता रहा, लोग इसे बहुत पसन्द करते। फिर शैत़ाने लईन इस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहा : "मैं ने एक बादशाह को छोड़े रखा यहां तक कि वोह चार सो साल से **अल्लाह** की इबादत कर रहा है, अब मैं उसे ज़रूर बहकाऊंगा।" चुनान्चे, शैत़ान उस बादशाह के पास इन्सानी सूरत में आया, बादशाह उसे देख कर ख़ौफ़ ज़दा सा हो गया फिर डरते हुवे पूछा : "तू कौन है?" कहा : "मैं इब्लीस हूं, अगर ख़ैरिय्यत चाहते हो तो बताओ कि तुम कौन हो?" बादशाह ने कहा : "मैं आदम عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हूं।" शैत़ान ने अपना ख़त़रनाक वार करते हुवे कहा : "अगर तू आदम عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से होता तो कब का मर चुका होता जैसे दूसरे इन्सान मर गए। तू ख़ुद देख ले कि तेरे सामने कितने लोग इस दुन्या से जा चुके हैं अगर तू भी उन की त़रह़ होता तो कब का मर चुका होता, तू इन्सान नहीं बल्कि ख़ुदा है (مَعَاذَاللهِ) तू लोगों को अपनी इबादत की त़रफ़ बुला।"

शैत़ाने लईन की येह कुफ़्रिय्या बातें बे वुकूफ़ व बदबख़्त बादशाह के दिल में उतर गईं और वोह अपने आप को ख़ुदा समझने लगा, फिर मिम्बर पर खड़े हो कर उस ने लोगों से कहा : "ऐ लोगो! एक बहुत बड़ा राज़ मैं ने तुम से छुपाए रखा, आज तक मैं ने तुम्हारे सामने इस का इज़्हार न किया, मैं चार सो साल से तुम पर हुकूमत कर रहा हूं अगर मैं इन्सान होता तो जिस त़रह़ दूसरे इन्सान मर गए इसी त़रह़ मैं भी मर चुका होता, मैं इन्सान नहीं बल्कि ख़ुदा हूं (مَعَاذَاللهِ) आज से तुम सब मेरी इबादत किया करो।" जब बद बख़्त बादशाह ने येह कुफ़्रिय्या कलिमात ज़बान से निकाले तो उस को एक झटका लगा और अचानक उस पर लर्ज़ा त़ारी हो गया। उस के दरबार में मौजूद किसी शख़्स को हुक्मे इलाही पहुंचा कि "इस से कह दे कि तू ने ऐसी चीज़ का दा'वा किया है जो सिर्फ़ हमारे लाइक़ है, तू मेरी इत़ाअ़त छोड़ कर मेरी ना फ़रमानी की त़रफ़ चल पड़ा है, मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम! मैं इस पर (इन्तिहाई ज़ालिम बादशाह) "**बुख़्त नस्सर**" को मुसल्लत़ करूंगा जो इस को वासिले जहन्नम कर के इस का तमाम ख़ज़ाना ले लेगा।"

उस दौर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस से नाराज़ होता उस पर "**बुख़्त नस्सर**" को मुसल्लत़ कर देता, बादशाह कुफ़्रिय्या कलिमात बक कर अभी मिम्बर से उतरने भी न पाया था कि उस पर "**बुख़्त नस्सर**" को मुसल्लत़ कर दिया गया। उस ने बद बख़्त व नामुराद बादशाह को क़त्ल कर के उस के ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा कर लिया, ह़ासिल शुदा ख़ज़ाने में इतना सोना था कि उस से सत्तर कश्तियां भर गईं।

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। चार सो साल तक इ़बादते इलाही में मसरूफ़ रहने वाले बादशाह पर जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर ग़ालिब आई तो ईमान जैसी अ़ज़ीम दौलत से मह़रूम हो कर दाइमी अ़ज़ाबे नार का मुस्तह़िक़ हो गया। शैत़ाने लईन जो इन्सान का अ़दुव्वे मुबीन (या'नी खुला दुश्मन) है उस की सब से बड़ी ख़्वाहिश येही होती है कि मरते वक़्त किसी त़रह़ उस का इमान बरबाद हो जाए। वोह हर त़रह़ से इन्सान को राहे ईमान से हटा कर कुफ़्र के तंग व तारीक गढ़ों में धकेलने की कोशिश करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ानी ह़म्लों से मह़फ़ूज़ रखे, हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए, वक़्ते नज़्अ़ हमारे पास शैत़ान न आए बल्कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बिइज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ईमान की सलामती अ़त़ा फ़रमाए। آمين بجاه النبى الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم)

या इलाही हर जगह तेरी अ़त़ा का साथ हो — जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो !
या इलाही भूल जाऊं नज़्अ़ की तक्लीफ़ को — शादिये दीदारे ह़ुस्ने मुस्त़फ़ा का साथ हो !

ह़िकायत नम्बर : 313 ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه और सियाह फ़ाम ग़ुलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "एक मरतबा जब मैं मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا गया तो मा'लूम हुवा कि इस साल वहां बिल्कुल बारिश नहीं हुई। पूरे शहर में क़ह़त़ की सी कैफ़िय्यत थी, लोग मस्जिदे ह़राम में जम्अ़ हो कर बारिश त़लब कर रहे थे। मैं "**बाबे बनी शैबा**" के क़रीब खड़ा था। इतने में एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम आया उस के जिस्म पर दो मोटी खुर्दरी चादरें थीं एक का तहबन्द बांधा हुवा था और दूसरी कन्धे पर ओढ़ी हुई थी वोह एक जगह छुप गया, मुझे उस की आवाज़ सुनाई दी। वोह बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ मुनाजात कर रहा था :

"इलाही عَزَّوَجَلَّ तू ने हर त़रह़ के लोग पैदा फ़रमाए, कुछ तो ऐसे हैं कि गुनाहों का अम्बार उन के सरों पर है और वोह बुरे आ'माल के मुर्तकिब हैं। मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू ने हम से बारिश को रोक लिया ताकि लोगों को उन के आ'माल की सज़ा मिले और वोह राहे रास्त पर गामज़न हों। ऐ ह़लीमो लत़ीफ़ ! ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात ऐसी है कि लोग तुझी से करम की उम्मीद रखते हैं, मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को बाराने रह़मत अ़त़ा फ़रमा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उस ग़ुलाम की दुआ़ मुकम्मल भी न होने पाई थी कि हर त़रफ़ घंगोर घटाएं छा गईं, ठन्डी हवाएं बाराने रह़मत का मुज़्दा सुनाने लगीं और फिर देखते ही देखते रह़मत की बरसात छमा छम होने लगी मुरझाई कलियां खिल उठीं और हर त़रफ़ ख़ुशी का समां हो गया। वोह सियाह फ़ाम ग़ुलाम जो ह़क़ीक़तन मक़्बूले बारगाहे ख़ुदावन्दी था, अपनी जगह बैठा ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहा। मेरा दिल भर आया और आंखों

से आंसू जारी हो गए। फिर वोह नेक गुलाम अपनी जगह से उठा और एक जानिब चल दिया। मैं भी उस के पीछे हो लिया बिल आख़िर वोह एक घर में दाख़िल हो गया, मैं ने उस घर की पहचान कर ली और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب के पास चला आया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझे देखा तो फ़रमाया : "ऐ इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क्या बात है मैं तुम्हारे चेहरे पर ग़म के आषार देख रहा हूं ?" मैं ने कहा : "हम लोग पीछे रह गए और हमारे इ़लावा कोई और हम पर सबक़त ले गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अपनी विलायत की दौलते उ़ज़्मा अ़ता फ़रमा दी।"

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب ने फ़रमाया : "मुझे अस्ल बात बताओ कि आख़िर मुआ़मला क्या है ?" मैं ने उस सालेह़ गुलाम का सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। जैसे ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने वाक़िआ़ सुना एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर कर तड़पने लगे। फिर फ़रमाया : "ऐ इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तुम्हारा भला हो, मुझे फ़ौरन उस सालेह़ गुलाम के पास ले चलो।" मैं ने कहा : "अब तो वक़्त बहुत कम है اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ कल कुछ करेंगे।" अगले दिन सुब्ह़ सुब्ह़ मैं उस घर की त़रफ़ चल दिया जिस में नेक सीरत गुलाम दाख़िल हुवा था। वहां पहुंचा तो एक बुढ्ढे शख़्स को दरवाज़े के पास बैठा पाया, वोह मुझे देखते ही पहचान गया और खुश आमदीद कहते हुवे बड़े पुर तपाक अन्दाज़ में मुलाक़ात की और कहा : "हुज़ूर ! कोई हुक्म हो तो इरशाद फ़रमाइये ?" मैं ने कहा : "मुझे एक सियाह फ़ाम गुलाम दरकार है।" उस ने कहा : "मेरे पास बहुत से सियाह फ़ाम गुलाम हैं मैं सब को बुला लेता हूं, आप जिसे चाहें पसन्द फ़रमा लें।" येह कह कर उस ने एक गुलाम को आवाज़ दी तो एक त़ाक़तवर गुलाम बाहर आया, बुढ्ढे ने कहा : "हुज़ूर ! येह गुलाम आप के लिये बहुत मुनासिब रहेगा।" मैं ने कहा : "मुझे येह नहीं चाहिये।" फिर उस ने दूसरा गुलाम बुलाया मैं ने इन्कार कर दिया, इस त़रह़ उस ने सब गुलाम बुलाए लेकिन मेरा मत़्लूब कोई और था। सब से आख़िर में वोही नेक सीरत गुलाम आया तो उसे देखते ही मेरी आंखें नमनाक हो गईं और मैं वहीं बैठ गया तो बुढ्ढे ने मुझ से पूछा : "क्या आप इसी गुलाम के त़ालिब थे ?"

मैं ने कहा : "हां ! मुझे इसी हीरे की तलाश थी।" बुढ्ढे ने कहा : "हुज़ूर ! मैं इसे नहीं बेच सकता, इस के इ़लावा आप जिस गुलाम को चाहें ले जाएं।" मैं ने कहा : "आख़िर आप इस गुलाम को क्यूं नहीं बेचना चाहते ?" कहा : "इस का हमारे घर में रहना बाइ़षे बरकत है, इस मर्दे सालेह़ से हम बरकत ह़ासिल करते हैं, इस ने मुझ से कभी भी कोई चीज़ नहीं मांगी।" मैं ने कहा : "फिर येह खाना वग़ैरा कहां से खाता है ?" कहा : "येह रोज़ाना इतनी रस्सियां बटता है कि निस्फ़ दिरहम या इस से कुछ ज़ियादा की फ़रोख़्त हो जाएं, उन्हें बेच कर येह अपना खाना वग़ैरा ख़रीदता है, अगर उस दिन फ़रोख़्त हो जाएं तो ठीक वरना दूसरे दिन के लिये उन्हें लपेट रखता है, मुझे मेरे गुलामों ने बताया कि येह सारी सारी रात इ़बादत में गुज़ार देता है, न किसी से मेल जोल रखता और न ही फ़ुज़ूल बातें करता है। इस की अपनी ही दुन्या है जिस में हर वक़्त मगन रहता है। जब

से मैं ने इस के इन पाकीज़ा ख़साइल के मुतअ़ल्लिक़ सुना और इस की येह ख़ूबियां देखीं मैं इसे दिल की गहराइयों से चाहने लगा हूं। येही वजह है कि मैं इसे ख़ुद से दूर नहीं करना चाहता।" मैं ने कहा : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب के हुक्म पर आया था, क्या इन का काम पूरा किये बिग़ैर वापस चला जाऊं ?"

येह सुन कर बूढ़े ने कहा : "आप के मुझ पर बहुत एह़सानात हैं आप इसे ले जाएं।" मैं ने फ़ौरन ग़ुलाम की क़ीमत अदा की और उसे ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب के घर की त़रफ़ चल दिया। अभी हम कुछ ही देर चले थे कि उस नेक सीरत ग़ुलाम ने मुझे पुकारा : "मेरे आक़ा ! मैं ने कहा : "लब्बेक (मैं ह़ाज़िर हूं)" उस ने कहा : "हु़ज़ूर ! येह आप के शायाने शान नहीं कि मुझे लब्बेक कहें, मैं तो आप का ग़ुलाम हूं और ग़ुलाम पर लाज़िम है कि वोह अपने आक़ा को लब्बैक कहे।" मैं ने कहा : "ऐ मेरे दोस्त ! बताओ, क्या चाहते हो ?" कहा : "हु़ज़ूर ! मैं कमज़ोर व ज़ईफ़ हूं, मुझ में इतनी त़ाक़त नहीं कि आप की ख़िदमत कर सकूं, आप मेरे इलावा कोई और ग़ुलाम ख़रीद लेते, मुझ से कहीं ज़ियादा त़ाक़तवर सिह़ह़त मन्द ग़ुलाम आप के सामने लाए गए, आप ने उन में से कोई ग़ुलाम क्यूं न ख़रीद लिया ताकि वोह आप की ख़ूब ख़िदमत करता।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जानता है कि मैं ने तुझे इस लिये नहीं ख़रीदा कि तुझ से ख़िदमत कराऊं, मेरे दोस्त मैं तो तेरे लिये मकान ख़रीद कर तेरी शादी कराऊंगा और दिलो जान से तेरी ख़िदमत करूंगा।"

येह सुन कर वोह नेक सीरत ग़ुलाम ज़ारो क़ित़ार रोने लगा। मैं ने सबबे गिर्या (या'नी रोने का सबब) दरयाफ़्त किया तो कहा : "आप ने मुझे इसी लिये ख़रीदा है कि आप ने मेरे और मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरमियान जो पोशीदा मुआ़मलात हैं उन में से किसी मुआ़मले को जान लिया। अगर ऐसा न होता तो बक़िय्या तमाम ग़ुलामों को छोड़ कर मुझे न ख़रीदते। मैं आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दे कर सुवाल करता हूं, मुझे बताइये कि आप मेरे कौन से राज़ पर मुत्तलअ़ हुवे हैं ?" मैं ने कहा : "बारगाहे ख़ुदावन्दी में तुम्हारी क़बूलिय्यते दुआ़ को देख कर।" उस ने कहा : "मेरा हुस्ने ज़न है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप का मर्तबा बहुत बुलन्द है और आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे हैं, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे भी हैं कि वोह उन की शान सिर्फ़ उन्हीं पर ज़ाहिर फ़रमाता है जो उस के पसन्दीदा और मक़्बूल बन्दे होते हैं।" फिर कहा : "मेरे आक़ा ! अगर आप इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं तो मैं इशराक़ की नमाज़ अदा कर लूं ?" मैं ने कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب का घर क़रीब ही है वहीं चल कर अदा कर लेना।" कहा : "हु़ज़ूर ! मुझे यहीं अदा करने की इजाज़त दे दें, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत को मुअख़्ख़र नहीं करना चाहता।" फिर वोह क़रीब ही एक मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ पढ़ने

लगा, काफ़ी देर नमाज़ में मश्ग़ूल रहा अचानक उस पर अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी हो गई, उस ने मुझ से कहा : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या आप की कोई ह़ाजत है ?" मैं ने कहा : "तुम येह क्यूं पूछ रहे हो ?" कहा : "मेरा कूच का इरादा है।" मैं ने कहा : "कहां जा रहे हो ?" कहा : "आख़िरत की त़रफ़ रवानगी है।" मैं ने कहा : "मेरे दोस्त ऐसी बातें न कर मैं तेरा राज़ पोशीदा रखूंगा।"

उस ने कहा : "उस वक़्त मेरी ज़िन्दगी कितनी ख़ुश गवार थी जब मुआ़मला मेरे और मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरमियान था। अब जब आप पर मेरा मुआ़मला ज़ाहिर हो चुका अ़न क़रीब किसी और पर भी मेरा ह़ाल ज़ाहिर हो जाएगा और मैं इस ह़ालत में ज़िन्दा रहना पसन्द नहीं करता।" इतना कह कर वोह मुंह के बल ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और तड़पते हुवे बड़े दर्द मन्दाना अन्दाज़ में यूं मुनाजात करने लगा : "मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मुझे अभी ही अपने पास बुला ले" फिर अचानक वोह साकित हो गया, मैं क़रीब गया तो उस की बेक़रार रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर के ख़ालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा रेज़ी के लिये रवाना हो चुकी थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब भी उस नेक सीरत ग़ुलाम का ख़याल आता है मैं बहुत ग़मगीन हो जाता हूं और दुन्या मेरी नज़र में इन्तिहाई ह़क़ीर हो जाती है।

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! कितना मुख़्लिस व मक़्बूल था वोह नेक सीरत ग़ुलाम ! ह़क़ीक़त में वोह ग़ुलाम नहीं बल्कि हमारा सरदार था। जो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मक़्बूल बन्दा है वोह वाक़ेई सरदारी के लाइक़ है। और जो सरदार व बादशाह, ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन की इत़ाअ़त नहीं करते वोह इस लाइक़ कहां कि उन्हें इ़ज़्ज़त की नज़र से देखा जाए, ऐसे बदबख़्त तो क़ाबिले नफ़रत व मुस्तह़िक़्के अ़ज़ाब हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास अ़त़ा फ़रमाए और उस मक़्बूल, मुख़्लिस व बेरिया के सदक़े रियाकारी की तबाह कारी से मह़फ़ूज़ फ़रमाए, हर घड़ी इ़बादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, नेकूकार और मुख़्लिस व फ़रमां बरदार बनाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

ह़दीषे क़ुदसी

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने मेरे किसी वली को अज़िय्यत दी उस ने अपने लिये मेरी जंग ह़लाल ठहरा ली।" (الزھدالکبیرللبیھقی،فصل فی قصرالامل والمبادرۃ بالعمل......،الحدیث۶۹۹،ص۲۷۰)

हिकायत नम्बर : 314 गुलामिये सादात की बरकात

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ख़सीब عليه رحمة الله الحسيب वज़ीर बनने से क़ब्ल का एक वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "मैं ख़लीफ़ा मुतवक्किल की वालिदा का कातिब था, एक दिन मैं कचहरी में बैठा हुवा था कि ख़ादिम एक थैला लिये हुवे मेरे पास आया और कहा : "ऐ अह़मद ! ख़लीफ़ा की वालिदा आप को सलाम कहती है, उस ने येह हज़ार दीनार भिजवाए हैं और कहा है कि येह दीनार मेरे ह़लाल व त़य्यिब माल में से हैं, इन्हें मुस्तह़िक़ीन में तक़्सीम कर के उन के नाम व नसब और मुकम्मल पता लिख कर हमें भिजवा दो ताकि जब कभी उन अ़लाक़ों से कोई हमारे पास आए तो हम उन की त़रफ़ हदिय्या भिजवा दें।"

मैं ने वोह दीनार लिये और अपने घर चला आया। अब मैं इस फ़िक्र में था कि ऐसा कौन है जो मुझे उन लोगों के नाम बताए जो तंग दस्ती व ग़ुर्बत के बा वुजूद सफ़ेद पोश हैं और किसी के सामने दस्ते सुवाल दराज़ नहीं करते, क्यूंकि ऐसे लोग ही माली इमदाद के ज़ियादा मुस्तह़िक़ हैं। बिल आख़िर शाम तक मेरे पास ग़रीब व तंग दस्त और सफ़ेद पोश व ख़ुद्दार लोगों की एक फ़ेहरिस्त तय्यार हो गई। मैं ने तीन सो (300) दीनार उन में तक़्सीम कर दिये, अब कोई और ऐसा न था जिसे रक़म दी जाती, रात ने आहिस्ता आहिस्ता अपने पर फैला दिये। मेरे पास सात सो (700) दीनार मौजूद थे लेकिन अब कोई भी ऐसा शख़्स मा'लूम न था जिस की मदद की जाती। रात का एक ह़िस्सा गुज़र चुका था। मेरे सामने कुछ सरकारी ग़ुलाम मौजूद थे, बाहर पहरेदार फिर रहे थे, बरआमदे के दरवाज़े बन्द कर दिये गए थे। मैं बक़िय्या दीनारों के बारे में फ़िक्र मन्द था कि दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी, फिर चोकीदार की आवाज़ सुनाई दी वोह आने वाले से पूछ गछ कर रहा था। मैं ने ख़ादिम भेजा तो उस ने बताया कि दरवाज़े पर एक सय्यिद ज़ादा है जो आप के पास आने की इजाज़त चाहता है। मैं ने कहा : "उसे अन्दर बुला लाओ फिर अपने पास मौजूद तमाम लोगों से कहा : "इस वक़्त येह ज़रूर किसी ह़ाजत के पेशे नज़र आ रहा होगा, हो सकता है तुम्हारे सामने ह़ाजत बयान करने में इसे झिजक मह़सूस हो तुम एक त़रफ़ हो जाओ।" जब वोह सब चले गए तो सय्यिद ज़ादा मेरे पास आया और सलाम कर के बैठ गया, फिर कहने लगा : "इस वक़्त आप के सामने ऐसा शख़्स मौजूद है जिसे हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صلى الله تعالى عليه واله وسلم से ख़ास क़ुर्बत है। अल्लाह عزوجل की क़सम ! हमारे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं जिस से हमारा गुज़ारा हो सके और न ही हमारे पास दीगर लोगों की त़रह़ दिरहमो दीनार हैं कि हम अपने लिये खाने की कोई चीज़ ख़रीद सकें। हमारे पड़ोस में आप के इ़लावा ऐसा कोई शख़्स नहीं जो इस कड़े वक़्त में हमारी मदद कर सके।

मैं ने उस की गुफ़्तगू सुन कर एक दीनार उसे दे दिया तो उस ने मेरा शुक्रिय्या अदा किया और दुआ़एं देता हुवा रुख़्सत हो गया। फिर मेरी ज़ौजा मेरे पास आई और कहने लगी : "ऐ बन्दए ख़ुदा ! तुझे क्या हो गया ? ख़लीफ़ा की वालिदा ने तुझे येह दीनार मुस्तह़िक़ीन में तक़्सीम करने को दिये थे, एक सय्यिद ज़ादे ने तुझ से इ़याल दारी और तंग दस्ती की शिकायत की तो तू ने सिर्फ़ उसे एक

दीनार दिया, अफ़्सोस है ! कि आले रसूल के साथ इस त़रह़ का बरताव हरगिज़ मुनासिब नहीं।" अहले बैत की मह़ब्बत से सरशार नेक सीरत बीवी की गुफ़्तगू ने मेरे दिल पर बहुत गहरा अषर किया। मैं ने बेक़रार हो कर पूछा : "अब क्या हो सकता है इस ग़लती का इज़ाला किस त़रह़ किया जाए।" उस ने कहा : "येह सारे दीनार उस सय्यिद ज़ादे की ख़िदमत में पेश कर दीजिये।" मैं ने गुलाम से कहा : "जाओ और फ़ौरन उस सय्यिद ज़ादे को बुला लाओ, वोह गया और उसे ले आया। मैं ने उस से मा'ज़िरत की और सात सो दीनारों से भरा थैला उस के हु़ज़ूर पेश कर दिया। वोह दुआ़एं देता और शुक्रिया अदा करता हुवा रुख़्सत हो गया।" फिर मुझे शैत़ानी वस्वसा आया कि ख़लीफ़ा मुतवक्किल सादाते किराम से ज़ियादा ख़ुश नहीं, इस की वालिदा "**शज्जाअ़**" ने ग़रीबों, मिस्कीनों में तक़्सीम करने के लिये जो रक़म दी थी उस का बड़ा हिस्सा तो एक सय्यिद ज़ादे की ख़िदमत में पेश कर दिया गया कहीं ऐसा न हो कि ख़लीफ़ा मुझ पर ग़ज़ब नाक हो और मुझे सज़ा का सामना करना पड़े। मैं ने इस परेशानी का इज़्हार अपनी बीवी पर किया तो उस मुतवक्किला व साबिरा ख़ातून ने कहा :"आप इन सादाते किराम के नाना जान पर भरोसा रखें और सारा मुआ़मला उन पर छोड़ दें।"

मैं ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तू अच्छी त़रह़ जानती है कि ख़लीफ़ा मुतवक्किल सादाते किराम से कैसा बरताव करता है। जब वोह मुझ से उस रक़म के मुतअ़ल्लिक़ पूछेगा तो मैं क्या जवाब दूंगा ?" उस ने कहा : "मेरे सरताज ! आप सारा मुआ़मला हु़ज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिपुर्द कर दें। जिस सय्यिद ज़ादे की आप ने मदद की उन के नाना जान ही आप का बदला चुकाएंगे, आप उन पर भरोसा रखें।" वोह इस त़रह़ मेरी ढारस बन्धाती रही फिर मैं अपने बिस्तर पर जा लैटा। अभी मैं सोने की कोशिश कर रहा था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई, मैं ने ख़ादिम से कहा : "जाओ ! देखो ! इस वक़्त कौन आया है ?" वोह गया और वापस आ कर कहा : "ख़लीफ़ा की वालिदा शज्जाअ़ ने पैग़ाम भिजवाया है कि फ़ौरन मेरे पास पहुंचो।" मैं सेह़न में आया तो देखा कि आस्मान पर सितारे जगमगा रहे थे। रात काफ़ी बीत (या'नी गुज़र) चुकी थी अभी मैं सेह़न में ही था कि दूसरा क़ासिद आया फिर तीसरा। मैं ने तीनों को अपने पास बुलाया और कहा : "क्या इतनी रात गए जाना ज़रूरी है ?" उन्हों ने कहा : "हां ! आप फ़ौरन ख़लीफ़ा की वालिदा के पास चलें।"

चुनान्चे, मैं सुवारी पर सुवार हो कर मह़ल की त़रफ़ चल दिया अभी थोड़ी ही दूर चला था कि बहुत सारे क़ासिद मिले जो मुझे बुलाने आ रहे थे। मैं मह़ल में पहुंचा तो ख़ादिम मुझे एक सिम्त ले कर गया। एक जगह जा कर वोह ठहर गया, फिर ख़ादिमे ख़ास आया और मेरा हाथ पकड़ कर बोला : "ऐ अह़मद ! ख़लीफ़ा की वालिदा आप से गुफ़्तगू करना चाहती है जहां आप को ठहराया जाए वहीं ठहरना और जब तक सुवाल न किया जाए उस वक़्त तक कुछ न बोलना।" फिर वोह मुझे एक ख़ूब सूरत कमरे में ले गया जिस में बेहतरीन पर्दे लटक रहे थे और कमरे के वस्त़ में शम्अ़ दान रखा हुवा था, मुझे एक दरवाज़े के पास खड़ा कर दिया गया। मैं चुप चाप वहां

खड़ा रहा, फिर किसी ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : ऐ अह़मद ! मैं ने आवाज़ पहचान कर कहा : "ऐ ख़लीफ़ा की वालिदा ! मैं ह़ाज़िर हूं।" फिर आवाज़ आई : "हज़ार दीनारों का हिसाब, बल्कि सात सो दीनारों का हिसाब दो, इतना कह कर ख़लीफ़ा की वालिदा के रोने की आवाज़ आने लगी, मैं ने अपने दिल में कहा : "उस सय्यिद ज़ादे ने किसी दुकान से खाने का सामान और ग़ल्ला वग़ैरा ख़रीदा होगा और किसी मुख़बिर ने ख़लीफ़ा को ख़बर दी होगी कि मैं ने उस सय्यिद ज़ादे की मदद की है, तो ख़लीफ़ा ने मुझे क़त्ल करने का हुक्म दिया होगा, जिस की वजह से इस की वालिदा मुझ पर तरस खाते हुवे रो रही है, मैं इन्हीं सोचों में गुम था कि दोबारा आवाज़ आई : ऐ अह़मद ! हज़ार दीनारों का हिसाब दो, बल्कि सात सो दीनारों के मुतअ़ल्लिक़ मुझे बताओ।

इतना कह कर वोह फिर ज़ारो क़िता़र रोने लगी। इस त़रह़ उस ने कई मरतबा किया और दीनारों के मुतअ़ल्लिक़ बारबार पूछा। मैं ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। जब सय्यिद ज़ादे का ज़िक्र आया तो वोह रोने लगी और कहा : "ऐ अह़मद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे और जो तेरे घर में नेक ख़ातून है उसे बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए, क्या तू जानता है कि आज रात मेरे साथ क्या वाक़िआ़ पेश आया है ? मैं ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया तो कहा : "आज रात जब मैं सोई तो मेरी सोई हुई क़िस्मत जाग उठी, मैं ने ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अह़मद बिन ख़सीब और उस के घर में मौजूद नेक ख़ातून को बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए, आज रात तुम लोगों ने मेरी अवलाद में से तीन ऐसे शख़्सों की तंग दस्ती दूर की जिन के पास कुछ भी न था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए।"

ख़्वाब सुनाने के बा'द कहा : "ऐ अह़मद बिन ख़सीब ! येह ज़ेवरात, कपड़े और दीनारों की थेलियां उस सय्यिद ज़ादे को दे देना जिस की बरकत से मुझे नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा। उस से कह देना कि जब कभी हमारे पास माल आएगा हम तुम्हारे लिये भिजवा दिया करेंगे। फिर ख़लीफ़ा की वालिदा शज्जाअ़ ने कुछ और सामान देते हुवे कहा : "येह ज़ेवरात, कपड़े और दीनार अपनी ज़ौजा को देना ओर कहना : "ऐ नेक व मुबारक ख़ातून ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए। तुम्हारे ही मश्वरे पर उस सय्यिद ज़ादे को रक़म दी गई और इस त़रह़ मुझे दीदारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नसीब हुवा, येह नज़्राना क़बूल कर लीजिये।" और ऐ अह़मद ! येह कपड़े और रक़म तुम अपने पास रखो येह तुम्हारे लिये हैं।" मैं तमाम सामान ले कर अपने घर की त़रफ़ रवाना हुवा रास्ते में ही उस सय्यिद ज़ादे का घर था मैं ने दिल में कहा : "जिस की बरकत से मुझे इतना इन्आ़म मिला उसी से ख़ैर की इब्तिदा करनी चाहिये।"

चुनान्चे, मैं उस के घर गया और दरवाज़ा खट-खटाया, अन्दर से पूछा गया : "कौन ?" मैं ने अपना नाम बताया तो वोही सय्यिद ज़ादा बाहर आया और कहा : "ऐ अह़मद ! हमारे लिये जो माल ले कर आए हो वोह हमें दे दो।" मैं ने हैरान हो कर पूछा : "तुम्हें कैसे मा'लूम हुवा कि

मैं तुम्हारे लिये हदिय्या लाया हूं ?" कहा : "बात दर अस्ल येह है कि जब मैं तुम्हारे पास से रक़म लाया उस वक़्त हमारे पास कुछ न था मैं ने तुम्हारी दी हुई रक़म अपनी ज़ौजा को दी तो वोह बहुत खुश हुई और कहा : "आओ हम उस शख़्स के लिये दुआ़ करें जिस ने हमारी मदद की, तुम नमाज़ पढ़ो और दुआ़ करो मैं आमीन कहूंगी।" पस मैं ने नमाज़ पढ़ कर दुआ़ की और उस ने "आमीन" कही। फिर मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई मेरी आंखें तो क्या बन्द हुईं दिल की आंखें खुल गईं, मैं ख़्वाब में अपने नाना जान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "जिन्हों ने तुम्हारे साथ भलाई की हम ने उन का शुक्रिया अदा कर दिया है अब वोह दोबारा तुम्हें कुछ चीज़ें बत़ौरे ख़ैर ख़्वाही देंगे तुम क़बूल कर लेना।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ख़सीब علیہ رحمۃ اللہ الحسیب फ़रमाते हैं : उस वक़्त मेरे पास जो कुछ भी मालो अस्बाब था सब उस सय्यिद ज़ादे के हुज़ूर पेश कर के खुशी खुशी घर चला आया। मैं ने अपनी ज़ौजा को मश्ग़ूले दुआ़ व मुनाजात पाया वोह काफ़ी बे चैन व मुज़्त़रिब नज़र आ रही थी। जब उसे मेरे घर आने का इ़ल्म हुवा तो मेरे पास आई और ख़ैरिय्यत मा'लूम की मैं ने जाने से ले कर वापसी तक का तमाम वाक़िआ़ कह सुनाया। उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्रिया अदा किया और कहा : "मैं न कहती थी कि आप उन के नाना जान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान, सरकारे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भरोसा रखें और मुआ़मला उन के सिपुर्द कर दें, देखें ! उन्हों ने कैसा लुत़्फ़ो करम फ़रमाया और कैसे हमारी दस्तगीरी फ़रमाई, फिर मैं ने अपनी ज़ौजा से कहा : अच्छा ! हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ मुझे जो इन्आ़म मिला है उस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ?" ह़ालांकि मैं ने इस का हिस्सा उस के ह़वाले कर दिया जो उस ने ब खुशी क़बूल कर लिया।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ क्या शान है सादाते किराम और इन के नाना जान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ! इस सख़ी घराने के साथ जो भी हुस्ने सुलूक करता है वोह मह़रूम व मायूस नहीं होता बल्कि उस पर इन्आ़मो इकराम की ऐसी बारिश होती है कि मोह़ताजों और ग़मगीनों के दिलों की मुरझाई कलियां खिल उठती हैं, गर्दिशे अय्याम की ज़द में आ कर सुनसान व वीरान हो जाने वाले बाग़ात में बहार आ जाती है। जिस ने भी इन मुबारक हस्तियों से हुस्ने सुलूक किया वोह बेशुमार परेशानियों से नजात पा कर शादां व फ़रहां हो गया। और क्यूं न हो कि करीमों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले पर भी ज़रूर करम किया जाता है। सादाते किराम चमनिस्ताने करम के महकते फूल हैं इन की खुश्बू से आ़लमे इस्लाम महक रहा है, इन्हीं दरख़्शां सितारों की रोशनी से न जाने कितने भूले भटके मुसाफ़िरों को निशाने मन्ज़िल मिला। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अहले बैते अत़्हार की शान बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की   ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन नुफ़ूसे कु़दसिय्या के सदके़ दीनो दुन्या की भलाइयां अ़ता फ़रमाए, इन सादाते किराम का बा अदब बनाए, बे अदबों से हम सब को महफ़ूज़ फ़रमाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन की गुलामी में इस्तिका़मत अ़ता फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم)

सहा़बा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम — येह सब है आप की नज़रे इनायत या रसूलल्लाह

हिकायत नम्बर : 315

शरीर जिन्न

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुस्समद बिन मा'क़ल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना वहब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते हुवे सुना : "गुज़श्ता उम्मतों में एक शख़्स था, उस की बेटी मिर्गी के मरज़ में मुब्तला हो गई। बहुत इलाज कराया मगर कुछ इफ़ाक़ा न हुवा। वोह जिस मुआ़लिज के मुतअ़ल्लिक़ भी सुनता, अपनी बेटी को ले कर उस के पास पहुंच जाता। लेकिन उस के इलाज से सब आ़जिज़ रहे। बिल आख़िर उसे बताया गया कि फ़ुलां शख़्स इस वक़्त सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार है, अगर उस के पास जाओ तो तुम्हारी मुश्किल ह़ल हो जाएगी। चुनान्चे, वोह अपनी बेटी को ले कर उस के पास गया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दे कर इलाज का सुवाल किया और बताया कि मैं ज़माने भर के त़बीबों और आ़मिलों से मिला, लेकिन कोई भी इस बेचारी का इलाज न कर सका।

उस नेक शख़्स ने दुख्यारे बाप की फ़रयाद सुनी तो कहा : "मुझे इस बात का ख़दशा है कि अगर मैं ने तुम्हारी बेटी का इलाज कर दिया तो तुम लोगों को बताओगे, इस त़रह़ मेरी शोहरत हो जाएगी और लोग मुझे मुसीबत में मुब्तला कर देंगे।" लड़की के बाप ने अ़हद किया कि मैं हरगिज़ किसी को नहीं बताऊंगा। चुनान्चे, वोह नेक शख़्स इलाज करने पर आमादा हो गया। दर अस्ल एक शरीर जिन्न ने लड़की के जिस्म में दाख़िल हो कर उसे अज़िय्यत में मुब्तला कर रखा था, नेक शख़्स ने अ़मल किया और शरीर जिन्न को मुख़ात़ब कर के कहा : "इस लड़की के जिस्म से बाहर निकल आ।" जिन्न ने कहा : "हरगिज़ नहीं ! येह सिर्फ़ इस सूरत में हो सकता है कि इस के जिस्म से निकल कर तेरे जिस्म में आ जाऊं।" नेक शख़्स ने कहा : "ठीक है ! तू इसे छोड़ दे और मेरे जिस्म में दाख़िल हो जा।" चुनान्चे, जिन्न लड़की को छोड़ कर नेक शख़्स के जिस्म में दाख़िल हो गया, उस ने दम कर के अपने जिस्म का ह़िसार किया और तमाम मसाम बन्द कर के उसे अपने जिस्म में क़ैद कर लिया, फिर लड़की के वालिद से कहा : "अपनी बेटी को ले जाओ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से अब येह ठीक हो गई है।" उस ने कहा : "मुझे डर है कि येह शरीर जिन्न दोबारा मेरी बेटी को तंग करने न आ जाए।" तो नेक आदमी ने कहा : "जाओ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अब कभी भी येह इस की त़रफ़ न आएगा।"

दुख़्यारा बाप दुआ़एं देता हुवा वहां से रुख़्सत हो गया। शरीर जिन्न उस मर्दे सालेह़ के जिस्म में क़ैद था, उस ने पूरे ह़फ़्ते मुसलसल रोजे़ रखे और रातें इ़बादत व रियाज़त में गुज़ारीं, सातवें दिन शरीर जिन्न ने उस से कहा : "तू खाना वग़ैरा क्यूं नहीं खाता कि तक़विय्यत ह़ासिल हो ?" कहा : "जल्दी न कर ! अभी मुझे खाने की ह़ाजत नहीं।" जिन्न ने कहा : "फिर मुझे छोड़ दे ताकि तेरे जिस्म से निकल जाऊं।" कहा : "हरगिज़ नहीं, अब तू नहीं निकल सकता।" फिर नेक बन्दे ने मज़ीद एक हफ़्ता रोजे़ रखे और रातें इ़बादत में गुज़ारीं और न कुछ खाया न पिया। जिन्न ने कहा : "तू कोई चीज़ खाता क्यूं नहीं ? क्या तू अपने आप को हलाक करना चाहता है ?" कहा : "मुझे अभी खाने पीने की ह़ाजत नहीं।"

जिन्न ने कहा : "मुझे छोड़ दो ताकि तुम्हारे जिस्म से निकल जाऊं।" कहा : "हरगिज़ नहीं।" जिन्न ने आ़जिज़ हो कर कहा : "खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम अगर तू ने मुझे अपने जिस्म से न निकलने दिया तो भूक व प्यास की वजह से मैं तेरे जिस्म में मर जाऊंगा और तू भी हलाक हो जाएगा, खु़दारा ! मुझे छोड़ दे।" नेक शख़्स ने कहा : "मुझे ख़दशा है कि अगर मैं ने तुझे छोड़ दिया तो तू दोबारा उस लड़की के पास जा कर उसे तंग करेगा।" जिन्न ने कहा : "खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मैं कभी भी न उस लड़की के पास जाऊंगा और न ही किसी और इन्सान की त़रफ़, तू ने मेरा जो ह़श्र किया है, इस की वजह से इन्सान मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा ख़त़रनाक हो चुका है, अब मुझे इन्सान से डर लगने लगा है।"

जब नेक शख़्स ने जिन्न की येह बातें सुनीं तो उसे अपने जिस्म से निकलने का रास्ता दे दिया, जिन्न फ़ौरन भाग खड़ा हुवा और फिर किसी इन्सान को तंग नहीं किया बल्कि जब भी किसी इन्सान को देखता तो डर कर भाग जाता।

(जिन्नात के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे "**मक्तबतुल मदीना**" से किताब "**क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत**" ख़रीद फ़रमा कर मुत़ालआ़ फ़रमाएं। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आएगा।)

ह़िकायत नम्बर : 316

नहर की सदाएं

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से मन्क़ूल है कि "बनी इस्राईल का एक शख़्स तौबा करने के बा'द फिर एक बदकार औ़रत से मुंह काला कर के गुस्ल करने के लिये नहर में दाख़िल हुवा तो नहर से सदाएं आने लगीं, "ऐ फ़ुलां ! तुझे शर्म नहीं आती ? क्या तू ने तौबा कर के येह अ़हद न किया था कि अब कभी येह गुनाह न करूंगा ?" वोह शख़्स नहर की सदाएं सुन कर ख़ौफ़ज़दा हो कर पानी से बाहर निकल आया और येह कहता हुवा वहां से भागा : "अब कभी भी अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।" रोता हुवा एक पहाड़ पर

पहुंचा जहां बारह अफ़राद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल थे येह भी उन के साथ इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो गया, कुछ अ़र्से बा'द वहां क़ह़त़ पड़ा तो तेरह (13) अफ़राद पर मुश्तमिल नेक लोगों का वोह क़ाफ़िला ग़िज़ा की तलाश में पहाड़ से नीचे उतरा और आबादी की त़रफ़ चल दिया। इत्तिफ़ाक़ से उन का गुज़र उसी नह्र की त़रफ़ से हुवा, वोह शख़्स ख़ौफ़ से थर्रा उठा और कहने लगा : "मैं उस नह्र की त़रफ़ नहीं जाऊंगा क्यूंकि वहां मेरे गुनाहों को जानने वाला मौजूद है, मुझे उस के सामने जाते हुवे शर्म आती है।" येह कह कर वोह वहीं रुक गया।

बाक़ी बारह अफ़राद जब नह्र पर पहुंचे तो नह्र से सदाएं आना शुरूअ़ हो गईं : "ऐ नेक बन्दो ! तुम्हारा रफ़ीक़ कहां है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "वोह कहता है कि उस नह्र पर मेरे गुनाहों को जानने वाला मौजूद है, मुझे उस के सामने जाते हुवे शर्म आती है।" नह्र से आवाज़ आई : "سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ अगर तुम्हारा कोई अ़ज़ीज़ तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाए फिर नादिम हो कर तुम से मुआ़फ़ी मांग ले और अपनी ग़लत़ आ़दत तर्क कर दे तो तुम उस से सुल्ह़ न कर लोगे ? तुम्हारा रफ़ीक़ भी अपने गुनाह से ताइब हो कर इ़बादत में मश्ग़ूल हो गया है लिहाज़ा अब उस की अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ हो चुकी है। अब मैं उस से राज़ी हूं। जाओ ! उसे यहां ले आओ और तुम सब मेरे किनारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो।" उन्हों ने अपने रफ़ीक़ को ख़ुश ख़बरी दी और फिर येह सब मिल कर वहां मश्ग़ूले इ़बादत हो गए। वहीं उस नेक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा, नह्र से आवाज़ें आने लगीं, "ऐ नेक बन्दो ! इसे मेरे पानी से ग़ुस्ल दो और मेरे ही किनारे दफ़्न करो ताकि बरोज़े क़ियामत भी वोह यहीं से उठाया जाए।"

चुनान्चे, उन्हों ने ऐसा ही किया और सारी रात उस के मज़ार के क़रीब इ़बादत करते और रोते हुवे गुज़ारी, वक़्ते सह़र उन्हें नींद ने आ लिया, जब जागे तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि उस नेक शख़्स के मज़ार के अत़राफ़ में सर्व[1] के बारह दरख़्त खड़े थे, ज़मीन पर सब से पहले सर्व के दरख़्त यहीं उगे, येह सब समझ गए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह दरख़्त हमारे लिये ही पैदा फ़रमाए हैं, ताकि हम कहीं और जाने की बजाए इन के साए में ही रहें और यहीं रह कर अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करें। चुनान्चे, वोह लोग वहीं इ़बादत में मश्ग़ूल हो गए। जब उन में से किसी का इन्तिक़ाल होता तो उसी शख़्स के पहलू में दफ़्न कर दिया जाता ह़त्ता कि सब वफ़ात पा गए। इस ह़िकायत को नक़्ल करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "**बनी इस्राईल उन के मज़ारात की ज़ियारत के लिये आया करते थे।**"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

1 .....एक ख़ूबसूरत मख़रूत़ी (गाजर की) शक्ल का क़द आवर दरख़्त जो अकसर बाग़ात में लगाया जाता है (जिसे सनोबर का दरख़्त कहा जाता है)।

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कितना मेहरबान और रह़मानो रह़ीम है, जब कोई बन्दा सच्चे दिल से ताइब होता है तो उस से ख़ुश हो जाता है। येह दर्स भी मिला कि गुनाह करने वाला अगर्चे लाख पर्दों में छुप कर गुनाह करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तो देख ही रहा है। लिहाज़ा इन्सान को हर वक़्त रब عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना चाहिये और गुनाहों से किनारा कशी इख़्तियार करते हुवे आ'माले सालिह़ा को अपना वत़ीरा बनाना चाहिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें गुनाहों से बचा कर आ'माले सालिह़ा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 317 ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मजज़ूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَيُّوْم

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल हुसैन दर्राज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب से मन्क़ूल है कि एक मरतबा मैं ह़ाजियों के एक क़ाफ़िले के साथ सूए ह़रम रवाना हुवा। जहां क़ाफ़िला ठहरता मुझे भी ठहरना पड़ता और दीगर मुआ़मलात में भी उन के साथ काम वग़ैरा करना पड़ता। इस त़रह़ उस साल मेरा तमाम सफ़र उन क़ाफ़िले वालों के साथ रहा और ह़ज से वापसी भी उन्हीं के साथ हुई। फिर एक साल मैं अकेला ही सफ़रे ह़ज पर रवाना हो गया और मन्ज़िलों पर मन्ज़िले तै़ करता हुवा "**क़ादिसिय्या**" पहुंचा। मैं एक मस्जिद में गया तो मेह़राब में एक ऐसे शख़्स को देखा जिस के जिस्म को कोढ़ के मरज़ ने बहुत ज़ियादा मुतअष्षिर कर रखा था।

उस ने मुझे देख कर सलाम किया और कहा : "ऐ अबल हुसैन ! क्या तुम्हारा ह़ज का इरादा है ?" मुझे उसे देख कर बहुत ज़ियादा कराहत मह़सूस हो रही थी, इस बात पर गुस्सा भी आया कि उस ने मुझे मुख़ात़ब क्यूं किया ? मैं ने बड़ी बे रुख़ी से कहा : "हां ! मेरा ह़ज का इरादा है।" कहा : "फिर मुझे भी अपना रफ़ीक़ बना लें।" मैं ने दिल में कहा : "येह कैसी मुसीबत आ गई मैं तो तन्दुरुस्त लोगों की रफ़ाक़त पसन्द नहीं करता, वहां से भागा हूं तो इस कोढ़ी व बीमार शख़्स से वासित़ा पड़ गया।" मैं ने कहा : "मैं तुम्हें अपने साथ नहीं रख सकता।" उस ने कहा : "मेहरबानी करो, मुझे अपने साथ रख लो।" मैं ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ तुझे अपना रफ़ीक़ न बनाऊंगा।" उस ने कहा : "ऐ अबल हुसैन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नातुवानों और कमज़ोरों को ऐसा नवाज़ता है कि त़ाक़तवर भी तअ़ज्जुब करने लगते हैं।"

मैं ने कहा : "तुम्हारी बात ठीक है, लेकिन मैं तुम्हें अपने साथ नहीं रख सकता।" अ़स्र की नमाज़ पढ़ कर मैं सफ़र पर रवाना हुवा, सुब्ह़ एक बस्ती में पहुंचा तो उसी शख़्स से मुलाक़ात हुई उस ने मुझे सलाम किया और वोही अल्फ़ाज़ कहे :"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़ईफ़ व नातुवां बन्दों को ऐसा नवाज़ता है कि त़ाक़तवर भी तअ़ज्जुब करने लगते हैं।" उस की येह बात सुन कर मैं बड़ा ह़ैरान हुवा मुझे उस कोढ़ी शख़्स के बारे में अ़जीबो ग़रीब ख़याल आने लगे, मैं वहां से अगली मन्ज़िल की त़रफ़ रवाना हुवा। जब "**मक़ामे क़रआ़**" पहुंच कर नमाज़ पढ़ने मस्जिद में दाख़िल

हुवा तो उसे वहां बैठा देखा, उस ने कहा : "ऐ अबल हुसैन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़ईफ़ नातुवां बन्दों को ऐसा नवाज़ता है कि ताक़तवरों की अ़क़्लें दंग रह जाती हैं।" मैं फ़ौरन उस के पास गया और क़दमों में गिर कर अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी का तृलबगार हूं और आप से भी मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त करता हूं, मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें।"

उस ने कहा : "तुझे क्या हुवा ?" मैं ने कहा : "मुझ से ग़लती हो गई कि आप को अपने साथ न रखा, अब करम फ़रमाएं मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें आप ब ख़ुशी मेरे साथ सफ़र करें।" उस ने कहा : "क्या तू ने मुझे अपने साथ न रखने की क़सम न खाई थी ? मैं तेरी क़सम नहीं तुड़वाना चाहता।" मैं ने कहा : "अच्छा फिर इतना करम फ़रमाएं की हर मन्ज़िल पर अपना दीदार करा दिया करें।" उस ने कहा : "हां ! येह हो सकता है, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी येह ख़्वाहिश पूरी हो जाएगी।" फिर वोह मुझ से जुदा हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के उस नेक बन्दे की बरकत से मेरा भूक व प्यास और ठकावट का एह़सास जाता रहा। जब भी मैं किसी मन्ज़िल पर ठहरता तो उस नेक बन्दे की ज़ियारत का शौक़ बढ़ जाता। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे हर मन्ज़िल पर उस बुज़ुर्ग की ज़ियारत होती रही यहां तक कि मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में दाख़िल हो गया। उस के बा'द मुझे वोह नज़र न आया।

जब मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी और ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन मुज़यिन (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुवा और उन्हें अपने सफ़र का सारा वाक़िआ़ सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : "अरे नादान ! जानते हो, वोह कौन थे ? वोह ज़माने के मश्हूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मजज़ूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَيُّوْم थे। हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ गो हैं कि अपने इस वली का हमें भी दीदार करा दे। सुनो ! अब जब भी तुम्हारी उन से मुलाक़ात हो तो हमें ज़रूर बताना, शायद हमें भी उन के दीदार की दौलत नसीब हो जाए।" मैं ने कहा : "ठीक है।" फिर हम "**मिना व अ़रफ़ात**" की तृरफ़ गए लेकिन मैं उन का दीदार न कर सका, दसवीं ज़ुल हिज्जतुल ह़राम को जब मैं रमिये जिमार करने (या'नी शैतान को कंकरियां मारने) लगा तो कुछ देर बा'द किसी शख़्स ने मुझे अपनी तृरफ़ खींचा और कहा : "ऐ अबल हुसैन ! السلام عليكم" जैसे ही मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो मेरे सामने वोही बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मजज़ूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَيُّوْم मौजूद थे। उन्हें देखते ही मुझ पर रिक़्क़त तृारी हो गई। मैं बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब मेरे ह़वास बह़ाल हुवे तो वोह वहां से जा चुके थे। मैं मस्जिदे "ख़ैफ़" आया और अपने रुफ़क़ा को सारा वाक़िआ़ बताया।" यौमे वदाअ़ को मक़ामे इब्राहीम पर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने के बा'द मैं ने जैसे ही दुआ़ के लिये हाथ उठाए अचानक किसी ने मुझे अपनी तृरफ़ खींचा, देखा तो वोही बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मजज़ूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَيُّوْم मौजूद थे और फ़रमा रहे थे : ऐ अबल हुसैन ! बिल्कुल न घबराना और न ही शोर मचाना। मैं ने कहा : "ठीक है, मैं शोर नहीं करूंगा, आप मेरे लिये दुआ़ फ़रमा दें।" उन्हों ने फ़रमाया : "जो मांगना चाहते हो, मांगो।" चुनान्चे, मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में तीन मरतबा दुआ़ की और उन्हों ने मेरी दुआ़ पर आमीन कहा। फिर वोह मेरी नज़रों से ओझल हो गए और दोबारा नज़र न आए।

जब मुझ से किसी ने मेरी तीन दुआ़ओं के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो मैं ने बताया : "मेरी पहली दुआ़ येह थी कि ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे नज़्दीक फ़क़्र को ऐसा मह़बूब बना दे कि दुन्या में मुझे इस से ज़ियादा मह़बूब कोई शै न हो। और दूसरी येह थी कि मुझे ऐसा न बनाना कि मेरी कोई रात इस ह़ालत में गुज़रे कि सुब्ह़ के लिये कोई चीज़ ज़ख़ीरा कर रखी हो।" और फिर ऐसा ही हुवा, कई साल गुज़र गए लेकिन मैं ने कोई चीज़ अपने पास ज़ख़ीरा कर के न रखी। और तीसरी दुआ़ येह थी : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जब तू अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को अपने दीदार की दौलते उ़ज़्मा से मुशर्रफ़ फ़रमाए तो मुझे भी उन औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی में शामिल फ़रमा लेना।"

मुझे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद है कि मेरी इन दुआ़ओं को ज़रूर पूरा फ़रमाएगा क्यूंकि इन पर एक वलिय्ये कामिल ने **आमीन** कहा था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है वोह अपने औलियाए किराम को जिस ह़ाल में चाहे रखे, चाहे तो ऐसा मश्हूर फ़रमाए कि चहारदांगे आ़लम में उन की विलायत के डंके बजने लगें और चाहे तो ऐसा पोशीदा रखे कि बिल्कुल क़रीब रहने वाले भी न पहचान सकें, बल्कि आ़म लोग उन को ह़क़ारत भरी नज़रों से देखें और अपने साथ रखना भी पसन्द न करें। वोह ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ अपने नेक बन्दों को जिस ह़ाल में भी रखे वोह उस से ख़ुश रहते हैं, कभी भी ह़र्फ़े शिकायत लब पर नहीं लाते। हमें चाहिये कि हम किसी भी मुसलमान को ह़क़ीर न समझें, नहीं मा'लूम, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किस का क्या मक़ाम हो, बा'ज़ परागन्दा ह़ाल, बिखरे बालों वाले बज़ाहिर कुछ भी नज़र न आने वाले उस मक़ाम पर फ़ाइज़ होते हैं कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उन के मुंह से निकली हुई बात को रद्द नहीं फ़रमाता।

बिखरे बाल, आज़ुर्दा सूरत, होते हैं कुछ अहले मह़ब्बत
"बद्र" मगर येह शान है उन की, बात न टाले रब्बुल इ़ज़्ज़त

उन के ख़ाली हाथों में दीनो दुन्या की दौलत होती है और जो उन से अ़क़ीदत रखता है उसे बहुत कुछ मिल जाता है। बिला शुबा वोह गुदड़ी के ला'ल होते हैं।)

न पूछ ! इन ख़िर्क़ा पोशों की इरादत हो तो देख इन को
यदे बैज़ा लिये बैठे हैं अपनी आस्तीनों में

हिकायत नम्बर : 318

नाफ़रमान बेटे का इ़ब्रत नाक अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عليه رحمة الله الدائم फ़रमाते हैं : मुझे किसी शख़्स ने एक इ़ब्रत नाक वाक़िआ़ कुछ यूं सुनाया : एक मरतबा जंगल बयाबान में मुझे रात हो गई, हर त़रफ़ सन्नाटा त़ारी था, दूर दूर तक आबादी का नामो निशान न था, कुछ दूर दो झोंपड़ियां नज़र आईं। मैं ने वहां पहुंच कर बुलन्द आवाज़ से सलाम किया। झोंपड़ी से एक नौजवान औ़रत और एक बुढ़िया बाहर आई। मैं ने कहा :

"मैं मुसाफ़िर हूं, क्या रात के खाने को कुछ मिल सकता है ?" नौजवान औ़रत ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस वीरान जंगल में हमारे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं जिस से ज़ियाफ़त की जा सके और न ही हमारे पास कोई ह़लाल जानवर है जिसे ज़ब्ह़ कर के तुम्हारी मेहमानी की जा सके।"

मैं ने कहा : "फिर तुम दोनों इस वीरान जंगल में किस त़रह़ गुज़र बसर करती हो ?" उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा, उस के नेक बन्दों और मुसाफ़िरों के सहारे हमारी ज़िन्दगी के दिन गुज़र रहे हैं।" येह सुन कर मैं वहां से कुछ दूर एक जगह ठहर गया। जब आधी रात गुज़र गई तो अचानक एक सम्त से गधे के चीखने की आवाज़ आने लगी। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सुब्ह़ तक वोह आवाज़ मुझे सुनाई देती रही, नींद मुझ से कोसों दूर थी। मैं ने वोह रात जाग कर गुज़ारी। सुब्ह़ होते ही मैं उस सम्त चल दिया जहां से आवाज़ आ रही थी, वहां पहुंचा तो एक अ़जीबो ग़रीब मन्ज़र को देख कर मैं ह़ैरान रह गया, वहां एक क़ब्र थी जिस में एक गधा गर्दन तक दफ़्न था। उस के सर और पीठ से मिट्टी हट चुकी थी, इस भयानक मन्ज़र को देख कर मुझ पर कपकपी त़ारी हो गई। मैं वहां से वापस आ गया और उन दोनों औ़रतों के पास पहुंच कर गधे और क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उन्हों ने कहा : "अगर तुम उस के मुतअ़ल्लिक़ न पूछो तो क्या ह़रज है ?" मैं ने कहा : "मैं उस भयानक मन्ज़र के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूर दरयाफ़्त करूंगा, बराए करम ! मुझे सूरते ह़ाल से आगाह करो।"

औ़रत ने कहा : "अच्छा ! अगर तुम सुनना ही चाहते हो तो सुनो ! खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह गधा जो तुम ने क़ब्र में दफ़्न देखा, वोह मेरा शोहर और इस बुढ़िया का बेटा था। क़सम है उस ज़ात की जिस ने गुज़श्ता रात तुम्हें येह मन्ज़र दिखाया ! मेरा येह शोहर अपनी मां का बहुत ज़ियादा नाफ़रमान था। मैं ने इस से ज़ियादा मां का नाफ़रमान दुन्या में कोई न देखा। जब भी इस की मां इसे किसी बुरी बात से मन्अ़ करती तो वोह उसे इस त़रह़ बद कलामी करता, और कहता : "दफ़्अ़ हो जा ! क्या गधी की त़रह़ चीख़ो पुकार कर रही है, जा ! मुझे तेरी बात नहीं सुननी।" आख़िरे कार दुख्यारी मां ने तंग आ कर कहा : "अल्लाह तआ़ला तुझे गधे की त़रह़ बना दे।" जब येह नाफ़रमान मर गया तो हम ने इसे दफ़्ना दिया। उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने हमें इस वीरान जंगल का मकीन बनाया ! जिस दिन हम ने इसे दफ़्नाया उसी दिन से येह गधे की शक्ल इख़्तियार कर गया। मां का नाफ़रमान और अपनी मां को गधी कहने वाला अब रोज़ाना अपनी क़ब्र में गधे की त़रह़ चीख़ता है और हर रात इस की क़ब्र से येह आवाज़ सुनाई देती है।" (الامان والحفیظ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को वालिदैन की नाफ़रमानी से मह़फ़ूज़ रखे। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! कितना बद नसीब है वोह शख़्स जो अपनी मां को बुरा भला कहे और वोह भी इस बात पर कि उसे बुरे काम से क्यूं मन्अ़ किया जा रहा है। ऐसे नाफ़रमानों का अन्जाम भी फिर ऐसा भयानक होता है कि ज़माने के लिये इ़ब्रत की अ़लामत बन जाता है। बा'ज़ अवक़ात इन्सान की इ़ब्रत के लिये बरज़ख़ के मनाज़िर ज़ाहिर कर दिये जाते हैं ताकि गुनाहों पर मुसिर रहने वाले इन हौलनाक मनाज़िर से इ़ब्रत ह़ासिल करें और तौबा की त़रफ़ माइल हों। वालिदैन का मक़ाम व मर्तबा दीने इस्लाम ने बहुत ज़ियादा मुअ़ज़्ज़म बनाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें वालिदैन की इत़ाअ़त का हुक्म दिया, बद बख़्त व नामुराद है वोह शख़्स जिस से उस के वालिदैन नाराज़ हों। वालिदैन की नाराज़ी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी है। वालिदैन से हुस्ने सुलूक की बारहा ताकीद की गई है बल्कि उन को "**उफ़**" तक कहने से मन्अ़ किया गया है। जो लोग वालिदैन की नाफ़रमानी करते हैं वोह आख़िरत में तो सज़ा के मुस्तह़िक़ हैं ही, लेकिन दुन्या में भी उन्हें निशाने इ़ब्रत बना दिया जाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें वालिदैन की नाफ़रमानी से मह़फ़ूज़ रखे और उन का मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बनाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हि़कायत नम्बर : 319

अ़क़्ल मन्द शहज़ादा

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मन्क़ूल है कि "बनी इस्राईल के एक बादशाह को कषरते माल व अवलाद और बहुत लम्बी उ़म्र अ़त़ा की गई। उस की अवलाद में येह आ़दते ह़सना थी कि जब भी इन में से कोई जवान होता ऊन का लिबास पहन कर पहाड़ों में चला जाता, दुन्यवी रौनक़ों को ख़ैरबाद कह कर दुर्वेशाना ज़िन्दगी इख़्तियार कर लेता, दरख़्तो के पत्ते और झाड़ियां खा कर अपना गुज़ारा करता और इसी ह़ालत में इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर जाता। सब शहज़ादों ने येही त़रीक़ा इख़्तियार किया। जब बादशाह की उ़म्र बहुत ज़ियादा हो गई और उस के हां बच्चे की विलादत हुई तो उस ने अपनी क़ौम को बुला कर कहा : "ऐ मेरी क़ौम ! देखो मेरी उ़म्र अब बहुत हो गई है, इस उ़म्र में मुझे बेटे जैसी ने'मत नसीब हुई, मैं तुम लोगों से जितनी मह़ब्बत करता हूं तुम ख़ूब जानते हो, मुझे डर है कि मेरा येह बेटा भी अपने दूसरे भाइयों का रास्ता इख़्तियार न कर ले, अगर ऐसा हुवा तो हमारे ख़ान्दान में से मेरे बा'द तुम्हारा कोई ह़ाकिम न रहेगा और फिर तुम हलाकत में पड़ जाओगे। अगर बेहतरी चाहते हो तो इस शहज़ादे को छोटी उ़म्र ही में संभाल लो, इसे दुन्यवी ने'मतों और आसाइशों की त़रफ़ माइल करो, अगर ऐसा करोगे तो शायद मेरे बा'द येह तुम्हारा ह़ाकिम बन जाए, जितना हो सके इस का दिल दुन्या में लगा दो।"

येह सुन कर लोगों ने कई मील लम्बा चोड़ा एक ख़ूब सूरत क़ल्अ़ा बनाया उस में दुन्यवी आसाइश का तमाम सामान शहज़ादे को मुहय्या किया। शहज़ादे ने कई साल उस वसीओ़ अ़रीज़ क़ल्ए़ की चार दीवारी में गुज़ार दिये यहां उसे हर त़रह़ की सहूलत मयस्सर थी। उस के सामने कोई ग़म व परेशानी की बात न की जाती। लोगों को उस से दूर रखा जाता, हर वक़्त ख़ुद्दाम उस की ख़िदमत पर मामूर रहते। एक मरतबा वोह घोड़े पर सुवार हो कर एक सम्त चल दिया जब आगे दीवार देखी तो ख़ादिमों से कहा : "मेरा गुमान है कि इस दीवार के पीछे ज़रूर एक नया जहां होगा वहां ज़रूर आबादी होगी मुझे यहां से बाहर निकालो ताकि मेरी मा'लूमात में इज़ाफ़ा हो सके और मैं लोगों से मुलाक़ात करूं।" जब शहज़ादे की येह ख़्वाहिश बादशाह को बताई गई तो बादशाह डर गया कि बाहर जा कर कहीं येह भी अपने भाइयों की त़रह़ दुर्वेशाना ज़िन्दगी इख़्तियार न कर ले। इसी ख़ौफ़ के सबब उस ने हुक्म दिया कि शहज़ादे को हर दुन्यवी खेल कूद का सामान मुहय्या करो जिस त़रह़ भी हो इसे दुन्यवी मशाग़िल में मसरूफ़ रखो ताकि इसे बाहर जाने का ख़याल ही न आए।

हुक्म की ता'मील हुई और शहज़ादे को दोबारा दुन्यवी ऐ़शो इ़शरत में उलझा दिया गया। इसी त़रह़ एक साल का अ़र्सा गुज़र गया। एक दिन वोह फिर दीवार की त़रफ़ गया और कहा : "अब तो मैं ज़रूर बाहर जा कर देखूंगा, मुझे जल्दी से इस दीवार के पार ले चलो। जब बादशाह को शहज़ादे की ज़िद का बताया गया तो उस ने न चाहते हुवे भी इजाज़त दे दी। लोग शहज़ादे को एक बेहतरीन सुवारी पर बिठा कर बाहर ले गए। सुवारी को सोने चांदी से ख़ूब मुज़य्यन किया गया, लोग उस के इर्द गिर्द नंगे पाउं चलने लगे। शहज़ादा गिर्दो पेश के मनाज़िर देखता हुवा आगे बढ़ रहा था कि यका यक उसे एक बहुत ही बीमार शख़्स नज़र आया, बीमारी की वजह से वोह इन्तिहाई लाग़रो कमज़ोर हो चुका था, पूछा : "इस को क्या हुवा?" लोगों ने बताया कि येह बीमारी में मुब्तला कर दिया गया है। शहज़ादे ने फिर पूछा : "क्या इस की त़रह़ दूसरे लोग भी बीमार होते हैं? क्या तुम्हें भी बीमारी लाह़िक़ होने का ख़ौफ़ लगा रहता है?" लोगों ने कहा : "हां।" शहज़ादे ने पूछा : क्या मैं जिस सल्त़नत में हूं वहां भी येह बीमारी आ सकती है?" कहा : "हां! बिल्कुल आ सकती है।" अ़क़्ल मन्द शहज़ादे ने कहा : "ऐ लोगो! तुम्हारी येह दुन्यवी ऐ़शो इ़शरत बद मज़ा है।" येह कह कर शहज़ादा ग़म व अलम में वापस लौट आया। जब उस की येह ह़ालत बादशाह को बताई गई तो उस ने कहा : "शहज़ादे को हर त़रह़ का सामाने लह्व लअ़ब मुहय्या करो, इसे दुन्यवी आसाइशों में ऐसा मगन कर दो कि इस के दिल से सब रन्जो मलाल जाता रहे।"

लोग शहज़ादे को दुन्यवी मशाग़िल में उलझाने की अनथक कोशिश करते रहे। इसी त़रह़ एक साल का अ़र्सा गुज़र गया। शहज़ादे ने फिर बाहर जाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। पहले की त़रह़ इस मरतबा भी हीरे जवाहिरात और सोने चांदी से मुरस्सअ़ सुवारी पर सुवार कर के उसे क़ल्ए़ से बाहर ले जाया गया। शहज़ादा मुख़्तलिफ़ मनाज़िर देखता हुवा आगे बढ़ता जा रहा था। आगे पीछे ख़ादिमों और सिपाहियों का हुजूम था, यका यक एक बुढ्ढे पर नज़र पड़ी, बुढ़ापे ने उस का बुरा ह़ाल कर रखा था, मुंह से राल टपक रही थी, जिस्म कांप रहा था। शहज़ादे ने जब उस की येह ह़ालत देखी तो पूछा : "इसे क्या हुवा?" लोगों ने कहा : "हुज़ूर! अय्यामे जवानी गुज़ार कर अब येह बुढ़ापे की ज़द में आ चुका है।" शहज़ादे ने कहा : "क्या दीगर लोग भी इस मुसीबत में गिरिफ़्तार हुवे हैं? क्या हर शख़्स बुढ़ापे से डरता है?" लोगों ने कहा : "हम में से हर शख़्स बुढ़ापे से डरता है।" शहज़ादे ने कहा : "तुम्हारी येह ऐ़शो इ़शरत कितनी बद मज़ा और कैसी भयानक है कि किसी एक को भी इस के फ़साद से छुटकारा नहीं।"

येह कह कर शहज़ादा मग़मूम व परेशान वापस अपने क़ल्ए़ की त़रफ़ आ गया। बादशाह को जब शहज़ादे की येह कैफ़िय्यत बताई गई तो उस ने फिर वोही हुक्म दिया कि इसे दुन्यवी आसाइशों में उलझा दो ताकि ग़म व मलाल इस के दिल से जाता रहे। एक साल फिर शहज़ादे ने क़ल्ए़ में गुज़ार दिया, उस के बे क़रार दिल में फिर बाहर जाने की ख़्वाहिश उभरी। चुनान्चे, ख़ादिमों और सिपाहियों के हुजूम में उसे बाहर ले जाया गया। रास्ते में कुछ लोग एक जनाज़ा अपने

कन्धों पर उठा कर ले जा रहे थे, शहज़ादे ने लोगों से पूछा : "येह शख़्स चारपाई पर इस त़रह़ क्यूं लैटा हुवा है ?" लोगों ने कहा : "येह शख़्स मौत का शिकार हो चुका है।" शहज़ादे ने पूछा : "मौत क्या चीज़ है ? मुझे उस शख़्स के पास ले चलो।" शहज़ादे को मुर्दे के पास ले जाया गया तो कहा : "लोगो ! इस से कहो कि येह बैठ जाए।" लोगों ने कहा : "हु़ज़ूर ! इस में बैठने की त़ाक़त नहीं।" शहज़ादे ने कहा : "इस से कहो कि बात करे।" लोगों ने कहा : "मौत ने इस की ज़बान बन्द कर दी है, अब येह एक लफ़्ज़ भी नहीं बोल सकता।" शहज़ादे ने फिर पूछा : "अब तुम इसे कहां ले जा रहे हो ?" लोगों ने कहा : "क़ब्र में दफ़्ना ने के लिये ले जा रहे हैं।" शहज़ादे ने पूछा : "इस के बा'द फिर क्या होगा ?"लोगों ने कहा "मौत के बा'द "ह़श्र" होगा।" शहज़ादे ने पूछा : "येह ह़श्र क्या है ?" लोगों ने कहा : "ह़श्र वोह दिन है कि उस दिन सब लोग ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर खड़े होंगे, वोह ख़ालिक़े लमयज़ल हर एक को उस के अच्छे बुरे आ'माल का बदला देगा और उस दिन हर शख़्स से ज़र्रे ज़र्रे का हि़साब लिया जाएगा।" शहज़ादे ने कहा : "क्या इस दुन्या के इ़लावा भी कोई ऐसा जहान है जहां तुम दुन्या को छोड़ कर चले जाओगे ?" लोगों ने कहा : "हां ! दुन्या में जो भी आया उसे आख़िरत की त़रफ़ ज़रूर कूच करना है।"

येह सुन कर शहज़ादा घोड़े से नीचे गिर कर तड़पने लगा, वोह रोता जाता और अपने चेहरे को मिट्टी से रगड़ता जाता, फिर उस ने रोते हुवे कहा : "ऐ लोगो ! मुझे येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हो गया है कि जिस त़रह़ येह शख़्स मौत का शिकार हुवा, इसी त़रह़ मुझे भी अचानक मौत आ जाएगी और मैं देखता ही रह जाऊंगा। उस ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की क़सम जो बरोज़े क़ियामत तमाम लोगों को जम्अ़ फ़रमा कर जज़ा व सज़ा देगा ! मेरे और तुम्हारे दरमियान येह आख़िरी अ़हद है, आज के बा'द तुम मुझ से कभी न मिल सकोगे। लोगों ने कहा : "हम आप को वापस आप के वालिद के पास ले जाएंगे, उन की इजाज़त के बिग़ैर आप कहीं भी नहीं जा सकते।" फिर शहज़ादे को बादशाह के पास इस ह़ालत में ले जाया गया कि उस के मुंह से ख़ून बह रहा था, बादशाह ने शहज़ादे से कहा : "मेरे लाल ! तुम इतने ख़ौफ़ज़दा क्यूं हो और येह रोना किस लिये ?" शहज़ादे ने कहा : "अब्बा हु़ज़ूर ! मैं उस दिन के ख़ौफ़ से रो रहा हूं जिस दिन हर एक को उस के अच्छे, बुरे आ'माल का बदला दिया जाएगा।" फिर शहज़ादे ने ऊन का लिबास मंगवा कर पहना और कहा : "आज रात मैं इस मह़ल को छोड़ कर चला जाऊंगा।" फिर वाक़ेई आधी रात को वोह समझदार शहज़ादा ताजो तख़्त ठुकरा कर दुर्वेशाना लिबास पहने आख़िरत की तय्यारी के लिये जंगल की त़रफ़ जा रहा था, जब क़स्रे शाही से निकलने लगा तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस त़रह़ इल्तिजा की :

"ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से ऐसी ज़िन्दगी मांगता हूं जिस में मेरी साबिक़ा ज़िन्दगी की आसाइशों में से कुछ न हो और मैं पसन्द करता हूं कि चाहे दुन्या इधर से उधर हो जाए मगर मैं लम्ह़ा भर के लिये भी दुन्यवी आसाइशों की त़रफ़ नज़र न करूं।" फिर वोह शहज़ादा तमाम दुन्यवी आसाइशों और ने'मतों को ख़ैरबाद कह कर उख़्रवी ने'मतों के हु़सूल के लिये जंगल की त़रफ़ रवाना हो गया।"

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस हिकायत को नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : "येह शहज़ादा गुनाहों के ख़ौफ़ से दुन्यवी ने'मतों को छोड़ कर चला गया हालांकि इसे मा'लूम भी न था कि किस गुनाह की कितनी सज़ा है ? उस शख़्स का क्या ह़ाल होगा जो दर्दनाक सज़ाएं जानते हुवे भी गुनाहों से किनारा कशी नहीं करता, न गुनाहों पर शर्मिन्दा होता है और न ही तौबा की त़रफ़ माइल होता है, अल्लाह तआ़ला हमें गुनाहों से नफ़रत अ़त़ा फ़रमा कर अपना डर और ख़ौफ़ अ़त़ा फ़रमाए ।" (آمین بجاہ النبی الامین ﷺ)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! जो आख़िरत के मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र करता है उसे कामयाबी की राहें नज़र आ ही जाती हैं । सच्चे दिल से जो भी काम किया जाए उस के अषरात बहुत जल्द मुरत्तब होते हैं । अ़क़्ल मन्द शहज़ादे ने लोगों के मुख़्तलिफ़ अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र किया तो उसे फ़लाह़ का रास्ता मिल गया । हमें भी चाहिये कि अपने इर्द गिर्द के माह़ोल से इब्रत ह़ासिल करें । इस नैरंगिये दुन्या से दिल न लगाएं । येह बज़ाहिर तो बड़ी मुनक़्क़श लेकिन ह़क़ीक़त में बड़ी ख़ारदार (कांटेदार) व बेकार है । अखयारों के लिये इस दुन्या में हर त़रफ़ इब्रत ही इब्रत है मगर क्या करें दुन्या की रंगीनियों ने आंखों पर ग़फ़्लत का पर्दा डाल रखा है ।

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है
जहां में हैं इब्रत के हर सू नुमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने — जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मौत से पहले इस की तय्यारी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । (آمین بجاہ النبی الامین ﷺ)

हिकायत नम्बर : 320 अह़कामाते इलाही को पामाल करने का अन्जाम

इब्राहीम बिन ईसा बिन अबू जा'फ़र मन्सूर से मन्क़ूल है कि मैं ने अपने चचा सलमान बिन अबू जा'फ़र मन्सूर को येह कहते हुवे सुना : एक मरतबा ख़लीफ़ा मन्सूर के दरबार में इस्माईल बिन अ़ली बिन सालेह़ बिन अ़ली, सलमान बिन अ़ली और इसा बिन अ़ली मौजूद थे । मैं भी वहीं था कि बनू उमय्या की हुकूमत के ज़वाल का तज़्किरा छिड़ गया । अ़ब्दुल्लाह ने बनू उमय्या के साथ जो सुलूक किया उस का भी ज़िक्र हुवा, ख़लीफ़ा ने बनू उमय्या के मुतअ़ल्लिक़ कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन पर एह़सान फ़रमाया यहां तक कि उन्हों ने हमारी हुकूमत की त़रफ़ नज़र उठाई जैसा कि हमारी नज़र उन की हुकूमत की त़रफ़ उठी, जैसे हम उन की त़रफ़ राग़िब हुवे ऐसे ही वोह भी हमारी त़रफ़ राग़िब हुवे, क़सम है मुझे अपनी जान की ! उन्हों ने ख़ुश बख़्ती की ज़िन्दगी गुज़ारी लेकिन फ़क़ीरों की ह़ालत में मरे ।" इस्माईल बिन अ़ली जो दरबार में ही मौजूद था उस ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा ! बेशक अ़ब्दुल्लाह बिन मरवान बिन मुह़म्मद आप की क़ैद में है इस के पास मुल्के "**नौबा**" के बादशाह का अ़जीबो ग़रीब क़िस्सा है, इसे बुला कर वोह वाक़िआ सुनें ।" ख़लीफ़ा ने मुसय्यब को हुक्म दिया कि उ़बैदुल्लाह बिन मरवान को हमारे सामने ह़ाज़िर किया जाए ।

हुक्म की ता'मील हुई, मज़्बूत़ व भारी ज़न्जीरों में जकड़े एक नौजवान को ख़लीफ़ा के सामने लाया गया। नौजवान की गर्दन में बहुत वज़्नी तौक़ था उस ने आते ही ब आवाज़े बुलन्द "السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ" कहा। ख़लीफ़ा मन्सूर ने कहा : "ऐ उ़बैदुल्लाह ! सलाम का जवाब देना अम्नो सलामती देना है और मेरा नफ़्स इस बात को पसन्द नहीं करता कि तुझे अम्नो सलामती दी जाए। तू ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा मेरे सामने खड़ा रह। फिर ख़ुद्दाम ख़लीफ़ा के लिये तक्या लाए, ख़लीफ़ा टेक लगा कर बैठ गया और कहा : "ऐ उ़बैदुल्लाह ! मुझे पता चला है कि तेरे पास "**नौबा**" के बादशाह का कोई अ़जीबो ग़रीब क़िस्सा है, बता ! वोह क्या है ?" उ़बैदुल्लाह बिन मरवान ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा ! उस परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने आप को मस्नदे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ किया ! लोहे की येह मज़्बूत़ व भारी ज़न्जीरें वुज़ू व त़हारत का पानी लगने की वजह से ज़ंग आलूद हो कर बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ देह हो गई हैं, इन के होते हुवे मैं किस त़रह़ कलाम कर सकूंगा।" ख़लीफ़ा ने उसे बेड़ियों और तौक़ से आज़ाद करा दिया।

उ़बैदुल्लाह ने कहा : "हां ! ऐ ख़लीफ़ा ! अब मैं आप को "नौबा" के बादशाह का वाक़िआ़ सुनाता हूं, सुनिये ! जब अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ली ने हम पर ह़म्ला किया तो उस का मत़्लूबे अव्वल मैं ही था क्यूंकि अपने वालिद मरवान बिन मुह़म्मद के बा'द मैं ही उन का वलिये अ़हद था। चुनान्चे, मैं ने ख़ज़ाने से दस हज़ार दीनार लिये, दस ख़ादिमों को अपने साथ लिया हर एक को हज़ार हज़ार दीनार दे कर अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा सुवारियों पर बिठाया। मज़ीद पांच ख़च्चरों पर क़ीमती सामान रखा फिर इन सब को ले कर मैं सल्त़नते "**नौबा**" की त़रफ़ भाग गया। तीन दिन मुसलसल सफ़र जारी रहा बिल आख़िर "**नौबा**" के क़रीब एक वीरान क़ल्ए़ में पहुंच कर मैं ने ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि इसे अच्छी त़रह़ साफ़ करो फिर बेहतरीन क़ालीन बिछा दो। कुछ ही देर में बेहतरीन क़ालीन बिछा दिये गए।

मैं ने अपने सब से ज़ियादा बा ए'तिमाद दो अ़क़्ल मन्द ख़ादिम को बुला कर कहा : "तुम "**नौबा**" के बादशाह के पास जाओ, उसे मेरा सलाम कहना और मेरे लिये अमान त़लब करना, फिर कुछ अनाज वग़ैरा शहर से ख़रीद लाना।" ख़ादिम मेरा पैग़ाम ले कर बादशाह के पास चला गया, काफ़ी देर गुज़र गई लेकिन वोह वापस न आया। मुझे उस के बारे में बद गुमानी होने लगी, फिर कुछ देर बा'द वोह आया तो उस के साथ एक और शख़्स भी था। उस ने निहायत अदबो ता'ज़ीम से पेश आते हुवे मुलाक़ात की, फिर मेरे सामने बैठ गया और कहा : "हमारे बादशाह ने आप को सलाम कहा है, वोह पूछते हैं कि तुम्हें हमारे मुल्क में आने के लिये किस चीज़ ने मजबूर किया। क्या हम से जंग का इरादा रखते हो या हमारे मज़्हब की मह़ब्बत तुम्हें यहां खींच लाई या तुम पनाह चाहते हो ?" मैं ने उस क़ासिद से कहा : "अपने बादशाह के पास जाओ और उस से कहो : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं कि मैं तुम से जंग करूं, बाक़ी रहा दीनो मज़्हब तब्दील करने का मुआ़मला तो मैं कभी भी अपना दीन छोड़ कर तुम्हारा दीन क़बूल न करूंगा, हां मैं पनाह का त़लबगार हूं, अगर मुझे पनाह मिल जाए तो एह़सान होगा।"

क़ासिद येह पैग़ाम ले कर बादशाह के पास गया फिर वापस आ कर कहा : "हमारे बादशाह ने आप को सलाम कहा है और कहा है कि कल मैं खुद तुम्हारे पास आऊंगा, तुम अपने दिल में किसी क़िस्म का ख़दशा पैदा न होने देना और न ही ग़ल्ला वग़ैरा ख़रीदना जिस चीज़ की तुम्हें ज़रूरत है वोह तुम्हारे पास पहुंचा दी जाएगी।" बादशाह का येह पैग़ाम सुन कर मैं ने अपने ख़ादिमों को हुक्म दिया कि बेहतरीन क़िस्म के क़ालीन बिछावा दो और उन क़ालिनों पर बादशाह और मेरे लिये एक जैसी निशस्त गाह बनाओ, कल मैं खुद बादशाह के इस्तिक़्बाल के लिये जाऊंगा। ख़ादिमों ने जितना हो सका ख़ूब सजावट की, दूसरे दिन मैं बादशाह का इन्तिज़ार कर रहा था कि ख़ादिमों ने उस के आने की इत्तिलाअ़ दी। मैं एक ऊंची जगह खड़ा हो कर बादशाह को देखने लगा। मैं ने देखा कि एक शख़्स दो मोटी चादरों में मलबूस नंगे पाऊं पैदल ही हमारी त़रफ़ आ रहा था उस के साथ दस सिपाही थे तीन उस के आगे और सात पीछे पीछे चल रहे थे। मैं ने जब बादशाह को इस ह़ालत में देखा तो वोह मुझे बहुत मा'मूली सा आदमी लगा, मेरे दिल में आया कि उस को क़त्ल कर दूं और खुद उस की जगह ले लूं। जब वोह क़रीब आया तो मैं ने एक बहुत बड़ा लश्कर देखा, मैं ने पूछा : "येह क्या है।" कहा : "घोड़ों का लश्करे जर्रार है।"

ऐ ख़लीफ़ा ! मैं ने देखा कि कुछ ही देर बा'द दस हज़ार घुड़सुवार अस्लहे से लैस हमारे क़ल्ए़ की त़रफ़ आए और उसे चारों त़रफ़ से घेर लिया, फिर फ़क़ीराना लिबास में मलबूस वोह बादशाह अन्दर आया और पूछा : "वोह शख़्स कहां है ?" तरजुमान ने मेरी त़रफ़ इशारा किया। बादशाह ने मेरी त़रफ़ देखा तो मैं अदब बजा लाने के लिये उस की त़रफ़ दौड़ा। बादशाह ने मेरा हाथ चूम कर अपने सीने पर रख लिया, फिर अपने पाउं से क़ालीन लपेटा और ख़ाली ज़मीन पर बैठ गया। मैं ने तरजुमान से कहा : "سُبۡحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम ने येह तमाम चीज़ें बादशाह के लिये बिछवाई हैं, फिर येह क़ालीन पर क्यूं नहीं बैठ रहा ? जब तरजुमान ने बादशाह से पूछा तो उस ने जवाब दिया : "मैं बादशाह हूं और हर बादशाह पर ह़क़ है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी को पेशे नज़र रखते हुवे उस के सामने तवाज़ोअ़ इख़्तियार करे।"

बादशाह काफ़ी देर तक ज़मीन को अपनी उंगली से कुरेदता रहा और कुछ सोचता रहा। फिर सर ऊपर उठाया और कहा : "तुम से येह मुल्क क्यूं छिन गया ? तुम से इक्तिदार क्यूं जाता रहा ? ह़ालांकि दूसरे लोगों की निस्बत तुम अपने नबी से ज़ियादा क़ुर्बत रखते हो।" मैं ने कहा : "ऐ बादशाह ! एक ऐसा शख़्स आया जो हमारी निस्बत हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़ियादा क़रीबी था उस ने हम पर ह़म्ला किया तो हमारा इक्तिदार जाता रहा और हम ला वारिष हो गए। अब मैं भाग कर तुम्हारे पास पनाह लेने आया हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बा'द मुझे तुम्हारा ही सहारा है।" बादशाह ने कहा : "तुम लोग शराब क्यूं पीते हो ? ह़ालांकि तुम्हारी किताब (या'नी क़ुरआने करीम) में इस को ह़राम ठहराया गया है।" मैं ने कहा "येह काम हमारे ग़ुलामों, अ़जमियों और दूसरे लोगों का है जो हमारी सल्त़नत में हमारी रिज़ामन्दी के बिग़ैर घुस आए हैं।" बादशाह ने कहा : "तुम लोग सोने चांदी और रेशम से मुज़य्यन सुवारियों पर क्यूं सुवार होते हो ? ह़लांकि तुम्हारे मज़हब में येह चीज़ें जाइज़ नहीं।" मैं ने कहा : "येह भी हमारे ग़ुलामों और अ़जमी लोगों का किया धरा है, वोह ही ऐसे नाजाइज़ उमूर में मुब्तला हैं।"

बादशाह ने फिर कहा : "तुम लोग कहीं सफ़र पर या शिकार के लिये जाते वक़्त जब किसी वादी से गुज़रते हो तो उस के रिहाइशियों को क्यूं परेशान करते हो और उन पर बे जा टेक्स क्यूं लगाते हो ? जब तक उन की फ़स्लों को अपनी सुवारियों से रौंद न डालो तुम्हें सुकून नहीं मिलता, निस्फ़ दिरहम के लिये भी ख़ूब नुक़्सान करते और फ़साद बरपा करते हो, आख़िर ऐसा क्यूं ? ह़ालांकि तुम्हारे दीन में ऐसा फ़साद ह़राम किया गया है।" मैं ने वोही जवाब दिया कि येह सब काम हमारे ख़ुद्दाम और ग़ुलाम वग़ैरा करते हैं।"

बादशाह ने कहा : "नहीं, बल्कि तुम लोगों ने उन चीज़ों को ह़लाल समझ लिया है जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम फ़रमाया था, जिन बातों से उस ने रोका तुम ने वोही इख़्तियार कर लीं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम से इ़ज़्ज़त छीन कर ज़िल्लत का लिबास पहना दिया। ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का इन्तिक़ाम अभी तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ पूरा नहीं हुवा। मुझे डर है कि अगर तुम मेरे मुल्क में रहे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब आया तो कहीं वोह तुम्हारे साथ मुझे भी अपनी लपेट में न ले ले। बेशक अ़ज़ाब कह कर नहीं आता, जब वोह आएगा तो सब को अपनी लपेट में ले लेगा, सुनो ! मेहमान नवाज़ी का ह़क़ तीन दिन ही होता है तीन दिन बा'द तुम यहां से चले जाना तुम्हें ज़रूरत है वोह ले लो। अगर तीन दिन के बा'द यहां रुकोगे तो तुम्हारा सारा सामान छीन लूंगा।" इतना कह कर बादशाह वहां से चला गया। मैं तीन दिन वहां ठहर कर वापस आया तो मुझे क़ैद कर के आप के पास भेज दिया गया। अब मैं आप के सामने मौजूद हूं, ज़िन्दगी से ज़ियादा अब मुझे मौत प्यारी है, काश ! मुझे मौत आ जाए। उ़बैदुल्लाह बिन मरवान की येह इ़ब्रतनाक रूदाद सुन कर ख़लीफ़ा मन्सूर को उस पर तरस आने लगा जब उसे आज़ाद करना चाहा तो इस्माईल बिन अ़ली ने मन्अ़ करते हुवे कहा : "इस की गर्दन में बनू उमय्या की बैअ़त है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "फिर तुम्हारी क्या राए है ?" इस्माईल बिन अ़ली ने कहा : "इसे हमारे क़ैद ख़ानों में ही रहने दें और जिस सज़ा का येह मुस्तह़िक़ है वोह इस पर जारी कर दें।"

रावी का बयान है : "फिर उ़बैदुल्लाह बिन मरवान को वापस क़ैद ख़ाने में भेज दिया गया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे मा'लूम नहीं कि वोह मन्सूर की ख़िलाफ़त में ही मर गया या महदी ने उसे आज़ाद कर दिया।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को ज़ालिमों से मह़फ़ूज़ रखे और दुन्या व आख़िरत में हमारे साथ अ़फ़्वो करम वाला मुआ़मला फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

ह़िकायत नम्बर : 321 ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی की हमशीरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़म्बल (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمَا) से मन्क़ूल है कि एक दिन मैं अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ अपने घर में था कि किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। मेरे वालिद ने फ़रमाया : "बेटे, जाओ ! देखो ! कौन है ?" मैं बाहर गया तो एक बा पर्दा ख़ातून खड़ी थी उस ने मुझ से कहा : "ऐ अ़ब्दुल्लाह !

अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मेरे अन्दर आने की इजाज़त त़लब करो।'' मैं वालिद साह़िब के पास आया और उस ख़ा़तून के मुतअ़ल्लिक़ बताया तो उन्हों ने इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी। वोह आई और सलाम कर के बैठ गई फिर पूछा : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! मैं रात को चराग़ की रोशनी में सूत कातती हूं, जब कभी चराग़ बुझ जाए तो चांद की रोशनी में भी सूत कात लेती हूं, क्या सूत फ़रोख़्त करते वक़्त ख़रीदार के सामने येह ज़ाहिर कर देना मुझ पर लाज़िम है कि येह सूत चांद की रोशनी में तय्यार किया गया है और येह चराग़ की रोशनी में ?''

मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''अगर आप इन दोनों ऊनों में फ़र्क़ कर सकती हैं तो ज़रूरी है कि दोनों को अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा फ़रोख़्त करें।'' ख़ा़तून ने फिर सुवाल किया : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! क्या शिद्दते मरज़ की वजह से मरीज़ का कराहना या आहें भरना शिकवा कहलाएगा ?'' फ़रमाया : ''मैं उम्मीद करता हूं कि येह शिकवा नहीं, लेकिन तमाम ग़मों और मुसीबतों की फ़रयाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में की जाती है।'' मुत्तक़ी ख़ा़तून रुख़्सत हो गई। मेरे वालिद ने मुझ से फ़रमाया : ''मेरे बेटे ! मैं ने आज तक ऐसा शख़्स नहीं देखा जिस ने इस ख़ा़तून की मिष्ल सुवाल किया हो। जाओ ! देखो येह ख़ा़तून कौन है और कहां रहती है ?'' मैं उस के पीछे पीछे गया तो देखा कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی के घर में दाख़िल हो गई वोह आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की हमशीरा (बहन) थी। मैं ने वापस आ कर वालिद साह़िब को बताया तो उन्हों ने फ़रमाया : ''बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی की हमशीरा के इ़लावा कोई और औ़रत इतनी मुत्तक़ी व परहेज़गार नहीं हो सकती।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''हमें नहीं मा'लूम कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی की तीन बहनों ''**ज़ुबिदा, मुज़ग़ा, मुख़्ख़ा**'' में से येह कौन सी थी। ज़ुबिदा को उम्मे अ़ली कहा जाता था, मुज़ग़ा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से उ़म्र में बड़ी थी और आप की ज़िन्दगी ही में इस का इन्तिक़ाल हो गया था। इस के विसाल पर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत रोए और बहुत ग़मगीन हुवे। जब इतने ज़ियादा रन्जो मलाल का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : ''मैं ने बा'ज़ किताबों में पढ़ा है कि जब बन्दा अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में सुस्ती करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस की सब से ज़ियादा मह़बूब शै से मह़रूम कर देता है। मेरी येह हमशीरा मुझे दुन्या में सब से ज़ियादा प्यारी थी, अब वोह मुझ से जुदा हो गई।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 322

तक़्वा हो तो ऐसा हो......!

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अह़नफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि ''मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को येह फ़रमाते हुवे सुना : ''एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی की हमशीरा ह़ज़रते सय्यिदतुना ''मुख़्ख़ा'' رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا मेरे वालिद के पास

आई और पूछा : "मेरे पास दो दानिक़ (या'नी दिरहम का छटा हिस्सा) थे मैं ने इन का ऊन ख़रीद कर काता और निस्फ़ दिरहम का बेच दिया। मेरा खाने पीने का पूरे हफ़्ते का ख़र्च एक दानिक़ है। हुवा यूं कि ह़ाकिमे शहर इब्ने त़ाहिर हमारे घर के क़रीब से गुज़रा उस के साथ मश्अ़लें भी थीं। हमारे घर के क़रीब खड़ा हो कर वोह चन्द कारन्दों से गुफ़्त्गू करने लगा। मैं ने इन मश्अ़लों की रोशनी में कुछ ऊन कात लिया था। जब ह़ाकिम वहां से चला गया तो मेरे दिल में येह ख़याल आया कि "ह़ाकिमे शहर की मश्अ़लों की रोशनी में काती हुई ऊन का ह़िसाब देना होगा।" बस इस ख़याल के आते ही मैं परेशान हो गई, अब आप के पास अपना मस्अला ले कर आई हूं मुझे इस परेशानी से नजात दिलाएं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की परेशानी दूर फ़रमाए। मुझे बताइयें कि अब मैं इस ऊन की क़ीमत का क्या करूं।" मेरे वालिदे मोह़तरम ने फ़रमाया : "तुम दो दानिक़ रख लो और नफ़्अ़ छोड़ दो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस नफ़्अ़ के बदले तुम्हें अच्छा बदला अ़त़ा फ़रमाएगा। येह सुन कर वोह चली गई।"

मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम से कहा : "हुज़ूर ! अगर आप उसे येह कह देते कि इस रोशनी में जितना ऊन काता वोह अ़लाहिदा कर लो, बाक़ी ऊन तुम्हारे लिये जाइज़ है तो क्या ह़रज था।" फ़रमाया : "बेटे ! उस ख़ातून का सुवाल इस तावील का एह़तिमाल नहीं रखता था। फिर फ़रमाया : "तुम जानते हो, वोह कौन थी ?" मैं ने कहा : "हां ! वोह ज़माने के मश्हूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی की हमशीरा "मुख़्ख़ा" थी।" फ़रमाया : "जभी तो वोह येह मस्अला पूछने आई थी। वाक़ेई ऐसी अ़ज़मत व शान वाली औ़रत बिशर जैसे वली की बहन ही हो सकती है।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 323 ह़ज़रते ईसा बिन ज़ाज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बख़्शिश

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन राहिब علیہ رحمۃ اللہ الغالب से मन्क़ूल है कि "ह़ज़रते सय्यिदतुना **मिस्कीना** رَحْمَةُ اللهِ تعالیٰ عَلَيْهَا इजतिमाए़ ज़िक्र में पाबन्दी से शिर्कत किया करती थीं। इन के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने इन्हें ख़्वाब में देखा तो कहा : "ऐ मिस्कीना ! मरह़बा।" मिस्कीना ने कहा : "ऐ अ़म्मार ! तुम्हारा भला हो, मैं मिस्कीन नहीं अब तो बहुत ज़ियादा ग़ना मिल चुका है, मोह़ताजी ख़त्म हो गई और कुशादगी आ चुकी है।" मैं ने कहा : "अच्छा ! इन बातों को छोड़ो अपना ह़ाल बयान करो, तुम्हें क्या क्या ने'मतें अ़त़ा की गईं ?" मिस्कीना ने कहा : "तुम उस से सुवाल कर रहे हो जिसे जन्नत अपनी कसीर ने'मतों के साथ अ़त़ा कर दी गई है। अब वोह जहां चाहे जन्नत के दरख़्तों के साए में रहे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار का बयान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की येह नेक बन्दी हमारे साथ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन ज़ाज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان की मह़फ़िले ज़िक्र में ह़ाज़िर हुवा करती थी। मैं ने पूछा : "ऐ मिस्कीना ! ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन ज़ाज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के साथ क्या मुआ़मला किया गया ?" येह सुन कर वोह हंसने लगी और दो अ़रबी अश्आ़र पढ़े जिन का मफ़्हूम येह है :

"उन्हें खूब सूरत व बेश बहा जन्नती लिबास पहनाया गया। जन्नती खुद्दाम हाथों में आबख़ूरे लिये हर वक़्त उन के इर्द गिर्द मौजूद रहते हैं। फिर उन्हें जन्नती ज़ेवर से आरास्ता किया गया और कहा गया : "ऐ क़ारी ! तिलावत कर, ब ख़ुदा तुझे तेरे रोज़ों ने छुटकारा दिला दिया।"

रावी कहते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन ज़ाज़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَنَّان आख़िरी उ़म्र तक इस कषरत से रोज़े रखते रहे कि आप की कमर बिल्कुल झुक गई और आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की आवाज़ बन्द हो गई। इन की येह इ़बादत व रियाज़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ऐसी मक़्बूल हुई कि मग़्फ़िरत व बख़्शिश का सबब बन गई।"

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم﴿*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ नफ़्ली इ़बादत का भी ख़ूब एहतिमाम करते थे। जैसा कि हम ने अभी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन ज़ाज़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَنَّان के बारे में पढ़ा कि वोह कषरत से नफ़्ली रोज़े रखा करते थे। हमें भी चाहिये कि वक़्तन फ़ वक़्तन नफ़्ली रोज़े रख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा त़लब करें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें आ'माले सालेह़ा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, अपनी रिज़ा वाले कामों पर गामज़न फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। अगर हम चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में थोड़ी सी मशक़्क़त बरदाश्त कर के फ़र्ज़ इ़बादत के साथ साथ नफ़्ली इ़बादत पर भी मुवाज़बत (مُوَاظَبَت) या'नी हमेशगी इख़्तियार करते रहे तो اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जन्नत में ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की त़रफ़ से हमारी मेहमानी की जाएगी। जिन ख़ुश नसीबों के लिये "نُزُلًا مِّنۡ غَفُوۡرٍ رَّحِیۡمٍ" (پ۲۴، حٰمٓ السجدة ۳۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मेहमानी बख़्शने वाले मेहरबान की त़रफ़ से। का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुनाया गया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी उन में शामिल फ़रमाए। हम भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद लगाए इस यौमे ईद के मुन्तज़िर हैं। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा। (آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم)

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का — ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

हिकायत नम्बर : 324

गाए पर टेक्स

ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन मुह़म्मद बिन साइब कल्बी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی अपने वालिद से नक़्ल करते हैं : "एक मरतबा शाहे फ़ारस (या'नी ईरान का बादशाह) अपने चन्द हमराहियों के साथ शिकार के लिये निकला। घने जंगल में अचानक एक शिकार नज़र आया, बादशाह ने घोड़ा शिकार के पीछे लगा दिया काफ़ी दूर तक पीछा करने के बा वुजूद बादशाह उस जानवर का शिकार करने में नाकाम रहा। वोह जानवर के पीछे इतनी तेज़ी से आया कि उसे मा'लूम ही न हो सका

कि मैं अपने हमराहियों से बहुत दूर वीरान जंगल में एक अन्जानी जगह पहुंच चुका हूं। आहिस्ता आहिस्ता शाम अपने साए गहरे कर रही थी फिर यका यक आस्मान पर सियाह बादल छा गए और कुछ ही देर बा'द मुसला धार बारिश बरसने लगी। बादशाह किसी महफ़ूज़ जगह की तलाश में एक सम्त चल दिया। कुछ दूर एक झोंपड़ी नज़र आई जल्दी से वहां पहुंचा तो एक बुढ़ी औरत दरवाज़े पर बैठी थी। बादशाह ने कहा : "मैं मुसाफ़िर हूं, क्या इस अन्धेरी व तूफ़ानी रात में मुझे तुम्हारी झोंपड़ी में पनाह मिल सकती है ?" बुढ़ियां ने कहा : "आज रात आप हमारे मेहमान हैं, आइये ! अन्दर तशरीफ़ ले आइये।"

बादशाह अपना घोड़ा ले कर बुढ़िया के साथ उस की झोंपड़ी में दाख़िल हो गया। कुछ ही देर बा'द बुढ़िया की बेटी चन्द गाएं ले कर झोंपड़ी में दाख़िल हुई। वोह दिन भर अपने जानवरों को चरागाह में चराती और शाम को वापस आ जाती, सारी ही गाएं बहुत फ़रबा और दूध वाली थीं। बादशाह ने जब ऐसी मोटी ताज़ी दूध वाली गाएं देखीं तो दिल में कहा : "इन गायों पर ज़रूर कुछ टेक्स लगाया जाना चाहिये, येह बहुत दूध वाली हैं, इन का दूध दरबारे शाही में ज़रूर पहुंचना चाहिये। बादशाह अभी येह सोच ही रहा था कि बुढ़िया ने अपनी बेटी से कहा : "बेटी ! फ़ुलां गाए का दूध निकालो।" जब उस की बेटी गाए के पास पहुंची तो उसे दूध से बिल्कुल ख़ाली पाया, उस ने पुकार कर कहा : "ऐ मेरी मां ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज हमारे बादशाह ने हमारे बारे में कोई बुरा फ़ैसला किया है।" बुढ़िया ने कहा : "बेटी क्या हुवा ?" कहा : "अम्मी जान ! अभी कुछ देर क़ब्ल जिस गाए के थन दूध से भरे हुवे थे अब दूध का एक क़तरा भी नहीं।" बुढ़िया ने कहा : "सब्र करो, सुब्ह तक इस मुआ़मले को छोड़ दो।" बादशाह जो मां बेटी की गुफ़्तगू सुन रहा था उस ने दिल में कहा : "इस लड़की को कैसे मा'लूम हो गया कि मैं ने इन के बारे में ज़ालिमाना फ़ैसला करने का इरादा किया है ? मैं अपने इस इरादे से बाज़ आया कि अब मैं इन्हें तंग नहीं करूंगा, लेकिन इन के बारे में तहक़ीक़ ज़रूर करूंगा।"

जब सुब्ह हुई तो बुढ़िया ने कहा : "बेटी ! जाओ दूध निकालो।" जब लड़की गाए के पास गई तो उसे दूध वाली पाया, उस ने पुकार कर कहा : "अम्मी जान ! बादशाह ने हमारे बारे में जो नाइन्साफ़ी वाली बात सोची थी अब उस के दिल से वोह निकल चुकी है, हमारी गाए के थन अब दूध से भर चुके हैं।" फिर उस ने दूध निकाला और रख दिया। इतनी ही देर में बादशाह के साथी उसे ढूंड़ते हुवे वहां पहुंच गए। बादशाह ने हुक्म दिया कि इन दोनों मां बेटी को हमारे दरबार में ले चलो। सिपाही उन्हें दरबार में ले गए। बादशाह ने उन की ख़ूब ख़ातिर मदारात की, फिर पूछा : "तुम ने कैसे जान लिया कि बादशाह ने किसी बुरी बात का इरादा किया और फिर उस के दिल से वोह इरादा जाता रहा ?" बुढ़िया ने कहा : "हम इस जंगल में अ़र्सए दराज़ से सुकूनत पज़ीर हैं, जब भी दरबारे शाही से कोई अ़दलो इन्साफ़ वाला हुक्म जारी होता है तो हमारे शहरों, देहातों और चरागाहों में ख़ुश्हाली आ जाती और हमारी ज़िन्दगी ख़ुशगवार हो जाती है। लेकिन जब कोई ज़ालिमाना हुक्म जारी होता है तो तंगदस्ती और मुफ़्लिसी आ जाती है और हमारी

अश्या से हमारा नफ़्अ़ मुन्क़तअ़ (या'नी ख़त्म) हो जाता है। इस लिये हम जान लेते हैं कि किस वक़्त किस त़रह़ का हुक्म जारी हुवा है।" येह सुन कर बादशाह बड़ा हैरान हुवा फिर मां बेटी को इन्आ़मो इकराम के साथ वापस भेज दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें नेक आ'माल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और अच्छों के दामन से वाबस्ता फ़रमाए। (آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم)

हि़कायत नम्बर : 325

बुड्ढे मुजाहिद की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मुझे बसरा के रहने वाले एक शख़्स ने बताया कि मैं ने एक पुर कशिश व बा रो'ब शख़्स को ऊन का लिबास पहने देखा। उस का नाम पूछा तो अ़ली बिन मुह़म्मद बताया। मैं उस के साथ बैठ कर बातें करने लगा, उस ने बताया कि मैं एक मरतबा "**मसीसा**" की त़रफ़ जिहाद के लिये गया, वहां मस्जिद में एक ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग को देखा लोग उस के गिर्द बैठे थे और वोह उन्हें ह़दीष सुना रहा था। मैं भी ह़ल्क़ए दर्स में शामिल हो गया, उस ने मुझ से मेरा ह़ाल दरयाफ़्त किया तो मैं ने कहा : "मैं इ़राक़ का रहने वाला हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और आख़िरत की त़लब में यहां आया हूं।" येह सुन कर बुज़ुर्ग ने मुझे दुआ़एं देते हुवे कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें पाकीज़ा ज़िन्दगी और आख़िरत में इ़ज़्ज़त वाला घर अ़त़ा फ़रमाए, ऐ बन्दए ख़ुदा ! मुझे तुम से एक ह़ाजत है, मेरी इस ह़ाजत को रद्द न करना।" मैं ने कहा : "जी बताइये ! क्या ह़ाजत है ?" कहा : हमारे हां क़ियाम करो और ज़ियाफ़त का मौक़अ़ दो।"

मैं उस के पास रुक गया मैं ने देखा कि मेरे मेज़बान को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने صِيَّامُ النَّهَارِ وَقِيَامُ اللَّيْلِ (या'नी दिन को रोज़ा रखने और रात को इ़बादत करने) और आ'माले सालिह़ा की दौलत से माला माल किया हुवा है। मैं उस के पास ही ठहरा रहा। हमारा लश्कर जिहाद के लिये रवाना होने लगा तो मेरे उस बुज़ुर्ग मेज़बान ने मुजाहिदीन के लिये कषीर सामाने ख़ुर्दो नोश फ़राहम किया। और ख़ुद भी लश्कर में शामिल हो गया उस के साथ दस हज़ार मुजाहिदीन भी लश्कर में शामिल हुवे। उस का जवान बेटा जो उस के घर के इन्तिज़ामात संभालता था, वोह भी मुजाहिदीन में शामिल हो गया। हमारा येह लश्कर दुश्मन की सरह़दों की त़रफ़ आंधी व तूफ़ान की त़रह़ बढ़ने लगा। जब दोनों लश्करों का आमना सामना हुवा तो हम ने दुश्मनों की ता'दाद बहुत ज़ियादा मह़सूस की, कुफ़्फ़ार को अन्जामे बद तक पहुंचाने के लिये मुजाहिदीने इस्लाम, कुफ़्फ़ार के टिड्डी दल लश्कर के सामने सीसा पिलाई हुई दीवार की त़रह़ जम गए। उस बुज़ुर्ग के जवान बेटे ने मुजाहिदीन का ह़ौसला बढ़ाते हुवे उन्हें जिहाद पर ख़ूब उभारा। फिर उस के बुड्ढे बाप ने मुजाहिदीन को मुख़ात़ब करते हुवे कहा : "ऐ नौजवानाने इस्लाम ! जन्नत के दरवाज़े तुम्हारे सामने हैं, अपनी शमशीरों के ज़रीए़ उन्हें खोलो और दुश्मन पर टूट पड़ो।" येह सुनते हीं उस का नौजवान बेटा कमाले दिलैरी से तने तन्हा दुश्मनो की सफ़ों में घुस गया और बहादुरी व जवामर्दी के वोह जोहर दिखाए कि दुश्मनों की अ़क़्लें दंग रह गईं। बिल आख़िर येह मर्दे मुजाहिद शजरे इस्लाम की

आबयारी के लिये मर्तबए शहादत पर फ़ाइज़ हुवा। फिर उस का बुढ्ढा बाप दुश्मनों पर ग़ज़ब नाक शेर की त़रह़ ह़म्ला आवर हुवा और दादे शुजाअ़त देते हुवे येह भी जामे शहादत नोश कर गया और उस की रूह़ भी जन्नत के बाग़ात की त़रफ़ परवाज़ कर गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई दुश्मन पीठ फेर कर ख़ाइबो ख़ासिर लौटा। हम ने बहुत सों को वासिले जहन्नम किया। बहुत से दुश्मन क़ैद हो गए। फिर हम ने मुजाहिदीन की मुबारक लाशें सिपुर्दे ख़ाक कीं। बुढ्ढे मुजाहिद के लिये भी एक क़ब्र खोदी गई जब उसे दफ़्ना कर हम वापस होने लगे तो ज़मीन हिलने लगी और उस बुज़ुर्ग मुजाहिद की लाश ज़मीन से बाहर आ गई। हम येह समझे कि शायद ज़लज़ले की वजह से ऐसा हुवा है। लिहाज़ा हम ने एक और क़ब्र खोदी और उसे दफ़्न कर दिया। अभी मिट्टी बराबर ही की थी कि दोबारा ज़मीन हिलने लगी और एक पुरहौल आवाज़ सुनाई दी। ज़मीन ने पहले की त़रह़ उसे फिर बाहर निकाल दिया। हम ने तीसरी क़ब्र खोद कर उसे दफ़्नाया तो येह देख कर हमारी अ़क़्लें ह़ैरान हो गईं कि इस मरतबा भी ज़मीन ने उसे बाहर निकाल दिया। फिर हम ने हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ सुनी : "ऐ लोगो ! येह नेक बन्दा अपनी ज़िन्दगी में हमेशा येह दुआ़ करता रहा कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा ह़श्र दरिन्दों और परन्दों के पेटों में करना उस की दुआ़ बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में क़बूल हो गई है, लिहाज़ा अब येह क़ब्र में दफ़्न नहीं होगा। बल्कि इस की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ इस के जिस्मे नाज़नीन को जंगली दरिन्दे और परन्दे खाएंगे। येह ग़ैबी आवाज़ सुन कर हम उसे वहीं छोड़ कर वापस लौट आए।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 326

आ़लिमे रब्बानी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल जब्बार बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू ह़ाज़िम (علیھم الرحمہ) अपने वालिद से नक़्ल करते हैं कि "एक मरतबा ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में तीन दिन ठहरा और लोगों से कहा : "क्या यहां कोई ऐसा शख़्स है जिस ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ज़ियारत की हो, हम उस से ह़दीष सुनना चाहते हैं ?" उसे बताया गया कि यहां एक जलीलुल क़द्र ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम علیہ رحمۃ اللہ الناصر रहते हैं। चुनान्चे, उन्हें बुलाया गया, जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तशरीफ़ लाए तो ख़लीफ़ा ने कहा : "ऐ अबू ह़ाज़िम علیہ رحمۃ اللہ الناصر आख़िर इतनी बे वफ़ाई क्यूं ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "आप ने मुझ में कौन सी बेवफ़ाई देखी है ?"

ख़लीफ़ा ने कहा : "मदीनए मुनव्वरा के तमाम उ़-लमा व मुअ़ज़्ज़ज़ीन मेरे पास आए लेकिन आप नहीं आए ?" फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं कि आप ऐसी बात कहें जो सिरे से ही न हो, मेरे और आप के दरमियान पहले वाक़िफ़िय्यत ही न थी कि जिस की वजह से मैं यहां आता, फिर बे वफ़ाई का इल्ज़ाम क्यूं ?" ख़लीफ़ा ने कहा : "बेशक आप ने सच व ह़क़ बात कही : अच्छा येह बताइये कि हम मौत को क्यूं नापसन्द करते हैं ?" फ़रमाया : "इस

लिये कि तुम लोगों ने अपनी आख़िरत बरबाद कर डाली है और दुन्या में ख़ूब ऐ़शो इ़शरत की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो, अब तुम इस बात को पसन्द नहीं करते कि ऐ़शो इ़शरत के घर को छोड़ कर अ़ज़ाब वाली जगह जाएं।" ख़लीफ़ा ने कहा : "आप ने ह़क़ फ़रमाया।" अच्छा, येह बताइये कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी की क्या कैफ़िय्यत होगी ?" फ़रमाया : "नेक लोग तो उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ऐसे जाएंगे जैसे बरसों का बिछड़ा हुवा अपने अहलो इ़याल की त़रफ़ ख़ुशी ख़ुशी जाता है। जब कि गुनाहगार व नाफ़रमान इस त़रह़ होंगे जैसे भागे हुवे ग़ुलाम को वापस उस के मालिक के पास लाया जा रहा हो।"

येह सुन कर ख़लीफ़ा सुलैमान ने रोते हुवे कहा : "ऐ काश ! मुझे मा'लूम हो जाता कि हमारे लिये हमारे रब عَزَّوَجَلَّ के हां क्या कुछ है ?" फ़रमाया : "अपने आप को किताबुल्लाह पर पेश करो, तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि तुम्हारे लिये क्या कुछ है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकीज़ा किताब में किस मक़ाम पर येह बातें तलाश करूं ?" फ़रमाया : "देखो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नेकों और बदों के उख़रवी मक़ामात का वाज़ेह़ बयान फ़रमा रहा है :

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾

(پ۳۰،الانفطار:۱۳۔۱٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकूकार ज़रूर चैन में हैं और बेशक बदकार ज़रूर दोज़ख़ में हैं।

ख़लीफ़ा ने पूछा : "ऐ अबू ह़ाज़िम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत कहां है ?" फ़रमाया : "उस की रह़मत मोह़सिनीन के क़रीब है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "लोगों में सब से ज़ियादा समझदार कौन है ?" फ़रमाया : "जिस ने इ़ल्मो ह़िक्मत की बातें सीखीं और दूसरों को सिखाईं।" ख़लीफ़ा ने पूछा : "लोगों में बे वुक़ूफ़ तरीन शख़्स कौन है ?" फ़रमाया : "जो ज़ालिम की पैरवी में लगा, ज़ालिम की हां में हां मिलाई और उस की दुन्या की ख़ात़िर अपनी आख़िरत दाव पर लगा दी।" ख़लीफ़ा ने कहा : "अच्छा, येह बताइये कि मक़्बूल तरीन दुआ़ कौन सी है ?" फ़रमाया : "मुतवाज़िईन (या'नी आ़जिज़ी करने वालों) की दुआ़।" ख़लीफ़ा ने कहा : "ऐ अबू ह़ाज़िम ! सब से बेहतरीन सदक़ा क्या है ?" फ़रमाया : "तंग दस्त व मोह़ताज की मदद करना।" ख़लीफ़ा ने कहा : "हुज़ूर ! येह बताइये कि जिस ह़ालत में हम हैं इस के बारे में आप क्या कहते हैं ?" फ़रमाया : "इस मुआ़मले में मुझे मुआ़फ़ी दो।"

सुलैमान ने कहा : "अच्छा ! मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये।" फ़रमाया : "बेशक हुक्मरानों ने ज़ुल्म व ज़ियादती कर के मुसलमानों की राए के बिग़ैर मन मानी करते हुवे ख़िलाफ़त ह़ासिल की, बे वफ़ा दुन्या के ह़ुसूल के लिये बे गुनाहों का बे दरेग़ ख़ून बहाया फिर कफ़े अफ़्सोस मलते हुवे हुकूमत व ममलुकत को छोड़ कर आख़िरत की त़रफ़ कूच कर गए। ऐ काश ! मुझे मा'लूम होता कि उन से वहां क्या क्या पूछा गया और उन्हों ने क्या जवाब दिया ? अब वोह अपनी करनी का फल भुगत रहे होंगे।" येह सुन कर किसी ख़ुशामदी दरबारी ने कहा : "ऐ शैख़ ! येह आप ने बहुत बुरी बात की।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "तू ने झूट कहा, मैं ने वोही किया जो मुझ पर लाज़िम था, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ़-लमाए किराम से अ़हद लिया है कि वोह लोगों

के सामने दीन ज़ाहिर करेंगे और कुछ भी नहीं छुपाएंगे ।'' ख़लीफ़ा सुलैमान ने कहा : ''ऐ अबू हा़ज़िम ! क्या हमारी इस्लाह़ की कोई सूरत है ?'' फ़रमाया : ''हां ! तुम लोग तकल्लुफ़ात और रियाकारी को छोड़ कर मुरुव्वत व इख़्लास को अपना लो ।'' ख़लीफ़ा ने कहा : ''इस की क्या सूरत है ?'' फ़रमाया : ''जिन से लेने का ह़क़ है उन से लो और मुस्तह़िक़ीन को उन का ह़क़ दो ।''

ख़लीफ़ा ने कहा : ''ऐ मोह़तरम ! आप हमारे हां क़ियाम फ़रमाएं ताकि हम आप से मुस्तफ़ीज़ हों ।'' आप ने फ़रमाया : ''मैं इस बात से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं ।'' ख़लीफ़ा ने कहा : ''आप हम से दूर क्यूं रहना चाहते हैं ?'' फ़रमाया : ''अगर मैं तुम्हारे साथ रहूं तो अन्देशा है कि किसी मुआ़मले में तुम्हारी त़रफ़ माइल हो जाऊं, शाही ऐ़शो इ़शरत से कुछ फ़ाइदा उठा लूं और इस त़रह़ अपनी दुन्या व आख़िरत बरबाद कर बैठूं लिहाज़ा दूरी ही में आ़फ़िय्यत है ।'' ख़लीफ़ा ने कहा : ''मुझे कुछ नसीह़त कीजिये ।'' फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ख़ौफ़ कर और जिस जगह जाने से उस ने रोका है वहां हरगिज़ न जा । और ऐसी जगह से हरगिज़ ग़ैर हा़ज़िर न रह जहां हा़ज़िर रहने का उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने तुझे हुक्म दिया है ।'' ख़लीफ़ा ने कहा : ''ऐ अबू हा़ज़िम ! हमारे लिये दुआ़ कीजिये ।'' फ़रमाया : ''हां मैं दुआ़ करता हूं : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर सुलैमान तेरा पसन्दीदा बन्दा है तो इस के लिये ख़ैर की राह आसान फ़रमा दे और अगर येह तेरे दुश्मनों में से है तो इसे पेशानी से पकड़ कर ख़ैर की राह पर डाल दे ।''

जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه दुआ़ से फ़ारिग़ हुवे तो ख़लीफ़ा ने एक हज़ार दीनार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रफ़ बढ़ाते हुवे अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! येह ह़क़ीर सा नज़राना क़बूल फ़रमाएं ।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''मुझे इस की ह़ाजत नहीं, मेरे इ़लावा इस माल के और भी बहुत से ह़क़दार होंगे । मैं डरता हूं कि येह माल मेरी उस नेकी की दा'वत का बदला न हो जाए जो मैं ने तुझे दी । मैं ने येह तमाम बातें रिज़ाए इलाही के लिये कीं और उसी से अज्र का त़लबगार हूं, दुन्या वालों से हरगिज़ बदला नहीं चाहता । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब फ़िरऔ़न के मुल्क से मदयन की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए तो एक कुंवें के क़रीब बैठ गए वहां दो लड़कियां अपने जानवरों को पानी पिलाने के लिये खड़ी थीं, आप عَلَیْهِ السَّلَام ने उन से फ़रमाया : क्या कोई मर्द नहीं है कि तुम पानी पिला रही हो ?'' कहा : ''नहीं ।'' येह सुन कर आप عَلَیْهِ السَّلَام ने उन्हें पानी भर कर दिया और फिर एक दरख़्त के साए तले बैठ कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : رَبِّ اِنِّیْ لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَیَّ مِنْ خَیْرٍ فَقِیْرٌ﴿۲۴﴾ (پ ۲۰، القصص: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मैं उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोह़ताज हूं । ऐ ख़लीफ़ा ! देख ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबिय्ये बरह़क़ ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से दीन के बदले कोई दुन्यवी शै न मांगी । जब वोह दोनों साह़िब ज़ादियां अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना शो'ऐ़ब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास गईं तो आप عَلَیْهِ السَّلَام ने पूछा : ''मेरी बेटियो ! आज तुम ख़िलाफ़े मा'मूल जल्दी क्यूं आ गईं ?'' अ़र्ज़ की : ''अब्बा हुज़ूर ! आज एक मर्दे सालेह़ ने हमारे जानवरों को पानी पिला दिया इसी लिये हम जल्दी आ गईं ।'' आप عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ''क्या तुम ने उसे कुछ कहते हुवे सुना ।'' अ़र्ज़ की : ''हां ! वोह नौजवान इस त़रह़ मुल्तजी (इल्तिजा कर रहा) था :

رَبِّ اِنِّیۡ لِمَاۤ اَنۡزَلۡتَ اِلَیَّ مِنۡ خَیۡرٍ فَقِیۡرٌ ﴿۲۴﴾ (پ۲۰،القصص:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे रब ! मैं उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोह़ताज हूं।*

ह़ज़रते सय्यिदुना शो'ऐब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "वोह नौजवान ज़रूर भूका होगा, तुम में से कोई एक जाए और उस नौजवान से जा कर कहे : "बेशक मेरा वालिद आप को बुलाता है ताकि जो भलाई आप ने हमारे साथ की और हमारे जानवरों को पानी पिलाया आप को इस का बदला अ़ता फ़रमाए।" जब साहिबज़ादी ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अपने वालिद का पैग़ाम दिया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ज़ारो क़ित़ार रोने लगे, आप عَلَیْہِ السَّلَام उस सह़राई अ़लाक़े में अजनबी व मुसाफ़िर थे, कई दिनों से खाना न खाया था, आप عَلَیْہِ السَّلَام उन के पीछे पीछे उन के घर की जानिब चल दिये। तेज़ हवा की वजह से उन के कपड़े उड़ने लगे तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तू मेरे पीछे चल।" जब आप عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना शो'ऐब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास पहुंचे तो उन्हों ने खाना पेश करते हुवे फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! खाना खा लीजिये।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।" पूछा : "आप खाने से क्यूं इन्कार कर रहे हैं ?" फ़रमाया : "हमारा तअ़ल्लुक़ ऐसे ख़ानदान से है कि अगर हमारे लिये सारी ज़मीन को सोने से भर दिया जाए तो फिर भी हम अपना दीन नहीं बेचेंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना शो'ऐब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐसा हरगिज़ नहीं कि हम आप की नेकी ख़रीद रहे हैं, बल्कि हम ने तो बत़ौरे ज़ियाफ़त येह खाना पेश किया है और मेहमानों को खाना खिलाना हमारे आबाओ अजदाद का त़रीक़ा रहा है, आप बिला झिजक खाना तनावुल फ़रमाएं।" फिर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने खाना तनावुल फ़रमाया।

ऐ ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ! अगर आप की येह दुन्या मेरी नेकी की दा'वत का बदला है तो ह़ालते इज़्त़िरार में मुर्दार का गोश्त खा लेना मुझे इन दीनारों के लेने से ज़ियादा पसन्द है।" ख़लीफ़ा इस बुज़ुर्ग की शाने बे नियाज़ी देख कर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा। ज़ोहरी ने कहा : "अबू ह़ाज़िम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم मेरे पड़ोसी हैं तीस साल का त़वील अ़र्सा गुज़र गया लेकिन मैं इन से कलाम करने का शरफ़ ह़ासिल न कर सका।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने फ़रमाया : "तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ को भूल गया, तू ने मुझे भी भुला दिया। अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में कामिल होता तो मुझ से ज़रूर मह़ब्बत करता।" ज़ोहरी ने कहा : "क्या आप मुझे बुरा भला कह रहे हैं ? ख़लीफ़ा सुलैमान ने कहा : "ऐ ज़ोहरी ! इन्हों ने तुझे बुरा भला नहीं कहा बल्कि तू ने ख़ुद अपने आप को बुरा भला कहा है। क्या तू पड़ोसी के ह़ुक़ूक़ से आगाह न था ?" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम علیہ رحمۃ اللہ الناصر ने फ़रमाया : "बनी इस्राईल उस वक़्त तक सीधी राह पर गामज़न रहे जब तक उमरा व सलात़ीन, उ़-लमा की बारगाह में ह़ाज़िरी देते रहे। वोह उ़-लमाए रब्बानिय्यीन अपने दीन की वजह से दरबारे सलात़ीन से दूर भागते थे। फिर भी हुक्मरान व उमरा उ़-लमा की बारगाह में ह़ाज़िर होते। जब ज़लील लोगों ने उ़-लमाए किराम की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर देखी तो उन्हों ने भी इ़ल्म ह़ासिल किया फिर दीन को ले कर बादशाहों के दरबारों

में जाने लगे इस त़रह़ उन उमरा व सलात़ीन ने उ़-लमाए रब्बानिय्यीन को छोड़ दिया फिर वोह क़ौम गुनाहों पर जम्अ़ हो गई तो उन की इ़ज़्ज़त जाती रही और तंगदस्ती व मुफ़्लिसी उन का मुक़द्दर बन गई। अगर उ़-लमा अपने दीन की ह़िफ़ाज़त करते और लालच करते हुवे इसे बादशाहों के दरबार में न ले जाते तो सलात़ीन व उमरा सरकश व बाग़ी न होते।"

ज़ोहरी ने कहा : "ऐ अबू ह़ाज़िम ! ऐसा लगता है कि तुम येह सारी बातें मुझे सुनाने के लिये कह रहे हो और मुझे त़ा'ना दे रहे हो।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मैं हरगिज़ तुम्हारी बे इ़ज़्ज़ती नहीं कर रहा लेकिन ह़क़ीक़त वोही है जो तुम ने सुनी। इतना कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه दरबार से वापस चले आए।

रावी का बयान है कि जब हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا आया तो उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम علیہ رحمۃ اللہ الناصر को अपने पास बुलाया और कहा : "मुझे कुछ नसीह़त कीजिये।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर, दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार कर, बेशक उस की ह़लाल अश्या का ह़िसाब और ह़राम पर अ़ज़ाब होगा।" हिशाम ने कहा : "ऐ अबू ह़ाज़िम علیہ رحمۃ اللہ الناصر आप ने मुख़्तसर मगर बहुत जामेअ़ नसीह़त की।" अच्छा येह बताइये कि आप का सरमाया क्या है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर पुख़्ता यक़ीन रखना और उस चीज़ से ना उम्मीद रहना जो लोगों के पास है।" कहा : "आप अपनी कोई ह़ाजत ख़लीफ़ा से कहना चाहें तो कहें।" फ़रमाया : "अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! सुनो ! मैं अपनी ह़ाजतें उसी पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करता हूं जिस के इ़लावा कोई और ह़ाजतें पूरी नहीं करता। पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मुझे जो अ़त़ा होता है उसी पर क़नाअ़त करता हूं। और जो चीज़ मुझ से रोक ली जाती है उस पर सब्रो शुक्र करता हूं। मैं ने कसब और मालो दौलत के मुआ़मले में ग़ौर किया तो मेरे सामने दो बातें वाज़ेह़ हुईं।

पहली येह कि जो चीज़ मेरे मुक़द्दर में है वोह ज़रूर बिज़्ज़रूर मुझे मिल कर रहेगी और अपने वक़्त पर ही मिलेगी वक़्त से क़ब्ल हरगिज़ नहीं मिल सकती चाहे मैं ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा लूं। और जो चीज़ मेरे इ़लावा किसी और के मुक़द्दर में है, वोह मुझे कभी भी नहीं मिल सकती। जिस त़रह़ मुझे किसी और का रिज़्क़ नहीं मिल सकता उसी त़रह़ किसी और को भी मेरे ह़िस्से का रिज़्क़ हरगिज़ हरगिज़ नहीं मिल सकता, मैं ख़्वाह मख़्वाह अपने आप को हलाकत व परेशानी में क्यूं डालूं ? वोह ख़ालिके़ काइनात عَزَّوَجَلَّ सब को रिज़्क़ देने वाला है, मुझे उसी की ज़ात काफ़ी है।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! अ़ज़ीम व कामयाब लोग कभी भी अपने उसूलों की ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं करते। दुन्यवी मालो दौलत की ख़ात़िर हरगिज़ अपना सरमायए ईमान व इ़ल्म दाव पर नहीं लगाते। भूक प्यास, तंगदस्ती और लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली ज़ुल्म व ज़ियादती सब बरदाश्त कर लेते हैं लेकिन कभी भी ह़ालात से मजबूर हो कर दुन्या की ह़क़ीर दौलत के बदले अपने इ़ल्मो अ़मल का सौदा नहीं करते। ऐसे बा हिम्मत बा मुरुव्वत और ख़ुद्दार लोग ही दर ह़क़ीक़त लोगों के सालार व रहनुमा हुवे हैं।)

शाहीन कभी परवाज़ से थक कर नहीं गिरता पुरदम है अगर तू तो नहीं ख़त़रए उफ़्ताद

हिकायत नम्बर : 327

साबिरा ख़ातून

हज़रते सय्यिदुना असमई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं अपने एक दोस्त के साथ सफ़र पर था, जंगल से गुज़रते हुवे हम रास्ता भूल गए, कुछ दूर एक ख़ैमा नज़र आया तो उस त़रफ़ गए वहां पहुंच कर बुलन्द आवाज़ से सलाम किया, तो एक औ़रत ख़ैमे से बाहर आई और हमारे सलाम का जवाब देते हुवे पूछा : "तुम कौन हो ?" हम ने कहा : "हम रास्ता भूल गए हैं ख़ैमा देखा तो इस त़रफ़ चले आए।" औ़रत ने कहा : "तुम लोग थोड़ी देर यहीं ठहरो यहां तक कि मैं तुम्हारा ह़क़ पूरा करूं जिस के तुम ह़क़दार हो।" हम वहीं खड़े रहे। वोह पर्दे के पीछे चली गई और कहा : "तुम अपना मुंह दूसरी त़रफ़ करो यहां तक कि तुम्हें तुम्हारा ह़क़ दिया जाए।" हम दूसरी त़रफ़ देखने लगे, उस ने अपनी चादर उतार कर बिछाई और ख़ुद पर्दे की ओट में ही रही और कहने लगी : "इस चादर पर बैठ जाओ, मेरा बेटा अभी आता ही होगा फिर तुम्हारी ज़ियाफ़त का एहतिमाम कर दिया जाएगा।" हम चादर पर बैठ गए कुछ दूर एक सुवार आता दिखाई दिया तो बोली : "येह ऊंट तो मेरे बेटे का है लेकिन इस पर सुवार होने वाला मेरे बेटे के इ़लावा कोई और है।" कुछ ही देर बा'द सुवार ख़ैमे के पास पहुंच गया उस ने औ़रत से कहा : "ऐ उम्मे अ़क़ील ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे बेटे के मुआ़मले में तुम्हें अ़ज़ीम अज्र अ़त़ा फ़रमाए।" येह सुन कर उस औ़रत ने कहा : "तम्हारा भला हो, क्या मेरा बेटा मर गया ?" कहा : "हां।" पूछा : "उस की मौत का सबब क्या बना ?" कहा : "वोह ऊंटों के दरमियान फंस गया था, ऊंटों ने उसे कुंवें में धकेल दिया जिस की वजह से उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई।" बेटे की मौत की ख़बर सुन कर वोह साबिरा ख़ातून न रोई और न ही किसी क़िस्म का वावेला किया बल्कि उस ऊंट वाले से कहा : "नीचे उतरो हमारे हां कुछ मेहमान आएं हैं इन की ज़ियाफ़त का एहतिमाम करो, वोह सामने मेंढा बान्धा हुवा है उसे ज़ब्ह़ कर के मेहमानों को पेश करो।"

चुनान्चे, मेंढा ज़ब्ह़ किया गया और उस के गोश्त से हमारी दा'वत की गई। हम खाना खाते हुवे सोच रहे थे कि येह औ़रत कितनी सब्र वाली है कि जवान बेटे की मौत पर किसी त़रह़ का ग़ैर शरई काम न किया और न ही किसी क़िस्म का शोर शराबा किया। जब हम खाना खा चुके तो साबिरा ख़ातून ने कहा : "तुम में से कोई शख़्स मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब में से कुछ आयात सुना कर मुझ पर एह़सान करेगा ?" मैं ने कहा : "हां ! मैं तुम्हें क़ुरआनी आयात सुनाता हूं।" साबिरा ख़ातून ने कहा : "मुझे कुछ ऐसी आयात सुनाओ जिन से सब्रो शुक्र की दौलत नसीब हो। मैं ने सूरए बक़रह की दर्जे ज़ैल आयाते बय्यिनात की तिलावत की :

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِیْنَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۵۵۔۱۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ख़ुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना।*

ख़ातून ने येह आयते क़ुरआनिय्या सुनीं तो कहा : "जो तुम ने पढ़ा क्या क़ुरआन में बिल्कुल इसी त़रह़ है ?" मैं ने कहा : हां ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! क़ुरआन में इसी त़रह़ है।"

साबिरा ख़ातून ने कहा : "तुम पर सलामती हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें खुश रखे।" फिर उस ने नमाज़ पढ़ी और कहा : "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن" बेशक मेरा बेटा अ़क़ील अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंच गया होगा, तीन मरतबा उस ने येही कलिमात कहे फिर इस त़रह़ मुल्तजी हुई : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जैसा तू ने हुक्म दिया मैं ने वैसा ही किया अब तू भी अपने उस वा'दे को पूरा फ़रमा दे जो तू ने किया है, बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبی الامين صلی اللہ عليہ وسلم}

(سُبْحَانَ الله عَزَّوَجَلَّ) सब्र हो तो ऐसा और यक़ीन हो तो ऐसा। उस खुश बख़्त मां ने अपने जिगर के टुकड़े, अपने जवान बेटे की मौत पर बे वुकूफ़ और जाहिल औ़रतों की त़रह़ नौह़ा, चीख़ो पुकार और कोई भी ग़ैर शरई काम न किया। बल्कि हुक्मे ख़ुदावन्दी सुन कर नमाज़ अदा की और वोही किया जो हुक्मे ख़ुदावन्दी था। वोह खुश नसीब मां अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की कितनी फ़रमां बरदार थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी मसाइब व आलाम पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। जो नेक बन्दे मुसीबत में ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाते और न ही मसाइब से घबराते हैं उन आ़शिक़ाने रसूल का सदक़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी दौलते सब्रो शुक्र से माला माल फ़रमा दे। (آمين بجاه النبی الامين صلی اللہ عليہ وسلم)

ज़बां पर शिकवए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

हि़कायत नम्बर : 328

दर्से सब्रो शुक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان अपने चचा के ह़वाले से बयान करते हैं कि "एक बुढ़ी औ़रत जो जंगल में चरागाह के क़रीब रहती थी उस के मुतअ़ल्लिक़ मुझे एक शख़्स ने बताया कि वोह बुढ़ियां बहुत अ़क़्लमन्द और साबिरा व शाकिरा थी। लोग उस के सब्रो शुक्र और दानाई की मिषालें दिया करते थे। उस का एक बेटा था जो इन्तिहाई वजिया व ख़ूब सूरत था काफ़ी अ़र्से बीमार रहा, बुढ़ी मां ने बहुत अच्छे त़रीक़े से उस की तीमार दारी की। अ़र्सए दराज़ तक बिस्तरे अ़लालत पर अपने ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारने के बा'द बिल आख़िर उस का नौजवान जमील व शकील इक लौता बेटा इस दारे फ़ना से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर गया। उस की मौत के बा'द बुढ़िया अपने घर के सह़न में बैठी हुई थी। लोग ता'ज़िय्यत के लिये आए तो बुढ़ियां ने एक ज़ईफ़ुल उ़म्र शख़्स से कहा : "कितना अच्छा है वोह खुशबख़्त जिस ने आ़फ़िय्यत का लिबास पहन लिया, जिस पर ने'मतों का रंग चढ़ गया, जिसे ऐसी फ़ित़्रत अ़त़ा की गई कि जब तक वोह अपने मसाइल ह़ल न कर ले उसे तौफ़ीक़ व हिम्मत दी जाती रहे। फिर बुढ़िया ने दो अ़रबी अश्आ़र पढ़े जिन का मफ़्हूम येह है :

"वोह मेरा बेटा था मुझे मा'लूम नहीं कि उस की वजह से मुझे कितना अज्र मिला, मेरी मदद उस के लिये येह थी कि मैं ने उस की परवरिश की और मैं उस की देखभाल करने वाली

थी, अगर मैं उस की मौत पर सब्र करूं तो अज्र दी जाऊंगी और अगर गिर्या व ज़ारी और चीख़ो पुकार करूं तो उस रोने वाली की त़रह़ हो जाऊंगी जिसे उस के रोने धोने ने कुछ फ़ाइदा न दिया।''

बुढ़िया की येह ह़िक्मत भरी बातें सुन कर ज़ईफ़ुल उ़म्र शख़्स ने कहा : ''अब तक तो हम येही सुनते आए हैं कि रोना धोना, वावेला करना औ़रतो की आ़दत है, लेकिन तुम तो मर्दों से भी ज़ियादा सब्र वाली हो, तुम्हारा सब्र अ़ज़ीम है और औ़रतों में तुम्हारी नज़ीर मिलना मुश्किल है।'' येह सुन कर बुढ़िया ने कहा : ''जब भी कोई शख़्स दो चीज़ों या'नी सब्रो शुक्र और जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ (या'नी बे सब्री) के दरमियान हो तो उस के सामने दो रास्ते होते हैं। बहर ह़ाल सब्र तो हर ह़ाल में अच्छा है, वोह ज़ाहिरन ह़सीन और उस का अन्जाम मह़मूद है। जब कि बे सब्री, इस पर तो कोई षवाब ही नहीं है। अगर सब्र व बे सब्री इन्सानी शक्ल में होते तो **सब्र**, ह़ुस्नो आ़दात और दीन के मुआ़मलें में **बे सब्री** से ब दरजहा अफ़्ज़ल होता। **सब्र** दीनी मुआ़मलात और नेकी के कामों में जल्दी करने वाला है। जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दौलते सब्र अ़त़ा फ़रमाए उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वा'दा काफ़ी है। सब्र में भला ही भला और बे सब्री में नुक़्सान ही नुक़्सान है।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सब्र की दौलत से माला माल फ़रमाए, बे सब्री व बे शुक्री की नुह़ूसत से मह़फ़ूज़ रखे। राज़ी ब रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ रहने वाला और ह़र्फ़े शिकायत लब पर न लाने वाला खुश नसीब है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें साबिरो शाकिर बनाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

ह़िकायत नम्बर : 329

हाए ! मैं तो नमाज़ पढ़ता था

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन मुह़म्मद मदीनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : ''हमारे एक दोस्त ने बताया कि एक मरतबा मैं अपनी ज़रई ज़मीन की त़रफ़ गया, मग़रिब का वक़्त हुवा तो नमाज़े मग़रिब अदा की। क़रीब ही एक त़रफ़ एक क़ब्र थी अभी मैं नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा ही था कि अचानक रोने की आवाज़ आने लगी, मैं ने ग़ौर से सुना तो क़ब्र से येह दर्दभरी आवाज़ आई : ''हाए ! मैं तो नमाज़ भी पढ़ता था, मैं तो रोज़े भी रखता था।'' येह आवाज़ सुन कर मुझ पर लर्ज़ा त़ारी हो गया, मैं ने एक शख़्स को बुलाया तो उस ने भी वोही आवाज़ सुनी जो मैं सुन रहा था। फिर मैं ख़ौफ़ज़दा व मुतअ़ज्जिब हुवा। दूसरे दिन मैं ने फिर उसी मक़ाम पर नमाज़े अ़स्र अदा की, ग़ुरूबे आफ़्ताब तक वहीं बैठा रहा और नमाज़े मग़रिब अदा की, क़ब्र से फिर येह दर्दनाक आवाज़ सुनाई दी : ''हाए ! मैं तो नमाज़ भी पढ़ता था, मैं तो रोज़े भी रखता था।'' मुसलसल इसी त़रह़ आवाज़ आती रही। मैं ग़मगीन व परेशान अपने घर की त़रफ़ चला आया, मुझे बुख़ार चढ़ गया और दो महीनों तक इसी में मुब्तला रहा।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें तमाम गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखे, नमाज़ रोज़े की अदाएगी के साथ साथ गुनाहों से बचने की भी तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। मज़्कूरा ह़िकायत में जिस मुर्दे का ज़िक्र हुवा वोह

नमाज़ रोज़े का पाबन्द था लेकिन उस का कोई गुनाह ऐसा होगा जिस की उसे सज़ा मिल रही थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखे और हमारे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा कर सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।)

नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब
कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब
कब मैं बीमार मदीने का बनूंगा या रब
कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 330 रह़मते इलाही की बरसात

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब ह़ारिषी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं अपने गुमशुदा ऊंटों को तलाश करने के लिये निकला तो अपने बरतनों को दूध से भर लिया फिर मैं ने दिल में कहा : "येह मैं ने अच्छा नहीं किया, सारे बरतन दूध से भर लिये लेकिन वुज़ू के लिये पानी वग़ैरा भरा ही नहीं, मेरा येह अ़मल ग़ैर मुन्सिफ़ाना है (या'नी इस में इन्साफ़ नहीं) इस ख़याल के आते ही मैं ने बरतनों को दूध से ख़ाली किया और पानी भर लिया। फिर ऊंटों की तलाश में चल दिया। मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि जो बरतन वुज़ू के लिये भरे थे उन में तो पानी ही रहा लेकिन जो पीने के लिये भरे थे वोह सब दूध में तब्दील हो गए। मैं तीन दिन ऊंटों की तलाश में रहा और तीनों दिन मुझ पर इसी त़रह़ रह़मते ख़ुदावन्दी की बरसात होती रही। फिर मैं दरया की त़रफ़ गया तो एक आवाज़ सुनाई दी :

"ऐ अबू का'ब ! भुना हुवा गोश्त चाहिये या दूध ही बेहतर है ? बेशक वोही पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ भूक व प्यास से नजात देने वाला है।" फिर मैं अपनी क़ौम की त़रफ़ आया और उन्हें येह वाक़िआ़ बताया तो क़बीलए बनू क़नान के सरदार अ़ली बिन ह़ारिष ने कहा : "मेरा ख़याल है कि जो कुछ तू कह रहा है येह बस कहने की ह़द तक है।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़क़ीक़ते ह़ाल को बेहतर जानता है।" फिर मैं अपने घर आया और सो गया। नमाज़े फ़ज्र के वक़्त किसी ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी। मैं बाहर आया तो सामने क़बीलए बनू क़नाना के सरदार अ़ली बिन ह़ारिष को पाया। मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, मुझे हुक्म फ़रमाया होता तो मैं ख़ुद ह़ाज़िर हो जाता, आप ने क्यूं तक्लीफ़ की ?" कहा : "मैं इस बात का ज़ियादा ह़क़दार हूं कि तुम्हारे पास चल कर आऊं, सुनो ! आज रात जब मैं सोया तो किसी ने मेरे ख़्वाब में आ कर कहा : "**तू वोही है ना जिस ने उस शख़्स की तक्ज़ीब की जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों और अ़त़ाओं का तज़्किरा करता है।**" मेरी तौबा ! मैं आइन्दा कभी भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ाओं और ने'मतों का ज़िक्र करने वाले की बातों में शक नहीं करूंगा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 331 बादशाहों की खोपड़ियां

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह खुज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्कूल है : एक मरतबा अ़ज़ीम सल्त़नत के अ़ज़ीम बादशाह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین एक ऐसी क़ौम के पास पहुंचे जिन के पास दुन्यवी साज़ो सामान वग़ैरा कुछ भी न था। उन्हों ने एक जगह बहुत सी क़ब्रें खोदी हुई थीं, सुब्ह़ सवेरे उन क़ब्रों के पास जाते, उन्हें साफ़ करते और उन के क़रीब ही नमाज़ पढ़ते। येह उन का रोज़ का मा'मूल था। उन की ग़िज़ा दरख़्तों के पत्ते और घास थी। जंगल में उन के लिये घास और सब्ज़ा वाफ़िर मिक़्दार में मौजूद था वोह उसे खा कर और तालाबों का पानी पी कर गुज़ारा करते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین ने उन के सरदार को पैग़ाम भेजा कि हम से आ कर मिलो। क़ासिद ने बादशाह का पैग़ाम दिया तो सरदार ने कहा : "हमें उन से मिलने की कोई ह़ाजत नहीं।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को येह जवाब मिला तो खुद सरदार के पास गए और कहा : "मैं ने तुम्हारी त़रफ़ पैग़ाम भेजा कि हम से आ कर मिलो लेकिन तुम ने इन्कार कर दिया तो मैं खुद ही तुम्हारे पास चला आया।"

सरदार ने कहा : "अगर मुझे आप से कोई ह़ाजत होती तो मैं ज़रूर आप के पास आता, न मुझे आप से कोई ह़ाजत थी न मैं आया।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین ने कहा : "क्या वजह है कि मैं तुम्हें ऐसी ख़स्ता ह़ालत में देख रहा हूं कि किसी क़ौम को ऐसी ह़ालत में नहीं देखा ?" सरदार ने कहा : "आप ने हमें किस ह़ालत में देखा ?" कहा : "तुम्हारे पास दुन्यवी साज़ो सामान में से कुछ भी नहीं, तुम लोग सोना व चांदी ह़ासिल कर के इस से फ़ाइदा क्यूं नहीं उठाते ?" सरदार ने कहा : "हमें दुन्वयी मालो दौलत से नफ़रत है क्यूंकि जब भी किसी शख़्स को येह चीज़ें मिलीं उस के नफ़्स ने लालच किया और उन से भी अच्छी चीज़ों का मुत़ालबा शुरूअ़ कर दिया।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین ने कहा : "मैं ने देखा कि तुम लोगों ने क़ब्रें बना रखी हैं, रोज़ाना वहां झाड़ू दे कर नमाज़ पढ़ते हो, तुम्हारे इस अ़मल की क्या वजह है ?" कहा : "इन क़ब्रों को देख कर हम इ़ब्रत ह़ासिल करते हैं, इन्हें देख कर हमारी लम्बी लम्बी उम्मीदें ख़त्म हो जाती हैं और येह हमें सामाने इ़ब्रत मुहय्या करती हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین ने कहा : "क्या वजह है कि तुम लोग घास और पत्ते बत़ौरे ग़िज़ा इस्ति'माल करते हो। तुम जानवर क्यूं नहीं पालते कि उन का गोश्त खाओ, दूध पियो और दीगर फ़वाइद ह़ासिल करो ?" सरदार ने कहा : "हम वोह नहीं कि हमारे पेट उन की क़ब्रें बनें, हम ने ज़मीन पर घास और सब्ज़ा देखा तो इसी को अपनी ग़िज़ा बना लिया। इब्ने आदम को जीने के लिये इस क़दर ग़िज़ा काफ़ी है, लज़ीज़ व उ़म्दा खानों का मज़ा सिर्फ़ ज़बान की ह़द तक होता है जैसे ही ग़िज़ा ह़ल्क़ से नीचे जाती है तमाम मज़ा ख़त्म हो जाता है।" फिर सरदार ने क़ब्र से एक बोसीदा खोपड़ी निकाली और कहा : "ऐ अ़ज़ीम बादशाह ! क्या आप जानते हैं कि येह कौन है ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "नहीं।" सरदार बोला : "येह दुन्या

के बड़े बड़े बादशाहों में से एक बादशाह था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे हुकूमत व ताक़त अ़ता फ़रमाई, लोगों पर इसे हाकिम बनाया लेकिन इस ने मख़्लूक़े ख़ुदा पर ज़ुल्म किया और बिला वजह उन्हें तंग किया। जब इस की सरकशी बढ़ी तो मौत के ज़रीए इस की गिरिफ़्त हुई फिर येह फेंके हुवे बे जान पथ्थर की त़रह़ बे बस हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के तमाम कामों से वाक़िफ़ है, अब इस के हर अ़मल का बदला क़ियामत के दिन दिया जाएगा।"

जहां मैं है इ़ब्रत के हर सू नुमूने — मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने — जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है
मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे — मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे
हुवे नामवर बे निशां कैसे कैसे — ज़मीं खा गई नौजवां कैसे कैसे
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

सरदार ने एक और खोपड़ी उठाई और कहा : "ऐ अ़ज़ीम बादशाह ! क्या आप जानते हैं कि येह किस की खोपड़ी है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन عليہ رحمۃ ربّ الکونین ने कहा : "बताओ ! येह कौन है ? कहा : "येह भी एक बादशाह था अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे हुकूमत व बादशाहत अ़ता फ़रमाई इस ने जब देखा कि मुझ से पहले जिन बादशाहों ने ज़ुल्मो सितम से काम लिया और सरकशी इख़्तियार की वोह ज़लीलो ख़्वार हुवे, तो इस ने उन से इ़ब्रत ह़ासिल की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्किसारी इख़्तियार की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरा, अपने मुल्क में अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम किया और शरीअ़त की पाबन्दी करते हुवे इस दुन्याए नापाईदार से रुख़्सत हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के तमाम आ'माल से बा ख़बर है। वोह مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ बरोज़े क़ियामत इसे इस के आ'माल का बदला अ़ता फ़रमाएगा। फिर सरदार ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन عليہ رحمۃ ربّ الکونین के सर की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : "येह भी इन दोनों (खोपड़ियों) की त़रह़ है। ऐ हमारे अ़ज़ीम बादशाह ! ग़ौर फ़रमा लें कि आप का अ़मल अपनी रिआ़या के साथ कैसा है ?"

क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर — जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जब उस सरदार की फ़िक्रे आख़िरत से ममलू (या'नी भरी हुई) ह़कीमाना गुफ़्त्गू सुनी तो कहा : "क्या तुम मेरे साथ रहना पसन्द करोगे ? मैं तुम्हें अपना वज़ीर बनाऊंगा, मेरे तमाम मुआ़मलात में तुम मेरे साथ रहोगे ? जो मालो दौलत मेरे पास है उस में तुम मेरे बराबर के शरीक रहोगे।" सरदार ने कहा :"ऐ हमारे अ़ज़ीम बादशाह ! आप अपनी जगह ठीक हैं और मैं अपनी जगह। हम दोनों एक साथ नहीं रह सकते।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "आख़िर इतने बड़े ओ़हदे से तुम ए'राज़ क्यूं कर रहे हो ?" सरदार ने कहा : "इस लिये कि तमाम लोग आप के दुश्मन और मेरे दोस्त हैं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कहा : "लोग मेरे दुश्मन क्यूं हैं ?"

सरदार ने कहा : "ऐ अ़ज़ीम बादशाह ! दुन्यवी मालो मताअ़, हुकूमत व सल्त़नत की वजह से और इसी दुन्यवी दौलत के हुसूल की ख़ातिर वोह आप के दुश्मन हो गए हैं। और मेरे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं जिस की वजह से लोग मुझ से दुश्मनी करें। न लोगों से मुझे वासित़ा पड़ता है और न ही वोह मेरे दुश्मन बनते हैं। मुझे मेरी येही ज़िन्दगी पसन्द है।"

समझदार व मुख़्लिस सरदार की येह बातें सुन कर अ़ज़ीम बादशाह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین वहां से वापस तशरीफ़ ले आए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें आ'माले सालेह़ा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, दुन्यवी ग़मों और परेशानियों से नजात और फ़िक्रे आख़िरत अ़त़ा फ़रमाए।

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! इस हि़कायत में हमारे लिये इ़ब्रत के बेशुमार मदनी फूल हैं, इन्सान को गिर्दो पेश के माह़ोल से इ़ब्रत ह़ासिल करते रहना चाहिये, समझदार वोही है जो मौत से पहले इस की तय्यारी कर ले, दुन्यवी ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है। हर सांस मौत को हम से क़रीब करता जा रहा है, जैसे ही सांस की माला टूटी हमारा सिलसिलए अ़मल मुन्क़त़अ़ हो जाएगा, फिर ह़सरत व अफ़्सोस के सिवा कुछ हाथ न आएगा, इतनी भी मोहलत न दी जाएगी कि एक मरतबा سُبۡحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ कह कर अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा कर लें। बस फिर हम होंगे और हमारे आ'माल। हर ज़ी शुऊर पर येह बात रोज़े रोशन की त़रह़ इयां है कि वक़्त का ज़ियाअ़ बाइ़षे नदामत है, समझदार लोग कभी भी अपना वक़्त ज़ाएअ़ नहीं करते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मौत की तय्यारी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले — कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िन्दगी का

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़िक्रे आख़िरत के हुसूल का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी भी है। अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। सुन्नतों की तर्बिय्यत के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मदनी इन्क़िलाब बरपा होता देखेंगे।)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में — ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो ! (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हि़कायत नम्बर : 332

मुर्दा बोल उठा

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन बश्शार عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡغَفَّار से मन्क़ूल है : बनी इस्राईल के एक शख़्स पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी हुई तो उस की बीवी ग़मे फ़ुरक़त में रोने लगी। उस ने बीवी से कहा : "क्या तुझे येह बात पसन्द है कि मौत के बा'द भी मैं तुझ से दूर न जाऊं ?"

उस ने हां में सर हिलाया तो उस के शोहर ने कहा : "जब मैं मर जाऊं तो मेरी लाश एक ताबूत में रख देना और ताबूत को अपने मकान ही में रखना, मेरा जिस्म गलने सड़ने से मह़फ़ूज़ रहेगा।" मौत के बा'द उस की बीवी ने ऐसा ही किया और ताबूत को अपने कमरे में मह़फ़ूज़ कर लिया। कुछ अ़र्से बा'द जब ताबूत खोल कर देखा तो उस के शोहर का एक कान गल कर ख़त्म हो चुका था। औ़रत ने कहा : "इस शख़्स ने अपनी ज़िन्दगी में कभी भी मुझ से ग़लत़ बयानी नहीं की, इस ने तो कहा था कि मेरा जिस्म मरने के बा'द सलामत रहेगा लेकिन इस का तो एक कान गल कर ख़त्म हो गया है इस की क्या वजह है ?" अभी येह इन्हीं ख़यालात में गुम थी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुर्दे के जिस्म में रूह़ लौटा दी, उस ने अपना कान गल जाने की वजह बताते हुवे कहा : "एक मरतबा किसी मुसीबत ज़दा शख़्स ने मुझे मदद के लिये पुकारा मैं ने उस की आवाज़ सुनी लेकिन मदद न की, बस इसी वजह से मेरा वोह कान गल गया जिस से मैं ने मुसीबत ज़दा की आवाज़ सुनी और बा वुजूदे क़ुदरत उस की मदद न की।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने ग़ज़ब से मह़फ़ूज़ रख कर रह़्मो करम वाला मुआ़मला फ़रमाए। और जब कोई मुसीबत ज़दा हम से मदद चाहे तो हमें उस की मदद करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। जो शख़्स मुसीबत में किसी की मदद करता है तो मुश्किल वक़्त में उस की भी मदद की जाती है। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

दुन्या न समझ इस को मियां ! दरया की येह मंजधार है　　औरों का बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है

हिकायत नम्बर : 333　सई़द व शक़ी की पहचान का अनोखा त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह अह़लाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से मन्क़ूल है : बनी इस्राईल में जब कोई क़ाज़ी (या'नी जज) मर जाता तो वोह उसे बड़े कमरे में चालीस साल तक रखते। इस दौरान अगर उस का जिस्म गल सड़ जाता तो वोह समझते कि उस ने ज़रूर किसी फ़ैसले में ना इन्साफ़ी और ज़ुल्मो सितम से काम लिया है इसी लिये उस का जिस्म ख़राब हो गया। जब एक आ़दिल क़ाज़ी का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़स्बे त़रीक़ा उन्हों ने मय्यित को एक कमरे में रख दिया। कुछ अ़र्से बा'द उस कमरे की देख भाल पर मामूर निगरान जब कमरे में आया तो ख़ादिम कमरे की सफ़ाई कर रहा था कि अचानक उस के झाड़ू का एक तिन्का मय्यित के कान में लगा, कान से पीप और ख़ून बहने लगा। जब लोगों को येह बात बताई गई तो वोह बड़े परेशान हुवे क्यूंकि वोह क़ाज़ी बज़ाहिर बहुत आ़दिल व सालेह़ था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस दौर के नबी عَلَيْهِ السَّلَام पर वह़ी नाज़िल फ़रमाई कि "मेरा येह बन्दा वाक़ेई अ़द्लो इन्साफ़ पसन्द था, लेकिन एक मरतबा इस के पास दो शख़्स अपना फ़ैसला करवाने आए तो एक शख़्स की बात इस ने ज़ियादा तवज्जोह से सुनी और दूसरे की त़रफ़ कुछ कम तवज्जोह दी इसी लिये हम ने इसे येह सज़ा दी है।"

ऐ हमारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़मो करम फ़रमा, तेरा अ़ज़ाब सहने की हम में त़ाक़त नहीं। हमारे बदन जहन्नम की भड़कती हुई आग कैसे बरदाश्त करेंगे। ऐ हमारे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ हमारी ख़त़ाओं से दरगुज़र फ़रमा, हमें मुत्तक़ी व परहेज़गार, वालिदैन का फ़रमां बरदार और सच्चा पक्का आ़शिके़ रसूल बना, दुन्या व आख़िरत में अपनी नाराज़ी से बचा। हम से सदा के लिये राज़ी हो जा। ऐ हमारे मालिक ! तेरी क़सम ! अगर तू हम से नाराज़ हो गया तो हम तबाहो बरबाद हो जाएंगे फिर जहन्नम की वोह भड़कती हुई आग जिस के बारे में कु़रआने पाक में फ़रमाया जा रहा है :

الَّتِیۡ تَطَّلِعُ عَلَی الۡاَفۡـِٕدَۃِ ؕ﴿۷﴾ (پ۳۰،الھمزہ:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी।

(ऐ हमारे मौला عَزَّوَجَلَّ करम वाला मुआ़मला फ़रमा। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सदक़ा ! हम से सदा के लिये राज़ी हो जा।)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
येह करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

(آمین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

ह़िकायत नम्बर : 334

पेशाब के छींटों से न बचने का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : एक मरतबा मैं सफ़र पर रवाना हुवा तो मेरा गुज़र ज़मानए जाहिलिय्यत के क़ब्रिस्तान से हुवा। अचानक एक मुर्दा क़ब्र से बाहर निकला, उस की गर्दन में आग की ज़न्जीर बंधी हुई थी, मेरे पास पानी का एक बरतन था। जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "ऐ अ़ब्दल्लाह ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो।" मैं ने दिल में कहा : "इस ने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा है या तो येह मुझे जानता है या अ़रबों के त़रीके़ के मुत़ाबिक़ **अ़ब्दुल्लाह** कह कर पुकार रहा है।" फिर अचानक उसी क़ब्र से एक और शख़्स निकला उस ने मुझ से कहा : "ऐ अ़ब्दल्लाह ! इस नाफ़रमान को हरगिज़ पानी न पिलाना, येह काफ़िर है।" दूसरा शख़्स पहले को घसीट कर वापस क़ब्र में ले गया। मैं ने वोह रात एक बुढ़िया के घर गुज़ारी, उस के घर के क़रीब एक क़ब्र थी, मैं ने क़ब्र से येह आवाज़ सुनी : "पेशाब ! पेशाब क्या है ? मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?"

जब उस आवाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बुढ़िया से पूछा तो उस ने कहा : "येह मेरे शोहर की क़ब्र है। इसे दो ख़त़ाओं की सज़ा मिल रही है। पेशाब करते वक़्त येह पेशाब के छींटों से नहीं बचता था, मैं इस से कहती कि तुझ पर अफ़्सोस ! जब ऊंट पेशाब करता है तो वोह भी अपने पाउं कुशादा कर के पेशाब के छींटों से बचता है, लेकिन तू इस मुआ़मले में बिल्कुल भी एह़तियात़ नहीं करता,

मेरा शोहर मेरी इन बातों पर कोई तवज्जोह न देता, फिर येह मर गया तो मरने के बा'द से आज तक इस की क़ब्र से रोज़ाना इसी त़रह़ की आवाज़ें आती हैं।" मैं ने पूछा : "मश्कीज़ा क्या है ?" बुढ़िया ने कहा : "एक मरतबा इस के पास एक प्यासा शख़्स आया और उस ने पानी मांगा तो इस ने कहा : "जाओ, उस मश्कीज़े से पानी पी लो।" वोह प्यासा बे ताबाना मश्कीज़े की त़रफ़ दौड़ा जब उठाया तो वोह ख़ाली था प्यास की शिद्दत से वोह बेहोश हो कर गिर गया और उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई। फिर मेरा शोहर भी मर गया, इस की वफ़ात से आज तक रोज़ाना इस की क़ब्र से आवाज़ आती है : "मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तन्हा सफ़र करने से मन्अ़ फ़रमा दिया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़िकायत नम्बर : 335 ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ علیہ رحمۃ اللہ القدیر का तक़्वा

ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमें येह ख़बर पहुंची कि आ़लमे इस्लाम के अ़ज़ीम ख़लीफ़ा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुसाफ़िरों, मिस्कीनों और फ़ुक़रा के लिये एक मेहमान ख़ाना बना रखा था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने घर वालों को तम्बीह की हुई थी कि इस मेहमान खाने से तुम कोई चीज़ भी न खाना, इस का खाना सिर्फ़ मुसाफ़िरों और ग़ुरबा व फ़ुक़रा के लिये है। एक मरतबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ घर आए तो एक कनीज़ के हाथ में पियाला देखा जिस में सिर्फ़ दो घूंट दूध था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "येह क्या है ?" कनीज़ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा ह़ामिला है, उसे चन्द घूंट दूध पीने की ख़्वाहिश हो रही थी और जब ह़ामिला औ़रत को वोह चीज़ न दी जाए जिस की उसे ख़्वाहिश हो तो डर होता है कि उस का ह़म्ल ज़ाएअ़ हो जाए लिहाज़ा इसी ख़ौफ़ से मैं येह दो घूंट दूध मेहमान ख़ाने से ले आई हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कनीज़ का हाथ पकड़ा और अपनी ज़ौजए मोह़तरमा के पास ले कर चले, जाते हुवे ब आवाज़े बुलन्द फ़रमाया : "अगर इस का ह़म्ल फ़क़ीरों, मोह़ताजों और मुसाफ़िरों का ह़क़ खाए बिग़ैर नहीं रुक सकता तो अल्लाह तबारक व तआ़ला इसे न रोके।" फिर अपनी ज़ौजा के पास पहुंचे तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मेरे सरताज ! क्या बात है ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "इस कनीज़ का येह ख़याल है कि जो तेरे बत़न में ह़म्ल है वोह मिस्कीनों, मोह़ताजों और मुसाफ़िरों का ह़क़ खाए बिग़ैर नहीं रुक सकता, अगर येही बात है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे ह़म्ल को न रोके।" सआ़दत मन्द ज़ौजा ने जब येह सुना

तो कनीज़ से कहा : “ जा ! येह दूध वापस ले जा, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इसे हरगिज़ न पियूंगी।” चुनान्चे, कनीज़ दूध का पियाला वापस ले गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ खलीफ़ए इस्लाम कैसी अ़ज़ीम सिफ़ात के मालिक थे जिन की हुकूमत के डंके अ़रबो अ़जम में बज रहे थे, उन के घर वालों की कैफ़िय्यत क्या थी ? इस्लाम के वोह पास्बान कैसे इन्साफ़ पसन्द थे कि भूका प्यासा रहना तो मन्ज़ूर था लेकिन किसी के हक़ में से एक घूंट पीने को भी तय्यार न थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसे खुलफ़ा के सदके़ हमें भी अमानत की पासदारी, दियानत, इख़्लास और अपना ख़ौफ़ अ़ता फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 336

हयाते बरज़ख़ी

हज़रते सय्यिदुना अबू हम्ज़ा अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى हज़रते सय्यिदुना अबू मुसरिख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के हवाले से बयान करते हैं : एक मरतबा मैं जिहाद के लिये गया तो मेरा गुज़र मुल्के शाम के एक क़ल्ए़ के क़रीब से हुवा जिस का दरवाज़ा बन्द था। दरवाजे़ के साथ ही एक क़ब्र थी। रात हो चुकी थी लिहाज़ा मैं ने यहीं रात गुज़ारने का फ़ैसला किया और क़ब्र के क़रीब लैट गया। मैं सोया हुवा था कि एक ग़ैबी आवाज़ सुन कर मेरी आंख खुल गई। कोई कहने वाला कह रहा था : “ऐ उमैमा ! तू हमारे पास आ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ से हमारी आंखें ठन्डी करे।” आवाज़ सुन कर मैं ख़ौफ़ज़दा हो गया और नमाज़ पढ़ने लगा। फिर जब सुब्ह का उजाला फैलने लगा तो मैं दोबारा सो गया, मैं ने फिर वोही आवाज़ सुनी : “ऐ उमैमा ! हमारे पास आ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दोनों हालतों में तुझ से हमारी आंखें ठन्डी करे, हमारी क़ब्रों के अन्धेरे से तअ़ज्जुब न कर तू मिट्टी के नीचे हमारे पास आ जा।”

मैं फिर घबरा कर उठ बैठा, क़ल्ए़ के दरवाजे़ की त़रफ़ देखा तो वोह खुल चुका था और लोग एक जनाज़ा लिये आ रहे थे। उन के आगे एक बुढ्ढा शख़्स था, मैं ने उस से कहा : “येह जनाज़ा किस का है ?” कहा : “येह मेरी बेटी का जनाज़ा है।” मैं ने कहा : “इस का नाम क्या है ?” कहा : “उमैमा।” मैं ने क़ब्र की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : “येह क़ब्र किस की है ?” कहा : “मेरे भतीजे की, येह मेरी बेटी का शोहर था फ़ौत हो गया तो हम ने इसे दफ़्ना दिया, अब मेरी बेटी भी इन्तिक़ाल कर गई है हम इसे दफ़्न करने आए हैं।” मैं ने जब येह सुना तो वहां मौजूद लोगों को उस आवाज़ के बारे में बताया जो मैं ने रात को दो मरतबा सुनी थी, लोग येह सुन कर हैरान रह गए।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस हिकायत को नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : “इस से षाबित हुवा कि **मुर्दे ज़िन्दों के अह़वाल जानते हैं।**”

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्बास वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से मरवी है कि "एक शख़्स अपने वालिद के साथ सफ़र पर रवाना हुवा, रास्ते में **दौम** (या'नी सेब की त़रह़ सुर्ख़ रंग के फ़लों वाले ख़ास दरख़्त) के पास उस के वालिद का इन्तिक़ाल हो गया। बेटा उसे दरख़्त के क़रीब ही दफ़्ना कर सफ़र पर रवाना हो गया। कुछ अ़र्से बा'द जब उस नौजवान का गुज़र उस दरख़्त के क़रीब से हुवा तो अपने वालिद की क़ब्र पर न ठहरा, यका यक हातिफ़े ग़ैबी की आवाज़ ने उसे चोंका दिया, फ़ज़ा में आवाज़ गूंजने लगी :

"मैं ने तुझे रात के वक़्त दौम के दरख़्त के क़रीब से गुज़रता हुवा पाया तुझ पर लाज़िम है कि दौम वाले से गुफ़्त्गू कर, दौम के दरख़्त के क़रीब एक शख़्स रहता है, काश ! तू उस की जगह होता, कुछ देर दौम वाले के पास ठहर और उसे सलाम कर।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें आख़िरत में अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए और अपने अ़फ़्वो करम के साए में रखे। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 337

वीरान मह़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی एक मरतबा एक मह़ल के क़रीब से गुज़रे तो एक नौजवान कनीज़ हाथों में दफ़ उठाए येह नग़मा गा रही थी : "हम लोग ऐसी ने'मतों और ख़ुशियों में हैं जो कभी ज़ाइल (या'नी ख़त्म) न होंगी।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने उस कनीज़ से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू झूट बोल रही है, फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां से रवाना हो गए।" कुछ अ़र्से बा'द जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का गुज़र दोबारा उस मह़ल के क़रीब से हुवा तो देखा कि उस मह़ल पर बोसीदगी व शिकस्तगी के आषार नुमाया थे। नोकर चाकर सब ग़ाइब थे, मह़ल की तमाम ज़ैबो ज़ीनत ख़ाक में मिल चुकी थी, गरदिशे अय्याम की ज़द में आ कर वोह ज़ैबो ज़ीनत का शाहकार ख़राब व बेकार हो चुका था गोया वोह वीरान मह़ल पुकार पुकार कर ज़बाने ह़ाल से यूं कह रहा था :

अजल ने न किसरा ही छोड़ा न दारा — इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा
हर एक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा — पड़ा रह गया सब यूं ही ठाठ सारा
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मह़ल के दरवाज़े के पास खड़े हो कर बा आवाज़े बुलन्द कहा : "ऐ वीरान मह़ल ! तेरे मकीन कहा हैं ? कहां गए तेरे ख़ुद्दाम ? तेरी ज़ैबो ज़ीनत को क्या हुवा ? कहां है वोह झूटी कनीज़ जिस का येह गुमान था कि हमारी ने'मतें और ख़ुशियां ख़त्म न होंगी ? कहां गईं अब वोह ने'मतें और ख़ुशियां ?" अभी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह बातें कर ही रहे थे कि मह़ल के अन्दर से येह ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "ऐ सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब मख़्लूक़ का मख़्लूक़ पर इतना ग़ज़ब है तो मख़्लूक़ पर ख़ालिक़ के ग़ज़ब का आ़लम क्या होगा ?" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लोगों

की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और ज़ारो क़ित़ार रोते हुवे यूं गोया हुवे : ऐ लोगो ! मुझे येह ख़बर पहुंची है कि जहन्नमी इस त़रह़ पुकारेंगे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू जो चाहे हमें अ़ज़ाब दे, लेकिन हम पर ग़ज़ब न फ़रमा, बेशक तेरा क़हरो ग़ज़ब हम पर आग से ज़ियादा शदीद है। ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ जब तू हम पर ग़ज़ब फ़रमाता है तो अ़ज़ाब की ज़न्जीरें, बेड़ियां और जहन्नमी तौक़ हम पर तंग हो जाते हैं।"

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा   गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब

(**प्यारे इस्लामी भाइयो** ! येह ह़िकायत अपने अन्दर इ़ब्रत के बेशुमार मदनी फूल लिये हुवे है। इन्सान को दुन्या की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत के धोके में पड़ कर अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये। अफ़्सोस है उस पर जो दुन्या की नैरंगियां देखने के बा वुजूद भी इस के धोके में पड़ कर अपनी मौत और क़ब्रो ह़श्र को भूल जाए और **अल्लाह** तआ़ला को राज़ी करने के लिये आ'माले सालेह़ा की त़रफ़ राग़िब न हो, ऐसा शख़्स वाक़ेई क़ाबिले मज़म्मत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें दुन्या के धोके से बचने की तरग़ीब देते हुवे इरशाद फ़रमा रहा है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٚ وَ لَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ (پ۲۲، الفاطر:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ लोगो ! बेशक* ***अल्लाह*** *का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें* ***अल्लाह*** *के हुक्म पर फ़रैब न दे वोह बड़ा फ़रैबी।*

ख़ुश नसीब है वोह शख़्स जो दुन्या के धोके से बचे और आख़िरत की तय्यारी के लिये हर दम कोशां रहे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें दुन्या के धोके से बचा कर आख़िरत की तय्यारी के लिये आ'माले सालेह़ा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, अपनी नाराज़ी से बचा कर रिज़ाए दाइमी की ला ज़वाल दौलत से माला माल फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

ह़िकायत नम्बर : 338   हाए ! मेरा दिल कहां है .....?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन फ़ारसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के मो'तक़िदीन में से एक शख़्स की अ़क़्ल जाती रही और वोह मजनून हो कर गली कूचों में इस त़रह़ सदाएं लगाता फिरता : "**हाए ! मेरा दिल कहां है** ? हाए ! मेरा दिल कहां है ? क्या किसी को मेरा दिल मिला है ? क्या किसी को मेरा दिल मिला है ? मेरा दिल कहां है ?" बच्चे उस का मज़ाक़ उड़ाते और पथ्थर मारते। एक दिन वोह बच्चों से तंग आ कर एक गली में दाख़िल हो कर एक जगह बैठ गया, कुछ देर बा'द एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी, नज़र उठा कर देखा तो एक छोटा सा बच्चा ज़ारो क़ित़ार रो रहा था, उस की वालिदा ने किसी ग़लत़ी पर उसे मारा और नाराज़ हो कर घर से बाहर निकाल कर दरवाज़ा बन्द कर दिया था।

अब वोह छोटा सा मुन्ना कभी दरवाजे़ की दाईं जानिब जा रहा था कभी बाईं जानिब लेकिन उसे अन्दर जाने का कोई रास्ता नज़र न आ रहा था। बच्चा बड़े दर्द मन्दाना अन्दाज़ में रो रहा था और उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वोह क्या करे ? कहां जाए ? बिल आख़िर थक हार कर अपने घर के दरवाजे़ की चोखट पर गर्दन रख कर लैट गया, लैटे लैटे उसे नींद आ गई। जब बेदार हुवा तो रोने लगा और बड़ी आहो ज़ारी करते हुवे यूं इल्तिजाएं करने लगा :

"ऐ मेरी प्यारी मां ! अगर तू ही मेरे लिये दरवाज़ा बन्द कर देगी तो फिर कौन मेरे लिये अपना दरवाज़ा खोलेगा ? जब तू ही मुझे ठुकरा देगी तो कौन मुझे अपने क़रीब करेगा ? मेरी प्यारी मां ! जब तू ही मुझ से नाराज़ हो गई तो कौन मुझे प्यार देगा ? मेरी प्यारी मां ! मुझे अपनी आग़ोशे रह़मत में ले ले।"

बच्चे की आंखों से सैले अश्क रवां था और बड़े ही दर्द मन्दाना अन्दाज़ में आहो ज़ारी कर रहा था। अपने जिगर के टुकड़े की येह दर्दभरी आवाज़ सुन कर मां का दिल भर आया, वोह दौड़ती हुई अपने जिगर पारे के पास आई तो देखा कि बच्चे की आंखें आंसूओं से तरबतर थीं, चेहरे पर मिट्टी लगी हुई थी और वोह ज़मीन पर सर रख कर ज़ारो क़ितार रो रहा था। मां ने फ़ौरन अपनी आग़ोश में ले लिया, प्यार से चूमने लगी और ममता भरी आवाज़ में कहा : "मेरे लाल ! मेरी आंखों की ठन्डक ! तू तो मुझे जान से भी ज़ियादा मह़बूब है तू ने ऐसी ग़लती़ की जिस की वजह से मुझे तुझ पर ग़ुस्सा आया और तुझे सख़्ती बरदाश्त करनी पड़ी, मेरे लाल ! अगर तू मेरी इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करता तो हरगिज़ मेरी त़रफ़ से तुझे नापसन्दीदा बात न पहुंचती।"

वोह मजनून, मां बेटे की बातें सुन रहा था, जब उस ने मां की बेटे पर शफ़्क़त देखी तो उसे वज्द आ गया, वोह खड़ा हो गया और ज़ोर ज़ोर से चीख़ने लगा। चीख़ो पुकार सुन कर लोग उस के गिर्द जम्अ़ हो गए और वजह पूछी तो मजनून ने कहा : "मुझे मेरा दिल मिल गया है। मुझे मेरा दिल मिल गया है।" जब उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को देखा तो कहा : "ह़ुज़ूर ! मुझे मेरा खोया हुवा दिल मिल गया है, फ़ुलां गली फ़ुलां मकान के पास मुझे मेरा दिल मिल गया।" फिर उस ने मां बेटे वाला वाक़िआ़ सुनाया।" जब भी वोह मजनून येह वाक़िआ़ सुनाता तो उस पर वज्द त़ारी हो जाता, गोया मां बेटे की मह़ब्बत देख कर उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ पर रह़मतें व इनायतें याद आ जातीं।

*(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! इस रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत में हमारी इस्लाह़ के लिये बे शुमार मदनी फूल हैं, बच्चे की किसी ग़लती़ पर मां ने नाराज़ हो कर उसे घर से बाहर निकाल दिया तो वोह छोटा सा मुन्ना मां की नाराज़ी व दूरी लम्ह़ा भर के लिये भी बरदाश्त नहीं कर सका। घर के दरवाजे़ पर सर रख कर रोता रहा उसे अपनी मां की रह़मत व शफ़्क़त से उम्मीद थी कि वोह ज़रूर बुला लेगी और मेरी ग़लती़ को मुआ़फ़ कर के मुझे अपने दामन में छुपा लेगी, बिल आख़िर बच्चे की गिर्या व ज़ारी देख कर मां ने उसे अपनी ममता भरी गोद में उठा ही लिया और

उस की ख़ता को मुआ़फ़ कर दिया। हमारा परवर दगार जो हम पर सत्तर माओं से भी ज़ियादा मेहरबान व रह़ीम है वोह हम से कितनी मह़ब्बत करता होगा !

हमें भी चाहिये कि कोई भी ऐसा काम न करें जिस में हमारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी हो फिर भी बतक़ाज़ाए बशरिय्यत जब भी कोई ख़ता सरज़द हो फ़ौरन उस रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा रैज़ हो कर रो रो कर अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर लेना चाहिये। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता वोह मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ हम से नाराज़ हो गया तो हम कहीं के भी न रहेंगे। दुन्या व आख़िरत तबाहो बरबाद हो जाएगी। हमें अपने प्यारे, रह़ीमो करीम, सत्तार व ग़फ़्फ़ार रब عَزَّوَجَلَّ से उम्मीदे वासिक़ है कि वोह मौला عَزَّوَجَلَّ हमारी ख़त़ाओं को ज़रूर मुआ़फ़ फ़रमाएगा और अपने रह़मत के साए में ज़रूर जगह अ़त़ा फ़रमाएगा। जो उस पर भरोसा करता है वोह कभी मायूस नहीं होता, वोह इतना अ़त़ा फ़रमाता है कि अ़क़्लें उस की अ़त़ाओं का इदराक नहीं कर सकतीं।

हम अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ गो हैं कि वोह हमें हमेशा अपनी नाराज़ी से बचाए रखे और अपनी रिज़ा वाले आ'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा   येह करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

हिकायत नम्बर : 339

अचानक क़ब्र खुल गई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यूसुफ़ ग़स्सूली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : "मैं मुल्के शाम में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के साथ रहता था, एक दिन वोह मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "ऐ ग़स्सूली ! आज मैं ने एक बहुत अ़जीबो ग़रीब बात देखी।" मैं ने कहा : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق) आप ने कौन सी अ़जीब बात देखी है ?" फ़रमाया : "आज मैं क़ब्रिस्तान में खड़ा था कि एक **क़ब्र अचानक खुल गई** और एक सफ़ेद रीश शख़्स नुमूदार हुवा। उस के सफ़ेद बालों में सुर्ख़ (लाल) मेंहदी लगी हुई थी, उस ने मुझ से कहा : ऐ इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझे आप की ख़ात़िर ज़िन्दा किया है, आप मुझ से कुछ पूछना चाहते हैं तो पूछिये।"

मैं ने कहा : ما فعل اللّٰه بک؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया।" उस सफ़ेद रीश बुज़ुर्ग ने कहा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि मेरे आ'माले सय्यिआ (या'नी बुरे आ'माल) मेरे साथ थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से फ़रमाया : "मैं ने तीन बातों

की वजह से तुझे बख़्श दिया : (1) तू मुझ से इस ह़ाल में मिला कि जिस से मैं मह़ब्बत करता था तू ने भी उसे मह़बूब रखा (2) तू मुझ से इस ह़ाल में मिला कि तेरे पेट में शराब का एक क़त़रा भी न था और (3) तू मुझ से इस ह़ाल में मिला कि तेरे सफ़ेद बालों में सुर्ख़ ख़िज़ाब लगा हुवा था और मुझे ह़या आती है कि उस शख़्स को आग का अ़ज़ाब दूं जिस के सफ़ेद बालों में सुर्ख़ ख़िज़ाब लगा हुवा हो।'' इतना कह कर वोह बुज़ुर्ग वापस क़ब्र में चला गया और क़ब्र बन्द हो गई।'' ह़ज़रते सय्यिदुना ग़स्सूली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने कहा : ''ऐ अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق क्या आप मुझे उस क़ब्र पर नहीं ले चलेंगे?'' फ़रमाया : ''ऐ ग़स्सूली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى तेरा भला हो ! तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ अपने मुआ़मलात दुरुस्त कर ले तो वोह तुझे भी अ़जीबो ग़रीब चीज़ें दिखाएगा।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 340 सादात की दस्तगीरी पर इन्आ़म

ह़ज का पुर बहार मौसिम था, खुश नसीब हुज्जाज अपनी देरीना आरज़ू की तक्मील के लिये क़ाफ़िलों की सूरत में सूए ह़रम रवां दवां थे। जो पहली मरतबा जा रहे थे उन की कैफ़िय्यत कुछ और थी जो बार बार ज़ियारते ह़रमैने शरीफ़ैन से मुशर्रफ़ हो चुके थे उन की कैफ़िय्यत कुछ और थी। बार बार ह़ाज़िरी देने के बा वुजूद दिल भरता ही नहीं। येह मुबारक सफ़र हर साल ही बहुत प्यारा होता है चाहे कोई पहली बार जाए या बार बार जाए किसी की भी मह़ब्बत व दीवानगी में कमी नहीं आती। हुज्जाजे किराम का एक क़ाफ़िला जब उ़रूसुल बलाद बग़दाद शरीफ़ पहुंचा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दिल मचलने लगा, तमन्नाए ज़ियारत ने दिल को बेचैन कर दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हुज्जाज के क़ाफ़िले के हमराह जाने का अ़ज़्मे मुसम्मम (या'नी पुख़्ता इरादा) कर लिया और सफ़र का ज़रूरी सामान ख़रीदने के लिये पांच सो दीनार ले कर बाज़ार की जानिब रवाना हो गए, रास्ते में एक ख़ातून मिली जिस की ह़ालत बता रही थी कि येह ग़ुर्बत व इफ़्लास का शिकार है। उस ख़ातून ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा : ''ऐ बन्दए ख़ुदा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए, मैं सय्यिदज़ादी हूं, ह़वादिषाते ज़माना के हाथों मजबूर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ कर रही हूं। मेरी चन्द बेटियां हैं उन बेचारियों के पास तन ढांपने के लिये कोई कपड़ा नहीं, आज चौथा दिन है हम मां बेटियों में से किसी ने एक लुक़्मा भी नहीं खाया।''

सय्यिदज़ादी की दर्दभरी दास्तान सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दिल भर आया। आप ने पांच सो दीनार उस की चादर में डाल दिये और कहा : ''अपने घर जल्दी से जाओ और येह रक़म अपने इस्ति'माल में लाओ ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त तुम्हारा ह़ामी व नासिर हो। वोह ग़रीब सय्यिदज़ादी ह़म्दे ख़ुदावन्दी बजा लाई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दुआ़एं देती हुई अपने घर रवाना

हो गई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उस साल मैं ह़ज को न जा सका, हुज्जाज का क़ाफ़िला रवाना हो गया और मैं रह गया। लेकिन मुझे उस सय्यिदज़ादी की मदद करने पर ऐसा दिली सुकून मिला कि इस से क़ब्ल कभी ऐसा सुकून न मिला था। ह़ज की सआ़दत ह़ासिल कर के हुज्जाजे किराम के क़ाफ़िले वापस आ रहे थे। जब हमारा क़ाफ़िला आया तो मैं ने दिल में कहा : "मुझे अपने दोस्तों से मिल कर उन्हें ह़ज की मुबारक बाद देनी चाहिये।"

चुनान्चे, मैं अपने दोस्तों के पास गया, मैं अपने जिस भी ह़ाजी दोस्त से मिल कर ह़ज की क़बूलिय्यत की दुआ़ और मुबारक बाद देता तो वोह कहता : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप का ह़ज भी क़बूल फ़रमाए और आप की सअ़्य क़बूल फ़रमाए :" मैं जितने दोस्तों से मिला सब ने मुझे ह़ज की मुबारक बाद और क़बूलिय्यते ह़ज की दुआ़ दी। मैं बड़ा ह़ैरान हुवा और सोचने लगा कि जब मैं ने इस साल ह़ज किया ही नहीं तो येह लोग मुझे किस बात की मुबारक बाद दे रहे हैं ? बहर ह़ाल मैं ह़ैरान व मुतअ़ज्जिब अपने घर लौट आया, रात को सोया तो मेरी सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी। हम ग़रीबों के आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा, रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुजतबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना नूरानी चेहरा चमकाते हुवे तशरीफ़ लाए, लब्हाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए :

"लोग जो तुझे ह़ज की मुबारक बाद दे रहे हैं इस पर तअ़ज्जुब न कर, तू ने एक ह़ाजत मन्द की मदद की, मिस्कीन को ग़नी कर दिया, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तेरी सूरत का एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमा दिया अब वोह हर साल तेरी त़रफ़ से ह़ज करता रहेगा, अब अगर तू चाहे तो (नफ़्ली) ह़ज कर चाहे न कर।"

जिसे चाहा दर पे बुला लिया जिसे चाहा अपना बना लिया
येह बड़े करम के हैं फ़ैसले येह बड़े नसीब की बात है

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इस जहां में हर त़रह़ के लोग पैदा फ़रमाए, किसी को ग़रीब बनाया तो किसी को अमीरी अ़त़ा की, किसी को त़ाक़तवर बनाया तो किसी को कमज़ोर, वोह मालिके लम यज़ल बे नियाज़ है जो चाहे करे, हमें उस की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये। उस ने हमें ग़ुर्बा व फ़ुक़रा की मदद का हुक्म दिया हमें अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान पर दिलो जान से अ़मल करना चाहिये, अगर हम मुस्तह़िक़ीन की इमदाद करते रहेंगे तो إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी दुन्या व आख़िरत संवर जाएगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें दूसरों का मुआ़विन व मददगार बनाए और हमेशा अपना मोह़ताज रखे अपने इ़लावा किसी और का मोह़ताज न करे।)

न मोह़ताज कर तू जहां में किसी का
मुझे मुफ़्लिसी से बचा मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ

(آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم)

हिकायत नम्बर : 341 बीमारी बुलन्दिये दरजात का सबब

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्कूल है : दो इबादत गुज़ार पचास साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते रहे। पचासवें साल के आखि़र में उन में से एक के जिस्म में एक ख़तरनाक बीमारी लग गई, उस ने आहो ज़ारी की और बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ मुल्तजी हुवा (या'नी इल्तिजा करने लगा) : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं ने इतने साल मुसल्सल तेरा हुक्म माना, तेरी इबादत बजा लाया फिर भी मुझे इतनी ख़त़रनाक बीमारी में मुब्तला कर दिया गया, इस में क्या हिक्मत है? मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मैं तो आज़माइश में डाल दिया गया हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों को हुक्म फ़रमाया : इस से कहो, "तू ने जो इबादत व रियाज़त की वोह हमारी ही अ़त़ा कर्दा तौफ़ीक़ है, वोह मेरे एह़सान और मेरी मदद का नतीजा है। बाक़ी रही बीमारी तो इस में मैं ने तुझे इस लिये मुब्तला किया ताकि तुझे अबरारों के मर्तबे पर फ़ाइज़ कर दूं। तुझ से पहले के लोग तो बीमारी व मसाइब के ख़्वाहिश मन्द हुवा करते थे। और तुझे तो मैं ने बिन मांगे अ़त़ा कर दी।"

(ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा और जब बीमारी वग़ैरा आए तो उस पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।)

मेरी मुश्किलें गर तेरा इम्तिह़ान हैं तो हर ग़म क़सम से ख़ुशी का समां है
गुनाहों की मेरे अगर येह सज़ा है तो फिर मुश्किलों को मिटा मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 342 दुआ़ क़बूल न होने का सबब

हज़रते सय्यिदुना उ़ब्बाद ख़व्वास عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से मन्कूल है : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام किसी मक़ाम से गुज़रे तो देखा कि एक शख़्स हाथ उठाए रो रो कर बड़े रिक़्क़त अंगेज़ अन्दाज़ में मसरूफ़े दुआ़ था। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उसे देखते रहे फिर बारगाहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू अपने इस बन्दे की दुआ़ क्यूं नहीं क़बूल कर रहा?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी नाज़िल फ़रमाई : "ऐ मूसा! अगर येह शख़्स इतना रोए, इतना रोए कि इस का दम निकल जाए और अपने हाथ इतने बुलन्द कर ले कि आस्मान को छू लें तब भी मैं इस की दुआ़ क़बूल न करूंगा।" हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : "मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ इस की क्या वजह है?" इरशाद हुवा : "येह ह़राम खाता और ह़राम पहनता है और इस के घर में ह़राम माल है।"

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ह़राम माल, ह़राम काम और तमाम गुनाहों से महफ़ूज़ रखे। बुराइयों, बुरे और गुमराह लोगों से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए। रिज़्क़े ह़लाल कमाने और ह़लाल खाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 342 सदके़ की रोटी ने अज़्दहे से बचा लिया

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम अबू जअ़्द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد से मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम का एक झगड़ालू शख़्स लोगों को बहुत तंग किया करता था। जब लोग उस की ईज़ा रसानियों से बहुत ज़ियादा तंग हुवे तो ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! इस शख़्स के लिये बद दुआ़ कीजिये, हम इस से बहुत तंग आ चुके हैं।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "जाओ ! اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस के शर से ख़लासी मिल जाएगी।" लोग वापस चले गए। वोह शख़्स रोज़ाना जंगल से लकड़ियां काट कर लाता और उन्हें बेच कर उस का और उस के अहलो इ़याल का गुज़र बसर होता। ह़स्बे मा'मूल उस दिन भी वोह जंगल गया, उस के पास दो रोटियां थीं एक ख़ुद खा ली और दूसरी सदक़ा कर दी। फिर लकड़ियां काट कर सह़ीह़ व सालिम वापस घर चला आया। लोगों ने जब उसे सह़ीह़ व सालिम आता देखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! वोह शख़्स तो सह़ीह़ व सालिम है, अभी तक उस पर किसी क़िस्म की कोई मुसीबत नाज़िल नहीं हुई।"

आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स को बुला कर फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! आज तू ने कौन सा नेक काम किया है ?" कहा : "आज ह़स्बे मा'मूल जब मैं जंगल गया तो मेरे पास दो रोटियां थीं एक मैं ने खा ली और दूसरी सदक़ा कर दी, इस के इ़लावा तो कोई और नेक काम मुझे याद नहीं।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "लकड़ियों का गठ्ठा खोलो ! जब गठ्ठा खोला तो उस में खजूर के तने जितना मोटा बहुत ही ज़हरीला सियाह अज़्दहा मौजूद था। ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐ शख़्स ! तुझे इस ख़तरनाक ज़हरीले अज़्दहे से तेरी सदक़ा की हुई एक रोटी ने बचा लिया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें कषरत से सदक़ा व ख़ैरात की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم)

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** का इशाअ़ती इदारा "**मक्तबतुल मदीना**" मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त अ़क़ाइद व शरई मसाइल और मुख़्तलिफ़ आ'माले सालेह़ा के फ़ज़ाइल पर मब्नी बेहतरीन कुतुब शाएअ़ करता रहता है। सदके़ के फ़ज़ाइल पर मब्नी एक बेहतरीन किताब "**ज़ियाए सदक़ात**" और रिसाला "**सदके़ का इन्आ़म**" नीज़ दीगर दीनी कुतुब "**मक्तबतुल मदीना**" से हदिय्यतन ह़ासिल कर के मुत़ालआ़ फ़रमाएं। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में एक ख़ुशगवार तब्दीली मह़सूस करेंगे और आप की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा होगा।)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !
(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 344 मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मेहमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़ब्दुल्लाह अस्बहानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते अबुल ख़ैर अक़्तअ़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह फ़रमाते हुवे सुना : एक मरतबा जब मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا गया तो मुसलसल पांच दिन का फ़ाक़ा था, पांच दिन से एक लुक़्मा भी न खाया था अब जान लबों पर आ चुकी थी। चुनान्चे, मैं हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुवा। **आप के रौज़ए मुबारका के सामने खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ किया,** फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को सलाम अ़र्ज़ किया फिर प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में फ़रयाद की : "मेरा आक़ा ! मेरे सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज रात मैं आप का मेहमान हूं।"

इतना कह कर मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर शरीफ़ के पीछे जा कर सो गया। सर की आखें तो क्या बन्द हुई, दिल की आंखें खुल गईं, मेरा सोया हुवा नसीब जाग उठा, मेरे मश्किल कुशा आक़ा अपने गुलाम की ह़ालते ज़ार देख कर मुश्किल कुशाई के लिये तशरीफ़ ले आए। ख़्वाब में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, आप के दाईं जानिब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाईं त़रफ़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के सामने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ह़ाज़िर थे।

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने मुझे बेदार किया और फ़रमाया : "उठो ! देखो ! हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं।" इतना सुनते ही मैं अपने रह़ीमो करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ दौड़ पड़ा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक पेशानी का बोसा लिया। प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे एक रोटी अ़त़ा फ़रमाई और तशरीफ़ ले गए। मैं ने अभी आधी रोटी ही खाई थी कि आंख खुल गई, **हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ा कर्दा बक़िय्या आधी रोटी मेरे हाथ में मौजूद थी।**

मुरादें मांगने से पहले मिलती हैं मदीने में *हुजूमे जूद ने रोका है, बढ़ना दस्ते ह़ाजत का*
ग़नी है दिल, भरा है ने'मते कौनैन से दामन *गदा हूं मैं फ़क़ीर, आस्ताने ख़ुद बदौलत का*
ह़सन सरकारे त़यबा का अ़जब दरबारे आ़ली है *दरे दौलत पे इक मैला लगा है अहले ह़ाजत का*

(سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ) हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद आ कर रोटी इनायत फ़रमाई और अपने दीवाने की किस त़रह़ मुश्किल कुशाई फ़रमाई। हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने बे शुमार इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाए, जिस त़रह़ आप विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल लोगों की रहनुमाई व मुश्किल कुशाई फ़रमाते थे बा'द अज़् विसाल भी रब्बे क़दीर की अ़त़ा से अपने ग़ुलामों की मुश्किलें ह़ल करते हैं।

रब्ब है मो'त़ी, येह हैं क़ासिम *रिज़्क़ उस का है, खिलाते येह हैं*
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा *पीते हम हैं, पिलाते येह हैं*

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए। जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमाए। (آمين بجاه النبى الامين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

हिकायत नम्बर : 345 इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की चादर

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मन्क़ूल है कि एक दिन हमारी कनीज़ आई और कहने लगी : "मेरे आक़ा ! एक शख़्स खजूर के पत्तों से बनी हुई येह टोकरी लाया है इस में ख़ुश्क मेवे और एक ख़त़ है।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं खड़ा हुवा और ख़त़ पढ़ने लगा, उस में कुछ इस त़रह़ का मज़्मून लिखा था :

"ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) मैं ने आप के लिये कुछ रक़म जम्अ़ कर रखी थी, मैं ने इसे समरक़न्द भेज दिया ताकि इस के ज़रीए सरमाया कारी करूं और कुछ कारोबार करूं, कारोबार में कुछ ख़सारा हो गया, जो रक़म आप के लिये जम्अ़ कर रखी थी दोबारा भेज कर सरमाया कारी की, उस में फिर कुछ नुक़्सान हो गया, अब मैं आप की त़रफ़ चार हज़ार दिरहम और कुछ फल भेज रहा हूं येह फल मैं ने अपने बाग़ से चुने हैं और येह माल और बाग़ मुझे अपने वालिद की त़रफ़ से वुरसा में मिला और मेरे वालिद को दादा की त़रफ़ से बत़ौरे वुरसा मिला, ह़ुज़ूर येह ह़क़ीर सा नज़राना क़बूल फ़रमा लें।" وَالسَّلَام

मैं ख़त़ पढ़ कर अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का इन्तिज़ार करने लगा। फलों की टोकरी देख कर बहुत से बच्चे जम्अ़ हो गए

थे। जब मेरे वालिद साहि़ब घर तशरीफ़ लाए तो हम सब आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, मेरी आंखों से बे इख़्तियार आंसू बह पड़े, रोते हुवे अ़र्ज़ की : "अब्बा जान ! क्या आप मेरी वजह से ज़कात का माल लेने पर मजबूर हो गए ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : बेटा ! तुम से किस ने कहा कि येह फल और दिरहम जो हमें बत़ौरे नज़्राना भेजे गए हैं, ज़कात के हैं ? अच्छा ! अभी इस टोकरी को न खोलना, आज रात मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस्तिख़ारा करूंगा। दूसरे दिन मेरे वालिद साहि़ब ने मुझे बुलाया और कहा : "मैं ने रात इस्तिख़ारा किया तो येह हुक्म हुवा कि मैं इस में से कोई चीज़ भी न लूं।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने टोकरी खोली और सारे फ़ल बच्चों में तक़्सीम कर दिये और अपने लिये एक दाना भी न रखा, टोकरी में मौजूद चार हज़ार दिरहम सारे के सारे वापस लौटा दिये और अपनी एक चादर भी उस शख़्स को भिजवाई जिस ने येह नज़्राना भिजवाया था। बा'द में मुझे पता चला कि उस शख़्स ने मेरे वालिद की भिजवाई हुई वोह चादर अपने पास मह़फ़ूज़ रखी और **वसिय्यत की, कि मुझे इसी चादर का कफ़न देना।**

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}

हि़कायत नम्बर : 346

इमामे वक़्त के दीदार की तड़प

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुहैर बिन सालेह़ बिन अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिद को येह कहते हुवे सुना : "एक मरतबा जब मैं घर आया तो मा'लूम हुवा कि मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बड़ी शिद्दत से मेरा इन्तिज़ार कर रहे थे, मैं फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे वालिदे मोह़तरम ! क्या आप मेरा इन्तिज़ार कर रहे हैं ?" फ़रमाया : "हां ! तुम्हारी ग़ैर मौजूदगी में एक शख़्स मुझ से मिलने आया था, मेरी ख़्वाहिश थी कि तुम भी उसे देख लेते लेकिन अब तो जा चुका। चलो ! मैं तुम्हें उस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बता देता हूं। आज दोपहर के वक़्त मैं घर में था कि दरवाज़े पर किसी के सलाम करने की आवाज़ सुनाई दी, मैं ने दरवाज़ा खोला तो सामने एक मुसाफ़िर था जिस ने पैवन्द लगा जुब्बा पहना हुवा था, जुब्बे के नीचे क़मीस पहनी हुई थी, न तो उस के पास ज़ादे राह रखने का थैला था, न पानी पीने के लिये कोई बरतन। सूरज की तेज़ धूप ने उस का चेहरा झुलसा दिया था। मैं ने फ़ौरन उसे अन्दर बुलाया और पूछा : "तुम कहां से और किस ह़ाजत के तह़्त आए हो।"

कहने लगा : "हुज़ूर ! मैं मशरिक़ी वादियों से आया हूं, मेरी दिली ख़्वाहिश थी कि इस अ़लाक़े में ह़ाज़िरी दूं, अगर यहां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मकान न होता तो हरगिज़ यहां न आता। मैं सिर्फ़ आप की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं।" मैं ने कहा : "तुम इतनी शदीद गर्मी में तने तन्हा बेसरो सामानी के आ़लम में सफ़र की सऊ़बतें बरदाश्त कर के सिर्फ़ मुझ से मुलाक़ात के लिये आए हो ?"

कहा : "जी हुज़ूर ! मुझे आप की ज़ियारत का शौक़ यहां तक ले आया है, इस के इलावा मेरा यहां आने का कोई और मक़्सद नहीं।" मुसाफ़िर की बातें सुन कर मैं बहुत हैरान हुवा। और दिल में कहा : "मेरे पास न तो दिरहम हैं न ही दीनार कि मैं इस ग़रीब मुसाफ़िर की मदद करता।" उस वक़्त मेरे पास सीर्फ़ चार रोटियां थीं मैं ने उसे देते हुवे कहा : "ऐ बन्दए ख़ुदा ! मेरे पास दिरहम व दीनार नहीं वरना ज़रूर तुम्हें देता, सिर्फ़ येह चार रोटियां मैं ने खाने के लिये रखी थीं, तुम येह क़बूल कर लो।" मुसाफ़िर ने कहा : " हुज़ूर ! आप की दीद का शरबत पी लिया अब मुझे दिरहम व दीनार की फ़िक्र नहीं, बाक़ी रहा रोटियों का मुआ़मला तो अगर मेरा इन रोटियों को ले लेना आप की ख़ुशी का बाइ़ष है तो तबर्रुकन ले लेता हूं।"

मैं ने कहा : "अगर तुम येह रोटियां क़बूल कर लोगे तो मुझे दिली ख़ुशी होगी।" मुसाफ़िर ने वोह रोटियां लीं और कहा : "हुज़ूर ! मुझे उम्मीद है कि आप की दी हुई रोटियां मुझे अपने शहर तक काफ़ी हैं। अल्लाह तबारक व तआ़ला आप की हिफ़ाज़त फ़रमाए।" फिर मेरे हाथों को चूम कर वापसी की इजाज़त त़लब करने लगा। मैं ने उसे रवाना किया और कहा : "जाओ ! मैं ने तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द किया।" फिर वोह रुख़्सत हो गया, मैं बाहर खड़ा उसे देखता रहा यहां तक कि वोह मेरी नज़रों से औझल हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل फ़रमाते हैं : "मेरे वालिद अकषर उस मुसाफ़िर का तज़्किरा किया करते।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें इस ह़िकायत से येह दर्स मिला कि बुज़ुर्गाने दीन की ज़ियारत करने से उन मुक़द्दस हस्तियों की ख़ुसूसी तवज्जोह होती है और जिस को औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی अपनी नज़रों में रखें वोह कभी ज़लीलो रुस्वा नहीं होता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हमेशा औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का अदब करने और उन से ख़ूब ख़ूब बरकतें लेने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हम को तो हर एक वली से प्यार है — اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है
मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ وسلم का जो ग़ुलाम है — हमारा तो वोह इमाम है

ह़िकायत नम्बर : 347

बा बरकत इजतिमाअ़ के सदक़े मग़्फ़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन मैसूर मुजाशिई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से मन्क़ूल है : एक दिन हम ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की मह़फ़िल में मौजूद थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वा'ज़ व नसीह़त से हमारे दिलों को मुनव्वर फ़रमा रहे थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक नौजवान से फ़रमाया :

''ऐ बन्दए ख़ुदा ! कुरआने पाक की कुछ आयात तिलावत करो। नौजवान ने पढ़ना शुरूअ़ किया :

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۬ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ﴿۱۸﴾

(پ ۲۴، المؤمن: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डराओ उस नज़दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाएंगे ग़म में भरे और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए।*

जैसे ही नौजवान ने येह आयत मुकम्मल की आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''भला ज़ालिम का शफ़ीअ़ व दोस्त कौन होगा, कैसे कोई उस की शफ़ाअ़त करेगा जब कि ख़ुद रब्बुल आ़लमीन उसे सज़ा देना चाहे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बरोज़े क़ियामत ज़ालिमों और गुनाहगारों का बहुत बुरा ह़ाल होगा। तू देखेगा कि उन्हें बेड़ियों और ज़न्जीरों में जकड़ कर जहन्नम की भड़कती हुई आग की त़रफ़ खींचा जाएगा, वोह नंगे पाउं, नंगे बदन होंगे, उन के चेहरे काले सियाह और आंखे नीली हो जाएंगी, वोह पुकारते होंगे : ''हाए हमारी बरबादी ! हाए हमारी मुसीबत ! न जाने हमारे साथ क्या होगा ? हमें कहां ले जाया जा रहा है ? हाए बरबादी ! हाए हलाकत !'' फ़िरिश्ते उन्हें आग के गुर्ज़ों से मारते हुवे हांकेंगे, उन के आंसू उन के चेहरों पर बहेंगे और इतने बहेंगे कि ख़त्म हो जाएंगे। फिर वोह ख़ून के आंसू रोएंगे और उन की ह़ालत उन ख़ौफ़ज़दा परन्दों की त़रह़ होगी जिन्हें बहुत बड़े ख़ौफ़ ने दहशत में मुब्तला कर दिया हो। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तू उन की उस ह़ालत को देख ले तो उस हौलनाक मन्ज़र से तेरी आंखें सलामत न रहें, तेरा दिल फट जाए, उस मन्ज़र की हौलनाकी से तेरे क़दम ऐसे लरज़ेंगे कि उन्हें क़रार न आएगा।'' इतना कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फूट फूट कर रोने लगे फिर एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहा : ''हाए ! कितना बुरा है वोह मन्ज़र, हाए ! कितना बुरा है उन का ठिकाना !'' फिर रोते रोते आप की हिचकियां बन्ध गईं और वहां मौजूद तमाम लोग भी ज़ारो क़ित़ार रोने लगे।''

फिर एक नौजवान खड़ा हुवा और कहा : ''ऐ सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی क्या येह तमाम मुआ़मलात क़ियामत के दिन होंगे ?'' फ़रमाया : ''हा मेरे भेतीजे ! वाक़ेई येह तमाम वाक़िआ़त बरोज़े क़ियामत होंगे बल्कि वहां के ह़ालात की जो ख़बर मुझे पहुंची है वोह इस से कहीं ज़ियादा है जो मैं ने बयान की। मुझे ख़बर पहुंची है कि जहन्नमी नारे जहन्नम में चीख़ते रहेंगे यहां तक कि उन की आवाज़ ख़त्म हो जाएगी फिर उन में से कोई भी ऐसा न होगा जो उस मरीज़ की त़रह़ आहें और सिस्कियां न भरे जिसे बरसों से शदीद बीमारी लाह़िक़ हो।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बानी जहन्नम की हौलनाक कहानी सुन कर वोह नौजवान इस त़रह़ गिड़ गिड़ाने लगा : ''हाए अफ़्सोस ! हाए मेरी ग़फ़्लत ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात ज़ाएअ़ कर दिये। ऐ मेरे मालिक ! मैं तेरी इत़ाअ़त से ग़ाफ़िल रहा मुझे उन कोताहियों पर अफ़्सोस है। हाए ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार दी।'' फिर उस ने अपना मुंह जानिबे क़िब्ला किया और रोते हुवे बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ मुनाजात करने लगा :

"ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आज के दिन मैं तेरी बारगाह में सच्ची तौबा करता हूं, मेरी येह तौबा इख़्लास पर मब्नी है, मैं तेरे इ़लावा किसी और की त़रफ़ मुतवज्जेह नहीं। ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मुझ से आज तक जो इ़बादत हो सकी उसे क़बूल फ़रमा ले, मेरी साबिक़ा ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दे, मुझ से गुनाहों की गन्दगी दूर फ़रमा दे। मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह़्म फ़रमा। मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ अब मैं तेरी फ़रमां बरदारी और इत़ाअ़त का पट्टा अपनी गर्दन में डालता हूं, मेरे जिस्म का रुवां रुवां तेरी बारगाह में मुआ़फ़ी का त़लबगार है। मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ अगर तूने मुझे मुआ़फ़ न किया तो मैं बरबाद हो जाऊंगा।" इतना कह कर वोह नौजवान मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा, लोगों ने उसे उठाया तो वोह बेहोश हो चुका था, फिर वोह ऐसा बीमार हुवा कि संभल न सका। ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى और आप के दीगर रुफ़क़ा उस नौजवान की इ़यादत को जाते रहे। बिल आख़िर वोह नौजवान इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो कर दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर गया। उस के जनाज़े में कषीर लोगों ने शिर्कत की। ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अकषर अपनी मह़फ़िल में उस का ज़िक्र किया करते और फ़रमाते : "कुरआन की आयात और फ़िक्रे आख़िरत से मा'मूर बयान सुन कर वोह नौजवान मौत की आग़ोश में पहुंच गया।"

मरने के कुछ दिन बा'द किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : "तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला हुवा ?" कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के बा बरकत इजतिमाअ़ के सदक़े मेरी मग़फ़िरत हो गई और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस रह़मत के साए में पहुंच गया जो हर चीज़ को घेरे हुवे है।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبى الامين صلى الله عليه وسلم}*

रह़मत दा दरया इलाही हर दम वगदा तेरा जे इक क़त़रा बख़्शे मैनूं कम बन जावे मेरा

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नेकों की सोह़बत दुन्या व आख़िरत में कामयाब व कामरान कर देती है। जहां नेकों का तज़किरा हो वहां रह़मत की छमा छम बारिश होती है। तो जहां नेक लोग खुद जल्वा अफ़रोज़ हों वहां रह़मते ख़ुदावन्दी का क्या आ़लम होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में हज़ारों मुसलमान शिर्कत करते हैं और जहां चालीस (40) मुसलमान जम्अ़ हों वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली ज़रूर होता है। औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ होने के लिये अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये)

ह़िकायत नम्बर : 348 शैख़ैन करीमैन के गुस्ताख़ का इब्रतनाक अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی का बयान है कि "एक ख़ुरासानी ताजिर का ग़ुलाम बहुत नेक व पारसा था। मौसिमे ह़ज में जब ह़ाजियों के क़ाफ़िले सूए ह़रमैन जाने लगे तो उस नेक ग़ुलाम के दिल में भी ह़ाज़िरी की ख़्वाहिश जोश मारने लगी। उस ने मालिक के पास जा कर ह़ाले दिल सुनाया और ह़ाज़िरी की इजाज़त त़लब की। बद बख़्त व गुस्ताख़ ताजिर ने इन्कार कर दिया। ग़ुलाम ने कहा : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी की इजाज़त मांग रहा हूं, तुम इजाज़त क्यूं नहीं देते।" ताजिर ने कहा : "अगर तुम मेरा एक काम करो तो मैं इजाज़त दे दूंगा वरना हरगिज़ इजाज़त न दूंगा, पक्का वा'दा करो कि तुम वोह काम करोगे।" ग़ुलाम ने कहा : "बताओ ! क्या काम है ?" बद बख़्त ताजिर बोला : "मैं तुम्हारे साथ बेहतरीन सुवारियां, ख़ुद्दाम, अच्छे रुफ़क़ा और दीगर बहुत सी अश्या भेजूंगा। जब रौज़ए रसूल عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर जाओ तो वहां जा कर येह कहना : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे आक़ा ने येह पैग़ाम भिजवाया है कि मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों दोस्तों अबू बक्र सिद्दीक़ व उमरे फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से बेज़ार हूं।" अगर मेरा येह पैग़ाम पहुंचाने की ह़ामी भर लो तो मैं तुम्हें ब ख़ुशी इजाज़त देता हूं। ग़ुलाम का बयान है कि अपने बदबख़्त मालिक की येह गुस्ताख़ाना बातें सुन कर मेरा दिल बहुत जला, मैं बहुत ग़मगीन हो गया। बज़ाहिर तो मैं ने कह दिया कि मैं फ़रमांबरदार इत़ाअ़त गुज़ार हूं लेकिन जो मेरे दिल में था अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बेहतर जानता है। बहर ह़ाल मैं क़ाफ़िले के हमराह मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पहुंचा, धड़कते दिल, लरज़ते क़दमों, पुरनम आंखों के साथ रौज़ए रसूल عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जानिब बढ़ने लगा :

हुई उम्मीदें बार आवर मदीना आने वाला है झुका लो अब अदब से सर मदीना आने वाला है

क़ब्रे अन्वर पर पहुंच कर जाने आ़लम, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया। फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया। मुझे अपने बद बख़्त व गुस्ताख़ मालिक का क़बीह़ अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल पैग़ामे बद, ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पहुंचाने से बहुत शर्म आ रही थी लिहाज़ा मैं बाज़ रहा। और मस्जिदे नबवी में ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन में सो गया। मैं ने ख़्वाब में देखा कि क़ब्रे अन्वर की दीवार शक़ हुई और ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नूर बार चेहरा चमकाते हुवे बाहर तशरीफ़ ले आए। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब्ज़ लिबास ज़ैबे तन किया हुवा था और जिस्मे अत़हर से मुश्क की ख़ुश्बू आ रही थी। सारा माह़ोल मुश्कबार हो गया। मस्जिदे नबवी का ज़र्रा ज़र्रा गवाही दे रहा था कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ला चुके हैं।

अ़म्बर ज़मीं, उ़बैर हवा, मुश्क तर ग़ुबार अदना सी येह शनाख़्त तेरी राह गुज़र की है

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाईं जानिब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और बाईं जानिब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا थे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में उन्हों ने भी सब्ज़ लिबास पहना हुवा था। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ुले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़क़्लमन्द शख़्स ! तू ने अपने मालिक का पैग़ाम हम तक क्यूं नहीं पहुंचाया ?" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत और रो'ब व दबदबा इतना था कि मैं ने सर झुकाए दस्त बस्ता अ़र्ज़ की : "मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे शर्म आती थी कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आप के पहलू में आराम फ़रमा दोस्तों के मुतअ़ल्लिक़ अपने बद बख़्त मालिक का गुस्ताख़ाना पैग़ाम सुनाऊं।"

सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ खुश बख़्त اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तू ह़ज करने के बा'द बख़ैरो आ़फ़िय्यत "**ख़ुरासान**" वापस जाएगा। जब तू अपने मालिक के पास पहुंचे तो कहना : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :"बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से बेज़ार हैं जो सिद्दीक़ व फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से बेज़ार है।" क्या तू समझ गया है ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं समझ गया।" फिर फ़रमाया : "जान ले ! जब तू वहां पहुंचेगा तो चौथे दिन वोह मर जाएगा, क्या तू समझ गया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं समझ गया।" फ़रमाया : "तवज्जोह से सुन ! मरने से पहले उस के मुंह से पीप व ख़ून निकलेगा, क्या तू समझ गया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरे आक़ा ! मैं ख़ूब समझ गया।"

फिर आक़ाए नामदार, हम ग़रीबों के मालिको मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार, ग़ैबों पर ख़बरदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए और मैं बेदार हो गया। हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की ज़ियारत होने पर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ूब शुक्र अदा किया। फिर मैं ने ह़ज किया और मुख़्बिरे सादिक़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान के मुत़ाबिक़ اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बख़ैरो आ़फ़िय्यत वापस "**ख़ुरासान**" आ गया। मैं अपने साथ बहुत से मौसमी फल वग़ैरा भी लाया। मेरे बद बख़्त मालिक ने दो दिन तक मुझ से कोई बात न की, तीसरे दिन पूछने लगा : "मेरा पैग़ाम पहुंचाया या नहीं ?" मैं ने कहा : "मैं ने तुम्हारा काम पूरा कर दिया।" कहा : "वहां से क्या जवाब मिला ?" मैं ने कहा : "अगर वहां से मिला हुवा पैग़ाम न सुनो तो तुम्हारे लिये बेहतर है।" कहने लगा : "नहीं, मुझे बताओ ! तुम्हारे साथ क्या वाक़िआ़ पेश आया ?" मैं ने वाक़िआ़ सुनाना शुरूअ़ किया। जब मैं ने येह बताया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने मालिक से कह देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से बेज़ार है जो मेरे दोनों दोस्तों सिद्दीक़ व फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से बेज़ार है।" मेरा येह क़ौल सुन कर वोह बद बख़्त व नामुराद क़हक़हे मार कर हंसने लगा। फिर इस त़रह़ की बकवास की : "हम उन से बेज़ार हैं और वोह हम

से बेज़ार हो गए, अब हम सुकून से रहेंगे।" उस बद बख़्त की येह बात सुन कर मैं ने दिल में कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! जल्द ही तू अपने अन्जाम को पहुंचने वाला है।" हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमाने इ़ब्रत निशान के ऐ़न मुत़ाबिक़ चौथे दिन उस बद बख़्त के चेहरे पर गन्दे फोड़े निकल आए और उस के मुंह से पीप और ख़ून बहने लगा। बिल आख़िर ज़ोहर की नमाज़ से क़ब्ल वोह गुस्ताख़ व नामुराद बड़ी ज़िल्लत आमेज़ और इ़ब्रतनाक मौत मर गया।

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम !   जिसे मुस्त़फ़ा ﷺ ने नज़र से गिरा कर छोड़ दिया

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को अपनी हि़फ़्ज़ो अमान में रखे, बे अदबों और गुस्ताख़ों से हमेशा मह़फ़ूज़ फ़रमाए। हम से कभी कोई अदना सी गुस्ताख़ी भी सरज़द न हो। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! गुस्ताख़ों का अन्जाम बड़ा दर्दनाक व इ़ब्रतनाक होता है। ऐसे नामुराद ज़माने भर के लिये इ़ब्रत का सामान बन जाते हैं। जो नामुराद बद बख़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में नाज़ेबा कलिमात बकता या सह़ाबए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की बे अदबी करता है आख़िरत में तो तबाही व बरबादी उस का मुक़द्दर ज़रूर होगी लेकिन वोह दुन्या में भी ज़लीलो रुस्वा हो कर ज़माने भर के लिये निशाने इ़ब्रत बन जाता है और अ़क़्लमन्द लोग कभी भी उस के अ़क़ाइद व आ'माल की पैरवी नहीं करते। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें हमेशा बा अदब लोगों की सोह़बत में बैठने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और बड़ों का अदब और छोटों पर शफ़्क़त करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین ﷺ)

हम अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से सच्ची मह़ब्बत करते हैं। हमें तमाम अम्बियाए किराम, सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से सच्ची मह़ब्बत है। हमें यक़ीने कामिल है कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इसी मह़ब्बत के सदक़े हमारी मग़फ़िरत होगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हर घड़ी बे अदबों से मह़फ़ूज़ रखे, अमीरे अहले सुन्नत हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में इस्तिग़ासा करते हैं :

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ﷺ बे अदबों से   और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो !

(آمین بجاہ النبی الامین ﷺ)

हि़कायत नम्बर : 349

तीन इ़बादत गुज़ार इस्राईली

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा बनी इस्राईल के तीन इ़बादत गुज़ार जम्अ़ हुवे और कहने लगे : आओ ! हम में से हर एक अपना सब से बड़ा गुनाह याद करे। चुनान्चे, पहला शख़्स अपनी ज़िन्दगी का सब से बड़ा गुनाह बताते हुवे कहने लगा : "एक मरतबा मैं और मेरा एक दोस्त कहीं जा रहे थे। हमारा आपस में किसी बात पर इख़्तिलाफ़ हो गया। रास्ते में हमारे दरमियान एक दरख़्त ह़ाइल हुवा, मैं अचानक दरख़्त की ओट से निकल कर उस के सामने आया तो वोह मुझ से ख़ौफ़ज़दा हो गया और कहने लगा : "मैं तुझ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।" बस येही मुझे अपनी ज़िन्दगी की सब से बड़ी ख़त़ा मा'लूम हुई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ फ़रमाए।"

दूसरे ने कहा : "मैं बनी इस्राईली हूं, हमारी शरीअ़त में हुक्म है कि "अगर किसी के जिस्म पर नजासत लग जाए तो जिस्म का वोह ह़िस्सा काटना ज़रूरी है" एक मरतबा मेरे जिस्म पर पेशाब लग गया तो मैं ने आलूदा ह़िस्सा काट दिया लेकिन काटने में ज़ियादा मुबालग़ा नहीं किया। बस येही गुनाह मेरी ज़िन्दगी का सब से बड़ा गुनाह है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त मेरे इस गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमाए।"

तीसरे ने कहा : "एक मरतबा मेरी वालिदा ने मुझे पुकारा तो मैं ने फ़ौरन "लब्बैक" कहा, लेकिन तेज़ हवा की वजह से आवाज़ वालिदा तक न पहुंच सकी तो वोह ग़ुस्से में आ कर मुझे पथ्थर मारने लगी। मैं लाठी ले कर उस की त़रफ़ गया ताकि वोह इस के ज़रीए़ मुझे मारे और उस का ग़ुस्सा ठंडा हो जाए, लाठी देख कर वोह ख़ौफ़ज़दा हो कर भागी और उस का सर दरख़्त से टकरा कर ज़ख़्मी हो गया। बस येही मेरी ज़िन्दगी का सब से बड़ा गुनाह है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे इस गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमाए।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो**! अपने आ'माल का मुह़ासबा कर के गुनाहों पर शर्मिन्दा हो कर मुआ़फ़ी मांगना मग़फ़िरत का बाइ़ष है। हो सके तो रोज़ाना रात को सोने से क़ब्ल दो रक्अ़त "**सलातुत्तौबा**" पढ़ कर दिन भर के बल्कि साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये।)

ह़िकायत नम्बर : 350

तिलावत हो तो ऐसी हो....!

यज़ीद बिन मुह़म्मद बिन मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक से मन्क़ूल है कि हमें हमारे एक ग़ुलाम ने बताया : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر के इन्तिक़ाल के बा'द उन की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا बहुत ज़ियादा रोतीं यहां तक कि उन की बीनाई जाती रहीं। एक मरतबा उन के भाई मस्लमा और हिशाम आए और कहा : "प्यारी बहन! आख़िर आप इतना क्यूं रोती हैं? अगर आप अपने शोहर की जुदाई पर रोती हैं तो वाक़ेई वोह ऐसे मर्दे मुजाहिद थे कि उन के लिये रोया जाए। अगर दुन्यवी मालो दौलत की कमी रुला रही है तो हम और हमारे अम्वाल सब आप के सामने ह़ाज़िर हैं?" ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رحمۃاللہ تعالی علیہا ने फ़रमाया : "मैं इन दोनों बातों में से किसी पर भी नहीं रो रही। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मुझे तो वोह अ़जीबो ग़रीब और दर्द भरा मन्ज़र रुला रहा है जो मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر के साथ एक रात देखा। उस रात मैं येह समझी कि कोई इन्तिहाई हौलनाक मन्ज़र देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की येह ह़ालत हो गई है और आज रात आप का इन्तिक़ाल हो जाएगा।"

भाइयों ने पूछा : "प्यारी बहन ! हमें बताइये कि आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को उस रात किस ह़ालत में देखा।" फ़रमाया : "मैं ने देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नमाज़ पढ़ रहे थे, जब क़िराअत करते हुवे इस आयत पर पहुंचे :

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ (پ۳۰،القارعۃ:۴۔۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे और पहाड़ होंगे जैसे धुनकी ऊन।*

तो येह आयत पढ़ते ही एक ज़ोरदार चीख़ मार कर फ़रमाया : "हाए ! उस दिन मेरा क्या ह़ाल होगा ? हाए ! वोह दिन कितना कठिन व दुश्वार होगा !" फिर मुंह के बल गिर पड़े और मुंह से अ़जीबो ग़रीब आवाज़ें आने लगीं फिर आप साकित हो गए। मैं समझी कि शायद आप का दम निकल गया है। कुछ देर बा'द आप को होश आया तो फ़रमाने लगे : "हाए ! उस दिन कैसा सख़्त मुआ़मला होगा।" और चीख़ते चिल्लाते सह़्न में चक्कर लगाते हुवे फ़रमाया : "हाए ! उस दिन मेरी हलाकत होगी जिस दिन आदमी फैले हुवे पतंगों की त़रह़ और पहाड़ धुनकी हुई ऊन की त़रह़ हो जाएंगे।" सारी रात आप की येही कैफ़िय्यत रही। जब सुब्ह़ की अज़ानें शुरूअ़ हुईं तो आप गिर पड़े, मैं समझी की शायद आप की रूह़ परवाज़ कर गई है। ऐ मेरे भाइयो ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब भी मुझे वोह रात याद आती है तो मेरी आंखे बे इख़्तियार आंसू बहाने लगती हैं बा वुजूदे कोशिश मैं अपने आंसू नहीं रोक पाती।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से किस त़रह़ लर्ज़ां व तर्सां रहा करते थे। हर घड़ी क़ियामत का हौलनाक मन्ज़र उन के सामने होता। बहुत ज़ियादा इबादत व रियाज़त और गुनाहों से ह़द्द दरजा दूरी के बा वुजूद वोह पाकीज़ा ख़स्लत लोग अपने आप को गुनाह गार व इस्यां शिआ़र तसव्वुर करते, ह़ालांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उन का मर्तबा व मक़ाम बहुत आ'ला व अरफ़अ़ होता। वोह लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची आ़जिज़ी किया करते, सग़ीरा गुनाहों बल्कि ख़िलाफ़े औला बातों से भी कोसों दूर भागते, जहन्नम का हौलनाक गढ़ा हर लम्ह़ा उन के पेशे नज़र होता, वोह कभी भी कोई ऐसा काम न करते जो बाइ़से हलाकत होता। और एक हम हैं कि अपनी आख़िरत और ह़िसाबो किताब को भूल बैठे हैं, शैत़ान के बहकावे में आ कर हम अपने आप को गुनाहों के अ़मीक़ गढ़े में गिराते चले जा रहे हैं। न गुनाहों पर नदामत, न किसी क़िस्म की शर्मिन्दगी। अगर ख़त़ाओं को याद कर के चन्द आंसू बहा लेते तो गुनाहों का मैल कुछ तो धुल जाता मगर आह !

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता — हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म फ़रमाए। गुनाहों से सच्ची तौबा फिर उस पर इस्तिक़ामत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे बुज़ुर्गों के सदक़े हमारी कामिल मग़फ़िरत फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 351

चांदी के बदले सोना

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन फ़ैज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم बैतुल मुक़द्दस जाना चाहते थे। आप की रफ़ाक़त के ख़्वाहिश मन्द एक नौजवान ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं चाहता हूं कि आप के हमराह बैतुल मुक़द्दस जाऊं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस की दरख़्वास्त मन्ज़ूर करते हुवे फ़रमाया : "आओ पहले हम ह़जामत करवा लें फिर सफ़र पर रवाना होंगे।" चुनान्चे, दोनों ह़ज्जाम के पास गए, ह़जामत के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नौजवान से फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! तेरे पास कितना ज़ादे राह है ?" अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अठ्ठारह (18) दिरहम हैं।" फ़रमाया : "येह सब ह़ज्जाम को दे दो।" नौजवान ने हुक्म की ता'मील की फिर दोनों अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये। रास्ते में नौजवान ने कहा : "हुज़ूर ! अगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज्जाम को कम रक़म दिलवा देते और कुछ हम अपने पास रख लेते तो इस में क्या ह़रज था ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कोई जवाब न दिया और ख़ामोशी से जानिबे मन्ज़िल चलते रहे। बैतुल मुक़द्दस पहुंच कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मस्जिद के ख़ादिम से कहा : "क्या यहां कोई ऐसा शख़्स है जो अपनी खेती कटवाना चाहता हो ? हम दोनों उजरत पर फ़स्ल काटने के लिये तय्यार है। ख़ादिम ने कहा : हुज़ूर ! एक नसरानी जागीरदार के इलावा मैं किसी और ज़मीनदार को नहीं जानता, अगर कहें तो उस के पास ले चलता हूं।" फ़रमाया : "ठीक है, हमें उस के पास ले चलो।"

तीनों उस नस्रानी जागीरदार के पास पहुंचे और आने का मक़्सद बयान किया। नस्रानी जागीरदार ने अपने खेत दिखाए तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस की कटाई पर हमें कितनी उजरत मिलेगी ?" कहा : "एक दीनार।" फ़रमाया : "ठीक है, हम फ़स्ल काटने के लिये तय्यार हैं, तू एक दीनार मस्जिद के ख़ादिम के ह़वाले कर दे, काम मुकम्मल होने पर येह हमें दे देगा।" नस्रानी ने एक दीनार मस्जिद के ख़ादिम के ह़वाले कर दिया। रात ने अपने पर फैला दिये थे लेकिन चौदहवीं रात के चांद की उजली उजली रोशनी ने हर त़रफ़ उजाला बिखैर रखा था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने रफ़ीक़ से फ़रमाया : "ऐ जवान ! मैं नमाज़ पढ़ूं और तुम फ़स्ल काटो या तुम नमाज़ पढ़ो और मैं फ़स्ल काटूं, बताओ ! तुम्हें कौन सी बात पसन्द है ?" नौजवान ने नमाज़ की ह़ामी भर ली और नमाज़ पढ़ने लगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर फ़स्ल काटना शुरूअ़ की और सुब्ह़ तक काटते रहे जब कि नौजवान नमाज़ में मश्ग़ूल रहा। फ़राग़त के बा'द जागीरदार के पास पहुंच कर कहा : "हम ने अपना काम ख़त्म कर दिया है।"

जागीरदार बड़ा हैरान हुवा कि इतनी जल्दी इतनी सारी फ़स्ल किस त़रह़ काट ली। उस ने मुतअ़ज्जिब हो कर कहा : "तुम ने ज़रूर खेती ख़राब कर दी होगी वरना इतनी जल्दी तुम काम से कैसे फ़ारिग़ हो सकते हो ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तू जा कर अपनी फ़स्ल देख ले ताकि तुझे इत़मीनान हो जाए।" वोह गया तो देखा कि बहुत अह़सन त़रीक़े से फ़स्ल काटी गई है, जब वोह मुत़मइन हो गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "मस्जिद के ख़ादिम से कहो कि

हमारी उजरत हमें दे दे।" जागीरदार ने मस्जिद के ख़ादिम से कहा : "इन की उजरत इन के ह़वाले कर दो।" जब ख़ादिम दीनार देने लगा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "येह दीनार (या'नी सोने की अशरफ़ी) मेरे रफ़ीक़ को दे दो कि उस ने ह़ज्जाम को उठ्ठारह (18) दिरहम (या'नी चांदी के सिक्के) दिये थे।" चुनान्चे, ख़ादिम ने वोह दीनार नौजवान को दे दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبى الامين ﷺ

(سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ कैसे खुद्दार और बा करामत हुवा करते थे हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ! उस नौजवान के दिल में जब येह बात आई कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने ह़ज्जाम को इतनी रक़म क्यूं दिलवाई ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस को चांदी के अठ्ठारह सिक्कों के बदले सोने की अशरफ़ी अ़ता फ़रमा दी ताकि उसे अपने माल का मलाल न हो। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमेशा ह़लाल रिज़्क़ कमाते, खुद कम खाते लेकिन दूसरों की बहुत इमदाद फ़रमाते। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के सदक़े हमें भी इतना रिज़्क़े ह़लाल अ़ता फ़रमाए कि ह़राम की त़रफ़ हमारी नज़र ही न उठे। آمين بجاه النبى الامين ﷺ)

ह़िकायत नम्बर : 352 ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का जज़्बए ख़ैरख़्वाही

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيْم से मन्क़ूल है कि एक मरतबा हम ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की मह़फ़िल में ह़ाज़िर थे, इतने में आप के मो'तक़िदीन में से एक शख़्स आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को सलाम किये बिग़ैर हमारे क़रीब से गुज़र गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ाज़िरीन से पूछा : "क्या येह फ़ुलां शख़्स नहीं ?" अ़र्ज़ की गई : "जी हां।" फ़रमाया : "जाओ ! उस से पूछो : आज तुम ने हमें सलाम क्यूं नहीं किया ? क्या तुम नाराज़ हो ?" जब उसे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का येह पैग़ाम मिला तो कहा : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी हमारे हां बच्चे की विलादत हुई है और हमारे पास फूटी कोड़ी भी नहीं (या'नी कुछ भी नहीं), अब मैं खाने की तलाश में निकला हूं, मैं इतना परेशान हूं कि मुझे कुछ होश ही नहीं।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को उस की येह ह़ालत बताई गई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तड़प उठे और "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن" पढ़ कर कहा : "हाए ! अफ़्सोस ! हम अपने रफ़ीक़ के ह़ाल से ग़ाफ़िल रहे और बात इतनी बढ़ गई। हाए ! उसे इतनी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक शख़्स से फ़रमाया : "जाओ ! फ़ुलां बाग़ के मालिक के पास जा कर दो दीनार क़र्ज़ ह़ासिल करो और बाज़ार जा कर एक दीनार की अश्याए खुर्दो नोश (या'नी खाने पीने का सामान) ख़रीद कर सारा सामान और बक़िय्या एक दीनार हमारे उस परेशान ह़ाल रफ़ीक़ के घर दे आओ।

वोह शख़्स फ़ौरन ता'मीले हुक्म के लिये चल दिया उसी का बयान है : "मैं ने दो दीनार क़र्ज़ लिये, खाने पीने का सामान ख़रीदा फिर उस के घर पहुंच कर दरवाज़े पर दस्तक दी। उस की ज़ौजा ने पूछा : "कौन है ?" मैं ने अपना तआ़रुफ़ कराया और उस के शोहर के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। उस ने कहा : "वोह तो घर पर मौजूद नहीं।" मैं ने कहा : "अच्छा ! आप दरवाज़ा खोल कर एक त़रफ़ हो जाएं, मैं कुछ सामान देने आया हूं।" वोह दरवाज़ा खोल कर एक त़रफ़ हो गई, मैं ने सामान सेह़्न में रखा और दीनार उस औ़रत को दे दिया। उस ने पूछा : "अल्लाह तआ़ला आप पर रह़्म फ़रमाए ! येह सामान किस की त़रफ़ से है ?" मैं ने कहा : "अपने शोहर को सलाम कहना और कहना कि येह सारा सामान इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की त़रफ़ से है।"

येह सुन कर उस ग़रीब ख़ातून की ज़बान पर येह दुआइय्या कलिमात जारी हुवे : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आज इस मुश्किल वक़्त में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने हमारी मदद की, ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ इस की उन्हें अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमा, उन्हें कभी अपनी नज़्रे रह़मत से दूर न करना।" वोह इसी त़रह़ दुआ़एं करती रही और मैं वापस चला आया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को उस की दुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ बताया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इतना ख़ुश हुवे कि इस से क़ब्ल हम ने कभी आप को इतना ख़ुश होते हुवे नहीं देखा था। जब रात के आख़िरी पहर उस बेचारी ग़रीब ख़ातून का शोहर घर आया तो उस के पास कुछ भी न था, बा वुजूद कोशिश के उसे कोई चीज़ न मिल सकी। जैसे ही वोह घर में दाख़िल हुवा तो देखा कि सह़्न में बहुत सारा सामान रखा हुवा है। ख़ातून ने आगे बढ़ कर अपने शोहर को एक दीनार दिया तो उस ने पूछा : "येह सब चीज़ें किस ने भिजवाई हैं ?" कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने।" येह सुनते ही उस ग़रीब के मुंह से भी येह दुआइय्या कलिमात निकले।" ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को आज के दिन की अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमा ! उन्हें कभी अपनी नज़्रे रह़मत से दूर न करना, उन्हें कभी अपनी नज़्रे रह़मत से दूर न करना।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह मोमिन बड़ा ख़ुश बख़्त है जो मोह़ताजों की मदद करे, रोतों को हंसाए और परेशान ह़ाल लोगों की परेशानी दूर करे। मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त करना रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने का बहुत अच्छा रास्ता है। जो मख़्लूक़ पर रह़्म करेगा ख़ालिक़े लमयज़ल उस पर रह़मो करम की ऐसी बारिश फ़रमाएगा कि उस की ज़िन्दगी में हर त़रफ़ बहारें ही बहारें आ जाएंगी। और येह तज्रिबा शुदा बात है कि जब किसी ग़रीब इन्सान की मदद की जाए तो इन्सान को ऐसी अन्जानी सी ख़ुशी होती है जिसे अल्फ़ाज़ का जामा पहनाना मुश्किल है। इसे वोही समझ सकता है जिसे येह दौलत नसीब हुई हो। जिसे यक़ीन न आए वोह किसी दुख्यारे का दुख दूर कर के देख ले।)

हि़कायत नम्बर : 353

पुर असरार बुज़ुर्ग

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू नूह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बहुत इबादत गुज़ार थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान है : एक मरतबा मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا जाते हुवे मुझे एक बुज़ुर्ग नज़र आए, उन की बा रो'ब व बा वक़ार शख़्सिय्यत ने मुझे तअ़ज्जुब में डाल दिया। मैं ने उन से कहा : "मैं आप की रफ़ाक़त का त़ालिब हूं।" फ़रमाया : "जैसे तुम्हारी मरज़ी, मुझे कोई ए'तिराज़ नहीं। चुनान्चे, मैं उन के साथ हो लिया, वोह सारा सारा दिन चलते और जहां चाहते ठहर जाते। बहुत ज़ियादा गरमी के बा वुजूद, दिन को रोज़ा रखते, इफ़्त़ार के वक़्त अपने थैले से कोई चीज़ निकाल कर अपने मुंह में डाल लेते। रोज़ाना इफ़्त़ार के वक़्त न जाने कौन सी चीज़ थैले से निकाल कर सिर्फ़ दो तीन मरतबा अपने मुंह में डालते फिर मुझे बुलाते और कहते : "आओ ! तुम भी इस में से कुछ खा लो।" मैं अपने दिल में कहता : "ऐ बन्दए ख़ुदा ! येह तो तुम्हें भी किफ़ायत न करेगा फिर भी तुम्हारे ईषार का येह आ़लम है कि मुझे भी खाने की दा'वत दे रहे हो, तुम्हारे जज़्बे को सलाम।" वोह ब इस्रार मुझे कुछ न कुछ खिला देते। उन के सब्र और इबादत व रियाज़त को देख कर उन का रो'ब व दबदबा मेरे दिल में घर कर चुका था।

हम मन्ज़िलों पर मन्ज़िलें त़ै करते सूए ह़रम रवां दवां थे। एक दिन रास्ते में एक शख़्स मिला जिस के पास एक गधा था, बुज़ुर्ग ने मुझ से फ़रमाया : "जाओ और वोह गधा ख़रीद लाओ।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बुज़ुर्ग की येह बात सुन कर उन के जलाल की वजह से मुझ से इन्कार न हो सका। मैं ने गधे वाले से क़ीमत मा'लूम की तो उस ने कहा : "मैं तीस (30) दीनार से एक दिरहम भी कम न लूंगा।" मैं ने बुज़ुर्ग को बताया तो फ़रमाया : "जाओ ! इतने ही में ख़रीद लो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से भलाई त़लब करो।" मैं ने कहा : "इस की क़ीमत कहां से अदा करूं।" फ़रमाया बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर अपना हाथ मेरे थैले में डालो और अपनी मत़लूबा रक़म ह़ासिल कर लो।" मैं ने जैसे ही बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर थैले में हाथ डाला मेरे हाथ में एक थैली आई जिस में पूरे तीस दीनार थे न कम न ज़ियादा। मैं दिनार दे कर गधा ले आया तो फ़रमाया : "तुम इस पर सुवार हो जाओ।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! आप मुझ से ज़ियादा उ़म्र रसीदा व कमज़ोर हैं, इस लिये आप सुवार हो जाएं और मैं पैदल चलता हूं।" बहर ह़ाल मेरे इस्रार पर वोह सुवार हो गए और मैं उन के साथ चलने लगा, हम सारा दिन सफ़र और रात को क़ियाम करते, वोह बुज़ुर्ग पूरी रात नमाज़ पढ़ते हुवे गुज़ार देते।

जब हम "**उस्फ़ान**" पहुंचे तो एक शख़्स उस बुज़ुर्ग से मिला, सलाम किया और दोनों ने एक त़रफ़ हो कर कुछ गुफ़्तगू की फिर दोनों ने रोना शुरूअ़ कर दिया, काफ़ी देर रोते रहे। जब जुदा होने लगे तो बुज़ुर्ग ने उस शख़्स से कहा : "मुझे कुछ नसीह़त कीजिये।" फ़रमाया : "हां ! दिल के तक़्वा को लाज़िम कर लो। हर घड़ी क़ियामत का हौलनाक मन्ज़र तुम्हारे पेशे नज़र होना चाहिये।" अ़र्ज़ की : "मज़ीद कुछ नसीह़त फ़रमाइये।" फ़रमाया : "हां ! जब आख़िरत की त़रफ़ जाओ तो अच्छे आ'माल ले कर जाना। अपने दिल को दुन्यवी मालो दौलत की मह़ब्बत से पाक कर

लो। सुनो ! समझदार लोग वोह हैं जो उस वक़्त दुन्या के ऐ़ब और धोके को पहचान लेते हैं जब वोह अपने चाहने वालों को हर त़रफ़ से घेर लेती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तुम पर रह़मत, सलामती और बरकत हो।" (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

फिर दोनों जुदा हो गए। मैं ने अपने रफ़ीक़ बुज़ुर्ग से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! येह शख़्स कौन था ?" मैं ने आज तक इस से बेहतर कलाम करने वाला किसी को नहीं पाया ?" फ़रमाया : "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से एक ख़ास बन्दा था।" फिर हम "**उ़स्फ़ान**" से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا पहुंचे, मक़ामे "**अब्त़ह़**" के क़रीब वोह सुवारी से उतरे और कहा : "तुम यहीं ठहरना मैं बैतुल्लाह शरीफ़ पर एक मह़ब्बत भरी नज़्र डाल कर اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जल्द ही वापस आ जाऊंगा।" इतना कह कर वोह चले गए और मैं वहीं खड़ा रहा। कुछ देर बा'द मेरे पास एक शख़्स आया और कहा : "क्या येह गधा फ़रोख़्त करोगे ?" मैं ने कहा : "हां ! येह तीस दीनार का है।" उस ने कहा : "मुझे मन्ज़ूर है।" मैं ने कहा : "येह गधा मेरा नहीं, मेरे रफ़ीक़ का है, वोह मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ गए हैं अभी आते ही होंगे।" अभी मैं येह बात कर ही रहा था कि वोह आते हुवे दिखाई दिये। मैं उन की त़रफ़ बढ़ा और कहा : "मैं ने येह गधा तीस (30) दीनार में फ़रोख़्त कर दिया है।" फ़रमाया : "अगर तुम चाहते तो इस से ज़ियादा में भी बेच सकते थे। लेकिन अब बेच दिया तो कोई बात नहीं, अपना क़ौल पूरा करो।"

चुनान्चे, मैं ने तीस दीनार ले कर गधा उस शख़्स के ह़वाले कर दिया। फिर बुज़ुर्ग से पूछा : "इन दीनारों का क्या करूं ?" फ़रमाया : "येह तुम्हारे लिये हैं, इन्हें अपने इस्ति'माल में लाओ।" मैं ने कहा : "मुझे इन की ह़ाजत नहीं।" फ़रमाया : "अच्छा तो फिर इन्हें मेरे थैले में डाल दो।" मैं ने वोह दीनार थैले में डाल दिये। मक़ामे "अब्त़ह़" के क़रीब एक जगह क़ियाम किया तो फ़रमाया : "क़लम, दवात और वरक़ ले कर आओ।" मैं ने येह अश्या ह़ाज़िरे ख़िदमत कीं तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दो ख़त़ लिखे, फिर एक ख़त़ मुझे देते हुवे कहा : "जाओ ! फ़ुलां जगह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد होंगे, येह ख़त़ दे कर उन्हें और वहां मौजूद तमाम लोगों को मेरा सलाम कहना। फिर दूसरा ख़त़ देते हुवे फ़रमाया : "इस को अपने पास रखना और यौमे नह़र (या'नी क़ुरबानी के दिन) पढ़ना। जाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा ह़ामी व नासिर हो।"

मैं ख़त़ ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد के पास पहुंचा तो देखा कि वोह लोगों को ह़दीष सुना रहे हैं, बहुत से मुसलमान उन के इर्द गिर्द बैठे ह़दीषे नबवी सुन रहे थे। मैं ने सलाम किया और कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए। आप के एक भाई ने येह ख़त़ भेजा है।" उन्हों ने ख़त़ पढ़ा तो उस में कुछ इस त़रह़ का मज़्मून लिखा था :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَمَّا بَعْد ! ऐ अ़ब्बाद ! मैं तुझे उस दिन की मुफ़्लिसी व मोह़ताजी से डराता हूं जिस दिन

लोग (जम्अ़ शुदा नेकियों के) ज़ख़ीरे के मोह़ताज होंगे। बेशक आख़िरत की मोह़ताजी व मुफ़्लिसी को दुन्या का ग़ना नहीं रोक सकता। अगर आख़िरत में आ'माले सालेह़ा कम हुवे तो मुसीबत का इज़ाला बहुत मुश्किल है। मैं तुम्हारा मुसलमान भाई हूं। जब तुम मेरे पास पहुंचोगे तो मैं मरने वाला होऊंगा पस तुम मेरे पास आओ, मेरी तजहीज़ व तक्फ़ीन करो और नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर मुझे मेरी क़ब्र में उतार दो। मैं तुम्हें और तमाम मुसलमानों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हि़फ़ाज़त में छोड़ता हूं। दो जहां के ताजवर, ह़बीबे रब्बे अक्बर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में मेरा सलाम हो। सब को मेरी त़रफ़ से सलाम और तुम सब पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो।

"आप का भाई" والسَّلام

ख़त़ पढ़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد ने मुझ से फ़रमाया : "जिस ने येह ख़त़ भिजवाया है, वोह कहां है ?" मैं ने कहा : "मक़ामे "अब्त़ह़" के क़रीब।" फ़रमाया : "क्या वोह बीमार है ?" मैं ने कहा : "मैं तो बिल्कुल तन्दुरुस्त छोड़ कर आया हूं।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه खड़े हो गए। आप के साथ तमाम ह़ाज़िरीन भी खड़े हुवे और हम सब मक़ामे "अब्त़ह़" में उस बुज़ुर्ग के पास पहुंचे, देखा तो उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। उन की मय्यित एक चादर में लिपटी क़िब्ला रुख़ रखी हुई थी। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد ने मुझ से फ़रमाया : "क्या येह तुम्हारा रफ़ीक़ है ?" मैं ने कहा : "जी हां।" फ़रमाया : "क्या तुम इसे तन्दुरुस्त छोड़ कर गए थे ?" मैं ने कहा : "जी हां"। येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बुज़ुर्ग की मय्यित के सिरहाने खड़े हो कर काफ़ी देर रोते रहे फिर नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर दफ़्न कर दिया। लोगों ने दूर दूर से आ कर जनाज़े में शिर्कत की। जब यौमे नह़र (या'नी कुरबानी का दिन) आया तो मैं ने कहा : "वल्लाह ! अपने रफ़ीक़ के हुक्म के मुत़ाबिक़ उन का दिया हुवा दूसरा ख़त़ मैं आज ज़रूर पढ़ूंगा।" चुनान्चे, मैं ने ख़त़ खोला तो उस में लिखा था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَمَّا بَعْد ! ऐ मेरे भाई अल्लाह रब्बुल आ़लमीन उस दिन तुझे तेरी नेकी का बेहतरीन सिला अ़त़ा फ़रमाए जिस दिन लोगों को अपने आ'माले सालेह़ा की शदीद ज़रूरत होगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हमारी रफ़ाक़त का बेहतरीन अज्र अ़त़ा फ़रमाए। बेशक नेक शख़्स अपनी नेकी को अपने बिल्कुल क़रीब पाएगा। मेरे भाई ! मुझे तुझ से एक ह़ाजत है। जब अल्लाह तबारक व तआ़ला तेरा ह़ज मुकम्मल फ़रमा दे तो बैतुल मुक़द्दस जा कर मेरी मीराष मेरे वारिष के ह़वाले कर देना। اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

ख़त़ पढ़ कर मैं ने अपने दिल में कहा : "ऐ मेरे रफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए। आप का हर काम अ़जीब है, और येह वसिय्यत नामा तो बहुत ही ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ैज़ है। मैं बैतुल मुक़द्दस किस के पास जाऊंगा ? न तो मुझे वारिष का नाम बताया गया न किसी ख़ास अ़लाक़े की निशान देही की गई। मैं आप का सामान किसे दूंगा ? मुझे क्या मा'लूम कि आप का वारिष कौन है ? काफ़ी देर इसी त़रह़ सोचता रहा। बिल आख़िर मैं ने उन का सामान अपनी चादर में लपेटा,

सामान क्या था एक पियाला, एक थैला और एक लाठी जिस से वोह टेक लगाया करते थे। येह सामान महफ़ूज़ मक़ाम पर रख कर मनासिके ह़ज अदा किये और पुख़्ता इरादा कर लिया कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मैं बैतुल मुक़द्दस ज़रूर जाऊंगा। हो सकता है मेरी मुलाक़ात उन के वारिष से हो जाए।"

चुनान्चे, बैतुल मुक़द्दस पहुंच कर मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा तो बहुत से फ़ुक़रा व मसाकीन का हुजूम देखा। मैं उन लोगों के दरमियान घूमता रहा समझ में नहीं आ रहा था कि किस से पूछूं, अचानक एक शख़्स ने मुझे मेरा नाम ले कर पुकारा, मैं ने उस की त़रफ़ देखा तो वोह बिल्कुल मेरे रफ़ीक़ की त़रह़ था। उस ने मुझ से कहा : "फ़ुलां की मीराष मुझे दे दो।" मैं अ़सा, पियाला और थैला उस शख़्स को दे कर वापस आने लगा। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी मैं मस्जिद से बाहर भी न निकला था कि मेरे दिल में ख़याल आया कि मैं ने अपने बुज़ुर्ग रफ़ीक़ के अ़जीबो ग़रीब मुआ़मलात देखे। फिर मैं मक्कए मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस आया यहां भी बहुत अ़जीब बात देखी कि एक अन्जान शख़्स ने मेरा नाम ले कर पुकारा, येह सारे मुआ़मलात बहुत ह़ैरान कुन हैं और मेरा येह ह़ाल है कि मैं ने न तो उन दोनों से पूछा कि आप कौन हैं और न ही लोगों से उन के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात कीं कि येह कौन हस्तियां हैं। मुझे चाहिये कि जिस की त़रफ़ मुझे भेजा गया है ता दमे आख़िर उस के साथ रहूं। बस इसी ख़याल के तह़त मैं वापस पलटा और उस शख़्स को ढूंडने लगा लेकिन वोह कहीं नज़र न आया हर जगह तलाश किया मगर नाकामी हुई लोगों से पूछा तो उन्हों ने भी ला इ़ल्मी का इज़्हार किया। मैं काफ़ी दिन बैतुल मुक़द्दस ठहरा रहा लेकिन मुझे कोई ऐसा न मिला जो उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ मेरी रहनुमाई करता। बिल आख़िर उस के दीदार की ह़सरत दिल ही में लिये, मैं वापस इराक़ आ गया।"

जिस की ख़ात़िर दिल था बे चैन — हर जगह ढूंडा मगर कहीं न मिला

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 354

जुरअत मन्द ह़ाजी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ज़ैद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَحَد से मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाऊस عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقُدُّوس ने फ़रमाया : "एक मरतबा मौसिमे ह़ज में ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ मक्कए मुकर्रमा (زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا) आया तो मुझे अपने पास बुलवाया। मैं गया तो मुझे अपने बराबर बिठाया और टेक लगाने के लिये तकया दिया, हम अभी बैठे बातें कर रहे थे कि किसी त़वाफ़ करने वाले की सदा फ़ज़ा में बुलन्द हुई :

"لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ لَکَ وَالْمُلْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ

तर्जमा : मैं ह़ाज़िर हूं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ह़ाज़िर हूं (हां) मैं ह़ाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं ह़ाज़िर हूं, बेशक तमाम ख़ूबियां और ने'मतें तेरे लिये हैं और तेरा ही मुल्क है, (मेरे मौला) तेरा कोई शरीक नहीं।"

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने जब येह आवाज़ सुनी तो ख़ादिम को हुक्म दिया कि उस हाजी को हमारे पास बुला लाओ। ख़ादिम एक बा वक़ार शख़्स को साथ ले आया। हज्जाज ने उस से पूछा : "तू किन लोगों में से है ?" कहा : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं मुसलमान हूं।" हज्जाज ने कहा : "मैं तुझ से इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछ रहा।" कहा : "फिर किस के मुतअ़ल्लिक़ पूछ रहा है ?" कहा : "मैं येह पूछना चाहता हूं कि तेरा तअ़ल्लुक़ किस मुल्क से है।" कहा : "मैं यमन का रहने वाला हूं।" हज्जाज ने कहा : "मेरा भाई मुहम्मद बिन यूसुफ़ कैसा है ?" कहा : "बहुत अच्छे लिबास वाला, बहुत अच्छे जिस्म का मालिक और ख़ूब घूमने फिरने वाला सुवार है।" हज्जाज ने कहा : "मैं इन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछ रहा।" कहा : "तो फिर किस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछ रहा है ?" कहा : मैं तो उस की सीरत व किरदार के मुतअ़ल्लिक़ पूछ रहा हूं।" येह सुन कर उस मर्दे क़लन्दर, जुरअत मन्द हाजी ने बड़ी बे ख़ौफ़ी से कहा : "वोह इन्तिहाई ज़ालिम व सरकश है, मख़्लूक़ का पैरूकार और "ख़ालिक़े लमयज़ल" का नाफ़रमान है।" हज्जाज ने अपने भाई के ख़िलाफ़ येह बातें सुनीं तो गुस्से से तड़प कर बोला : "तुझे इस त़रह़ का कलाम करने पर किस चीज़ ने उभारा ? क्या तू जानता नहीं कि वोह मेरा भाई है और उस का मरतबा मेरे नज़दीक कितना बुलन्द है ?" जुरअत मन्द हाजी ने बड़ी दिलैरी से कहा : "तेरा क्या ख़याल है कि अगर तेरा भाई तेरी नज़र में मक़ाम व मर्तबे वाला है तो क्या इस वजह से मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब जान लूंगा ? हरगिज़ नहीं, बल्कि अ़ज़ीम व बुलन्द तो वोही है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुक़र्रब है और मैं तेरे ज़ालिम व सरकश भाई को मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम क्यूं समझूं ? हालांकि मैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर का क़स्द कर के आया हूं, मैं तो उस के दीन को समझने वाला, उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने वाला और उन की तस्दीक़ करने वाला हूं।"

दिलैर व जुरअत मन्द हाजी की बातें सुन कर हज्जाज बिन यूसुफ़ ख़ामोश रहा, उस से कोई जवाब न बन पड़ा। फिर बुलन्द हिम्मत, जुरअत मन्द हाजी खड़ा हुवा और इजाज़त लिये बिग़ैर वहां से चला गया। हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं भी उस मर्दे क़लन्दर के पीछे हो लिया, मैं ने कहा : "येह शख़्स बहुत हकीम व दाना है।" फिर मैं ने देखा कि वोह ख़ानए का'बा का ग़िलाफ़ पकड़े बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ इल्तिजाएं कर रहा है : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने फ़ज़्लो करम से परेशानी और मुसीबत से नजात अ़त़ा फ़रमा, हर मुआ़मले में बख़ीलों के शर से मह़फ़ूज़ रख और ह़क़ बात कहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़ालिमो जाबिर हाकिम के सामने ह़क़ बात कहना अ़ज़ीम जिहाद है। उस मर्दे क़लन्दर ने एक इन्तिहाई सफ़्फ़ाक व ज़ालिम हुक्मरान के सामने उस के भाई की ह़क़ीक़त का अ़लल ए'लान इज़्हार किया। हज्जाज बिन यूसुफ़ का रो'ब व दबदबा उस मर्दे मुजाहिद के लिये किसी क़िस्म की रुकावट न बन सका। उसे ख़ौफ़ था तो बस ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का और येह बात रोज़े रोशन की त़रह़ इयां है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है वोह

मख़्लूक़ से नहीं डरता बल्कि मख़्लूक़ उस से डरती है। हर मुआ़मले में इख़्लास शर्त़ है, जो मुख़्लिस है वोह कामयाब व कामरान है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी ह़क़ बात कहने, सुनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। ह़क़ पर अ़मल करने और ह़क़ का साथ देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।)

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 355 ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की सख़ावत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दौरे ख़िलाफ़त में बह़रैन से वापसी पर मैं ने इ़शा की नमाज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पीछे अदा की, नमाज़ से फ़राग़त के बा'द मैं ने सलाम अ़र्ज़ किया। आप ने जवाब दे कर पूछा : "ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) बह़रैन से क्या ले कर आए हो ?" मैं ने कहा : "पांच लाख दिरहम।" फ़रमाया : "जानते हो, तुम कितनी रक़म कह रहे हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! एक सो हज़ार, एक सो हज़ार, एक सो हज़ार। इस त़रह़ मैं ने पांच मरतबा गिना।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) शायद तुम्हें नींद आ रही है, जाओ ! अभी घर जा कर आराम कर लो कल सुब्ह़ मेरे पास आना।" चुनान्चे, मैं घर चला आया। सुब्ह़ जब दरबारे ख़िलाफ़त में पहुंचा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फिर पूछा : "ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) बह़रैन से क्या लाए हो ?" मैं ने कहा : "पांच लाख दिरहम।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मुतअ़ज्जिब हो कर पूछा : "क्या वाके़ई तुम ठीक कह रहे हो ?" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं, मैं वाके़ई पांच लाख दिरहम लाया हूं।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने लोगों से फ़रमाया : "ऐ लोगो ! बेशक मेरे पास कसीर माल आया है, बताओ गिन कर तुम्हारे दरमियान तक़्सीम करूं या तोल कर।"

एक शख़्स ने कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मैं ने अ़जमियों को देखा है कि वोह रजिस्टर वग़ैरा में लोगों के नाम लिख लेते हैं और फिर उस रजिस्टर को देख कर ह़क़दारों में ग़ल्ला वग़ैरा तक़्सीम किया जाता है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के लिये पांच हज़ार, अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के लिये चार हज़ार और अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ के लिये बारह हज़ार दिरहम मुक़र्रर किये। ह़ज़रते सय्यिदतुना बरज़ा बिन्ते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पास जिज़्या वग़ैरा का माल आया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के लिये बहुत सा माल भिजवाया। उन्हों ने माले कसीर देख कर फ़रमाया : "अल्लाह तबारक व तआ़ला ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की मग़फ़िरत फ़रमाए। मेरे इ़लावा मेरे और मुसलमान भाई भी हैं जो इस माल के मुझ से ज़ियादा मोह़ताज होंगे।" लोगों ने कहा : "येह सब का सब आप के लिये है (दीगर ह़क़दारों को अपना ह़िस्सा मिल चुका है)।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कह कर ज़मीन पर एक कपड़ा बिछाते हुवे कहा : "सारा माल यहां डाल कर इस पर एक कपड़ा डाल दो।" लोगों ने तमाम दिरहम वहां डाल दिये।

हज़रते सय्यिदतुना बरज़ा बिन्ते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुझ से फ़रमाया : "इस कपड़े के नीचे अपना हाथ डाल कर एक मुठ्ठी दिरहमों की भरो और फ़ुलां यतीम को दे आओ, एक मुठ्ठी फ़ुलां ग़रीब को दे आओ, एक मुठ्ठी फ़ुलां रिश्तेदार को दे आओ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुक्म फ़रमाती जातीं और मैं लोगों में तक़्सीम करती जाती। यहां तक कि चन्द दिरहमों के इलावा बाक़ी तमाम दिरहम तक़्सीम फ़रमा दिये। फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए। क्या इस में हमारा कुछ हिस्सा नहीं ?" फ़रमाया : "हां ! जो बाक़ी बचा है वोह तुम्हारे लिये है।" मैं ने कपड़ा उठाया तो उस के नीचे सिर्फ़ पचासी (85) दिरहम बाक़ी थे। फिर उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जहश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हाथ उठा कर इस तरह दुआ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की जानिब से मुझे इस के बा'द कोई हदिय्या नसीब न हो।" फिर उसी साल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم}

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की करोड़ों रह़मतें हों मोअमिनीन की उन माओं पर जिन्हों ने हर ह़ाल में रब्बे करीम का शुक्र अदा किया। ख़ुद भूक व प्यास बरदाश्त कर के उम्मत के ग़ुरबा व फ़ुक़रा की परेशानियां दूर फ़रमाईं। उन्हें मालो दौलत और दुन्यवी साज़ो सामान से मह़ब्बत न थी बल्कि वोह तो ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में सरशार थीं। दुन्यवी मालो दौलत की आमद उन्हें ख़ुश न करती बल्कि इस की फ़िरावानी उन के लिये परेशानी का बाइ़ष बनती। उन के पास जो माल आता उसे फ़ौरन सदक़ा कर देतीं। येह सब हमारे मक्की मदनी आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तर्बिय्यत व सोह़बत का अषर था। जिस त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किसी उम्मती की परेशानी नहीं देखी जाती इसी त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर वाले भी उम्मते मुस्लिमा को परेशानी में मुब्तला देख कर बे क़रार हो जाते। इन्हीं पाकीज़ा हस्तियों के रह़मो करम से हम जैसे गुनाहगारों का गुज़ारा हो रहा है। हमारे मक्की मदनी आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही हमारी षरवत व इ़ज़्ज़त हैं। अल्लाह तबारक व तआ़ला हमें इन के दामने करम से हमेशा हमेशा वाबस्ता रखे।)

हम ग़रीबों के आक़ा पे बे ह़द दुरूद   हम फ़क़ीरों की षरवत पे लाखों सलाम

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 356 ख़च्चर कैसे जिन्दा हुवा....?

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर, दुश्मनाने इस्लाम से जिहाद के लिये **ना'रए तक्बीर व ना'रए रिसालत** बुलन्द करता हुवा जानिबे मन्ज़िल रवां दवां था। एक जगह पड़ाव किया तो एक मुजाहिद का ख़च्चर मर गया। दूसरे मुजाहिदों ने उसे अपनी सुवारियां पेश कीं और अपने साथ चलने को कहा। लेकिन उस ने इन्कार कर दिया। जब बे हद इस्रार के बा वुजूद भी वोह तय्यार न हुवा तो उसे वहीं छोड़ कर सारा लश्कर आगे रवाना हो गया। कुछ देर बा'द उस मुजाहिद ने वुज़ू कर के ख़ूब ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और फिर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ इल्तिजा की : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी ख़ुशनूदी के लिये तेरी राह का मुजाहिद बना हूं। मैं गवाही देता हूं कि तू ही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है। तू ही उन्हें क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाएगा। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ मेरे इस ख़च्चर को मेरे लिये ज़िन्दा कर दे।"

दुआ़ के बा'द उस ने अपने ख़च्चर को ठोकर मारी तो ख़च्चर फ़ौरन कान झाड़ते हुवे खड़ा हो गया। मुजाहिद ने ख़च्चर पर ज़ीन डाली और सुवार हो गया। ख़च्चर हवा से बातें करता हुवा सर पट दौड़ने लगा, चन्द ही घड़ियों में वोह मुजाहिद अपने दोस्तों से जा मिला। उन्हों ने अपने रफ़ीक़ को उसी ख़च्चर पर देखा तो ह़ैरान हो कर माजरा दरयाफ़्त किया। मुजाहिद ने सारा वाक़िआ़ बताया और कहा : "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये इस ख़च्चर को ज़िन्दा फ़रमा दिया।"

येह सुन कर तमाम शुरकाए क़ाफ़िला गोया ज़बाने ह़ाल से यूं कह रहे थे :

दुआ़ए वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 357 ख़ूंख़्वार रूमी

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : "एक मरतबा मैं तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम की त़रफ़ रवाना हुवा। एक शहर में पहुंच कर आराम की ग़रज़ से एक दरख़्त के साए तले लैट गया। थकावट बहुत ज़ियादा थी कुछ देर में नींद ने आ लिया। अचानक किसी ने मेरे पाउं को ज़ोर से हिलाया, मैं घबरा कर खड़ा हुवा तो सामने एक अ़जमी रूमी मौजूद था, उस ने मुझ से कहा : "ऐ अ़रबी ! तुझे तीन बातों में से एक का इख़्तियार है। मुझ से नेज़ाज़नी कर या तल्वारज़नी कर या फिर मुझ से कुश्ती लड़। जल्दी बता तू कौन सी बात पसन्द करता है ?" इस नागहानी मुसीबत से मैं बहुत परेशान हुवा और समझ गया कि इस की बात माने बिग़ैर छुटकारा नहीं। बिल आख़िर मैं ने उस से कहा : "ऐ अ़जमी ! तल्वारज़नी और नेज़ाज़नी के नतीजे में

मौत वाके़अ़ हो सकती है। बेहतर येही है कि हम कुश्ती कर लें।" इतना सुनते ही वोह मेरी त़रफ़ बढ़ा और देखते ही देखते मुझे पछाड़ कर मेरे सीने पर सुवार हो गया और बड़े सख़्त लह्जे में कहा : "बता ! तुझे किस त़रह़ क़त्ल करूं ?" वोह मुझे ज़ब्ह़ करने ही वाला था कि मैं ने आस्मान की त़रफ़ देखा और बारगाहे ख़ुदावन्दी में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा :

"ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं गवाही देता हूं कि (तेरे सिवा) अ़र्श से ले कर ज़मीन के नीचले हिस्से तक सब मा'बूद बाति़ल हैं, सिर्फ़ तू अकेला ही इसी लाइक़ है कि तेरी इ़बादत की जाए। बेशक तू जानता है कि इस वक़्त मैं कौन सी मुसीबत में गिरिफ़्तार हूं। मेरे करीम عَزَّوَجَلَّ मुझ से इस मुसीबत को दूर फ़रमा।" बस येह दुआ़ करनी थी कि मुझ पर ग़शी त़ारी हो गई। जब होश आया तो देखा कि वोह ख़ूंख़्वार रूमी मेरे क़रीब मुर्दा ह़ालत में पड़ा हुवा है। मैं ने इस मुसीबत से छुटकारे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और जानिबे मन्ज़िल रवाना हो गया।

ह़िकायत नम्बर : 358

दुआ़ की तासीर

जब सफ़्वान बिन मुह़रिज़ के भतीजे को ज़माने के ज़ालिमो जाबिर ह़ाकिम इब्ने ज़ियाद ने क़ैद कर लिया तो आप बहुत परेशान हुवे और अपने भतीजे की रिहाई के लिये बसरा के उमरा और बा असर लोगों से सिफ़ारिश करवाई लेकिन कामयाबी न हो सकी। इब्ने ज़ियाद ने सब की सिफ़ारिशों को रद्द कर दिया। सफ़्वान बिन मुह़रिज़ ने बड़ी तक्लीफ़ देह ह़ालत में रात गुज़ारी। रात के पिछले पहर उन्हें अचानक ऊंघ आ गई तो ख़्वाब में किसी कहने वाले ने कहा : "ऐ सफ़्वान बिन मुह़रिज़ ! उठ और अपनी ह़ाजत त़लब कर।"

येह ख़्वाब देख कर उन की आंख खुल गई। एक अन्जाने से ख़ौफ़ ने उन के जिस्म पर लर्ज़ा त़ारी कर दिया था। उन्हों ने वुज़ू कर के दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और फिर रो रो कर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ करने लगे। येह अपने घर में मसरूफ़े दुआ़ थे और वहां इब्ने ज़ियाद बेचैनी और कर्ब में मुब्तला था। उस ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि "मुझे सफ़्वान बिन मुह़रिज़ के भतीजे के पास ले चलो।" सिपाही फ़ौरन मश्अ़लें ले कर इब्ने ज़ियाद के पास आए, ज़ालिम हुक्मरान अपने सिपाहियों के साथ जेल की जानिब चल दिया, वहां पहुंच कर उस ने जेल के दरवाज़े खुलवाए और बुलन्द आवाज़ से कहा : "सफ़्वान बिन मुह़रिज़ के भतीजे को फ़ौरन रिहा कर दो उस की वजह से मैं ने सारी रात बेचैनी के आ़लम में गुज़ारी।" ह़ाकिम की आवाज़ सुन कर सिपाहीयों ने फौरन सफ़्वान बिन मुह़रिज़ के भतीजे को जेल से निकाला और इब्ने ज़ियाद के सामने ला खड़ा किया। इब्ने ज़ियाद ने बड़ी नर्मी से गुफ़्तगू की और कहा : "जाओ ! ख़ुशी ख़ुशी अपने घर चले जाओ, तुम पर किसी क़िस्म का कोई जुरमाना वग़ैरा नहीं।" इतना कह कर इब्ने ज़ियाद ने उसे रिहा कर दिया।

वोह सीधा अपने चचा सफ़्वान बिन मुह़रिज़ के पास पहुंचा और दरवाज़े पर दस्तक दी, अन्दर से आवाज़ आई : “कौन ?” कहा : “आप का भतीजा।” अपने भतीजे की इस त़रह़ अचानक आमद पर आप बहुत ह़ैरान हुवे और दरवाज़ा खोल कर अन्दर ले गए। फिर ह़क़ीक़ते ह़ाल दरयाफ़्त की तो उस ने रात वाला सारा वाक़िआ़ सुना दिया। सफ़्वान बिन मुह़रिज़ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और अपने भतीजे से गुफ़्त्गू करने लगे।

हिकायत नम्बर : 359 बुख़्ल का भयानक अन्जाम

मुनीफ़ह बिन्ते रूमी का बयान है, मैं मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में मुक़ीम थी। एक दिन मैं ने एक बा रौनक़ मक़ाम पर लोगों का हुजूम देखा। क़रीब जाने पर मा'लूम हुवा कि एक औ़रत का सीधा हाथ मफ़्लूज हो चुका है और लोग उस से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सुवालात पूछ रहे हैं। जब उस औ़रत से पूछा : “तुम्हारा हाथ कैसे मफ़्लूज हुवा ?” तो उस औ़रत ने अपनी दास्ताने इ़ब्रत निशान सुनाई : “आज से कुछ अ़र्से क़ब्ल मैं अपने वालिदैन के साथ रहती थी। मेरे वालिद बहुत नेक व पारसा थे। कषरत से सदक़ा व ख़ैरात करते और ग़ुरबा की ह़त्तल वस्अ़ इमदाद किया करते। जब कि मेरी वालिदा इन्तिहाई कन्जूस थी। पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक पुराना सा कपड़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में दिया और एक मरतबा जब मेरे वालिद ने गाए ज़ब्ह़ की तो उस की कुछ चरबी किसी ग़रीब को दी इस के इ़लावा कभी भी कोई चीज़ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च न की।

अपने वालिदैन के इन्तिक़ाल के कुछ दिन बा'द मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरा वालिद एक हौज़ (या'नी तालाब) के किनारे खड़ा है और लोगों को पियाले भर भर कर पानी पिला रहा है। मैं वहां खड़ी सारा मन्ज़र देख रही थी। अचानक मेरी नज़र अपनी वालिदा पर पड़ी जो ज़मीन पर पड़ी हुई थी उस के हाथों में वोही चरबी थी जो उस ने सदक़ा की थी और उसी पुराने कपड़े से उस का सित्र ढांपा हुवा था जो उस ने सदक़ा किया था। वोह शिद्दते प्यास से “हाए प्यास ! हाए प्यास !” की सदाएं बुलन्द कर रही थी। येह दर्दनाक मन्ज़र देख कर मैं तड़प उठी। मैं ने कहा : हाए ! येह तो मेरी वालिदा है और जो दीगर लोगों को पानी पिला रहा है वोह मेरा वालिद है। मैं हौज़ से एक पियाला भर कर अपनी वालिदा को पिलाऊंगी। फिर जैसे ही पियाला भर कर अपनी वालिदा के पास आई तो आस्मान से मुनादी की येह निदा सुनाई दी : “ख़बरदार ! जो इस कन्जूस औ़रत को पानी पिलाएगा उस का हाथ मफ़्लूज हो जाएगा।” फिर मेरी आंख खुल गई और उस वक़्त से मेरा हाथ ऐसा है जैसा कि तुम देख रहे हो। (الامان و الحفیظ!)

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आख़िरत में माल का है काम क्या
माले दुन्या दो जहां में है वबाल काम आएगा न पेशे ज़ुलजलाल

(या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें माल के वबाल से महफ़ूज़ रख और अपनी रिज़ा की ख़ातिर नेक उमूर में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। ह़लाल माल कमाने और ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करने की सआ़दत अ़ता फ़रमा। मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े रोशन के सदक़े क़ब्रो ह़श्र की सख़्तियां आसान फ़रमा और हमें जन्नतुल फ़िरदौस में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमा। बरोज़े मह़शर साक़िये कौषर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों से जामे कौषर पीने की सआ़दत अ़ता फ़रमा। (آمین بجاہ النبی الامین صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

हिकायत नम्बर : 360 आदमी ख़रगोश कैसे बना....?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमते अक़्दस में रह कर इ़ल्मे दीन सीखा करता था। एक मरतबा उस ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से अपने अ़लाक़े में वापस जाने की इजाज़त चाही और कहा : ''मैं जल्द ही दोबारा ह़ाज़िर हो जाऊंगा।'' आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे इजाज़त अ़ता फ़रमा दी।

वोह चला गया और अपने अ़लाक़े में लोगों से कहता फिरता : ''ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह फ़रमाया, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे येह बात बताई।'' इस त़रह़ की बातें कर के वोह लोगों से माल जम्अ़ करता। लोग ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुक़र्रब समझ कर उस की ता'ज़ीम करते और उसे मालो दौलत देते। वोह बड़ा ख़ुश होता और जगह जगह जा कर कहता, ''मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को येह फ़रमाते हुवे सुना।'' अल ग़रज़ ! इस त़रह़ उस ने बहुत सा माल जम्अ़ कर लिया। काफ़ी दिन गुज़र जाने के बा वुजूद जब वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत न हुवा तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने लोगों से उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा लेकिन किसी को उस की ख़बर न थी कि अब वोह कहां है ? एक दिन आप عَلَيْهِ السَّلَام एक जगह तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक देहाती गुज़रा जिस ने रस्सी से बन्धा हुवा ख़रगोश अपनी गर्दन में लटका रखा था। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से पूछा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तू कहां से आ रहा है ?'' अ़र्ज़ की : ''फ़ुलां गाऊं से।'' फ़रमाया : ''क्या तू फ़ुलां शख़्स को जानता है जिस ने मुझ से इ़ल्मे दीन सीखा ?''

देहाती ने अपनी गर्दन में लटके हुवे ख़रगोश की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : ''येही वोह शख़्स है जिस के मुतअ़ल्लिक़ आप عَلَيْهِ السَّلَام पूछ रहे हैं। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इसे ख़रगोश बना दिया है।'' येह सुन कर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ''ऐ पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इसे इस की अस्ली ह़ालत पर लौटा दे ताकि मैं इस से पूछूं कि किस जुर्म की वजह से इसे जानवर बना दिया गया ?'' बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से वह़ी नाज़िल हुई : ''ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام)

जो सुवाल तुम ने किया है, अगर येही सुवाल मुक़र्रब रसूलों में से कोई और भी करे तब भी मैं इसे इस की अस्ली ह़ालत पर नहीं लौटाऊंगा। इसे मैं ने जानवर इस लिये बनाया है कि **येह दीन के ज़रीए दुन्या की ह़क़ीर दौलत त़लब किया करता था।"** (نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ ذَالِکَ)

(या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी नाराज़ी से मह़फ़ूज़ रख, हमारे गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा। सच्ची तौबा और इस पर इस्तिक़ामत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। सिर्फ़ अपनी ही रिज़ा की ख़ात़िर इ़ल्मे दीन सीखने और दूसरों को सिखाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। रियाकारी, हुब्बे माल, त़लबे जाह, और दीगर बड़े बड़े गुनाहों से हमें मह़फ़ूज़ फ़रमा। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 361 जब बुलाया आक़ा ﷺ ने ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा : "आओ ! **अबू हम्माम** नामी शख़्स के पास चलें जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر के मुतअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ़ बयान करता है।" हम दोनों उस के पास पहुंचे तो मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया। उस ने कहा : मुझे फ़ुलां परहेज़गार शख़्स कि जिस की सच्चाई लोगों में मश्हूर है, ने कुछ इस त़रह़ बताया : "मैं मुसलसल तीन साल से ह़ज की दुआ़ कर रहा था लेकिन मेरी येह ह़सरत दिल ही में रही।"

कर रहे हैं जाने वाले, ह़ज की अब तय्यारियां
रह न जाऊं मैं कहीं, कर दो करम फिर या नबी ﷺ
मुझ पे क्या गुज़रेगी आक़ा ! इस बरस गर रह गया
मेरा ह़ाले दिल तो है, सब तुम पर ज़ाहिर या नबी ﷺ

चौथे साल ह़ज का मौसिम क़रीब था। मेरे दिल में ज़ियारते ह़रमैने शरीफ़ैन की ख़्वाहिश मचल रही थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करम हुवा मेरी दुआ़ की क़बूलिय्यत कुछ इस अन्दाज़ में हुई कि एक रात जब मैं सोया तो मेरी दिल की आंखें खुल गईं, सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, मुझे रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़्तशम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **"तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना।"**

मेरी आंख खुली तो दिल ख़ुशी से झूम रहा था। बारगाहे नबुव्वत से ह़ज की इजाज़त मिल चुकी थी। सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी आवाज़ अब तक कानों में रस घोल रही थी, मैं बहुत शादां व फ़रहां था। अचानक मुझे याद आया कि मेरे पास ज़ादे राह तो है नहीं, मैं तो बिल्कुल बे सरो सामान हूं। बस इस ख़याल के आते ही मैं ग़मगीन हो गया। दूसरी रात फिर ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा लेकिन मैं अपनी बे सरो सामानी का ज़िक्र न कर सका। इसी त़रह़ तीसरी रात भी बारगाहे नबुव्वत से हुक्म हुवा कि **"तुम इस साल ह़ज को चले जाना।"** मैं ने सोचा अगर दोबारा ख़्वाब में मेरे आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तशरीफ़ लाए तो मैं अपनी बे सरो सामानी के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ करूंगा। बक़ौले शाइर :

पास मालो ज़र नहीं, उड़ने को भी पर नहीं कर दो कोई इन्तिज़ाम, तुम पर करोड़ों सलाम

चौथी रात फिर मदीने के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर, मह़्बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे घर में जल्वागरी फ़रमाई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से येही इरशाद फ़रमा रहे थे : "**तुम इस साल ह़ज को चले जाना।**" मैं ने दस्तबस्ता अ़र्ज़ की : "मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तो ज़ादे राह भी नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं ! तुम अपने मकान की फ़ुलां जगह खोदो वहां तुम्हारे दादा की ज़िरह मौजूद होगी।" इतना फ़रमा कर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए। सुब्ह़ जब मेरी आंख खुली तो मैं बहुत खुश था। नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बताई हुई जगह खोदी तो वहां वाक़ेई एक क़ीमती ज़िरह मौजूद थी। वोह ऐसी नई थी गोया उसे किसी ने इस्ति'माल ही न किया हो। मैं ने उसे चार हज़ार दीनार में बेचा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से अस्बाबे ह़ज का खुद ही इन्तिज़ाम हो गया :

जब बुलाया आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने........खुद ही इन्तिज़ाम हो गए।

मैं ज़ादे राह ख़रीद कर हुज्जाज के क़ाफ़िले में शामिल हो गया। अब हमारा क़ाफ़िला सूए ह़रम रवां दवां था। ह़रम शरीफ़ पहुंच कर मनासिके ह़ज अदा किये। अब वापसी का इरादा था मैं वहां के मनाज़िर पर अलवदाई नज़र डाल रहा था। जुदाई का वक़्त क़रीब आता जा रहा था मैं नवाफ़िल अदा करने "**अब्त़ह़**" की जानिब गया। वहां कुछ देर आराम के लिये बैठा तो ऊंघ आ गई, सर की आंखें बन्द हो रही थीं और दिल की आंखें खुल रही थीं। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना नूरानी चेहरा चमकाते मुस्कुराते हुवे तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ खुश बख़्त ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी सई को क़बूल फ़रमा लिया है। तू उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के पास जा और उसे कहना : "हमारे हां तुम्हारे तीन नाम हैं : उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, अमीरुल मोअमिनीन, अबू यतामा (या'नी यतीमों का वाली), ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! क़ौम के सरदारों और टेक्स वुसूल करने वालों पर अपना हाथ सख़्त रखना।" इतना फ़रमा कर **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए। मैं बेदार हुवा और अपने रुफ़क़ा के पास पहुंच कर कहा : "जाओ ! **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की बरकत के साथ अपने वत़न लौट जाओ ! मैं किसी वजह से तुम्हारे साथ नहीं जा सकता।"

फिर मैं "शाम" जाने वाले क़ाफ़िले में शामिल हो गया। दिमश्क़ पहुंच कर अमीरुल मोअमिनीन का घर मा'लूम किया और ज़वाल से कुछ देर क़ब्ल वहां पहुंच गया। बाहर दरवाज़े के पास एक शख़्स बैठा हुवा था मैं ने उस से कहा : "अमीरुल मोअमिनीन से मेरे लिये ह़ाज़िरी की इजाज़त त़लब करो।" वोह बोला : "अमीरुल मोअमिनीन के पास जाने से तुम्हें कोई नहीं

रोकेगा, लेकिन अभी वोह लोगों के मसाइल ह़ल फ़रमा रहे हैं। बेहतर येही है कि तुम कुछ देर इन्तिज़ार कर लो जैसे ही वोह फ़ारिग़ होंगे मैं तुम्हें बता दूंगा और अगर अभी ह़ाज़िर होना चाहो तो तुम्हारी मरज़ी।" मैं इन्तिज़ार करने लगा, कुछ देर बा'द बताया गया : "अमीरुल मोअमिनीन लोगों के मसाइल से फ़ारिग़ हो चुके हैं।" चुनान्चे, मैं ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर सलाम पेश किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : "तुम कौन हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ासिद हूं और आप की त़रफ़ पैग़ाम ले कर आया हूं।" येह सुनते ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरी त़रफ़ देखा उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पानी पी रहे थे। फ़ौरन पियाला एक त़रफ़ रखा, मुझे सलामती की दुआ़ दी फिर अपने पास बिठाया और पूछा : "तुम कहां से आए हो ?" मैं ने कहा : "बसरा का रहने वाला हूं।" पूछा : "किस क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखते हो।" मैं ने कहा : "फ़ुलां क़बीले से।" फ़रमाया : "वहां इस साल गन्दुम कैसी हुई है ? तुम्हारे जव की फ़स्लें कैसी हुई हैं ? वहां के अंगूर कैसे हैं ? वहां की खजूरें कैसी हैं ? घी कैसा है ? वहां के हथयार और बीज की क्या ह़ालत है ?" अल ग़रज़ ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़रीदो फ़रोख़्त से मुतअ़ल्लिक़ तमाम चीज़ों के बारे में सुवाल किया। जब इन तमाम चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ पूछ चुके तो पहली बात की त़रफ़ आए और कहा : "तुम्हारा भला हो तुम तो बहुत अ़ज़ीम मुआ़मला ले कर आए हो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मुझे ख़्वाब में जो पैग़ाम मिला मैं वोही ले कर ह़ाज़िर हुवा हूं।" फिर मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से यहां पहुंचने तक तमाम वाक़िआ़त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कह सुनाए, मुझे ऐसा मह़सूस हुवा जैसे उन्हें मुझ पर ए'तिमाद हो गया है और उन के नज़्दीक मेरी तमाम बातें षाबित हो चुकी हैं।" फ़रमाया : "तुम हमारे पास ठहरो, हम तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करेंगे।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! मैं पैग़ाम ले कर ह़ाज़िर हुवा था, अब मैं अपने फ़र्ज़ से सुबुकदोश हो चुका हूं, मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमाइये।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझे वहीं छोड़ कर अन्दर तशरीफ़ ले गए। वापसी पर चालीस दीनारों से भरी एक थैली मेरी त़रफ़ बढ़ाते हुवे फ़रमाया : "इस वक़्त मेरे पास इन दीनारों के इलावा कोई और चीज़ नहीं तुम बत़ौरे तोह़फ़ा येह क़बूल कर लो।"

मैं ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं कभी भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम पहुंचाने के इ़वज़ कोई चीज़ नहीं लूंगा। बेह़द इस्रार के बा वुजूद मैं ने उन दीनारों को हाथ तक न लगाया। मैं ने वापसी की इजाज़त चाही और जब मैं अलवदाअ़ कह कर उठा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझे सीने से लगा लिया और दरवाज़े तक छोड़ने आए और अश्क बार आंखों से मुझे रुख़्सत किया। मैं उस वलिय्ये कामिल से मुलाक़ात के बा'द अपने शहर की जानिब आ रहा था और दिल में उन की मह़ब्बत व ता'ज़ीम मज़ीद बढ़ गई थी। बसरा पहुंचने के कुछ ही दिन बा'द मुझे येह जान लेवा ख़बर मिली : "वलिय्ये कामिल, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر हज़ारों आंखों को सोगवार छोड़ कर इस दुन्या से पर्दा फ़रमा गए और दारे उ़क़्बा की त़रफ़ रवाना हो गए।" (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن)

आप की जुदाई पर हर आंख अश्क बार थी और हर ज़बान गोया यूं कह रही थी :

अ़र्श पर धूमें मचें, वोह मोमिने सालेह़ मिला   फ़र्श से मातम उठे, वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

फिर मैं मुजाहिदीन के हमराह जिहाद के लिये रूम चला गया। वहां मुझे वोही शख़्स मिला जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر के दरवाज़े पर बैठा हुवा था और जिस के ज़रीए़ मैं ने इजाज़त त़लब की थी। मैं उसे पहचान न सका लेकिन उस ने मुझे पहचान लिया। मेरे क़रीब आ कर सलाम किया और कहा : "ऐ बन्दए ख़ुदा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप का ख़्वाब सच्चा कर दिया है। अमीरुल मोअमिनीन के बेटे अ़ब्दुल मलिक बीमार हो गए थे। मैं रात के वक़्त उन की ख़िदमत पर मामूर था। जब मैं उन के पास होता तो अमीरुल मोअमिनीन चले जाते और नमाज़ पढ़ते रहते। जब वोह अपने बेटे के पास आ जाते तो मैं जा कर सो जाता। मेरे जाते ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दरवाज़ा बन्द कर लेते और नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! एक रात मैं ने अचानक अमीरुल मोअमिनीन के रोने की आवाज़ सुनी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बड़े दर्दभरे अन्दाज़ में बुलन्द आवाज़ से रो रहे थे। मैं घबरा कर दरवाज़े की त़रफ़ लपका, दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। मैं ने कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! क्या अ़ब्दुल मलिक को कोई ह़ादिषा पेश आ गया है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुसलसल रोते रहे और मेरी बात की त़रफ़ बिल्कुल तवज्जोह न दी। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो दरवाज़ा खोल कर फ़रमाया : "ऐ बन्दए ख़ुदा ! जान ले ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस बसरी का ख़्वाब सच्चा कर दिखाया। अभी अभी मुझे ख़्वाब में हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से वोही इरशाद फ़रमाया जो उस बसरी ने पैग़ाम दिया था।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 362

सब से ख़ूब सूरत हूर

ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि : "एक दिन मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में ह़ाज़िर था। इतने में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे जो अबू बक्र के नाम से मश्हूर थे जिहाद से वापस आए। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से जिहाद के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने जिहाद में पेश आने वाले बहुत से वाक़िआ़त बताए और कहा : "अब्बा जान ! क्या मैं आप को अपने एक मुजाहिद साथी की अ़जीबो ग़रीब व ईमान अफ़्रोज़ ह़ालत के बारे में न बताऊं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "ज़रूर बताओ।" कहा : "हमारे लश्कर में एक ख़ूबरू नौजवान भी था। जब हम दुश्मन के बिल्कुल सामने पहुंच गए तो ह़म्ले की तय्यारी में मशरूफ़ हो गए। इतने में उस नौजवान के येह अल्फ़ाज़ फ़ज़ा में गूंजे : "वाह ! मेरी ज़ौजा "**ऐ़ना**" कैसी ख़ूब सूरत है, वाह मेरी ज़ौजा

"ऐ़ना" कैसी ख़ूब सूरत है।" येह आवाज़ सुन कर हम फ़ौरन उस की त़रफ़ दौड़े, हम समझे कि शायद उसे कोई आ़रिज़ा लाह़िक़ हो गया है। हम ने पूछा : "ऐ नौजवान ! क्या हुवा ?" कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के शहसुवारो ! सुनो ! मैं हमेशा अपने आप से येह कहता था कि मैं हरगिज़ शादी न करूंगा यहां तक कि मैं किसी ग़ज़्वे में शहीद हो जाऊंगा और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त जन्नत की सब से ख़ूब सूरत हूर से मेरी शादी कर देगा। मैं हर मरतबा शहादत की आरज़ू लिये जिहाद में शरीक होता, कई जिहादों में शिर्कत के बावुजूद मुझे शहादत की दौलत न मिल सकी। अब इस लश्कर के साथ जिहाद में आ गया। रास्ते में मेरे नफ़्स ने मुझे इस इरादे पर उभारा, "अगर इस मरतबा भी मुझे शहादत न मिली तो वापसी पर मैं शादी कर लूंगा।"

अभी कुछ देर क़ब्ल मुझे ऊंघ आई मेरे ख़्वाब में कोई आने वाला आया और कहा : "तुम ही हो जो येह कह रहे हो कि "अगर इस मरतबा मैं शहीद न हुवा तो वापसी पर शादी कर लूंगा ?" सुनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने "हूरे ऐ़ना" के साथ तुम्हारी शादी कर दी है। उठो ! मेरे साथ चलो।" वोह मुझे ले कर एक इन्तिहाई सर सब्ज़ो शादाब वसीअ़ बाग़ में पहुंचा, वहां का मन्ज़र बड़ा ही दिल रुबा था, उस में दस (10) ऐसी ह़सीनो जमील लड़कियां मौजूद थीं कि इस से क़ब्ल मेरी आंखों ने ऐसा हुस्न न देखा था। मैं ने कहा : "शायद इन में से कोई एक "हूरे ऐ़ना" होगी।" येह सुन कर उन दोशीज़ाओं ने कहा : "हम तो उस की कनीज़ें हैं, "हूरे ऐ़ना" तुम्हारे सामने की जानिब है।"

मैं आगे बढ़ा तो एक बहुत ही ख़ूब सूरत और सर सब्ज़ बाग़ नज़र आया येह पहले बाग़ की निस्बत ज़ियादा ख़ूब सूरत व वसीअ़ था। उस में बीस (20) ह़सीनो जमील दोशीज़ाएं थीं उन के हुस्नो जमाल के सामने पहली दस लड़कियों के हुस्न की कोई अहम्मिय्यत न थी। मैं ने कहा : "इन में से कोई एक "हूरे ऐ़ना" है।" जवाब मिला : "आगे चले जाओ "हूरे ऐ़ना" तुम्हारे सामने है। हम तो उस की कनीज़ें हैं।" मैं आगे बढ़ा तो सामने एक ऐसा वसीओ़ अ़रीज़ और ख़ूब सूरत बाग़ था जो पहले दो बाग़ों की निस्बत बहुत ज़ियादा पुरबहार था। उस में चालीस (40) ऐसी ख़ूब सूरत लड़कियां थीं कि उन के सामने पहली दोशीज़ाओं की ख़ूब सूरती कुछ भी न थी। मैं ने कहा : "इन में कोई एक ज़रूर "हूरे ऐ़ना" होगी।"

येह सुन कर उन्हों ने अपनी पुर तरन्नुम आवाज़ में कहा : "हम तो उस की कनीज़ें हैं : "हूरे ऐ़ना" तुम्हारे सामने है, आगे चले जाओ।" मैं आगे बढ़ा तो अपने आप को याक़ूत के बने हुवे एक ख़ूब सूरत कमरे में पाया जिस में एक तख़्त पर साबिक़ा तमाम लड़कियों से ज़ियादा ह़सीनो जमील नौजवान लड़की मौजूद थी उस का हुस्न आंखों को ख़ीरा कर रहा था। वोह बड़ी शानो शौकत से तख़्त पर बैठी मेरी जानिब देख रही थी। मैं ने बेताब हो कर पूछा : "क्या तुम ही "हूरे ऐ़ना" हो ?" उस ने अपनी मसह़ूर कुन आवाज़ में कहा : "ख़ुश आमदीद ! मैं ही "हूरे ऐ़ना" हूं।" येह सुन कर मैं ने उसे छूने के लिये हाथ बढ़ाया तो उस की मुतरनम आवाज़ गूंजी : "ठहर जाइये ! अभी आप के अन्दर रूह़ मौजूद है। कुछ देर इन्तिज़ार कीजिये ! اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

आज आप इफ़्तार हमारे साथ करेंगे।'' मैं अभी इस होशरुबा मन्ज़र में ही गुम था कि मेरी आंख खुल गई। बस अब मैं बहुत जल्द वहां पहुंचने वाला हूं।

नौजवान ने अपनी बात ख़त्म ही की थी कि मुनादी ने पुकार कर कहा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के शहसुवारो ! दुश्मन पर ह़म्ला करने का वक़्त आ गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर इस्लाम के दुश्मनों पर टूट पड़ो !'' येह सुन कर हम दुश्मन के मुक़ाबले में सफ़ें बना कर सीसा पिलाई हुई दीवार की त़रह़ खड़े हो गए। वोह नौजवान बड़ी बे जिगरी से दुश्मनों से नबर्द आज़मा था। मुझे उस की बात याद थी, मैं कभी सूरज की त़रफ़ देखता कभी उस की त़रफ़। जैसे ही सूरज ग़ुरूब हुवा उस की गर्दन तन से जुदा कर दी गई। वोह राहे ख़ुदा में अपना सर क़ुरबान करा चुका था। मैं नहीं जानता कि सूरज पहले ग़ुरूब हुवा या वोह नौजवान पहले शहीद हुवा। यक़ीनन उस ने इफ़्त़ारी ''**हूरे ऐना**'' के साथ की होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब अपने बेटे की ज़बानी उस नौजवान की ईमान अफ़रोज़ कहानी सुनी तो बे साख़्ता दुआ़ गो हुवे : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उस मुजाहिद पर रह़मत हो।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 363 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जां निषारी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन अ़ब्दुस्सलाम बिन नो'मान बिन बशीर अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मरवी है : (जंगे मौता) में जब ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद कर दिये गए तो लोगों ने बा आवाज़े बुलन्द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पुकारा। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त लश्कर की एक त़रफ़ मौजूद थे। तीन दिन से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ भी न खाया था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में एक हड्डी थी जिसे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भूक की वजह से चूस रहे थे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत की ख़बर सुनी तो बे ताब हो कर हड्डी फेंक दी और येह कहते हुवे आगे बढ़े : ''ऐ अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) अभी तक तेरे पास दुन्यावी शै मौजूद है। फिर बड़ी बे जिगरी से दुश्मन पर टूट पड़े तल्वार के वार से आप की उंगली कट गई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह अश्आ़र पढ़े :

तू ने सिर्फ़ येह उंगली कटवाई है और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में येह कोई बड़ा कारनामा नहीं। ऐ नफ़्स ! शहीद हो जा वरना मौत का फ़ैसला तुझे क़त्ल कर डालेगा और तुझे ज़रूर मौत दी जाएगी। तू ने जिस चीज़ की तमन्ना की तुझे वोह चीज़ दी गई। अब अगर तू भी इन दोनों (ज़ैद बिन ह़ारिषा और जा'फ़र बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की त़रह़ शहीद हो गया तो कामयाब है और अगर तू ने ताख़ीर की तो तह़क़ीक़ बद बख़्ती तेरा मुक़द्दर होगी।''

फिर अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के फ़रमाने लगे : "ऐ नफ़्स ! तुझे किस चीज़ की तमन्ना है ? क्या फ़ुलां की ? तो सुन ! **उसे तीन त़लाक़** । क्या तुझे फ़ुलां फ़ुलां लौंडी व गुलाम और फ़ुलां बाग़ से महब्बत है ? तो सुन ! अपनी येह सब चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये छोड़ दे । ऐ नफ़्स ! तुझे क्या हो गया कि तू जन्नत को नापसन्द कर रहा है ? मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाता हूं कि तुझे उस में ज़रूर जाना पड़ेगा, अब तेरी मरज़ी चाहे खुश हो कर जा या मजबूर हो कर, जा ! खुश हो कर जा ! बेशक तू वहां मुत़मइन रहेगा, तू नहीं है मगर पानी का क़त़रा । बेशक लोग जम्अ़ हो गए और उन की चीख़ो पुकार शदीद हो गई ।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुश्मन की सफ़ों में घुस गए । बिल आख़िर लड़ते लड़ते जामे शहादत नौश फ़रमा गए ।

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم﴿*

हिकायत नम्बर : 364

एक मुजाहिद की दुआ़ए शहादत

ह़ज़रते सय्यिदुना हुमैद बिन हिलाल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन कुल्षूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم बहुत ही बा हया और सालेह़ नौजवान थे । चलते वक़्त आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निगाहें हमेशा इस त़रह़ झुकी रहतीं कि पास से गुज़रने वालों की भी ख़बर न होती । उस वक़्त घरों की दीवारें इतनी बुलन्द न होती थीं । एक मरतबा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ घरों के क़रीब से गुज़र रहे थे कि किसी औ़रत ने दूसरी औ़रतों से कहा : "जल्दी से घरों के अन्दर चली जाओ, एक नौजवान आ रहा है ।" येह सुन कर दूसरी औ़रतों ने कहा : "अरे ! येह तो ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन कुल्षूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم हैं, इन की नज़रें तो ज़मीन से उठती ही नहीं फिर येह किसी ग़ैर औ़रत पर नज़र क्यूं कर डालेंगे ।"

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन कुल्षूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم मुजाहिदीने इस्लाम के साथ जिहाद के लिये रवाना हुवे, चलते वक़्त आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस त़रह़ दुआ़ की : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरा नफ़्स गुमान करता है कि इसे तेरी मुलाक़ात बहुत अ़ज़ीज़ है । अगर येह अपने दा'वे में सच्चा है तो इस की इस ख़्वाहिश को पूरा फ़रमा दे । और अगर येह झूटा है तो इसे अपने दा'वे में सच्चा होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । अगर्चे येह इस बात को नापसन्द करे । ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इसे अपनी राह में शहादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शहादत के बा'द मेरे गोश्त को परन्दों और दरिन्दों की ख़ूराक बना दे ।"

येह दुआ़ करने के बा'द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लश्कर के साथ दुश्मन की जानिब रवाना हो गए लश्कर एक ऐसे बाग़ के क़रीब जा कर रुका जिस के चारों त़रफ़ दीवार थी और दीवार में एक बड़ा सा सूराख़ था। सारा लश्कर उस सूराख़ के ज़रीए अन्दर दाख़िल हो गया। इतने में दुश्मनों का लश्कर भी उस सूराख़ के क़रीब आ कर खड़ा हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन कुल्सूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم अपने घोड़े से इस ह़ालत में उतरे कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का चेहरा गर्द आलूद था। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दौड़ते हुवे बाग़ में मौजूद एक तालाब के पास आए, वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी। फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दुश्मनों की सफ़ों पर टूट पड़े और लड़ते लड़ते शहीद हो गए। दोनों लश्करों में घुमसान की जंग हुई, मुसलमानों को कामयाबी नसीब हुई। उस लश्कर में ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन कुल्सूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم के भाई भी मौजूद थे। जब लश्करे इस्लाम वापसी के लिये कूच करने लगा तो कुछ अफ़राद ने दीवार पर चढ़ कर पुकारा : "ऐ अस्वद बिन कुल्सूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم के भाइयो ! यहां आ कर देखो ! तुम्हारे भाई के गोश्त और हड्डियों के साथ क्या सुलूक हो रहा है।" येह सुन कर उन के भाई ग़मगीन हो गए और मग़मूम लहजे में कहा : "हमारे भाई ने जो दुआ़ की थी वोह क़बूल हो गई, हम में ऐसी दुआ़ करने की हिम्मत नहीं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 365

ख़ुशियों का घर

अपने ज़माने के बहुत ही मुत्तक़ी व सालेह़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन जुरआ़ बिन ह़म्माद अबू मरज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मन्क़ूल है कि "हम जिस अ़लाक़े में रहते थे वहां का पानी तक़रीबन साठ साल से नम्कीन था। वहां से गुज़रने वाली नहर का पानी भी इन्तिहाई कड़वा था। नहर के क़रीब ही एक इबादत गुज़ार नौजवान रहता था। उस के घर में न तो कोई पानी की टंकी वग़ैरा थी और न ही कोई ऐसा बड़ा बरतन जिस में पानी रखा जा सके। एक मरतबा सख़्त गरमी के दिन रमज़ान के महीने में इफ़्त़ार के वक़्त मैं ने उस नौजवान को नहर की जानिब बढ़ते हुवे देखा। मैं भी उस नौजवान के साथ हो लिया। उस ने नमाज़ के लिये वुज़ू किया फिर इस त़रह इल्तिजा की : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ क्या तू मेरे आ'माल से ख़ुश है कि मैं तुझ से सुवाल करूं ? ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ गर्म और खोलता हुवा पानी उस के लिये होगा जिस ने तेरी नाफ़रमानी की होगी। अगर मुझे तेरे ग़ज़ब का ख़ौफ़ न होता तो मैं कभी भी इफ़्त़ार न करता, बेशक प्यास की शिद्दत ने मुझे मशक़्क़त में डाल दिया है।"

येह दुआ़ करने के बा'द उस नौजवान ने अपना हाथ बढ़ा कर नहर से ख़ूब सैर हो कर पानी पिया। मैं ह़ैरान था कि येह इस कड़वे पानी पर किस त़रह़ सब्र कर रहा है ? जब वोह वहां से चला गया तो मैं ने भी उसी जगह से पानी पिया, मेरी ह़ैरत की इन्तिहा न रही क्यूंकि वहां का पानी इन्तिहाई लज़ीज़ और शकर की त़रह़ मीठा था। मैं ने ख़ूब पिया यहां तक कि सैर हो गया।

हज़रते सय्यिदुना अबू मरज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : उस नौजवान ने मुझ से कहा : आज रात मैं ने एक ख़्वाब देखा, कोई कह रहा था : "हम तेरे घर की ता'मीर से फ़ारिग़ हो चुके हैं वोह घर ऐसा ख़ूब सूरत है कि उसे देख कर तेरी आंखें ठन्डी हो जाएंगी, अब हम ने उस की आराइश का हुक्म दिया है, एक हफ़्ते बा'द मुकम्मल तय्यार हो जाएगा, उस का नाम "**सुरूर**" है, तुझे अच्छाई व भलाई की ख़ुश ख़बरी हो।" फिर मेरी आंख खुल गई। हज़रते सय्यिदुना अबू मरज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : उस नौजवान का येह ख़्वाब सुन कर मैं वापस आ गया। सातवें दिन जुमुआ़ था, नौजवान नमाज़े फ़ज्र के लिये वुज़ू करने नहर पर गया। उस का पाऊं फ़िस्ला तो नहर में डूब गया। हम ने उसे निकाला तो उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सूरी से परवाज़ कर चुकी थी। फ़ज्र की नमाज़ के बा'द हम ने उसे दफ़्ना दिया। तीन दिन बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में एक पुल की जानिब आते हुवे देखा। उस ने बेहतरीन सब्ज़ लिबास ज़ेबे तन कर रखा था। और बुलन्द आवाज़ से "**अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर**" कह रहा था। उस ने मुझ से कहा : "ऐ अबू मरज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی मेरे रहीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने "**दारुस्सुरूर**" में मेरी मेहमान नवाज़ी फ़रमाई और मुझे वोह बेहतरीन घर अ़ता फ़रमा दिया है। तुम जानते हो उस में मेरे लिये क्या क्या ने'मतें तय्यार की गई हैं ?" मैं ने कहा : "वहां की ने'मतों की सिफ़ात बयान करो।"

कहा : "तुम्हारा भला हो ! ता'रीफ़ करने वालों की ज़बानें इस से आ़जिज़ हैं कि वहां की ने'मतों की सिफ़ात बयान करें। अगर तुझे वहां की ने'मतें चाहियें तो तू भी मेरी त़रह़ इबादत व रियाज़त कर। ऐ काश ! मेरे घर वाले जानते कि उन के लिये मेरे साथ क्या क्या ने'मतें तय्यार की गई हैं ? यहां पर ऐसे ख़ूब सूरत व मुज़य्यन घर हैं कि उन के दिल जिन चीज़ों की ख़्वाहिश करेंगे वोह तमाम अश्या वहां मौजूद होंगी और اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ तुम भी उन के साथ होगे। फिर मेरी आंख खुल गई।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 366 नफ़्स परस्ती का इब्रतनाक अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन क़ुतैबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने "**सियरुल अ़जम**" में पढ़ा कि "**अर्दशीर**" नामी बादशाह ने अपनी हुकूमत को मुस्तह़्कम कर लिया तो छोटे छोटे बादशाहों ने उस के ताबेअ़ रहने का इक़रार कर लिया। अब उस की नज़र सल्त़नते "सुरयानिय्या" की त़रफ़ थी। येह बड़ा मुल्क था। चुनान्चे, "**अर्दशीर**" ने उस मुल्क पर चढ़ाई कर दी। वहां का बादशाह एक बड़े शहर में क़ल्आ़ बन्द था। अर्दशीर ने शहर का मुह़ासरा कर लिया। काफ़ी अ़र्सा गुज़रने के बा वुजूद वोह उस शहर को फ़त्ह़ न कर सका। एक दिन बादशाह की बेटी क़ल्ए़ की दीवार पर चढ़ी तो अचानक उस की नज़र **अर्दशीर** पर पड़ी। उस की मर्दानी

वजाहत व ख़ूब सूरती देख कर शहज़ादी उस की महब्बत में गिरिफ़्तार हो गई और इश्क़ की आग में जलने लगी बिल आख़िर नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर उस ने एक तीर पर येह इ़बारत लिखी :

"ऐ ह़सीनो जमील बादशाह ! अगर तुम मुझ से शादी करने का वा'दा करो तो मैं तुम्हें ऐसा खुफ़्या रास्ता बताऊंगी जिस के ज़रीए़ तुम थोड़ी सी मशक़्क़त के बा'द ब आसानी इस शहर को फ़त्ह़ कर लोगे।" फिर शहज़ादी ने वोह तीर **अर्दशीर** बादशाह की जानिब फेंक दिया। उस ने तीर पर लिखी इ़बारत पढ़ी और एक तीर पर येह जवाब लिखा : "अगर तुम ने ऐसा रास्ता बता दिया तो तुम्हारी ख़्वाहिश ज़रूर पूरी की जाएगी येह हमारा वा'दा है।" और तीर शहज़ादी की जानिब फेंक दिया।

शहज़ादी ने येह इ़बारत पढ़ी तो फ़ौरन खुफ़्या रास्ते का पता लिख कर तीर बादशाह की त़रफ़ फेंक दिया। शहवत के हाथों मजबूर होने वाली इस बे मुरुव्वत शहज़ादी के बताए हुवे रास्ते से अर्दशीर बादशाह ने बहुत जल्द उस शहर को फ़त्ह़ कर लिया। ग़फ़्लत व बेख़बरी के आ़लम में बहुत सारे सिपाही हलाक हो गए और शहर का बादशाह भी क़त्ल कर दिया गया। ह़स्बे वा'दा अर्दशीर ने शहज़ादी से शादी कर ली। शहज़ादी को न तो अपने बाप की हलाकत का ग़म था और न ही अपने मुल्क की बरबादी की कोई परवाह। बस अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ होने वाली शादी पर वोह बेह़द खुश थी। दिन गुज़रते रहे। उस की खुशियों में इज़ाफ़ा होता रहा। एक रात जब शहज़ादी बिस्तर पर लैटी तो काफ़ी देर तक उसे नींद न आई वोह बेचैनी से बार बार करवटें बदलती रही। अर्दशीर ने उस की येह ह़ालत देखी तो कहा : "क्या बात है, तुम्हें नींद क्यूं नहीं आ रही ?" शहज़ादी ने कहा : "मेरे बिस्तर पर कोई चीज़ है जिस की वजह से मुझे नींद नहीं आ रही।" अर्दशीर ने जब बिस्तर देखा तो चन्द धागे एक जगह जमा थे इन की वजह से शहज़ादी का इन्तिहाई नर्म व नाज़ुक जिस्म बेचैन हो रहा था। अर्दशीर को उस के जिस्म की नर्मी व नज़ाकत पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। उस ने पूछा : "तुम्हारा बाप तुम्हें कौन सी ग़िज़ा खिलाता था जिस की वजह से तुम्हारा जिस्म इतना नर्म व नाज़ुक है ?" शहज़ादी ने कहा : "मेरी ग़िज़ा मख्खन, हड्डियों का गूदा, शहद और मग़्ज़ हुवा करती थी।" अर्दशीर ने कहा : "तेरे बाप की त़रह़ आसाइश व आराम तुझे किसी ने न दिया होगा। तू ने उस के एह़सान और क़राबत का इतना बुरा बदला दिया कि उसे क़त्ल करवा डाला। जब तू अपने शफ़ीक़ बाप के साथ भलाई न कर सकी तो मैं भी अपने आप को तुझ से मह़फ़ूज़ नहीं समझता।" फिर अर्दशीर ने हुक्म दिया : "इस के सर के बालों को त़ाक़तवर घोड़े की दुम से बांध कर घोड़े को तेज़ी से दौड़ाया जाए।" हुक्म की ता'मील हुई और चन्द ही लम्ह़ो में उस नफ़्स परस्त शहज़ादी का जिस्म टुकड़े टुकड़े हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को नफ़्सानी ख़्वाहिशों की तबाह कारियों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर इन्सान अपनी क़ब्रो आख़िरत को भूल जाए तो फिर इसी त़रह़ की ज़िल्लत व रुस्वाई में मुब्तला हो जाता है। ऐसा शख़्स न तो दुन्या में कामयाब होता है और न ही आख़िरत में। अगर बिल फ़र्ज़ दुन्या में चन्द रोज़ा ऐ़शो इ़शरत मिल भी जाए तब भी उसे क़ल्बी सुकून और इत़्मीनान नसीब नहीं होता। जिस ने अपने नफ़्स की पैरवी की नफ़्स ने उसे हमेशा तबाही व बरबादी के अ़मीक़ गढ़े में डाल दिया। इ़ज़्ज़त व दौलत और शानो शोकत सब की सब ख़ाक में मिल गई। और येह तो ह़क़ीक़त है कि "**जैसी करनी वैसी भरनी।**" आज जो किसी के साथ धोका देही व बद अ़हदी करेगा तो उस के साथ भी ऐसा ही सुलूक किया जाएगा। इन्सान चाहे कुछ भी करे बिल आख़िर उसे मौत से हम किनार होना पड़ेगा। **........कर ले जो करना है आख़िर मौत है**

वोही इन्सान समझदार है जो अपने अन्जाम को पेशे नज़र रखे। अपने गुनाहों पर शर्मिन्दगी व नदामत के चन्द आंसू बहा कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ वाले कामों में लग जाए। अपने लिये कोई ऐसा वक़्त मुतअ़य्यन कर ले जिस में क़ब्रो आख़िरत और ह़श्र के हौलनाक मन्ज़र को याद करे और अपने आ'माल की इस्लाह़ की तदाबीर पर ग़ौर करे। चन्द ही रोज़ ऐसा करने से आख़िरत की तय्यारी और गुनाहों से नफ़रत का जज़्बा मिलेगा।)

हि़कायत नम्बर : 367

पुर असरार क़त्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली सम्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "मैं ने रिज़्वान सम्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को येह कहते हुवे सुना : मेरा एक पड़ोसी था। हम इकठ्ठा कारोबार करते और दीगर मुआ़मलात मिल जुल कर ह़ल किया करते थे। कुछ अ़र्से बा'द पता चला कि मेरा वोह बद बख़्त पड़ोसी अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को गालियां बकता है। येह सुनते ही मेरे दिल में उस के ख़िलाफ़ शदीद नफ़रत पैदा हो गई। अब वोह मुझे एक आंख न भाता और हमारे दरमियान अकषर झगड़ा रहता। एक दिन मेरी मौजूदगी में जब उस बद ज़बान ने शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को गाली दी तो मेरे तन बदन में आग लग गई। मैं ने उसे पकड़ कर मारना चाहा तो उस ने भी जवाबी कारवाई की। हम एक दूसरे से गुथ्थम गुथ्था हो गए लेकिन लोगों ने बीच में आ कर हमें छुड़ा दिया। इसी ग़ैज़ो ग़ज़ब की ह़ालत में, मैं घर आ गया। जब मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई तो ख़्वाब में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई। मैं अपने प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूरानी और मुबारक जल्वों में गुम हो गया :

करे चारह साज़ी ज़ियारत किसी की — भरे ज़ख़्म दिल के मलाह़त किसी की
चमक कर येह कहती है त़ल्अ़त किसी की — कि दीदारे ह़क़ है ज़ियारत किसी की

न रहती जो पर्दों में सूरत किसी की — न होती किसी को ज़ियारत किसी की
अ़जब प्यारी प्यारी है सूरत किसी की — हमें क्या ख़ुदा को है उल्फ़त किसी की

फिर बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : 'या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा फुलां पड़ोसी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब को गालियां देता है।'' येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ''वोह मेरे किस सह़ाबी को गाली देता है ?'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को।'' आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे एक छुरी देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''जाओ ! और इस छुरी से उसे ज़ब्ह़ कर डालो।'' मैं ने छुरी ली और अपने उस बद बख़्त पड़ोसी को ज़मीन पर लिटा कर गर्दन तन से जुदा कर दी। उस का नापाक ख़ून मेरे हाथ से लग गया मैं ने छुरी वहीं फेंकी और अपना हाथ ज़मीन पर रगड़ने लगा, फिर मेरी आंख खुल गई। मैं ने बाहर चीख़ो पुकार की आवाज़ सुनी तो घर वालों से कहा : ''जाओ ! देखो ! येह चीख़ो पुकार कैसी है ?'' वोह बाहर गए और वापसी पर बताया कि मेरे बद बख़्त पड़ोसी को किसी ने अचानक ज़ब्ह़ कर डाला है। क़ातिल का बिल्कुल भी पता न चल सका कि कौन था और कब क़त्ल किया।'' सुब्ह़ जब मैं वहां गया और उस को देखा तो वोह उसी अन्दाज़ में ज़ब्ह़ किया गया था जिस त़रह़ मैं ने ख़्वाब में उसे ज़ब्ह़ किया था और उस की ह़ालत बिऐनिही वोही थी जो ख़्वाब में मैं ने देखी। इस त़रह़ वोह बद बख़्त अपने अन्जामे बद को पहुंचा और लोगों को मा'लूम भी न हुवा कि उसे किस ने क़त्ल किया है।''

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अम्बियाए किराम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सह़ाबए किराम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के गुस्ताख़ो के शर से मह़फ़ूज़ रखे और हमें बा अदब व बा अ़मल बनाए। हम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में भी इस्तिग़ासा करते हैं कि वोह हमें बे अदबों से मह़फ़ूज रखें। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अदबों से — और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो ! (आमीन)

हिकायत नम्बर : 368

चांदी का लिबास

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी, अ़बुल अ़ब्बास बिन मसरूक़, अबू अह़मद मग़ाज़िली और ह़रीरी علیہم رحمۃ اللہ الجلی फ़रमाते हैं : हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन मसूह़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को फ़रमाते हुवे सुना : ''मैं अकषर मस्जिद के क़रीब एक दीवार के साए तले आराम किया करता। दोपहर तक नवाफ़िल वग़ैरा पढ़ता और गर्मी से बचाव के लिये उसी दीवार को आड़ बना लेता, येही दीवार मौसिमे सर्मा में मुझे सर्द हवाओं से बचाती।

एक दिन मैं गर्मी की शिद्दत से बे ताब हो रहा था, मस्जिद की सफ़ाई और नवाफ़िल वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर मैं दीवार के साए की जानिब बढ़ा, गर्मी ने मेरा बुरा ह़ाल कर रखा था लेकिन मैं ने न तो अपने नवाफ़िल तर्क किये न ही मस्जिद की सफ़ाई करने में कोताही की। जैसे ही मैं साए में पहुंचा मुझे नींद ने आ लिया। मैं ने ख़्वाब में देखा कि मस्जिद की छत शक़ हुई और उस में से एक ह़सीनो जमील दोशीज़ा ज़ाहिर हुई। उस के ख़ूब सूरत जिस्म पर बारीक व नर्म चांदी की क़मीस थी। उस के ख़ूब सूरत लम्बे सियाह बाल दो हिस्सों में तक़्सीम हो कर सीने पर लटक रहे थे वोह मेरे पाउं के क़रीब आ कर बैठ गई। मैं ने जल्दी से अपने पाउं समेट लिये। उस ने अपने नर्म व नाज़ुक हाथों से मेरे पाउं दबाना शुरूअ़ कर दिये। मैं ने उस से कहा : "ऐ लड़की ! तू किस के लिये है ?" उस ने अपनी मस्हूर कुन आवाज़ में जवाब दिया : "उस के लिये जो आप की त़रह़ नेकियों पर हमेशगी इख़्तियार करे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मस्जिद की सफ़ाई करना बड़ी बड़ी आंखों वाली ह़ूरों का ह़क़्क़े महर है।"(المعجم الکبیر، الحدیث ۲۰۲۱، ج۳، ص۱۹) जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर की सफ़ाई करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को तमाम गन्दगियों से पाक कर के आईने की मिष्ल साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ कर देता है फिर उसे हर जगह क़ुदरते इलाही عَزَّوَجَلَّ के जल्वे नज़र आते हैं। सख़्त गर्मियों में रोज़े रखना और रात को क़ियाम करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बहुत पसन्दीदा अ़मल है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें फ़राइज़ की पाबन्दी के साथ साथ कषरत से नवाफ़िल पढ़ने की भी तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 369 ह़ज़रते बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی और नौजवान आ़बिद

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : "मैं ने मुल्के "**शाम**" की पहाड़ियों में "**अक़्रअ़**" नामी पहाड़ पर एक नौजवान को देखा जिस का जिस्म सूख कर कांटा हो चुका था। उस ने ऊन का लिबास पहन रखा था। अगर्चे जिस्म इन्तिहाई कमज़ोर था लेकिन चेहरा इ़बादत के नूर से जगमगा रहा था। दिल ख़ुद ब ख़ुद उस की ता'ज़ीम की त़रफ़ माइल हो रहा था। मैं ने क़रीब जा कर सलाम किया, उस ने जवाब दिया। मैं ने दिल में कहा : "मैं इस नौजवान से कहूंगा कि मुझे वा'ज़ व नसीह़त करे।" मैं अपनी इस ख़्वाहिश का इज़्हार करने ही वाला था कि उस नौजवान ने मेरी दिली कैफ़िय्यत जानते हुवे कहा : "ऐ नसीह़त के त़ालिब ! अपने नफ़्स को ख़ुद ही नसीह़त कर। अपना नफ़्स क़ाबू में रख, ग़ैरों को नसीह़त करने की बजाए अपनी इस्लाह़ में लग जा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र तन्हाइयों में कर वोह तुझे बुराइयों से मह़फ़ूज़ रखेगा। तुझ पर जोहदे मुसलसल (या'नी लगातार कोशिश करना) लाज़िम है।"

फिर रोते हुवे कहा : "दिल फ़ानी हो जाने वाली क़लील अश्या में मश्ग़ूल हो गए। जिस्मों को लम्बी लम्बी उम्मीदों और सहल पसन्दी (या'नी आराम त़लबी) ने बढ़ा कर मोटा कर दिया।" फिर नौजवान ने मुझे मेरा नाम ले कर मुख़ात़ब किया हालांकि आज से क़ब्ल न तो उस ने मुझे देखा था न ही वोह मुझे जानता था। उस ने मुझ से कहा : "बिशर ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ ऐसे बन्दे भी हैं जिन के दिल ग़मों से चूर चूर हैं, ग़म ने उन की रातों को बेचैन और दिनों को प्यासा रखा (या'नी वोह लोग सोने की बजाए सारी सारी रात इ़बादत में मश्ग़ूल रहे और दिन भर रोज़े से रहे) उन की आंखें यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में हर वक़्त आंसू बहाती रहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की सिफ़ात बयान करते हुवे अपनी लारैब किताब में यूं इरशाद फ़रमाता है :

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ (پ۲۶، الذّٰریٰت:۱۷۔۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।*

येह आयते करीमा पढ़ कर वोह नौजवान फिर ज़ारो क़ित़ार रोने लगा।

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

हिकायत नम्बर : 370 ओ़हदए क़ज़ा को ठुकराने वाला मर्दे क़लन्दर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह हुसैन बिन मुह़म्मद फ़क़ीह कशफ़ुली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मुक़्तदिर बिल्लाह के वज़ीर अ़ली बिन ईसा ने गर्वनर को हुक्म दिया : "मश्हूर शाफ़ेई फ़क़ीह बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ली बिन ख़ैरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को अपने पास बुला कर क़ाज़ी का ओ़हदा क़बूल करने की दा'वत दो।" जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तक येह ख़बर पहुंची तो आप ने घर से बाहर निकलना बिल्कुल तर्क कर दिया। सिपाहियों ने घर का मुह़ासरा कर लिया, दस से ज़ियादा दिन गुज़र जाने के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बाहर तशरीफ़ न लाए। जब घर में एक बूंद भी पानी न बचा और शिद्दते प्यास से घर वाले बेचैन होने लगे तो सिवाए पड़ोसियों से पानी लेने के और कोई चारा न था।

वज़ीर को जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इस ह़ालत की ख़बर पहुंची तो उस ने सिपाहियों को मुह़ासरा ख़त्म करने का हुक्म दिया। फिर भरे दरबार में कहा : "हम शैख़ अबू अ़ली बिन ख़ैरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मुतअ़ल्लिक़ सिर्फ़ ख़ैर का इरादा रखते थे, हम ने मुह़ासरा इस लिये किया था ताकि हम जान जाएं कि हमारे मुल्क में कोई ऐसा **मर्दे क़लन्दर** भी है जिस के सामने तख़्तो ताज पेश हों और वोह उन्हें ठुकरा दे येह जान कर हमें बड़ी ख़ुशी हुई कि अब भी हमारे मुल्क में शैख़ अबू अ़ली बिन ख़ैरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की सूरत में ऐसी अ़ज़ीम हस्ती मौजूद है।

मौत व ह़यात मेरी दोनों तेरे लिये हैं — मरना तेरी गली में जीना तेरी गली में
तख़्ते सिकन्दरी पर वोह थूकते नहीं हैं — बिस्तर लगा हुवा है जिन का तेरी गली में

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

हिकायत नम्बर : 371 अजनबी मुसाफ़िरों की ज़बरदस्त ख़ैर ख़्वाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र علیہ رحمۃ اللہ الرب के गुलाम बुदैह़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि "एक सफ़र में, मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ था। हम ने बालों से बने एक ख़ैमे के क़रीब क़ियाम किया जो क़बीलए बनी उ़ज़रह के एक शख़्स का था। थोड़ी देर के बा'द एक शख़्स उ़म्दा ऊंटनी ले कर हमारे पास आया और कहा : "ऐ क़ाफ़िले वालो ! अगर तुम्हारे पास छुरी हो तो मुझे दो।" हम ने उसे छुरी दी, उस ने फ़ौरन अपनी ऊंटनी को "नह़्र (या'नी ज़ब्ह़)" किया और कहा : "मेरे भाइयो ! येह गोश्त तुम्हारे लिये है।" इतना कह कर वोह चला गया। हम सब ने सैर हो कर गोश्त खाया लेकिन फिर भी बहुत सा बच गया। दूसरे दिन वोही शख़्स एक और बेहतरीन ऊंटनी ले कर आया और कहा : "ऐ लोगो ! मुझे छुरी दो।" हम ने कहा : "हमारे पास कल का गोश्त काफ़ी मिक़्दार में मौजूद है, तुम येह ऊंटनी ज़ब्ह़ न करो।" उस ने कहा : "तुम मेरे मेहमान हो कर बासी गोश्त खाओ, येह नहीं हो सकता, लाओ ! मुझे छुरी दो। हम ने छुरी दे दी। उस ने उंटनी नह़्र की और कहा : "खाओ ! येह सब तुम्हारे लिये है।" तीसरे दिन फिर एक ऊंटनी ले कर आया और कहा : "ऐ अहले क़ाफ़िला ! मुझे छुरी दो।" हम ने कहा : "ऐ भाई ! अभी हमारे पास वहुत गोश्त है, तुम येह ऊंटनी ज़ब्ह़ न करो।" उस ने कहा : "येह कैसे हो सकता है कि तुम मेरे मेहमान हो कर बासी गोश्त खाओ, येह मुरुव्वत के ख़िलाफ़ है, लाओ ! छुरी दो।" हम ने छुरी दी तो उस ने फ़ौरन ऊंटनी नह़्र की और कहा :"खाओ ! येह सब तुम्हारे लिये है।" येह कह कर वोह चला गया।

सब क़ाफ़िले वाले उ़ज़री की मेहमान नवाज़ी देख कर बहुत ह़ैरान हो रहे थे कि उस ने तीन दिन मुतवातिर हमारी ज़ियाफ़त के लिये उ़म्दा तरीन ऊंटनियां ज़ब्ह़ कीं। येह वाक़ेई तअ़ज्जुब ख़ेज़ बात थी। बहर ह़ाल अब कूच का वक़्त हो चुका था। हम ने तय्यारी शुरूअ़ कर दी। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र علیہ رحمۃ اللہ الرب ने अपने ख़ादिम से कहा : "तुम्हारे पास क्या कुछ है ?" उस ने कहा : "ह़ुज़ूर ! कपड़ों की एक गठड़ी और चार सो दीनार।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "जाओ ! येह सब चीज़ें हमारे उस उ़ज़री मेज़बान को तोह़फ़तन दे आओ।" ख़ादिम कपड़ों की गठड़ी और चार सो दीनार ले कर ख़ैमे की जानिब गया। वहां एक कनीज़ मिली, ख़ादिम ने सामान उस की त़रफ़ बढ़ाते हुवे कहा : "येह हमारे आक़ा अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र علیہ رحمۃ اللہ الرب की जानिब से आप लोगों के लिये हदिय्या है।"

कनीज़ ने कहा : ‘‘येह सामान वापस ले जाओ, हम लोग मेहमान नवाज़ी पर क़ीमत नहीं लेते।’’ ख़ादिम वापस आ गया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा’फ़र عليه رحمة الله الرب को सूरते ह़ाल से आगाह किया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ‘‘दोबारा जाओ ! अगर वोह येह माल क़बूल कर लें तो ठीक है वरना ख़ैमे के पास रख कर वापस चले आना।’’ ख़ादिम दोबारा आया तो लौंडी ने सामान लेने से इन्कार करते हुवे कहा : ‘‘वापस ले जाओ ! अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये इस में बरकत दे। हम मेहमान नवाज़ी की क़ीमत नहीं लेते। ख़ुदारा ! जल्दी से चले जाओ, अगर हमारे शैख़ ने तुम्हें यहां देख लिया तो बहुत नाराज़ होंगे।’’ ख़ादिम कपड़ों की गठड़ी और दीनारों की थैलियां ख़ैमे के क़रीब रख कर वापस आ गया। हम ने सफ़र शुरूअ़ कर दिया अभी थोड़ी ही दूर चले थे कि अपने पीछे ख़ाक उड़ती देखी। कोई सुवार बड़ी तेज़ी से हमारी जानिब चला आ रहा था। जब क़रीब आया तो वोह हमारा उ़ज़री मेज़बान था। उस ने दीनार और कपड़े हमारी जानिब फेंके और फ़ौरन वापस पलट गया। हम उसे जाता देखते रहे लेकिन उस अ़ज़ीम मेज़बान ने एक मरतबा भी पीछे मुड़ कर न देखा। उस उ़ज़री मेज़बान की मेहमान नवाज़ी का अनोखा त़र्ज़े अ़मल देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा’फ़र عليه رحمة الله الرب बे इख़्तियार पुकार उठे : **‘‘हम पर आज तक कोई ग़ालिब न आ सका सिवाए इस उ़ज़री मेज़बान के, कि आज येह हम पर सबक़त ले गया।’’**

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین ﷺ}

हि़कायत नम्बर : 372

मेज़बान हो तो ऐसा ....!

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़सिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिद बयान करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा’द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد ने फ़रमाया : ‘‘काश ! मैं उस शख़्स की त़रह़ हो जाऊं जिसे मैं ने देखा था।’’ फिर अपना वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ बयान किया :

‘‘एक मरतबा हम चन्द रुफ़क़ा शाम से वापस आ रहे थे। जब हमारा गुज़र एक ख़ैमे के क़रीब से हुवा तो हम ने कहा : ‘‘अगर इजाज़त मिल गई तो हम यहां क़ियाम कर लेंगे। ‘‘हम ख़ैमे के पास पहुंचे तो अन्दर से एक औ़रत आई, हम ने कहा : ‘‘हम मुसाफ़िर हैं, अगर आप इजाज़त दें तो हम यहां क़ियाम कर लें।’’ हम येह गुफ़्त्गू कर ही रहे थे कि एक शख़्स उ़म्दा ऊंटनी ले कर हमारे पास आया। उस ने आते ही उस औ़रत से पूछा : ‘‘येह कौन है ?’’ औ़रत ने कहा : ‘‘मुसाफ़िर हैं, आप के मेहमान बनना चाहते हैं।’’ येह सुनते ही उस ने फ़ौरन अपनी ऊंटनी को गिरा कर कहा : ‘‘इसे नह़्र करो और खा लो, येह सब तुम्हारे लिये है।’’ हम ने ऊंटनी नह़्र की और सारे क़ाफ़िले वालों ने मिल कर उस का गोश्त खाया। दूसरे दिन फिर वोह एक बेहतरीन ऊंटनी ले कर आया उसे

गिराया और कहा : "ऐ अहले क़ाफ़िला ! आओ, इसे नहूर करो ।" हम ने कहा : "अभी हमारे पास कल का बचा हुवा बहुत गोश्त मौजूद है ।"

उस ने कहा : "हम अपने मेहमानों को बासी गोश्त नहीं खिलाते, जल्दी से इसे ज़ब्ह़ करो और ताज़ा गोश्त खाओ ।" हम ने उसे ज़ब्ह़ किया और उ़म्दा गोश्त खाया । फिर मैं ने अपने रुफ़क़ा से कहा : "अगर हम इस शख़्स के हां ठहरे रहे तो एक एक कर के येह अपने तमाम जानवर ज़ब्ह़ कर देगा । बेहतर येही है कि हम यहां से आगे चल पड़ें ।" चुनान्चे, हम ने सामान समेटा, कजावे कसे और चलने की तय्यारी करने लगे । मैं ने अपने ख़ादिम से कहा : "जो कुछ तुम्हारे पास है वोह जम्अ़ करो ।" उस ने कहा : "हुज़ूर ! चार सो दिरहमों के इ़लावा कुछ भी नहीं ।" मैं ने वोह दिरहम और जो कुछ रक़म मेरे पास थी सब जम्अ़ कर के अपने उस मेज़बान के हां भिजवा दी ।" उस वक़्त ख़ैमे में सिर्फ़ औ़रत थी । मेज़बान कहीं गया हुवा था । हम ने सारी रक़म उस औ़रत को दी और अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये ।

अभी हम कुछ दूर चले थे कि तेज़ी से किसी सुवार को अपनी जानिब आते देखा । मैं ने रुफ़क़ा से कहा : "येह कौन है ?" उन्हों ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया । क़रीब आने पर मा'लूम हुवा कि येह तो हमारा मेज़बान है । वोह हाथ में नेज़ा लिये बड़ी तेज़ी से हमारे क़रीब आ रहा था । मैं ने अपने दोस्तों से कहा : "हम ने जो रक़म दी थी वोह बहुत थोड़ी थी । शायद क़लील रक़म की वजह से हमारा मेज़बान नाराज़ हो गया इस लिये नेज़ा लिये आ रहा है ।" इतने में वोह बिल्कुल क़रीब पहुंच गया और हमारी रक़म वापस करते हुवे कहा : "अपनी रक़म वापस ले लो, हम येह हरगिज़ नहीं लेंगे ।" मैं ने कहा : "ब ख़ुदा ! हमारे पास इस के इ़लावा कुछ भी नहीं जो कुछ था सब जम्अ़ कर के तुम्हें पेश कर दिया ।" येह सुन कर उस मेज़बान ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस वक़्त तक नहीं जाऊंगा जब तक तुम येह रक़म वापस न ले लो ।" हम ने कहा : "हम अपनी दी हुई रक़म वापस नहीं लेंगे हम ने ब ख़ुशी येह रक़म तुम्हें दी है ।" अ़ज़ीम मेज़बान ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम येह रक़म वापस ले लो वरना इस नेज़े से तुम्हारी ख़बर लूंगा यहां तक कि तुम में से कोई भी बाक़ी न बचेगा ।" हम ने उस का इस्रार व ग़ुस्सा देख कर रक़म लेने में ही आ़फ़िय्यत समझी । रक़म दे कर वोह फ़ौरन वापस चला गया । जाते वक़्त उस की ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ जारी थे । "**हम मेहमान नवाज़ी की क़ीमत नहीं लेते । हम मेहमान नवाज़ी की क़ीमत नहीं लेते ।**"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 373 अ़रबी ग़ुलाम की सख़ावत

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन मुहम्मद عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡاَحَد कहते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़य्याश عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الرَّزَّاق को येह फ़रमाते हुवे सुना कि एक शख़्स ने हातिम ताई से कहा : "क्या अ़रबों में तुझ से ज़ियादा भी कोई सख़ावत करने वाला है ?" उस ने कहा : "हर अ़रबी मुझ से ज़ियादा सख़ी है।" फिर उस ने अपना एक वाक़िआ कुछ इस तरह बयान किया : "एक रात मैं एक अ़रबी ग़ुलाम के हां मेहमान बना। उस के पास उ़म्दा क़िस्म की सो बकरियां थीं। उस ने एक बकरी मेरे लिये ज़ब्ह़ की और गोश्त पका कर मेरी ज़ियाफ़त की। जब उस ने बकरी का मग़्ज़ मेरी तरफ़ बढ़ाया तो वोह बहुत लज़ीज़ था। मैं ने कहा : "कितना लज़ीज़ है !" फिर वोह चला गया और बकरियां ज़ब्ह़ कर के उन का मग़्ज़ पका पका कर मुझे खिलाता रहा यहां तक कि मैं ख़ूब सैर हो गया। जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने देखा कि वोह अपनी सो की सो बकरियां ज़ब्ह़ कर के उन का मग़्ज़ मुझे खिला चुका था। अब उस के पास एक बकरी भी न बची थी। येह तो एक अ़रबी ग़ुलाम की मेज़बानी का ह़ाल है, अब तुम ख़ुद ही सोचो कि अ़रब कितने मेहमान नवाज़ होंगे।

साइल ने ह़ातिम त़ाई से कहा : "उस की मेज़बानी का तुम ने क्या सिला दिया ?" उस ने कहा : "अगर मैं अपनी तमाम चीज़ें भी उसे दे देता तो उस के एह़सान का बदला न चुका सकता था।" साइल ने कहा : "वोह तो ठीक है लेकिन तुम ने उसे क्या दिया था ?" ह़ातिम त़ाई ने कहा "मैं ने अपनी पसन्दीदा ऊंटनियों में से सो ऊंटनियां उसे दे दीं।"

हिकायत नम्बर : 374 ह़ातिम त़ाई की सख़ावत

हज़रते सय्यिदुना मिल्ह़ान त़ाई رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه से मन्क़ूल है : "ह़ातिम त़ाई की ज़ौजा "नवार" से कहा गया : "हमें ह़ातिम त़ाई के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताओ।" उस ने कहा : "ह़ातिम त़ाई का हर काम अ़जीब था। एक मरतबा क़ह़त़ साली ने पूरे मुल्क को अपनी लपेट में ले लिया, ज़मीन ने बिल्कुल सब्ज़ा न उगाया। आस्मान से पूरा साल बारिश न हुई। भूक और कमज़ोरी ने दूध पिलाने वालियों को दूध पिलाने से रोक दिया। ऊंट सारा सारा दिन पानी की तलाश में फिरते लेकिन उन्हें एक क़त़रा पानी न मिलता। हर ज़ी रूह़ भूक व प्यास से बे ताब था। एक रात सर्दी ने अपना पूरा ज़ोर दिखा रखा था और हमारे घर में खाने के लिये एक लुक़्मा भी न था। हमारे बच्चे, अ़ब्दुल्लाह, अ़दी और सफ़्फ़ाना भूक से बिलबिला रहे थे। वल्लाह (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम !) हमारे पास उन्हें देने के लिये कुछ भी न था। बच्चों की आहो बुका सुन कर एक को ह़ातिम त़ाई और दूसरे को मैं ने गोद में उठा लिया, हम उन्हें काफ़ी देर तक बहलाते रहे। लेकिन भूक ने उन

का बुरा ह़ाल कर रखा था। बिल आख़िर रात काफ़ी देर बा'द थक हार कर दोनों बच्चे सो गए। हम ने उन्हें एक चटाई पर लिटा दिया फिर तीसरे को बहलाने लगे बिल आख़िर वोह भी सो गया।"

ह़ातिम त़ाई ने कहा : "आज न जाने मुझे नींद क्यूं नहीं आ रही ?" फिर वोह इधर उधर टहलने लगा। रात की सियाही को आस्मान पर चमकने वाले सितारे दूर कर रहे थे, जंगली जानवरों के चीख़ने की आवाज़ें फ़ज़ा में बुलन्द हो रही थीं। हर चलने वाला मुसाफ़िर ठहर चुका था, रात का पुरहौल मन्ज़र बढ़ता ही जा रहा था। अचानक हमारे घर के बाहर किसी की आहट सुनाई दी, ह़ातिम त़ाई ने बुलन्द आवाज़ से कहा : "कौन है ?" लेकिन किसी ने कोई जवाब न दिया। मैं ने कहा : "हमारे साथ या तो किसी ने मज़ाक़ किया है या कोई धोका होने वाला है।" मैं बाहर गई और ह़ालात का जाइज़ा ले कर वापस आई तो ह़ातिम त़ाई ने पूछा : "कौन है ?" मैं ने कहा : "आप की फ़ुलां पड़ोसन है, इस कड़े वक़्त में आप के इ़लावा कोई और उसे नज़र न आया जिस के पास जा कर पनाह लेती। अपने भूके बच्चों को आप के पास लाई है। वोह भूक से इस त़रह़ बिल बिला रहे हैं जैसे किसी जानवर के बच्चे चीख़ते हैं।" येह सुन कर ह़ातिम त़ाई ने कहा : "उसे जल्दी से मेरे पास लाओ।" मैं ने कहा : "हमारे अपने बच्चे भूक से मरे जा रहे हैं, उन्हें देने के लिये हमारे पास कुछ नहीं तो फिर बेचारी पड़ोसन और उस के बच्चों की हम क्या मदद करेंगे ?" ह़ातिम त़ाई ने कहा : "ख़ामोश रहो, अल्लाह तआ़ला ज़रूर तुम्हारा और उन सब का पेट भरेगा। जाओ ! जल्दी से उस दुख्यारी मां को अन्दर बुला लाओ।" मैं उसे बुला लाई। उस ग़रीब ने दो बच्चे अपनी गोद में उठाए हुवे थे और चार बच्चे उस से लिपटे उस के पीछे इस त़रह़ आ रहे थे जैसे मुर्ग़ी के बच्चे मुर्ग़ी के गिर्द जम्अ़ हो कर चलते हैं।

ह़ातिम त़ाई ने उन्हें कमरे में बिठाया और घोड़े की त़रफ़ बढ़ा, बरछी से घोड़ा ज़ब्ह़ कर के आग जलाई गई। जब शो'ले बुलन्द होने लगे तो छुरी ले कर घोड़े की खाल उतारी फिर उस औ़रत की त़रफ़ छुरी बढ़ाते हुवे कहा : "खाओ ! और अपने बच्चों को भी खिलाओ फिर मुझ से कहा : "तुम भी खाओ और अपने बच्चों को भी जगा दो ताकि वोह भी अपनी भूक मिटा सकें।" हमारी पड़ोसन थोड़ा थोड़ा गोश्त खा रही थी उस की झिजक को मह़सूस करते हुवे ह़ातिम त़ाई ने कहा : "कितनी बुरी बात है कि तुम हमारी मेहमान हो कर थोड़ा थोड़ा खा रही हो।" येह कह कर वोह हमारे क़रीब ही टहलने लगा। हम सब खाने में मसरूफ़ थे और ह़ातिम त़ाई हमारी जानिब देख रहा था। हम ने ख़ूब सैर हो कर खाया लेकिन बख़ुदा ! ह़ातिम त़ाई ने एक बोटी भी न खाई ह़ालांकि वोह हम सब से ज़ियादा भूका था। सुब्ह़ ज़मीन पर हड्डियों और खुरों के सिवा कुछ न बचा था।

हिकायत नम्बर : 375 हज़रते दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बे नियाज़ी

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हस्सान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे चचा ने बताया : जब मुहम्मद बिन क़हतबा "**कूफ़ा**" आया तो उस ने कहा : "हमें एक ऐसे आ़लिम व फ़ाज़िल उस्ताज़ की ज़रूरत है जो अह़ादीषे मुबारका और फ़रामीने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से बा ख़बर, ह़ाफ़िज़े कुरआन, ज़बरदस्त नह़वी व फ़क़ीह और शे'र व अदब व तारीख़ का माहिर हो, अगर इन सिफ़ात का ह़ामिल कोई आ़लिम मिल जाए तो हम उसे अपने बच्चों का उस्ताज़ बनाएंगे।" लोगों ने कहा : "जनाब ! ऐसा मुतबह़्ह़िर आ़लिम हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई के इलावा कोई और नहीं हो सकता।"

हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुहम्मद बिन क़हतबा के चचाज़ाद भाई थे। चुनान्चे, उस ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास क़ासिद भेजा और अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार करते हुवे पैग़ाम दिया : "अगर आप मेरे बच्चों को पढ़ाने आ जाएं तो मैं आप को अच्छा ख़ासा वज़ीफ़ा दूंगा।" हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्कार कर दिया। फिर उस ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास दस हज़ार दिरहम भिजवाए और कहा : "इन के ज़रीए अपनी ह़ाजात पूरी करते रहना, येह ज़िन्दगी भर काम देंगे।" आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तमाम रक़म वापस भिजवा दी। फिर मुहम्मद बिन क़हतबा ने अपने दो गुलामों को बीस हज़ार दिरहम दे कर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में भेजा और गुलामों से कहा : "अगर हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह दिरहम क़बूल कर लिये तो तुम आज़ाद हो।" दोनों गुलाम बीस हज़ार दिरहम ले कर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और कहा : "हुज़ूर ! अगर आप येह रक़म क़बूल फ़रमा लें तो हमारी गर्दनें आज़ाद हो जाएंगी।" आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मुझे डर है कि अगर मैं ने येह रक़म क़बूल कर ली तो कहीं मेरी गर्दन जहन्नम की आग की लपेट में न आ जाए। जाओ ! येह रक़म अपने सरदार को वापस कर दो और कहो : "अगर येह दिरहम तुम उन लोगों को लौटा देते जिन से तुम ने लिये हैं तो येह मेरे पास भेजने से बेहतर था।" येह कह कर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तमाम रक़म वापस भिजवा दी और एक दिरहम भी क़बूल न किया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 376 बा हिम्मत क़ाज़ी

हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह अपने चचा अ़ब्दुल मलिक बिन कुरैब अस्मई के ह़वाले से बयान करते हैं : "ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْمَجِیْد के दरबार में कई रोज़ से एक क़ाज़ी साहि़ब की शिकायत की जा रही थी (कि वोह फ़ैसला करने में रिआ़यत करता और लोगों का मुंह देख कर फ़ैसला करता है)। एक दिन ख़लीफ़ा के दरबार में बहुत से लोग जम्अ़ थे।

मैं भी वहां मौजूद था। ख़लीफ़ा ने क़ाज़ी साह़िब को बुलाया और पूछ गछ करने लगा। इसी दौरान ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد को छींक आई तो क़ाज़ी साह़िब के इलावा तमाम लोगों ने छींक का जवाब देते हुवे "یَرۡحَمُکَ اللّٰہ" कहा। ख़लीफ़ा ने क़ाज़ी से कहा : "क्या बात है, तुम ने मेरी छींक का जवाब नहीं दिया ह़ालांकि तुम्हारे सामने तमाम लोगों ने जवाब दिया ?" क़ाज़ी साह़िब ने कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप ने "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ" नहीं कहा तो मैं ने भी "یَرۡحَمُکَ اللّٰہ" नहीं कहा। सुनिये ! इस के मुतअ़ल्लिक़ आप को एक ह़दीषे पाक सुनाता हूं :

"दो शख़्स हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे। दोनों को छींक आई। एक ने "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ" कहा लेकिन दूसरे ने न कहा। हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक की छींक का जवाब देते हुवे "یَرۡحَمُکَ اللّٰہ" कहा जब कि दूसरे को जवाब न दिया। उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने इस की छींक का जवाब दिया लेकिन मेरी छींक पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "یَرۡحَمُکَ اللّٰہ" न फ़रमाया, इस की क्या वजह है ?" हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस ने "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ" कहा तो मैं ने जवाब दे दिया जब कि तुम ने न कहा लिहाज़ा तुम्हारी छींक का जवाब नहीं दिया गया।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لا یشمت العاطس إذا لم یحمد اللّٰہ، الحدیث ٦٢٢٥، ص ٥٢٤)

जब क़ाज़ी साह़िब येह ह़दीषे पाक सुना चुके तो ख़लीफ़ा ने कहा : "जाओ ! तुम अपने ओ़हदे पर क़ाइम रहो। जब तुम ख़लीफ़ा से मरऊ़ब नहीं हुवे तो किसी और से मरऊ़ब हो कर ग़लत़ फ़ैसला क्यूंकर कर सकते हो।" येह कह कर ख़लीफ़ा ने उस **बा हिम्मत क़ाज़ी** को बड़े अदबो एह़तिराम से वापस भेज दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 377 ह़सद का इलाज

क़ाज़ी तनूख़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی का बयान है : एक मरतबा जुमुआ़ के दिन नमाज़े जुमुआ़ से कुछ देर क़ब्ल मैं **"जामेए़ मन्सूर"** में मौजूद था, मेरी सीधी त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन त़लह़ा बिन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی थे, मैं ने नज़र उठा कर देखा तो मेरे बहुत ही क़रीबी दोस्त अ़ब्दुस्समद भी कुछ फ़ासिले पर बैठे हुवे थे। मैं ने उन की त़रफ़ जाने का इरादा किया, चूंकि नमाज़ का वक़्त बिल्कुल क़रीब था लिहाज़ा मैं उन के पास न जा सका लेकिन वोह उठे और मेरी त़रफ़ बढ़ने लगे तो मैं खड़ा हो गया। येह देख कर उन्हों ने कहा : "क़ाज़ी साह़िब ! आप तशरीफ़ रखें,

मैं ने आप की त़रफ़ आने का इरादा नहीं किया और न ही मैं आप के लिये आया हूं बल्कि मैं तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन त़लह़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़ातिर उठ कर आया हूं और इस की वजह येह है कि मेरे नफ़्स ने मुझे उन के मुतअ़ल्लिक़ ह़सद में मुब्तला करने की कोशिश की और उन्हें देख कर मेरे नफ़्स को नागवारी मह़सूस हुई तो मैं ने इरादा किया कि मैं अपने नफ़्स को ज़लीलो रुस्वा करूं और इस की बात हरगिज़ न मानूं, बस इसी लिये मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन त़लह़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आया हूं।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन त़लह़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه खड़े हुवे और उन के सर का बोसा ले लिया।

क़ाज़ी तनूख़ी का बयान है कि मुझे एक शख़्स ने बताया : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुस्समद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد का आख़िरी वक़्त क़रीब आया तो क़ाज़ी अबू मुह़म्मद अक्फ़ानी की बेटी "उम्मे ह़सन" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आई और कहने लगी : "मैं आप को क़सम दे कर कहती हूं कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझ से अपनी कोई ह़ाजत त़लब करें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं उसे ज़रूर पूरा करूंगी।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "हां ! आज मैं तुम से एक सुवाल करता हूं कि जिस त़रह़ मेरी ज़िन्दगी में तुम मेरी बेटी की देख भाल करती थी इसी त़रह़ मेरे मरने के बा'द भी उस का ख़याल रखना, बस मुझे तुम से येही ह़ाजत है।" उम्मे ह़सन ने कहा : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बे फ़िक्र रहें, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बेटी की बहुत अच्छी त़रह़ देख भाल करूंगी।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कुछ देर ख़ामोश रहे फिर बे क़रार हो कर बार बार इस्तिग़फ़ार पढ़ने लगे और कहने लगे : "ऐ उम्मे ह़सन ! अल्लाह तआ़ला मेरी ख़त़ा से दरगुज़र फ़रमाए। वोह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरी बेटी का तुझ से बेहतर कारसाज़ और ह़िफ़ाज़त करने वाला है।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}

हिकायत नम्बर : 378

शहादत है मत़लूब व मक़्सूदे मोमिन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमय्या अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस ग़िफ़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "एक मरतबा हम लश्करे इस्लाम के साथ जिहाद के लिये गए। जब दुश्मन सामने आया तो लोगों में शोर बरपा हो गया। उस दिन हवा बहुत तेज़ थी। तमाम मुजाहिदीन दुश्मन के सामने सफ़ ब सफ़ सीसा पिलाई दीवार बन कर खड़े हो गए। अचानक मेरे सामने एक नौजवान आया जिस का घोड़ा उछल कूद रहा था और वोह उसे दुश्मन की त़रफ़ दौड़ा रहा था और अपने आप से यूं मुख़ात़ब था :

"ऐ नफ़्स ! क्या तू फ़ुलां ह़ाज़िर होने की जगह ह़ाज़िर न होगा ? क्या तू मर्तबए शहादत का त़लबगार नहीं कि तू कह रहा है : "तेरे बच्चों और अहलो इ़याल का क्या बनेगा ?" क्या ऐसी

चीज़ों की त़रफ़ तवज्जोह दिला कर तू मुझे वापस ले जाना चाहता है ? ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। ऐ नफ़्स ! क्या तू मर्तबए शहादत से मुंह मोड़ता है ? तेरा क्या ख़याल है कि मैं तेरे बहकावे में आ कर अहलो इ़याल की फ़िक्र में जिहाद से पीठ फेर लूंगा ? हरगिज़ नहीं ! तेरी येह ख़्वाहिश कभी पूरी न होगी। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज तो मैं ज़रूर तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश करूंगा अब चाहे वोह तुझे क़बूल कर के मर्तबए शहादत से नवाज़ दे, चाहे छोड़ दे।"

वोह नौजवान येह कहता हुवा दुश्मन की त़रफ़ बढ़ने लगा। मैं ने कहा : "आज मैं इस की निगरानी करूंगा और देखूंगा कि येह क्या करता है ?" अब मेरी तवज्जोह उसी नौजवान की त़रफ़ थी। इस्लाम के शेरों ने दुश्मन पर बढ़ चढ़ कर ह़म्ला किया तो वोह नौजवान सफ़े अव्वल में बड़े दिलेराना अन्दाज़ में ह़म्ला कर रहा था, उधर से दुश्मन भी शदीद ह़म्ले कर रहे थे। मैदाने कारज़ार में हर त़रफ़ चीख़ो पुकार और तल्वारों के टकराने का शोर बरपा था। मैं ने उस नौजवान पर अपनी नज़रें जमा रखी थीं। वोह बड़ी बे जिगरी और हिम्मत से लड़ रहा था, दुश्मन की तल्वारें उस के जिस्म को ज़ख़्मी कर रही थीं, उस का घोड़ा भी ज़ख़्मों से निढ़ाल हो चुका था लेकिन वोह मर्दानावार बढ़ बढ़ कर दुश्मन पर ह़म्ला कर रहा था। बिल आख़िर लड़ते लड़ते ज़ख़्मों से चूर चूर हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई। जब मैं ने देखा तो उस के जिस्म पर तल्वारों और नेज़ों के साठ (60) से भी ज़ाइद गहरे ज़ख़्म थे।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 379

जन्नती का जनाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब علیہ رحمۃ اللہ الرب फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं ने जिहाद पर जाने का इरादा किया, मेरा भतीजा अभी कम उ़म्र था, मैं ने उसे अकेला छोड़ना मुनासिब न समझा और अपने साथ ले कर मुजाहिदीन के लश्कर में शामिल हो गया। इस्लाम के शेरों का लश्कर दुश्माने इस्लाम की सरकोबी के लिये दुश्मन की सरह़द की जानिब आंधी व तूफ़ान की त़रह़ बढ़ता जा रहा था। दौराने सफ़र मेरे भतीजे की ह़ालत ख़राब हो गई शिद्दते मरज़ से वोह जां बलब था। जब लश्करे इस्लाम ने एक जगह क़ियाम किया तो मैं अपने भतीजे को ले कर क़रीब ही मौजूद एक खन्डरनुमा इमारत में गया और नमाज़ अदा करने लगा। अचानक इमारत की छत शक हुई और चार फ़िरिश्ते इमारत के अन्दर दाख़िल हुवे, दो इन्तिहाई ख़ूब सूरत जब कि दो इन्तिहाई सियाह थे। ख़ूब सूरत फ़िरिश्ते मेरे भतीजे की दाईं जानिब और काले फ़िरिश्ते बाईं जानिब बैठ गए। सफ़ेद फ़िरिश्तों ने अपने हाथों से मेरे भतीजे के बदन को छुवा तो सियाह फ़िरिश्तों ने कहा : "हम इस के ज़ियादा ह़क़दार हैं।"

ख़ूब सूरत फ़िरिश्तों ने कहा : "हरगिज़ नहीं ! तुम इस के ह़क़दार नहीं।" फिर इन में से एक फ़िरिश्ते ने अपनी दो उंगलियां मेरे भतीजे के मुंह में डाल कर उस की ज़बान पलटी तो उस ने फ़ौरन "**अल्लाहु अक्बर**" कहा। तक्बीर की सदा सुन कर सफ़ेद रंग के ख़ूब सूरत फ़िरिश्तों ने कहा : "इस ने राहे ख़ुदा में "**अल्लाहु अक्बर**" कहा है लिहाज़ा हम इस के ज़ियादा ह़क़दार हैं, तुम यहां से चले जाओ।" जब मैं ने अपने भतीजे की त़रफ़ नज़र की तो उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। मैं ने बाहर आ कर बुलन्द आवाज़ से कहा : "ऐ लोगो ! तुम में से जो येह चाहे कि जन्नती शख़्स का जनाज़ा पढ़े तो वोह मेरे भतीजे के जनाज़े में ह़ाज़िर हो जाए।" लोगों ने जब येह सुना तो कहने लगे : "शायद ! शहर बिन ह़ौशब पर जुनून त़ारी हो गया है। कल भी न जाने क्या कह रहे थे और आज भी अ़जीबो ग़रीब बात कह रहे हैं कि "जन्नती शख़्स के जनाज़े में शरीक हो जाओ।" लोगों में इस त़रह़ की चेहमेगोइयां होने लगीं। अमीरे क़ाफ़िला को ख़बर हुई तो उस ने मुझे अपने पास बुलाया और सूरते ह़ाल दरयाफ़्त की। मैं ने तमाम वाक़िआ़ कह सुनाया। ह़क़ीक़ते ह़ाल जान कर अमीरे क़ाफ़िला और तमाम लश्कर वालों ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

******

हिकायत नम्बर : 380 **लकड़ियां सोना कैसे बनीं .....?**

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं : मुल्के शाम में दो ह़सीनो जमील इ़बादत गुज़ार नौजवान रहते थे। कषरते इ़बादत और तक़्वा व परहेज़गारी की वजह से उन्हें "**सबीह़** और **मलीह़**" के नाम से पुकारा जाता था। उन्हों ने अपना एक वाक़िआ़ कुछ यूं बयान किया : "एक मरतबा हमें भूक ने बहुत ज़ियादा तंग किया। मैं ने अपने रफ़ीक़ से कहा : "आओ फ़ुलां सह़रा में चल कर किसी शख़्स को दीने मतीन के कुछ अह़काम सीखा कर अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये कुछ इक्दाम करे।" चुनान्चे, हम दोनों सह़रा की जानिब चल पड़े, वहां हमें एक सियाह फ़ाम शख़्स मिला जिस के सर पर लकड़ियों का गठ्ठा था। हम ने उस से कहा : "बताओ ! तुम्हारा रब कौन है ?" येह सुन कर उस ने लकड़ियों का गठ्ठा ज़मीन पर फेंका और उस पर बैठ कर कहा : "मुझ से येह न पूछो कि तेरा रब कौन है ? बल्कि येह पूछो : ईमान तेरे दिल के किस गोशे में है ?" उस देहाती का आ़रिफ़ाना कलाम सुन कर हम दोनों ह़ैरत से एक दूसरे का मुंह तकने लगे। वोह फिर मुख़ात़ब हुवा : "तुम ख़ामोश क्यूं हो गए, मुझ से पूछो, सुवाल करो, बेशक त़ालिबे इ़ल्म सुवाल करने से बाज़ नहीं रहता।" हम उस की बातों का कुछ जवाब न दे सके और ख़ामोश रहे। जब उस ने हमारी ख़ामोशी देखी तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा :

"ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू ख़ूब जानता है कि तेरे कुछ ऐसे बन्दे भी हैं कि जब वोह तुझ से सुवाल करते हैं तो तू उन्हें ज़रूर अ़ता फ़रमाता है। मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मेरी इन लकड़ियों को सोना बना दे।" अभी उस ने येह अल्फ़ाज़ अदा ही किये थे कि लकड़ियां चमकदार सोना बन गईं। उस ने फिर दुआ़ की : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ बेशक तू अपने उन बन्दों को ज़ियादा पसन्द फ़रमाता है जो शोहरत के त़ालिब नहीं होते। मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ इस सोने को दोबारा लकड़ियां बना दे।" उस का कलाम ख़त्म होते ही वोह सारा सोना दोबारा लकड़ियों में तब्दील हो गया। उस ने लकड़ियों का गठ्ठा अपने सर पर रखा और एक जानिब रवाना हो गया।

बिखरे बाल आज़ुर्दा सूरत, होते हैं कुछ अहले मह़ब्बत
बद्र मगर येह शान है उन की, बात न टाले रब्बुल इ़ज़्ज़त

हम अपनी जगह साकित खड़े रहे और किसी को उस के पीछे जाने की जुरअत न हुई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस नेक बन्दे का ज़ाहिरी रंग अगर्चे सियाह था लेकिन उस का बात़िन नूरे मा'रिफ़त व ईमान से मुनव्वर व रोशन था।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 381 जुरअत मन्द इमाम

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह साएह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को येह फ़रमाते हुवे सुना : मुफ़्लिह़ अस्वद का बयान है कि एक मरतबा ख़लीफ़ा मामून ने क़ाज़ी यह़्या बिन अकषम से कहा : "मेरी ख़्वाहिश है कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث से मुलाक़ात करूं।" क़ाज़ी ने कहा : "हुज़ूर ! जैसा आप चाहें।" कहा : "आज रात ही मुलाक़ात का मुतमन्नी हूं और चाहता हूं कि हमारी मुलाक़ात के दौरान उन के पास हमारे इलावा कोई न हो।" क़ाज़ी ने कहा : "ठीक है, हम आज रात उन के पास चलेंगे।" जब रात हुई तो दोनों अपने अपने घोड़ों पर सुवार हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث के आस्तानए आ़लिय्या की जानिब रवाना हो गए। वहां पहुंच कर क़ाज़ी यह़्या बिन अकषम ने दरवाज़े पर दस्तक दी। अन्दर से ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَارِث ने पूछा : "कौन है ?" क़ाज़ी ने कहा : "आप के दरवाज़े पर वोह आया है जिस की इत़ाअ़त आप पर वाजिब है।" फ़रमाया : "वोह क्या चाहता है ?" कहा : "आप से मुलाक़ात का ख़्वाहिश मन्द है।" फ़रमाया : "इस मुआ़मले में मेरी ख़ुशी का लिह़ाज़ रखा जाएगा या मुझे मजबूर किया जाएगा ?" ख़लीफ़ा ने जब येह सुना तो समझ गया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुलाक़ात नहीं करना चाहते। लिहाज़ा उस ने यह़्या को वापस चलने का हुक्म दिया।

चुनान्चे, दोनों वापस चल दिये। रास्ते में उन का गुज़र एक मस्जिद के क़रीब से हुवा तो वहां एक शख़्स इशा की नमाज़ पढ़ा रहा था, येह दोनों भी नमाज़ पढ़ने मस्जिद में दाख़िल हुवे और बा जमाअ़त नमाज़ अदा की, इमाम साहिब की क़िराअत बहुत अच्छी थी। उस ने बड़े अह़सन अन्दाज़ में कुरआने पाक पढ़ा। नमाज़ पढ़ कर ख़लीफ़ा और क़ाज़ी अपने महल में आ गए। सुब्ह़ होते ही ख़लीफ़ा मामून ने उस इमाम को अपने दरबार में बुला कर मसाइले फ़िक़्ह में उस से मुनाज़रा शुरूअ़ कर दिया। उस बा हिम्मत इमाम ने जहां मह़सूस किया कि ख़लीफ़ा ग़लती कर रहा है फ़ौरन टोक दिया और उस की मुख़ालफ़त करते हुवे कहा : "अस्ल मस्अला इस त़रह़ है, आप ने ग़लत़ बयान किया।" ख़लीफ़ा मसाइल बयान करता रहा, इमाम उस की ग़लतियां बताता रहा। जब मुआ़मला तूल पकड़ गया तो ख़लीफ़ा ग़ज़ब नाक हो कर खड़ा हो गया और कहा :

"आज तुम ने मेरी बहुत मुख़ालफ़त की है, अब तुम अपने दोस्तों के पास जा कर कहोगे कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन को ला जवाब कर दिया और मसाइल में उस की बहुत सारी ग़लतियां निकाली हैं। क्या ख़याल है तुम ऐसा ही करोगे ना ?" उस इमाम ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस बात से ह़या करता हूं कि मेरे दोस्त येह बात जानें कि मैं ने तुम से मुलाक़ात की है।" येह सुन कर ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मेरी रिआ़या में ऐसे लोग पैदा फ़रमाए जो मेरे पास आने से ह़या करते हैं।" येह कह कर ख़लीफ़ा सजदे में गिर गया। इमाम साहिब दरबार से वापस आ गए। वोह इमाम कोई आ़म शख़्स नहीं बल्कि मश्हूरो मा'रूफ़ वली ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ ह़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى थे।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاہ النبی الامين صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 382

मुतबर्रक तरबूज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की बहन फ़ातिमा बिन्ते अह़मद رحمۃاللہ تعالی علیہا का बयान है : बग़दाद में दस नौजवान एक साथ रहते थे। उन की आंखों पर ग़फ़्लत का पर्दा पड़ा हुवा था दिन रात दुन्यवी मशाग़िल में मसरूफ़ रहते। एक दिन उन्हों ने अपने एक दोस्त को किसी काम से बाज़ार भेजा। उस ने आने में काफ़ी देर कर दी सब उस पर बहुत नाराज़ हो रहे थे। फिर वोह हाथों में एक तरबूज़ लिये हंसता हुवा अपने दोस्तों के पास आया। उस की येह ह़ालत देख कर दोस्तों ने कहा : "एक तो तुम आए बहुत देर से हो और हंस भी रहे हो ?" नौजवान ने कहा : "मैं आप के पास एक बहुत ही अ़जीब चीज़ ले कर आया हूं। येह देखो ! इस तरबूज़ पर ज़माने के मश्हूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने अपना मुबारक हाथ रखा था, मैं ने इसे बीस दीनार में ख़रीद लिया।"

येह सुन कर सब बारी बारी तरबूज़ को बड़ी अ़क़ीदत व मह़ब्बत से चूम कर अपनी आंखों पर मलने लगे। फिर उन में से किसी ने कहा : "क्या तुम में से किसी को मा'लूम है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي को इस अ़ज़ीम मक़ाम व मर्तबे तक किस चीज़ ने पहुंचाया ?" सब ने कहा : "तक़्वा व परहेज़गारी ने।" येह सुन कर उस नौजवान ने ब आवाज़े बुलन्द अपने दोस्तों से कहा : "तुम सब गवाह रहना कि मैं अपने तमाम गुनाहों से ताइब हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ कर रहा हूं।" येह सुन कर बक़िय्या दोस्तों ने भी बयक ज़बान कहा : "हम सब भी अपने गुनाहों से ताइब हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी ख़त़ाओं से दर गुज़र फ़रमाए।" फिर दस के दस नौजवान शबो रोज़ इ़बादते इलाही में मश्ग़ूल रहने लगे। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ उन्हों ने "त़रसूस" की त़रफ़ जिहाद में शिर्कत की और लड़ते लड़ते राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जान दे दी।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 383 शाफ़ी लुआ़बे दहन

ह़ज़रते अबुल वफ़ा इब्ने अ़क़ील वाइ़ज़ का बयान है कि मैं अपनी जवानी में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने बशरान वाइ़ज़ की मह़फ़िल में अकषर ह़ाज़िर हो जाया करता था। उन दिनों मेरी आंख में बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ रहती और अकषर सुर्ख़ रहा करती थी, मैं इस बीमारी की वजह से बहुत ज़ियादा परेशान था। एक दिन ह़स्बे मा'मूल जब मैं मह़फ़िल में शरीक हुवा तो "**बक्कार**" नामी एक शख़्स जो इब्ने बशरान वाइ़ज़ के मिम्बर पर क़ालीन बिछाया करता था। मुझे बड़े ग़ौर से देखता रहा फिर मेरे क़रीब आया और कहा : "क्या वजह है कि मैं तुम्हें इस मह़फ़िल में बाक़ाइदगी से आता हुवा देखता हूं ?" मैं ने कहा : "मैं इस ग़रज़ से आता हूं कि कोई ऐसी बात सीखूं जो मुझे मेरे दीन में फ़ाइदा दे।"

उस ने कहा : "तुम मह़फ़िल के इख़्तिताम पर मुझ से मिलना। जब मह़फ़िल ख़त्म हुई तो उस ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे एक दरवाज़े के पास ले गया, दस्तक दी तो अन्दर से पूछा गया : "कौन है ?" कहा : "बक्कार"। फिर आवाज़ आई : "ऐ बक्कार ! तुम आज एक मरतबा यहां आ तो गए हो, अब दोबारा क्यूं आए हो ?" बक्कार ने कहा : "मैं एक ख़ास ह़ाजत से आया हूं।" किसी ने "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم" कहते हुवे दरवाज़ा खोल दिया। हम अन्दर दाख़िल हुवे तो सामने एक बुज़ुर्ग सर पर चमडे की चादर डाले क़िब्ला रूख़ बैठे हुवे थे। हम ने सलाम किया, बुज़ुर्ग ने जवाब दिया फिर मेरे रफ़ीक़ बक्कार ने कहा : "या सय्यिदी ! येह लड़का बा क़ाइदगी से मह़फ़िल में ह़ाज़िर होता है और भलाई का त़ालिब व मुह़िब्ब है, ह़ुज़ूर इस की आंखों का मरज़ दाइमी हो गया है। आप इस के लिये दुआ़ फ़रमा दें।"

मैं बुजु़र्ग के क़रीब गया तो उस ने अपने मुंह में उंगली डाल कर बाहर निकाली और मेरी आंखों पर मल दी। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के लुआ़बे दहन (या'नी थूक) की बरकत से मुझे ऐसी शिफ़ा मिली कि साठ **60** साल का त़वील अ़र्सा गुज़र जाने के बा वुजूद आज तक मेरी आंख में दोबारा तक्लीफ़ न हुई। जब मैं ने उन के बारे में लोगों से पूछा तो बताया गया : "येह ज़माने के मश्हूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र दीनवरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى हैं।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हि़कायत नम्बर : 384

ग़ैबी कुंवें का क़ैदी

ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान बिन ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है : मेरे वालिदे मोह़तरम अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद जिहाद के इरादे से एक लश्कर के हमराह रवाना हुवे। हम ने एक ऐसे कुंवें के क़रीब क़ियाम किया जो बहुत चौड़ा और गहरा था। लोगों ने पानी निकालने के लिये कुंवें में डोल डाला तो रस्सी खुल गई और डोल कुंवें में ही रह गया। लोगों ने रस्सियां बान्ध कर एक आदमी को डोल निकालने के लिये कुंवें में उतारा। जब वोह कुंवें में उतरा तो किसी की दर्द भरी आवाज़ आने लगीं। ऐसा लगता था जैसे कोई शदीद मरज़ की ह़ालत में कराह रहा है। आवाज़ सुन कर वोह शख़्स वापस आ गया और लोगों से कहा : "क्या तुम ने भी वोह आवाज़ सुनी है जो मैं ने सुनी ?" लोगों ने कहा : 'हां ! हम ने भी वोह आवाज़ सुनी है।" फिर वोह लोहे की एक सलाख़ ले कर वापस कुंवें की त़रफ़ गया ताकि उस की मदद से अन्दर फंसे हुवे मुसीबत ज़दा को निकाल सके। जब पानी की सत़ह़ के क़रीब पहुंचा तो एक शख़्स तख़्ते पर बैठा था, उस ने पुकार कर कहा : "तू जिन्न है या इन्सान ?" तख़्ते पर बैठे हुवे शख़्स ने कहा : "मैं इन्सान हूं।" पूछा : "कहां का रहने वाला है।" कहा : मैं "**अन्त़ाकिया**" का रिहाइशी था। क़र्ज़ अदा न करने के जुर्म में इन्तिक़ाल के बा'द मुझे इस कुंवें में बन्द कर दिया गया। अन्त़ाकिया में मेरी अवलाद है जो न तो मुझे याद करती और न ही मेरा क़र्ज़ अदा करती है। बस अब मैं इस कुंवें में क़ैद हो कर अपने जुर्म की सज़ा पा रहा हूं।"

येह सुन कर वोह शख़्स बाहर निकल आया और अपने दोस्तों से कहा : "एक बहुत अहम मस्अला दरपेश है। पहले इसे ह़ल करते हैं फिर जिहाद के लिये चलेंगे। चुनान्चे, लश्कर के कुछ अफ़राद अन्त़ाकिया गए और कुंवें में क़ैद शख़्स का नाम ले कर उस के बेटों का पता मा'लूम कर के उन के पास पहुंचे और सूरते ह़ाल से आगाह किया। उन्हों ने कहा : "ब ख़ुदा वोह वाक़ेई हमारा वालिद है। आओ ! हम अपनी ज़मीन बेच कर अभी अपने वालिद का क़र्ज़ अदा कर देते हैं। येह कह कर उन्हों ने ज़मीन बेची और सारा क़र्ज़ अदा कर दिया।" लश्कर से गए हुवे अफ़राद जब अन्त़ाकिया

से वापस उसी मक़ाम पर पहुंचे जहां लश्कर ने कुंवें के क़रीब क़ियाम किया था तो येह देख कर उन की हैरत की इन्तिहा न रही कि वहां दूर दूर तक किसी कुंवें का नामो निशान न था। वोह बड़े हैरान हुवे और सफ़र पर रवाना होने लगे लेकिन सूरज ग़ुरूब होने को था लिहाज़ा उन्हों ने वोह रात वहीं गुज़ारी। रात को उन के ख़्वाब में वोही शख़्स आया और बहुत शुक्रिया अदा करते हुवे कहा :

"ऐ राहे ख़ुदा के मुसाफ़िरो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए। तुम्हारी कोशिश और ख़ैर ख़्वाही की वजह से जब मेरे बेटों ने मेरा क़र्ज़ अदा किया तो मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे कुंवें की क़ैद से नजात अ़ता फ़रमा कर जन्नत के आ'ला दरजात में जगह अ़ता फ़रमा दी। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला आप लोगों को अच्छा ठिकाना अ़ता फ़रमाए।" (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 385 माल जम्अ़ करना तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहिद बिन बक्र رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : एक मरतबा मैं ह़ज़रते रक़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास मौजूद था। दौराने गुफ़्तगू उन्हों ने बताया कि मैं ने मुह़म्मद बिन सल्त رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह कहते हुवे सुना : एक मरतबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर था। इतने में एक शख़्स ने आ कर सलाम किया। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उसे देख कर खड़े हो गए। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देख कर मैं भी खड़ा होने लगा तो आप ने मन्अ़ फ़रमा दिया। जब वोह शख़्स बैठ गया तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझे एक दिरहम देते हुवे कहा : "जाओ ! रोटी, मख्खन और बरनी खजूरें ख़रीद लाओ।" मैं ने मत़लूबा चीज़ें आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर कर दीं। आप ने आने वाले के सामने रखीं, उस ने कुछ खाईं और बाक़ी चीज़ें अपने पास रख लीं। कुछ देर बा'द वोह वापस चला गया। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ बेटे ! क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम्हें खड़ा होने से क्यूं मन्अ़ किया ?" मैं ने कहा : "नहीं।" फ़रमाया : "तुम्हारे और इस शख़्स के दरमियान कोई मा'रिफ़त नहीं थी मैं ने चाहा कि तुम्हारा खड़ा होना सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये होना चाहिये तुम चूंकि मुझे देख कर खड़े हो रहे थे इस लिये मैं ने तुम्हें मन्अ़ कर दिया।"

फिर पूछा : "तुम्हें मा'लूम है कि मैं ने तुम्हें दिरहम देते हुवे येह क्यूं कहा कि फ़ुलां फ़ुलां चीज़ ले आओ।" मैं ने कहा : "नहीं।" फ़रमाया : "बेशक अच्छा खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने का सबब है।" फिर कहा : "अच्छा येह बताओ कि वोह शख़्स बक़िय्या खाना अपने साथ क्यूं ले गया ?" मैंने कहा : "ह़ुज़ूर ! मुझे नहीं मा'लूम।" फ़रमाया : "इन लोगों के

नज़दीक जब तवक्कुल दुरुस्त हो जाए तो फिर किसी चीज़ को अपने पास जम्अ़ करना कोई ज़रर नहीं देता।'' फिर फ़रमाने लगे : ''जानते हो वोह आने वाला कौन था ? वोह ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मौसिली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی थे जो हम से मुलाक़ात के लिये आए थे।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم

हिकायत नम्बर : 386 सोने का मह़ल

ह़ाफ़िज़ मुत़ह्हर सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی बहुत मुत्तक़ी व परहेज़गार शख़्स थे। मुसलसल साठ (60) साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के शौक़ में आंसू बहाते रहे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''एक रात मैं ने अपने आप को ख़्वाब में एक ऐसी नहर के किनारे पाया जिस में उ़म्दा मुश्क बह रहा था। उस के दोनों किनारों पर इन्तिहाई क़ीमती मोती बिखरे हुवे थे। फिर मैं ने सोने की ईंटों से बना हुवा मह़ल देखा। जिस में ख़ूब सूरत लड़कियां बेहतरीन लिबास व ज़ेवरात से आरास्ता बुलन्द आवाज़ में इस त़रह़ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की पाकी बयान कर रही थीं : ''पाक है वोह परवर दगार जिस की हर ज़बान में पाकी बयान की जाती है, वोह पाक है। पाकी है उस के लिये जिस के जल्वे हर जगह हैं, वोह पाक है, उस के लिये पाकी है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। पाक है वोह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ।''

मैं ने जब उन की तस्बीह़ सुनी तो पूछा : ''तुम कौन हो ?'' उन्हों ने अपनी दिलरुबा मसह़ूर कुन आवाज़ में कहा : ''हम रह़मान عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में से एक मख़्लूक़ हैं।'' मैं ने कहा : ''तुम यहां क्या करती हो ?'' उन्हों ने बयक ज़बान कहा : ''ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रब, लोगों के मा'बूद, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने हमें उन लोगों के लिये पैदा फ़रमाया है जो रात को क़ियाम करते हैं और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करते हैं जब कि लोग सो रहे होते हैं।'' मैं ने कहा : ''आफ़रीन है उन लोगों पर ! वोह ख़ुश नसीब लोग कौन हैं ? जिन की आंखें अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम से ठन्डी करेगा !'' उन्हों ने कहा : ''क्या तुम उन लोगों को नहीं जानते ?'' मैं ने कहा : ''नहीं ! मैं उन्हें नहीं जानता।'' कहा : ''क्यूं नहीं ! बेशक येह वोह लोग हैं जो क़ुरआन की तिलावत करते, तहज्जुद पढ़ते और दिन को रोज़ा रखते हैं। ऐसे ही ख़ुश नसीब इ़बादत गुज़ारों के लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हमें पैदा फ़रमाया है।''

जब ह़ाफ़िज़ **मुत़ह्हर सा'दी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی ने अपना येह ख़्वाब लोगों को सुनाया तो किसी कहने वाले ने कहा : ''तअ़ज्जुब है उन लोगों पर जिन की आंखें इस मुख़्तसर नींद के झोंके से लज़्ज़त पाती हैं कि जिस के बा'द मौत तय्यार खड़ी है। बेशक रात को त़वील क़ियाम पर सब्र करना जहन्नम की भड़कती हुई आग में जाने से बदर जहा बेहतर व आसान है।''

हिकायत नम्बर : 387 एक वलिय्या का आ़रिफ़ाना कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अशहब इब्राहीम बिन मुहल्लब عليه رحمة الله الرب फ़रमाते हैं : "एक मरतबा दौराने त़वाफ़ मैं ने एक औ़रत को देखा जो ख़ानए का'बा का गि़लाफ़ थामे बड़े दर्दभरे अन्दाज़ में येह सदाएं बुलन्द कर रही थी : "ऐ उन्सिय्यत के बा'द आने वाली वह़शत ! हाए, इ़ज़्ज़त के बा'द ज़िल्लत, ऐ ग़ना के बा'द आने वाली तंगदस्ती व मोह़ताजी !" उस की दर्द भरी आवाज़ सुन कर मैं ने पूछा : "तुम्हें क्या ग़म है ? क्या तुम्हारा माल व अस्बाब गुम हो गया है या तुम्हें कोई बड़ी मुसीबत आ पहुंची है ?"

वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह हुई और कहा : "माल व अस्बाब नहीं बल्कि मेरा दिल गुम हो गया है।" मैं ने कहा : "सिर्फ़ इस मुसीबत की वजह से तुम परेशान हो ?" उस ने कहा : "दिल गुम हो जाने और मह़बूब से जुदा हो जाने से बड़ी और क्या मुसीबत होगी ?" मैं ने कहा : "तेरी बुलन्द आवाज़ व ख़ुश आवाज़ी ने सामेईन को त़वाफ़ से रोक दिया है, अपनी आवाज़ पस्त रख।" उस ने कहा : "ऐ शैख़ ! येह तेरा घर है या उस (परवर दगार عَزَّوَجَلَّ) का ?" मैं ने कहा : "येह घर उसी का है।" कहा : "येह तेरा ह़रम है या उस का ?" मैं ने कहा : "येह ह़रम भी उसी ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का है।" कहा : "ऐ शैख़ ! हमें छोड़ दे ! हमें अपने मह़बूब से जितनी उल्फ़त व मह़ब्बत और मुलाक़ात का शौक़ है इसी क़दर हम उस की बारगाह में अ़र्ज़ो नाज़ करते हैं।" फिर कहा : "ऐ मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ तुझे मुझ से मह़ब्बत का वासित़ा ! मुझे मेरा गुमशुदा दिल अ़त़ा फ़रमा दे।" मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तुझे कैसे मा'लूम हुवा कि वोह तुझ से मह़ब्बत करता है।" कहा : "मुझ पर उस की अ़ज़ीम इनायतें इस का षुबूत हैं कि वोह मुझ से मह़ब्बत करता है। देखो ! उस ने मेरे लिये लश्कर तय्यार किये, जिन्हों ने मालो अस्बाब ख़र्च किया फिर यहां उस के घर तक पहुंचे। मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे कुफ़्र व शिर्क की तंगो तारीक वादियों से नजात अ़त़ा फ़रमा कर तौह़ीद के मज़बूत़ व मुनव्वर क़ल्ए़ में दाख़िल फ़रमाया, और मैं उस से ग़ाफ़िल थी मगर उस ने मुझे अपनी मा'रिफ़त अ़त़ा फ़रमाई येह तमाम इन्आ़मात दे कर उस ने मुझ पर बेशुमार बख़्शिशें फ़रमाईं, क्या येह उस का अ़ज़ीम करम नहीं ?"

मैं ने कहा : "तुझे उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से कितनी मह़ब्बत है ?" कहा : "मुझे तमाम अश्या से ज़ियादा उस से मह़ब्बत है।" मैं ने कहा : "क्या तू मह़ब्बत से वाक़िफ़ है ?" कहा : "ऐ शैख़ ! अगर मैं मह़ब्बत ही को न पहचानूंगी तो फिर किस चीज़ को पहचानूंगी।" मैं ने कहा : "मह़ब्बत कैसी होती है।" बोली : "शराब से भी ज़ियादा रक़ीक़ (या'नी पतली)।" मैं ने पूछा : "मह़ब्बत क्या है ?" जवाब दिया : "वोह ऐसी शै है जिसे ह़लावत व मिठास से गूंधा गया, अ़ज़मत व जलाल के बरतनों में उस का ख़मीर तय्यार हुवा, उस की मिठास न ख़त्म होने वाली है। जब मह़ब्बत की ज़ियादती होती है तो वोह ऐसा सिर्का बन जाती है जो हलाक और जिस्म को बेकार कर देता है। मह़ब्बत ऐसा शजर है कि जिस का उगाना निहायत दुश्वार लेकिन उस से

हा़सिल होने वाले फल निहायत लज़ीज़ होते हैं।" फिर वोह औ़रत एक जानिब रवाना हो गई और उस की ज़बान पर चन्द अश्आ़र जारी थे, जिन का मफ़्हूम येह है :

"परेशान हा़ल शख़्स जो मुसीबत और इस पर सब्र करना न जाने तो उस के लिये आंखों में ऐसे आंसू भर आते हैं जिन के साथ रोना बहुत तक्लीफ़ देह होता है, और जिस का जिस्म ग़म व हु़ज़्न की वजह से नह़ीफ़ व लाग़र हो गया और मह़ब्बत की आग ने उसे जला डाला हो तो वोह अपने ज़ख़्मों का इलाज ग़म और मुसीबतों को बरदाश्त करने के ज़रीए़ करे। ख़ास त़ौर पर वोह मह़ब्बत जिस का इरादा भी मुश्किल होता है तो जब मह़ब्बत व करम की ज़ियादती की उम्मीद, फ़ना हो जाने पर मौक़ूफ़ हो तो ज़िन्दगी दूभर व दुश्वार हो जाती है।"

वोह अश्आ़र पढ़ती हुई जा रही थी और मैं ह़ैरत से उसे जाता हुवा देख रहा था कि उस औ़रत ने कैसा आ़रिफ़ाना कलाम किया है। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला जिसे चाहे नवाज़े, जिस पर चाहे अपनी ख़ास इनायत फ़रमा दे।

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी अपनी सच्ची मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए हम पर ऐसा ख़ास लुत़्फ़ो करम फ़रमाए कि हम हर आन हर घड़ी उस की याद में मगन रहें, बस हर वक़्त हमारी आंखों के सामने उसी के जल्वे और दिल में उसी की याद मौजज़न रहे। हर हर लम्ह़ा उस की इ़बादत व इत़ाअ़त में गुज़रे। ऐ काश ! हमें ऐसी मह़ब्बत मिले कि हमें अपना होश न रहे बस उसी की मह़ब्बत में गुम रहें।)

***मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही* عَزَّوَجَلَّ *न पाऊं मैं अपना पता या इलाही* عَزَّوَجَلَّ**

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हि़कायत नम्बर : 388

दर्दे दिल की दवा

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं एक जंगल से गुज़र रहा था कि एक औ़रत को देखा जिस के चेहरे से इ़बादत व रियाज़त का नूर टपक रहा था। उस ने क़रीब आ कर सलाम किया और मैं ने जवाब दिया। उस ने मुझ से कहा : "तुम कहां से आ रहे हो ?" मैं ने कहा : "मैं ऐसे ह़कीम के पास से आ रहा हूं जिस जैसा कोई और नहीं।" येह सुन कर औ़रत ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहा : "अफ़्सोस है ! ऐसे ह़कीम के साथ रहते हुवे तुम्हें क्या सूझी कि तुम ने उस से दूरी इख़्तियार कर ली और सफ़र पर चले आए। ह़ालांकि वोह तो ग़ुरबा का अनीस, कमज़ोरों का मददगार और ग़ुलामों का मौला है। फिर तेरे नफ़्स ने उस से जुदाई की जुरअत कैसे की।"

उस औ़रत के आ़रिफ़ाना कलाम से मेरा दिल भर आया और मैं ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। मुझे रोता देख कर उस ने पूछा : "तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?" मैं ने कहा : "मरीज़ को दवा मिल गई अब जल्द ही शिफ़ा मिल जाने की उम्मीद है।" कहा : "ऐ मुसाफ़िर ! अगर तू अपनी बात में सच्चा है तो फिर रोया क्यूं ?" मैं ने कहा : "क्या सच्चे लोग रोते नहीं।" कहा : "नहीं, क्यूंकि रोना तो दिल की राह़त है और अहले अ़क़्ल के हां तो येह नुक़्स (या'नी ख़ामी) शुमार होता है।" मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नेक बन्दी ! मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखा जिस से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त मुझे नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमाए।" कहा : "हाए अफ़्सोस ! जिस ह़कीम के पास तू रहता है उस की क़ुर्बत मिल जाना ही बहुत बड़ा फ़ाइदा है। क्या इस अ़ज़ीम दौलत के मिल जाने के बा वुजूद तू मज़ीद किसी और शै का त़ालिब बनता है ?" मैं ने कहा : "अल्लाह तबारक व तआ़ला जो चाहता है करता है। अगर तू मुनासिब समझे तो मुझे कोई नफ़्अ़बख़्श चीज़ सिखा दे।" उस ने कहा : "अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात का शौक़ रखते हुवे उस की ख़ूब इ़बादत कर, बेशक वोह अपने औलिया के लिये तजल्ली फ़रमाएगा। येह इस लिये है कि उस ने अपने औलिया को दुन्या में उल्फ़त का ऐसा जाम पिलाया है कि इस के बा'द उन्हें कभी प्यास नहीं लगती।" येह कह कर वोह ज़ारो क़ित़ार रोते हुवे इस त़रह़ इल्तिजाएं करने लगी :

"ऐ मेरे मालिक ! मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ तू कब तक मुझे इस नापाईदार दुन्या में रखेगा जहां मैं किसी को भी ऐसा नहीं पाती जो मेरी मुसीबत में मेरा मददगार षाबित हो।" फिर वोह इस ह़ाल में रुख़्सत हुई कि उस की आंखें आंसू बहा रही थी और ज़बान पर एक शे'र जारी था जिस का मफ़्हूम येह है : "बन्दा जब अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में गुम हो जाए तो फिर उसे किसी ऐसे त़बीब की उम्मीद नहीं रहती जिस से वोह इ़लाज करवाए।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 389

खन्डरात का मकीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सहल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने मुह़म्मद बिन अख़रम को येह फ़रमाते सुना : "एक मरतबा मैं साह़िले समन्दर पर चला जा रहा था कि रास्ते में मेरी मुलाक़ात एक औ़रत से हुई जो क़रीबी अ़लाक़े से आ रही थी। मैं ने पूछा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! कहां जा रही हो ?" कहा : "सामने खन्डरात में मौजूद एक इ़मारत में मेरा बेटा रहता है मैं उसी के पास जा रही हूं।" येह कह कर वोह खन्डरात की जानिब रवाना हो गई, मैं भी उस के पीछे पीछे चल दिया। खन्डरात में मौजूद एक बोसीदा इ़मारत के पास पहुंच कर मैं ने किसी को येह कहते सुना :

"मुश्ताक़ (या'नी शौक़े दीदार रखने वाले) के लिये सुकून व क़रार नहीं होता वोह घूमता रहता और ख़ुशियां उस की मिल्क नहीं होतीं। उस के दिल की मूनिस व ग़म ख़्वार त़वील रात होती है जो उसे लज़्ज़त व सुकून फ़राहम करती हैं और दिन की रोशनी उसे वह़शत में मुब्तला कर देती है। इसी त़वील रात से वोह अपना मक़्सद व मुद्दआ पूरा करता है और मा'रिफ़त ह़ासिल करता रहता है। इ़बादत व रियाज़त और सह़राओं में घूमने फिरने को वोह अपना शैवा बना लेता है और येह उस का हर वक़्त का मश्ग़ला बन जाता है।"

येह उस औ़रत का बेटा था जो इस त़रह़ कलाम कर रहा था। मैं ने औ़रत से पूछा : "तुम्हारा बेटा यहां कितने अ़र्से से रह रहा है।" उस ने कहा : "जब से मैं ने इसे अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के लिये वक़्फ़ किया और उस ने इसे अपनी इ़बादत के लिये क़बूल फ़रमाया है उस वक़्त से येह इस वीराने में मसरूफ़े इ़बादत है।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 390 सियाह फ़ाम ख़ादिमा की नसीह़त भरी गुफ़्तगू

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को येह फ़रमाते सुना : एक मरतबा मैं बनी इस्राईल के "तीह" नामी जंगल में घूम रहा था कि मेरी मुलाक़ात एक सियाह फ़ाम लौंडी से हुई। वोह यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ऐसी मगन थी कि आस पास की ख़बर ही न थी। वोह मुसलसल आस्मान की जानिब देखे जा रही थी। मैं ने क़रीब जा कर कहा : "ऐ मेरी बहन اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" उस ने कहा : "وَعَلَيْكُمُ السَّلَام ऐ ज़ुन्नून मिस्री !" जब मैं ने उस की ज़बान से अपना नाम सुना तो हैरान हो कर पूछा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तू ने मेरा नाम कैसे जाना ? ह़ालांकि आज से क़ब्ल हमारी कभी मुलाक़ात नहीं हुई।" उस ने कहा : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस्मों की तख़्लीक़ से दो हज़ार साल क़ब्ल रूह़ों को पैदा फ़रमाया, फिर वोह रूहें अ़र्शे मुअ़ल्ला के गिर्द घूमती रहीं। उन में से जिन रूह़ों ने एक दूसरे को वहां पहचाना वोह दुन्या में भी एक दूसरे से उन्स रखती हैं और जिन्हों ने वहां न पहचाना उन में आपस में इख़्तिलाफ़ है। मेरी रूह़ ने तेरी रूह़ को अ़र्शे मुअ़ल्ला के गिर्द पहचान लिया था इसी लिये आज भी वोह तुझ से वाक़िफ़ है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मैं उस सियाह फ़ाम लौंडी की येह ह़कीमाना गुफ़्तगू सुन कर हैरान हो गया।" मैं ने उस से कहा : "ऐ नेक बीबी ! मैं तुझे दाना व अ़क़्लमन्द समझता हूं। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने जो चीज़ तुझे सिखाई है उस में से मुझे भी कुछ सिखा दे।" उस ने कहा : "ऐ अबू फ़ैज़ ! अपने आ'ज़ा पर मीज़ान का ख़ौफ़ त़ारी कर ले यहां तक कि तेरे जिस्म की हर वोह चीज़ पिघल जाए जो ग़ैरुल्लाह के लिये हो। बस तेरा दिल

बाक़ी रहे और इस की भी येह ह़ालत हो कि इस में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के इ़लावा किसी का ख़याल न हो। अगर तू ऐसा करेगा तो वोह तुझे एक अ़ज़ीमुश्शान दरवाज़े तक ले जाएगा और तुझे विलायत के आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाएगा और तेरे पड़ोसियों को तेरी इत़ाअ़त का हुक्म देगा।'' मैं ने कहा : ''ऐ मेरी बहन ! मुझे मज़ीद कुछ नसीह़तें कर।'' कहा : ''ऐ अबू फ़ैज़ ! अपने नफ़्स को अपने लिये नसीह़त करने वाला बना ले। जब तू ख़ल्वत में हो तो अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त कर, वोह तेरी हर पुकार पर तुझे जवाब देगा।'' येह कह कर वोह एक त़रफ़ रवाना हो गई। मैं काफ़ी देर तक वहीं खड़ा उस की हि़क्मत भरी बातों में ग़ौरो फ़िक्र करता रहा।

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

हि़कायत नम्बर : 391

मुर्दा बोल उठा.....!

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली रूज़बारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मरअ़शी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के पास **अन्ताकिया** गया, उन का एक शागिर्द गोरकन (या'नी क़ब्र खोदने वाला) था। अब उस ने इस पेशे को बिल्कुल तर्क कर दिया था। जब मैं ने वजह पूछी तो उस ने अपना एक वाक़िआ़ कुछ यूं बयान किया : ''मैं उजरत पर लोगों की क़ब्रें खोदा करता था। एक मरतबा क़ब्र खोदते हुवे मैं एक काफ़ी पुरानी क़ब्र में जा गिरा और मेरा फावड़ा क़ब्र पर रखी हुई ईंट पर लगा तो क़ब्र का अन्दरूनी मन्ज़र ज़ाहिर हो गया। मैं ने एक नौजवान को क़ब्र में लैटे हुवे देखा उस का जिस्म बिल्कुल तरोताज़ा था, बेहतरीन ख़ुश्बूदार हवा ने उस की नूरानी दाढ़ी के सियाह बालों को एक सम्त कर रखा था। उस का कफ़न बिल्कुल सह़ीह़ व सालिम था गोया आज ही पहनाया गया हो। अचानक उस ने आंखें खोल दीं और मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा : ''ऐ मेरे भाई ! क्या क़ियामत क़ाइम हो गई ?'' मैं ने डरते हुवे कहा : ''नहीं, अभी क़ियामत क़ाइम नहीं हुई।''

येह सुन कर उस ने बड़ी ही प्यारी आवाज़ में कहा : ''मेरे भाई ! मेरी क़ब्र को बन्द कर दो।'' मैं ने फ़ौरन उस के चेहरे पर कफ़न डाला और क़ब्र बन्द कर के वापस चला आया और फिर क़सम खा ली कि आइन्दा कभी भी किसी की क़ब्र नहीं खोदूंगा।''

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इन्सान को दुन्या में एक मुक़र्ररा मुद्दत के लिये भेजा है जब उस की मौत का वक़्त आ जाता है तो वोह अपने आ'माल के ज़ख़ीरे के साथ क़ब्र में मुन्तक़िल हो जाता है। फिर उस के मुत़ाबिक़ उस का ह़श्र होता है। अगर नेक हो तो उस के लिये क़ब्र में जन्नत की खिड़कियां खोल दी जाती हैं और वोह पुर सुकून नींद सो जाता है। मौत से ले कर क़ियामत तक की हज़ारहा साल की मुद्दत उस के लिये बहुत क़लील कर दी जाती है। जब कि गुनाहगारों की क़ब्र में त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबात तय्यार होते हैं और उस पर येह मुद्दत बहुत त़वील कर दी जाती है। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त आ'माले सालेह़ा को हमारी अन्धेरी क़ब्र का चराग़ बनाए और हमें अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ फ़रमाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 392

अहले ईलया पर ग़ज़बे जब्बार

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन ज़ियाद बिन अनउम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तआला ने बनी इस्राईल के अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام में से एक नबी हज़रते सय्यिदुना अरमिया عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तरफ़ वही फ़रमाई : "ऐ अरमिया ! अपनी क़ौम को मेरे अ़ज़ाब से डराओ ! बेशक उन के पास ऐसे दिल हैं जो समझते नहीं, उन के पास आंखें हैं मगर वोह हक़ को नहीं देखते, न ही अपने कानों से हक़ बात सुनते हैं। उन से पूछो कि उन्हों ने मेरी इताअ़त का क्या सिला पाया और मेरी नाफ़रमानी का उन्हें कैसा अ़ज़ाब मिला ? उन से पूछो क्या किसी ने मेरी नाफ़रमानी कर के खुश बख़्ती हासिल की है ? क्या कभी कोई मेरी इताअ़त व फ़रमां बरदारी के बा वुजूद बद बख़्त हुवा है ? बेशक जानवरों में भी इतनी समझ होती है कि वोह अपने बाड़ों को पहचान लेते और शाम को वापस अपने मक़ामात पर आ जाते हैं। बेशक इस क़ौम ने मेरे उन अह़कामात को पसे पुश्त डाल दिया जिन पर अ़मल पैरा हो कर इन के आबाओ अज्दाद ने करामत व बुज़ुर्गी हासिल की। लेकिन येह लोग बिग़ैर किसी अच्छाई और नेक आ'माल के बुज़ुर्गी व अ़ज़मत के ख़्वाहां हैं हालांकि इन के सरदार व बादशाह मेरी ने'मतों का इन्कार करते हैं। इन के उ़-लमा ने बा वुजूदे इल्म मेरे हिक्मत भरे अह़काम से फ़ाइदा न उठाया, इन्हों ने अपने दिलों में बेकार बातों को जम्अ़ किया और अपनी ज़बानों को झूट का आ़दी बना लिया है।

मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं इन पर ऐसे शदीद लश्कर मुसल्लत़ करूंगा जो इन्हें न पहचानेंगे। इन की कुछ रिआ़यत न करेंगे। न येह उन की ज़बान समझेंगे न वोह इन की। वोह इन की आहो बुका सुन कर इन पर रह़्म नहीं खाएंगे। मैं इन पर ऐसा सख़्त ग़ज़ब नाक व संग दिल बादशाह मुसल्लत़ करूंगा कि जिस के पास बादलों की त़रह़ लश्कर होंगे। उन का ह़म्ला उ़क़ाब के ह़म्लों की त़रह़ तेज़ होगा। उन के घोड़ों की पीठें बड़े बड़े परन्दों के परों की त़रह़ होंगी। वोह इन की आबादी को तबाहो बरबाद कर डालेंगे। इन की बस्तियों को वीरान कर देंगे। बरबादी है "**ईलया**" और उस के मकीनों के लिये ! मैं ने उन पर "सबाया" को किस त़रह़ मुसल्लत़ किया। उन्हें किस त़रह़ क़त्लो ग़ारत के ज़रीए ज़लील किया। उन के खुशी व ह़सरत के शोरो गुल को परन्दों और जानवरों की आवाज़ों से बदल दिया या'नी उन के मरने के बा'द अब वहां ऐसी वीरानी है कि उल्लू बोल रहे हैं। उन की औ़रतों को इ़ज़्ज़त के बा'द कैसी ज़िल्लत का सामना करना पड़ा। शिकम सैरी के बा'द जान लेवा भूक उन पर मुसल्लत़ हो गई। मैं ज़रूर उन के गोश्त को ज़मीन के लिये खाद बना दूंगा फिर उन की हड्डियां सूरज की रोशनी में बिग़ैर गोश्त के चमकती होंगी।"

हज़रते सय्यिदुना अरमिया عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ ख़ालिक़े काइनात ! ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ क्या तू इस क़ौम को हलाक और इस शहर को तबाहो बरबाद कर देगा ? हालांकि इस के मकीन तो तेरे ख़लील हज़रते सय्यिदुना

इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अवलाद, तेरे नबी ह़ज़रते मूसा व दावूद علیھما الصلوۃ والسلام की उम्मत और क़ौम में से हैं। मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जब तू ऐसी उम्मत को भी हलाक कर देगा तो फिर तेरी ख़ुफ़्या तदबीर से कौन मह़फ़ूज़ रहेगा। फिर कौन होगा जो तेरी नाफ़रमानी की जुरअत करेगा ?"

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने वह़ी फ़रमाई : "ऐ अरमिया ! मैं ने इब्राहीम व मूसा और दावूद को अपनी इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी की वजह से अ़ज़मत व बुज़ुर्गी से नवाज़ा। उन्हों ने येह बुलन्द मर्तबा मेरी इत़ाअ़त के ज़रीए ही ह़ासिल किया। बेशक पहले लोगों में भी ऐसे लोग थे जो मेरी नाफ़रमानी पर जरी (निडर) हुवे। अब तेरे ज़माने में भी नाफ़रमान लोग मौजूद हैं। उन्हों ने पहाड़ों की चोटियों, दरख़्तों के सायों और वादियों के दामन में मेरी नाफ़रमानी की तो मैं ने आस्मान को हुक्म दिया तो वोह उन पर लोहे की त़रह़ हो गया और ज़मीन को हुक्म दिया तो वोह तांबे की मानिन्द हो गई। फिर न उन पर आस्मान ने पानी बरसाया, न ज़मीन ने खेती उगाई। अगर बारिश होती थी तो फ़क़त़ इस वजह से कि मैं ने जानवरों पर रह़मो करम किया। और जब कभी ज़मीन ने फ़स्ल उगाई तो मैं ने फ़स्लों पर गर्दो ग़ुबार, तेज़ हवाएं और टिड्डियां मुसल्लत़ कर दीं जिन से उन की फ़स्लें तबाहो बरबाद हो गईं और जो थोड़ी बहुत फ़स्ल उन्हों ने काट कर घरों में रखी तो मैं ने उस से बरकत उठा ली, उन्हों ने मेरी राह को छोड़ दिया तो मैं भी न तो उन की पुकार सुनूंगा और न ही उन की मदद करूंगा।" (الامان و الحفیظ !)

(**अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त हम सब को अपने क़हरो ग़ज़ब से मह़फ़ूज़ रखे। अपनी दाइमी रिज़ा अ़त़ा फ़रमाए और अपने रह़्मो करम के साए में हमेशा अम्नो अमान से रखे।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 393 ह़ज़रते सुलैमान तमीमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का दिल नशीन कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन नसीबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने सख़्त गर्मियों की आग बरसाती दोपहर में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान तमीमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को देखा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी पेशानी से पसीना साफ़ करते हुवे फ़रमा रहे थे : "जब मह़ब्बत सच्ची व मुस्तह़कम हो तो गर्मी को दूर कर देती है। बेशक **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने मुह़िब्बीन के दिलों को गर्मी व सर्दी बरदाश्त करने की कुव्वत अ़त़ा फ़रमा कर इन की शिद्दत से मह़फ़ूज़ रखता है। उन के दिलों में मह़ब्बत की जो ठन्डक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने डाली है वोह उस से सुरूर पाते हैं। हर वक़्त उस की मह़ब्बत में गुम रहना और गिड़ गिड़ा कर रोना उन का मा'मूल होता है।"

येह कह कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची और फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में गुम रहने वाले ख़ुश बख़्त लोग हमेशा मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ की

लज़्ज़त से मसरूर रहते और उसी ह़ालत में इस दारे फ़ानी से दारे उ़क़्बा की त़रफ़ कूच कर जाते हैं। हाए ! कितना उ़म्दा है वोह मरज़ जिस की दवा मा'लूम न हो।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक ज़ोरदार चीख़ मार कर फ़रमाया : "उन पाकीज़ा सिफ़ात लोगों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इख़्लास वाला मुआ़मला रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी उन पर मह़ब्बत व करम की ख़ूब बरसात फ़रमाई। आह ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मुह़िब्बीन पर जूदो करम की बारिश बरसाता है लोग अगर उस की इन्तिहाई क़लील मिक़्दार को भी जान लेते तो ह़सरत से मर जाते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मुह़िब्बीन को जो सआ़दतें अ़त़ा फ़रमाता है कोई उस का अन्दाज़ा नहीं कर सकता।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हि़कायत नम्बर : 394

कफ़न चोर की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ फ़ज़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "एक शख़्स अकषर हमारी मह़फ़िल में आया करता था मगर उस का आधा चेहरा हमेशा छुपा रहता। एक मरतबा मैं ने उस से पूछा : "तुम अपना आधा चेहरा छुपाए रखते हो, इस की क्या वजह है ? मुझे इस राज़ से आगाह करो।"

उस ने कहा : "अगर आप अमान अ़त़ा फ़रमाएं तो मैं अपना मुआ़मला बताता हूं।" मैं ने कहा : "बताओ ! अस्ल मुआ़मला क्या है ?" इजाज़त मिलने पर उस ने अपनी दास्ताने इ़ब्रत निशान कुछ इस त़रह़ सुनाई : "मैं कफ़न चोर था , मैं ने कई क़ब्रों से कफ़न चुराए। जब भी किसी नई क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम होता फ़ौरन वहां पहुंच कर कफ़न चुरा लाता। एक मरतबा एक औ़रत का इन्तिक़ाल हुवा जब उसे दफ़्ना दिया गया तो मैं रात को क़ब्रिस्तान पहुंचा और क़ब्र खोदना शुरूअ़ की। जब ईंटें हटा कर कफ़न की एक चादर निकाली और दूसरी चादर खींचने लगा तो अचानक उस औ़रत के बेजान जिस्म ने ह़रकत की और चादर को थाम लिया। मैं ने कहा : "तुम्हारा क्या ख़याल है कि तुम मुझ पर ग़ालिब आ जाओगी ? ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता।" येह कह कर मैं घुंटनों के बल बैठ गया और पूरी क़ुव्वत से कफ़न खींचने लगा। यका यक औ़रत ने एक ज़ोरदार थप्पड़ मेरे चेहरे पर मारा। दर्द की शिद्दत से मैं बे क़रार हो गया और मेरे चेहरे पर बहुत ज़ियादा जलन होने लगी।" येह कह कर उस कफ़न चोर ने अपने चेहरे से कपड़ा हटाया तो उस के गाल पर उंगलियों के निशान बिल्कुल वाज़ेह़ थे मैं ने कहा : "अच्छा फिर क्या हुवा ?" कहा : "फिर मैं ने चादर वापस उस औ़रत पर डाल दी और जल्दी जल्दी क़ब्र पर मिट्टी डाल कर बराबर कर दिया और पुख़्ता इरादा किया कि जब तक ज़िन्दा रहूंगा कभी भी कफ़न नहीं चुराऊंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे साबिक़ा गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाए और मुझे तौबा पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ फ़ज़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : "उस कफ़न चोर का सारा वाक़िआ़ लिख कर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ रवाना किया।

उन्हों ने येह जवाब लिख कर भेजा : "तेरा भला हो उस से पूछ ! जो मुसलमान क़िब्ला रू दफ़नाए गए क्या सब के चेहरे क़िब्ला सम्त ही थे या क़िब्ले से फिर चुके थे ।" मैं ने कफ़न चोर से जब येह सुवाल किया तो उस ने कहा : "मैं ने जिन लोगों के कफ़न चुराए उन में से अकषर के चेहरे क़िब्ले से फिर चुके थे ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : "मैं ने येह बात लिख कर इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में भेजी तो उन्हों ने जवाबन येह तह़रीर भिजवाई : "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ऐ इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق जिन लोगों के चेहरे क़िब्ले से फिर चुके थे उन का ख़ातिमा सुन्नत पर नहीं हुवा ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे, हमारा ख़ातिमा ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर फ़रमाए । (آمين بجاه النبى الامين صلى الله عليه وسلم)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस दास्ताने इ़ब्रत निशान में हमारे लिये इ़ब्रत के बेशुमार मदनी फूल हैं । कितना तश्वीश नाक मुआ़मला है कि जो लोग सुन्नतों से मुंह मोड़ लेते हैं, अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल पैरा नहीं होते और दुन्या को दीन पर तरजीह़ देते हैं उन के साथ क़ब्र में इन्तिहाई वह़शत नाक मुआ़मला होता है । क़ब्रो आख़िरत में लम्ह़ा भर का अ़ज़ाब भी बरदाश्त से बाहर है । हमारे नाज़ुक जिस्म जहन्नम की भड़कती हुई दिलों तक पहुंचने वाली सख़्त आग का सामना नहीं कर सकते । अगर इसी त़रह़ ग़फ़्लत व मा'सिय्यत भरी ज़िन्दगी गुज़ारते रहे और इसी ह़ालते बद में पैग़ामे अजल आ पहुंचा तो बहुत ज़िल्लत व रुस्वाई और दर्दनाक अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा । झट पट अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये और रो रो कर ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांग लीजिये । मोमिनों पर रह़मो करम फ़रमाने वाले नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को अपना कर उन के दामने करम से वाबस्ता हो जाइये । दुरूदो सलाम की कषरत कीजिये और इ़बादत व रियाज़त की त़रफ़ राग़िब हो जाइये ।

आ़सियो ! थाम लो दामन उन का — वोह नहीं हाथ झटकने वाले

ह़िकायत नम्बर : 395

कनीज़ का इ़ल्मी मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "एक मरतबा दौराने त़वाफ़ अचानक एक नूर ज़ाहिर हुवा जो आस्मान तक बुलन्द था । मैं उस मन्ज़र को देख कर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा । त़वाफ़ मुकम्मल कर के उस नूर के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करने लगा । यका यक एक दर्दनाक व ग़मगीन आवाज़ सुनाई दी, मैं ने उस सम्त रुख़ किया तो एक कनीज़ ख़ानए का'बा का ग़िलाफ़ थामे चन्द अश्आ़र पढ़ रही थी जिन का मफ़्हूम येह है : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि तू ही मेरा मह़बूब है । एक साल और गुज़र गया, मेरा जिस्म और आंसू मेरे राज़ पर नौह़ा करते हैं । ऐ मेरे मह़बूब ! मैं ने अब तक मह़ब्बत को छुपाए रखा । अब मैं आ़जिज़ आ गई हूं ।"

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उस की दर्दभरी फ़रयाद ने मेरा दिल ग़मगीन कर दिया । मेरी आंखों से बे इख़्तियार आंसू बहने लगे । वोह फिर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में मुल्तजी हुई : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तुझे उस महब्बत का वासिता जो तू मुझ से करता है मुझे बख़्श दे । मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दे ।"

वोह मुसलसल इसी जुम्ले का तकरार कर रही थी । मुझे येह बात बहुत बड़ी मा'लूम हुई, मैं ने उस से कहा : "तू जो इतनी बड़ी बात कह रही है कि "उस महब्बत का वासिता जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से करता है ।" क्या तुझे येह काफ़ी नहीं था कि तू इस तरह कहती, "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे तुझ से जो महब्बत है उस का वासिता ।" कहा : "ऐ ज़ुन्नून رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुझ से दूर हो जा, क्या तू नहीं जानता कि कुछ लोग ऐसे भी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के महब्बत करने से पहले ही उन से महब्बत करता है ? क्या तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना ?" "فَسَوْفَ يَاْتِی اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ (پ٦،المآئدة:٥٤) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो अ़न क़रीब अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वोह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उन का प्यारा ।" देखो ! इस आयते मुबारका में पहले, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन से महब्बत का ज़िक्र हुवा बा'द में उन की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत का ज़िक्र हुवा ।" हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "कनीज़ का इल्मी मक़ाम देख कर मैं ने पूछा : "तुझे कैसे मा'लूम हुवा कि मैं ज़ुन्नून मिस्री हूं ?"

कहा : "ऐ ज़ुन्नून ! दिल, रुमूज़ो अस्रार के मैदान में घूमते रहते हैं । मैं ने ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त की बदौलत तुझे पहचाना । अब ज़रा पीछे की जानिब देखो ।" मैं ने पीछे देखा तो कुछ भी न था । जब दोबारा उस की त़रफ़ नज़र की तो वोह वहां मौजूद न थी । न जाने उसे ज़मीन निगल गई या आस्मान खा गया । मैं ने उसे ख़ूब तलाश किया मगर वोह कहीं नज़र न आई ।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 396 महब्बत का लिबास

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबू ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं मौसिमे सर्मा में हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के हमराह सफ़रे ह़ज पर था । सर्दी से जिस्म अकड़ा जा रहा था और बहुत मोटा लिबास पहनने के बा वुजूद सर्दी की शिद्दत से जिस्म कपकपा रहा था । जब खाने के लिये एक जगह क़ियाम किया तो मा'लूम हुवा कि सामान का थैला रास्ते में कहीं गिर गया है । मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی को बताया तो उन्हों ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह इल्तिजा की :

اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ وَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ ऐ गुमशुदा चीज़ों को लौटाने वाले ! ऐ गुमराहियों से बचा कर हिदायत देने वाले ! हमारा गुमशुदा सामान हमें लौटा दे ।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अभी अपनी मुनाजात ख़त्म भी न कर पाए थे कि यका यक किसी मुनादी की निदा सुनाई दी : "क्या किसी का थैला गुम

हुवा है ?" मैं ने सुना तो अपना थैला ले लिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "हमारा रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमें ऐसी ह़ालत में नहीं छोड़ेगा कि हम पानी से मह़रूम रहें, वोह हमें प्यासा नहीं रखेगा।" हम खाना वग़ैरा खा कर अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ चल दिये। रास्ते में एक ऐसा शख़्स मिला कि जिस ने आ़म सा बारीक लिबास पहना हुवा था। इन्तिहाई गर्म लिबास में भी हम पर कपकपाहट त़ारी थी मगर उस के जिस्म पर पसीना नुमूदार हो रहा था। हम बड़े ह़ैरान हुवे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से कहा : "अगर तुम क़बूल करो तो हम तुम्हें गर्म लिबास और चादरें पेश करें ?"

उस ने कहा : "ऐ दारानी ! सर्दी और गर्मी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ हैं। अगर वोह ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ उन्हें हुक्म देगा कि वोह मुझ पर छा जाएं तो वोह ज़रूर मुझ तक पहुंच कर रहेंगी और अगर हुक्म फ़रमाएगा कि वोह मुझे छोड़ दें तो ज़रूर मुझ से दूर रहेंगी।" ऐ अबू सुलैमान दारानी ! तुम ज़ाहिद मश्हूर हो, फिर भी सर्दी से ख़ौफ़ ज़दा हो ? मैं इस जंगल में तक़रीबन तीस (30) साल से रह रहा हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ न तो मुझ पर कभी लर्ज़ा त़ारी हुवा और न ही मैं कभी सर्दी की शिद्दत से कांपा। मेरा पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ सर्दियों में मुझे अपनी मह़ब्बत का गर्म और गर्मियों में अपनी मह़ब्बत की ठन्डक का सर्द लिबास पहनाता है।" फिर वोह येह कहते हुवे वापस पलट गया : "ऐ अबू सुलैमान दारानी ! तुम रोते और चीख़ते भी हो और आराम देह चीज़ों से सुकून भी ह़ासिल करते हो ! तुम्हारा भी बड़ा अ़जीब मुआ़मला है।"

उस अजनबी आ़रिफ़ की येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने फ़रमाया : "इस शख़्स के इ़लावा मुझे किसी ने नहीं पहचाना।"

*(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه وسلم)*

ह़िकायत नम्बर : 397 अहले सुन्नत पर करमे ख़ुदावन्दी की बरसात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मरवैह सफ़्फ़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار जो कि **इब्ने अ़लम** के नाम से जाने जाते हैं, का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते मुह़म्मद बिन नस्र साइग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह फ़रमाते सुना : "मेरे वालिदे मोह़तरम नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के बहुत दिलदादह (या'नी शौक़ीन) थे। जानने वाले हों या अन्जान सब के जनाज़ों में शरीक होते। उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ मेरे लख़्ते जिगर ! एक मरतबा मैं कुछ ज़रूरी सामान ख़रीदने बाज़ार गया तो एक जनाज़ा देखा जिस के साथ बहुत हुजूम था। मैं भी लोगों के साथ शामिल हो गया, उन में से कोई भी मेरा जानने वाला न था, सब अजनबी मा'लूम हो रहे थे। नमाज़े जनाज़ा अदा करने के बा'द हम क़ब्रिस्तान गए। जब मय्यित को क़ब्र में उतारा जा रहा था तो मैं ने दो आदमियों को क़ब्र में उतरते देखा एक तो बाहर निकल आया मगर दूसरा क़ब्र ही में रह गया।" लोग जब वापस जाने लगे तो मैं ने पुकार कर कहा : "ऐ मेरे भाइयो ! मय्यित के साथ एक ज़िन्दा शख़्स भी दफ़्ना दिया गया

है।" लोगों ने कहा : "येह तुम्हारा वहम है वरना ऐसी कोई बात नहीं।" मैं ने भी उसे अपना वहम समझा और वापस पलट आया। फिर सोचा कि मैं ने अपनी जीती जागती आंखों से ख़ुद दो आदमी क़ब्र में उतरते देखे जिन में से एक तो निकल आया मगर दूसरा क़ब्र ही में मौजूद है। अब मैं क़ब्र के पास ही मौजूद रहूंगा यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह राज़ मुन्क़शिफ़ फ़रमा दे। चुनान्चे, मैं दोबारा क़ब्र के पास आया। दस-दस मरतबा सूरए यासीन और सूरए मुल्क की तिलावत की, फिर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ के लिये हाथ बुलन्द किये और रोते हुवे यूं इल्तिजा की :

"ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जो कुछ मैं ने देखा उस का राज़ मुझ पर मुन्कशिफ़ फ़रमा। बेशक ! मैं अपने दीन और अ़क़्ल के ज़ाइल होने से ख़ौफ़ज़दा हूं, ऐ परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ मुझ पर येह राज़ मुन्कशिफ़ फ़रमा दे।" अभी मैं मसरूफ़े इल्तिजा ही था कि अचानक क़ब्र शक़ हुई और उस में से एक शख़्स निकल कर एक जानिब चल दिया। मैं उस के पीछे दौड़ा और कहा : "ऐ शख़्स ! तुझे तेरे मा'बूद का वासित़ा ! रुक जा और मेरे सुवाल का जवाब दे।" लेकिन उस ने मेरी त़रफ़ तवज्जोह न दी और मुसलसल चलता ही रहा, दूसरी और तीसरी मरतबा भी ऐसा ही हुवा मैं ने फिर पुकार कर कहा : "ऐ शख़्स ! मैं तेरी रफ़्तार का मुक़ाबला नहीं कर सकता, तुझे तेरे मा'बूद की क़सम ! रुक कर मेरे सुवाल का जवाब दे।" इस मरतबा वोह मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहा : "क्या तुम ही नस्र सायिग़ हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं ही नस्र सायिग़ हूं।" कहा : "क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ? मैं ने कहा : "नहीं।" कहा : "हम रह़मत के फ़िरिश्ते हैं। हमारे ज़िम्मे येह काम है कि अहले सुन्नत में से जब भी कोई फ़ौत होता है और उसे क़ब्र में रखा जाता है तो हम उस की क़ब्र में उतर कर उसे हुज्जत (या'नी दलील) की तल्क़ीन करते हैं।" इतना कह कर वोह शख़्स ग़ाइब हो गया।

जो सीने को मदीना उन की यादों से बनाते हैं वोही तो ज़िन्दगानी का ह़क़ीक़ी लुत्फ़ उठाते हैं
जो अपनी ज़िन्दगी में सुन्नतें उन की सजाते हैं उन्हें मह़बूब मीठे मुस्त़फ़ा ﷺ अपना बनाते हैं

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين ﷺ}

ह़िकायत नम्बर : 398 पूरी सल्त़नत की क़ीमत पानी का एक गिलास

मुह़म्मद बिन अ़म्र बिन ख़ालिद को उन के वालिद ने बताया : एक मरतबा ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيد ने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के आख़िर में ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق को अपने पास बुलवाया, जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه शाही दरबार में पहुंचे तो यह़्या बिन ख़ालिद ने कहा : "क्या आप जानते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन ने आप को क्यूं बुलवाया है ?" फ़रमाया : "मुझे नहीं मा'लूम।" यह़्या ने कहा : "अमीरुल मोअमिनीन तक आप के मुतअ़ल्लिक़ येह ख़बर पहुंची है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه हर आ़म व ख़ास के लिये बहुत अच्छी दुआ़ फ़रमाते हैं। इसी लिये आप को बुलाया गया है।"

फ़रमाया : "अमीरुल मोअमिनीन को मेरे मुतअ़ल्लिक़ जो बात पहुंची है वोह सिर्फ़ इस लिये है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी पर्दा पोशी फ़रमाई। अगर मेरा सत्तार व ग़फ़्फ़ार परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरी पर्दा पोशी न फ़रमाता तो मुझे इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत का लिबास न मिलता। ऐ अमीरल मोअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे उ़यूब पर पर्दा डाल रखा है। इसी पर्दा पोशी ने मुझे तुम्हारे सामने ला बिठाया है। ऐ अमीरल मोअमिनीन ! ब ख़ुदा ! मैं ने तुम से बढ़ कर कोई ह़सीन नहीं देखा। ख़ुदारा ! तुम अपने चेहरे को जहन्नम की आग में हरगिज़ न जलाना।" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق जैसे मुख़्लिस और ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले मुबल्लिग़ की ज़बानी येह ह़िक्मत भरी बातें सुन कर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد ने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरूअ़ कर दिया और काफ़ी देर तक रोते रहे। उन के पास पानी का पियाला लाया गया। जब उन्हों ने पीना चाहा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! पानी पीने से पहले मेरी एक बात सुन लीजिये।" ख़लीफ़ा रुक गया और कहा : "फ़रमाइये ! आप क्या कहना चाहते है।" फ़रमाया : "अगर येह पानी का पियाला आप से रोक दिया जाए और इस क़ीमत पर दिया जाए कि आप दुन्या और जो कुछ इस में है सब कुछ दे दें, तो आप क्या करेंगे ?" अमीरुल मोअमिनीन ने कहा : "मैं सब कुछ दे कर पानी ह़ासिल करूंगा।" फ़रमाया : "अच्छा अब पानी पी लो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बरकतें अ़ता फ़रमाए।" जब अमीरुल मोअमिनीन पानी पी चुके तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर येह पानी आप के जिस्म से बाहर न निकले और पेशाब बन्द हो जाए तो क्या इस मरज़ से नजात पाने के लिये आप सारी दुन्या मअ़ साज़ो सामान फ़िदया देने को तय्यार हो जाएंगे ?" कहा : "हां ! मैं सारी सल्त़नत दे कर भी अपना इलाज कराऊंगा।" फ़रमाया : "ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! उस चीज़ पर क्या इतराना जिस से पानी का एक पियाला भी बेहतर है।"

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد ने जब फ़िक्रे आख़िरत दिलाने वाला येह जुम्ला सुना तो रोने लगे फिर येह रोना बढ़ता ही गया। यह़्या बिन ख़ालिद ने कहा : "ऐ इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق आप ने अमीरुल मोअमिनीन को तक्लीफ़ में मुब्तला कर दिया है।" फ़रमाया : "ऐ यह़्या ! ख़बरदार ! अपने आप को बचाना ! कहीं दुन्या का ऐ़शो आराम तुम्हें धोके में न डाल दे।" येह कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वापस चले आए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! दुन्या की चन्द रोज़ा फ़ानी ज़िन्दगी पर क्या इतराना, इस की रंगीनियां और बहारें बहुत जल्द ख़त्म होने वाली है। दुन्या बड़ी बे वफ़ा है, येह किसी के साथ वफ़ा नहीं करती। जिस ने भी दुन्या की ह़क़ीर दौलत से दिल लगाया वोह ह़क़ीक़ी सुकून व आराम की दौलत से मह़रूम ही रहा। अ़क़्ल मन्द व समझदार वोही है जो दुन्या में रहते हुवे इस की तबाहकारियों से अपने आप को बचाए और हमा वक़्त आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहे और

ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करे जिन के दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शम्अ़ फ़िरोज़ां है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चन्द ही दिनों में सुकूने क़ल्बी की दौलत नसीब हो जाएगी।)

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद ﷺ मुस्कुराते जाएंगे फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे
ख़ुल्द में होगा हमारा दाख़िला इस शान से या रसूलल्लाह ﷺ का नारा लगाते जाएंगे

ह़िकायत नम्बर : 399

उम्मते मुह़म्मदिय्या के पांच त़बक़े

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन इस्ह़ाक़ नैशापूरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन वाज़ेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह फ़रमाते सुना : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुबारक सूरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के साथ **"मुल्के रूम"** की त़रफ़ जा रहा था, रास्ते में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ऐ मुसय्यब ! आ़म लोग फ़साद में मुब्तला नहीं होते मगर ख़वास की वजह से।" मैं ने कहा : "ह़ुज़ूर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, इस क़ौल की वज़ाह़त फ़रमा दें कि ऐसा क्यूं होता है ?" फ़रमाया : "इस की वजह येह है कि उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पांच त़बक़ों पर मुश्तमिल है। पहला त़बक़ा उ़-लमाए किराम का, दूसरा आ़बिदों और ज़ाहिदों का, तीसरा ग़ाज़ियों का, चौथा ताजिरों का जब कि पांचवें त़बक़े में ह़ाकिम व क़ाज़ी शामिल हैं। उ़-लमाए किराम तो अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام के वारिष हैं। आ़बिदो ज़ाहिद, उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बादशाह हैं। ग़ाज़ी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपाही व लश्कर हैं। ताजिर, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ख़ज़ान्ची हैं। रहे वाली व ह़ुक्मरान तो वोह मुह़ाफ़िज़ व निगरान हैं। और जब आ़लिम ही लालची और माल जम्अ़ करने वाला हो जाए तो जाहिल किस की पैरवी करें ? आ़बिदो ज़ाहिद दुन्या की त़रफ़ राग़िब हो जाए तो ताइब किस की इक़्तिदा करें ? जब ग़ाज़ी व मुजाहिद ही रू रिआ़यत और नर्मी से काम लेंगे तो दुश्मन पर ग़लबा कैसे पा सकेंगे ? ताजिर जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ान्ची हैं वोह ख़ुद ही ख़ाइन हो जाएं तो फिर कौन है जो ख़ाइन पर ए'तिमाद करेगा ? अगर रिआ़या की ह़िफ़ाज़त करने वाले ह़ाकिम व निगरान और मुह़ाफ़िज़ ही ख़ुद भेड़िये बन जाएं तो रिआ़या की देख भाल और इन की ह़िफ़ाज़त कौन करेगा ?"

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे और दीने मतीन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। ख़ुदा करे कि हमारी वजह से किसी मुसलमान को तक्लीफ़ न पहुंचे, हमारे हाथ व ज़बान से तमाम मुसलमान मह़फ़ूज़ रहें। हम लोगों के बदख़्वाह न हों बल्कि ख़ैर ख़्वाह हों। ख़ुश बख़्त हैं वोह लोग जो अपने मुसलमान भाइयों की ख़िदमत कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के त़ालिब होते हैं। ऐसों को क़ल्बी सुकून और ह़क़ीक़ी सुरूर नसीब होता है किसी के साथ ख़ैर ख़्वाही कर के इन्सान को एक अ़जीब सी ख़ुशी और इत़्मीनान ह़ासिल होता है। येह बात तो बिल्कुल वाज़ेह़ है कि जो दूसरों के साथ भलाई करते हैं, उन के साथ भी भलाई ही का मुआ़मला होता है।)

औरों के लिये रखते हैं जो प्यार का जज़्बा वोह लोग कभी टूट के बिखरा नहीं करते

हिकायत नम्बर : 400 हज़रते इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم और महब्बते इलाही

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : एक रोज़ मुझे इतना इत़्मीनान व सुकून नसीब हुवा कि कैफ़ो सुरूर की इस कैफ़िय्यत ने मुझे शादां व फ़रहां कर दिया। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इस अ़ज़ीम अ़त़ा पर मेरा दिल बाग़ बाग़ हो गया। मैं ने बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अगर तू ने अपने मुहि़ब्बीन में से किसी को भी कोई ऐसी शै अ़त़ा फ़रमाई है जो तेरी मुलाक़ात से क़ब्ल उसे आराम व सुकून पहुंचाए तो मुझे भी उस खुशी में से कुछ अ़त़ा फ़रमा दे। मेरा दिल इस का बहुत मुश्ताक़ है। इस खुशी ने मुझे बेताब कर दिया है।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जैसे ही मैं दुआ़ से फ़ारिग़ हुवा, मुझे नींद आ गई। मैं ख़्वाब में अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के जल्वों से मुशर्रफ़ हुवा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने दरबार में बुला कर फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! क्या तुझे मुझ से ह़या नहीं आती कि मेरी मुलाक़ात से क़ब्ल ही किसी ऐसी शै का त़ालिब है जो तेरे दिल को इत़्मीनान व सुकून दे ? ऐ इब्राहीम ! क्या किसी आ़शिक़ का दिल अपने मह़बूब के इ़लावा भी किसी चीज़ को चाहता है ? कोई मुहि़ब्ब अपने मह़बूब के इ़लावा किसी और शै से चैन व सुकून पाता है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं सिर्फ़ तेरा ही मुश्ताक़ हूं और तेरी ही मह़ब्बत में मुस्तग़्रक़ हूं लेकिन मांगने का अन्दाज़ नहीं जानता, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ मेरी इस ख़त़ा को मुआ़फ़ फ़रमा कर मांगने का सलीक़ा सिखा दे।"

इरशाद हुवा : ऐ इब्राहीम ! इस त़रह़ कह ! "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने फ़ैसले पर राज़ी रख। तेरी त़रफ़ से जो आज़्माइशें आएं उन पर सब्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, ने'मतों पर शुक्र करने वाला बना। ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तेरी दाइमी ने'मत और अबदी आ़फ़िय्यत का त़लबगार हूं। मेरे क़रीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी मह़ब्बत पर षाबित क़दमी अ़त़ा फ़रमा और इस मह़ब्बत को हमेशा बाक़ी रख।"

मानिन्दे शम्अ़ तेरी त़रफ़ लौ लगी रहे — दे लुत़्फ़ मेरी जान को सोज़ो गुदाज़ का
क्यूं कर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन — बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

(ऐ हमारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी मह़ब्बत की लाज़वाल दौलत से सरफ़राज़ फ़रमा और हर घड़ी अपनी याद में गुम रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 401 शैत़ान को कमज़ोर करने वाले लोग

हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मुह़म्मद सर्राज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب से मन्क़ूल है : मैं ने हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى को येह फ़रमाते सुना : एक मरतबा मैं ने ख़्वाब में इब्लीसे लईन को बिल्कुल बरहना देखा तो उस बे शर्म से कहा : "क्या तुझे लोगों से ह़या नहीं आती ?" शैत़ान ने कहा : "ब खुदा येह जो आप के नज़्दीक इन्सान मौजूद हैं येह इन्सान कहां ? अगर येह इन्सान

होते तो मैं इन से इस तरह न खेलता जिस तरह बच्चे गेंद से खेलते हैं। इन्सान ऐसे नहीं होते।'' मैं ने कहा : ''तू किन लोगों को इन्सान समझता है ?'' बोला : ''वोह जो मस्जिदे शूनीज़ी में हैं, उन्हों ने मेरे दिल को ग़म में मुब्तला कर रखा है और मेरे जिस्म को इन्तिहाई कमज़ोर कर दिया है। मैं जब भी उन्हें बहकाने का इरादा करता हूं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद तलब करते हैं और मैं जलने लगता हूं।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब मेरी आंख खुली तो अभी काफ़ी रात बाक़ी थी। मैं फ़ौरन लिबास तब्दील कर के मस्जिदे शूनीज़ी पहुंचा तो वहां तीन आदमियों को सर पर चादर डाले मस्जिद के सहन में बैठे देखा। जब उन्हों ने महसूस किया कि मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा हूं तो एक ने अपना सर चादर से बाहर निकाला और फ़रमाया : ''ऐ अबल क़ासिम ! तू वोही है कि जब भी तुझ से कोई बात कही जाए तो उसे क़बूल कर लेता है।''

हज़रते इब्ने जहज़म फ़रमाते हैं : मुझे अबू अब्दुल्लाह बिन जब्बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने बताया कि तीन शख़्स जो ''मस्जिदे शूनीज़ी'' में थे, वोह अबू हम्ज़ा, अबुल हुसैन षौरी और अबू बक्र दक़्क़ाक़ عليهم رحمة الله الرزّاق थे।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रहमत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।* آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

हिकायत नम्बर : 402 हिक्मत व दानाई की बातें

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین से मन्क़ूल है : मैं ने हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को येह फ़रमाते सुना : ''मुझे एक मग़रिबी के मुतअ़ल्लिक़ बताया गया कि वोह बहुत हिक्मत व दानाई की बातें करने वाला मर्दे सादिक़ है।'' इस ख़बर ने मुझे उस की मुलाक़ात पर उभारा। मैं ने रख़्ते सफ़र बांधा और मतलूबा मन्ज़िल की जानिब चल पड़ा, वहां पहुंच कर उन के दरवाज़े पर तक़रीबन चालीस (40) दिन तक ठहरा रहा। वोह नमाज़ के वक़्त घर से निकलते और नमाज़ पढ़ कर वापस चले आते। किसी की तरफ़ मुतवज्जेह न होते। एक दिन मैं ने उन से कहा : ''ऐ बन्दए ख़ुदा ! मैं चालीस दिन से आप के दरवाज़े पर ठहरा हुवा हूं लेकिन आप ने एक मरतबा भी मुझ से गुफ़्तगू नहीं की।

उस ने कहा : ''ऐ मेरे भाई ! मेरी ज़बान ख़ूं ख़्वार दरिन्दा है। अगर मैं इसे छोड़ दूंगा तो येह मुझे खा जाएगी।'' मैं ने कहा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! मुझे कुछ नसीहत करो ताकि मैं इसे याद कर लूं।'' कहा : ''क्या तुम ऐसा कर सकोगे ?'' मैं ने कहा : ''اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ।'' फ़रमाया : ''सुनो ! दुन्या से महब्बत न करो। फ़क़्र को ग़ना समझो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़

से आने वाली आज़्माइश को ने'मत जानो, अगर उस की त़रफ़ से कुछ न मिले तो उस न मिलने को अ़ता समझो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का साथ होते हुवे तन्हाई भी उन्स है। ऐ भाई ! ज़िल्लत को इ़ज़्ज़त जानो। ज़िन्दगी को मौत समझो। इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी को पेशा और तवक्कुल को मुआ़श समझो। बखुदा ! हर शिद्दत के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है।" इतना कह कर वोह शख़्स चला गया। फिर एक माह तक उस ने मुझ से कलाम न किया। मैं ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! अब मैं अपने वत़न वापस जाना चाहता हूं अगर मुनासिब समझो तो मज़ीद कुछ नसीह़त करो।" कहा : "जान लो ! बेशक ज़ाहिद (या'नी दुन्या को छोड़ने वाला) वोह है कि उसे जो मिले उसी पर गुज़ारा करे। जहां चाहे रहे। उस का लिबास इतना ही हो जो सित्र पोशी का काम दे सके। तन्हाई उस की मजलिस और तिलावते क़ुरआन उस का मश्ग़ला हो। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उस का मह़बूब, ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ उस की ग़िज़ा, ख़ामोशी उस की जन्नत, ख़ौफ़ उस की आ़दत व फ़ित़रत, शौक़ उस का मत़लूब, नसीह़त उस की हिम्मत और उस का ग़ौरो फ़िक्र इ़ब्रत, सब्र उस का तकया और सिद्दीक़ीन उस के भाई हों। उस का कलाम ह़िक्मत, अ़क़्ल उस की दलील, ह़िल्म उस का दोस्त, भूक उस का सालन और आहो ज़ारी उस की आ़दत होती है और उस का मत़लूब व मक़्सूद सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ज़ात होती है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : "उस की येह ह़िक्मत भरी आ़रिफ़ाना बातें सुन कर मैं ने उस से पूछा : "इन्सान अपनी ग़लत़ियों और नुक़्सान पर कब मुत्तलअ़ होता है ?" फ़रमाया : "जब वोह अपने नफ़्स का मुह़ासबा करने वाले लोगों के पास बैठेगा तो अपनी ग़लत़ियों और कोताहियों से ख़ूब वाक़िफ़ हो जाएगा।" इतना कह कर वोह ह़कीम व दाना शख़्स अपने घर में दाख़िल हो गया।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 403 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الكَافِی के नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिष ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الكَافِی के भांजे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है, मुझे मेरी वालिदा ने बताया : एक मरतबा किसी ने हमारा दरवाज़ा खट खटाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الكَافِی ने पूछा : "कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "मैं बिशर عَلَيْهِ رَحْمَة से मिलना चाहता हूं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस के पास गए और कहा : "अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हें अपनी ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे। क्या तुम्हें कोई ह़ाजत है ?" उस ने कहा : "क्या आप ही बिशर हैं ?" फ़रमाया : "हां ! मैं ही बिशर हूं, बताओ ! क्या काम है ?" कहा : "आज रात मैं ने ख़्वाब में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का दीदार किया, मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से फ़रमाया : "बिशर के पास जाओ और उस से कहो, "अगर तुम अंगारों पर

भी सजदा करो तब भी जो इ़ज़्ज़त व शोहरत और मक़ाम व मर्तबा लोगों के दरमियान तुम्हें अ़त़ा किया गया और जो ने'मतें तुम्हारे लिये तय्यार की गई हैं उन का शुक्र अदा नहीं कर सकते।'' आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''क्या वाक़ेई तुम ने येह ख़्वाब देखा है ?'' कहा : ''जी हां ! मैं मुसलसल दो रातों से येही ख़्वाब देख रहा हूं।'' फ़रमाया : ''ऐ शख़्स ! किसी और को इस ख़्वाब के मुतअ़ल्लिक़ हरगिज़ कुछ न बताना।'' येह कह कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे रुख़्सत कर दिया और वापस आ कर अपना मुंह क़िब्ले की जानिब करते हुवे ज़ोर ज़ोर से रोना शुरूअ़ कर दिया और बड़ी बेचैनी के आ़लम में येह दुआ़ करने लगे :

''ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू ने दुन्या में मुझे जो इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई है, मेरा नाम लोगों में बुलन्द किया है, और मेरे मर्तबे को रिफ़्अ़त अ़त़ा फ़रमाई है अगर येह दुन्यवी आसाइशें इस लिये हैं कि बरोज़े क़ियामत तू मुझे रुस्वा करेगा, तो मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ मुझे अभी मौत दे दे और मुझ से मेरे आ'ज़ा की क़ुदरत व त़ाक़त छीन ले।''

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हि़कायत नम्बर : 404 जन्नते अ़दन की बादशाहत

ह़ज़रते सय्यिदुना वाहि़दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मन्क़ूल है कि एक मरतबा बा'द नमाज़े अ़स्र मैं अपने चचा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने रय्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان के पास उन की मस्जिद में ह़ाज़िर था। इतने में एक मे'मार आया। उसे देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने रय्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان ने फ़रमाया : ''ऐ अबल ह़सन ! इस वक़्त आने का कोई ख़ास मक़्सद ?'' अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! मैं चाहता हूं कि आज रात आप के हां क़ियाम करूं।'' मुझे चचा ने फ़रमाया : ''जाओ ! घर में कुछ गन्दुम मौजूद है, कनीज़ से कहो इसे पीस कर आटा बना ले।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''चचा जान ! इस को कब गूंधा और पकाया जाएगा ?'' फ़रमाया : ''जाओ ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त आसानी फ़रमाएगा।''

मैं ने कनीज़ को आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का हुक्म सुनाया तो उस ने गन्दुम पीस कर आटा गूंधा और मग़रिब से पहले ही दो रोटियां तय्यार कर दीं। हम ने नमाज़ अदा की और घर आ गए। एक रोटी चचा जान ने ली और दूसरी उस मेहमान को दे दी। जब दोनों खाना खा चुके तो रात गए तक आपस में गुफ़्त्गू करते रहे। फिर इ़शा की नमाज़ पढ़ी और मज़ीद नवाफ़िल पढ़ने के लिये खड़े हो गए तो मेहमान ने कहा : ''हुज़ूर ! मैं जिस मक़्सद के लिये आप के पास ह़ाज़िर हुवा हूं, वोह सुन लें ताकि मैं चला जाऊं और आप की इ़बादत में रुकावट न बनूं। सुनिये ! मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई कहने वाला मुझ से कह रहा था : तुम इब्ने रय्यान के पास जाओ और उस से कहो ''तुम्हारे सामने अमारत व हुकूमत पेश की गई लेकिन तुम ने उसे ठुकरा दिया, मुझे मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तुम्हें जन्नते अ़दन की बादशाहत व हुक्मरानी अ़त़ा फ़रमाऊंगा।'' येह सुन कर ह़ज़रते

सय्यिदुना इब्ने रय्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان ने ज़ारो क़ितार रोना शुरूअ़ कर दिया । और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है करता है ।"

सच है इन्सान को कुछ खो के मिला करता है   आप को खो के तुझे पाएगा जोया तेरा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 405

अमीर की सख़ावत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़स्सान ज़ियादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى का बयान है : एक दिन मैं मस्जिद में था कि बहुत तेज़ बारिश हुई, अचानक मुझे वहां एक शख़्स नज़र आया जो बहुत परेशान लग रहा था । जब मैं नीचे देखता तो वोह मेरी जानिब देखने लग जाता फिर जब मैं उसे देखता तो वोह गर्दन झुका लेता । ऐसा कई मरतबा हुवा । बिल आख़िर मैं ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा : "भाई ! तुम कौन हो ?" उस ने कहा : "मैं एक मुसीबत ज़दा, मजबूर शख़्स हूं । शदीद बारिश ने मेरा मकान गिरा दिया है अब मैं उसे दोबारा बना ने की कुदरत नहीं रखता ।" मजबूर मुसाफ़िर की दर्दभरी दास्तान सुन कर मैं उस के बारे में मुतफ़क्किर हो गया और सोचने लगा कि ऐसा कौन है जो उस की मदद कर सके । अचानक मेरे दिल में अमीर ग़स्सान बिन अ़ब्बाद का ख़याल आया ।

चुनान्चे, मैं उस मजबूर मुसाफ़िर को ले कर ग़स्सान बिन अ़ब्बाद के पास पहुंचा और सारा माजरा कह सुनाया । उस ने कहा : "इस मुसाफ़िर के लिये मेरे दिल में हमदर्दी पैदा हो गई है । मेरे पास दस हज़ार दिरहम हैं, मैं चाहता हूं कि येह रक़म इसे दे दूं ।" ग़स्सान बिन अ़ब्बाद की येह बात सुन कर मैं बाहर आ गया और उस ग़रीब व मजबूर मुसाफ़िर को दस हज़ार दिरहम मिलने की खुश ख़बरी सुनाई तो वोह सुनते ही ख़ुशी के मारे बेहोश हो गया । लोगों ने जब उस की येह ह़ालत देखी तो मुझे मलामत करते हुवे कहने लगे : "तुम ने इसे ऐसी कौन सी तक्लीफ़ देह ख़बर सुनाई है कि जिस की ताब न ला कर येह मुसाफ़िर बेहोश हो गया है ?" मैं जवाब दिये बिग़ैर वापस ग़स्सान बिन अ़ब्बाद के पास आया और मुसाफ़िर की बेहोशी के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर दी । उस ने मुसाफ़िर को अपने पास बुलवाया और उस के मुंह पर अ़र्के़ गुलाब के छींटे मारे तो उसे होश आ गया । मैं ने कहा : "तेरा भला हो, तू बेहोश क्यूं हो गया था ।" कहा : "ख़ुशी की वजह से ।" फिर हम कुछ देर बातें करते रहे । ग़स्सान ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा : "इस मुसाफ़िर के मुतअ़ल्लिक़ मेरे दिल में बहुत हमदर्दी पैदा हो गई है ।" मैं ने कहा : "आप का क्या इरादा है ?" कहा : "जाओ और हमारी त़रफ़ से इसे सुवारी पेश करो ।"

मैं मुसाफ़िर के पास आया और कहा : "ऐ मेरे भाई ! बेशक अमीर ग़स्सान बिन अ़ब्बाद ने तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ कुछ हुक्म सादिर किया है । अगर मैं तुम्हें वोह खुश ख़बरी सुनाऊं तो तुम मर तो नहीं जाओगे ?" कहा : "नहीं ।" मैं ने कहा : "तो सुनो ! अमीर ने तुम्हारे लिये एक घोड़ा दिया है ।" मुसाफ़िर ने कहा : "अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अमीर को अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए ।"

मैं फिर अमीर ग़स्सान बिन अ़ब्बाद के पास आया तो उस ने कहा : "तुम ने उस मुसाफ़िर को मेरे पास ला कर मेरे दिल में उस के मुतअ़ल्लिक़ हमदर्दी डाल दी है, अब मैं उस के साथ मज़ीद तआ़वुन करना चाहता हूं।" मैं ने कहा : "अब क्या इरादा है ?" कहा : "मैं उस के लिये एक साल के ग़ल्ले का कफ़ील हूं। और अ़न क़रीब उसे सरकारी मुलाज़मत भी दिलाऊंगा।" मैं ने अमीर की येह बात सुनी तो उस ग़रीब मुसाफ़िर से कहा : "अमीर ने तुम्हारे लिये मज़ीद कुछ अश्या का हुक्म दिया है। येह ख़बर सुन कर कहीं तुम मर तो नहीं जाओगे ?" कहा : "नहीं।" मैं ने कहा : "अमीर ने अ़ज़्म किया है कि वोह तुम्हें साल भर का ग़ल्ला देगा और मुलाज़मत भी दिलवाएगा।"

मुसाफ़िर ने कहा : "अल्लाह तबारक व तआ़ला अमीर को अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए।" फिर हम दोनों सुवार हुवे, रक़म की थैलियां ग़ुलाम के ह़वाले कीं और वापस आने लगे। कुछ दूर पहुंच कर उस मुसाफ़िर ने कहा : "येह थैलियां मुझे दे दो।" मैं ने कहा : "ग़ुलाम अकेला ही इन्हें उठा कर चल सकता है उसी के पास रहने दो।" कहा : "अगर येह मेरे कन्धे पर हों तो क्या ह़रज है ?" येह कह कर उस ने रक़म की थैलियां अपने कन्धे पर उठा लीं और शुक्रिया अदा करता हुवा अपने घर चला गया। दूसरी सुब्ह़ मैं उस मुसाफ़िर को ले कर दोबारा अमीर ग़स्सान बिन अ़ब्बाद के पास गया तो उस ने उसे बहुत अच्छी मुलाज़मत दिलवाई और अपने ख़ास मुलाज़िमीन में शामिल कर लिया। उस मुसाफ़िर ने मेह़नत व लगन से काम किया और बहुत ही जल्द अमीर का मन्ज़ूरे नज़र बन गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 406 सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुश्किल कुशाई फ़रमाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सहल राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي का बयान है : मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़स्सान ज़ियादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي ने बताया : एक मरतबा मुझे शदीद फ़क्रो फ़ाक़ा और मुफ़्लिसी ने आ लिया और मेरी तंगदस्ती इन्तिहा को पहुंच गई। क़स्साब, सब्ज़ी फ़रोश और दीगर दुकानदार बार बार अपने क़र्ज़ का मुत़ालबा करते लेकिन मेरे पास कुछ भी न था। एक दिन मैं इसी परेशानी के आ़लम में अपने घर बैठा हुवा था कि ग़ुलाम ने कहा : "एक ह़ाजी साह़िब दरवाज़े पर मौजूद हैं और मुलाक़ात की इजाज़त चाहते हैं।" मैं ने उसे बुलवाया तो वोह ख़ुरासानी शख़्स था, उस ने सलाम किया और कहा : "क्या आप ही अबू ह़स्सान हैं ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं ही अबू ह़स्सान हूं। आप को मुझ से क्या काम है ?" कहा : "मैं ह़ज के इरादे से आया हूं मेरे पास दस हज़ार दिरहम हैं आप येह रक़म बत़ौरे अमानत अपने पास रख लें, मैं ह़ज से वापसी पर ले लूंगा।"

मैं ने कहा : "लाओ, अपनी रक़म मेरे सामने रखो।" उस ने रक़म की थैलियां मेरे सामने रखीं उन का वज़्न किया और मोहर लगा कर मेरे ह़वाले कर दीं फिर सलाम कर के वापस चला गया। मैं ने सोचा कि मैं बहुत तंगदस्त और मजबूर हूं, क़र्ज़ ख़्वाहों के तक़ाज़ों ने मेरा सुकून बरबाद कर दिया है, अगर इस मजबूरी की ह़ालत में इस ख़ुरासानी ह़ाजी की रक़म मैं अपने इस्ति'माल में लाऊं तो मेरा सारा मुआ़मला दुरुस्त हो जाएगा। फिर उस ह़ाजी के आने तक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कुशादगी फ़रमा दी तो मैं ब आसानी उस माल का ज़मान अदा कर दूंगा। पस मैं ने थैलियां खोलीं, क़र्ज़ ख़्वाहों का सारा क़र्ज़ अदा किया, फिर कुछ अश्याए ख़ुर्दो नोश और दीगर ज़रूरी सामान ख़रीद लिया। आज हमारे हां काफ़ी दिनों बा'द ख़ुशी आई थी। मुझे यक़ीन था कि वोह ख़ुरासानी ह़ाजी जानिबे ह़रम अपनी मन्ज़िल पर रवाना हो गया होगा। और उस के आने तक मैं रक़म का इन्तिज़ाम कर के पूरी रक़म वापस कर दूंगा। हमारा वोह दिन बड़ी फ़रह़त व मसर्रत में गुज़रा।

दूसरे दिन सुब्ह़ सुब्ह़ ग़ुलाम ने कहा : "वोही ख़ुरासानी ह़ाजी दरवाज़े पर मौजूद है और अन्दर आने की इजाज़त चाहता है।" मैं ने कहा : "उसे अन्दर बुला लाओ।" वोह आया और कहा : "मैं ह़ज के इरादे से आया था लेकिन यहां से जाने के बा'द मुझे अपने बेटे की वफ़ात की ख़बर मिली है। अब मैं अपने शहर जाना चाहता हूं, जो रक़म बत़ौरे अमानत आप के पास रखवाई थी वोह वापस कर दीजिये।" ख़ुरासानी की इस बात ने मुझे ऐसी परेशानी में मुब्तला किया कि इस से क़ब्ल मुझे कभी ऐसी परेशानी का सामना न हुवा था। मैं सोच रहा था कि इसे क्या जवाब दूं? बिल आख़िर मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाए। मेरा घर ग़ैर मह़फ़ूज़ था मैं ने आप की रक़म किसी को दे दी है। आप कल आ कर अपनी रक़म ले लेना।" येह सुन कर ख़ुरासानी तो चला गया, लेकिन मैं परेशानी में मुब्तला हो गया, मुझे कुछ सुझाई न देता था कि मैं क्या करूं? कहां जाऊं? अगर इन्कार करता हूं तो येह मेरे लिये दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत है, अगर कहता हूं कि तुम्हारी रक़म ख़र्च हो गई तो वोह शोर मचाएगा और सख़्ती करेगा। और येह बात मेरे लिये इन्तिहाई अज़िय्यतनाक है। इसी सोचो फ़िक्र ओर परेशानी में शाम हो गई। रात ने आहिस्ता आहिस्ता अपने पर फैलाने शुरूअ़ कर दिये। मुझे येह फ़िक्र खाए जा रही थी कि कल सुब्ह़ मैं उसे क्या जवाब दूंगा? नींद कोसों दूर थी, मेरे लिये आंखें बन्द करना भी मुश्किल हो रहा था। मैं ने ग़ुलाम को सुवारी तय्यार करने का हुक्म दिया तो उस ने ह़ैरान हो कर कहा : "ह़ुज़ूर! रात बहुत हो चुकी है इस वक़्त आप कहां जाना चाहते हैं? मुनासिब येही है कि आप अभी बाहर न जाएं।"

चुनान्चे, मैं वापस बिस्तर पर आ गया। लेकिन नींद थी कि आने का नाम ही न ले रही थी, मैं बेचैनी के आ़लम में करवटें बदलता रहा। बारहा बाहर जाने की कोशिश की लेकिन हर मरतबा ग़ुलाम बाहर जाने से रोक देता। इसी बेचैनी के आ़लम में पूरी रात गुज़र गई, तुलूए़ फ़ज्र के फ़ौरन बा'द मैं अपने ख़च्चर पर सुवार हुवा और ना मा'लूम मन्ज़िल की जानिब चल दिया। मैं कोई फ़ैसला न कर पा रहा था कि किस त़रफ़ जाऊं? बिल आख़िर मैं ने सुवारी की लगाम छोड़ दी। कुछ ही देर बा'द मैं नहर के पुल पर आ पहुंचा। ख़च्चर पुल की जानिब बढ़ने लगा तो मैं

ने उसे न रोका यहां तक कि पुल पार कर लिया। अब मैं सोचने लगा कि कहां जाऊं ? अगर घर जाता हूं तो ख़ुरासानी मेरे दरवाज़े पर मौजूद होगा। मैं उसे क्या जवाब दूंगा ? इसी परेशानी के आ़लम में, मैं ने ख़च्चर को इस के ह़ाल पर छोड़ दिया कि अब जहां चाहे येह मुझे ले जाए। मेरा ख़च्चर ख़लीफ़ा मामून के मह़ल की जानिब बढ़ने लगा। मह़ल के दरवाज़े के क़रीब पहुंच कर मैं सुवारी से नीचे उतर आया। इतने में एक शहसुवार मेरे क़रीब से गुज़रा मुझे बग़ौर देखा और आगे बढ़ गया। कुछ देर बा'द दोबारा वोही शहसुवार आया और कहने लगा : "क्या तुम अबू ह़स्सान ज़ियादी हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं ही अबू ह़स्सान ज़ियादी हूं।" कहा : "आओ, तुम्हें अमीर ह़सन बिन सहल बुला रहे हैं।" मैं ने दिल में कहा : "अमीर ह़सन बिन सहल को मुझ से क्या काम।" बहर ह़ाल मैं उस के साथ ह़सन बिन सहल के पास पहुंचा तो उस ने मुझ से कहा : "ऐ अबू ह़स्सान ! तुम्हें क्या हुवा कि हम से मिलने नहीं आते ? मैं ने मसरूफ़िय्यात की वजह से न आने का कहा तो उस ने कहा : "तुम अस्ल बात छुपा रहे हो, सच सच बताओ ! क्या मुआ़मला है ? या तो तुम किसी बहुत बड़ी मुसीबत में फंस गए हो या तुम्हें कोई और परेशानी लाह़िक़ है, जल्दी बताओ ! अस्ल मुआ़मला क्या है ? किस चीज़ ने तुम्हें परेशान कर रखा है, मैं ने आज रात तुम्हें ख़्वाब में बहुत परेशान देखा है।" अमीर की येह बात सुन कर मैं ने शुरूअ़ से आख़िर तक सब क़िस्सा कह सुनाया। मेरी ग़मनाक आपबीती सुन कर उस ने कहा : "ऐ अबू ह़स्सान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ग़म में मुब्तला न करे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी मुसीबत दूर कर दी है। येह लो दस हज़ार दिरहम उस ख़ुरासानी को दे देना। और येह मज़ीद दस हज़ार दिरहम अपने ख़र्च में लाना। जब ख़त्म हो जाएं तो मुझे ज़रूर इत्तिलाअ़ देना।" येह कह कर उस ने मुझे बड़ी इ़ज़्ज़त व एह़तिराम के साथ वापस कर दिया। मैं अपने घर आया तो ख़ुरासानी मेरे दरवाज़े पर मौजूद था मैं ने दस हज़ार दिरहम उस के ह़वाले कर दिये। इस त़रह़ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझे ग़मो हुज़्न से नजात दे कर वुस्अ़त व फ़राख़ी अ़त़ा फ़रमा दी बेशक वोही तमाम ता'रीफ़ों के लाइक़ है।

❁.....इस ह़िकायत को अ़ल्लामा तनूख़ी ने कुछ इस त़रह़ बयान किया है कि "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़स्सान ज़ियादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى परेशानी के आ़लम में अपने घर से बाहर निकले तो रास्ते में कुछ लोग मिले, उन्हों ने आप से पूछा : "क्या आप अबू ह़स्सान ज़ियादी नामी शख़्स को जानते हैं ?" मैं ने कहा : "मैं ही अबू ह़स्सान ज़ियादी हूं। बताइये ! आप को मुझ से क्या काम है ?" उन्हों ने कहा : "ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद ने आप को बुलवाया है।" चुनान्चे, वोह मुझे ले कर ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद के पास पहुंचे। ख़लीफ़ा ने मुझ से पूछा : "तुम कौन हो ?" मैं ने कहा : "मैं क़ाज़ी अबू यूसुफ़ مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى के दोस्तों में से हूं।" ख़लीफ़ा ने फिर पूछा : "तुम्हारी कुन्यत क्या है ?" मैं ने कहा : "अबू ह़स्सान।" कहा : "किस नाम से मश्हूर हो ?" मैं ने कहा : "ज़ियादी के नाम से।" कहा : "बाताओ ! तुम्हारा क्या मुआ़मला है ?" मैं ने अव्वल से आख़िर तक का सारा वाक़िआ़ ख़लीफ़ा को सुना दिया। मेरी दर्दभरी दास्तान सुन कर ख़लीफ़ा ने ज़ारो क़ित़ार रोते हुवे कहा : "तुम्हारा भला हो ! आज रात तुम्हारी वजह से मुझे कइ मरतबा

सरकारे नामदार, बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बिइज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा है। हुवा यूं कि जब मैं सोया तो ख़्वाब में मक्की मदनी मुश्किल कुशा नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "अबू ह़स्सान ज़ियादी की मदद करो।" मैं इस ह़ाल में बेदार हुवा कि तुम से वाक़िफ़ न था लेकिन तुम्हारा नाम अच्छी त़रह़ याद कर लिया था ताकि सुब्ह़ तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात करवा सकूं, मैं दोबारा सो गया। ख़्वाब में फिर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और हुक्म फ़रमाया : "अबू ह़स्सान ज़ियादी की मदद करो।" मैं घबरा कर बेदार हुवा, कुछ देर बा'द दोबारा आंख लग गई। इस मरतबा फिर शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बिइज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "जाओ और अबू ह़स्सान ज़ियादी की मदद करो।" इस के बा'द मैं दोबारा नहीं सोया और अभी तक जाग रहा हूं। मैं ने रात ही से तुम्हारी तलाश में ख़ुद्दाम भेज रखे हैं। फिर ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद ने दस हज़ार (10,000) दिरहम देते हुवे कहा : "येह रक़म उस ख़ुरासानी को दे देना।" मज़ीद दस हज़ार दिरहम देते हुवे कहा : "इन के ज़रीए़ अपनी ज़रूरियात पूरी कर लेना।" मज़ीद तीस हज़ार (30,000) दिरहम देते हुवे कहा : "इस रक़म से अपने बच्चों की शादी वग़ैरा के लिये सामान ख़रीद कर उन की शादी कर देना।" फिर बड़ी इ़ज़्ज़त व तकरीम के साथ मुझे रवाना कर दिया। मैं ने सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ कर ख़ुरासानी को दस हज़ार दराहिम की थैलियां वापस कीं तो उस ने कहा : "येह वोह थैलियां नहीं हैं जो मैं ने दी थीं।"

मैं ने उसे सारी सूरते ह़ाल से आगाह किया तो उस ने ज़ारो क़ित़ार रोते हुवे कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर आप मुझे पहले ही अपना वाक़िआ़ बता देते तो मैं कभी भी आप से रक़म का मुत़ालबा न करता, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तो मैं एक दिरहम भी आप से न लूंगा। येह रक़म आप को मुबारक हो ! मेरा आप पर अब कोई मुत़ालबा नहीं। येह कह कर वोह अपने वत़न चला गया। मैं जब एक शाही तक़रीब के मौक़अ़ पर मामून के दरबार गया तो उस ने सरकारी काग़ज़ात थमाते हुवे कहा : "जाओ, आज से तुम फ़ुलां फ़ुलां अ़लाक़े के क़ाज़ी हो। हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुम पर हमेशा इनायते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बादल साया फ़िगन रहेंगे।" रावी कहते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़स्सान ज़ियादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ता दमे आख़िर ओ़हदए क़ज़ा पर फ़ाइज़ रहे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبی الامين صلى الله عليه وسلم

(बरादरे आ'ला ह़ज़रत सय्यिदुना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में यूं अ़र्ज़ करते हैं)

तुम्हारे दर के टुकड़ों से पड़ा पलता है इक आ़लम — गुज़ारा सब का होता है इसी मोह़ताज ख़ाने से

मज़ीद फ़रमाते हैं :

फ़क़ीरो बे नवाओ ! अपनी अपनी झोलियां भर लो — कि बाड़ा बट रहा है फ़ैज़ पर सरकारे आ़ली है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खु़दाए ह़न्नान व मन्नान का हम पर बहुत बड़ा एह़सान है कि उस ने हमें नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, सुल्त़ाने कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामन से वाबस्तगी अ़त़ा फ़रमाई । येह तो वोह नबी हैं जिन्हें हमारी तक्लीफ़ों और परेशानियों से रंज होता है। हमारा मुसीबत में पड़ना इन पर गिरां गुज़रता है। हमारी ख़ुशी से इन के दिले दिलबहार को ख़ुशी नसीब होती है । जब भी इन का कोई उम्मती परेशान व मुसीबत ज़दा होता है तो मुश्किल कुशाई फ़रमा कर अपने उस ग़ुलाम का दिल ख़ुश कर देते हैं ।

जिस त़रह़ ह़याते ज़ाहिरी में वोह नूरे मुजस्सम अपने नूर से आ़सियों के सियाह दिलों को नूर बार किया करते थे, इसी त़रह़ विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी उन के लुत़्फ़ो करम का बादल सूखे और मुरझाए हुवे ग़मगीन दिलों को पुर बहार कर रहा है। उन का जूदो करम हम पर जारी व सारी है। जो उम्मती इस दरबारे गुहर बार में अपना ह़ाले दिल सुनाता है उस की परेशानियां ह़ल हो जाती हैं और उस पर ने'मतों की ख़ूब बरसात होती है । बल्कि वोह नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो ऐसे रह़ीमो करीम हैं कि मंगतों को मांगने से क़ब्ल ही अ़त़ा फ़रमा देते हैं ।)

कभी ऐसा न हुवा इन के करम के सदक़े *हाथ के फैलने से पहले न भीक आई हो !*

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह हमेशा हमारी निस्बत सलामत रखे । अपनी दाइमी रिज़ा अ़त़ा फ़रमाए और जन्नतुल फ़िरदौस में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमाए ।)

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 407 आ़रिफ़ीन की शान

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ज़र्राद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد का बयान है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को येह फ़रमाते सुना : "बेशक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जिन्हों ने पहले ख़त़ा के दरख़्त लगाए जिन की जड़ें दिलों में क़ाइम हो गईं फिर तौबा के आंसूओं से उन्हें सैराब किया तो उन को नदामत व परेशानी और ग़म के फल ह़ासिल हुवे । वोह लोग बिग़ैर जुनून के दीवाने हो गए। नेकी के मुआ़मले में एक दूसरे से मुक़ाबला किया । न किसी को धोका दिया न ही उन्हें गुमराही व धोके का सामना करना पड़ा । बेशक उन में ऐसे फ़ुसह़ा, बुलग़ा और ख़ुश बख़्त लोग भी हैं जो अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم की मा'रिफ़त व मह़ब्बत रखते और अह़कामे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ को पहचानते हैं । उन्हों ने इख़्लास के ख़ालिस जाम पिये, बलाओं और मुसीबतों पर सब्र किया यहां तक कि अपने ख़ुदाए क़ुद्दूस की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी के बह़रे नापैदा किनार की गहराइयों में ग़ौत़ा ज़न हो कर जबरूत के पर्दों के गिर्द घूमने लगे । उन्हों ने नदामत व ख़जालत (या'नी शर्मिन्दगी) के साइबान तले अपनी ख़त़ाओं के सह़ीफ़े पढ़े और अपने ऊपर ख़ौफ़ और गिर्या व ज़ारी को लाज़िम कर लिया ।

जब वरअ़ (या'नी तक़्वा) की सीढ़ी के ज़रीए मक़ामे ज़ोहद तक पहुंच गए तो फिर दुन्या को तर्क कर देने की कड़वाहट भी उन्हें शीरीं मह़सूस होने लगी । खुर्दुरे लिबास और बिस्तरों को

उन्हों ने नर्म मह़सूस किया यहां तक कि वोह सलामती और नजात की रस्सी को थाम कर कामयाब हो गए। उन की रूहें आ़लमे बाला की सैर करने लगीं तो वहां उन्हों ने ने'मतों वाले बाग़ात को अपना मक़ाम पाया। वहां उन्हों ने नसीम के फल चुने। जब ज़िन्दगी के समन्दर में घुसे तो जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ और शिकायतों की ख़न्दक़ों को बन्द किया और शहवात के पुल को उ़बूर किया। जब इ़ल्म के मैदान में ठहरे तो वहां से ह़िक्मत के मोती ह़ासिल किये। फिर अ़क़्लमन्दी व होशयारी के सफ़ीने में सुवार हो कर सलामती के समन्दर में उतरे तो फ़लाह़ व कामरानी की हवाओं ने उन्हें राह़त व सुकून के बाग़ात और इ़ज़्ज़त व करामत के ख़ज़ानों में पहुंचा दिया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم

हि़कायत नम्बर : 408 इ़बादत की लज़्ज़त जाती रही

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन इब्राहीम का बयान है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الرَّزَّاق के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुसैन बह़रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِى को येह फ़रमाते सुना : "एक आ़बिदा व ज़ाहिदा ख़ातून ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़व्वास عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الرَّزَّاق से अपने दिल और अह़वाल में पैदा होने वाले तग़य्युर व तबद्दुल के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करते हुवे दरयाफ़्त किया : "ऐसा क्यूं हो रहा है ?" तो आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने फ़रमाया : "क्या तुम्हारी कोई चीज़ गुम हुई है या तुम्हारे किसी अ़मल में कमी आई है ?" ख़ातून ने कहा : "मैं ने ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र किया मगर किसी चीज़ में कमी नहीं पाई।" आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने कुछ देर के लिये सर झुकाया फिर फ़रमाया : "क्या तुझे मश्अ़ल वाली रात याद नहीं ?" अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं ! मुझे वोह रात अच्छी तरह़ याद है।" फ़रमाया : "बस उसी मश्अ़ल की वजह से तुम बेचैन हो और लज़्ज़ते इ़बादत में कमी मह़सूस कर रही हो।"

येह सुन कर उस ने रोते हुवे कहा : "जी हां ! एक रात मैं अपने घर की छत पर सूत कात रही थी कि एक धागा टूट गया अन्धेरे की वजह से मैं उसे न जोड़ सकी, इतने में बादशाह की सुवारी गुज़री तो सरकारी मश्अ़लों की रोशनी से काफ़ी उजाला हो गया मैं ने उसी रोशनी में टूटा हुवा धागा जोड़ कर ऊन में शामिल कर लिया। फिर उस ऊन की क़मीस बना कर पहन ली, येही वजह है कि मैं उस एक धागे की वजह से इ़बादत में लज़्ज़त की कमी मह़सूस करने लगी और अपनी ह़ालत को मुतग़य्यर पा रही हूं। येह कह कर वोह ख़ातून पर्दे के पीछे गई, वोह क़मीस उतार कर दूसरी पहनी और अ़र्ज़ की : "ऐ इब्राहीम ख़व्वास عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الرَّزَّاق अगर मैं इस क़मीस को बेच कर इस की सारी रक़म सदक़ा कर दूं तो क्या मेरा दिल अपनी पहली ह़ालत पर आ जाएगा ? क्या फिर से मुझे इ़बादते इलाही में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ नसीब हो जाएगा ?" आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर ऐसा करोगी तो اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी पहली ह़ालत पर लौट आओगी।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم

हिकायत नम्बर : 409 एक बदवी की इल्तिजाएं

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन उ़बैद बिन यूनुस बिन मुहम्मद बिन सालेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक मरतबा दौराने त़वाफ़ मेरी नज़र एक बदवी (देहाती) पर पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा थामे आस्मान की जानिब नज़र उठा कर इस त़रह इल्तिजाएं कर रहा था :

"ऐ वोह बेहतर ज़ात जिस की त़रफ़ लोग वफ़्द दर वफ़्द (या'नी गुरौह दर गुरौह) आते हैं ! मेरी ज़िन्दगी के दिन गुज़र गए, मुझ पर कमज़ोरी ने ग़लबा पा लिया। ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम घर की त़रफ़ इतने गुनाहों के साथ आया हूं कि वुस्अ़ते अर्ज़ (या'नी ज़मीन की चौड़ाई) भी इन के लिये तंग पड़ गई है। समन्दर भी मेरे गुनाहों की गन्दगी को नहीं धो सके। मेरे करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे अ़फ़्वो करम के भरोसे पर तेरी पनाह में आया हूं। मैं ने अपनी सुवारी तेरे ह़रम में ला कर रोक दी है। अपना माल तेरी रिज़ा की ख़ातिर ख़र्च कर दिया है। मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ येह सब तेरी अ़त़ाओं के ख़ज़ाने से है।"

फिर लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर ब आवाज़े बुलन्द कहा : "ऐ लोगो ! उस के लिये दुआ़ करो जिसे उस की ख़त़ाओं ने घेरा हुवा है, जिस पर मुसीबतों और परेशानियों ने ग़लबा पा लिया है। मेरे भाइयो ! ग़रीब व मुफ़्लिस बेचारे पर रह़म करो, मैं तुम्हें उसी शौक़ व रग़बत का वासित़ा देता हूं जो तुम्हें दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ तक खींच लाया है। मेरे लिये दुआ़ करो कि मेरा पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरे जुर्मों को मुआ़फ़ फ़रमा कर मेरे गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाए।" येह कह कर वोह दोबारा ख़ानए का'बा का ग़िलाफ़ पकड़ कर मसरूफ़े इल्तिजा हो गया और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तेरा बन्दा बड़े बड़े गुनाहों की वजह से कर्ब व ग़म में मुब्तला हो गया है, कुछ भी नेकियां पल्ले नहीं। ऐ मेरे करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझ ग़रीब व नादार को अपनी रह़मते ख़ास्सा के साए में जगह अ़त़ा फ़रमा।"

या ख़ुदा ! रह़मत तेरी ह़ावी है तेरे ग़ज़ब पर तेरी रह़मत के सहारे जी रहा बदकार है

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने मैदाने अ़रफ़ात में फिर उसी बदवी को देखा, वोह अपना बायां हाथ सर पर रखे हिचकियां ले ले कर रो रहा था और उस की ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ जारी थे :

"मेरे ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ बाग़ात कलियों के साथ मुस्कुराते हैं। आस्मान रह़मत की बारिश बरसाता है। उस इन्आ़म व इकराम का वासित़ा जो तू अपने मुह़िब्बीन को अ़त़ा फ़रमाता है। मेरा इस बात पर पुख़्ता यक़ीन है कि तू अपने चाहने वालों को अपनी रिज़ा अ़त़ा फ़रमाता है, और क्यूं न हो तू तो हर उस शख़्स से मह़ब्बत करता है जो तुझ से मह़ब्बत करता है। जो तेरी त़रफ़ लौ लगाता है तू उस की आंखों की ठन्डक बन जाता है। मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ हर हर शै तेरी मुश्ताक़ है। मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि मेरे दिल को भी अपना मुश्ताक़ बना ले। मुझे भी अपनी रह़मत की दौलत अ़त़ा फ़रमा दे। मेरी गर्दन को जहन्नम की आग से आज़ादी अ़त़ा फ़रमा दे।"

ह़िकायत नम्बर : 410 इस्राईली आ़बिद और शैत़ान का जाल

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन फ़ज़्ल बिन मा'बद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد कहते हैं : मैं ने अपने वालिद को येह इरशाद फ़रमाते सुना : मैं ने बा'ज़ किताबों में पढ़ा है कि एक मरतबा शैत़ाने लईन एक इस्राईली आ़बिद के पास बहुत से जाल ले कर आया। इस्राईली आ़बिद ने पूछा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! येह जाल कैसे हैं ?" शैत़ान मलऊ़न बोला : "ऐ शख़्स ! मैं मुफ़्लिस हूं, न तो मेरे पास खाना वग़ैरा है और न ही कोई ज़रीअ़ए मुआ़श। मैं घूम फिर कर मुआ़श तलाश करता हूं। जब भूक लगती है तो इन जालों में से एक जाल नस्ब कर देता हूं और परन्दे शिकार कर के खा लेता हूं। इसी त़रह़ गुज़र बसर हो रही है।"

आ़बिद ने कहा : "अगर वाक़ेई ऐसा है तो मुझे भी एक जाल बना दे मैं इस का ज़ियादा मोह़ताज हूं।" शैत़ान ने कहा : "ठीक है मैं तुम्हारे लिये एक उ़म्दा जाल बनाऊंगा।" येह कह कर शैत़ाने लईन चला गया। रास्ते में आ़बिद को एक घर के क़रीब ह़सीनो जमील औ़रत नज़र आई। उस ने आ़बिद से कहा : "मुझ पर एह़सान करो, मुझे मेरे शोहर का येह ख़त़ पढ़ कर सुना दो।" आ़बिद ने कहा : "लाओ, ख़त़ मुझे दो।" औ़रत ने कहा : "इस त़रह़ दरवाज़े पर खड़ा होना मुनासिब नहीं, अन्दर आ कर सुकून से बैठो फिर ख़त़ सुनाओ।" आ़बिद जैसे ही घर में दाख़िल हुवा औ़रत ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और उसे गुनाह की दा'वत दी। उस ने ख़ूब मिन्नतो समाजत की और क़सम वग़ैरा दे कर औ़रत को गुनाह से बाज़ रखना चाहा लेकिन उस पर शहवत ग़ालिब थी। वोह उसे मुसलसल गुनाह की दा'वत देती रही। बिल आख़िर आ़बिद को इस गुनाह से बचने की तदबीर सूझी उस ने अपने आप को पागल ज़ाहिर किया और अ़जीबो ग़रीब ह़रकतें करने लगा। औ़रत ने पागल समझ कर फ़ौरन दरवाज़ा खोल दिया। और समझदार आ़बिद फ़ौरन वहां से भाग निकला।

रास्ते में शैत़ाने लईन नज़र आया तो आ़बिद ने कहा : "उस जाल का क्या हुवा जिस का तुम ने मुझ से वा'दा किया था।" कहा : "मैं ने तो तेरे लिये बहुत मज़बूत जाल तय्यार किया था मगर तेरे जुनून और अन्दाज़े दीवानगी ने तुझे उस में फंसने न दिया।" जब आ़बिद ने येह सुना तो गुनाह से बचने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता हुवा अपने घर की जानिब चल दिया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 411 बच्चों की फ़रयाद और बुढ़े का तवक्कुल

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "एक मरतबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर था । इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्ज़ नैशापूरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى तशरीफ़ लाए । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बड़े पुर तपाक त़रीक़े से इस्तिक़बाल करते हुवे गले मिले । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ जुनैद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! बताओ ! क्या तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज़ है जो मुझे खिला सको ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "आप जो हुक्म फ़रमाएंगे वोही चीज़ पका दी जाएगी ।" येह कह कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने ज़ीरी ! तुम ने शैख़ की बात सुनी है, अब जल्दी से खाने का इन्तिज़ाम करो । हुक्म पाते ही इब्ने ज़ीरी चले गए और कुछ देर बा'द मत़लूबा अश्याए ख़ुर्दो नौश ले कर ह़ाज़िर हुवे तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कहा : "जो चीज़ें आप ने त़लब की थीं वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत हैं ।" फ़रमाया : "ऐ मेरे भाई ! मैं चाहता हूं कि येह सारा खाना ईषार कर दूं तुम इस मुआ़मले में मेरी मदद करो ।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जो आप की पसन्द वोही मेरी पसन्द । ऐ इब्ने ज़ीरी ! तुम ने शैख़ का कलाम तो सुन ही लिया है । जाओ ! येह खाना किसी मुस्तह़िक़ फ़क़ीर को दे आओ ।"

इब्ने ज़ीरी ने मज़दूर से सामान उठवाया और कहा : "मेरे साथ साथ चलो, जहां थक जाओ वहीं रुक जाना, मज़दूर सामान उठा कर चल दिया और कुछ दूर दो घरों के क़रीब रुक गया । इब्ने ज़ीरी ने क़रीबी मकान पर दस्तक दी । अन्दर से आवाज़ आई : "अगर तुम्हारे पास खाने की फ़ुलां फ़ुलां चीज़ें मौजूद हैं तो अन्दर आ जाओ ।" येह कह कर उस ने उन तमाम अश्या का नाम गिनवा दिया जो हम ले कर आए थे । जब बताया गया कि तुम्हारी बताई हुई हर हर शै हमारे पास मौजूद है तो दरवाज़ा खुल गया । दरवाज़े पर बोरी से बना हुवा पर्दा था और सामने एक बुढ्ढा मौजूद था । इब्ने ज़ीरी कहते हैं कि "मैं ने आगे बढ़ कर सामान उतरवाया और मज़दूर को उजरत दे कर रवाना कर दिया ।" बुढ्ढे ने मुझ से कहा : "इस पर्दे के पीछे छोटे छोटे बच्चे और बच्चियां हैं, जिन्हें इसी खाने की ह़ाजत है जो तुम ले कर आए हो ।" मैं ने कहा : "ऐ बुज़ुर्ग ! मैं उस वक़्त तक यहां से नहीं जाऊंगा जब तक आप ह़क़ीक़त से आगाह न कर दें ।" कहा : "मेरे येह बच्चे अ़र्सए दराज़ से खाने की चीज़ें मांग रहे हैं लेकिन मेरा ज़मीर इस मुआ़मले में दुआ़ करने के लिये मेरी मुवाफ़क़त न करता था । लिहाज़ा मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इन अश्या का सुवाल नहीं किया । आज रात मेरा दिल इस खाने की दुआ़ पर राज़ी हो गया, मैं ने जान लिया कि मेरे दिल की मुवाफ़क़त इस बात पर दलालत करती है कि अगर मैं दुआ़ करूं तो ज़रूर क़बूल होगी । लिहाज़ा उम्मीदे वाषिक़ के साथ मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ कर दी । जब दरवाज़ा खट खटाया गया तो मैं समझ गया कि मेरी दुआ़ क़बूल हो गई है और हमें वोही चीज़ें मिलेंगी जिन

की ख़्वाहिश मेरे बच्चे कर रहे थे । इसी लिये दरवाज़ा खोलने से पहले मैं ने इन चीज़ों का नाम गिनवाया था जो तुम ले कर आए हो ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

हि़कायत नम्बर : 412

अनमोल ग़ैबी पियाला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास शरक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "सफ़रे ह़ज में हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के हमराह थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बीमार हुवे तो रास्ता छोड़ कर एक वादी की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए । हमराहियों में से किसी ने कहा : "मुझे प्यास ने शदीद परेशान कर रखा है ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना पाउं ज़मीन पर मारा तो ठन्डे और शीरीं पानी का चश्मा उबल पड़ा । प्यासे मुरीद ने अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर ! मैं प्याले से पानी पीना चाहता हूं ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा तो सफ़ेद शीशे का ख़ूब सूरत पियाला आप के हाथ में आ गया । मैं ने उस से क़ब्ल ऐसा पियाला कभी न देखा था । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने खुद भी पानी पिया और हमें भी सैराब किया । वोह ग़ैबी पियाला मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا तक हमारे पास रहा । एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : "**अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने बन्दों की इ़ज़्ज़त व तकरीम बढ़ाने के लिये उन्हें जो करामात अ़त़ा फ़रमाता है उस के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हारे दोस्त क्या कहते हैं ?"

मैं ने कहा : "हमारे सब दोस्त **सह़ीहु़ल अ़क़ीदा हैं,** वोह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की करामात पर कामिल यक़ीन रखते हैं ।" फ़रमाया : "अगर ऐसा न करेंगे तो इन्कार करने वालों में शुमार किये जाएंगे । मैं तो तुम से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की कैफ़िय्यत व अह़वाल के बारे में लोगों की राए मा'लूम कर रहा हूं ।" मैं ने कहा : "हु़ज़ूर ! मैं इस बारे में उन के किसी क़ौल से वाक़िफ़ नहीं ।" फ़रमाया : "ऐ मेरे बच्चे ! तुम्हारे दोस्त गुमान करते हैं कि येह जिन्नों की त़रफ़ से धोके बाज़ी व चालबाज़ी होती है । ह़ालांकि मुआ़मला इस के बर अ़क्स है क्यूंकि जिन्नों की त़रफ़ से नज़र बन्दी या दूसरी कैफ़िय्यात उस वक़्त होती हैं जब ह़ालते सुकून हो । जब कि नेक लोग इस कैफ़िय्यत व ह़ालत के वक़्त बे ख़ुदी और जज़्ब के आ़लम में होते हैं । और येह मक़ाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ख़ास बन्दों को अ़त़ा फ़रमाता है ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

हिकायत नम्बर : 413 क़ीमती ख़ज़ाना

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی के भाई हज़रते सय्यिदुना ज़ुल किफ़्ल رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه बयान करते हैं : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی को येह फ़रमाते सुना : मग़रिबी पहाड़ियों में एक पहाड़ की चोटी पर मेरी मुलाक़ात एक आ़बिद से हुई जो सर झुकाए बैठा था, मैं ने सलाम किया, उस ने जवाब दिया। मैं ने पूछा : "तुम इस वीरान जगह में क्यूं रहते हो ?" कहा : "मेरे पास निहायत क़ीमती सरमाया है जिसे बचाने के लिये मैं आबादी से दूर आ गया हूं, मैं चाहता हूं कि अपना येह ख़ज़ाना इस वीरान जगह में दफ़्ना दूं।" मैं ने कहा : "आख़िर तुम्हारे पास ऐसा कौन सा क़ीमती ख़ज़ाना है जिस की तुम्हें इतनी फ़िक्र है ?"

उस ने कहा : "तौह़ीद का क़ीमती हार और इख़्लास का गोहरे नायाब मेरा क़ीमती ख़ज़ाना है।" मैं ने कहा : "अगर तुम लोगों से उन्स व मह़ब्बत रखते तो क्या ह़रज था ?" कहा : "मैं लोगों से भाग कर उस की त़रफ़ आ गया हूं जिस की त़रफ़ तमाम उम्मीदवार आते हैं। मैं ने अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ को बहुत मह़ब्बत व करम करने वाला पाया लिहाज़ा मैं उसी की त़रफ़ उम्मीद लगाए बैठा हूं।" फिर उस ने आस्मान की त़रफ़ नज़र उठाई और "**اَنۡتَ اَنۡتَ या'नी तू ही तू है**।" की सदाएं बुलन्द करने लगा। उस की देखा देखी मैं भी आस्मान की त़रफ़ देखने लगा। जब दोबारा मैं ने उसे देखना चाहा तो वोह मौजूद न था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 414 ह़क़ीक़ी इ़ज़्ज़त और ह़क़ीक़ी बादशाहत

हज़रते सय्यिदुना रियाशी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡکَافِی का बयान है, मैं ने हज़रते सय्यिदुना अस्मई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی को येह फ़रमाते सुना : ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ह़ज के दिनों में अपने वज़ीरों, मुशीरों और उमरा के साथ मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِيۡمًا में बड़ी शानो शौकत से तख़्त पर बैठा हुवा था। अचानक हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन रबाह رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه तशरीफ़ लाए, ख़लीफ़ा उन्हें देखते ही इस्तिक़्बाल के लिये खड़ा हो गया, बड़े अदबो एह़तिराम से आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को अपने साथ तख़्त पर बिठाया और ख़ुद सामने बैठ गया। फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ह़ुज़ूर ! अगर आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की कोई ह़ाजत है तो इरशाद फ़रमाइये।"

ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की दौलत से माला माल मुबल्लिग़ हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन रबाह رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने नेकी की दा'वत देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़ा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़रम में मुहाजिरीन व अन्सार की

अवलाद के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर ! बेशक तू उन्हीं की वजह से इस मजलिस में बैठा है। ऐ ख़लीफ़ा ! सरह़द वालों के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर ! बेशक येह मुसलमानों के क़ल्ए़ हैं। इन के मुआ़मलात ह़ल किया कर ! बेशक तुझ अकेले से इन सब के मुतअ़ल्लिक़ पूछ गछ होगी। जो साइल तेरे दरवाज़े पर आएं उन से ग़फ़्लत न बरतना, उन के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ख़ूब डर और अपने दरवाज़े साइलीन के लिये बन्द मत कर।" नेकी की दा'वत सुन कर ख़लीफ़ा ने कहा : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जो हुक्म फ़रमाया मैं उस पर ज़रूर अ़मल करूंगा।" जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه वापस जाने लगे तो ख़लीफ़ा ने आप का दामन थाम कर कहा : "ऐ अबू मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आप ने दूसरों की ह़ाजात के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया है हम उन्हें पूरा करेंगे। आप अपनी भी किसी ह़ाजत के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाएं।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه येह फ़रमाते हुवे दरबारे शाही से वापस तशरीफ़ ले गए : "ऐ ख़लीफ़ा ! मुझे मख़्लूक़ से कोई ह़ाजत नहीं।" ख़लीफ़ा ने दरबारियों से मुख़ात़ब हो कर कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **येह है ह़क़ीक़ी इ़ज़्ज़त, येह है ह़क़ीक़ी बादशाहत।"**

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ وسلم}

आफ़रीं अहले मह़ब्बत के दिलों को ऐ दोस्त ! एक कूज़े में लिये बैठे हैं दरया तेरा
इतनी निस्बत भी मुझे दोनों जहां में बस है तू मेरा मालिको मौला है मैं बन्दा तेरा

हिकायत नम्बर : 415

क़ाज़ी शरीक की जुरअत व बहादुरी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन हय्याज बिन सईद से मन्क़ूल है : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शरीक علیہ رحمۃ اللہ الرفیق के क़रीबी दोस्तों में से था। एक दिन सुब्ह़ सवेरे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मेरे पास इस ह़ालत में तशरीफ़ लाए कि चादर ओढ़ी हुई थी और चमड़े का लिबास पहना हुवा था जिस के नीचे क़मीस न थी। मैं ने कहा : "क्या वजह है कि आज आप ने मजलिसे क़ज़ा मुन्अ़क़िद नहीं फ़रमाई ?" फ़रमाया : "कल मैं ने अपने कपड़े धोए थे जो अभी तक सूखे नहीं, मैं इन के ख़ुश्क होने का इन्तिज़ार कर रहा हूं। तुम यहां बैठो, हम कुछ दीनी मसाइल पर गुफ़्त्गू करते हैं।" हुक्म पा कर मैं बैठ गया तो हमारे दरमियान ग़ुलाम के निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू होने लगी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "जो ग़ुलाम अपने आक़ा की इजाज़त के बिग़ैर निकाह़ कर ले उस का क्या हुक्म है ? क्या इस बारे में तुम्हें कुछ मा'लूमात हैं।" अभी सिलसिलए कलाम जारी था कि "ख़ैज़ुरान" की त़रफ़ से मुक़र्रर एक नस्रानी (शाही मुलाज़िम कूफ़ा में जिस का हर हुक्म माना जाता था और मूसा बिन ईसा को भी इस की हर बात मानने का हुक्म दिया गया था) हमारे पास आया उस के साथ शाही सिपाही और दूसरे बहुत से लोग थे। वोह चरागाह की त़रफ़ जाने का इरादा रखता था, इन्तिहाई क़ीमती जुब्बा पहने, एक त़ाक़तवर अ़जमी घोड़े पर बड़े शाहाना अन्दाज़

से बैठा हुवा था। क़ाज़ी ने देखा कि एक परेशान ह़ाल शख़्स हाथ जोड़े बड़े दर्द मन्दाना अन्दाज़ में पुकार रहा है : "हाए ! कोई मेरी मदद करे, मैं अव्वलन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और फिर क़ाज़ी से इन्साफ़ त़लब करता हूं।" उस साइल का जिस्म कोड़ों की मार से छलनी था। नस्रानी (शाही मुलाज़िम) ने क़ाज़ी को सलाम किया, क़ाज़ी साह़िब ने उसे अपने पास बिठा लिया।

ज़ख़्मी साइल ने अ़र्ज़ की : "मैं पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फिर क़ाज़ी साह़िब की पनाह चाहता हूं। क़ाज़ी साह़िब ! मैं कपड़े बुनता हूं और मेरे जैसे मज़दूर माहाना सो दिरहम उजरत लेते हैं। इस नस्रानी ने मुझे तक़रीबन चार माह से क़ैद कर रखा है मैं सारा दिन काम करता हूं लेकिन उजरत में इतनी कम रक़म मिलती है कि ब मुश्किल खाने की अश्या ख़रीद सकता हूं। मेरे घर वाले फ़क्रो फ़ाक़ा और तंगदस्ती में मुब्तला हैं, आज मौक़अ़ पा कर मैं क़ैद से भाग आया तो रास्ते में इस नस्रानी ने मुझे पकड़ लिया और इतना मारा कि मेरी सारी पीठ लहू लुहान कर दी। ख़ुदारा ! मुझ पर रह़्म कीजिये।" मज़्लूम साइल की येह दर्दभरी फ़रयाद सुन कर क़ाज़ी शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नस्रानी को डांटते हुवे कहा : "ऐ नस्रानी ! उठ और अपने मुक़ाबिल के सामने खड़ा हो जा।"

नस्रानी ने कहा : "क़ाज़ी साह़िब ! अल्लाह तआ़ला आप का भला करे, येह "ख़ैज़ुरान" के ख़ादिमों में से है और भाग आया है, इसे क़ैद कर लीजिये।" क़ाज़ी शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "तेरा नास हो ! जो तुझ से कहा गया है इस पर अ़मल कर और साइल के बराबर खड़ा हो जा।" नस्रानी मुलाज़िम बादिले नाख़्वास्ता साइल के बराबर जा खड़ा हुवा। क़ाज़ी साह़िब ने फ़रमाया : "इस फ़रयादी की पीठ पर येह ज़ख़्म के निशानात कैसे हैं ?" कहा : "क़ाज़ी साह़िब ! अल्लाह तआ़ला आप को सलामत रखे मैं ने अपने हाथों से इसे कोड़े मारे हैं, अभी तो इस को कम सज़ा मिली है येह तो इस से भी ज़ियादा का ह़क़दार है, आप जल्दी से इसे जेल भिजवा दीजिये।"

येह सुन कर क़ाज़ी शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कमरे में दाख़िल हुवे, वापसी में उन के हाथ में एक ज़बरदस्त क़िस्म का सख़्त कोड़ा था। आप ने नस्रानी की पीठ से कपड़ा हटा कर ख़ूब कोड़े लगाए। फिर उस मज़्लूम फ़रयादी से कहा : "तुम बे ख़ौफ़ो ख़त़र अपने अहलो इ़याल के पास चले जाओ।" वोह दुआ़एं देता हुवा वहां से चला गया। क़ाज़ी साह़िब ने फिर कोड़ा बुलन्द किया और पे दर पे कई कोड़े नस्रानी की पीठ पर लगाते हुवे कहा : "आइन्दा तुझे किसी पर ज़ुल्म करने की जुरअत न होगी। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू आइन्दा कभी भी किसी मुसलमान पर ज़ुल्म नहीं करेगा। तेरी पीठ के ज़ख़्म तुझे इस बुरी ह़रकत से बाज़ रखेंगे।" उस के रुफ़क़ा ने जब उस की दुर्गत बनती देखी तो उसे छुड़ाने के लिये आगे बढ़े। क़ाज़ी साह़िब ने ब आवाज़े बुलन्द फ़रमाया : "अगर क़बीले के नौजवान यहां मौजूद हों तो जल्दी से आएं और इस के दोस्तों को जेल में डाल दें।" येह सुन कर सारे हिमायती भाग गए और नस्रानी अकेला रह गया। क़ाज़ी साह़िब ने उसे ख़ूब सज़ा

दी । वोह रोता हुवा कह रहा था, अ़नक़रीब तुम अपना अन्जाम देख लोगे । क़ाज़ी साहि़ब ने उस की धमकी की त़रफ़ कोई तवज्जोह न दी, कोड़ा दहलीज़ पर फेंक कर मेरे पास आए और फ़रमाया : ''ऐ अबू ह़फ़्स ! हां, तो मैं तुम से येह पूछ रहा था कि उस ग़ुलाम के बारे में तुम क्या कहते हो जो अपने मालिक की इजाज़त के बिग़ैर शादी कर ले ।'' क़ाज़ी साहि़ब इस त़रह़ गुफ़्तगू कर रहे थे जैसे कुछ हुवा ही न हो । नस्रानी मार खा कर अ़जमी घोड़े पर सुवार होने लगा तो घोड़ा बिदकने लगा अब वहां उस का कोई रफ़ीक़ भी न था जो उसे सुवार कराता । नस्रानी ग़ुस्से में आ कर घोड़े को मारने लगा तो क़ाज़ी साहि़ब ने फ़रमाया : ''ऐ नस्रानी ! इस बे ज़बान जानवर पर नर्मी कर ! तेरी ख़राबी हो, येह अपने रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का तुझ से ज़ियादा मुती़अ़ व फ़रमांबरदार है ।''

नस्रानी चला गया तो क़ाज़ी साहि़ब ने फ़रमाया : ''आओ ! हम अपने मस्अले पर गुफ़्तगू करते हैं । बताओ ! ऐसे ग़ुलाम के बारे में तुम्हारी क्या राए है ?'' मैं ने कहा : ''मुझे इस बारे में मा'लूम नहीं । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज आप ने बहुत बड़ी जुरअत की है । शायद ! अ़नक़रीब आप को इस की बहुत कड़ी सज़ा मिले ।'' फ़रमाया : ''ऐ अबू ह़फ़्स ! तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ता'ज़ीम कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे इ़ज़्ज़त व बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाएगा । आओ हम अपने मस्अले पर गुफ़्तगू करते हैं ।'' फिर क़ाज़ी साहि़ब मुझे उस ग़ुलाम वाले मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ बताने लगे । नस्रानी (शाही मुलाज़िम) मार खा कर सीधा अमीर मूसा बिन ई़सा के पास गया । अमीर ने जब उसे ज़ख़्मी ह़ालत में देखा तो पूछा : ''येह तुझे क्या हुवा ?'' नस्रानी ने कहा : ''क़ाज़ी शरीक ने मार मार कर मेरी येह ह़ालत की है ।'' फिर उस ने सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया । अमीर मूसा बिन ई़सा ने कहा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं क़ाज़ी शरीक के मुआ़मले में हरगिज़ दख़्ल अन्दाज़ी नहीं कर सकता ।'' येह सुन कर नस्रानी अपना सा मुंह ले कर बग़दाद चला गया और फिर वापस न आया ।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो । آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हि़कायत नम्बर : 416

मददगार अज़दहा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ علیہ رحمۃ اللہ الرفیق कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हु़सैन मुज़य्यिन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में येह फ़रमाते सुना : ''एक मरतबा मैं ''**तबूक**'' के वीरानों की त़रफ़ गया, रास्ते में एक कुंवां नज़र आया, पानी पीने की ग़रज़ से कुंवें के क़रीब गया तो मेरा पाउं फिसल गया और मैं कुंवें में गिर गया । वहां एक वसीअ़ उभरी हुई जगह देखी तो उस पर बैठ गया ताकि अगर मेरे जिस्म या कपड़ों वग़ैरा पर कोई नजिस शै लगी हुई हो तो पानी उस से मह़फ़ूज़ और लोगों के लिये क़ाबिले इस्ति'माल रहे । कुंवें की गहराई और वह़शत के बा वुजूद मेरा दिल बिल्कुल मुत़मइन था, मुझे किसी क़िस्म का कोई ख़ौफ़ मह़सूस न हो रहा

था। वहां बैठे हुवे अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि किसी शै की आहट सुनाई दी। मैं सोचने लगा कि येह आवाज़ कैसी है ? जब ऊपर देखा तो एक बहुत बड़ा अज़्दहा मेरी जानिब आ रहा था।

लेकिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस ख़त़रनाक अज़्दहे को देख कर भी मेरा दिल मुत़्मइन था। ख़ौफ़ो वह़्शत का नाम तक न था। अज़्दहा क़रीब आया और मेरे गिर्द दाइरा बना कर बैठ गया। मैं सोच ही रहा था कि कुंवें से बाहर कैसे निकला जाए ? अज़्दहे ने अपनी दुम मेरे गिर्द लपेटी और मुझे कुंवें से बाहर निकाल दिया फिर मेरे जिस्म से अ़लाहि़दा हो कर लम्ह़े भर में मेरी आंखों से ओझल हो गया ख़ूब इधर उधर देखा मगर वोह कहीं नज़र न आया। न जाने उस मददगार अज़्दहे को ज़मीन निगल गई या आस्मान खा गया ? फिर मैं उठ खड़ा हुवा और इस ग़ैबी इमदाद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता हुवा अपनी मन्ज़िल की जानिब चल दिया।"

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

हि़कायत नम्बर : 417 मोमिन की नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन शुमैत़ बिन अ़जलान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम को येह इरशाद फ़रमाते सुना : मोमिन अपने नफ़्स को इस त़रह़ समझाता है :

"ऐ नफ़्स ! येह दुन्यवी फ़ानी ज़िन्दगी सिर्फ़ तीन दिन ही तो है। एक तो गुज़र गया। एक वोह है जिस में तू है, समझ ले कि बस येह भी गुज़र गया। कल का दिन तो एक ऐसी खोखली उम्मीद है जिसे शायद तू न पा सके, अगर तू कल तक ज़िन्दा रहा तो कल का दिन तेरा रिज़्क़ साथ ले कर आएगा और कल न जाने कितने लोगों को मौत का पैग़ाम मिल जाएगा, हो सकता है तू भी उन्ही में शामिल हो जिन्हें पैग़ामे अजल (या'नी मौत का पैग़ाम) मिलने वाला है। ऐ नफ़्स ! हर दिन के लिये उस दिन का ग़म ही बहुत है। फिर अगर मज़ीद ज़िन्दगी मिली तो तेरे कमज़ोर व नातुवां दिल पर क़ह़त़ साली और गर्दिशे अय्याम का ग़म मुसल्लत़ रहेगा। कभी अश्या का अरज़ां व क़ीमती मज़ा तुझे परेशान करेगा तो कभी गर्मियों में ही तू सख़्त सर्दी आने के ग़म में मुब्तला हो जाएगा। इसी त़रह़ सर्दियों में गर्मी आने से क़ब्ल ही तुझे इस का ग़म निढ़ाल कर देगा। जब तुझे इतने सारे ग़म होंगे तो तेरा दिल आख़िरत के ग़म की त़रफ़ कैसे मुतवज्जेह होगा ? याद रख ! हर दिन तेरी मुद्दते उ़म्र को कम कर रहा है, लेकिन तुझे कोई परवाह नहीं। तेरा रिज़्क़ हर रोज़ पूरा होता जा रहा है, लेकिन तुझे कोई ग़म नहीं ! तुझे बक़दरे किफ़ायत रोज़ी मिल जाती है, लेकिन फिर भी तू धोका देने वाली अश्या की त़लब में सरगर्दां है।

क़लील पर क़नाअ़त नहीं मिलती, कषीर से तेरा पेट नहीं भरता, आख़िर येह ग़फ़्लत कब तक ? तू इन बातों से ख़ूब वाक़िफ़ है, फिर भी अपनी जहालत से आगाह क्यूं नहीं होता ? हालांकि तू ब ख़ूबी जानता है कि जिन ने'मतों की ख़ुशगवार बरसात में तू नहा रहा है इन का शुक्र अदा करने से तू आ़जिज़ है। इन ने'मतों का शुक्र अदा नहीं हो सकता, लेकिन फिर भी तुझे ज़ियादा की त़लब ने धोके में मुब्तला कर रखा है। वोह शख़्स अपनी आख़िरत के लिये क्या तय्यारी करेगा ? जिस की दुन्यवी ख़्वाहिशात ही पूरी नहीं होतीं, जिस के दुन्यवी मुत़ालबात ख़त्म होने का नाम ही नहीं लेते। इन्तिहाई तअ़ज्जुब है उस पर जो हमेशा के घर (या'नी जन्नत) की तस्दीक़ करने के बा वुजूद धोके की ज़िन्दगी के लिये सरगर्दां है ! सद हज़ार अफ़्सोस ऐसे शख़्स पर !"

दिला ग़ाफ़िल न हो यकदम येह दुन्या छोड़ जाना है — बाग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है
तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लैटे सैज फूलों पर — होगा इक दिन बे जान इसे कीड़ों ने खाना है
जहां के शग़्ल में शाग़िल ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल — करे दा'वा कि येह दुन्या तेरा दाइम ठिकाना है
ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत हयाती पर न हो ग़ुर्रा — ख़ुदा की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आख़िरत की तय्यारी के लिये क़ब्रो ह़श्र की याद बहुत ज़रूरी है जब इन दुश्वार गुज़ार घाटियों का पुरहौल मन्ज़र हर वक़्त पेशे नज़र होगा तो इन से बचने का ज़ेह्न बनेगा। क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी के लिये "**दा'वते इस्लामी**" के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी और अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के अ़त़ा कर्दा "**मदनी इन्आ़मात**" पर अ़मल बहुत मुफ़ीद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर और मदनी इन्आ़मात का आ़मिल बनाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 418 ह़ज़रते सव्वार और नाबीना नौजवान

ह़ज़रते सय्यिदुना सव्वार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "एक दिन जब मैं "**ख़लीफ़ा महदी**" के दरबार से वापस आया तो न जाने क्यूं बेक़रारी व बेचैनी सी मह़सूस होने लगी, नींद मेरी आंखों से कोसों दूर थी। मैं उठा, सुवारी तय्यार की और बाहर आ गया। रास्ते में अपने कारोबारी वकील से मुलाक़ात हुई, उस के पास दराहिम की थैलियां थीं, मैं ने पूछा : "येह रक़म कहां से आई ?" कहा : "येह कारोबारी नफ़्अ़ के दो हज़ार (2000) दिरहम हैं।" मैं ने कहा : "इन्हें अपने पास रखो और मेरे पीछे पीछे चले आओ।" इतना कह कर मैं नहर की जानिब चल पड़ा, पुल उ़बूर कर के शारेअ़ "**दारे रफ़ीक़**" की त़रफ़ सह़रा के क़रीब पहुंच कर कुछ देर "**बाबे अम्बार**" के गिर्द घूमता रहा, फिर बाबे अम्बार की सड़क पर चलता हुवा ऐसे साफ़ सुथरे मकान के क़रीब रुका जो सर सब्ज़ो शादाब और दरख़्तों से भरा हुवा था। दरवाज़े पर ख़ादिम मौजूद था। मैं ने

पानी मांगा तो वोह खुश्बूदार मीठे पानी से भरा एक बेहतरीन घड़ा ले आया। मैं ने पानी पी कर उस का शुक्रिया अदा किया और नमाज़े अ़स्र के लिये क़रीब ही एक मस्जिद में चला गया।

नमाज़े अ़स्र के बा'द एक नाबीना शख़्स नज़र आया जो किसी को ढूंड़ रहा था। मैं ने कहा : "ऐ बन्दए खुदा ! तुझे किस की तलाश है ?" कहा : "मैं आप ही को ढूंड़ रहा हूं।" मैं ने कहा : "कहो ! क्या काम है ?" उस ने बैठते हुवे कहा : "मैं ने आप से बहुत उ़म्दा खुश्बू सूंघ कर येह गुमान किया है कि आप मालदार लोगों में से हैं। मैं आप से कुछ कहना चाहता हूं, अगर इजाज़त हो तो अ़र्ज़ करूं ?" मैं ने कहा : "बताओ ! क्या बात है ?" उस ने क़रीब ही मौजूद एक उ़म्दा मह़ल की त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : "आप इस मह़ल को देख रहे हैं ?" मैं ने कहा : "हां।" कहा : "येह अ़ज़ीमुश्शान मह़ल मेरे वालिद का था इसे बेच कर हम खुरासान चले गए। गरदिशे अय्याम की ज़द में आ कर हम अपनी ने'मतों से मह़रूम होते चले गए, तंगदस्ती व मुफ़्लिसी ने हमारे आंगन में डेरे डाल लिये, बिल आख़िर मैं मजबूर हो कर यहां आया ताकि इस नए मालिक से कुछ इमदाद का मुत़ालबा करूं और अपने वालिद के बेहतरीन दोस्त सव्वार के पास पहुंच कर अपनी ह़ालत से आगाह करूं।"

नाबीना नौजवान की गुफ़्तगू सुन कर मैं ने पूछा : "तुम्हारे वालिद का नाम क्या है ?" जब उस ने अपने वालिद का नाम बताया तो वोह वाक़ेई मेरा बेहतरीन और सच्चा दोस्त था। मैं ने उस नौजवान से कहा : "ऐ नौजवान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे तेरे मत़लूब तक पहुंचा दिया, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने उस से नींद और खाने पीने को रोके रखा यहां तक, कि उसे तेरे पास ले आया। सुनो ! मैं ही तुम्हारे वालिद का दोस्त "**सव्वार**" हूं। आओ ! मेरे क़रीब आ कर बैठो।" नौजवान येह सुन कर ह़ैरानी व खुशी के आ़लम में मेरे क़रीब आ बैठा। मैं ने अपने कारोबारी वकील से दो हज़ार दिरहम लिये और उस नौजवान को देते हुवे कहा : "अभी येह रक़म अपने पास रख लो और कल मेरे घर चले आना। येह कह कर मैं वहां से चला आया। मैं ने सोचा क्यूं न इस वाक़िए़ की इत्तिलाअ़ ख़लीफ़ा महदी को दी जाए। चुनान्चे, मैं ख़लीफ़ा के पास पहुंचा और अव्वल से आख़िर तक सब वाक़िआ़ कह सुनाया। ख़लीफ़ा येह सुन कर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा और मेरे लिये दो हज़ार दिरहम देने का हुक्म दिया। मैं वापस आने लगा तो कहा : "बैठो और येह बताओ कि क्या तुम पर किसी का क़र्ज़ वग़ैरा है ?" मैं ने कहा : "हां ! मैं पचास हज़ार (50,000) दीनार का मक़रूज़ हूं।" ख़लीफ़ा चन्द लम्हे ख़ामोश रहा फिर थोड़ी देर गुफ़्तगू करने के बा'द कहा : "अब तुम अपने घर चले जाओ।" मैं वापस आने लगा तो मेरे साथ एक गुलाम था जिस के पास पचास हज़ार दीनार थे। उस ने मुझ से कहा : "ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया है कि इस रक़म के ज़रीए अपना क़र्ज़ अदा कीजिये।" मैं ने वोह रक़म ले ली।

आज दूसरा दिन था लेकिन वोह नाबीना नौजवान अभी तक न आया था। मैं उसी के इन्तिज़ार में था कि ख़लीफ़ा की त़रफ़ से बुलावा आ गया। मैं वहां पहुंचा तो ख़लीफ़ा ने कहा : "हम ने तुम्हारे मुआ़मले में ग़ौर किया तो इस नतीजे पर पहुंचे कि तुम्हारा क़र्ज़ तो अदा हो जाएगा लेकिन इस के बा'द

दीगर ज़रूरियात के लिये तुम्हें फिर किसी से क़र्ज़ लेना पड़ेगा या और किसी और अम्र की त़रफ़ मोह़ताजी होगी, लिहाज़ा मैं तुम्हें मज़ीद पचास हज़ार दीनार दे रहा हूं, जाओ ! येह तुम्हें मुबारक हों।" मैं पचास हज़ार दीनार ले कर दरबार से चला आया। अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि वोह नाबीना नौजवान आ गया। मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बड़ा जव्वादो करीम है उस ने अपने फ़ज़्लो करम की ख़ूब बारिश बरसाई है। येह लो ! येह दो हज़ार दीनार ले जाओ। अल्लाह तबारक व तआ़ला बहुत रह़ीमो करीम है।" नौजवान ने वोह रक़म ली और मुझे दुआ़एं देता हुवा रुख़्सत हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 419 पाक दामन मलिका

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद सादिक़ علیہ رحمۃ اللہ الرازق से मन्क़ूल है, बनी इस्राईल का एक शख़्स सफ़र पर जाने लगा तो अपने भाई से अ़हद लिया कि "तुम मेरी बीवी की ख़िदमत और देख भाल करोगे।" उस ने इक़रार कर लिया और यक़ीन दिहानी कराते हुवे कहा : "भाई जान ! आप बे फ़िक्र हो कर सफ़र पर जाएं, आप को किसी क़िस्म की कोई शिकायत न होगी, मैं हर त़रह़ से आप की ज़ौजा का ख़याल रखूंगा।" चुनान्चे, वोह मुत़मइन हो कर सफ़र पर रवाना हो गया। उस ने अपनी भाभी के साथ रहना शुरूअ़ कर दिया। औ़रत के हुस्नो जमाल ने उस की आंखों पर ग़फ़्लत का पर्दा डाल दिया, वोह अपनी भाभी पर आ़शिक़ हो गया और अपने भाई से किये हुवे अ़हद को तोड़ कर उस की बीवी को अपने इरादे से आगाह करते हुवे गुनाह की दा'वत दी। औ़रत पाक दामन व बा ह़या थी, उस ने इन्कार कर दिया। जब बद बख़्त व ख़ाइन देवर अपनी कोशिश में नाकाम होने लगा तो धमकी देते हुवे कहा : "अगर तुम ने मेरी बात न मानी तो मैं तुम्हें हलाक कर दूंगा।" औ़रत ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हारी गुनाह भरी दा'वत हरगिज़ हरगिज़ क़बूल न करूंगी, तुम जो चाहे कर लो।" पाकबाज़ औ़रत के ईमान अफ़रोज़ और जुरअत मन्दाना अन्दाज़ को देख कर वोह ख़ामोश हो गया। जब उस का भाई सफ़र से वापस आया तो कहा : 'मेरे भाई ! जानते हो ! तुम्हारी बीवी ने तुम्हारे जाने के बा'द क्या गुल खिलाया ? सुनो ! वोह मुझे बदकारी की दा'वत दिया करती थी, तौबा तौबा, वोह तो बड़ी बद चलन है। उस ने तुम्हारे जाने के बा'द न जाने क्या क्या बुरे काम किये हैं।"

भाई की येह बातें सुन कर उसे बहुत गुस्सा आया उस ने कहा : "जानते हो ! तुम क्या कह रहे हो ?" कहा : "भाई जान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं। मैं ने ह़क़ीक़त वाज़ेह़ कर दी है, अब तुम्हारी मरज़ी।" भाई की बातें सुन कर उस के दिल में येह बात जम गई कि "वाक़ेई मेरी बीवी ने ख़ियानत की है।" ग़म व गुस्से की वजह से उस ने अपनी बीवी से बात चीत बिल्कुल बन्द कर दी। बिल आख़िर एक रात मौक़अ़ पा कर अपनी पाकबाज़ बीवी को तल्वार के पे दर पे वार कर के शदीद ज़ख़्मी कर दिया। जब यक़ीन हो गया कि येह मर चुकी है तो वहां से चला गया। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की कुदरत कि शदीद ज़ख़्मी हो जाने के बा वुजूद नेक ख़ातून

अभी ज़िन्दा थी, वोह गिरती पड़ती एक राहिब के इ़बादत ख़ाने के क़रीब पहुंची, उस की दर्द भरी आहें सुन कर राहिब ने अपने गुलाम को बुलाया, दोनों उसे उठा कर इ़बादत ख़ाने में ले आए। नेक निय्यत राहिब बड़ी तवज्जोह से उस का इ़लाज करता रहा, जिस की वजह से वोह बहुत जल्द सिह़्ह़त याब हो गई। राहिब की ज़ौजा फ़ौत हो गई थी और उस का एक छोटा सा बच्चा था। राहिब ने औ़रत से कहा : "अब तुम ठीक हो गई हो अगर जाना चाहो तो ब ख़ुशी चली जाओ, अगर यहां रहना चाहो तो तुम्हारी मरज़ी।" औ़रत ने कहा : "मैं यहीं रह कर आप की ख़िदमत में ज़िन्दगी गुज़ारना चाहती हूं।" राहिब ने अपना बच्चा उस के ह़वाले कर दिया। नेक व पारसा ख़ातून बड़ी दिल जमई से उस की परवरिश करने लगी।

राहिब का **सियाह फ़ाम गुलाम** औ़रत के ह़ुस्न को देख कर बद निय्यत हो गया और मौक़अ़ की तलाश में रहने लगा। एक दिन उस ने अपनी निय्यते बद का इज़्हार करते हुवे उस पाक बाज़ व बा ह़या औ़रत को बदकारी की त़रफ़ बुलाया और कहा : "ब ख़ुदा ! या तो मेरी बात मान ले और मेरी ख़्वाहिश पूरी कर दे वरना मैं तुझे हलाक कर दूंगा।" ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाली नेक औ़रत ने कहा : "मैं हरगिज़ हरगिज़ तेरी बात नहीं मानूंगी तुझे जो करना है कर ले।" बदकार सियाह फ़ाम अपनी नाकामी पर मातम करता हुवा दिल में बुग़्ज़ लिये वहां से चला गया। रात की सियाही ने जब हर शै को ढांप लिया तो सियाह फ़ाम गुलाम औ़रत के पास आया, बच्चा उस की गोद में रो रहा था और वोह उसे बहला रही थी। ज़ालिम व शहवत परस्त सियाह फ़ाम गुलाम ने तेज़ छुरी से बच्चे का गला काट दिया, चन्द ही लम्ह़ों में उस ने तड़प तड़प कर जान दे दी। गुलाम दौड़ कर राहिब के पास गया और कहा : "ह़ुज़ूर ! क्या आप जानते हैं कि आप की उस मेहमान ख़बीष औ़रत ने क्या कारनामा किया है ? क्या आप को मा'लूम है उस ने आप के नन्हे मुन्ने बच्चे के साथ क्या सुलूक किया है ? आप ने उस के साथ एह़सान किया लेकिन उस ने आप के बच्चे के साथ बहुत बुरा सुलूक किया है। हाए ! हाए ! कैसी ज़ालिम औ़रत है।" राहिब गुलाम की बातें सुन कर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा और परेशान हो कर कहा : "तेरा नास हो ! बता तो सही उस ने मेरे बच्चे के साथ क्या किया है ?" कहा : "ह़ुज़ूर ! उस ने आप के लाडले बच्चे को ज़ब्ह़ कर डाला है, अगर यक़ीन नहीं आता तो चल कर ख़ुद अपनी आंखों से देख लें।" राहिब दौड़ता हुवा वहां पहुंचा तो देखा कि वाक़ेई बच्चे का गला कटा हुवा है और उस का जिस्म ख़ून में लत पत है। राहिब ने औ़रत से पूछा : "मेरे बच्चे को क्या हुवा ?" कहा : "मैं ने इस के साथ कुछ नहीं किया बल्कि आप के गुलाम ने मुझे गुनाह की दा'वत दी जब मैं ने इन्कार किया तो उस ने बच्चे को क़त्ल कर दिया। मैं इस मुआ़मले में बिल्कुल बे क़ुसूर हूं।"

राहिब ने कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तू ने अपने मुआ़मले में मुझे शक में मुब्तला कर दिया है, अब मैं नहीं चाहता कि तू मेरे साथ रहे। येह पचास (50) दीनार ले जा और जहां तेरा जी चाहे चली जा, येह दीनार तेरी ज़रूरियात में काम आएंगे।" औ़रत ने पचास दीनार लिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद लगाए ग़ैर मुतअ़य्यन मन्ज़िल की त़रफ़ चल दी। एक बस्ती के क़रीब से गुज़री तो देखा कि मजमअ़ लगा हुवा है और एक शख़्स को फांसी देने

के लिये लाया जा रहा है, बस्ती का सरदार भी वहीं मौजूद था। औ़रत सरदार के पास गई और कहा : "क्या ऐसा हो सकता है कि तुम मुझ से पचास दीनार ले लो और इस शख़्स को आज़ाद कर दो।" सरदार ने कहा : "लाओ ! रक़म मेरे ह़वाले करो।" औ़रत ने पचास दीनार दिये तो सरदार ने क़ैदी को रिहा कर दिया। वोह क़ैदी उस पाक बाज़ साबिरा ख़ातून के पास आया और कहा : "मेरी जान बचा कर तू ने जो एह़सान किया है आज तक किसी ने मुझ पर ऐसा एह़सान नहीं किया। अब मैं तेरी ख़िदमत करूंगा यहां तक कि मौत हमारे दरमियान जुदाई कर दे।"

चुनान्चे, वोह शख़्स उस औ़रत को ले कर साहि़ले समन्दर पर पहुंचा, कश्ती चलने ही को थी दोनों कश्ती में सुवार हो गए। औ़रत का हुस्नो जमाल देख कर सारे मुसाफ़िर ह़ैरान रह गए। वोह औ़रतों वाले हि़स्से में बैठ गई। लोगों ने क़ैदी से कहा : "येह ह़सीनो जमील औ़रत कौन है ?" उस बद बख़्त ने कहा : "येह मेरी ज़र ख़रीद लौंडी है।" कश्ती में मौजूद एक शख़्स जो इस औ़रत के हुस्न में गिरिफ़्तार हो चुका था, उस ने कहा : "क्या तुम अपनी लौंडी फ़रोख़्त करोगे ?" कहा : "मैं उसे बेचना नहीं चाहता क्यूंकि वोह मुझ से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करती है, जब उसे मा'लूम होगा कि मैं ने उसे बेच दिया है तो उसे मेरी त़रफ़ से बहुत तक्लीफ़ पहुंचेगी, उस ने मुझ से अ़हद लिया है कि मैं उसे कभी न बेचूंगा।" मुसाफ़िर ने कहा : "तू मुझ से मुंह मांगी क़ीमत ले ले और ख़ामोशी से चला जा ! तुझे क्या ज़रूरत है कि तू उसे बताए।" लालची व एह़सान फ़रामोश, धोके बाज़ क़ैदी ने माल के वबाल में फंस कर मुसाफ़िर से बहुत सारा माल लिया और कश्ती से उतर गया। मुसाफ़िर ने इस ख़रीदो फरोख़्त पर तमाम मुसाफ़िरों को गवाह बना लिया। औ़रत चूंकि मस्तूरात वाले हि़स्से में थी इस लिये इस मुआ़मले से बेख़बर रही। जब मुसाफ़िर को यक़ीन हो गया कि उस का मालिक जा चुका है अब वापस नहीं आ सकता तो वोह औ़रत के पास आया और कहा : "आज से तुम मेरी मिल्किय्यत में हो, मैं ने तुम्हें ख़रीद लिया है।"

औ़रत ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ कर ! तू ने मुझे कैसे ख़रीद लिया ? जब कि मैं आज़ाद हूं और किसी की मिल्किय्यत में नहीं।" मुसाफ़िर ने कहा : "इन बातों को छोड़, तेरा माकिल तुझे बेच कर यहां से जा चुका है। अब न तू अपने मालिक के पास जा सकती है न ही वोह रक़म वापस कर सकती है जो तेरे मालिक ने मुझ से ली है, मैं ने माले कषीर दे कर तुझे ख़रीदा है और तमाम मुसाफ़िर इस पर गवाह हैं। अगर यक़ीन नहीं आता तो इन से पूछ ले। सब मुसाफ़िरों ने कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दुश्मन ! इस ने वाक़ेई तुझे ख़रीदा है, हम सब इस पर गवाह हैं।" नेक व पाक बाज़, जुरअत मन्द औ़रत ने कहा : "तुम्हारा नास हो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं आज़ाद हूं, आज तक कभी कोई मेरा मालिक नहीं बना। मैं किसी की लौंडी नहीं कि मुझे कोई बेचे। तुम इस मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो। लोगों ने उस मुसाफ़िर से कहा : "येह इस त़रह़ बाज़ नहीं आएगी, इस के साथ जो सुलूक करना है कर डाल, ख़ुद ही मान जाएगी।" येह सुन कर मुसाफ़िर उस की त़रफ़ बढ़ा। जब उस मज़लूमा को अपनी इ़ज़्ज़त का ख़त़रा मह़सूस हुवा तो उस ने कश्ती वालों के लिये बद दुआ़ की। फ़ौरन कश्ती उन सब को ले कर डूब गई। सब के सब ग़र्क़ हो गए और कश्ती के तख़्ते पर औ़रत के इ़लावा कोई बाक़ी न बचा।

वोह ई़द का दिन था, बादशाह अपनी रिआ़या के साथ साहि़ले समन्दर पर आया हुवा था, तमाम लोग ख़ुशियां मना रहे थे, जब बादशाह ने कश्ती को डूबते देखा तो फ़ौरन तैराक सिपाहियों को हुक्म दिया : "जल्दी से कश्ती वालों की मदद को पहुंचो।" सिपाही गए तो उन्हें उस नेक औ़रत के इ़लावा कोई और ज़िन्दा न मिला। वोह उसे ले कर बादशाह के पास आए, बादशाह ने ह़क़ीक़ते ह़ाल दरयाफ़्त करते हुवे निकाह़ का पैग़ाम दिया। लेकिन उस ने येह कह कर इन्कार कर दिया : "मेरा क़िस्सा बड़ा अ़जीबो ग़रीब है, मेरे लिये निकाह़ करना जाइज़ नहीं।" बादशाह ने जब येह सुना तो उस के लिये अ़लाहि़दा मकान बनवा दिया और वोह उस में रहने लगी। लैलो नहार (या'नी रात दिन) गुज़रते रहे, वक़्त की गाड़ी तेज़ी से चलती रही। बादशाह को जब भी कोई अहम मुआ़मला पेश आता तो वोह उस पाक बाज़ औ़रत से मश्वरा करता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के मश्वरों में ऐसी बरकत दी कि इन पर अ़मल कर के बादशाह को हमेशा कामयाबी होती। अब बादशाह के नज़्दीक येह पाक बाज़ औ़रत बहुत मुअ़ज़्ज़म हो गई थी वोह उसे बहुत बा बरकत समझने लगा। जब बादशाह की मौत का वक़्त क़रीब आया तो उस ने अपने वज़ीरों, मुशीरों और रिआ़या को जम्अ़ कर के कहा : "ऐ लोगो ! तुम ने मुझे कैसा पाया ?" सब ने बयक ज़बान जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए, आप हमारे लिये रह़ीम बाप की त़रह़ हैं।" बादशाह ने कहा : "ऐ लोगो ! तवज्जोह से मेरी बात सुनो ! तुम ने मह़सूस किया होगा कि हमारी नेक सीरत मेहमान ख़ातून के क़ाबिले क़द्र मश्वरों की बदौलत हमारे मुल्क का निज़ाम बहुत बेहतर हो गया है। मैं ने इसे अपने हर मुआ़मले में बा बरकत पाया। मैं तुम्हारे लिये एक बहुत अच्छी तदबीर करना चाहता हूं।" लोगों ने तजस्सुस भरे अन्दाज़ में कहा : "आ़ली जाह ! हुक्म फ़रमाइयें आप क्या चाहते हैं ?" कहा : "मैं चाहता हूं कि अपने बा'द इस नेक सीरत ख़ातून को तुम पर मलिका मुक़र्रर कर दूं।" शफ़ीक़ व रह़ीम बादशाह के हुक्म पर "**लब्बैक**" कहते हुवे सब ने अ़र्ज़ की : "आ़ली जाह ! जैसा आप चाहते हैं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वैसा ही होगा।" चुनान्चे, बादशाह ने उस बा ह़या, नेक सीरत व साबिरा ख़ातून को पूरे मुल्क की सल्त़नत अ़त़ा कर दी और ख़ुद दारे फ़ानी से कूच कर के दारे बक़ा का राही बन गया।

उस ने मलिका बनते ही ए'लान कर दिया कि पूरे मुल्क के लोग बैअ़त के लिये जम्अ़ हो जाएं। हुक्मे शाही मिलते ही मुल्क के गोशे गोशे से लोग नए बादशाह की बैअ़त के लिये जम्अ़ हो गए। बैअ़त का सिलसिला शुरूअ़ हुवा। जब उस का शोहर और देवर आए तो हुक्म दिया कि इन दोनों को अ़लाहि़दा खड़ा कर दो। फिर वोह शख़्स आया जिसे फांसी दी जा रही थी (और जिस एह़सान फ़रामोश ने अपनी इस मोह़सिना को बेच दिया था) मलिका ने हुक्म दिया कि इसे भी उन दोनों के साथ खड़ा कर दो। फिर नेक सीरत राहिब और उस का बद किरदार सियाह फ़ाम ग़ुलाम आया तो उन्हें भी लोगों से अ़लाहि़दा कर दिया गया। जब तमाम लोग बैअ़त कर चुके तो मलिका ने इन पांचों को अपने पास बुलवाया और अपने शोहर से कहा : "क्या तुम मुझे पहचानते हो ?" उस ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप हमारी मलिका हैं।" कहा : "मैं तुम्हारी बीवी हूं। सुनो ! तुम्हारे बद किरदार ख़ाइन भाई ने मेरे साथ कैसा बुरा सुलूक किया था।" येह कह कर

सारा वाक़िआ़ उसे बताया और कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि तुम से जुदा होने से ले कर आज तक मुझे किसी मर्द ने नहीं छुवा। मैं आज भी पाक दामन व मह़फ़ूज़ हूं।" फिर उस ने अपने देवर को बुला कर फांसी का हुक्म दे दिया। फिर राहिब से कहा : "अगर आप की कोई ह़ाजत हो तो बताओ, मैं वोही औ़रत हूं जो तुम्हारे पास ज़ख़्मी ह़ालत में आई थी।" तुम्हारे बेटे को तुम्हारे इस ज़ालिम व शहवत परस्त सियाह फ़ाम ग़ुलाम ने ज़ब्ह़ किया था। फिर ग़ुलाम को बुलवा कर उसे भी क़त्ल करवा दिया। अब उस शख़्स की बारी थी जिसे फांसी दी जा रही थी और मलिका ने उसे बचाया था। जब वोह आया तो उसे भी क़त्ल कर दिया गया और उस की लाश चोराहे पर लटका दी गई और यूं वोह अपने अन्जामे बद को पहुंच गया। बा ह़या पाक दामन ख़ातून ने हर आन अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त की, अह़कामे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ को पेशे नज़र रखा और सब्रो इस्तिक़ामत से काम लिया। आज उसे ताजो तख़्त और इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत की दौलत मयस्सर थी। जब तक ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ ने चाहा वोह बहुस्नो ख़ूबी उमूरे सल्त़नत अन्जाम देती रही फिर इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस सबक़ आमोज़ ह़िकायत के अन्दर इ़ब्रत के बेशुमार मदनी फूल हैं। मषलन : (1) बिग़ैर तह़क़ीक़ के कभी किसी के बारे में बद गुमानी नहीं करनी चाहिये। (2) कभी भी ग़ैर मह़रम के साथ तन्हाई इख़्तियार नहीं करनी चाहिये और देवर तो मौत है। (3) नेक लोग मालो दौलत दे कर भी दूसरों को मुसीबतों और आफ़तों से बचाने की कोशिश करते हैं। (4) दौलत का ह़रीस अपने मोह़सिनों को भूल जाता है और उन के साथ ऐसा सुलूक कर गुज़रता है जो किसी त़रह़ भी रवा व जाइज़ नहीं। (5) बिला तह़क़ीक़ किसी पर कोई हुक्म नहीं लगाना चाहिये। (6) शहवत परस्ती गुनाहों के समन्दर में ग़र्क़ कर देती है और इस में डूब कर इन्सान जहन्नम की तह तक पहुंच जाता है। (7) इन्सान कैसी ही ह़ालत से दो चार हो फिर भी अह़कामे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की पाबन्दी करे और अपनी इ़ज़्ज़त व ईमान को किसी क़ीमत पर न छोड़े। (8) बन्दा मुसीबतों, ज़ुल्मो सितम की आंधियों और ग़म व हु़ज़्न की दुश्वार गुज़ार घाटियों से गुज़र कर एक न एक दिन ख़ुशियों और इ़ज़्ज़तों के गुलशन में ज़रूर पहुंचता है। (9) इन्सान को उस के बुरे आ'माल का बुरा और अच्छे आ'माल का अच्छा सिला ज़रूर मिलता है। जो हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़काम की पाबन्दी करता है वोह कभी नाकाम नहीं होता, नुस्रते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ हर वक़्त उस के साथ होती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें नेक उमूर पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। (10) अपनी इ़ज़्ज़त व इ़स्मत की हमेशा ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये। किसी भी ह़ालत में दौलते इ़ज़्ज़त की चादर दाग़दार नहीं होनी चाहिये क्यूंकि ईमान के बा'द इ़ज़्ज़त ही सब से बड़ी दौलत है। सब कुछ छूटे तो छूट जाए लेकिन ईमान व इ़ज़्ज़त हाथ से न जाने पाए वरना दोनों जहां की बरबादी है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ऐसी मदनी सोच अ़त़ा फ़रमाए कि हम भी हर ह़ाल में हुक्मे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ और सुन्नते नबवी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करें और गुनाहों से नफ़रत करते रहें।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 420 आईने जवां मर्दां ह़क़ गोई व बेबाकी

ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबू मुग़ीरा का बयान है : कूफ़ा में "**ह़ुतै़त**" नामी आ़बिद रहा करता था। उस की इ़बादत का येह आ़लम था कि रोज़ाना दो कुरआने पाक ख़त्म किया करता। हर साल कूफ़ा से बरहना पा (या'नी नंगे पाउं) नंगे सर मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا जाता। ज़ालिम ह़ाकिम "**ह़ज्जाज**" को उस के बारे में पता चला तो उस ने सिपाहियों को उस की तलाश में भेजा। जब उस नौजवान को लाया गया तो उस ने ह़ज्जाज से कहा : "मुझे यहां क्यूं बुलाया गया है ?" ह़ज्जाज ने कहा : "मैं तुम से कुछ पूछना चाहता हूं सच सच बताना।" कहा : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़हद किया है कि जब भी मुझ से कोई बात पूछी जाएगी मैं सच सच जवाब दूंगा, मुसीबत में मुब्तला कर दिया गया तो सब्र करूंगा, मुआ़फ़ कर दिया गया तो ह़म्द व शुक्र बजा लाऊंगा।" ह़ज्जाज ने कहा : "तुम मेरे बारे में क्या कहते हो ?" कहा : "ऐ ह़ज्जाज ! तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन है तुझे तो क़त्ल कर देना चाहिये। ह़ज्जाज ने पूछा : "अच्छा ख़लीफ़ा के बारे में तुम्हारी क्या राए है ?" कहा : "तू उस के शर के अंगारों में से एक अंगारा है वोह तेरी निस्बत ज़ियादा मुजरिम व क़ाबिले सज़ा है।"

येह सुन कर ह़ज्जाज ग़ैज़ो ग़ज़ब की आग में जल उठा और चिल्ला कर बोला : "इसे पकड़ लो और त़रह़ त़रह़ की दर्दनाक सज़ाओं का मज़ा चखाओ।" ख़ुशामदी सिपाहियों ने फ़ौरन उस दिलैर **मुजाहिद मुबल्लिग़** को पकड़ कर अज़िय्यत नाक सज़ाएं देनी शुरूअ़ कर दीं मगर उस सब्रो रिज़ा के पैकर ने बिल्कुल चीख़ो पुकार तक न की। जब ह़ज्जाज को ख़बर दी गई तो उस ने कहा : "कुछ बांस चीर कर इस के बरहना जिस्म पर सख़्ती से बांध दो फिर ज़ख़्मों पर नमक व सिर्का छिड़क कर बांसों की तेज़ धारों से इस की खाल नोच डालो।" हुक्म मिलते ही जल्लादों ने उस वलिय्ये कामिल के जिस्मे नाज़नीन पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़ डाले, जब सारा जिस्म ज़ख़्मों से चूर चूर हो गया तो ज़ख़्मों पर नमक और सिर्का डाला गया। लेकिन उस कोहे इस्तिक़ामत के पाए इस्तिक़लाल में ज़र्रा बराबर भी तज़लज़ुल न आया। ह़ज्जाज को जब येह ख़बर पहुंची तो कहा : "इसे बाज़ार ले जा कर चोराहे पर इस का सर क़लम कर दो।" चुनान्चे, उस ह़क़ गो मुबल्लिग़ को बाज़ार लाया गया, रावी का बयान है कि मैं उस वक़्त वहां पर मौजूद था। जब उस की आख़िरी ख़्वाहिश पूछी गई तो उस ने कहा : "मुझे पानी पिला दो।" उसे पानी दिया गया तो पानी पीते ही उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। इन्तिक़ाल के वक़्त उस आ़बिदो ज़ाहिद नौजवान की उ़म्र अठ्ठारह बरस थी।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। آمين بجاه النبي الامين صلى الله عليه وسلم}*

हिकायत नम्बर : 421

शद्दाद की जन्नत

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है : "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने गुमशुदा ऊंटों की तलाश में निकले। जब अ़दन के सहरा में पहुंचे तो एक अ़ज़ीमुश्शान शहर ज़ाहिर हुवा जिस के गिर्द क़ल्आ़ बना हुवा था और क़ल्ए़ के इर्द गिर्द बहुत से ख़ूब सूरत महल थे। वोह येह सोच कर उस त़रफ़ गए कि किसी से अपने ऊंटों के मुतअ़ल्लिक़ पूछ लेंगे, लेकिन वहां कोई नज़र न आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवारी से उतर कर गले में तल्वार लटकाए क़ल्ए़ में दाख़िल हुवे तो दो बड़े बड़े दरवाज़े देखे जिन पर सफ़ेद व सुर्ख़ क़ीमती मोती जड़े हुवे थे, ऐसे मज़बूत़ और ख़ूब सूरत दरवाज़े आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले कभी न देखे थे। वीरान सहरा में अ़ज़ीमुश्शान ख़ूब सूरत शहर देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत घबराए। जब एक दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुवे तो अपने आप को एक ऐसे शहर में पाया जिस में बहुत से महल्लात थे। हर महल के ऊपर कमरे थे जिन के ऊपर सोने से बने हुवे बहुत से कमरे थे। इन की ता'मीर में सोना, चांदी और क़ीमती जवाहिरात इस्ति'माल किये गए थे। इन मकानों की बुलन्दी, शहर में ता'मीर शुदा कमरों जितनी थी। सेहन में जा बजा क़ीमती पथ्थर और मुश्क व ज़ा'फ़रान की डलियां बिखरी हुई थीं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां से कुछ क़ीमती मोती और मुश्क व ज़ा'फ़रान की डलियां उठाईं, लेकिन दरवाज़ों और सेहन में नस्ब मोतियों और जवाहिरात को जुदा न कर सके। फिर अपनी ऊंटनी पर सुवार हो कर उस के क़दमो के निशानात पर चलते हुवे वापस यमन पहुंचे और लोगों को उस अ़जीबो ग़रीब शहर के मुतअ़ल्लिक़ बताते हुवे वहां से लाई हुई चीज़ें दिखाईं। त़वील अ़र्सा गुज़रने की वजह से उन मोतियों का रंग पीला हो चुका था।

जब येह वाक़िआ़ पूरे मुल्क में मश्हूर हो गया तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने पास बुला कर वाक़िआ़ दरयाफ़्त किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस अ़जीबो ग़रीब शहर और वहां की अश्या के मुतअ़ल्लिक़ सब कुछ बता दिया। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह बातें बड़ी अ़जीब मा'लूम हुईं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुतअ़ज्जिब हो कर पूछा : "तुम ने जो बातें बयान कीं इन के सच होने के बारे में, मैं कैसे यक़ीन कर लूं ?" अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं वहां के मोती जवाहिरात अपने साथ ले आया था, कुछ चीज़ें अब भी मेरे पास मौजूद हैं, येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ याक़ूत पेश किये जो आ़म याक़ूतों की निस्बत क़दरे पीले हो चुके थे। कुछ मुश्क की डलियां पेश कीं जिन में ख़ुश्बू न थी, लेकिन जब इन्हें तोड़ा गया तो इन में से तेज़ ख़ुश्बू निकली जिसे अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूंघा इसी त़रह ज़ा'फ़रान की ख़ुश्बू भी सूंघी। अब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस वाक़िए़ का यक़ीन हो गया था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से पूछा : "ऐसा कौन है ? जो मुझे उस अ़जीबो ग़रीब शहर और उस के बानी का नाम बताए और येह बताए कि येह

किस क़ौम का वाक़िआ़ है ?" खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद علٰی نبینا وعلیھما الصلوۃ والسلام की मिष्ल किसी को सल्त़नत अ़त़ा नहीं की गई, इस त़रह़ का शहर तो उन के मुल्क में भी न था।" बा'ज़ लोगों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ज़माने में पूरी दुन्या में इस वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ सह़ीह़ मा'लूमात सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही फ़राहम कर सकते हैं। अगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुनासिब समझें तो उन्हें बुलवाएं और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन किलाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को छुपा दें, अगर वाक़ेई़ येह उस शहर में दाख़िल हुवे होंगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शहर और इस में दाख़िल होने वाले के बारे में ज़रूर बताएंगे क्यूंकि येह ऐसा अ़ज़ीम मुआ़मला है कि इस शहर में दाख़िल हो कर इस के अस्रार (या'नी राज़ों) से वाक़िफ़ होने वाले का ज़िक्र साबिक़ा कुतुब में ज़रूर होगा। ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो अश्या ज़मीन पर पैदा फ़रमाईं, जो वाक़िआ़त व ह़ादिषात रू नुमा हुवे और मुस्तक़बिल में जो भी अ़ज़ीम वाक़िआ़त होंगे वोह तमाम के तमाम तौरात में मुफ़स्सल बयान कर दिये गए। और इस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ साबिक़ा कुतुब के सब से बड़े आ़लिम हैं। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह आप को इस वाक़िए़ की ख़बर ज़रूर देंगे।"

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलवा कर फ़रमाया : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मैं ने तुम्हें एक बड़े काम के लिये बुलाया है, उम्मीद है कि तुम्हारे पास इस का इ़ल्म ज़रूर होगा।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़लीमो ख़बीर है, उस के सामने सब आ़जिज़ हैं। मेरा सारा इ़ल्म उसी की अ़त़ा से है, फ़रमाइये ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क्या पूछना चाहते हैं ?" फ़रमाया : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे बताओ कि क्या दुन्या में किसी ऐसे शहर के मुतअ़ल्लिक़ तुम्हें कोई ख़बर पहुंची है जो सोने चांदी की ईंटों से बनाया गया हो। जिस के सुतून ज़बरजद और याक़ूत के हों। जिस के मह़ल्लात और बाला ख़ानों को मोतियों से मुज़य्यन किया गया हो, जिस में बाग़ात और नहरें जारी हो और जिस के रास्ते कुशादा हों।"

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मुझे ज़न्ने ग़ालिब था कि उस शहर और उस के बनाने वाले के मुतअ़ल्लिक़ मुझ से ज़रूर सुवाल किया जाएगा। उस शहर की जो सिफ़ात आप ने बयान कीं और जो कुछ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया गया वोह ह़क़ है। इस को "**शद्दाद बिन आ़द**" ने बनाया और इस का नाम "**इरम**" है। जिस के बारे में **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी किताब क़ुरआने मजीद में इस त़रह़ इरशाद फ़रमाया :

اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۪ۙ الَّتِیْ لَمْ یُخْلَقْ مِثْلُهَا فِی الْبِلَادِ ۪ۙ (پ۳۰، الفجر:۷۔۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह इरम ह़द से ज़ियादा तूल वाले कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुवा।*

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : “ऐ का'ब رضی اللہ تعالٰی عنہ **अल्लाह** عزّوجلّ आप رضی اللہ تعالٰی عنہ पर रह़्म फ़रमाए, इस के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सील से बताइये।”

फ़रमाया : “ऐ अमीरल मोअमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنہ आ़द के दो बेटे थे, शदीद और शद्दाद। जब आ़द का इन्तिक़ाल हुवा तो दोनों बेटों ने सरकशी की और क़ह्‌रो ग़ज़ब से तमाम शहरों पर ज़बरदस्ती मुसल्लत़ हो गए। कुछ हुक्मरान तो डर कर इन की इत़ाअ़त पर मजबूर हुवे और बक़िय्या से जंगो जिदाल कर के अपनी सल्त़नत में शामिल कर लिया। यहां तक कि तमाम लोग इन के सामने घुटने टेकने पर मजबूर हो गए। इन के ज़माने में मशरिक़ो मग़रिब में कोई ऐसा न था जिस ने त़ौअ़न या करहन (या'नी ख़ुश दिली या मजबूरी से) इन की हुक्मरानी क़बूल न की हो। जब दोनों की सल्त़नत ख़ूब मज़बूत हो गई और हर जगह इन की बादशाहत के सिक्के बैठ गए तो “**शदीद**” मर गया। अब “**शद्दाद**” अकेला ही पूरी सल्त़नत का बादशाह था। किसी को इस से जंगो जिदाल करने की हिम्मत न थी। शद्दाद को साबिक़ा कुतुब पढ़ने का बहुत शौक़ था। उन किताबों में जब भी जन्नत और इस में मौजूद मह़ल्लात, याक़ूत, जवाहिरात और बाग़ात का तज़्किरा पढ़ता या सुनता तो उस का शरीर नफ़्स उसे इस बात पर उभारता कि तू भी ऐसी जन्नत बना सकता है।

जब उस बद बख़्त व नामुराद के दिल में येह बात बैठ गई तो ख़ज़ानचियों को बुलाया और हर ख़ज़ानची को एक एक हज़ार मददगार दे कर कहा : “जाओ ! और रूए ज़मीन का सब से बड़ा और उ़म्दा जंगल तलाश करो। फिर उस में एक ऐसा शहर बनाओ जो सोने, चांदी, याक़ूत, ज़बरजद और मोतियों से मुज़य्यन हो। उस के नीचे ज़बरजद के सुतून ऊपर मह़ल्लात और बाला ख़ाने हों, फिर उन के ऊपर मज़ीद बेहतरीन व उ़म्दा कमरे हों उन कमरों के ऊपर भी बाला ख़ाने हों। मह़ल्लात के नीचे गली कूचों में हर क़िस्म के ऐसे मेवादार दरख़्त हों जिन के नीचे नहरें बहती हों। क्यूंकि मैं ने साबिक़ा कुतुब में जिस जन्नत के बारे में पढ़ा और सुना वोह ऐसी ही है। और मैं ऐसी जन्नत दुन्या ही में बनाना चाहता हूं।” शद्दाद मलऊ़न की येह बात सुन कर ख़ज़ानचियों ने कहा : “आप ने उस शहर की जो सिफ़ात बयान की हैं उस की ता'मीर के लिये इतने सारे याक़ूत, ज़बरजद, हिरे जवाहिरात और सोना चांदी कहां से लाएंगे।” कहा : “क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि इस वक़्त सारी दुन्या पर मेरी हुकूमत है ?” उन्हों ने कहा : “क्यूं नहीं ! बेशक ऐसा ही है।” कहा : “तो फिर पूरी दुन्या में फेल जाओ ! ज़मीन पर, समन्दर में जहां जहां ज़बरजद, याक़ूत और हीरे जवाहिरात का ख़ज़ाना हो सब ले लो और हर क़ौम पर एक ऐसा फ़र्द मुक़र्रर करो जो अपनी क़ौम के तमाम ख़ज़ाने जम्अ़ कर ले। जितना हमें मत़्लूब है इस से कहीं ज़ियादा ख़ज़ाना दुन्या में मौजूद है।” येह कह कर शद्दाद ने पूरी दुन्या के बादशाहों को पैग़ाम भिजवाया कि वोह अपने अपने मुल्क का ख़ज़ाना मेरे शहर में भिजवा दें। हुक्म पाते ही सारी दुन्या के बादशाह दस साल तक शद्दाद के शहर में अपने अपने मुल्क का ख़ज़ाना जम्अ़ कराते रहे। जिस में सोना, चांदी, याक़ूत, ज़बरजद, हीरे जवाहिरात, अल ग़रज़ हर क़िस्म की ज़ैबो ज़ीनत का सामान था।

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन बादशाहों की ता'दाद कितनी थी ?" फ़रमाया : ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह दो सो साठ (260) थे, जब सब सामान जम्अ़ हो गया तो काम करने वाले निकले ताकि ऐसी जगह तलाश करें जहां शद्दाद की जन्नत बनाई जा सके काफ़ी तलाश के बा'द वोह ऐसे सह़रा में पहुंचे जो टीलों और पहाड़ियों वग़ैरा से ख़ाली था वोह कहने लगे कि येही वोह जगह है जिस का हमें हुक्म दिया गया है। बस फिर क्या था ! कारीगर और मज़दूर जूक़ दर जूक़ वहां पहुंचने लगे जितनी जगह दरकार थी उस की ह़द मुक़र्रर की, चश्मे खोदे, गली कूचे बनाए, नहरों के लिये गढ़े खोदे इन की जड़ों में ख़ुश्बूदार सफ़ेद पथ्थर रखे। फिर इमारतों और सुतूनों के लिये बुन्यादें खोदी गईं और इन में भी बहुत क़ीमती और मज़बूत़ पथ्थर लगाए गए। अब ज़बरजद, याक़ूत, सोना चांदी और हीरे जवाहिरात मंगवाए गए। कारीगर सुतून बनाने लगे, मे'मार सोने चांदी की ईंटों से मह़ल्लात ता'मीर करने लगे, दूध और ख़ुश्बूदार पानी की नहरें जारी की गईं। और इस त़रह़ इस शहर की ता'मीर मुकम्मल हुई।

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ का'ब ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरा ख़याल है कि उन्हें इस शहर की ता'मीर में बहुत अ़र्सा लगा होगा ?" कहा : "जी हां ! मैं ने "**तौरात**" में पढ़ा कि येह सारा काम तीन सो (300) साल में मुकम्मल हुवा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "शद्दाद बद बख़्त की उ़म्र कितनी थी ?" फ़रमाया : "नव सो (900) साल।" फ़रमाया : "ऐ अबू इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप ने हमें अ़जीबो ग़रीब ख़बर दी है, इस बारे में मज़ीद कुछ बताइये।" फ़रमाया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस का नाम "اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ" रखा इस के सुतून ज़बरजद व याक़ूत के थे, इस शहर के इ़लावा पूरी दुन्या में कोई और शहर ऐसा नहीं जो ज़बरजद व याक़ूत से बनाया गया हो। चुनान्चे, फ़रमाने ख़ुदावन्दी है :

اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۪ۙ الَّتِیْ لَمْ یُخْلَقْ مِثْلُهَا فِی الْبِلَادِ ۪ۙ (پ ۳۰، الفجر: ۷-۸)

__तर्जमए कन्ज़ुल ईमान__ : वोह इरम ह़द से ज़ियादा तूल वाले कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुवा।

ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस जैसा कोई और शहर नहीं, जब शद्दाद को इस की तक्मील की ख़बर दी तो उस ने कहा : "जाओ ! उस के गिर्द मज़बूत क़ल्आ़ बनाओ और क़ल्ए़ के गिर्द एक हज़ार मह़ल बनाओ, हर मह़ल में एक हज़ार झंडे गाड़ो और हर हर झंडे पर एक मख़्सूस निशान बनाओ, येह मह़ल्लात मेरे वुज़रा के लिये होंगे।" हुक्म पाते ही कारीगर मसरूफ़े अ़मल हो गए। फ़राग़त के बा'द जब कारीगरों ने शद्दाद को ख़बर दी तो उस ने अपने ख़ास वज़ीरों में से एक हज़ार वुज़रा को हुक्म दिया कि मेरी इस बनाई हुई जन्नत की त़रफ़ चलने की तय्यारी करो।" हर ख़ासो आ़म "इरम" की त़रफ़ जाने की तय्यारी में लग गया। लोगों ने झंडे और निशानात उठा लिये, हुक्म जारी हुवा कि मेरे वुज़रा और ख़ास ओ़हदे दारान, अपनी औ़रतों, ख़ादिमों और कनीज़ों को ले जाने की तय्यारी करें। फिर शद्दाद ने वुज़रा और दूसरे लोगों को बहुत

सारी दौलत व ख़ुर्दो नौश का सामान देने का हुक्म जारी किया। तमाम लोग दस साल तक उस जन्नत में जाने की तय्यारी करते रहे। शद्दाद ने दो आदमियों को अपने शहर का निगरान मुक़र्रर किया और इजाज़ते आ़म दे दी कि जो आना चाहे मेरे साथ आ जाए। अब शद्दाद बड़े जाहो जलाल और मुतकब्बिराना व फ़ातिहा़ना अन्दाज़ में बड़ी शानो शौकत से सिपाहियों के झुरमुट में रवाना हुवा। जब वोह उस जन्नत से सिर्फ़ एक दिन और एक रात के फ़ासिले पर रह गया तो ख़ालिके़ काइनात, मालिके लम यज़ल, क़ादिरे मुत़लक़ ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर عَزَّوَجَلَّ ने उन पर अ़ज़ाब भेजा, आस्मान से एक चीख़ सुनाई दी शद्दाद नामुराद अपनी बनाई हुई जन्नत की एक झलक देखे बिग़ैर ही अपने तमाम हमराहियों के साथ हलाक हो गया, सब लश्करी तबाहो बरबाद हो गए और कोई भी उस शहर में दाख़िल न हो सका। और अब क़ियामत तक भी कोई उस में दाख़िल नहीं हो सकता। ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह था ''इरम'' का सारा वाक़िआ़। हां ! आप के ज़माने में एक शख़्स उस में दाख़िल होगा, वोह उस की तमाम चीज़ें देखेगा और वापस आ कर बयान करेगा। लेकिन उस की तस्दीक़ नहीं की जाएगी, कोई उस की बात मानने को तय्यार न होगा।''

येह सुन कर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ अबू इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क्या आप उस में दाख़िल होने वाले शख़्स की कुछ सिफ़ात बता सकते हैं ?'' फ़रमाया : ''हां ! वोह शख़्स सुर्ख़ व भूरा और पस्त क़द होगा उस की आंखें नीली होंगी और उस के अब्रू पर एक तिल होगा। वोह अपने गुमशुदा ऊंट की तलाश में उस सह़रा में जाएगा तो उस पर वोह शहर ज़ाहिर होगा। वोह उस में दाख़िल हो कर कुछ चीज़ें वहां से उठा लाएगा।'' उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बैठे हुवे थे। ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की त़रफ़ देखा तो फ़रमाया : ''ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येही वोह शख़्स है जो उस में दाख़िल हुवा है, आप इस से वोह चीज़ें पूछ लीजिये जो मैं ने आप को बताई।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ अबू इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह तो मेरे ख़ादिमों में से है और मेरे पास ही है।'' फ़रमाया : ''या तो येह उस शहर में दाख़िल हो चुका है या अ़नक़रीब दाख़िल होगा, बस येही वोह शख़्स है।'' येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ अबू इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तुम्हें दूसरे उ़-लमा पर फ़ज़ीलत दी है, बेशक ! तुम्हें अव्वलीन व आख़िरीन का इ़ल्म दिया गया है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''क़सम है उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में का'ब की जान है ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कोई चीज़ पैदा नहीं फ़रमाई मगर उस की तफ़्सीर अपने बर्गुज़ीदा रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बता दी।'' बेशक क़ुरआने करीम बहुत बुलन्द व अ़ज़ीम और वई़द सुनाने वाला है।''

हिकायत नम्बर : 422

अनोखी रस्सियां

हज़रते सय्यिदुना उ़तबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى अपने वालिद के ह़वाले से बयान करते हैं कि "रूमियों ने मुसलमान औ़रतों को क़ैद कर लिया। जब येह ख़बर ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد को पहुंची तो उन्हों ने मुसलमानों को जिहाद की तरग़ीब दिलाई, मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار भी लोगों को जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह के लिये उभारने लगे। जज़्बए जिहाद से सरशार मुसलमान मुल्क के गोशे गोशे से "**रिक़्क़ा**" में जम्अ़ होने लगे, हर कोई ह़स्बे हैसिय्यत जिहाद में शिर्कत के लिये तय्यार था। जब मुजाहिदीन का लश्कर दुश्मनाने इस्लाम की सरकोबी के लिये रवाना हुवा तो मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की त़रफ़ एक थैली फेंकी गई जो अच्छी त़रह़ बन्द की गई थी उस के साथ एक रुक़्आ़ भी था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने थैली उठाई और उस में मौजूद रुक़्आ़ पढ़ा तो उस पर येह इ़बारत दर्ज थी :

"मैं अ़रबी औ़रतों में से एक औ़रत हूं, मुझे ख़बर मिली है कि रूमियों ने मेरी मुसलमान बहनों को क़ैद कर लिया है और अब दुश्मनों की सरकोबी के लिये मुजाहिदीन का लश्कर अपनी जानों और मालों के साथ जिहाद पर रवाना हो रहा है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुसलमानों को जिहाद की ख़ूब तरग़ीब दिलाई है। हर एक ने अपनी अपनी हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ जिहाद में ह़िस्सा लिया। मैं भी अपने जिस्म की अ़ज़ीम शै राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पेश कर रही हूं इस थैली में मेरे सर के बाल हैं जिन्हें मैं ने काट कर रस्सिया बना दी हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा ! मुजाहिदीन के घोड़ों को इन रस्सियों से बांधना, शायद ! मेरा येही अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मक़्बूल हो जाए कुछ बई़द नहीं कि मेरा पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरी इस ह़ालत और मेरे बालों को मुजाहिदीन की रस्सियों में देख कर मुझ पर रह़्म फ़रमाए और मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे।"

वस्सलाम : एक मुसलमान औ़रत

मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْه رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने येह ख़त़ और थैली ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد को दी तो वोह उस औ़रत का जज़्बए ईमानी देख कर ज़ारो क़ित़ार रोने लगे और पूरे लश्कर को उस औ़रत के अ़ज़ीम कारनामे से आगाह किया और फिर लश्कर को कूच का हुक्म दिया।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो..और..इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। آمين بجاه النبی الامين صلی الله تعالی عليه وسلم}*

हिकायत नम्बर : 423

बादशाह दुरवेश कैसे बना....?

हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد से एक वाक़िआ़ बयान किया तो इस का उन के दिल पर बड़ा गहरा असर हुवा। मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास गया और उन्हें अमीरुल मोअमिनीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين की ह़ालत से आगाह किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा :

"तुम ने ऐसा कौन सा वाक़िआ़ बयान किया जिस की वजह से अमीरुल मोअमिनीन عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمُبِيۡن की येह ह़ालत हुई ?" मैं ने कहा : "मैं ने उन्हें येह वाक़िआ़ सुनाया था कि साबिक़ा बादशाहों में से एक बादशाह ने बड़ा ही ख़ूब सूरत शहर ता'मीर किया जिस में तमाम सहूलिय्यात मुहय्या कीं । उस की ता'मीर व तरक़्क़ी के लिये ख़ूब कोशिश की और ह़त्तल इम्कान उस में कोई ऐ़ब वाली चीज़ न छोड़ी । उस की कोशिश थी कि मैं ऐसा शहर बनाऊं जिस में कोई ख़राबी व ख़ामी न हो । जब उसे इत्तिलाअ़ दी गई कि शहर की ता'मीर मुकम्मल हो चुकी है तो उस ने शहर में एक पुर तकल्लुफ़ दा'वत का एहतिमाम किया और लोगों को बारी बारी शहर में भेजता रहा, दरवाज़े पर सिपाही खड़े कर दिये ताकि दा'वत खा कर आने वाले हर शख़्स से पूछा जाए कि हमारे इस शहर में कोई नुक़्स या ख़राबी तो नहीं ?"

जिस से भी पूछा जाता वोह येही कहता : "इस शहर में कोई ऐ़ब नहीं येह हर लिह़ाज़ से मुकम्मल है ।" दा'वत का सिलसिला चलता रहा सब से आख़िर में चन्द ऐसे लोग शहर में दाख़िल हुवे जिन के कन्धों पर थैले थे । जब उन से पूछा गया : "क्या तुम ने बादशाह के इस अ़ज़ीमुश्शान शहर में कोई ऐ़ब देखा है ?" तो उन्हों ने कहा : "हां ! हम ने इस में दो बड़े बड़े ऐ़ब देखे हैं ।" येह सुन कर सिपाहियों ने उन ख़िरक़ा पोश बुज़ुर्गों को पकड़ लिया और बादशाह को इत्तिलाअ़ दी । बादशाह ने कहा : "मैं तो इस शहर में एक हल्के से ऐ़ब पर भी राज़ी नहीं, उन्हें इस में दो बड़े बड़े कौन से ऐ़ब नज़र आ गए, जाओ ! जल्दी से उन्हें मेरे पास लाओ ।" जब बुज़ुर्गों का क़ाफ़िला आया तो बादशाह ने पूछा : "क्या तुम ने शहर में कोई ऐ़ब देखा है ?" फ़रमाया : "हां ! उस में दो ऐ़ब हैं ।" बादशाह ने परेशान हो कर पूछा : "जल्दी बताओ ! वोह कौन से ऐ़ब हैं ?" कहा : "तेरा येह शहर ख़राब और फ़ना हो जाएगा और इस में रहने वाला भी मर जाएगा ।"

समझदार बादशाह ने कहा : "क्या तुम किसी ऐसे घर के बारे में जानते हो जो कभी फ़ना न हो और उस का मालिक कभी मौत का शिकार न हो ?" बुज़ुर्गों ने कहा : "अगर उस घर के ख़्वाहिश मन्द हो तो तख़्तो ताज छोड़ कर हमारे साथ चले आओ ।" बादशाह ने कहा : "ठीक है मैं तय्यार हूं, लेकिन मैं अ़लानिय्या तुम्हारे साथ गया तो मेरे वुज़रा नहीं जाने देंगे । हां ! फ़ुलां वक़्त मैं तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा ।" चुनान्चे, वोह बुज़ुर्ग वहां से चले आए और मुक़र्ररा वक़्त पर इन्तिज़ार करने लगे । बादशाह ने तख़्तो ताज छोड़ा, फ़क़ीराना लिबास ज़ेबेतन किया और बुज़ुर्गों के साथ शामिल हो गया । काफ़ी अ़र्सा वोह उस क़ाफ़िले के साथ रहा । एक दिन उन्हें मुतवज्जेह कर के कहा : "अब मुझे इजाज़त दो मैं कहीं और जाना चाहता हूं ।" बुज़ुर्गों ने कहा : "क्या तुम्हें हमारे दरमियान कोई नागवार बात पेश आई है ?" कहा : "ऐसी कोई बात नहीं ।" पूछा : "फिर क्यूं जाना चाहते हो ?" कहा : "बात दर अस्ल येह है कि तुम मुझे जानते हो इस लिये इ़ज़्ज़तो एह़तिराम करते हो । अब मैं ऐसी जगह जाना चाहता हूं, जहां मुझे कोई जानने वाला न हो ।" येह कह कर बादशाह एक ना मा'लूम मन्ज़िल की जानिब चला गया ।

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : इस के बा'द मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से कहा : "येह था वोह वाक़िआ़ जो मैं ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد को सुनाया था ।" फिर ह़ज़रते

सय्यिदुना मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इजाज़त ले कर मैं वापस आ गया। एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد मुझ से येही वाक़िआ़ सुन रहे थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हाज़िर हुवे तो अमीरुल मोअमिनीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ने फ़रमाया : "ऐ मुस्लिम ! तुम्हारा भला हो, उस शख़्स के बारे में तुम्हारी क्या राए है जिस पर उस की बरदाश्त से ज़ियादा बोझ डाल दिया गया हो। अगर ऐसा शख़्स उस बोझ (या'नी हुकूमत की ज़िम्मेदारी) को छोड़ कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़ल्वत नशीन हो जाए तो क्या उस पर कुछ ह़रज है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरिये। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन को छोड़ कर चले गए तो येह अपनी ही तल्वारों से एक दूसरे को क़त्ल कर डालेंगे।" अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد ने फ़रमाया : "ऐ मुस्लिम ! मैं क्या करूं ? येह ख़िलाफ़त का भारी बोझ मेरी बरदाश्त से बाहर है।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बार बार येही कहते रहे और ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप को तसल्ली देते रहे। यहां तक कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़बीअ़त संभल गई।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین ﷺ}*

ह़िकायत नम्बर : 424 ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आख़िरी वसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इब्राहीम इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मन्क़ूल है, मैं ने अपने दादा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना : जब ख़लीफ़ए अव्वल अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल क़रीब आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस त़रह़ वसिय्यत लिखवाई :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

येह वोह अ़हद है जो अबू बक्र सिद्दीक़ ने अपने आख़िरी वक़्त में किया, येह उस का दुन्या से निकलने का आख़िरी और आख़िरत में दाख़िल होने का पहला वक़्त है। येह ऐसी ह़ालत होती है कि काफ़िर भी ईमान ले आता, फ़ासिक़ व फ़ाजिर मुत्तक़ी बन जाता और झूटा तस्दीक़ करने लगता है। मैं अपने बा'द उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर के जा रहा हूं। अगर वोह अ़द्लो इन्साफ़ से काम लें तो मेरा उन के बारे में येही गुमान है वोह मेरे मे'यार के मुत़ाबिक़ होंगे। और अगर ज़ुल्म व ज़ियादती करें तो उन का अ़मल उन्हीं के साथ है, मैं ने तो ख़ैर ही का इरादा किया है और **अल्लाह** अ़ल्लामुल ग़ुयूब (या'नी ग़ैबो का जानने वाला) है, मुझे ग़ैब का इ़ल्म नहीं। **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَسَیَعۡلَمُ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡۤا اَیَّ مُنۡقَلَبٍ یَّنۡقَلِبُوۡنَ ﴿۲۲۷﴾

(پ۱۹، الشعراء: ۲۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे।*

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ हुक़ूक़ ऐसे हैं जो रात में अदा किये जाते हैं दिन में करने से वोह उन्हें क़ुबूल नहीं फ़रमाता। इसी त़रह़ कुछ अ़मल दिन के हैं जो रात में करने से क़ुबूल नहीं होते। ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) भारी पलड़े वाले वोही लोग हैं जिन का पलड़ा बरोज़े क़ियामत भारी होगा। उस रोज़ जिन का पलड़ा हल्का रहा वोही लोग हल्के आ'माल व मीज़ान वाले हैं। और ऐसे लोगों की इत्तिबाअ़ बिल्कुल बात़िल है जिन के आ'माल का वज़्न कम है। और हल्का पलड़ा वोही होगा जिस में बात़िल अश्या होंगी। ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) सब से पहले मैं तुम्हें तुम्हारे बारे में और फिर लोगों के मुतअ़ल्लिक़ डराता हूं। बेशक वोह नज़रें जमा कर देख रहे हैं, उन के सीने फूल चुके हैं और वोह फिसलने वाले हैं। तुम उन लोगों में शामिल होने से बचना, जब तक तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहोगे लोग तुम से डरते रहेंगे। ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नमियों का ज़िक्र फ़रमाया तो उन के बुरे आ'माल के साथ फ़रमाया और उन के अच्छे अ़मल रद्द कर दिये गए। मैं ने जब भी उन लोगों को याद किया तो डरा कि कहीं मैं भी उन में से न हो जाऊं। और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अहले जन्नत का ज़िक्र फ़रमाया तो उन के अच्छे आ'माल के साथ फ़रमाया और उन की बुराइयों से दरगुज़र फ़रमाया। मैं ने जब भी उन लोगों को याद किया तो ख़ौफ़ ज़दा हुवा कि कहीं उन में शामिल होने से रह न जाऊं। **अल्लाह** तआ़ला ने जहां आयते रह़मत बयान फ़रमाई वहां आयते अ़द्ल भी बयान फ़रमाई ताकि मोमिन उम्मीदो ख़ौफ़ के दरमियान रहे। ऐ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) येह मेरी तुम्हें वसिय्यत है अगर इसे याद रखोगे तो मौत से ज़ियादा तुम्हें कोई चीज़ मह़बूब न होगी और वोह अ़नक़रीब आने ही वाली है। और अगर तुम ने मेरी वसिय्यत को ज़ाएअ़ कर दिया तो मौत से ज़ियादा ना पसन्दीदा चीज़ तुम्हारे नज़दीक कोई न होगी और इस से छुटकारा किसी सूरत मुमकिन नहीं।" وَعَلَیْکَ السَّلَام

येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आख़िरी वसिय्यत थी।

सायए मुस्त़फ़ा मायए अस्त़फ़ा इ़ज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम
या'नी उस अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ बा'दर्रुसुल षानिये अषनीने हिजरत पे लाखों सलाम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो* آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हि़कायत नम्बर : 425 ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन عليه رحمة ربّ الكونين और दाना शख़्स

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन अबू हिलाल عليه رحمة الله الجلال से मरवी है कि एक मरतबा पूरी दुन्या के बादशाह ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन عليه رحمة ربّ الكونين दौराने सफ़र एक शहर में दाख़िल हुवे तो तमाम शहर वाले ज़ियारत के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रफ़ बढ़ने लगे। औ़रतें, बच्चे, बूढ़े, जवान अल ग़रज़ हर शख़्स अपने बादशाह के दीदार के लिये खिचा चला आ रहा था। लेकिन एक बुढ्ढा शख़्स अपने काम में मसरूफ़ था। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस के क़रीब से गुज़रे और उस ने आप की त़रफ़ तवज्जोह न दी तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुतअ़ज्जिब हो कर कहा : "क्या बात है सब लोग मुझे देखने के लिये जम्अ़ हुवे लेकिन तुम अपने काम में मगन रहे, तुम ने ऐसा क्यूं किया ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ हमारे बादशाह ! जो हुकूमत आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ह़ासिल है, वोह मुझे तअ़ज्जुब में नहीं डालती। क्यूंकि मैं ने देखा कि एक बादशाह और मिस्कीन का एक साथ इन्तिक़ाल हुवा तो हम ने उन्हें दफ़्ना दिया। चन्द दिन बा'द उन के कफ़न फट गए, फिर कुछ दिन बा'द उन का गोश्त गल सड़ गया, मज़ीद कुछ दिन गुज़रने पर उन की हड्डियां जोड़ों से अ़लाहि़दा हो कर आपस में मिल गईं। अब बादशाह और मिस्कीन में पहचान नहीं हो सकती थी कि कौन सी हड्डियां बादशाह की हैं और कौन सी मिस्कीन की। लिहाज़ा ऐ ज़ुलक़रनैन عليه رحمة ربّ الكونين मुझे आप की हुकूमत और शानो शौकत तअ़ज्जुब में नहीं डालती, इसी लिये मैं ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस बुज़ुर्ग की येह बातें सुन कर बहुत ह़ैरान हुवे और जाते हुवे येह हुक्म सादिर फ़रमाया कि आइन्दा येह ह़कीम व दाना शख़्स इस शहर पर ह़ाकिम होगा।

हि़कायत नम्बर : 426 सब से अ़क़्ल मन्द शहज़ादा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष बिन मुह़म्मद तमीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی एक क़ुरैशी बुज़ुर्ग के ह़वाले से बयान फ़रमाते हैं : एक मरतबा शाह सिकन्दर ज़ुलक़रनैन عليه رحمة ربّ الكونين एक ऐसे शहर से गुज़रे जिस पर सात बादशाहों ने हुकूमत की थी और अब सब इन्तिक़ाल कर चुके थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने लोगों से पूछा : "क्या इस शहर पर हुकूमत करने वाले बादशाहों की नस्ल में से कोई एक शख़्स भी बाक़ी है ?" लोगों ने कहा : "हां ! एक शख़्स बाक़ी है, लेकिन अब वोह क़ब्रिस्तान में रहता है।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसे बुलवाया और पूछा : "किस चीज़ ने तुझे क़ब्रिस्तान में रहने पर मजबूर किया ?" कहा : "आ़ली जाह ! मैं ने इरादा किया कि क़ब्रिस्तान जाऊं और हलाक होने वाले बड़े बड़े बादशाहों और उन के फ़ौत शुदा गुलामों की हड्डीयों को अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा कर दूं ताकि बादशाहों का गुलामों से इम्तियाज़ हो जाए। लेकिन मैं अपनी इस कोशिश में कामयाब न हो सका क्यूंकि बादशाहों और गुलामों की हड्डियां एक जैसी ही हैं।"

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा : "क्या तुम मेरे ओ़हदे दारान में शामिल होना चाहते हो ? इस त़रह़ तुम्हारे आबाओ अजदाद का वक़ार बह़ाल हो जाएगा, अगर तुम में त़ाक़त है तो मेरी पेशकश क़बूल कर लो।" कहा : "अगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरी एक ख़्वाहिश पूरी कर दें तो मैं आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पेशकश कबूल कर लूंगा।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "बताओ ! तुम्हारी क्या ख़्वाहिश है ?" उस ने कहा : "ऐसी ज़िन्दगी जिस में मौत न हो, ऐसी जवानी जिसे बुढ़ापा लाह़िक़ न हो, ऐसी ख़ुशह़ाली जिस के बा'द तंगदस्ती न हो और ऐसी ख़ुशी जिस के साथ ग़म न हों।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "इन में से कोई बात भी मैं पूरी नहीं कर सकता।" उस ने कहा : "फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जाइये और मुझे इन चीज़ों को उसी के पास ढूंडने दीजिये जो इन तमाम चीज़ों का मालिक और इन्हें देने पर क़ादिर है।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस की येह ह़िक्मत भरी बातें सुन कर कहा : "मैं ने इसे तमाम लोगों से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द पाया।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین ﷺ

हिकायत नम्बर : 427 अधूरा कफ़न

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़िर्याबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है "क़ैसारिया" में एक औ़रत फ़ौत हो गई और उस की बेटी ने उसे ख़्वाब में यूं कहते सुना : "तुम लोगों ने मुझे बहुत तंग कफ़न पहनाया था जिस की वजह से मैं अपने हमसायों में शर्म मह़सूस करती हूं। सुनो ! फ़ुलां औ़रत फ़ुलां दिन हमारे पास आने वाली है। मैं ने फ़ुलां मक़ाम पर चालीस दीनार छुपा रखे हैं तुम कफ़न ख़रीद कर उसे दे दो, वोह हम तक पहुंचा देगी।" उस की बेटी कहती है कि जिस जगह के मुतअ़ल्लिक़ मेरी वालिदा ने ख़्वाब में बताया था वहां वाक़ेई चालीस (40) दीनार मौजूद थे। लेकिन जिस औ़रत के बारे में बताया था वोह बिल्कुल तन्दुरुस्त थी। फिर चन्द दिन बा'द वोह बीमार हो गई। रावी कहते हैं कि उस की बेटी कुछ लोगों के साथ मेरे पास आई और अपना ख़्वाब बयान करते हुवे कहा : आप इस बारे में क्या फ़रमाते हैं ?" उन की बातें सुन कर मुझे उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी येह ह़दीषे पाक याद आ गई : "बेशक मुर्दे अपने कफ़नों में एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं।"

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، ما قالوا فی تحسین الکفن......الخ، الحدیث ۳، ج۳، ص ۱۵۳، باختلاف الراوی)

मैं ने उन से कहा : तुम बज़ाज़ैन जाओ, वहां दो मश्हूर मुह़द्दिष "**इब्ने नैशापूरी**" और "**अबू तौबा**" के नाम से मश्हूर हैं वोह तुम्हारा मस्अला ह़ल कर देंगे। लोगों ने उस औ़रत की लड़की को वहां भेजा तो उन मुह़द्दिषों ने उसे एक कफ़न ख़रीद कर दे दिया। फिर जिस औ़रत

के मुतअ़ल्लिक़ उस की वालिदा ने बताया था वोह उस के पास पहुंची और कहा : "मोह़तरमा ! मैं आप को एक चीज़ दूंगी अगर आप का इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह चीज़ मेरी वालिदा को दे देना।" उस ने कहा : "ठीक है ! मैं तुम्हारी अमानत पहुंचा दूंगी।" फिर जो वक़्त और दिन मर्हूमा ने ख़्वाब में बताया था ठीक उसी वक़्त उस औ़रत का इन्तिक़ाल हो गया। लोगों ने लड़की का ख़रीदा हुवा कफ़न औ़रत के कफ़न में रख दिया। चन्द दिन बा'द उस ने अपनी वालिदा को ख़्वाब में येह कहते सुना : "ऐ मेरी बेटी ! फ़ुलां औ़रत हमारे पास पहुंच गई है और कफ़न भी मुझे मिल चुका है जो बहुत अच्छा है। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुझे इस की बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर 428 : बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िरी का ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़बीब علیہ رحمۃ اللہ المجیب का आख़िरी वक़्त आया तो बहुत ज़ियादा आहो ज़ारी की और मुसलसल इन कलिमात का तकरार करने लगे :

"हाए ! अब मैं ऐसे सफ़र पर जाने वाला हूं जहां पहले कभी नहीं गया, मैं ऐसे रास्ते पर चलने वाला हूं जिस पर कभी नहीं चला। अब मैं अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की ज़ियारत के लिये जा रहा हूं जिसे मैं ने कभी नहीं देखा। हाए ! अब मैं ऐसे पुरहोल मक़ाम की त़रफ़ जाने वाला हूं जहां कभी नहीं गया। हाए ! अब मैं मिट्टी के नीचे चला जाऊंगा और क़ियामत तक वहीं रहूंगा। फिर मुझे मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़ा कर दिया जाएगा। हाए ! मुझे येह ख़ौफ़ खाए जा रहा है कि अगर मुझ से येह कह दिया गया : "ऐ ह़बीब ! साठ (60) साला ज़िन्दगी में अगर तू ने कभी कोई एक तस्बीह़ भी ऐसी की हो जिस में शैत़ान तुझ पर कामयाब न हुवा हो तो वोह तस्बीह़ ले आओ। अगर कोई ख़ालिस इ़बादत तुम्हारे पास है तो ले आओ।" हाए ! उस वक़्त मैं क्या जवाब दूंगा वहां कोई मेरे पास न होगा। पस मैं बसद आ़जिज़ी बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करूंगा : मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! वाक़ेई मेरे पास ऐसा कोई अ़मल नहीं, ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरा गुनहगार बन्दा तेरी बारगाह में ह़ाज़िर है, इस के दोनों हाथ इस की गर्दन से बन्धे हुवे हैं। ऐ करीम ! तू करम कर ! तेरा करम ही मेरा काम बनाएगा।"

रावी कहते हैं कि : येह तो उस शख़्स की आहो बुका है जिस ने मुसलसल साठ साल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस तरह़ इ़बादत की, कि दुन्या की किसी चीज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह न हुवे। जी हां ! येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ह़बीब علیہ رحمۃ اللہ المجیب अपने ज़माने के मश्हूर

औलिया में से थे। जब वोह इस त़रह़ आहो ज़ारी कर रहे हैं तो हम जैसे गुनहगारों का क्या ह़ाल होगा, हमारा क्या बनेगा।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद व नुसरत त़लब करते हैं। वोही हमारा ह़ाफ़िज़ो नासिर है।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 429 बा ह़या ख़ातून

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हिलाल अस्वद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَحَد फ़रमाते हैं : एक मरतबा सफ़रे ह़ज में मेरी मुलाक़ात एक ऐसी औ़रत से हुई जो ह़ज के लिये जा रही थी लेकिन उस के पास ज़ादे राह बिल्कुल न था ह़त्ता कि पानी पीने के लिये भी कोई बरतन न था। मैं ने उस से पूछा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तू कहां से आ रही है ?" कहा : "**बल्ख़** से।" मैं ने कहा : "क्या बात है कि तेरे पास न तो कोई सुवारी है और न ही खाने पीने की कोई चीज़ ?" उस ने कहा : "बल्ख़ से चलते वक़्त मैं ने दस दिरहम अपने साथ लिये थे, कुछ ख़र्च हो गए कुछ बाक़ी हैं।" मैं ने कहा : "जब येह ख़त्म हो जाएंगे तो फिर क्या करोगी ?" कहा : "मेरे जिस्म पर येह जुब्बा इज़ाफ़ी है इसे बेच कर गुज़ारा करूंगी।" मैं ने कहा : "जब इस की रक़म भी ख़त्म हो जाएगी तो क्या करोगी ?" कहा : "मैं अपनी चादर बेच कर गुज़ारा कर लूंगी।" मैं ने कहा : "इन अश्या के बदले मिलने वाली रक़म तो बहुत जल्द ख़त्म हो जाएगी फिर तुम क्या करोगी ?" कहा : "फिर मैं अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करूंगी तो वोह मुझे अ़त़ा फ़रमा देगा।" मैं ने कहा : "इन तमाम मराह़िल से गुज़रने के बा'द ही क्यूं सुवाल करोगी पहले क्यूं नहीं मांग लेती ?" कहा : "तेरा भला हो ! मुझे अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि दुन्या की कोई भी इज़ाफ़ी चीज़ मेरे पास हो और मैं फिर भी उस से कुछ मांगूं।"

औ़रत की येह ह़िक्मत भरी बातें मेरे दिल में उतरती चली गईं। मैं ने उस से कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तुम मेरे इस गधे का ख़याल रखो, थोड़ी दूर इसे ले चलो, मैं ह़ाजत से फ़ारिग़ हो कर अभी आता हूं।" कहा : "ठीक है ! बे फ़िक्र हो कर छोड़ जाओ।" चुनान्चे, मैं क़ज़ाए ह़ाजत के लिये चला गया। जब वापस आया तो मेरा गधा मौजूद था और अन्वाओ़ अक़्साम के ताज़ा खानों से भरा थैला उस पर रखा हुवा था, मैं ने कभी ऐसे उ़म्दा खाने देखे तक न थे। जब मुतअ़ज्जिब हो कर आस पास देखा तो दूर दूर तक उस औ़रत का नामो निशान न था, न जाने इतनी जल्दी वोह कहां ग़ाइब हो गई।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 430 रह़मते ह़क़ बहाना ढूंडती है

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़रमाते हैं : कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में एक ऐसे शख़्स को पेश किया जाएगा जिस के पास सिर्फ़ एक नेकी होगी, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उस से फ़रमाएगा : "मेरे औलिया के पास चला जा, अगर तू उन में से किसी को जानता है तो उन को पहचानने की वजह से मैं तुझे बख़्श दूंगा।" वोह शख़्स तीस (30) साल घूमता रहेगा लेकिन ऐसे किसी भी वली को न पाएगा जिसे वोह जानता हो। पस बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरी किसी वली से मुलाक़ात न हो सकी।"

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़िरिश्तों को हुक्म देगा कि इसे आग में डाल दो। फ़िरिश्ते उसे जहन्नम की त़रफ़ घसीटेंगे, तो रह़मानो रह़ीम عَزَّوَجَلَّ की रह़मत उस बन्दे की त़रफ़ मुतवज्जेह होगी और रह़मते ख़ुदावन्दी से उस के दिल में एक बात आएगी, वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ अगर तेरी मख़्लूक़ में मेरा कोई जानने वाला होता तो तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा देता। **ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! जब मैं तेरी वह़दहू लाशरीक ज़ात को जानता हूं तो तेरी रह़मत के ज़ियादा लाइक़ है कि तू अपनी मा'रिफ़त की वजह से मुझे बख़्श दे।**" दरयाए रह़मत जोश में आएगा और हुक्म होगा : "ऐ फ़िरिश्तो ! मेरे आ़रिफ़ को वापस ले आओ। बेशक ! येह तो मुझे जानने वाला है, येह मेरा आ़रिफ़ और मैं इस का मा'रूफ़ हूं। इसे जन्नती लिबास पहना कर जन्नत में ले जाओ।"

इस बे कसी में दिल को मेरे टेक लग गई — शोहरा सुना जो रह़मते बे कस नवाज़ का
क्यूं कर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन — बन्दा भी तो हूं कैसे बड़े कारसाज़ का

हिकायत नम्बर : 431 मैं सदक़े या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िर हो कर नज़रानए दुरूदो सलाम पेश कर रहा था कि एक आ'राबी ने मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर सलातो सलाम पेश किया और ह़ुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा उस में येह आयत भी है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾

(پ ٥،النسآء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।*

मेरे आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने गुनाहों की मुआफ़ी त़लब करते हुवे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हूं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना शफ़ीअ़ बनाता हूं।''

येह कह कर वोह आ़शिक़े रसूल रोने लगा और उस की ज़बान पर येह अश्आ़र जारी थे :

یَا خَیْرَ مَنْ دُفِنَتْ بِالْقَاعِ اَعْظُمُهٗ ۔۔۔ فَطَابَ مِنْ طِیْبِهِنَّ الْقَاعُ وَالْاَکَمٗ

رُوْحِی الْفِدَاءُ لِقَبْرٍ اَنْتَ سَاکِنُهٗ ۔۔۔ فِیْهِ الْعِفَافُ وَفِیْهِ الْجُوْدُ وَالْکَرَمُ

तर्जमा : (1)....ऐ वोह बेहतरीन ज़ात जिस की मुबारक हड्डियां ज़मीन में दफ़्न की गईं ! तो उन की उ़म्दगी और पाकीज़गी से मैदान और टीले पाकीज़ा हो गए।

(2)....मेरी जान फ़िदा हो उस क़ब्रे अन्वर पर जिस में आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आराम फ़रमा हैं ! जिस में पाक दामनी, सख़ावत और अ़फ़्वो करम का बेश बहा ख़ज़ाना है।

वोह आ़शिक़े रसूल इन अश्आ़र का तकरार करता रहा। फिर इस्तिग़फ़ार किया, गुनाहों की मुआफ़ी मांगी और रोता हुवा वापस चला गया। मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : ''उस के जाते ही मेरी आंख लग गई, मैं ने ख़्वाब में सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''उस आ'राबी से मिलो और उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी सिफ़ारिश की वजह से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी है।''

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

सरगुज़श्ते ग़म कहूं किस से तेरे होते हुवे ... किस के दर पे जाऊं तेरा आस्ताना छोड़ कर
बख़्शवाना मुझ से आ़सी का रवा होगा किसे ... किस के दामन में छुपूं दामन तुम्हारा छोड़ कर

हिकायत नम्बर : 432

फ़िक्रे आख़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی बहुत ज़ियादा मुजाहदा करने वाले बुज़ुर्ग थे, कषरते इबादत व रोज़ा और मुजाहदात की वजह से उन का जिस्म काफ़ी कमज़ोर हो गया था। मैं ने उन से कहा : ''आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने नफ़्स को बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ में डाल रखा है, मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के लिये कुछ चीज़ें

भिजवाऊंगा अगर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नज़रों में मेरी कुछ क़द्रो मन्ज़िलत है तो उन्हें वापस न करना।" फ़रमाया : "ठीक है।" चुनान्चे, मैं ने घी और सत्तू का बना हुवा थोड़ा सा शरबत अपने बेटे को देते हुवे कहा : "येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی के पास ले जाओ, जब तक वोह येह शरबत पी न लें वापस न आना।" मेरा बेटा शरबत ले कर गया और वापस आ कर बताया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने शरबत पी लिया है।" दूसरे दिन मैं ने फिर शरबत भिजवाया तो उन्हों ने न पिया।"

मैं ने उन से कहा : "आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने शरबत क्यूं नहीं पिया ? उस के इस्ति'माल से आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जिस्म को तक़्वियत मिलती, नमाज़ व रोज़ा और दीगर इ़बादात पर क़ुदरत ह़ासिल होती।" फ़रमाया : "ऐ अबू बिशर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा भला करे, जब पहले दिन तुम ने शरबत भिजवाया तो मैं ने पी लिया, दूसरे दिन भी वोही उ़म्दा व ख़ुशगवार शरबत आया तो मेरे नफ़्स ने उस की त़रफ़ रग़बत की, जब मैं उसे पीने लगा तो मुझे येह आयते करीमा याद आ गई :

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآىٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ۝

(پ۱۳، ابراھیم:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी और उसे हर त़रफ़ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब।

इस आयत के याद आते ही मुझ से वोह शरबत न पिया गया।" ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی की येह बात सुन कर मैं ने रोते हुवे कहा : "ऐ अ़त़ा सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ! **तुम किसी और वादी में हो और मैं किसी और वादी में।**"

(**प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن किस क़दर अपने नफ़्स की मुख़ालफ़त किया करते थे। और एक हम हैं कि अपने नफ़्स की हर ख़्वाहिश को पूर करने के दर पे रहते हैं। जब कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن भूक से कम खाते हुवे "**पेट का क़ुफ़्ले मदीना**" लगाए रखते और ख़्वाहिशाते नफ़्स की भरपूर मुख़ालफ़त फ़रमाते थे। इस त़रह़ के कई वाक़िआ़त बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल हैं। भूक के फ़ज़ाइल और भूक से कम खाते हुवे "**पेट का क़ुफ़्ले मदीना**" से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात के लिये **अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तस्नीफ़े लत़ीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब "पेट का क़ुफ़्ले मदीना"** का मुत़ालआ़ कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप इस की बरकतें ख़ुद अपनी आंखों से मुलाह़ज़ा फ़रमाएंगे।)

*﴾**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿*

हिकायत नम्बर : 433 उड़ने वाला तख़्त

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मन्कूल है : बनी इस्राईल का एक आ़बिद लोगों से अलग थलग पहाड़ की चोटी पर अपने ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहता था। लोग क़ह्त़ साली में परेशान हो कर उस से मदद त़लब करते, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करता तो रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की बरसात होने लगती और लोग ख़ूब सैराब हो जाते।

एक मरतबा कुछ लोग इन्तिहाई अहम काम के सिलसिले में उस आ़बिद के पास आए, वोह एक छड़ी से मुर्दों की खोपड़ियों और हड्डियों को उलट पलट कर रहा था। लोगों ने उस के अ़मल में दख़्ल अन्दाज़ी मुनासिब न समझी और अदब से एक जानिब बैठ कर उस के फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगे। अचानक उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर कर तड़पने लगा, फिर कुछ देर बा'द साकित़ हो गया। लोगों ने देखा तो उस की रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर चुकी थी। सब को बहुत दुख हुवा, जब उस के इन्तिक़ाल की ख़बर मश्हूर हुई तो लोग जूक़ दर जूक़ जम्अ़ हो कर उस की तजहीज़ व तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम करने लगे। जब उसे कफ़न पहना दिया गया तो आस्मान के किनारे से एक तख़्त उड़ता हुवा आया और आ़बिद की मय्यित के पास आ कर रुक गया। येह देख कर एक शख़्स खड़ा हुवा और लोगों को मुख़ात़ब कर के कहने लगा : "ऐ लोगो ! तमाम ता'रीफ़ें उस ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने नेक बन्दे को अपने इस करम के लिये ख़ास किया जो तुम देख रहे हो।"

येह कह कर उस ने आ़बिद की मय्यित उस तख़्त पर रख दी। तख़्त फ़ौरन बुलन्द हुवा और उड़ता हुवा आस्मान की त़रफ़ बढ़ता चला गया, लोग उसे देखते रहे यहां तक कि नज़रों से ओझल हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 434 मुजाहिदीन के लिये अ़ज़ीम इन्आ़म

वलिय्ये कामिल हज़रते सय्यिदुना सल्त बिन ज़ियाद ह़लबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : रमज़ानुल मुबारक की एक रात मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं "**अ़ब्बादान**" के चन्द नेक लोगों के हमराह हूं और हमारा क़ाफ़िला एक जानिब बढ़ा चला जा रहा है, चलते चलते हम एक अ़ज़ीमुश्शान मह़ल के दरवाज़े के क़रीब पहुंचे। मह़ल में एक ऐसा ख़ूब सूरत बाग़ था कि इतना ह़सीनो जमील बाग़ मेरी आंखों ने इस से पहले कभी न देखा था। दरवाज़े के क़रीब लोगों का हुजूम था। हम भी मह़ल के क़रीब चले गए, इतने में किसी कहने वाले ने कहा : "इस में वोही दाख़िल होगा जिस ने इस में रहना है, बक़िय्या सब लोग दूर हट जाएं।" फिर वहां रहने वाले एक शख़्स

से कहा गया : "जाओ ! दारे फ़ज़ाल, **सिब्तै़न** और फुलां फुलां अ़लाके़ के लोगों को बुला लाओ, उन में से कोई एक भी पीछे न रहने पाए।"

वोह शख़्स लोगों को बुला लाया, जब सब जम्अ़ हो गए तो उन्हें उस अ़ज़ीमुश्शान मह़ल में दाख़िले की इजाज़त मिल गई। मैं भी उन के साथ मह़ल में दाख़िल हो गया उस की ख़ूब सूरती और उस में मौजूद अश्या को देख कर मेरी आंखें चन्धयाने लगीं, ऐसा लगता था कि मेरी अ़क़्ल ज़ाइल हो जाएगी। मैं ने वहां उ़म्दा दरख़्त देखे जिन पर सोने चांदी के बरतन थे। उन में त़रह़ त़रह़ के शरबत भरे हुवे थे। फिर मैं ने चन्द नौजवान लड़कियां देखीं जिन्हों ने चांदी का बारीक व ख़ूब सूरत लिबास पहना हुवा था। उन का हु़स्न देख कर मुझे अपनी बीनाई ज़ाएअ़ होने का ख़ौफ़ होने लगा। जिन लोगों को इस मह़ल में दाख़िल होने से रोक दिया गया था, उन्हों ने कहा : "हमारा क्या क़ुसूर है जो हमें इन ने'मतों से रोक दिया गया है ? हमें इन चीज़ों के देखने से क्यूं मन्अ़ किया गया है ?" वोह इसी त़रह़ आवाज़ें बुलन्द कर रहे थे कि यकायक एक बहुत बड़ा तख़्त नुमूदार हुवा। तमाम दोशीज़ाएं उस पर बैठ गईं, उन के जिस्म ख़ुश्बूओं से महक रहे थे, उन के हाथों में ख़ुश्बू की अंगेठियां थीं। जब वोह तख़्त फ़ज़ा में बुलन्द हुवा तो बाहर खड़े लोगों की चीख़ो पुकार मज़ीद बुलन्द हो गई। उन दोशीज़ाओं में एक ऐसी ह़सीनो जमील लड़की भी थी जिस का हु़स्न बाक़ी सब पर ग़ालिब था। अचानक उस के होटों को ह़रकत हुई और उस की मसह़ूर कुन आवाज़ गूंजने लगी :

"ऐ लोगो ! येह तमाम ने'मतें उन के लिये हैं जिन्हों ने राहे ख़ुदा में जिहाद की वजह से अपनी बीवियों से दूरी इख़्तियार की, अपना वत़न छोड़ा, अपने पहलूओं को बिस्तरों से दूर रखा, राहे ख़ुदा में अपना ख़ून बहा कर सख़ावत की, मुसलसल सफ़र की वजह से येह लोग न तो अपनी अवलाद से प्यार कर सके और न ही अपनी बीवियों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो सके, इन्हों ने फ़ानी ज़िन्दगी पर बाक़ी को तरजीह़ दी। ऐ नमाज़ियो ! ऐ मुजाहिदो ! तुम्हें मुबारक हो। तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ऐसी जगह बिठाएगा जहां तुम्हारी आंखें ठन्डी होंगी, तुम्हारा ख़ौफ़ जाता रहेगा, वहां अम्न ही अम्न होगा।"

फिर उस ने दूसरी को कहा : "ऐ क़ुर्रतुल ऐ़न ! अब तू बोल।" अचानक एक मसह़ूर कुन और दिलकश आवाज़ फ़ज़ा में बुलन्द हुई :

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿۲۲﴾ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿۲۳﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿۲۵﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿۲۶﴾ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿۲۷﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿۲۸﴾ (پ۲۷، الواقعة:۲۲تا۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बड़ी आंख वालियां हूरें जैसे छुपे रखे हुवे मोती। सिला उन के आ'माल का उस में न सुनेंगे न कोई बेकार बात न गुनहगारी हां येह कहना होगा सलाम सलाम और दाहिनी त़रफ़ वाले कैसे दाहिनी त़रफ़ वाले बे कांटों की बेरियों में।*

फिर एक मुनादी ने कहा : "ख़ुश आमदीद ! अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की त़रफ़ से मिलने वाली ने'मतें तुम्हें मुबारक हों। अब इन ने'मतों में हमेशा हमेशा रहो। वोह

जव्वादो अ़ज़ीम और बुज़ुर्ग व बरतर है, उस की पाकी बयान करो और तक्बीर कहो।" वहां मौजूद सब लोगों ने तक्बीर कही, मैं ने भी ब आवाज़े बुलन्द तक्बीर कही। फिर मेरी आंख खुल गई। मेरी ज़बान पर अभी तक **अल्लाहु अक्बर**, **अल्लाहु अक्बर** की सदाएं जारी थीं, काफ़ी उजाला हो चुका था। मैं ने जल्दी से वुज़ू कर के नमाज़े फ़ज्र अदा की, कुछ लोग मस्जिद में बैठे बिल्कुल उसी त़रह़ बातें कर रहे थे जैसा मैं ने ख़्वाब में देखा था, वोह एक दूसरे से कह रहे थे : "मैं ने तुझे फ़ुलां जगह देखा, मैं ने तुझे फ़ुलां जगह देखा।" फिर मुझ से भी कहने लगे : "हम ने तुम्हें भी फ़ुलां जगह देखा है।" ऐसा लगता था जैसे वहां की तमाम अश्या हम ने सर की आंखों से देखी हों।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

❁❁❁❁❁❁

ह़िकायत नम्बर : 435

ग़ीबत के अस्बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد को येह फ़रमाते सुना : एक मरतबा मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिष मुह़ासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से ग़ीबत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : ग़ीबत से बच ! बेशक वोह ऐसा शर है जिसे इन्सान ख़ुद ह़ासिल करता है। तेरा उस चीज़ के बारे में क्या ख़याल है जो तुझे एह़सान भूलने पर उभारे, तुझ से तेरी नेकियां छीन कर तेरे उन मुख़ालिफ़ीन को दे दे जिन की तू ने ग़ीबत की है। यहां तक कि वोह तेरी नेकियों से राज़ी हो जाएं क्यूंकि बरोज़े क़ियामत दिरहमो दीनार काम नहीं आएंगे। बेशक ! जितना तू मुसलमानों की इ़ज़्ज़त से लेगा इतनी मिक़्दार में तेरा दीन तुझ से ले लिया जाएगा, लिहाज़ा ग़ीबत से बच, ग़ीबत के मम्बअ़ (या'नी निकलने की जगह) और सबब को पहचान कि तुझ पर ग़ीबत किन जगहों से आती है।

तवज्जोह से सुन ! बेशक बे वुक़ूफ़ और जाहिल लोग ग़ीबत में ऐसे पड़ते हैं कि गुनहगारों पर ख़्वाह मख़्वाह गुस्सा करते और उन से ह़सद और बद गुमानी करते हैं और इस गुस्से को दीनी ग़ैरत का नाम देते हैं। येह ऐसी बुराइयां हैं जो बिल्कुल ज़ाहिर हैं, पोशीदा नहीं। अहले इ़ल्म ग़ीबत में इस त़रह़ मुब्तला होते हैं कि शैत़ान उन को अपने मक्र में फंसा लेता है, वोह किसी की बुराई बयान करते हैं तो कहते हैं : "हम तो उस की नसीह़त के लिये ऐसा कर रहे हैं। हम तो उस के ख़ैर ख़्वाह हैं।" ह़ालांकि ऐसा नहीं क्यूंकि अगर वाक़ेई वोह ख़ैर के त़ालिब होते तो कभी ग़ीबत जैसी बुराई में न पड़ते और उन की नसीह़त ग़ीबत पर मुआ़विन न होती। उ़-लमा में से जब कोई आ़लिम किसी की बुराई बयान करता है तो कहता है : क्या रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह ह़दीष मरवी नहीं : "क्या तुम बुरे शख़्स का तज़्किरा करने से बचते हो ? उस की बुराई बयान करो ताकि लोग उस से इजतिनाब करें (या'नी बचें)।"

(الموسوعة لابن أبی الدنیا،کتاب الغیبة و النمیمة،باب الغیبة التی یحل ......الخ،الحدیث ٨٤،ج٤،ص٣٧٤)

इस ह़दीष को दलील बना कर लोगों की ग़ीबत की जाती है। ह़ालांकि इस से येह षाबित नहीं होता कि नफ़्स की ख़ाति़र किसी मुसलमान की बुराई बयान की जाए न ही येह षाबित होता है कि तू मुसलमान की उस बुराई को ख़्वाह मख़्वाह लोगों पर ज़ाहिर करे जिस का तुझ से सुवाल ही नहीं किया गया, हां ! अगर कोई तेरे पास आए और कहे : "मैं फ़ुलां शख़्स से अपनी बेटी की शादी करना चाहता हूं, आप इस बारे में क्या मश्वरा देते हैं ?" तो अब अगर तू उस शख़्स की बुरी और ना मुनासिब बातें जानता है या येह जानता है कि येह मुसलमानों की ह़ुर्मत का ख़याल नहीं रखता तो अब तुझे जाइज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई को मश्वरा देने में ख़यानत से काम ले। बल्कि उसे अह़सन त़रीक़े से उस जगह शादी करने से रोक दे।

इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स तेरे पास आ कर कहे : "मैं फ़ुलां के पास कुछ रक़म अमानत रखना चाहता हूं। आप का इस बारे में क्या मश्वरा है ?" अगर तू उस शख़्स के बारे में जानता है कि वोह अमानत रखने के क़ाबिल नहीं तो तेरे लिये जाइज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई के माल को ज़ाएअ़ करवाए बल्कि उसे अह़सन त़रीक़े से उस के पास अमानत रखने से रोक दे। इसी त़रह़ अगर कोई पूछे कि "फ़ुलां के पीछे नमाज़ पढ़ना चाहता हूं या फ़ुलां को उस्ताज़ बनाना चाहता हूं, आप की इस बारे में क्या राए है ?" तो अगर तू उस को इमाम या उस्ताज़ बनने के क़ाबिल नहीं समझता तो ज़रूरी है कि साइल को अह़सन त़रीक़े से मन्अ़ कर दे। लेकिन इन तमाम बातों में दिल की भड़ास निकालना मक़्सूद न हो बल्कि अह़सन त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए।

तवज्जोह से सुन ! क़ारियों, आ़बिदों और ज़ाहिदों के ग़ीबत में पड़ने का सबब "तअ़ज्जुब" है। वोह तअ़ज्जुब का इज़्हार करते हुवे अपने मुसलमान भाई की ग़ीबत कर बैठते हैं। फिर कहते हैं कि हम तो तअ़ज्जुब कर रहे हैं। ह़ालांकि इस तअ़ज्जुब ही में वोह मुसलमान की बुराई बयान कर जाते हैं और उस की ग़ैर मौजूदगी में ऐसी बात करते हैं जो ईज़ा का सबब होती है। पस येह लोग इस त़रह़ अपने मुसलमान भाइयों का गोश्त खाने लगते हैं। रहे उस्ताज़, सरदार और ह़ाकिम वोह शफ़्क़त व रह़्म दिली के त़रीक़े से ग़ीबत की गहरी खाइयों में जा गिरते हैं। मषलन कोई उस्ताज़ या सरदार अपने शागिर्द या मातह़्त के बारे में कहता है : "अफ़्सोस ! बेचारा मिस्कीन फ़ुलां फ़ुलां काम में पड़ गया, हाए हाए ! बेचारा फ़ुलां बुराई का मुर्तकिब हो गया।" इस त़रह़ की बातें कर के वोह समझता है कि मैं इस से मह़ब्बत और शफ़्क़त की वजह से ऐसा कह रहा हूं ह़ालांकि वोह ग़ीबत जैसी बुराई में पड़ चुका होता है। फिर येह उस्ताज़ अपने शागिर्द की बुराई को दूसरों के सामने ज़ाहिर करता और कहता है : मैं ने तुम्हारे सामने उस की बुराई इस लिये बयान की ताकि तुम अपने भाई के लिये कषरत से दुआ़ करो।" अपने गुमान में येह इसे शफ़्क़त व मह़ब्बत समझता है लेकिन ह़क़ीक़त में येह ग़ीबत कर रहा होता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ान के ख़ुफ़्या वारों से बचाए। हम **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में दुआ़ करते हैं कि वोह हमें मुसलमानों की ग़ीबत करने से मह़फ़ूज़ रखे। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

ऐ मेरे बेटे ! ग़ीबत से कोसों दूर भाग ! हमेशा इस से बचता रह, बेशक क़ुरआने मजीद में ग़ीबत को मुर्दार का गोश्त खाने की त़रह़ कहा गया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَيُحِبُّ اَحَدُكُمۡ اَنۡ يَّاۡكُلَ لَحۡمَ اَخِيۡهِ مَيۡتًا

(پ۲۶،الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए।*

इसी त़रह़ ग़ीबत की मज़म्मत पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत सी अह़ादीषे मुबारका मरवी हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ग़ीबत की तबाह कारियों से मह़फ़ूज़ रखे। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ीबत हमारे मुआ़शरे का एक ऐसा नासूर है जिस ने मुसलमानों की मह़ब्बत के बन्धन को तोड़ने में बहुत घिनावना किरदार अदा किया है। इसी बुराई के सबब मुसलमान अपने ही मुसलमान भाइयों के दरमियान ज़लीलो रुस्वा हो रहा है। इस ख़स्लते बद ने एक दूसरे की इ़ज़्ज़त व तकरीम के जज़्बे को मल्यामेट कर के रख दिया है। न तो ग़ीबत करने वाला इस बुराई से बचने की कोशिश करता है और न ही सुनने वाले इस को रोकते बल्कि ख़ुद भी हां में हां मिला कर अपने आप को गन्दगी के अ़मीक़ गढ़े में गिरा लेते हैं। ग़ीबत सराह़तन भी होती है और इशारतन भी, अल्फ़ाज़ से भी और अन्दाज़ से भी। ग़ीबत की तबाहकारियों से बचने के लिये अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इन्तिहाई पुर अषर किताब "**ग़ीबत की तबाहकारियां**" का मुत़ालआ़ कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ीबत जैसी ख़स्लते बद से तौबा करने और दूसरों को इस बुराई से बचाने का ज़ेहन बनेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ग़ीबत और दीगर तमाम गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।) (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 436 — **ख़ौफ़े ख़ुदा की आ'ला मिषाल**

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) अपने चन्द रुफ़क़ा के हमराह ह़ज के लिये ह़रमैने शरीफ़ैन زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की जानिब रवाना हुवे। मक़ामे "अब्वा" पर क़ाफ़िले ने एक जगह क़ियाम किया। ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن और शुरकाए क़ाफ़िला किसी काम से चले गए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار

अकेले ही सामान के क़रीब नमाज़ पढ़ने लगे। कुछ देर बा'द क़रीबी बस्ती से एक ह़सीनो जमील औ़रत वहां आई और क़रीब आ कर बैठ गई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने समझा कि कोई मजबूर औ़रत है और किसी ह़ाजत से आई है। इस लिये नमाज़ को मुख़्तसर किया और सलाम फेरने के बा'द पूछा : "क्या तुम्हें कोई ह़ाजत है?" उस ने कहा : "जी हां।" पूछा : "क्या चाहती हो?" कहा : "वोही चाहती हूं जो औ़रतें मर्दों से चाहती हैं, तुम मेरी ख़्वाहिश पूरी कर दो।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जा ! यहां से चली जा ! मुझे और ख़ुद को जहन्नम की भड़कती हुई आग का ईंधन न बना।" औ़रत पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इस बात का कुछ अषर न हुवा वोह मिन्नत समाजत करते हुवे मुसलसल दा'वते गुनाह देती रही। लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हर बार उस की बात को रद्द किया। जब वोह बहुत ज़ियादा इसरार करने लगी तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के बाइ़ष रोने लगे और फ़रमाने लगे : "तुझे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा ! मुझ से दूर चली जा, जा ! मुझ से दूर चली जा।" जब औ़रत ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की गिर्या व ज़ारी देखी तो वोह भी रोने लगी। इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار आ पहुंचे। जब इन्हों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और एक औ़रत को रोते देखा तो ख़ुद भी रोने लगे ह़ालांकि वोह जानते न थे कि येह दोनों क्यूं रो रहे हैं? फिर शुरकाए क़ाफ़िला में से जो भी वहां आता इन्हें रोता देख कर रोना शुरूअ़ कर देता किसी ने भी रोने का सबब न पूछा। बस एक दूसरे को देख कर हर एक रोए जा रहा था। फिर वोह औ़रत उठी और रोती हुई अपनी बस्ती की त़रफ़ चली गई। दूसरे लोग आहिस्ता आहिस्ता खड़े हुवे और अपने अपने कामों में मसरूफ़ हो गए। किसी ने भी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के रो'ब व जलाल की वजह से उन से उस औ़रत और रोने के मुतअ़ल्लिक़ न पूछा।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : बिल आख़िर एक दिन मैं ने हिम्मत कर के पूछा : "ऐ मेरे भाई ! उस औ़रत का क्या क़िस्सा था?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें सारा वाक़िआ़ बताता हूं लेकिन ख़बरदार जब तक मैं इस दुन्या में ज़िन्दा रहूं येह वाक़िआ़ किसी को न बताना।" मैं ने कहा : "ठीक है ! मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हुक्म की ता'मील करूंगा।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूरा वाक़िआ़ बताया और कहा : "उस रात मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत की, मैं शौक़ से उन की ज़ियारत करता रहा फिर उन का हुस्नो जमाल और नूरानिय्यत देख कर मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई। मैं ज़ारो क़ित़ार रोने लगा, येह देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा नबी ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मेरी जानिब नज़रे करम फ़रमाई, लब्हाए मुबारका को जुम्बिश हुई इरशाद फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया है?" मैं ने दस्त बस्ता अ़र्ज़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मेरे मां-बाप आप عَلَيْهِ السَّلَام पर कुरबान ! मुझे आप عَلَيْهِ السَّلَام के अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी के मुआ़मले में आज़्माइश में मुब्तला होने, क़ैद में जाने, ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से आप की जुदाई, आप की पाक दामनी और सब्रो शुक्र पर तअ़ज्जुब हो रहा है।" येह सुन कर हुस्नो जमाल के पैकर ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन या'क़ूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुझे उस शख़्स पर तअ़ज्जुब नहीं हो रहा जिसे मक़ामे "अब्वा" पर एक देहाती औ़रत का वाक़िआ़ पेश आया। आप عَلَيْهِ السَّلَام की येह बात सुन कर मैं समझ गया कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ने किस वाक़िए़ की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है। मैं फिर रोने लगा जब बेदार हुवा तो मेरी आंखों से आंसू जारी थे और मैं बुलन्द आवाज़ से रो रहा था। ऐ सुलैमान ! ख़बरदार ! मेरे जीते जी येह वाक़िआ़ किसी को न बताना।

रावी कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की ज़िन्दगी में येह वाक़िआ़ किसी को न सुनाया। जब उन का इन्तिक़ाल हो गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने घर वालों को येह वाक़िआ़ बताया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की वफ़ात के बा'द येह वाक़िआ़ पूरे शहर में मशहूर हो गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़षमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मन्क़ूल है कि येह वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار के साथ पेश आया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه लोगों में सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत थे। एक मरतबा एक ह़सीनो जमील नौजवान औ़रत ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के घर में दाख़िल हो कर गुनाह की दा'वत दी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन्कार कर दिया। वोह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ बढ़ी और कहा : "मेरे क़रीब आ।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उसे वहीं छोड़ कर घर से भाग गए। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : फिर एक दिन ख़्वाब में मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत हुई तो मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! क्या आप ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा नबी ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! मैं ही यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) हूं।" फिर फ़रमाया : "और तू वोही है कि जिसे गुनाह की दा'वत दी गई लेकिन उस ने गुनाह का इरादा भी न किया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) दोनों भाई थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बड़े और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه छोटे थे। येह दोनों उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते ह़ारिष رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से अह़ादीषे मुबारका सुनीं। मैं ने और इन दोनों ने ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते ह़ारिष رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से अह़ादीषे मुबारका रिवायत की हैं। मुमकिन है इन दोनों भाइयों में से हर एक के साथ औ़रत वाला वाक़िआ़ अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा पेश आया हो। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وصلّی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلّم

﴾ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین ﷺ ﴿

हिकायत नम्बर : 437 ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی की वसिय्यतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : विसाल से क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی को पेट का मरज़ लाह़िक़ हो गया। मैं आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की ख़िदमत किया करता था। एक दिन मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की तीमार दारी में मश्ग़ूल रहता हूं जिस की वजह से बा जमाअ़त नमाज़ अदा नहीं कर सकता, आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه इस बारे में क्या इरशाद फ़रमाते हैं ?" फ़रमाया : "किसी मुसलमान की लम्ह़ा भर के लिये ख़िदतम करना साठ (60) साल की बा जमाअ़त नमाज़ों से अफ़्ज़ल है। मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! येह बात आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने किस से सुनी ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه से सुना, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه से रिवायत की, कि "किसी बीमार मुसलमान भाई की एक दिन ख़िदमत करना मुझे उन साठ (60) साल की बा जमाअ़त नमाज़ों से ज़ियादा पसन्द है जिन में कभी तक्बीरे ऊला भी फ़ौत न हुई हो।"

जब मरज़ तूल पकड़ गया तो आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को घुटन सी मह़सूस हुई और ऐ मौत ! ऐ मौत ! कहने लगे। फिर फ़रमाया : "मैं न तो मौत की तमन्ना कर रहा हूं न ही मौत की दुआ़ मांग रहा हूं। बल्कि मैं तो "लफ़्ज़े मौत" कह रहा हूं।" जब विसाल का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه येह रोना कैसा ?" फ़रमाया : "मौत के वक़्त की शदीद तक्लीफ़ की वजह से रो रहा हूं, ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़बरदस्त त़ाक़त वाला है।" मैं ने देखा कि कषरते बका (या'नी बहुत ज़ियादा रोने) की वजह से आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की आंखें ढलक गई थीं और पेशानी पर पसीना आ रहा था। फ़रमाया : "मेरी पेशानी से पसीना साफ़ कर दो।" मैं ने पसीना साफ़ किया तो दोबारा आ गया तो आप ने कहा : اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه (फिर फ़रमाया) मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर से, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन यसाफ़ से, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِنَّ اَجۡمَعِين से रिवायत की : आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه फ़रमाते हैं कि "मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, बिइज़्ने परवर दगार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : "बेशक मोमिन की रूह़ पसीने के साथ निकलती है।"

(جامع الترمذی،ابواب الجنائز،باب ما جاء فی التشدید عند الموت،الحدیث ۹۸۰،ص۱۷۴۵"روح"بدلہ"نفس")

(फिर फ़रमाया) "ऐ इब्ने महदी ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखता हूं कि इस दुन्या से ईमान के साथ जाऊंगा। ऐ इब्ने महदी ! तेरा भला हो ! क्या तुझे मा'लूम है कि अ़नक़रीब मेरी मुलाक़ात किस से होगी ? सुन ! मैं अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जा रहा हूं जो अपने बन्दों पर रह़म दिल और शफ़ीक़ मां से ज़ियादा रह़म फ़रमाने वाला, सब से ज़ियादा करीम व जव्वाद है। ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! जब मुझे अपने करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का बहुत ज़ियादा शौक़ है तो फिर मैं मौत को क्यूं मकरूह जानूंगा ?" आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की येह ईमान अफ़रोज़ बातें

सुन कर मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, रोते रोते मेरी हिचकियां बन्ध गईं। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ग़शी त़ारी होने लगी तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बान से येह अल्फ़ाज़ निकले। हाए मौत का दर्द ! हाए मौत का दर्द ! लेकिन येह आवाज़ उस वक़्त आई जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه होश में न थे वरना ब ह़ालते होश आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक मरतबा भी दर्दो अलम की शिकायत न की। जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को होश आया तो फ़रमाया :

"मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के क़ासिदों (या'नी फ़िरिश्तों) की आमद मरह़बा ! त़य्यिबीन को ख़ुश आमदीद !" येह कह कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फिर बेहोश हो गए। मैं समझा कि शायद आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया है, मैं आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की पेशानी से पसीना साफ़ करने लगा, कुछ देर बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आंखें खोलीं और फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! पढ़ो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या पढ़ूं ?" फ़रमाया : "रह़मत के फ़िरिश्तों को लाने वाली और शैत़ानों को दूर करने वाली सूरत (यासीन शरीफ़) की तिलावत करो।"

मैं ने सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत शुरूअ़ की, दौराने तिलावत मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, रोने की वजह से मुझ से बा'ज़ हुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी न हो सकी तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जिन अल्फ़ाज़ में ग़लत़ी हुई है उन्हें दोबारा पढ़ो।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोह ग़लत़ी दुरुस्त कराई और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर फिर ग़शी त़ारी हो गई। कुछ देर बा'द आंखें खोल कर ऊपर की जानिब देखने लगे। घर वाले और बच्चे रोने लगे, उन की हल्की हल्की चीखें बुलन्द हुईं लेकिन येह आवाज़ घर तक ही मह़दूद थी बाहर सुनाई न देती थी। जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कुछ होश आया तो फ़रमाया : "येह चीख़ो पुकार और रोना कैसा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "घर की औरतों पर रिक़्क़त त़ारी हो गई है।" फ़रमाया : **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, ख़ामोश हो जाओ ! चीख़ो पुकार और रोना बन्द करो ! अपने कपड़े हरगिज़ न फाड़ना क्यूंकि **नौह़ा करना और कपड़े फाड़ना ज़मानए जाहिलिय्यत के काम हैं,** इन चीज़ों को तर्क करो और इस त़रह़ कहो : "ऐ सुफ़्यान षौरी ! **अल्लाह** तबारक व तआ़ला क़ौले षाबित के साथ तुझे षाबित क़दम रखे। तेरी हुज्जतें तुझे पहुंच जाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़मत के फ़िरिश्ते नाज़िल फ़रमाए।" मेरे इन्तिक़ाल के बा'द कषरत से येह दुआ़ए करना। अभी इस त़रह़ दुआ़ करो : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जो हम देख रहे हैं हमें इस से नसीह़त ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इस पर यक़ीने कामिल अ़त़ा फ़रमा।" (आमीन)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान عليه رحمة المنّان फ़रमाते हैं : फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : "ह़म्माद बिन सलमा (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) को मेरे पास बुला लाओ, मैं पसन्द करता हूं कि वक़्ते रुख़्सत वोह मेरे पास मौजूद हों।" मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास गया और अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़ालते नज़्अ़ में हैं। येह सुनते ही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़ौरन नंगे पाऊं सिर्फ़ एक चादर पहने जल्दी जल्दी वहां पहुंचे। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی पर ग़शी त़ारी थी। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद عليه رحمة الله الجواد ने फ़र्ते मह़ब्बत में इन की **पेशानी पर बोसा दिया** और रोते हुवे कहने लगे : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बरकत अ़ता फ़रमाए। हम आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बहुत ज़ियादा मुश्ताक़ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی को होश आया तो कहा : "तमाम ता'रीफ़ें उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपनी मख़्लूक़ के फ़ना होने का फ़ैसला फ़रमाया।" मैं ने अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर ! देखिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास मौजूद हैं।" फ़रमाया : ऐ मेरे भाई ! मरह़बा, मरह़बा ! मेरे क़रीब आ जाओ ! ऐ ह़म्माद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना और ह़ालते नज़्अ़ की तकालीफ़ को देख लो अ़नक़रीब तुम पर भी येह कैफ़िय्यत त़ारी होने वाली है। तुम नहीं जानते कि पैग़ामे अजल तुम्हें अपने घर में आएगा या कहीं और, सुब्ह़ आएगा या शाम को।

येह सुन कर मैं और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़िक्र में मुब्तला हो गए और आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ग़शी त़ारी हो गई। जब इफ़ाक़ा हुवा तो फ़रमाया : "ऐ ह़म्माद ! ज़रा सोच और इस बारे में ग़ौरो फ़िक्र कर, जब तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होगा। ऐ ह़म्माद ! अगर तू रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को देख लेता तो कभी भी दुन्यावी ज़िन्दगी को पसन्द न करता, वोह लोग विसाल के इतने शौक़ीन थे कि मौत भी उन की इतनी ख़्वाहिश मन्द न होगी। वोह गुमान करते थे कि गोया हम जहन्नम में दाख़िल होंगे बस येही सोच कर वोह तड़पते और रोते रहते और उन की आंखों से सैले अश्क रवां हो जाता ह़ालांकि जन्नत उन के सामने हुवा करती थी, वोह सारी सारी रात क़ियाम व सुजूद में गुज़ार देते थे। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपनी पाकीज़ा किताब क़ुरआने पाक में उन की उ़म्दा सिफ़ात और बेहतरीन अवसाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया। ऐ ह़म्माद ! ग़ुरूर व तकब्बुर, रियाकारी और ख़ुद पसन्दी से बचते रहना, इन सिफ़ाते मज़मूमा (या'नी बुरी सिफ़ात) के होते हुवे दीन सलामत नहीं रहता। ऐ ह़म्माद ! छोटों के लिये सरापा शफ़्क़त और बड़ों के लिये सरापा आ़जिज़ी व मह़ब्बत बन जा। लोगों के लिये वोही बात पसन्द कर जो अपने लिये पसन्द करता है। जब तुझे तन्हाई मयस्सर आए तो सफ़रे आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र कर कि अपने आप पर ख़ूब रोया कर और सोचा कर कि तेरी इब्तिदा व इन्तिहा क्या है। ग़ौरो फ़िक्र कर कि तुझे एक अम्रे अ़ज़ीम दरपेश है, वोह अम्र ऐसा सख़्त है कि उस की सख़्ती लोहा व पथ्थर भी बरदाश्त नहीं कर सकते। अगर तू उस दुश्वार गुज़ार घाटी से नजात पा गया तो समझ ले कि तू कामयाब हो गया और अगर ख़ुदा नख़्वास्ता उस गहरी खाई में गिर गया तो बदबख़्तों में से होगा और तुझे ऐसा ग़म मिलेगा जो कभी ख़त्म न होगा और आग में जलने वाले को सुकून नहीं मिलता। ऐ ह़म्माद ! अग़निया की मजालिस से बचते रहना ! बेशक वोह तेरी ज़िन्दगी तेरे लिये नापसन्दीदा बना देंगे। मग़रूरों की मजालिस में हरगिज़ न बैठना, उन की सोह़बत से बचते रहना। अगर उन के साथ बैठेगा तो वोह तुझे अपनी बुरी आ़दतें सिखाएंगे। हां ! उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی की ख़िदमत में ह़ाज़िरी लाज़िम कर। उन के सामने नर्मी से गुफ़्तगू कर, उन्हें घूर घूर कर हरगिज़ न देखना, निहायत आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ उन से मिलना, अगर तू ऐसा करेगा तो उन की भलाइयों से तुझे भी ह़िस्सा मिलेगा और तू उन की बरकतों से फ़ैज़याब होगा।

हाए ! अब ऐसे उ़-लमा कहां हैं जो अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام के जाने के बा'द उन के वारिष बनते हैं। हाए ! वोह इस फ़ानी दुन्या को इस के चाहने वालों के लिये छोड़ कर दारे बक़ा की त़रफ़ चले गए, उन्हें आ़लिम इस लिये कहा गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जो ह़क़ उन पर है उसे पहचानते हैं और उन का अपने ऊपर जो ह़क़ है उसे भी जानते हैं। पस येह लोग आग से दूर भागते और जन्नत की उम्मीद रखते हैं। जो चीजे़ं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ को नापसन्द हैं येह भी उन्हें नापसन्द करते हैं और जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है येह उस से मह़ब्बत करते हैं। ऐ ह़म्माद ! दुन्या की रंगीनियों में खोए हुवे उ़-लमा से बचना ! बेशक जो भी उन के क़रीब जाएगा येह उसे फ़ित्ने में डाल देंगे। अगर कोई जाहिल उन के पास बेठेगा तो उस की जहालत में मज़ीद इज़ाफ़ा होगा, कोई जानने वाला उन के पास जाएगा तो येह उस की फ़िक्रे आख़िरत में कमी का सबब बनेंगे। ऐसे ही लोगों के कामों से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने डराया और उन के साथ बैठने से मन्अ़ फ़रमाया है।

ऐ ह़म्माद ! तू जहां भी रहे हर ह़ाल में हर जगह सिद्क़ को अपने ऊपर लाज़िम रखना क्यूंकि सच्चाई की बदौलत अल्लाह तबारक व तआ़ला तुझे इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाएगा। सब्र को अपने ऊपर लाज़िम कर लेना ! बेशक येह दीन का बादशाह है, यक़ीन को मज़बूती से थाम लेना क्यूंकि येह इस्लाम की बुलन्दी का सरचश्मा है। ऐ ह़म्माद ! इ़ल्मे दीन को मख़्लूक़ में से किसी के हाथ न बेचना बल्कि इस के ज़रीए़ उस रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाना जो छोटी से छोटी नेकी को भी क़बूल करता और बड़े से बड़े गुनाह को भी मुआ़फ़ फ़रमा देता है। येह मेरी वसिय्यत है, इसे मज़बूती से थाम लेना। इतना कह कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ग़शी त़ारी हो गई हम ने देखा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जिस्म से पसीना निकल रहा था और क़दम ठन्डे हो चुके थे। फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को होश आया तो फ़रमाया : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेशक मोमिन हर ह़ाल में भलाई को पहुंचता है। मोमिन की रूह़ उस के पहलूओं से निकलती है और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता है, तमाम ता'रीफे़ं उसी ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के लिये हैं जो अकेला ही हर ह़म्दे ह़क़ीक़ी के लाइक़ है। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कहा : "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़िये।" तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर येह आयते करीमा तिलावत की :

رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَیْرَ الَّذِیْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ

(پ۲۲، الفاطر:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब ! हमें निकाल कि हम अच्छा काम करें उस के ख़िलाफ़ जो पहले करते थे।

फिर येह आयते मुबारका पढ़ी :

وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝۲۸

(پ۷، الانعام:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर वापस भेजे जाएं तो फिर वोही करें जिस से मन्अ़ किये गए थे और बेशक वोह ज़रूर झूटे हैं।

फिर ऊपर देखा और येह आयते करीमा पढ़ी :

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا لٰعِبِیْنَ ﴿۳۸﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ (پ ۲۵، الدخان: ۳۸-۳۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और हमने न बनाए आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है खेल के तौर पर । हम ने इन्हें न बनाया मगर ह़क़ के साथ ।*

फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आवाज़ बन्द हो गई। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को येह फ़रमाते सुना : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस अ़ज़ीम वली के बा'द मशरिक़ो मग़रिब में इस की मिष्ल कोई नहीं। येह बुज़ुर्ग अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام की सुन्नतों के आईनादार थे।" येह कह कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد रोने लगे, यहां तक कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आवाज़ बुलन्द हो गई। मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर रह़्म फ़रमाए। इत़्मीनान रखिये और रोना मौक़ूफ़ कर दीजिये।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْن" पढ़ कर कहा : "ऐ अ़ब्दर्रह़मान बिन महदी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی तेरा भला हो ! इन के बा'द ऐसा कौन है जिस पर रोया जाए।" कुछ देर बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی कलाम करने लगे और मुझे पुकारा। मैं ने कहा : "मैं ह़ाज़िर हूं।" फ़रमाया : "दीनार का चौथा ह़िस्सा दे कर मेरी क़ब्र खुदवाना, दीनार के चौथे ह़िस्से की खुश्बू वग़ैरा ख़रीदना और निस्फ़ दीनार की कफ़न की चादर ख़रीद लेना, मुझे उसी चादर में ग़ुस्ल देना फिर उसी को मेरा इज़ार बना देना और जो क़मीस मैं ने पहनी हुई है इसे फाड़ कर धो कर मेरे कफ़न की क़मीस बना देना मुझ पर इस से ज़ाइद बोझ न डालना और येह तमाम काम उस वक़्त करना जब मुझे इस मकान से दूर ले जाओ वरना इज़्दहाम (या'नी लोगों का हुजूम) हो जाएगा और तुझे मेरी वजह से मशक़्क़त होगी और मैं नहीं चाहता कि तुझे मशक़्क़त हो। फिर मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना, ख़बरदार चीख़ो पुकार हरगिज़ न करना।" इतना कह कर वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی दाइये अजल को लब्बैक कहते हुवे इस दारे फ़ानी से कूच कर गए। (اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْن)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد को देखा कि रोते रोते उन की हिचकियां बन्ध गईं। मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को अजरे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए। सब्र कीजिये।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें भी अज्र अ़त़ा फ़रमाए।" फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی पर कपड़ा डाल दिया, घर की औ़रतें शिद्दते ग़म से रो रही थीं लेकिन उन की आवाज़ पस्त थी। मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد से कहा : "इन के ग़ुस्ल वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की क्या राए है।" फ़रमाया : "उस वक़्त तक इन्हें बिल्कुल ह़रकत न देना जब तक हम इन्हें इस मकान से दूर न ले जाएं।" चुनान्चे, हम आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के जिस्मे मुबारक को ले चले, रास्ते में कुछ लोगों ने देखा तो जम्अ़ हो गए और कहा : "येह तो मय्यित है।" जब उन्हों ने चादर हटा कर देखा तो कहा : "हम इसी कूफ़ी की तलाश में थे।" कुछ देर

बा'द ह़ाकिमे वक़्त भी आ गया। लोगों ने समझा कि शायद येह आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मय्यित की बे हुर्मती करेगा और सर काट कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बदन को लटका देगा। इसी ख़त़रे के पेशे नज़र लोगों ने अपने अपने हथयार निकाल लिये और पुख़्ता इरादा कर लिया कि अगर ह़ाकिम ने हल्की सी गुस्ताख़ी भी की तो हम उस से जंग करेंगे। ह़ाकिम मज्मअ़ के क़रीब आया, लोगों को दूर करते हुवे जनाज़े के क़रीब पहुंचा और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی की दोनों आंखों के दरमियान बोसा दे कर बुलन्द आवाज़ से रोने लगा। लोग तो पहले ही ग़मज़दा थे अब सारा मज्मअ़ रोने लगा। बच्चे, बुढ्ढे, जवान, मर्द व औ़रत अल ग़रज़ हर शख़्स रो रहा था हर आंख पुरनम थी। ह़ाकिम ने फ़ुक़हाए किराम عليهم الرحمة को बुलवा कर कहा : "मुझे इस वलिय्ये कामिल की तदफ़ीन के बारे में मश्वरा दो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां मौजूद थे, उन्हों ने फ़रमाया : "ऐ अमीर ! मेरी राए येह है कि इन्हें इन की चादर और क़मीस का कफ़न दिया जाए और हम ख़ुद अपने हाथों से इन्हें ग़ुस्ल दें, बेशक इन्हें यही बात पसन्द थी। ह़ाकिम ने कहा : "ठीक है, तुम लोग इन्हें ग़ुस्ल दे कर इन्हीं कपड़ों का कफ़न पहनाओ, लेकिन इस के बा'द मैं अपनी त़रफ़ से कफ़न पहनाऊंगा।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की जमाअ़त के साथ मिल कर ग़ुस्ल दिया, क़मीस को कफ़नी और आप की चादर को इज़ार (या'नी कफ़न की चादर) बनाया और ख़ुश्बू वग़ैरा लगाई। फिर ह़ाकिम ने सफ़ेद क़ीमती कपड़ा मंगवा कर अपनी त़रफ़ से कफ़न पहनाया। जब ह़ाकिम की त़रफ़ से दिये जाने वाले कफ़न की क़ीमत मा'लूम की गई तो वोह दोसो (200) दीनार थी। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का जनाज़ा क़ब्रिस्तान लाया गया और बा'द नमाज़े मग़रिब इस वलिय्ये कामिल को दफ़्ना दिया गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान कहते हैं : मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب ने फ़रमाया : "मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताओ।" जब मैं ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इन के अख़्लाक़ व इ़बादात के मुतअ़ल्लिक़ बताया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रोते हुवे फ़रमाने लगे : "क्या तुम जानते हो कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی कौन थे ? सुनो ! इन के बा'द इन जैसा कोई और नहीं मिलेगा, वोह इमाम थे, फ़ाज़िल थे, अदब सिखाने वाले, नसीह़त करने वाले और बेहतरीन उस्ताज़ थे।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین ﷺ}

हिकायत नम्बर : 438 सब से बड़ी बद बख़्ती

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अबू ह़कीम عليه رحمة الله الحكيم कहते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر ख़लीफ़ा बने तो उन्हों ने मुझे फ़िदया दे कर मुसलमान जंगी क़ैदियों को छुड़ाने के लिये भेजा। जब मैं "क़ुस्तुनत़ीनिय्या" पहुंचा तो एक शख़्स के गाने की आवाज़ सुनी, मैं ने पूछा : "तू कौन है ?" कहा : "मैं अबू वाबिसी हूं, ईसाइयों ने मुझ पर

बहुत ज़ुल्मो सितम किया, त़रह़ त़रह़ की सज़ाएं दीं बिल आख़िर उन तकालीफ़ से तंग आ कर मैं ने ईसाई मज़हब क़बूल कर लिया है।" मैं ने कहा : "अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر ने मुझे फ़िदया दे कर मुसलमान क़ैदियों को छुड़ाने के लिये भेजा है, अगर तू ने मजबूर हो कर सिर्फ़ ज़बान से कलिमए कुफ़्र बका है और तेरा दिल ईमान से भरा हुवा है तो मुझे सब क़ैदियों से ज़ियादा तेरी रिहाई पसन्द है। जल्दी बता ! क्या तू ने दिल से तो ईसाई मज़हब क़बूल नहीं किया ?" अबू वाबिसी ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! कुफ़्र मेरे दिल में दाख़िल हो चुका है, मैं दिल से ईसाइय्यत क़बूल कर चुका हूं।" (مَعَاذَاللہ)

मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हिदायत दे, इस्लाम क़बूल कर ले।" कहा : "मेरे दो बेटे हैं और अब मैं ने एक औ़रत से शादी की है उस से भी दो बेटे हुवे हैं। अगर मैं इस्लाम ले भी आया तब भी मुझे नसरानी ही कहा जाएगा। इसी त़रह़ मेरे बच्चों और उन की मां को भी नसरानी कहा जाएगा, मुझे येह बात गवारा नहीं लिहाज़ा मैं नसरानी रहना ही पसन्द करता हूं। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मैं हरगिज़ मुसलमान नहीं होऊंगा।" (مَعَاذَاللہ) मैं ने कहा : "क्या तुझे ह़ालते ईमान में कुछ क़ुरआन याद था ?" उस ने कहा : "ब ख़ुदा ! मैं ह़ालते इस्लाम में बेहतरीन क़ारी था।" मैं ने कहा : "क्या अब भी तुझे कुछ याद है ?" उस ने कहा : "नहीं मैं सारा क़ुरआन भूल चुका हूं, सिर्फ़ येह एक आयत याद है :

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝
(پ۱۴،الحجر:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर काश ! मुसलमान होते।*

हम ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर से दुआ़ करते हैं कि वोह हमारा ईमान सलामत रखे। हमारे गुनाहों की वजह से हमें दौलते ईमान से मह़रूम न करे बल्कि हमारी ख़त़ाओं को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े अपनी रह़मत से मुआ़फ़ फ़रमाए।

मुसलमां हैं हम सब तेरी अ़त़ा से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 439

षरीद का प्याला

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन षाबित बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم बहुत ज़ियादा मुत्तक़ी व इ़बादत गुज़ार थे। रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल पढ़ा करते और हमेशा रोज़ा रखते। आप फ़रमाते हैं : "एक रात मैं मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में था। जब सब नमाज़ी चले गए तो अचानक हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका की त़रफ़ से एक शख़्स ज़ाहिर हुवा और

मस्जिद की दीवार से टेक लगा कर इस त़रह़ मुनाजात करने लगा : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू ख़ूब जानता है कि आज मेरा रोज़ा था और अभी तक मैं ने कोई चीज़ नहीं खाई। मेरे ख़ालिक़ جَلَّ جَلَالُهٗ अब षरीद खाने को बहुत जी चाह रहा है, मौला ! करम फ़रमा दे।"

अभी उस ने दुआ़ मुकम्मल भी न की थी कि मनारे की जानिब से एक अ़जीबो ग़रीब शख़्स आया जिस में इन्सानों की कोई निशानी न थी वोह कोई और ही मख़्लूक़ थी उस ने एक बड़ा सा पियाला दुआ़ मांगने वाले के सामने रख दिया और ख़ुद एक जानिब खड़ा हो गया। वोह पियाले से खाने लगा और मुझे भी बुलाया। मैं समझा कि शायद ! येह जन्नत का बा बरकत खाना है, इसी लिये थोड़ा सा खाया तो वोह ऐसा उ़म्दा व लज़ीज़ था कि अहले दुन्या के खाने इस के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। मैं ने सिर्फ़ चन्द लुक़्मे खाए फिर शर्म की वजह से वापस अपनी जगह आ गया। जब वोह शख़्स खाना खा चुका तो पास खड़े हुवे अ़जीबो ग़रीब शख़्स ने प्याला उठाया और जिधर से आया था उसी सम्त चला गया। जब दुआ़ मांगने वाला जाने लगा तो मैं भी उस के पीछे चल दिया ताकि उस के बारे में मा'लूमात कर सकूं। लेकिन अचानक न जाने वोह कहां ग़ाइब हो गया। मेरा गुमान है कि शायद ! वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام थे।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 440 दानिश मन्द आ'राबी

{1}....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद मदाइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى का बयान है : एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر ने ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक से कहा : "बाहर एक आ'राबी आया हुवा है जो बड़ा फ़सीह़ कलाम करता है।" ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने कहा : "उसे मेरे पास ले आओ।" आ'राबी आया तो ख़लीफ़ा ने कहा : "तुम किस क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखते हो ?" कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मेरा तअ़ल्लुक़ क़बीला "अ़ब्दुल क़ैस बिन अक़्सा" से है, मेरी बातें बज़ाहिर तल्ख़ होंगी मगर ज़ब्त़ से काम लिया जाए तो आप के लिये बहुत मुफ़ीद होंगी अगर इजाज़त हो तो कुछ अ़र्ज़ करूं ?" ख़लीफ़ा ने कहा : "ऐ आ'राबी ! जो कहना चाहते हो कहो।" आ'राबी कुछ इस त़रह़ गोया हुवा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! बेशक आप के पास ऐसे लोग बैठते हैं जिन्हों ने अपने दीन को दुन्या के बदले बेच डाला और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल ले कर आप को राज़ी रखना चाहते हैं। वोह आप से तो डरते हैं लेकिन आप के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ उन के पेशे नज़र नहीं होता। उन्हों ने अपनी आख़िरत बरबाद कर के दुन्या की ऐ़शो इ़शरत ह़ासिल कर ली है, वोह दुन्या से अपने आप को बचाते हैं लेकिन आख़िरत से जंग करते हैं। आप इस मुआ़मले में उन पर हरगिज़ ए'तिमाद न करें जिस पर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने आप को ज़िम्मेदार बनाया है। अगर इन को

इक्तिदार मिल गया तो येह अमानतों को हड़प करेंगे और उम्मत पर ज़ुल्मो जब्र करेंगे। फिर वोह जो भी जुर्म व ज़ुल्म करेंगे उस के बारे में आप से सुवाल होगा। और अगर आप ज़ुल्मो सितम करेंगे तो उन से आप के मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछा जाएगा। अपनी आख़िरत को बरबाद कर के उन की दुन्या की इस्लाह़ न कीजिये, बेशक ! लोगों में सब से ज़ियादा ख़सारा पाने वाला वोह है जो किसी की दुन्या के लिये अपनी आख़िरत बरबाद करे।''

ख़लीफ़ा ने कहा : ''ऐ आ'राबी ! बेशक तेरी ज़बान के वार तेरी तल्वार के वारों से कहीं ज़ियादा तेज़ हैं।'' आ'राबी ने कहा : ''जी हां ! अमीरल मोअमिनीन ! मुआ़मला ऐसा ही है लेकिन इस में आप का फ़ाइदा है नुक़्सान नहीं।'' ख़लीफ़ा ने कहा : ''क्या तेरी कोई ह़ाजत है ?'' कहा : ''मुझे आ़म लोगों से कोई ह़ाजत नहीं, मैं तो ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर جَلَّ جَلَالُهٗ ही का मोह़ताज हूं।'' येह कह कर वोह आ'राबी वापस चला गया। ख़लीफ़ा ने कहा : ''तमाम ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं। येह बन्दा बेहतरीन नसब वाला, मज़बूत़ दिल, ज़बान का सह़ीह़ इस्ति'माल करने वाला, निय्यत का सच्चा और मुत्तक़ी व परहेज़गार है। ऐसे ही समझ दार लोग शरफ़ व बुज़ुर्गी पाते हैं।

﴾2﴿....इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है : एक आ'राबी को ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने बुलाया और कहा : ''कुछ कलाम करो।'' आ'राबी ने कहा :''मैं कलाम करूंगा मगर इसे बरदाश्त कीजियेगा, इस में आप ही का फ़ाइदा है।'' ख़लीफ़ा ने कहा : ''जब हम ऐसे शख़्स की बातें बरदाश्त करने का ह़ौसला रखते हैं जिस से ख़ैर ख़्वाही की उम्मीद नहीं होती और न ही उस के फ़रैब से अम्न होता है तो तुम्हारी बातें भी बरदाश्त कर लेंगे तुम बे फ़िक्र हो कर जो कहना चाहो कहो।'' कहा : ''ऐ अमीरल मोअमिनीन ! जब आप के ग़ज़ब से अमान मिल गई तो अब मैं इस बारे में अपनी ज़बान खोलूंगा जिस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों की ज़बानें आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ और आप के अपने हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त करने से गूंगी हैं।'' इस के बा'द आ'राबी ने वोही कलाम किया जो साबिक़ा रिवायत में गुज़रा।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین ﷺ﴿

हिकायत नम्बर : 441 वली की वली को नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू उ़बैदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने वालिदे मोह़तरम के ह़वाले से बयान फ़रमाते हैं : ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना मक्ह़ूल शामी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی बहुत ज़ियादा बीमार हुवे तो लोगों में येह अफ़्वा फैल गई कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया है। लेकिन

जल्द ही इत्तिलाअ़ मिली कि येह ख़बर ग़लत़ थी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अबू ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को येह ख़त़ लिखा :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

امابعد ! हमें पहले आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इन्तिक़ाल की अफ़्सोस नाक ख़बर पहुंची जिस ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के भाइयों को ग़म में मुब्तला कर दिया। फिर जब मा'लूम हुवा कि वोह ख़बर ग़ैर यक़ीनी और ग़लत़ थी तो हम मसरूर हो गए, अगर्चे येह ख़ुशी व सुरूर भी बहुत जल्द रुख़्सत हो जाएगा और कुछ अ़र्से बा'द पहली ख़बर सच हो जाएगी। तो क्या अब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस शख़्स की त़रह़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं जो मौत का ज़ाएक़ा चख कर इस के बा'द की हौलनाकियों का मुशाहदा कर चुका है, मुन्कर नकीर उस से सुवाल कर चुके हैं और अब वोह ऐसी जगह है जहां जो भेजता रहा वोही काम आएगा। अब वोह अपने सामने सिर्फ़ उन्हीं आ'माल को देख रहा है जो उस ने आगे भेजे थे। **मेरे भाई** ! बेशक इस दुन्या में सब से ज़ियादा नुक़्सान उठाने वाले वोह लोग हैं जिन के पास दुन्यवी माल तो है लेकिन आख़िरत के लिये कोई ज़ादे राह नहीं। ज़रा तवज्जोह कीजिये ! जिस दिन आप दुन्या में आए थे उस दिन से कहीं ज़ियादा आज आप मौत के क़रीब हैं। दिन और रात का मुसलसल सफ़र, मुद्दते ह़यात की मन्ज़िलों को कम करता जा रहा है यहां तक कि जिस पर लैलो नहार (या'नी दिन-रात) गुज़र रहे हैं वोह फ़ना हो जाएगा। उसे मौत आ पहुंचेगी। दिन और रात का सफ़र जारी रहेगा, **आ़द व षमूद, कुंवें** वाले और उन के दरमियान बहुत से बस्तियों वाले सब फ़ना हो गए, अब उन के आ'माल उन के सामने हैं और वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हैं। वोह सब चले गए लेकिन दिन और रात का सफ़र जारी है, येह न जाने कितनों को फ़ना के घाट उतार चुके मगर फिर भी नहीं थके, येह जिस के पास से भी गुज़रे कभी ठहरे नहीं। येह हर एक के साथ वोही करने को तय्यार हैं जो पहलों के साथ कर चुके, जिस जिस पर येह गुज़रे वोह दुन्या से बिल आख़िर कूच कर गया इसी त़रह़ अब भी जिस जिस पर गुज़र रहे हैं उसे भी इस दारे फ़ानी से कूच करना पड़ेगा। नेक हो या बद सब यहां से चले जाएंगे।

मेरे भाई ! आप भी दूसरे लोगों की मिष्ल हैं। जिस त़रह़ वोह चले गए आप भी चले जाएंगे और अब तो आप लोगों के दरमियान उस शख़्स की त़रह़ हैं जिस के तमाम आ'ज़ा काट दिये गए हों या बाक़ी मांदा जिस्म में सिर्फ़ रूह़ बाक़ी हो, आख़िरी सांसें चल रही हों और मौत उसे सुब्ह़ो शाम पुकार रही हो। **मेरे भाई** ! मैं ऐसी नसीह़त से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं जो मैं दूसरों को करूं लेकिन ख़ुद उस पर अ़मल न करूं। وَالسَّلَام

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 442

अल्लाह वालों की बातें

अबू बिश्र तमीमी का बयान है, जब हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक ख़लीफ़ा बना तो उस ने अपने मामूं इब्राहीम बिन हिशाम को कई शहरों पर अमीर मुक़र्रर कर दिया। एक मरतबा इब्राहीम बिन हिशाम दौरे पर था। जब मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَكْرِيْمًا के क़रीब पहुंचा तो वहां के लोग इस्तिक़्बाल और मुबारक बाद के लिये आए। अमीर ने पूछा : "क्या तमाम नेक लोग और उ़-लमा व फ़ुक़्हा आ गए हैं।" लोगों ने कहा : "आ़ली जाह ! हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सिवा सब आ गए हैं।" अमीर इब्राहीम बिन हिशाम ने क़ासिद भेज कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अपने पास बुलाया और कहा : "ऐ अबू हाज़िम ! अल्लाह तबारक व तआ़ला आप को मज़ीद इ़ज़्ज़त व रिफ़्अ़त अ़ता फ़रमाए, आप जानते हैं कि मेरा तअ़ल्लुक़ क़बीलए क़ुरैश से है, मैं अमीरुल मोअमिनीन का मामूं हूं और मुझे ह़रमैन शरीफ़ैन पर वाली मुक़र्रर किया गया है। अब मैं यहां आया तो सब लोग मुबारक बाद और इस्तिक़्बाल के लिये आए मगर आप तशरीफ़ न लाए, क्या वजह है ?"

फ़रमाया : "ऐ अमीर ! मुझे ऐसी कोई ह़ाजत नहीं कि जिस की वजह से मुझे आप की त़रफ़ मोह़ताजी होती, इसी त़रह़ आप को भी मेरी मोह़ताजी नहीं। ऐ अमीर ! मेरे अपने कुछ मुआ़मलात ऐसे हैं जिन में मश्ग़ूलिय्यत की वजह से मुझे किसी और की त़रफ़ ध्यान देने की फ़ुर्सत ही नहीं मिलती।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह बात सुन कर और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के कमज़ोर व नह़ीफ़ जिस्म को देख कर अमीर ने कहा : "ऐ अबू ह़ाज़िम ! आप के पास कितना माल है ?" फ़रमाया : "मेरे पास दो क़िस्म का ख़ज़ाना है जिस के होते हुवे मुझे तंगदस्ती व मुफ़्लिसी का ख़ौफ़ नहीं।" पूछा : "वोह दो ख़ज़ाने कौन से हैं ?" फ़रमाया : (1)....हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और (2)....लोगों से बे नियाज़ी।" पूछा : "आप क्या खाते हैं ?" फ़रमाया : "रोटी और ज़ैतून का तेल।" पूछा : "क्या मुसलसल एक ही खाना खा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उक्ताते नहीं ?" फ़रमाया : "जब उक्ता जाता हूं तो खाना तर्क कर देता हूं, जब दोबारा ख़्वाहिश होती है तो खा लेता हूं।" अमीर ने पूछा : "हमारी नजात किन उमूर में है ?" फ़रमाया : "ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के बिग़ैर किसी से कोई चीज़ न लो और किसी भी ह़क़दार का ह़क़ न रोको।" अमीर ने कहा : "इस की त़ाक़त कौन रखता है ?" फ़रमाया : "जो आग से नजात और जन्नत का त़ालिब है उस पर येह काम आसान है।" उस वक़्त मज्मअ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی भी मौजूद थे उन्हों ने कहा : "ऐ अमीर ! येह तक़रीबन चालीस साल से मेरे पड़ोसी हैं, जैसी बातें आज इन्हों ने की हैं आज तक कभी मैं ने इन से ऐसी बातें नहीं सुनीं। इन की येह शान आज से पहले मुझ पर कभी ज़ाहिर न हुई।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपने घर आए और इब्ने शिहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی को येह ख़त़ लिखा :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اما بعد ! ऐ ज़ोहरी ! अब तुम बहुत बुढ़े हो गए हो येह ऐसी उ़म्र है कि जो भी तुम्हें देखेगा दुआ़ करेगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म करे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए। तुम ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर جَلَّ جَلَالُہٗ की बे इन्तिहा ने'मतों के बोझ तले दबे हुवे हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें दराज़िये उ़म्र से नवाज़ा, अपने दीन की समझ और अपनी किताब के इ़ल्म से माला माल किया। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इन ने'मतों के ज़रीए़ तुम्हें आज़्माएगा, तुम पर अपनी ने'मतों की बरसात फ़रमाएगा, फिर इन ने'मतों पर तुम्हारे शुक्र को आज़्माएगा, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ इरशाद फ़रमाता है :

لَئِنۡ شَكَرۡتُمۡ لَاَزِيۡدَنَّكُمۡ وَلَئِنۡ كَفَرۡتُمۡ اِنَّ عَذَابِىۡ لَشَدِيۡدٌ ۝ (پ۱۳، ابرٰھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।

ज़रा सोचो तो सही ! जब बरोज़े क़ियामत तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होगे और वोह क़ादिरे मुत़लक़ عَزَّوَجَلَّ तुम से अपनी ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ पूछेगा कि तुम ने इन्हें कैसे इस्ति'माल किया ? जो दलील उस ने अ़त़ा फ़रमाई उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछेगा कि इस में किस किस त़रह़ फ़ैसला किया ? हरगिज़ इस गुमान में न रहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दिन तुम्हारा उ़ज़्र क़बूल करेगा और ग़फ़्लतों और कोताहियो के बा वुजूद तुम से राज़ी हो जाएगा। तुम्हारा येह कहना काफ़ी नहीं कि मैं आ़लिम हूं, तुम ने लोगों से इ़ल्मी झगड़ा किया तो अपने ज़ोरे बयान से ग़ालिब रहे, तुम्हें जो समझ बूझ अ़त़ा की गई, जो फ़हम व फ़िरासत मिली उसे इस्ति'माल करते हुवे बताओ कि क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान उ़-लमा के मुतअ़ल्लिक़ नहीं ?

وَاِذۡ اَخَذَ اللّٰهُ مِيۡثَاقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكۡتُمُوۡنَهٗ فَنَبَذُوۡهُ وَرَآءَ ظُهُوۡرِهِمۡ وَاشۡتَرَوۡا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيۡلًا ؕ فَبِئۡسَ مَا يَشۡتَرُوۡنَ ۝ (پ۴، ال عمران:۱۸۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़त़ा हुई कि तुम ज़रूर उसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले ज़लील दाम ह़ासिल किये तो कितनी बुरी ख़रीदारी है।*

ऐ इब्ने शिहाब ज़ोहरी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा भला करे। येह बहुत बड़ा गुनाह है कि तुम ज़ालिमों के साथ बैठते हो, जब वोह तुम्हें बुलाते हैं तो उन के पास चले जाते हो, वोह तह़ाइफ़ देते हैं तो क़बूल कर लेते हो, ह़ालांकि वोह तोह़फ़े किसी सूरत में क़बूल करने के क़ाबिल नहीं होते। ज़ालिमों ने तुम्हें ऐसी चक्की बना लिया है जिस के गिर्द उन की बात़िल ख़्वाहिशात घूमती हैं। तुम्हें ऐसी सीढ़ी और पुल बना लिया है जिस के ज़रीए़ वोह ज़ुल्म व गुमराही की मन्ज़िलों की त़रफ़ बढ़ते हैं। वोह तुम्हारे ज़रीए़ उ़-लमा के ख़िलाफ़ शुकूक व शुब्हात का शिकार होते और जाहिलों के दिलों को हांकते हैं। तुम अब तक न तो उन के ख़ास वुज़रा की सफ़ में शामिल हो सके न ही ख़ास हम नशीन बन सके। बस तुम ने तो उन की दुन्या को संवारा और अ़वाम व ख़वास को उन ज़ालिमों के गिर्द जम्अ़ कर दिया है, उन्हों ने तुम्हारे लिये जो कुछ तय्यार किया वोह उस से कितना कम है जो उन्हों ने बरबाद कर दिया। तुम से कितना ज़ियादा छीन कर कितना कम कर दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए, अपनी फ़िक्र करो। तुम्हें तो उस ज़ात का शुक्र अदा करना चाहिये जिस ने तुम्हें इ़ल्मे दीन की दौलत से नवाज़ा, अपनी किताब का इ़ल्म दिया और उन लोगों में से नहीं बनाया जिन के बारे में इरशाद फ़रमाया :

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَ يَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَ اِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَ دَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

(پ۹،الاعراف:۱۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर उन की जगह उन के बा'द वो ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिष हुवे इस दुन्या का माल लेते हैं और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी और अगर वैसा ही माल उन के पास और आए तो ले लें। क्या उन पर किताब में अ़हद न लिया गया कि अल्लाह की त़रफ़ निस्बत न करें मगर ह़क़ और उन्हों ने इसे पढ़ा और बेशक पिछला घर बेहतर है परहेज़गारों को तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म करे ! अभी जो उ़म्र बाक़ी है इस में बेदार हो जाओ। तुम बुरी त़रह़ फंस चुके हो। ख़ुदारा ! अपने आप को बचाओ, अपने दीन की दवा करो। बेशक इस में कमज़ोरी आ गई है। ज़ादे राह तय्यार कर लो, अ़नक़रीब तुम्हें बहुत त़वील सफ़र तै करना है। तुम्हारा मुआ़मला उस के साथ है जो ह़ाफ़िज़ व निगहबान है, वोह तुम से ग़ाफ़िल नहीं। तुम अपनी फ़िक्र करो, तुम्हारे इ़लावा कौन तुम्हारी फ़िक्र करेगा। तमाम ता'रीफ़ें उस मालिके ह़क़ीक़ी के लिये हैं जिस से ज़मीनो आस्मान की कोई शै पोशीदा नहीं, वोह ग़ालिब व ह़िकमत वाला है। وَالسَّلَام

हिकायत नम्बर : 443 ख़ाइफ़ नौजवान की अनोखी मौत

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मुझे बताया गया कि यमन में एक इ़बादत गुज़ार शख़्स है जो ख़ाइफ़ीन में आ'ला मर्तबा और मुजाहदा करने वालों में बुलन्द मक़ाम रखता है। उस की येह सिफ़ात सुन कर मुझे ज़ियारत व मुलाक़ात का शौक़ हुवा, चुनान्चे, ह़ज से फ़राग़त के बा'द मैं "यमन" गया और पूछता पूछता उस आ़बिद के घर पहुंचा। वहां दरवाज़े के पास बहुत से लोग जम्अ़ थे वोह सब भी ज़ियारत व मुलाक़ात करने आए थे। हमारे दरमियान इन्तिहाई कमज़ोर व नह़ीफ़ बदन और ज़र्द चेहरे वाला एक मुत्तक़ी व परहेज़गार जवान भी था, ऐसा लगता था जैसे किसी बहुत बड़ी मुसीबत ने उसे मौत के क़रीब पहुंचा दिया है।

कुछ देर बा'द दरवाज़े से एक बुज़ुर्ग आया और नमाज़े जुमुआ़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ चल दिया। سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येही वोह परहेज़गार व इ़बादत गुज़ार शख़्स था जिस की विलायत के डंके दुन्या भर में बज रहे थे। हम भी उस के पीछे चल दिये और एक जगह उस के गिर्द जम्अ़ हो गए ताकि उस से गुफ़्त्गू करें। इतने में वोह कमज़ोर नौजवान आया और सलाम किया। बुज़ुर्ग ने उसे ख़ुश आमदीद कहा और बड़ी गर्म जोशी से मुलाक़ात की। नौजवान ने कहा : "ऐ शैख़ ! अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आप जैसे लोगों को दिलों की बीमारी का त़बीब और गुनाहों के दर्द का मुआ़लिज बनाया है। मुझे भी एक बहुत गहरा ज़ख़्म है जो बहुत फैल चुका है, अब मेरी बीमारी उ़रूज को पहुंच चुकी है। अल्लाह तबारक व तआ़ला आप पर रह़म फ़रमाए !

अगर मुनासिब समझें तो अपने मरहम से मेरे ज़ख़्मों का इलाज फ़रमा दीजिये और मुझ पर एह़सान फ़रमाइये।" येह सुन कर बुज़ुर्ग ने अपने अ़सा से टेक लगाई और कहा : "पूछो ! क्या पूछना चाहते हो ? बताओ ! अस्ल मस्अला क्या है ?" कहा : "हुज़ूर ! येह इरशाद फ़रमाइये कि ख़ौफ़ की अ़लामत क्या है ?" फ़रमाया : "इस की अ़लामत येह है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला का ख़ौफ़ तुझे हर ख़ौफ़ से नजात दे दे, उस के इलावा तुझे किसी का ख़ौफ़ न रहे।" येह सुन कर नौजवान दर्दभरी आहें भरने लगा, फिर बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब इफ़ाक़ा हुवा तो अपने हाथ से चेहरा साफ़ किया और कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! येह बताइये कि बन्दा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में कब पुख़्ता होता है ? उसे ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दरजए कमाल कब नसीब होता है ?" फ़रमाया : "जब वोह दुन्या में अपने आप को मरीज़ की त़रह़ रखे और बीमारी के ख़ौफ़ से हर क़िस्म के खाने से अपने आप को बचाए, मरज़ के त़वील हो जाने के ख़ौफ़ से दवा की कड़वाहट बरदाश्त करे।" नौजवान ने फिर एक दर्दभरी चीख़ मारी और मुंह के बल गिर कर बे होश हो गया। जब होश आया तो कहा : "हुज़ूर ! मुझ पर नर्मी फ़रमाइये। बुज़ुर्ग ने कहा : "पूछो ! जो पूछना है।" अ़र्ज़ की : "अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से मह़ब्बत की अ़लामत क्या है ?"

येह सुन कर उस बुज़ुर्ग पर कपकपी त़ारी हो गई फिर रोते हुवे कहा : "मेरे दोस्त ! बेशक दरजए मह़ब्बत बहुत आ'ला दरजा है।" नौजवान ने कहा : "हुज़ूर ! मैं चाहता हूं कि आप मुझे इस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताएं।" फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वालों के दिल मह़ब्बत की वजह से चाक होते हैं। वोह अपने दिलों के नूर से ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُهٗ की अ़ज़्मत व जलाल की त़रफ़ नज़र करते हैं। उन के अजसाम तो दुन्या में होते हैं लेकिन रूहें पर्दों में होती हैं। वोह उमूर का मुशाहदा इ़ल्मुल यक़ीन के साथ करते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से शदीद मह़ब्बत की वजह से जितना हो सके हर लम्ह़े उस की इ़बादत करते हैं। वोह जन्नत के ह़ुसूल या दोज़ख़ से बचने के लिये नहीं बल्कि ख़ालिस रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आ'माल करते हैं।" बस येह सुनना था कि वोह नौजवान तड़प कर ज़मीन पर गिरा और रोते रोते अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। बुज़ुर्ग ने उस की पेशानी और हाथों को चूमते हुवे कहा : "येही ह़ालत ख़ाइफ़ीन का मैदान, मुजाहदा करने वालों की राह़त है और उन्हें इसी ह़ालत में सुकून मिलता है।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 444

एह़सान फ़रामोश

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद तमीमी عَلَيهِ رَحْمَةُ اللهِ الغَنِی से मन्क़ूल है : "एक ग़रीब व नादार शख़्स किसी करीम व नेक शख़्स के पास गया तो उस ने परेशानियां दूर कर के उसे ख़ुशह़ाल व ग़नी कर दिया। लेकिन वोह ना शुक्रा करीम की कषीर अ़त़ाओं के बा वुजूद नाशुक्री करता। फिर एक दिन शहर के अमीर के पास जा कर शिकायत की : "मैं जिस के पास रहता हूं उस में येह येह बुराई है, वोह तो बहुत ही बुरा है अल ग़रज़ उस ने बहुत सी ऐसी ऐसी

बातें उस शख़्स के बारे में कहीं जो उस में बिल्कुल न थीं बल्कि वोह तो उन तमाम बुराइयों से बहुत ज़ियादा दूर रहता था। शिकायत करने के बा'द जब वोह बे मुरव्वत चला गया तो ह़ाकिमे शहर ने उस करीम को बुला कर कहा : "फ़ुलां शख़्स ने तुम्हारे ख़िलाफ़ येह येह शिकायतें की हैं।" येह सुन कर वोह बहुत हैरान व परेशान हो गया। ह़ाकिम ने कहा : "क्या हुवा, तुम इतना परेशान क्यूं हो गए ?" उस ने कहा : "मुझे ख़ौफ़ है कि मैं ने उस के साथ अच्छाई व भलाई में कमी की है जभी तो वोह मेरी बुराई पर आमादा हो गया। अफ़्सोस ! मैं उस की सह़ीह़ ख़िदमत न कर सका।" ह़ाकिम ने जब येह सुना तो कहा : "سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ तुम दोनों की त़बीअ़तों और आ़दतों में कितना तअ़ज्जुब ख़ैज़ फ़र्क़ है। तुम तो उस पर एह़सान व शफ़्क़त किये जा रहे हो जब कि वोह एह़सान फ़रमोश व लईम (या'नी कमीना) है।"

फिर नेक व करीम शख़्स ने ह़ाकिम से वापसी की इजाज़त चाही जब वापस जाने लगा तो ह़ाकिम ने कहा "अल्लाह तबारक व तआ़ला आप जैसे नेक सीरत लोगों को लम्बी उ़म्र अ़ता फ़रमाए और आप का फ़ैज़ ता देर जारी व सारी रहे। (एह़सान फ़रामोश की मज़म्मत में शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :)

जो अपने मोह़सिनों को अ़य्यारी दिखाता है — नारे ह़सद के शो'लों को हर दम बढ़ाता है
ऐसा लईम ज़िल्लत व ख़्वारी उठाता है — अपनी लगाई आग में ख़ुद को जलाता है
लेकिन करीम फिर भी करीमी दिखाता है — गर्चे बुरों की त़रफ़ से सो ग़म उठाता है

ह़िकायत नम्बर : 445 — **जिसे अल्लाह रख्खे उसे कौन चख्खे**

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى का बयान है : अबू बुग़ैल नामी एक शख़्स ने अपना वाक़िआ़ बयान करते हुवे बताया : "एक मरतबा त़ाऊ़न के मरज़ ने लाशों के अम्बार लगा दिये, हम मुख़्तलिफ़ क़बीलों में जा कर मुर्दों को दफ़्न करते। जब पूरे पूरे गाऊं हलाक होने लगे और लाशों की ता'दाद बहुत बढ़ गई तो हम उन्हें दफ़्नाने से आ़जिज़ आ गए। चुनान्चे, अब हम जिस घर में दाख़िल होते और देखते कि उस के रिहाइशी फ़ौत हो गए हैं और उन की लाशें घर के अन्दर ही हैं तो तमाम लाशें एक कमरे में जम्अ़ कर के दरवाज़ा और खिड़कियां वग़ैरा बन्द कर देते। इसी त़रह़ घर घर जा कर हम लाशें जम्अ़ करते रहे फिर एक घर में गए तो देखा कि घर में मौजूद सब लोग मर चुके हैं, उन में कोई एक भी ज़िन्दा न था। हम ने घर के तमाम दरवाज़े बन्द किये और वापस आ गए।

जब त़ाऊ़न का मरज़ चला गया तो हम ने बन्द घरों को खोलना शुरूअ़ किया, फिर हम एक घर में गए जिस के तमाम रिहाइशी मर चुके थे और हम ने उस के दरवाज़े अच्छी त़रह़ बन्द

किये थे । जब दरवाज़ा खोला तो येह देख कर हैरान रह गए कि सेहन में एक तरो ताज़ा, फ़र्बा और साफ़ सुथरा बच्चा मौजूद था । ऐसा लगता था जैसे मां की गोद से अभी अभी लिया गया हो । हम बड़ी हैरानी के आ़लम में कुदरते खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का नज़ारा कर रहे थे और मुतअ़ज्जिब थे कि येह बच्चा कहां से आया और अब तक बिग़ैर ख़ूराक के कैसे ज़िन्दा है ? हम हैरत की वादियों में गुम थे कि अचानक एक मादा जानवर दीवार के टूटे हुवे हिस्से से अन्दर दाख़िल हुवा और बच्चे के क़रीब आ कर बैठ गया, बच्चा महब्बत से उस की त़रफ़ लपका और उस मादा का दूध पीने लगा । ख़ालिक़े काइनात व रज़्ज़ाक़े मख़्लूक़ात جَلَّ جَلَالُہٗ की इस शाने रज़्ज़ाक़ी को देख कर हम बहुत हैरान हुवे कि वोह जिस त़रह़ चाहता है अपने बन्दों को रिज़्क़ के अस्बाब मुहय्या करता है । उस ने एक बच्चे की ख़ूराक का इन्तिज़ाम किस त़रह़ किया । ताऊ़न की बीमारी से इस घर के तमाम अफ़राद औ़रतें और मर्द मौत के घाट उतर चुके थे, इन्हीं अफ़राद में एक ह़ामिला औ़रत भी थी जिस का इन्तिक़ाल हो गया फिर उस बच्चे की विलादत हुई और उस के रिज़्क़ का इन्तिज़ाम एक दरिन्दे के ज़रीए़ किया गया । ह़ज़रते सय्यिदुना मा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى कहते हैं : "उस बच्चे ने ख़ूब परवरिश पाई और जवान हो गया और मैं ने वोह दिन भी देखा कि वोह बसरा की मस्जिद में अपनी दाढ़ी को अपने हाथों से संवार रहा था । ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُہٗ सब कुछ कर सकता है । वोह अपने बन्दों पर जिस त़रह़ चाहता है एह़सान फ़रमाता है ।"

हि़कायत नम्बर : 446

आग से बचने का बेहतरीन त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला عليه رحمة الله الاعلى का बयान है, ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जो भी दुन्यवी माल आता सब सदक़ा कर देते । जब उन के हां बच्चे की विलादत हुई तो उन की अहलिया मोह़तरमा ने अपने ख़ानदान वालों से कहा : "इन ह़ज़रत से कहें कि घर वालों के लिये भी कुछ माल जम्अ़ कर लें ।" चुनान्चे, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "अब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ साहि़बे अवलाद हो गए हैं, अगर अपनी अवलाद के लिये कुछ माल जम्अ़ कर रखें तो इस में क्या ह़रज है ?" फ़रमाया : "मैं तो येही चाहता हूं कि आग से बचने के लिये अपनी हर शै ख़र्च कर दूं, लिहाज़ा मैं सदक़ा व ख़ैरात करने से रुक नहीं सकता ।"

रावी कहते हैं : जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स के पड़ोस में ज़मीन का छोटा सा टुकड़ा मीराष में छोड़ा, वोह ऐसी ज़मीन थी कि मैं अपनी तीन दिरहम की चादर के इ़वज़ भी ख़रीदने पर राज़ी न था । फिर चन्द दिन बा'द पड़ोसी ने वोही ज़मीन तीस हज़ार (30,000) दिरहम में ख़रीद ली ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 447 सदक़ा व ख़ैरात से बलाएं टलती हैं

हज़रते सय्यिदुना सलाम बिन मिस्कीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين फ़रमाते हैं : एक शख़्स हर साल कबूतरी के घोंसले से उस के बच्चे उतार लिया करता था। कबूतर और कबूतरी ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस शख़्स के ख़िलाफ़ शिकायत की। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं उसे हलाक करने वाला हूं।" इस साल जब कबूतरी ने अन्डे दिये और बच्चे निकले तो वोह शख़्स घर से दो रोटियां ले कर निकला। रास्ते में एक मिस्कीन मिला तो दोनों रोटियां उसे दे दीं, फिर दरख़्त पर चढ़ा कबूतरी के बच्चे उतारे और वापस चला आया। कबूतर और कबूतरी ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में शिकायत की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि मैं ने अ़हद कर रखा है कि "जो शख़्स किसी दिन कोई सदक़ा करेगा मैं उसे उस दिन हलाक न करूंगा।"

येह हिकायत हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस त़रह़ मरवी है, रसूले करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम से पहले लोगों में एक शख़्स था जो हर मरतबा परन्दे के घोंसले से बच्चे निकाल लेता। परन्दे ने उस के ख़िलाफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शिकायत की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर वोह इसी ह़ालत पर बाक़ी रहा तो हलाक हो जाएगा।" जब उस साल वोह शख़्स घर से सीढी ले कर परन्दे के बच्चों को पकड़ने के लिये चला तो रास्ते में उसे एक फ़क़ीर मिला उस ने अपने ज़ादे राह में से एक रोटी उसे दे दी, फिर दरख़्त के ऊपर चढ़ा और बच्चों को पकड़ लिया। परन्दा येह मन्ज़र देख रहा था उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने हम से वा'दा फ़रमाया था कि इस मरतबा वोह हलाक हो जाएगा लेकिन वोह तो सह़ीह़ व सालिम जा रहा है ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम नहीं जानते कि जो शख़्स किसी दिन कोई सदक़ा करे तो मैं उसे उस दिन हलाक नहीं करता और न ही उसे उस दिन कोई बुराई पहुंचती है।"

(كنزالعمال، كتاب الزكاة،قسم الاقوال، الحديث ١٦١١٢، ج٦، ص١٥٩)

येही हिकायत इस त़रह़ भी मरवी है : "हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के एक उम्मती के घर में दरख़्त था। एक कबूतरी ने उस पर घोंसला बना लिया, फिर उस के अन्डों से बच्चे निकले तो उस शख़्स की ज़ौजा ने कहा : "इस दरख़्त पर चढ़ कर परन्दे के बच्चों को पकड़ लो और पका कर अपने बच्चों को खिला दो।" चुनान्चे, उस ने ऐसा ही किया। परन्दे ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बारगाह में शिकायत कर दी। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे बुलाया और सज़ा की धमकी दी, उस ने अ़र्ज़ की "या नबिय्यल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام आइन्दा ऐसा हरगिज़ न करूंगा।" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे छोड़ दिया और वोह घर चला आया।

कबूतरी ने जब दोबारा अन्डे दे कर बच्चे निकाले तो उस शख़्स की ज़ौजा ने कहा : "दरख़्त पर चढ़ो और परन्दे के बच्चे पकड़ लाओ।" उस ने कहा : "मुझे हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मन्अ़ फ़रमाया है।" औ़रत ने कहा : "तुम क्या समझते हो कि हज़रते

सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तुम्हारे और इस कबूतरी के लिये फ़ारिग़ बैठे होंगे, पूरी दुन्या पर उन की हुकूमत है, वोह अपनी ममलुकत के मुआ़मलात में समरूफ़ होंगे, जल्दी करो और कबूतरी के बच्चों को पकड़ लाओ।'' बीवी का जवाब सुन कर वोह बेचारा दरख़्त पर चढ़ा और कबूतरी के बच्चों को पकड़ लाया। कबूतरी ने दोबारा ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बारगाह में शिकायत कर दी। आप عَلَیْہِ السَّلَام को बड़ा जलाल आया और मशरिक़ो मग़रिब के किनारों से दो जिन्नों को बुला कर फ़रमाया : ''तुम दोनों फुलां दरख़्त के पास ठहरे रहो। जब वोह शख़्स दरख़्त पर चढ़े तो उस का एक पाउं मशरिक़ की त़रफ़ और दूसरा मग़रिब की त़रफ़ खींचना, इस त़रह़ उस नाफ़रमान के दो टुकड़े कर देना।'' हुक्म पाते ही दोनों जिन्न मत़लूबा दरख़्त के पास पहुंच गए। वोह शख़्स दरख़्त पर चढ़ने के लिये तय्यार हुवा ही था कि किसी फ़क़ीर ने रोटी मांगी, उस ने अपनी बीवी से कहा : ''अगर घर में कुछ है तो इस फ़क़ीर को दे दो।'' औ़रत ने कहा : ''मेरे पास इस फ़क़ीर को देने के लिये कुछ भी नहीं।'' तो वोह खुद कमरे में गया और उसे वहां से रोटी का एक लुक़्मा मिला, वोही लुक़्मा फ़क़ीर को दिया और दरख़्त पर चढ़ कर बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के ब आसानी कबूतरी के बच्चों को पकड़ लाया। कबूतरी ने फिर शिकायत की, तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने दोनों जिन्नों को बुला कर इरशाद फ़रमाया : ''क्या तुम दोनों ने मेरे हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी की है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''या नबिय्यल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام हम ने हरगिज़ आप عَلَیْہِ السَّلَام के हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी नहीं की, बात दरअस्ल येह है कि हम तो आप عَلَیْہِ السَّلَام का हुक्म पाते ही उस दरख़्त के पास पहुंच गए मगर जब वोह शख़्स दरख़्त पर चढ़ने लगा तो किसी साइल ने रोटी मांगी, उस ने उसे रोटी का एक लुक़्मा दिया और दरख़्त पर चढ़ने लगा, हम उसे पकड़ने के लिये बढ़े तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दो फ़िरिश्ते हमारी त़रफ़ भेजे। उन्हों ने हमें गर्दन से पकड़ा और मग़रिब व मशरिक़ की त़रफ़ फेंक दिया। **इस त़रह़ एक लुक़्मा सदक़ा करने की बरकत से वोह हलाकत से मह़फ़ूज़ रहा।''**

हिकायत नम्बर : 448 दोस्त को खाना खिलाने की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना सलाम बिन मिसकीन علیہ رحمۃ اللہ المتین ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं : एक मरतबा चन्द लड़के लकड़ियां काटने के लिये जंगल की त़रफ़ जा रहे थे। जब वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़रीब से गुज़रे तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों से फ़रमाया : ''वापसी पर इन में से एक लड़का हलाक हो जाएगा।'' जब इन की वापसी हुई तो सब के सब सलामत थे और कोई भी हलाक न हुवा था। ह़वारियों ने अ़र्ज़ की : ''या नबिय्यल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام आप عَلَیْہِ السَّلَام तो इरशाद फ़रमा रहे थे कि इन में से एक लड़का हलाक हो जाएगा लेकिन येह सब बिल्कुल सलामत हैं ?'' फ़रमाया : ''इन लड़कों को मेरे पास बुलाओ।''

जब वोह हाज़िरे ख़िदमत हुवे तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "अपने सरों से लकड़ियों के गठ्ठे उतार दो।" सब ने लकड़ियां नीचे उतार दीं, फ़रमाया : "अब इन्हें खोलो।" जब गठ्ठे खोले गए तो उस में से एक गठ्ठे में एक बहुत ख़ौफ़नाक मुर्दा सांप एक कांटे के साथ उलझा हुवा था। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस लड़के से पूछा : "तुम ने कौन सी बड़ी नेकी की है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं ने आज कोई बड़ी नेकी तो नहीं की, हां ! इतना ज़रूर है कि आज हमारे दोस्तों में से एक दोस्त अपने साथ खाना नहीं लाया था तो मैं ने उसे अपने साथ खाने में शरीक कर लिया।" लड़के की येह बात सुन कर आप عَلَيْهِ السَّلَام ज़बाने ह़ाल से फ़रमा रहे थे : "बस इसी नेकी की वजह से आज तू हलाकत से मह़फ़ूज़ रहा।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हि़कायत नम्बर : 449 ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सादगी

ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन, अमीरुल मोअमिनीन, ख़लीफ़ए षानी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ा बनने के बा'द इन्तिहाई सादा ग़िज़ा इस्ति'माल फ़रमाने लगे जिस की वजह से बज़ाहिर कमज़ोर नज़र आने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा कुछ लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहि़बज़ादी उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आए और अ़र्ज़ की : "कमज़ोरी की वजह से अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की गर्दन नज़र आने लगी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जिस्म काफ़ी कमज़ोर हो गया है और कपड़े भी ऐसे पहनते हैं कि जिन पर कई कई पैवन्द लगे होते हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन से अ़र्ज़ करें कि कुछ अच्छा खाना खा लिया करें और उ़म्दा व नर्म लिबास पहन लिया करें, इस त़रह़ उन्हें लोगों के मुआ़मलात पर तक़विय्यत मिलेगी।" जब उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने लोगों की बातें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने बयान कीं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "क्या मेरे आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अपनी ज़िन्दगी में कभी उ़म्दा व नर्म बिस्तर इस्ति'माल फ़रमाया ? तुम तो बेहतर जानती हो, बताओ ! हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कैसा बिस्तर इस्ति'माल फ़रमाते थे ?" अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिस्तर एक कम्बल था जिसे दोहरा कर दिया जाता, जब वोह सख़्त हो जाता तो मैं उसे चार तह कर के बिछा दिया करती और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिस्तर येही चादर थी।" फ़रमाया : "अच्छा मुझे बताओ ! हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से क़ीमती व उ़म्दा लिबास में क्या चीज़ शामिल थी ?" अ़र्ज़ की : "एक धारीदार चादर थी जिसे हम ने ही बनाया था, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब उसे ज़ेबेतन कर के बाहर तशरीफ़ ले गए तो किसी ने वोह चादर मांग ली, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह चादर उसे इनायत फ़रमा दी।"

है चटाई का बिछौना कभी ख़ाक ही पे सोना — कभी हाथ का सिरहाना मदनी मदीने वाले !
तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों — हों सलामे आ़जिज़ाना मदनी मदीने वाले !

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम्हारा क्या ख़याल है कि मुझे उ़म्दा खाना खाने की ख़्वाहिश नहीं होती ? अगर मैं घी खाना चाहता तो ज़ैतून के तेल की जगह घी इस्ति'माल करता, मेरे पास ज़ैतून का तेल होता है लेकिन मैं फिर भी नमक इस्ति'माल करता हूं अल ग़रज़ ! मुझे इन चीज़ों की ख़्वाहिश होती है लेकिन मेरे दोनों रहनुमा (हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) एक रास्ते पर चले, मैं नहीं चाहता कि मैं उन के रास्ते की मुख़ालफ़त करूं, मैं उन की मुख़ालफ़त से डरता हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो اٰمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم

हि़कायत नम्बर : 450

लोगों को गुमराह करने की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद रबई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मन्क़ूल है, बनी इस्राईल के एक शख़्स ने शरीअ़त का इल्म ह़ासिल किया और फिर इस दीनी इल्म की वजह से दुन्यवी दौलत और शोहरत त़लब करता रहा, उस की सारी ज़िन्दगी इसी काम में गुज़र गई। जब बुढ़ापा आया, मौत के साए गहरे हुवे और सफ़रे दुन्या ख़त्म होने लगा तो उसे अपनी ग़लती का ख़ूब एह़सास हुवा। उस ने अपने आप को मुख़ात़ब कर के कहा : "तूने दीन में जो बिगाड़ पैदा किया लोग तो उस से नावाक़िफ़ हैं। लेकिन तेरा क्या ख़याल है, क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी तेरे इस बिगाड़ से बे ख़बर है ? वोह वह़दहू लाशरीक جَلَّ جَلَالُہٗ ज़ात तो हर हर शै से वाक़िफ़ है। अब तेरी मौत क़रीब आ गई है। तेरे लिये बेहतर है कि जल्द अज़ जल्द अपनी बद आ'मालियों से तौबा कर ले।" चुनान्चे, उस इस्राईली आ़लिम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा की, और उस ने अपनी हंसली की हड्डी में ज़न्जीर डाल कर अपने आप को मस्जिद के सुतून से बांध दिया और कहा : "मैं उस वक़्त तक अपने आप को आज़ाद नहीं करूंगा जब तक मुझे येह मा'लूम न हो जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ली है। और अगर मेरी तौबा क़बूल न हुई तो इसी ह़ालत में अपनी जान दे दूंगा। जब उस ने इस त़रह़ इल्तिजा की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस वक़्त के नबी عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : "उस इस्राईली आ़लिम से कह दो कि अगर तेरा गुनाह ऐसा होता जो सिर्फ़ मेरे और तेरे दरमियान तक मह़दूद होता तो मैं तेरी तौबा क़बूल कर लेता लेकिन जिन लोगों को तू ने गुमराह किया है उन का क्या ह़ाल होगा ? तू ने उन्हें गुमराह कर के जहन्नम में दाख़िल करवा दिया अब मैं तेरी तौबा हरगिज़ क़बूल नहीं करूंगा।"[1] (الامان و الحفیظ !)

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ह़न्नानो मन्नान परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने हमें नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के दामन से वाबस्ता फ़रमाया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने ख़ास करम से हमारी तमाम ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए।) (اٰمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم)

---

1 येह हि़कायत बनी इस्राईल के एक शख़्स की है और उन के अह़काम हम से मुख़्तलिफ़ थे। जब कि उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ास एह़सान है कि हमारे लिये तौबा के दरवाज़े खुले हुवे हैं।

हिकायत नम्बर : 451 हज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े आख़िरत

हज़रते सय्यिदुना सलामा बिन शैख़ तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन कै़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में हमारा लश्कर एक अ़ज़ीमुश्शान कामयाबी के बा'द मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की त़रफ़ आ रहा था। जब मदीनए पाक के क़रीब पहुंचा तो हमारे बा'ज़ दोस्तों ने मश्वरा दिया : "अगर हम अपने सफ़र के कपड़े उतार कर उ़म्दा कपड़े पहनें और अच्छी ह़ालत में शानो शौकत के साथ अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुसलमानों के सामने जाएं तो इस से लश्करे इस्लाम की शानो शौकत ज़ाहिर होगी।" चुनान्चे, हम ने अच्छे लिबास पहने और सफ़र के कपड़ों को थैलों में रख लिया। जब हम मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में दाख़िल हुवे तो एक शख़्स ने हमारे लश्कर को देख कर कहा : "रब्बे का'बा की क़सम ! येह लोग ग़लती पर हैं।" हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन कै़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "उस शख़्स की बात ने मुझे नफ़्अ़ दिया और मैं समझ गया कि इस ह़ालत में अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर होना मुनासिब नहीं, इस ख़याल के आते ही मैं ने एक मन्ज़िल पर अपनी सुवारी रोकी, उ़म्दा लिबास उतार कर थैले में डाला मगर बे तवज्जोगी से चादर का कुछ ह़िस्सा थैले से बाहर रह गया था जिस की मुझे ख़बर न हुई, फिर मैं सफ़र का लिबास पहन कर शुरकाए क़ाफ़िला से जा मिला। जब लश्कर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से नज़रें फेर लीं और मुझ से फ़रमाया : "तुम लोगों ने अपनी सुवारियों को कहां खड़ा किया है ?" मैं ने बताया : "फ़ुलां जगह पर।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरा हाथ पकड़ कर सुवारियों के पास पहुंचे दूसरे तमाम लोग भी हमराह थे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुवारियों के जानवरों को देखा तो लश्कर को मुख़ात़ब करते हुवे फ़रमाया : "क्या तुम इन जानवरों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरते ? क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि इन का तुम पर कितना ह़क़ है ? तुम इन्हें सफ़र में इस्ति'माल करने के बा'द खोल क्यूं नहीं देते ताकि येह घास वग़ैरा चर लें। क्या तुम्हें इन का एह़सास नहीं जो अभी तक बांध रखा है ?" हम ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम एक बहुत बड़ी फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी ले कर आए हैं, हमें इस बात की जल्दी थी कि मुसलमानों और अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ौरन इत्तिलाअ़ दी जाए बस इसी जल्दी में हम फ़ौरन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हो गए।"

फिर अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जलाल कुछ कम हुवा तो उन की नज़र मेरे थैले पर पड़ी जिस में से चादर का कुछ ह़िस्सा बाहर निकला हुवा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "येह थैला किस का है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरा है।" फ़रमाया : "येह कपड़ा कैसा ?" अ़र्ज़ की : "येह मेरी चादर है।" फ़रमाया : "कितने की है ?" मैं ने अस्ल क़ीमत का एक तिहाई ह़िस्सा बताया फिर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "चादर तो बहुत अच्छी है अगर इस की क़ीमत

ज़ियादा न होती।" फिर हम सब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ वापस आने लगे तो रास्ते में एक शख़्स मिला, उस ने पुकार कर कहा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे साथ चलिये और फुलां शख़्स से मेरा ह़क़ दिलवाइये। बेशक उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया है।" अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि लश्कर की कारकर्दगी लेने में मसरूफ़ थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस की मुदाख़लत से बहुत कोफ़्त हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के सर पर हल्की सी ज़र्ब लगाई और फ़रमाया : "मैं मुसलमानों के कामों में मसरूफ़ होता हूं और तुम में से कोई शख़्स आ कर कहता है कि मेरी बात सुनिये ! मेरी मदद कीजिये ! ह़ालांकि मैं उस वक़्त तुम्हारे ही कामों में मसरूफ़ होता हूं, तुम मुझे मौक़अ़ बे मौक़अ़ पुकारते रहते हो।"

येह सुन कर वोह शख़्स नाराज़ हो कर वहां से चला गया। अभी कुछ देर ही गुज़री थी कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बे क़रार हो कर फ़रमाया : "उस शख़्स को फ़ौरन बुला कर मेरे पास लाओ।" जब वोह आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की त़रफ़ कोड़ा फेंकते हुवे इरशाद फ़रमाया : "आओ और मुझ से बदला ले लो।" उस ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना ह़क़ मुआ़फ़ किया, मैं बदला नहीं लूंगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम शायद मेरे डर की वजह से बदला नहीं ले रहे हो, आओ ! बिला ख़ौफ़ो ख़त़र बदला ले लो।" उस ने कहा : "हुज़ूर ! मैं ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अपना ह़क़ मुआ़फ़ किया।" येह कह कर वोह शख़्स चला गया। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अपने घर की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। हम भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा की फिर बैठ गए और अपने आप को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : "ऐ ख़त़्त़ाब के बेटे ! तू पस्त था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाई, तू भटका हुवा था **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने तुझे सीधी राह पर चलाया, तू ज़लील था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे इ़ज़्ज़त का ताज पहनाया और फिर तुझे मुसलमानों पर अमीर मुक़र्रर फ़रमाया, अब अगर कोई शख़्स तेरे पास मदद लेने आता है तो तू उसे मारता है। ऐ ख़त़्त़ाब के बेटे ! कल बरोज़े क़ियामत जब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जाएगा तो क्या जवाब देगा ?" नमाज़ के बा'द काफ़ी देर तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप को डांटते रहे यहां तक कि हम ने गुमान किया कि इस वक़्त तमाम अहले ज़मीन में सब से बेहतर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 452

मीज़ाने अ़मल में रोटी का वज़्न

ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : "एक राहिब ने सत्तर (70) साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की, एक मरतबा मौसिमे बरसात में ख़ूब बारिशें हुईं। ज़मीन पर हर त़रफ़ हरयाली ही हरयाली हो गई। वोह आ़बिद अपने इ़बादत ख़ाने से उतर कर बस्ती की त़रफ़ गया, रास्ते में एक औ़रत से ज़िना का मुर्तकिब हो गया। फिर एक साइल के क़रीब से गुज़रा तो

एक या दो रोटी उसे सदक़ा कर दीं। (उस के मरने के बा'द) जब उस की सत्तर साला इ़बादत और ज़िना का मुवाज़ना किया गया तो ज़िना का गुनाह बढ़ गया। फिर उस की सदक़ा की हुई रोटियां उस की नेकियों में शामिल की गईं तो नेकियों का वज़्न ज़ियादा हो गया। गोया वोह **सदक़ा** उस की मग़्फ़िरत का सामान हो गया।"

येही हिकायत इस त़रह़ भी मरवी है : "एक इस्राईली आ़बिद साठ (60) साल तक इ़बादते इलाही में मस्रूफ़ रहा। एक मरतबा जब बरसात की वजह से ज़मीन पर हर त़रफ़ सब्ज़ा ही सब्ज़ा छा गया तो इस मन्ज़र ने उसे बहुत मुतअ़ज्जिब किया, उस ने सोचा कि अगर मैं ज़मीन पर जाऊं और वहां जा कर कुछ इ़बादत वग़ैरा करूं तो येह मेरे लिये बेहतर होगा। चुनान्चे, वोह अपनी इ़बादत गाह से नीचे उतर आया। रास्ते में एक औ़रत के फ़ितने में मुब्तला हो गया और उस से मुंह काला कर बैठा। फिर एक साइल मिला तो अपनी रोटी उस ने साइल को सदक़ा कर दी फिर उस का इन्तिक़ाल हो गया। जब उस की साठ साला इ़बादत का ज़िना के गुनाह से मुवाज़ना किया गया तो उस का गुनाह बढ़ गया फिर सदक़ा की हुई रोटी उस के नेक आ'माल में शामिल की गई तो नेकियों का पलड़ा भारी हो गया जिस की वजह से उसे बख़्श दिया गया।"

رَحمتِ حق "بَها" نہ مِی جوید رَحمتِ حق "بَہانَہ" مِی جوید

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत "**बहा**" या'नी क़ीमत त़लब नहीं करती बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो "**बहाना**" ढूंडती है।

सुब्ह़ो शाम का इन्तिज़ार न करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे कन्धे पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : दुन्या में एक अजनबी और मुसाफ़िर बन कर रहो। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत कर, और जब सुब्ह़ करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह, और ह़ालते सिह़ह़त में बीमारी के लिये और ज़िन्दगी में मौत के लिये तय्यारी कर ले।

(صحیح البخاری،الحدیث:٦٤١٦،ص٥٣٩)

उ़ज़्र क़बूल न होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स का उ़ज़्र क़बूल नहीं फ़रमाएगा जिस की मौत को मुअख़्ख़र कर दिया ह़त्ता कि उसे साठ साल तक पहुंचा दिया। (मत़लब येह कि वोह इस उ़म्र में भी गुनाहों से बाज़ न आया)

(صحیح البخاری،الحدیث:٦٤١٩،ص٥٣٩)

हि़कायत नम्बर : 453

शैत़ान के तीन हथयार

ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है : बनी इस्राईल का एक आ़बिद अपने इ़बादत ख़ाने में अ़र्सए दराज़ से मसरूफ़े इ़बादत था, वोह मुजाहदात करता और हमेशा गुनाहों से बचता। उस की इ़बादत व पारसाई को देख कर शैत़ान के चेले इब्लीस के पास आए और कहा : "फ़ुलां शख़्स ने हमें आ़जिज़ कर दिया है उस से हमें कुछ हि़स्सा नहीं मिला।" अपने कमीने चेलों की येह बकवास सुन कर इब्लीसे लई़न ने उस आ़बिद को बहकाने की ठानी और उस के इ़बादत ख़ाने पर पहुंच कर दरवाज़ा खट-खटाया। आ़बिद ने पूछा : "कौन है ?" इब्लीस बोला : "मैं मुसाफ़िर हूं, आज रात मुझे अपने पास पनाह दे दो।" कहा : "यहां बहुत ही क़रीब एक बस्ती है तू वहां चला जा।" इब्लीस ने कहा : "ख़ुदा का ख़ौफ़ करो, मैं मुसाफ़िर हूं, मुझे दरिन्दों और चोरों का ख़त़रा है, इतनी रात गए मैं कहां मारा मारा फिरूंगा।" आ़बिद ने कहा : "मैं हरगिज़ दरवाज़ा नहीं खोलूंगा।" येह सुन कर इब्लीस ख़ामोश हो गया। कुछ देर बा'द फिर दस्तक दी और कहा : "जल्दी से मेरे लिये दरवाज़ा खोलो।" आ़बिद ने पूछा : "कौन है ?" कहा : "मैं मसीह़ (या'नी ईसा عَلَيْهِ السَّلَام) हूं।" (مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ)

आ़बिद ने कहा : "अगर तू मसीह़ है तो फिर तुझे मेरी ह़ाजत ही क्या है, तू तो अपने रब की रिसालत और आख़िरत के वा'दे को पहुंच चुका है।" इब्लीसे लई़न फिर ख़ामोश हो गया। कुछ देर बा'द फिर शैत़ानी त़बीअ़त मचली तो दरवाज़ा खट-खटाया। आ़बिद ने पूछा : "कौन है ?" कहा : मैं इब्लीस हूं।" आ़बिद ने कहा : "मैं हरगिज़ तेरे लिये दरवाज़ा नहीं खोलूंगा।" इब्लीसे लई़न ने कहा : "तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा ! तुझे तेरे रब का वासित़ा ! दरवाज़ा खोल दे।" इब्लीसे लई़न काफ़ी देर तक मिन्नत समाजत करता रहा और पुख़्ता वा'दा किया कि मैं तुझे कभी भी कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाऊंगा।" बिल आख़िर आ़बिद ने दरवाज़ा खोल दिया। इब्लीस उस के सामने बैठ गया और कहा : "मुझ से जो पूछना चाहते हो पूछो, मैं तुम्हें हर सुवाल का जवाब दूंगा। आ़बिद ने कहा : "मुझे तुझ से कोई सरोकार नहीं।" येह सुन कर इब्लीसे लई़न वापस जाने लगा तो आ़बिद ने उसे पुकार कर कहा : "मैं तुझ से कुछ पूछना चाहता हूं ?" इब्लीसे लई़न वापस आया और कहा : "पूछो ! क्या पूछना चाहते हो ?" कहा : "बनी आदम की हलाकत में तुम्हारे लिये सब से ज़ियादा मददगार शै क्या है ?" इब्लीस ने कहा : "**नशा** हमारा सब से कामयाब वार है, क्यूंकि जब कोई शख़्स नशे में आ जाता है तो हम जो चाहते हैं उस से करवाते हैं फिर वोह हम से बच नहीं सकता, हम उस से इस त़रह़ खेलते हैं जैसे बच्चे गेंद से खेलते हैं।" आ़बिद ने कहा : "दूसरी हलाकत ख़ेज़ शै क्या है ?" कहा : "**ग़ुस्सा व ग़ज़ब** भी हमारे मोहलिक तरीन हथयार हैं। अगर इन्सान इ़बादत कर के उस मक़ाम व मर्तबे को पहुंच जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा करने लगे तब भी हम उस से मायूस नहीं होते, हमें उम्मीद होती है कि उस के

गै़ज़ो ग़ज़ब की वजह से हमें उस से ज़रूर कुछ हिस्सा मिलेगा।" आ़बिद ने कहा : "इन के इलावा तुम्हारे पास और कौन सा मोहलिक हथयार है ?" कहा : "**बुख़्ल** भी हमारा बेहतरीन हथयार है। इन्सान पर जो ने'मतें हैं हम इन्हें थोड़ी कर के दिखाते हैं और लोगों के पास जो मालो दौलत है उसे उस की नज़रों में ज़ियादा कर देते हैं। इस त़रह़ वोह अपने माल में हुक़ूक़ुल्लाह की अदाएगी के मुआ़मले में कन्जूसी से काम लेता और हलाकत की वादियों में जा गिरता है।" (الامان والحفیظ)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** शैत़ाने लईन इन्सान का खुला दुश्मन है वोह हर आन इन्सानों को बहकाने की कोशिश में लगा हुवा है। उस के मक्रो फ़रैब से बचने के लिये ऐसे लोगों की सोह़बत ज़रूरी है जो उस के वारों से बचने के त़रीक़े जानते हों और उन के सीने, ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ व मह़ब्बते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से मुनव्वर हों, उन के साथ रह कर सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने का जज़्बा मिले और नेकियां करना आसान हो जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अच्छे लोगों की सोह़बत अ़त़ा फ़रमाए और नफ़्सो शैत़ान की शरारतों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 454 एक इस्राईली आ़बिद की शहादत

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्कार बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना : एक काफ़िर व ज़ालिम बादशाह लोगों को ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने पर मजबूर करता, जो इन्कार करता उसे सख़्त सज़ाएं दे कर हलाक करवा देता। फिर उस ज़माने के सब से बड़े आ़बिद को बादशाह के पास लाया गया, लोग उस आ़बिद के मर्तबे व फ़ज़ीलत से आगाह थे वोह नहीं चाहते थे कि उस इबादत गुज़ार बुज़ुर्ग को बादशाह की त़रफ़ से कोई तक्लीफ़ पहुंचे। चुनान्चे, एक सिपाही ने आ़बिद से कहा : "आप मुझे एक बकरी का बच्चा ज़ब्ह़ कर के दे दें। जब बादशाह कहेगा कि इस आ़बिद के सामने ख़िन्ज़ीर का गोश्त रखो तो मैं वोह बकरी का गोश्त आप के सामने ले आऊंगा। बादशाह येह समझेगा कि आप ने उस की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ ख़िन्ज़ीर का गोश्त खा लिया है। इस त़रह़ आप हलाकत से मह़फ़ूज़ रहेंगे।" आ़बिद ने बकरी का बच्चा ज़ब्ह़ कर के उस का गोश्त सिपाही को दे दिया। जब उसे बादशाह के सामने ले जाया गया तो बादशाह ने हुक्म दिया कि ख़िन्ज़ीर का गोश्त लाया जाए। मन्सूबे के मुत़ाबिक़ वोह सिपाही बकरी का गोश्त ले कर आ गया। बादशाह ने कहा : "मेरे सामने ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाओ।" आ़बिद ने कहा : "मैं हरगिज़ हरगिज़ नहीं खाऊंगा।" येह सुन कर सिपाही ने इशारों से बताया कि "येह वोही गोश्त है जो आप ने दिया था, आप बिला झिजक खा लें।" लेकिन आ़बिद ने बादशाह के सामने वोह गोश्त खाने से साफ़ इन्कार कर दिया। ज़ालिम बादशाह ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि "इसे क़त्ल कर दो।"

जब उसे क़त्ल के लिये ले जाने लगे तो वोही सिपाही क़रीब आया और कहा : "आप ने गोश्त क्यूं नहीं खाया ? ब खुदा ! येह वोही गोश्त था जो आप ने दिया था, क्या आप को मुझ

पर ए'तिमाद न था ?'' आ़बिद ने कहा : ''ऐसी कोई बात नहीं बल्कि मैं इस बात से डर गया था कि लोग मेरी वजह से फ़ितने में मुब्तला हो जाएंगे, क्यूंकि जब भी किसी को ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने पर मजबूर किया जाएगा तो वोह कहेगा : ''फ़ुलां आ़बिद ने भी तो मजबूर हो कर ह़राम गोश्त खा लिया था लिहाज़ा हम भी खा लेते हैं।'' इस त़रह़ लोग मेरी वजह से बहुत बड़े फ़ितने में पड़ जाएं और मैं लोगों के लिये फ़ितना हरगिज़ नहीं बनना चाहता।'' येह कह कर वोह अ़ज़ीम आ़बिद ख़ामोश हो गया और उस का सर तन से जुदा कर दिया गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर — चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले صلی اللہ علیہ وسلم !

ह़िकायत नम्बर : 455 मर्ह़ूम वालिदैन पर अवलाद के आ'माल की पेशी

ह़ज़रते सय्यिदुना सदक़ा बिन सुलैमान जा'फ़री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : मेरा उ़नफ़ुवाने शबाब था और मैं बुरी आ़दतों और दुन्या की रंगीनियों में मगन था। मगर जब मेरे वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हुवा तो मेरा दिल चोट खा गया। मैं ने अपनी साबिक़ा ख़त़ाओं पर शर्मिन्दा होते हुवे बारगाहे ख़ुदावन्दी में तौबा कर ली और आ'माले सालेह़ा की त़रफ़ राग़िब हो गया। फिर बद क़िस्मती से एक दिन मैं किसी बुरे काम का मुर्तकिब हुवा तो उसी रात वालिदे मोह़तरम ख़्वाब में आए और फ़रमाया : ''ऐ मेरे बेटे ! तेरे आ'माल मेरे सामने पेश किये जाते हैं तो मुझे बहुत ज़ियादा ख़ुशी होती है क्यूंकि वोह नेक लोगो के आ'माल जैसे होते हैं। लेकिन इस मरतबा जब तेरे आ'माल पेश किये गए तो मुझे बहुत शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ा। ख़ुदारा ! मुझे मेरे फ़ौत शुदा दोस्तों के सामने रुस्वा न किया करो।'' बस इस ख़्वाब के बा'द मेरी ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ गया। मैं डर गया और तौबा पर इस्तिक़ामत इख़्तियार कर ली।

रावी कहते हैं : तहज्जुद की नमाज़ में हम आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इस त़रह़ इल्तिजाएं करते हुवे सुनते थे : ''ऐ सालिह़ीन की इस्लाह़ करने वाले ! ऐ भटके हुवों को सिधी राह चलाने वाले ! ऐ गुनाहगारों पर रह़्म फ़रमाने वाले ! मैं तुझ से ऐसी तौबा का सुवाल करता हूं जिस के बा'द कभी गुनाह की त़रफ़ न जाऊं। कभी बुराई व ज़ुल्म की त़रफ़ नज़र उठा कर भी न देखूं। ऐ ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।''

गुनाहों से हर दम बचा या इलाही — मुझे नेक इन्सां बना या इलाही عَزَّوَجَلَّ
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा — मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 456

ग़ुलाम को आज़ादी कैसे मिली....?

हज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन अबी ज़ियाद मदीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : मुझे मेरे आक़ा इब्ने अ़य्याश बिन अबी रबीआ़ ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير के पास अपने किसी काम से भेजा। जब मैं उन की बारगाह में हाज़िर हुवा तो उस वक़्त एक कातिब उन के पास बैठा लिख रहा था। मैं ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने وَعَلَيْكُمُ السَّلَام कहा और कातिब को अह़कामात लिखवाने में मसरूफ़ रहे। मैं ने फिर कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ उस वक़्त एक ख़ादिम बसरा से आने वाली शिकायत सुना रहा था। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मेरा दूसरा सलाम सुन कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने अबी ज़ियाद ! हम तेरे पहले सलाम से ग़ाफ़िल नहीं।" फिर मुझ से बैठने को कहा तो मैं दरवाज़े की चोखट के पास बैठ गया। कातिब बसरा से आने वाली शिकायात सुना रहा था और आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सर्द आहें भर रहे थे। जब आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उस काम से फ़ारिग़ हुवे तो कमरे में मौजूद तमाम लोगों को बाहर जाने का हुक्म दिया, सिवाए मेरे वहां कोई भी बाक़ी न रहा। सर्दियों का मौसिम था मैं ने ऊनी जुब्बा पहना हुवा था। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मेरे सामने बैठ गए और मेरे घुटनों पर हाथ रख कर इरशाद फ़रमाया : "वाह भई ! तुम सर्दियों में गर्म जुब्बा पहन कर कितने पुर सुकून हो।" फिर मुझ से अहले मदीना के सालिह़ीन, बच्चों, औ़रतों और मर्दों के मुतअ़ल्लिक़ ह़ाल दरयाफ़्त किया यहां तक कि हर हर शख़्स के बारे में पूछा। फिर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के हुकूमती निज़ाम के मुतअ़ल्लिक़ पूछा।

मैं ने तफ़्सील बताई तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बड़े ग़ौर से हर हर बात सुनते रहे फिर फ़रमाया : "ऐ इब्ने ज़ियाद तुम देख रहो हो कि मैं किस मुसीबत में फंस गया हूं।" मैं ने कहा : "अमीरुल मोअमिनीन ! आप को ख़ुश ख़बरी हो, मैं आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बारे में ख़ैर ही की उम्मीद रखता हूं।" फिर आ़जिज़ी करते हुवे फ़रमाने लगे : "अफ़्सोस ! हाए अफ़्सोस ! कैसी ख़ैर, क्या भलाई ! मैं लोगों को डांटता हूं लेकिन मुझे कोई नहीं डांटता, मैं लोगों को ज़दो कोब करता हूं लेकिन मुझे कोई नहीं मारता, मैं लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाता हूं लेकिन मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचाता" आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه येह कलिमात दोहराते जाते और रोते जाते यहां तक कि मुझे आप पर तरस आने लगा। फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मेरी ह़ाजात पूरी फ़रमाईं और मेरे आक़ा की त़रफ़ लिख कर भेजा : "येह ग़ुलाम हमारे हाथों फ़रोख़्त कर दो।" फिर अपने बिस्तर के नीचे से बीस (20) दीनार निकाले और मुझे देते हुवे फ़रमाया : "येह लो, इन्हें अपने इस्ति'माल में लाना, अगर तुम्हारा ग़नीमत में ह़िस्सा बनता तो वोह भी ज़रूर तुम्हें देता लेकिन क्या करूं तुम ग़ुलाम हो इस लिये माले ग़नीमत में तुम्हारा कुछ ह़िस्सा नहीं।" मैं ने दीनार लेने से इन्कार कर किया तो फ़रमाया : "येह मैं अपनी ज़ाती रक़म में से तुम्हें दे रहा हूं।" मैं ने फिर इन्कार किया मगर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पैहम (या'नी मुसलसल) इसरार से मजबूर हो कर मुझे वोह दीनार लेने ही पड़े। फिर मैं वापस आ गया फिर

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरे आक़ा को पैग़ाम भेजा : "येह गुलाम हमारे हाथों फ़रोख़्त कर दो।" लेकिन उन्हों ने मुझे बेचा नहीं बल्कि आज़ाद कर दिया। इस त़रह़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَجِیْد की बरकत से एक गुलाम को आज़ादी नसीब हो गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

ह़िकायत नम्बर : 457

अनोखा मुबल्लिग़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम लोग समन्दरी रास्ते से जिहाद के लिये जा रहे थे, हमारी कश्ती समन्दर का सीना चीरती हुई जानिबे मन्ज़िल बढ़ी जा रही थी। इतने में एक ग़ैबी आवाज़ ने सब को हैरान कर दिया, कोई कहने वाला कह रहा था : "ऐ कश्ती वालो ! रुको ! मैं तुम्हें एक अहम बात बताता हूं।" येही आवाज़ छे-सात बार सुनाई दी तो मैं कश्ती के चबूतरे पर खड़ा हो गया और कहा : "तू कौन है और कहां है ? क्या तू जानता है कि हम इस वक़्त कहां हैं ? हम बीच समन्दर में किस त़रह़ ठहर सकते हैं ?" अभी मैं ने अपनी बात मुकम्मल की ही थी कि **अनोखे मुबल्लिग़** की ग़ैबी आवाज़ गूंजी : "क्या मैं तुम्हें एक ऐसी बात की ख़बर न दूं जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर लाज़िम कर लिया है ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ! हमें ज़रूर ऐसी शै के मुतअ़ल्लिक़ बताइये।" आवाज़ आई : "सुनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर येह बात लाज़िम कर ली है कि जो कोई गर्मियों के दिनों में रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने आप को प्यासा रखेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की हलाकत ख़ैज़ गर्मी में उसे सैराब फ़रमाएगा।"

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی ने ऐसा मा'मूल बनाया कि ऐसे शदीद गर्म दिनों में भी रोज़ा रखते जिन में इन्सान गर्मी की शिद्दत में भुन जाता था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

या इलाही गर्मिये मह़शर से जब भड़कें बदन दामने मह़बूब की ठन्डी हवा का साथ हो !

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** रोज़े मह़शर की जान लेवा गर्मी से बचने के लिये फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ल रोज़ों का एहतिमाम भी करते रहना चाहिये, हर हफ़्ते कम अज़ कम एक दिन का नफ़्ली रोज़ा तो रख ही लेना चाहिये। हमारे अस्लाफ़ رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی इस का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाते और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को भी इस की तरग़ीब दिलाते रहते। हो सके तो पीर शरीफ़ को रोज़ा रखें क्यूंकि पीर शरीफ़ को रोज़ा रखना सुन्नत भी है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी नफ़्ली रोज़े रखने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 458 जन्नती हूर और मदनी नौजवान

ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हमारा लश्कर दुश्माने इस्लाम की सरकोबी के लिये "**रूम**" की जानिब रवां दवां था। रास्ते में मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا से एक नौजवान आया और मुजाहिदीन में शामिल हो गया। दुश्मन के अ़लाक़े में पहुंच कर हम ने एक शहर का मुह़ासरा कर लिया। हम तीन मुजाहिद एक साथ थे, एक मैं और दूसरा "**ज़ियाद**" नामी मदनी नौजवान था और तीसरा दोस्त भी मदीनए मुनव्वरा शरीफ़ का रहने वाला था। एक दिन हम पहरा दे रहे थे कि सुब्ह़ के वक़्त हम में से एक शख़्स खाना लेने चला गया। अब मैं और ज़ियाद नामी मदनी नौजवान एक साथ थे इतने में मन्जनीक़ से पथ्थर फेंका गया जो ज़ियाद के क़रीब आ गिरा, पथ्थर का एक टुकड़ा ज़ियाद के घुटने पर लगा। जिस से इतनी शदीद चोट लगी कि वोह फ़ौरन बेहोश हो गया। हम काफ़ी देर उस के क़रीब खड़े रहे लेकिन उस ने ह़रकत न की फिर बेहोशी की ह़ालत में यका यक उस के लबों पर मुस्कुराहट फैल गई, वोह इतना हंसा कि दाढ़ें ज़ाहिर होने लगीं, फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की ह़म्द करते हुवे दोबारा हंसा। इस के बा'द रोने लगा फिर ख़ामोश हो गया। कुछ देर बा'द उसे होश आया तो उठ बैठा और कहने लगा : "येह मुझे क्या हुवा ? मैं कहां हूं ?" हम ने कहा : "क्या तुझे याद नहीं कि मन्जनीक़ का एक पथ्थर तुझे लगा था।" उस ने कहा : "क्यूं नहीं ! मुझे याद है।" हम ने कहा : "इस के बा'द तुझ पर बेहोशी त़ारी हो गई और हम ने बेहोशी के आ़लम में तुझे इस इस त़रह़ देखा है। हमें बताओ ! आख़िर मुआ़मला क्या है ?" मदनी नौजवान ने कहा : "हां ! मैं तुम्हें सारी बात बताता हूं, सुनो ! जब राहे ख़ुदा में मुझे पथ्थर लगा और मैं बेहोश हो गया तो मैं ने देखा कि मुझे एक ऐसे वसीअ़ व आ़लीशान कमरे में ले जाया गया जो ज़बरजद और याक़ूत से बना हुवा था। फिर एक ऐसे बिस्तर पर ले जाया गया जिस में हीरे जवाहिरात से मुज़य्यन बेहतरीन चादरें बिछी हुई थीं। वहां उ़म्दा क़िस्म के क़ीमती तकया रखे हुवे थे। अभी मैं उस बिस्तर पर बैठा ही था कि मैं ने ज़ेवरात की झन्कार (या'नी आवाज़) सुनी, मुड़ कर देखा तो देखता ही रह गया। एक इन्तिहाई ह़सीनो जमील लड़की बेहतरीन लिबास में मल्बूस और उ़म्दा ज़ेवरात से मुज़य्यन मेरे सामने मौजूद थी, मैं नहीं जानता कि वोह ज़ियादा ख़ूब सूरत थी या उस के लिबास व ज़ेवरात। वोह मेरे सामने आ कर बैठी, "ख़ुश आमदीद" कहा और बड़े प्यार भरे अन्दाज़ में मेरी जानिब देखते हुवे यूं गोया हुई : "ऐ मेरी राह़त व सुकून ! ऐ मेरे सरताज ! मरह़बा ! मैं तुम्हारी दुन्यवी बीवी की त़रह़ नहीं हूं, फिर उस ने मेरी बीवी का इस अन्दाज़ में ज़िक्र किया कि मैं हंसने लगा। फिर वोह मेरी दाईं त़रफ़ मेरे पहलू में आ कर बैठ गई।" मैं ने पूछा : "तू कौन है ?" कहा : "मैं तेरी जन्नती बीवियों में एक नाज़ वाली बीवी हूं।"

मैं ने उस की त़रफ़ अपना हाथ बढ़ाना चाहा तो बोली : "कुछ देर रुक जाओ اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज ज़ोहर की नमाज़ के वक़्त तुम हमारे पास आ जाओगे।" उस की येह बात सुन कर मैं रोने

लगा, अभी मैं रो ही रहा था कि अपनी बाईं जानिब ज़ेवरात की झन्कार सुनी, मुड़ कर देखा तो उसी की त़रह़ एक और ख़ूब सूरत दोशीज़ा मौजूद थी। उस ने भी वोही कहा जो पहली ने कहा था। जब मैं ने हाथ बढ़ाना चाहा तो बोली : "थोड़ी देर रुक जाओ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ोहर के वक़्त तुम हमारे पास पहुंच जाओगे।" मैं फिर रोने लगा। बस इस के बा'द मुझे होश आ गया और अब मैं तुम्हारे सामने मौजूद हूं।

हम उस की बात सुन कर बहुत हैरान हुवे और वक़्त का इन्तिज़ार करने लगे जैसे ही ज़ोहर का वक़्त हुवा और मुअज़्ज़िन ने अज़ान कहीं, वोह मदनी नौजवान ज़मीन पर लैटा और उस की रूह़ आलमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 459 तीन ग़ैबी ख़बरें

हज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब علیہ رحمۃ اللہ الرب से मन्क़ूल है : हज़रते सय्यिदुना सा'ब बिन जष्षाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه में दीनी तअ़ल्लुक़ की वजह से बहुत गहरी दोस्ती थी। एक दिन हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से कहा : "ऐ मेरे भाई ! हम में से जो पहले मर जाए उसे चाहिये कि अपने ह़ाल से दूसरे को आगाह करे कि मरने के बा'द उस पर क्या गुज़री ?" हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : "क्या ऐसा हो सकता है ?" कहा : "हां ! ऐसा बिल्कुल हो सकता है।" फिर कुछ दिनों बा'द हज़रते सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का इन्तिक़ाल हो गया। हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "مَا فُعِلَ بِکَ या'नी आप के साथ क्या मुआ़मला किया गया ?" फ़रमाया : "मेरी बहुत सी ख़ताएं बख़्श दी गईं।" हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने उन की गर्दन में एक सियाह निशान देख कर पूछा : "येह सियाह निशान क्या है ?" फ़रमाया : "मैं ने फ़ुलां यहूदी से दस दीनार क़र्ज़ ले कर अपने तरकश (या'नी तीर रखने के थैले) में रख दिये थे, तुम वोह दीनार उस यहूदी को वापस लौटा देना, येह निशान उसी क़र्ज़ की वजह से है। ऐ मेरे भाई ! ख़ूब तवज्जोह से सुन ! मेरे मरने के बा'द हमारे अहलो इ़याल में छोटा या बड़ा कोई वाक़िआ़ ऐसा रूनुमा नहीं हुवा जिस की मुझे ख़बर न हुई हो, मुझे उन की हर हर बात पहुंच जाती है ह़त्ता कि अभी चन्द रोज़ क़ब्ल हमारी बिल्ली मरी थी मुझे उस का भी पता चल गया है। और सुनो ! मेरी सब से छोटी बेटी भी छे दिन बा'द इन्तिक़ाल कर जाएगी, तुम उस से अच्छा बरताव करना।" हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि जब मैं बेदार हुवा तो कहा : "येह ज़रूर एक अहम अम्र है, मैं इस की तह़क़ीक़ करूंगा।"

फिर मैं उन के घर पहुंचा तो घर वालों ने ख़ुश आमदीद कहते हुवे कहा : "ऐ औ़फ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه क्या बात है ? सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की वफ़ात के बा'द आप एक मरतबा भी हमारे पास

नहीं आए ?" मैं ने अपनी मसरूफ़िय्यात का उज़्र बयान कर के घर वालों को मुत्मइन किया। फिर तरकश मंगवाया तो उस में दीनारों की थैली मौजूद थी, मैं ने कहा : "फुलां यहूदी को बुला लाओ।" जब वोह आया तो मैं ने कहा : "क्या हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ऊपर तुम्हारा कोई माल था ?" यहूदी ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सा'ब पर रहम फ़रमाए वोह तो उम्मते मुहम्मदिय्या (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के बेहतरीन अफ़राद में से थे, मेरा उन से कोई मुतालबा नहीं।" मैं ने कहा : "सच सच बता ! क्या उन्हों ने तुम से कुछ क़र्ज़ लिया था ?" यहूदी बोला : "हां ! उन्हों ने मुझ से दस (10) दीनार क़र्ज़ लिये थे।" मैं ने दीनारों की थैली उस की तरफ़ बढ़ाई तो कहने लगा : "खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह वोही दीनार हैं जो उन्हों ने मुझ से लिये थे।" मैं ने दिल में कहा : "हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बताई हुई एक बात तो बिल्कुल सच षाबित हो चुकी है।" फिर मैं ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के घर वालों से पूछा : "क्या हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के विसाल के बा'द तुम्हारे हां कोई नई बात हुई है ?" कहा : "जी हां।" मैं ने पूछा : "वोह क्या है ?" तो उन्हों ने कुछ बातें बताई और कहा कि हमारी एक बिल्ली थी जो अभी चन्द रोज़ क़ब्ल मरी है।" मैं ने दिल में कहा : "दूसरी बात भी बिल्कुल हक़ षाबित हो गई।" फिर मैं ने पूछा : "मेरे भाई सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की छोटी बच्ची कहां है ?" उन्हों ने कहा : "वोह बाहर खेल रही है।" मैं ने उसे बुलवाया और शफ़्क़त से उस के सर पर हाथ फेरा तो उस का जिस्म बुख़ार की वजह से काफ़ी गर्म हो रहा था। मैं ने घर वालों से कहा : "इस बच्ची के साथ अच्छा बरताव करना और इसे खूब प्यार से रखना।" फिर मैं वापस चला आया, छे (6) दिन बा'द उस बच्ची का इन्तिक़ाल हो गया। और यूं हज़रते सय्यिदुना सा'ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बताई हुई तीनों बातें बिल्कुल सच षाबित हुईं।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो.. और.. इन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 460

बादशाह की तौबा

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कुरशी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्बाद बिन अब्बाद मुहल्लबी को इरशाद फ़रमाते सुना : "बसरा के बादशाहों में से किसी बादशाह ने उमूरे सल्तनत को ख़ैर बाद कह कर ज़ोहदो तक़्वा की राह इख़्तियार कर ली मगर फिर दोबारा सल्तनत व हुकूमत की तरफ़ माइल हुवा और दुन्या का ऐशो इशरत तलब करने की ठान ली। चुनान्चे, उस ने एक शानदार महल बनवाया इस में आ'ला क़िस्म के क़ालीन बिछवाए और हर तरह के साज़ो सामान से उस अज़ीमुश्शान महल को आरास्ता कराया, और एक कमरा मेहमानों के लिये ख़ास कर दिया, वहां उम्दा बिस्तर बिछाए जाते, अन्वाओ अक़्साम के खाने चुने जाते। बादशाह लोगों को बुलाता तो वोह अज़ीमुश्शान महल और बादशाह की ठाट बाट (या'नी शानो शौकत) देख कर

ता'रीफ़ व ख़ुशामद करते हुवे वापस चले जाते। येह सिलसिला काफ़ी अ़र्से तक चलता रहा, बादशाह मुकम्मल त़ौर पर दुन्या की रंगीनियों में गुम हो चुका था उस के इस अ़ज़ीमुश्शान मह़ल में हर त़रह़ के आलाते मौसीक़ी और लह्वो लअ़ब का सामान था। वोह हर वक़्त दुन्यवी मशाग़िल में मगन रहता। एक दिन उस ने अपने ख़ास वज़ीरों, मुशीरों और अ़ज़ीज़ों को बुला कर कहा : "तुम इस अ़ज़ीमुश्शान मह़ल में मेरी ख़ुशियों को देख रहे हो, देखो ! मैं यहां कितना पुर सुकून हूं, मैं चाहता हूं कि अपने तमाम बेटों के लिये भी ऐसे ही अ़ज़ीमुश्शान मह़ल्लात बनवाऊं, तुम लोग चन्द दिन मेरे पास रुको, ख़ूब ऐ़श करो और मज़ीद मह़ल्लात बनाने के सिलसिले में मुझे मुफ़ीद मश्वरे दो, ताकि मैं अपने बेटों के लिये बेहतरीन मह़ल्लात बनाने में कामयाब हो जाऊं।"

चुनान्चे, वोह लोग उस के पास रहने लगे। दिन रात लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल रहते और बादशाह को मश्वरा देते कि इस त़रह़ मह़ल बनवाओ, फ़ुलां चीज़ इस की आराइश के लिये मंगवाओ, फ़ुलां मे'मार से बनावाओ, अल ग़रज़ रोज़ाना इसी त़रह़ मश्वरे होते और अ़ज़ीमुश्शान मह़ल्लात बनाने की तरकीबें सोची जातीं। एक रात वोह तमाम लोग लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल थे कि मह़ल की किसी जानिब से एक ग़ैबी आवाज़ ने सब को चोंका दिया। कोई कहने वाला कह रहा था :

يَـا اَيُّهَـا الْبَـانِـىُّ الـنَّـاسِـىُّ مَنِيَّتَـهٗ   لَا تَـاْمُـلَـنَّ فَـاِنَّ الْـمَـوْتَ مَكْتُوْبُ

عَـلَـى الْـخَلَائِقِ اِنْ سَـرُّوْا وَاِنْ فَـرِحُـوْا   فَـالْـمَـوْتُ حَتْفٌ لِـذِى الْاٰمَـالِ مَـنْصُوْبُ

لَا تَبْـنِيَـنَّ دِيَـارًا لَسْـتَ تَسْـكُـنُهَـا   وَرَاجِـعِ الـنُّسْكَ كَيْـمَـا يُغْفَـرُ الْحُوْبُ

तर्जमा : (1)....ऐ अपनी मौत को भूल कर इ़मारत बनाने वाले ! लम्बी लम्बी उम्मीदें छोड़ दे क्यूंकि मौत लिखी जा चुकी है।

(2)....लोग ख़्वाह खुद हंसें या दूसरों को हंसाएं, बहर ह़ाल मौत उन के लिये लिखी जा चुकी है और बहुत ज़ियादा उम्मीद रखने वाले के सामने तय्यार खड़ी है।

(3)....ऐसे मकानात हरगिज़ न बना जिन में तुझे रहना ही नहीं तू इ़बादत व रियाज़त इख़्तियार कर, ताकि तेरे गुनाह मुआ़फ़ हो जाएं।

दिला ग़ाफ़िल न हो यकदम, येह दुन्या छोड़ जाना है   बाग़ीचे छोड़ कर ख़ाली, ज़मीन अन्दर समाना है
तू अपनी मौत को मत भूल, कर सामान चलने का   ज़मीं की ख़ाक पर सोना है, ईंटों का सिरहाना है
जहां के शग़्ल में शाग़िल, ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल   करे दा'वा कि येह दुन्या, मेरा दाइम ठिकाना है
ग़ुलाम इकदम न कर ग़फ़्लत, ह़याती पर न हो ग़ुर्रा   ख़ुदा की याद कर हम दम, कि जिस ने काम आना है

इस ग़ैबी आवाज़ ने बादशाह और उस के तमाम हमराहियों को ख़ौफ़ में मुब्तला कर दिया। बादशाह ने अपने दोस्तों से कहा : "जो ग़ैबी आवाज़ मैं ने सुनी क्या तुम ने भी सुनी ?" सब ने यक ज़बां हो कर कहा : "जी हां ! हम ने भी सुनी है।" बादशाह ने कहा : "जो चीज़ मैं मह़सूस कर रहा हूं क्या तुम भी मह़सूस कर रहे हो ?" पूछा : "आप क्या मह़सूस कर रहे हैं ?" कहा :

"मैं अपने दिल पर कुछ बोझ सा महसूस कर रहा हूं। मुझे लगता है कि येह मेरी मौत का पैग़ाम है।" लोगों ने कहा : "ऐसी कोई बात नहीं, आप की उ़म्र दराज़ और इक़बाल बुलन्द हो ! आप परेशान न हों।" फिर बादशाह ने लोगों की त़रफ़ तवज्जोह न दी, उस का दिल चोट खा चुका था। ग़ैबी आवाज़ ने उस का सारा ऐ़श ख़त्म कर दिया था, वोह रोते हुवे कहने लगा : "तुम मेरे बेहतरीन दोस्त और भाई हो, तुम मेरे लिये क्या कुछ कर सकते हो ?" लोगों ने कहा : "आ़ली जाह ! आप जो चाहें हुक्म फ़रमाएं, आप का हर हुक्म माना जाएगा।" बादशाह ने शराब के तमाम बरतन तोड़ डाले। इस के बा'द बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा :

"ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे और यहां मौजूद तेरे बन्दों को गवाह बना कर तेरी त़रफ़ रुजूअ़ करता और अपने तमाम गुनाहों और ज़ियादतियों पर नादिम हो कर तौबा करता हूं। ऐ मेरे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ अगर तू मुझे दुन्या में कुछ मुद्दत और बाक़ी रखना चाहता है तो मुझे दाइमी इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी की राह पर चला दे। और अगर मुझे मौत दे कर अपनी त़रफ़ बुलाना चाहता है तो मुझ पर करम कर दे और अपने करम से मेरे गुनाहों को बख़्श दे।"

बादशाह इसी त़रह़ मसरूफ़े इल्तिजा रहा और उस का दर्द बढ़ता गया। फिर उस ने इन कलिमात की तकरार शुरूअ़ कर दी : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! "मौत", **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! "मौत"।" बस येही कलिमात उस की ज़बान पर जारी थे कि उस का त़ाइरे रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गया। उस दौर के फ़ुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْهِم اَجْمَعِين फ़रमाया करते थे : "इस बादशाह का ख़ातिमा तौबा पर हुवा है।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمين بجاه النبی الامين صلی اللہ عليہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 461

सांप नुमा जिन्न

ह़ज़रते हुसैन बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق कहते हैं : "एक मरतबा उ़बैद बिन अबरस अपने रुफ़क़ा के हमराह किसी काम से जा रहे थे। रास्ते में रैतीली ज़मीन पर एक सांप लौट पौट हो रहा था, दोस्तों ने पुकार कर कहा : "ऐ उ़बैद ! तेरे क़रीब ख़ौफ़नाक अज़्दहा है इस से बच और इसे मार डाल।" उ़बैद ने कहा : "शिद्दते प्यास की वजह से इस की येह ह़ालत हो गई है, येह तो इस लाइक़ है कि इसे पानी पिलाया जाए।" दोस्तों ने कहा : "ऐ उ़बैद ! येह बहुत ख़त़रनाक है या तो तू इसे क़त्ल कर दे वरना हम इसे मार डालेंगे।" उ़बैद ने कहा : "मैं तुम्हारी त़रफ़ से इसे काफ़ी हूं, तुम बे फ़िक्र रहो।" येह कह कर इस ने सांप को पानी पिलाया और कुछ पानी इस के सर पर डाल दिया। फिर सांप एक जानिब रवाना हो गया। दौराने सफ़र उ़बैद रास्ता भूल गया और इस का ऊंट भी गुम हो गया। येह बहुत परेशान हुवा क्यूंकि इस वीरान जगह में कोई ऐसा न था जो इसे राह बताता। अचानक इसे एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी :

"ऐ रस्ता भटके हुवे वोह मुसाफ़िर जिस का ऊंट गुम हो चुका है और कोई भी ऐसा नहीं जो तेरा रफ़ीके़ सफ़र बने ! येह ले ! हमारी त़रफ़ से ऊंट ले जा और इस पर सुवार हो कर चलता रह। जब रात ख़त्म हो जाए और सुब्ह़ का उजाला फैलने लगे तो इस ऊंट से उतर जाना।" जैसे ही येह आवाज़ ख़त्म हुई अचानक उ़बैद के पास एक ऊंट नुमूदार हो गया, वोह इस पर सुवार हुवा और सारी रात सफ़र करता रहा। जब सुब्ह़ हुई तो उस रास्ते तक पहुंच चुका था जिस से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ था। वोह ऊंट से उतरा और पुकार कर कहने लगा : "ऐ ऊंट वाले ! तू ने मुझे बहुत बड़ी तक्लीफ़ और ऐसे बयाबान जंगल से नजात दी जिस में अच्छे अच्छे वाक़िफ़े कार भी रस्ता भूल जाते हैं। क्या तू हमारे पास सुब्ह़ नहीं करेगा ? ताकि हम जान जाएं कि इस वादी में किस ने हम पर ने'मतों के साथ सख़ावत की। हमारे पास आ और ता'रीफ़ पा कर अम्न से वापस चला जा।" अचानक एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी :

"मैं एक जिन्न हूं, मैं तेरे सामने अज़्दहे की सूरत में तपती हुई रैत पर शिद्दते प्यास से तड़प रहा था, मेरी ह़ालत येह थी कि मुझ पर ह़म्ला करना बिल्कुल आसान था ऐसे कड़े वक़्त में जब कि पानी पीने वाला भी बुख़्ल करता है। लेकिन तू ने पानी से मुझे सैराब किया और कन्जूसी न की। नेकी बाक़ी रहती है अगर्चे त़वील अ़र्सा गुज़र जाए और बुराई ख़बीष शै है इसे कोई अपना ज़ादे राह नहीं बनाता।"

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! येह एक जिन्न था जो अज़्दहे की शक्ल में शिद्दते प्यास से तड़प रहा था। उ़बैद ने तरस खा कर इसे पानी पिलाया और इस पर एह़सान किया तो जिन्न ने भी एह़सान फ़रामोशी न की और जब उ़बैद रास्ता भूल गया तो उस की मदद की और उसे मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचा दिया। ह़क़ीक़त है कि जो किसी के साथ एह़सान करता है उस पर भी एह़सान किया जाता है। जो किसी का भला सोचता है उस के साथ भी भलाई वाला मुआ़मला किया जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें लोगों के लिये नुक़्सान देह न बनाए बल्कि फ़ाइदा देने वाले अ़ज़ीम लोगों में शामिल फ़रमाए। और हमें ऐसा जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए कि हमारी वजह से किसी इस्लामी भाई को कोई नुक़्सान न पहुंचे और हम अपने मुसलमान भाइयों की ख़ैरख़्वाही के लिये हरदम कोशां रहें और पूरी दुन्या में दीने इस्लाम का डंका बजा दें।)

अ़त्तार से मह़बूब की सुन्नत की ले ख़िदमत *डंका येह तेरे दीन का दुन्या में बजा दे* (आमीन) !

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

ह़िकायत नम्बर : 462 **एह़सान मन्द सांप**

मन्क़ूल है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में मालिक बिन **ह़रीम हम्दानी** अपनी क़ौम के चन्द अफ़राद के हमराह (मक्का शरीफ़ के बाज़ार) **उ़काज़** की त़रफ़ रवाना हुवा। रास्ते में लोगों को शदीद प्यास लगी, लेकिन आस पास कहीं पानी मौजूद न था बिल आख़िर उन्हों ने मजबूर हो कर हिरन शिकार किया और उस का ख़ून पी कर गुज़ारा किया। जब सारा ख़ून ख़त्म हो गया तो उसे

ज़ब्ह़ किया और लकड़ियां ढूंडने चले गए। मालिक अपने ख़ैमे में सो गया उस के साथियों ने रास्ते में सांप देखा तो उसे मारने के लिये दौड़े, सांप ख़ैमे में दाख़िल हो गया। लोगों ने पुकार कर कहा : "ऐ मालिक ! तेरे क़रीब ख़त़रनाक सांप है, जल्दी से इसे मार डाल।" लोगों की चीख़ो पुकार सुन कर मालिक जाग गया। उस ने देखा कि एक बहुत बड़ा अज़्दहा उस के ख़ैमे में पनाह लिये हुवे है और लोग इसे मारना चाहते हैं। उस ने अपने साथियों से कहा : "मैं तुम्हें क़सम देता हूं कि तुम में से कोई भी इसे नुक़्सान न पहुंचाए, मैं तुम्हारी त़रफ़ से इसे काफ़ी हूं।" चुनान्चे, लोग उसे मारने से रुक गए और अज़्दहा सह़ीह़ व सालिम एक जानिब चला गया फिर मालिक ने इस त़रह़ कहा :

"मुझे मेरे क़ाबिले ता'ज़ीम साथी ने पड़ोसी की तकरीम की वसिय्यत की, लिहाज़ा मैं ने अपने पड़ोसी की उस वक़्त हिफ़ाज़त की जब कोई उस का मुह़ाफ़िज़ न था। ऐ लोगो ! मैं तुम पर फ़िदा हो जाऊं कि तुम ने मेरे पड़ोसी को छोड़ दिया अगर्चे वोह सांप है और तुम उस का ख़ून हरगिज़ नहीं बहा सकते जो पनाह ले चुका, क्यूंकि उस को पनाह देने वाला उस का ज़ामिन है और हर त़रफ़ से उस की हिफ़ाज़त करने वाला है।"

इस के बा'द मालिक और उस के साथियों ने जानिबे मन्ज़िल कूच किया, रास्ते में उन्हें ऐसी शदीद प्यास लगी कि ज़बानें ख़ुश्क हो गईं। फिर अचानक एक आवाज़ सुनाई दी :

"ऐ मुसाफ़िरो ! अगर तुम सारा दिन अपने जानवरों को चलाते रहो तब भी आज पानी तक नहीं पहुंच सकते। हां ! ऐसा करो कि तुम दिन भर चलो फिर "**शाम्मा**" चले जाओ ! वहां तुम्हें एक रैत के टीले के पास बहुत सा पानी मिल जाएगा और तुम्हारी कमज़ोरी दूर हो जाएगी। यहां तक कि तुम ख़ूब पानी पीना और अपनी सुवारियों को पिलाना और मश्कीज़े भी भर लेना।" येह ग़ैबी आवाज़ सुन कर सब लोग "शाम्मा" पहुंचे, वहां एक पहाड़ की जड़ से चश्मा बह रहा था। सब ने ख़ूब सैर हो कर पानी पिया, सुवारियों को पिलाया, अपने मश्कीज़े और बरतन भी भर लिये। और "**उ़काज़**" की जानिब चल दिये। वापसी पर उसी मक़ाम पर पहुंचे जहां पानी का चश्मा था तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि अब वहां चश्मे का नामो निशान भी न था। वोह अभी ह़ैरत की वादियों में गुम थे कि एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी, कोई कहने वाला कह रहा था :

"ऐ मालिक ! मेरी त़रफ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। येह मेरी त़रफ़ से तुम्हें अलवदाअ़ और सलाम है। हरगिज़ किसी के साथ नेकी करना न छोड़ना, बेशक ! जो किसी को भलाई से मह़रूम करता है वोह ख़ुद भी ज़रूर मह़रूम किया जाता है और ख़ैर ख़्वाही व भलाई करने वाला अपनी मौत तक क़ाबिले रश्क रहता है। फ़ाइदा उठा कर ना शुक्री करना बहुत बुरी आ़दत है। सुनो ! मैं वोही सांप हूं जिस को तुम ने मौत से नजात दी थी, मैं ने उस एह़सान का शुक्रिया अदा कर दिया, क्यूंकि शुक्रिया अदा करना क़ाबिले रश्क शै और बहुत ज़रूरी अम्र है।" फिर वोह ग़ैबी आवाज़ बन्द हो गई और सारे मुसाफ़िर ह़ैरत से मुंह खोले रह गए।

हि़कायत नम्बर : 463 परन्दे के ज़रीए रिज़्क़

ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि एक आ़बिद पहाड़ पर रह कर इ़बादत किया करता था। उसे रिज़्क़ इस त़रह़ मिलता कि एक सफ़ेद परन्दा रोज़ाना उसे दो रोटियां दे जाता। आ़बिद रोटियां खा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता और दिन रात इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहता। एक मरतबा जब उसे दो रोटियां दी गईं तो एक साइल आ गया उस ने एक रोटी उसे दे दी, फिर एक और साइल आया तो आधी रोटी उसे दे दी और आधी अपने लिये रख ली, फिर अपने आप से कहा : ''ब ख़ुदा ! आधी रोटी न तो मुझे किफ़ायत करेगी और न ही साइल का गुज़ारा होगा, बेहतर येही है कि एक भूका रहे ताकि दूसरे का गुज़ारा हो जाए। पस उस ने साइल को तरजीह़ देते हुवे (बक़िय्या आधी) रोटी उसे दे दी, साइल दुआ़एं देता हुवा चला गया। आ़बिद ने वोह रात भूक में काटी। फिर ख़्वाब देखा, कोई कहने वाला कह रहा था : ''जो मांगना है मांग लो।'' आ़बिद ने कहा : ''मैं तो मग़्फ़िरत का त़ालिब हूं।'' आवाज़ आई : ''येह चीज़ तो तुम्हें दी जा चुकी है इस के इ़लावा कुछ चाहिये तो बताओ।'' उन दिनों लोग क़ह़त़ साली में मुब्तला थे और बारिश बिल्कुल न हुई थी। आ़बिद ने कहा : ''मैं चाहता हूं कि लोग बारिश से सैराब हो जाएं।'' आ़बिद की दुआ़ क़बूल हुई और मूसलाधार बारिश होने लगी।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हि़कायत नम्बर : 464 सात बा बरकत कलिमात

ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन सुफ़्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान ने एक शख़्स के बारे में ए'लान करवा रखा था कि कोई भी उसे पनाह न दे, सब उस से दूर रहें। सब लोग उस से दूर भागते, वोह बेचारा दर बदर ठोकरें खाता फिरता और जंगल व सह़रा में रह कर अपना वक़्त पूरा करता। एक दिन वोह जंगल में घूम रहा था कि कुछ दूर एक बुज़ुर्ग चादर ओढ़े नमाज़ पढ़ते दिखाई दिये, वोह क़रीब जा कर बैठ गया। बुज़ुर्ग ने नमाज़ मुकम्मल करने के बा'द पूछा : ''तुम कौन हो ? और इतने परेशान क्यूं हो ?'' उस ने कहा : ''मैं दुन्या का धुतकारा हुवा शख़्स हूं। ख़लीफ़ए वक़्त अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान ने मेरे बारे में लोगों को धमकी दी हुई है कि कोई मुझे पनाह न दे। ख़लीफ़ा को मुझ से इतनी नफ़रत है कि वोह मेरी शक्ल देखना भी गवारा नहीं करता। लोग भी मुझे मुंह नहीं लगाते, बस ऐसे ही वीरानों में मारा मारा फिरता हूं।'' येह सुन कर बुज़ुर्ग ने कहा : ''तुम सात कलिमात से ग़ाफ़िल क्यूं हो ?'' अ़र्ज़ की : ''कौन से सात कलिमात ?'' फ़रमाया : ''वोह सात कलिमात येह हैं :

سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الَّذِیْ لَیْسَ غَیْرَہٗ اِلٰہٌ. سُبْحَانَ الدَّائِمِ الَّذِیْ لَا نَفَادَ لَہٗ سُبْحَانَ الْقَدِیْمِ الَّذِیْ لَا نِدَّ لَہٗ.

سُبْحَانَ الَّذِیْ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ. سُبْحَانَ الَّذِیْ ھُوَ کُلَّ یَوْمٍ فِیْ شَاْنٍ. سُبْحَانَ الَّذِیْ خَلَقَ مَا یُرٰی وَمَا لَا یُرٰی.

سُبْحَانَ الَّذِیْ عَلَّمَ کُلَّ شَیْءٍ مِنْ غَیْرِ تَعْلِیْمٍ

तर्जमा : या'नी पाक है वोह अकेला जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। पाक है वोह हमेशा रहने वाला जिसे कभी फ़ना नहीं। पाक है वोह क़दीम ज़ात जिस का कोई हमसर नहीं। पाक है वोह जो मारता और ज़िन्दा करता है। पाक है वोह जिसे हर दिन एक काम है। पाक है वोह जिस ने नज़र आने वाली और न नज़र आने वाली अश्या को पैदा फ़रमाया। पाक है वोह जिस ने हर शै को बिग़ैर ता'लीम के सिखाया।"

फिर उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : "इन कलिमात को पढ़ कर इस त़रह़ दुआ़ कर : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इन कलिमात के वसीले और इन की ह़ुरमत के साथ सुवाल करता हूं कि मेरा फ़ुलां फ़ुलां काम बना दे।" इस त़रह़ तुम जो भी दुआ़ मांगोगे क़बूल होगी।" येह कह कर बुज़ुर्ग ने कई मरतबा येह कलिमात दोहराए, यहां तक कि उस शख़्स को याद हो गए। फिर अचानक वोह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए। येह शख़्स इन कलिमात को सीख कर अपने आप को पुर अम्न व पुर सुकून मह़सूस करते हुवे फ़ौरन ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान के पास पहुंचा, न किसी ने उस को रोका और न ही ख़लीफ़ा को उस पर ग़ुस्सा आया। ख़लीफ़ा ने जब अपनी येह कैफ़िय्यत देखी तो कहा : "क्या तू ने मुझ पर जादू करवा दिया है ?" उस ने कहा : "नहीं आ़ली जाह ! मैं ने कोई जादू वग़ैरा नहीं करवाया।" ख़लीफ़ा ने कहा : "फिर क्या वजह है कि मुझे तुझ पर बिल्कुल ग़ुस्सा नहीं आ रहा ?"

उस ने बुज़ुर्ग वाली सारी बात बताई और वोह कलिमात भी सुना दिये। ख़लीफ़ा बड़ा ह़ैरान हुवा और उसे मुआ़फ़ कर के अपने ख़ास ओ़हदे दारों में शामिल कर लिया।

ह़िकायत नम्बर : 465 ह़कीम का काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुस्समद बिन मा'क़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को फ़रमाते सुना : "बनी इस्राईल का एक राहिब अपने इ़बादत ख़ाने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करता था। इ़बादत ख़ाने के नीचे एक नहर थी जहां एक धोबी कपड़े धोया करता था। एक दिन एक घुड़सुवार ने नहर के क़रीब घोड़ा रोका, कपड़े और रक़म की थैली एक जानिब रखी और ग़ुस्ल करने के लिये नहर में उतर गया। ग़ुस्ल करने के बा'द बाहर आ कर कपड़े पहने और रक़म की थैली वहीं भूल कर आगे बढ़ गया। राहिब सारा मुआ़मला देख रहा था। इतने में एक शिकारी हाथ में जाल लिये नहर के क़रीब आया, उस ने रक़म की थैली देखी तो उठा कर चलता बना। कुछ देर बा'द घुड़सुवार वापस आया और थैली ढूंडने लगा लेकिन उसे थैली न मिली। उस ने धोबी से कहा : "मैं यहां अपनी रक़म की थैली भूल गया था, बताओ ! वोह कहां गई ?" धोबी ने कहा : "मुझे नहीं मा'लूम, मैं ने तो कोई थैली नहीं देखी।" येह सुन कर घुड़सुवार ने तल्वार निकाली और धोबी का सर क़लम कर दिया। राहिब सारा मन्ज़र देख रहा था, उसे वस्वसे आने लगे तो अ़र्ज़ गुज़ार हुवा :

"या इलाही عَزَّوَجَلَّ ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ बड़ा अ़जीब मुआ़मला है कि थैली तो शिकारी ले जाए और धोबी मारा जाए।" राहिब को इस त़रह़ के ख़यालात आते रहे। जब सोया तो ख़्वाब में कहा गया : "ऐ नेक बन्दे ! वस्वसों का शिकार हो कर परेशान न हो, और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्म में दख़्ल अन्दाज़ी मत कर, बेशक तेरा रब عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है करता है और जैसे चाहता है हुक्म फ़रमाता है। सुन ! उस घुड़सुवार ने शिकारी के बाप को क़त्ल कर के उस का माल ले लिया था और धोबी का नामए आ'माल नेकियों से पुर था सिर्फ़ उस की एक ख़त़ा थी जब कि उस घुड़सुवार के नामए आ'माल में एक ही नेकी थी। जब उस ने बेगुनाह धोबी को क़त्ल किया तो उस (घुड़सुवार) की वोह नेकी मिटा दी गई और धोबी के नामए आ'माल में मौजूद ख़त़ा भी मिटा दी गई। रहा माल तो वोह उसी के पास पहुंच गया जिसे मीराष में मिलना था।"

"سُبْحَانَ الَّذِیْ یَحْکُمُ مَا یُرِیْدُ وَیَفْعَلُ مَا یَشَآءُ وَلَمْ یَکُنْ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ" या'नी वोह पाक है, जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है और जो चाहता है करता है और न ही उस के जोड़ का कोई।"

❁❁❁❁❁❁

हिकायत नम्बर : 466 मुर्दों को ज़िन्दों के नेक आ'माल का फ़ाइदा

हज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन सौदा तुफ़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की वालिदए मोह़तरमा बहुत ज़ियादा आ़बिदो ज़ाहिदा थीं, कषरते मुजाहदात की वजह से "राहिबा" मश्हूर थीं। जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुईं :

"ऐ मेरे आ'माल के मालिक عَزَّوَجَلَّ ऐ मेरी उम्मीदगाह ! ऐ वोह ज़ात जिस पर क़ब्ल अज़ मौत व बा'द अज़ मौत मेरा ए'तिमाद व भरोसा है ! ऐ मेरे ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ मौत के वक़्त मुझे रुस्वा न करना, क़ब्र में मुझे बे यारो मददगार न छोड़ना।" इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उन का इन्तिक़ाल हो गया। उन के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन सौदा तुफ़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : "अपनी वालिदा के विसाल के बा'द मैं हर जुमुआ उन की क़ब्र पर जाता, उन के लिये और तमाम अहले क़ुबूर के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करता। एक मरतबा ख़्वाब में वालिदा को देखा तो अ़र्ज़ की : "ऐ मेरी प्यारी अम्मी जान ! आप का क्या ह़ाल है ?" कहा : "मेरे बच्चे ! बेशक मौत बड़ी दर्दनाक है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मेरा अन्जाम अच्छा हुवा, मेरे लिये ख़ुश्बूएं, बाग़ात और बेहतरीन नर्म व मुलाइम बिस्तर हैं जिन पर सुन्दुस और इस्तबरक़[1] तकये हैं, मैं रोज़े मह़शर तक इन्ही आराम देह ने'मतों में रहूंगी।" मैं ने कहा : "प्यारी अम्मी जान ! क्या आप को कोई ह़ाजत है ?" कहा : "जी हां।" मैं ने पूछा : "बताइये क्या ह़ाजत है ?" कहा : "मेरी क़ब्र पर

---

1 ....येह दोनों लफ़्ज़ रेशमी लिबास के लिये बोले जाते हैं। **सुन्दुस** बारीक रेशमी कपड़े को और **इस्तबरक़** मोटे रेशमी कपड़े को कहते हैं।

हाज़िरी और हमारे लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करना हरगिज़ तर्क न करना। क्यूंकि जब तू जुमुआ़ के दिन मेरी क़ब्र पर आता है तो मुझे ख़ुशी होती है और मुझ से कहा जाता है : "ऐ राहिबा ! देख तेरा बेटा तेरी क़ब्र पर आया है।" येह सुन कर मैं भी ख़ुश होती हूं और मेरे पड़ोसी मुर्दे भी ख़ुश होते हैं। लिहाज़ा मेरी क़ब्र की ज़ियारत हरगिज़ तर्क न करना।"

हिकायत नम्बर : 467

अंगूरों का बाग़

अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद का बयान है, एक मरतबा हमारा क़ाफ़िला "**रूम**" की जानिब जिहाद के लिये जा रहा था, क़ाफ़िले में एक अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया। हुवा यूं कि जब हमारा गुज़र अंगूरों के एक बाग़ के क़रीब से हुवा तो हम ने एक नौजवान को टोकरी देते हुवे कहा : "जाओ ! इस बाग़ से हमारे लिये अंगूर ले आओ, हम चलते हैं, तुम अंगूर ले कर हमारे साथ मिल जाना।" वोह नौजवान अंगूरों के बाग़ में चला गया। वहां पहुंचा तो अंगूर की बेल के नीचे सोने के तख़्त पर एक ह़सीनो जमील ख़ूब सूरत लड़की बैठी हुई देखी, नौजवान ने फ़ौरन निगाहें झुका लीं और दूसरी त़रफ़ चला गया। वहां भी वैसी ही ख़ूब सूरत दोशीज़ा सोने के तख़्त पर बैठी हुई पाई। उस ने फिर निगाहें झुका लीं। येह देख कर वोह ह़सीनो जमील दोशीज़ा मुस्कुराते हुवे यूं गोया हुई : "हमारी त़रफ़ देखिये ! आप को हमारी त़रफ़ देखना जाइज़ है क्यूंकि हम "**हूरे ऐ़न**" में से आप की जन्नती बीवियां हैं और आज आप हमारे हां पहुंच जाएंगे।"

इस के बा'द वोह अंगूर लिये बिग़ैर अपने रुफ़क़ा की त़रफ़ वापस आ गया। वोह ख़ाली हाथ था और उस के चेहरे से नूर की किरनें फूट रही थीं, हम ने ह़ैरान हो कर माजरा दरयाफ़्त किया मगर उस ने टाल मटोल से काम लिया। जब दोस्तों ने बहुत इसरार किया तो उस ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। सब लोग उस वाक़िए़ से बहुत ह़ैरान हुवे। फिर जैसे ही हमारा लश्कर दुश्मन के सामने पहुंचा वोह नौजवान बिफरे हुवे शेर की त़रह़ दुश्मनों पर टूट पड़ा और लड़ते लड़ते जामे शहादत नोश कर गया। उस दिन मुसलमानों के लश्कर में सब से पहले शहीद होने वाला वोही नौजवान था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 468 **तीन क़ब्रों का अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़**

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन सदक़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने वालिद के ह़वाले से बयान फ़रमाते हैं : "एक दफ़्आ़ मैं **अन्त़ाबुलुस** में था वहां मैं ने तीन क़ब्रें देखीं जो काफ़ी ऊंची जगह पर बनी हुई थीं । क़रीब गया तो एक क़ब्र पर येह अश्आ़र लिखे हुवे थे :

وَكَيْفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَعَالِمٌ ۔ بِاَنَّ اِلٰـهَ الْخَلْقِ لَا بُدَّ سَائِلُهُ

فَيَاْخُذُ مِنْهُ ظُلْمَهُ وَيَجْزِيهِ ۔ بِالْخَيْرِ الَّذِيْ هُوَ فَاعِلُهُ

तर्जमा : वोह ज़िन्दगी का मज़ा कैसे पा सकता है जो जानता है कि ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ उस से पूछ गछ करने वाला और उस के अच्छे बुरे आ'माल का बदला देने वाला है ।

दूसरी क़ब्र पर येह अश्आ़र दर्ज थे :

وَكَيْفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ كَانَ مُوْقِنًا ۔ بِاَنَّ الْمَنَايَا بَغْتَةً سَتُعَاجِلُهُ

فَتَسْلُبُهُ مُلْكًا عَظِيْمًا وَنَخْوَةً ۔ وَتُسْكِنُهُ الْبَيْتَ الَّذِيْ هُوَ آهِلُهُ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी का मज़ा कैसे पा सकता है जिसे पुख़्ता यक़ीन हो कि मौत उस को जल्द ही आ दबोचेगी, उस की सल्त़नत व तकब्बुर छीन लेगी और उस को अन्धेरी कोठड़ी में डाल देगी ।

तीसरी क़ब्र पर येह अश्आ़र दर्ज थे :

وَكَيْفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ كَانَ صَائِرًا ۔ اِلٰى جَدَثٍ تُبْلِى الشَّبَابَ مَنَاهِلُهُ

وَيَذْهَبُ رَسْمُ الْوَجْهِ مِنْ بَعْدِ صَوْتِهِ ۔ سَرِيْعًا وَّيُبْلِى جِسْمَهُ وَمُفَاصِلَهُ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी का मज़ा कैसे पा सकता है जो ऐसी क़ब्र का मकीन बनने वाला हो जो उस के हुस्नो शबाब को ख़ाक में मिला देगी, उस के चेहरे की चमक दमक ख़त्म कर देगी और उस का जोड़ जोड़ अ़लाह़िदा कर देगी ।

येह क़ब्रें देख कर मैं बस्ती की त़रफ़ आया तो एक ज़ईफ़ुल उ़म्र शख़्स से मुलाक़ात हुई । मैं ने उसे कहा : "मैं ने तुम्हारी बस्ती में एक अ़जीब बात देखी है ।" उस ने पूछा : "कौन सी बात ?" मैं ने उसे क़ब्रों का मुआ़मला बताया तो उस ने कहा : "इन का वाक़िआ़ इन्तिहाई अ़जीबो ग़रीब है ।" मैं ने कहा : "अगर वाक़ेई ऐसी बात है तो मुझे बताओ कि येह तीन क़ब्रें किन की हैं और इन पर येह अश्आ़र लिखने की क्या वजह है ?" येह सुन कर बुढ्ढे ने कहा : "इस अ़लाक़े में तीन भाई रहते थे, एक भाई को बादशाह ने शहरों और फ़ौजी लश्करों पर अमीर मुक़र्रर कर रखा था और वोह बड़ा ज़ालिम व सफ़्फ़ाक था । दूसरा नेक दिल ताजिर था, जब भी कोई परेशान ह़ाल ग़रीब उस से मदद त़लब करता तो वोह उस की मदद करता । जब कि तीसरा भाई आ़बिदो ज़ाहिद था उस ने दुन्यवी मशाग़िल छोड़ कर इ़बादत व रियाज़त इख़्तियार कर ली थी । जब आ़बिद की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो दोनों भाइयों ने कहा : "प्यारे भाई ! आप हमें कोई वसिय्यत क्यूं नहीं करते ?" आ़बिद ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे पास न तो माल है, न ही मेरा किसी

पर क़र्ज़ है, न ही कोई दुन्यवी माल छोड़ कर जा रहा हूं जिस के ज़ाएअ़ होने का मुझे अन्देशा हो, अब तुम ही बताओ कि मैं किस चीज़ की वसिय्यत करूं ?"

येह सुन कर उस के ह़ाकिम भाई ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! मेरा माल आप के सामने मौजूद है, आप जो भी हुक्म फ़रमाएंगे मैं उसे पूरा करूंगा।" फिर उस के ताजिर भाई ने कहा : "ऐ मेरे भाई ! आप मेरी तिजारत और माले तिजारत से ख़ूब वाक़िफ़ हैं, मेरे पास माल की फ़िरावानी है, अगर कोई ऐसा अ़मल रह गया हो जो सिर्फ़ मालो दौलत ख़र्च कर के ही पूरा किया जा सकता है और आप वोह नेक अ़मल नहीं कर पाए तो मेरा तमाम माल आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर है, आप जो हुक्म फ़रमाएंगे मैं पूरा करूंगा।"

आ़बिद ने कहा : "ऐ मेरे भाइयो ! मुझे तुम्हारे माल की कोई ज़रूरत नहीं। हां ! मैं तुम से एक अ़हद लेना चाहता हूं, अगर हो सके तो इसे पूरा कर देना, इस में कोताही न करना।" दोनों ने कहा : "आप जो चाहें अ़हद लें हम आप की हर ख़्वाहिश पूरी करेंगे।" आ़बिद ने कहा : "जब मैं मर जाऊं तो ग़ुस्ल व कफ़न के बा'द मुझे किसी ऊंची जगह दफ़्नाना और मेरी क़ब्र पर येह अश्आ़र लिख देना :

وَكَيْفَ يَلُذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَعَالِمٌ ‏ ‏ ‏ بِاَنَّ اِلٰـهَ الْخَلْقِ لَا بُدَّ سَـائِلُهُ

فَيَاْخُذُ مِنْـهُ ظُلْـمَهُ وَيَجْزِيْهِ ‏ ‏ ‏ بِالْخَيْـرِ الَّـذِىْ هُوَ فَـاعِلُـهُ

येह अश्आ़र लिख कर तुम दोनों मेरी क़ब्र की ज़ियारत के लिये रोज़ाना आते रहना, शायद ! तुम्हें नसीह़त ह़ासिल हो।" जब आ़बिद का इन्तिक़ाल हो गया तो ह़स्बे वसिय्यत उस की क़ब्र पर मुन्दरिजए बाला अश्आ़र लिख दिये गए। उस का ह़ाकिम भाई अपने लश्कर के साथ दो दिन तक उस की क़ब्र पर आया और अश्आ़र पढ़ कर रोता रहा। तीसरे दिन भी काफ़ी देर तक रोता रहा, जब वापस जाने लगा तो उस ने क़ब्र के अन्दर से एक ख़ौफ़नाक धमाके की आवाज़ सुनी, क़रीब था कि उस का दिल फट जाता। ख़ौफ़ के मारे वोह सर पर पाउं रख कर भागा और घर पहुंच कर दम लिया। वोह बहुत ज़ियादा ग़मगीन व ख़ौफ़ज़दा था। रात को ख़्वाब में अपने भाई को देख कर पूछा : "ऐ मेरे भाई ! तुम्हारी क़ब्र से जो आवाज़ मैं ने सुनी वोह किस चीज़ की थी ?" कहा : "येह जहन्नमी हथोड़े की आवाज़ थी जो मेरी क़ब्र में मारा गया और मुझ से कहा गया : "तू ने एक मज़्लूम को देखा और बा वुजूदे क़ुदरत उस की मदद न की, येह उस की सज़ा है।" येह ख़्वाब देख कर उस ने वोह रात बड़ी बेचैनी में गुज़ारी। सुब्ह़ अपने ताजिर भाई और दूसरे अ़ज़ीज़ों को बुला कर कहा : "ऐ मेरे भाई ! हमारे आ़बिद भाई ने अपनी क़ब्र पर इ़ब्रत आमोज़ अश्आ़र लिखवा कर हमें बहुत अच्छी नसीह़त की, मैं तुम सब को गवाह बना कर कहता हूं कि अब मैं तुम्हारे दरमियान नहीं रहूंगा।" फिर उस ने अमारत व हुकूमत छोड़ी और पहाड़ों और जंगलों में जा कर इ़बादत व रियाज़त में मश्ग़ूल हो गया। जब ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान को इत्तिलाअ़ मिली तो उस ने कहा : "उसे उस की ह़ालत पर छोड़ दो।" जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो चन्द चरवाहों के ज़रीए़ उस ने अपने ताजिर भाई को बुलवा भेजा। उस ने आ कर

कहा : "ऐ मेरे भाई ! आप मुझे कोई वसिय्यत क्यूं नहीं करते।" उस ने कहा : "मेरे पास मालो दौलत नहीं जिस की वसिय्यत करूं, बस मैं तो तुम से एक अ़हद लेना चाहता हूं। सुनो ! जब मैं मर जाऊं तो मुझे मेरे आ़बिद भाई के पहलू में दफ़्ना कर मेरी क़ब्र पर येह अश्आ़र लिख देना :

وَكَيفَ يَلُذُّ العَيشَ مَن كَانَ مُوقِنًا   بِانَّ الْمَنَايَا بَغْتَةً سَتُعَاجِلُهُ

فَتَسلُبُهُ مُلْكًا عَظِيمًا وَنَخوَةً   وَتُسكِنُهُ الْبَيتَ الَّذِى هُوَ آهِلُهُ

येह अश्आ़र लिखने के बा'द मुसलसल तीन दिन तक मेरी क़ब्र पर आना और मेरे लिये दुआ़ करना शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह़्म फ़रमाए और मुझे बख़्श दे।" येह कह कर उस का इन्तिक़ाल हो गया। ताजिर ह़स्बे वसिय्यत मुसलसल दो दिन तक आया। जब तीसरे दिन आया तो उस की क़ब्र के पास बैठ कर दुआ़ करता रहा और मुसलसल रोता रहा। जब वापस जाने का इरादा किया तो उस ने क़ब्र में दीवार के गिरने की आवाज़ सुनी। आवाज़ इतनी ख़त़रनाक थी कि अ़क़्ल ज़ाएअ़ होने का ख़त़रा था। वोह ख़ौफ़ज़दा और ग़मगीन हो कर घर आ गया। जब सोया तो ख़्वाब में अपने भाई को देख कर पूछा : "ऐ मेरे भाई ! आप हमारे घर क्यूं नहीं आते ?" उस ने कहा : "हम ऐसे मक़ामात पर हैं कि कहीं जाने को जी नहीं चाहता।" ताजिर ने कहा : "भाई आप का क्या ह़ाल है ?" कहा : "तौबा की बरकत से हर ख़ैर व भलाई नसीब हुई है।" मैं ने कहा : "मेरे आ़बिद भाई का क्या ह़ाल है ?" कहा : "वोह अबरारों (या'नी नेक लोगों) के साथ है।" पूछा : "आप की त़रफ़ से हमें क्या नसीह़त व हुक्म है ?" कहा : "जो कोई दुन्या में रह कर आख़िरत के लिये कुछ भेजेगा उसे वहां ज़रूर पाएगा। पस तू अपने लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर और मौत से पहले कुछ आ'माले सालेह़ा जम्अ़ कर ले।"

ताजिर ने सुब्ह़ होते ही दुन्या को ख़ैर बाद कह कर तमाम माल तक़्सीम कर दिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये कमरबस्ता हो गया। उस का एक बेटा था जो इन्तिहाई ह़सीनो जमील और समझदार था। अब उस ने तिजारत शुरूअ़ कर दी और ख़ूब मालदार हो गया। जब उस के बाप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उस ने अपने बाप से कहा : "अब्बा जान ! क्या वजह है कि आप मुझे कोई वसिय्यत नहीं कर रहे ?" उस ने कहा : "मेरे बेटे ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तेरे बाप के पास माल नहीं है जिस के मुतअ़ल्लिक़ तुझे वसिय्यत करे। हां ! मैं तुझ से एक अ़हद लेता हूं कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे अपने दोनों चचाओं के साथ दफ़्नाना और मेरी क़ब्र पर येह अश्आ़र लिख देना :

وَكَيفَ يَلُذُّ العَيشَ مَن كَانَ صَائِرًا   اِلٰى جَدَثٍ تُبْلِى الشَّبَابَ مَنَاهِلُهُ

وَيَذْهَبُ رَسْمُ الْوَجْهِ مِنْ بَعْدِ صَوْتِهٖ   سَرِيْعًا وَّيُبْلِى جِسْمَهُ وَمُفَاصِلَهُ

और जब तू तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो जाए तो कम अज़ कम तीन दिन तक मेरी क़ब्र पर आना और मेरे लिये दुआ़ करना।" बेटे ने ह़स्बे वसिय्यत बाप को दोनों चचाओं के साथ दफ़्न किया

और रोज़ाना ज़ियारत के लिये आने लगा। तीसरे दिन क़ब्र से एक ख़तरनाक आवाज़ सुनी तो ख़ौफ़ ज़दा व ग़मगीन हो कर घर लौट आया। जब सोया तो ख़्वाब में उस का वालिद कह रहा था : "ऐ मेरे बेटे ! तुम हमारे पास बहुत कम वक़्त के लिये आए। सुनो ! मौत बहुत क़रीब है और आख़िरत का सफ़र बहुत कठिन है, जल्दी से सफ़रे आख़िरत की तय्यारी कर लो और ज़ादे राह तय्यार कर लो। बस आख़िरत की मन्ज़िल की तरफ़ तुम्हारा कूच होने वाला है। जल्द ही तुम इस फ़ानी दुन्या को छोड़ने वाले हो, इस धोके बाज़ दुन्या से इस तरह धोका न खाना जैसे तुझ से पहले लोग बड़ी बड़ी उम्मीदें दिल में लिये यहां से चल बसे। उन्हों ने हश्र के मुआमले को मा'मूली जाना तो मौत के वक़्त शदीद नादिम हुवे और गुज़री हुई ज़िन्दगी पर उन्हें बहुत अफ़्सोस हुवा। जब मौत मुंह को आ जाए तो उस वक़्त की नदामत कोई फ़ाइदा नहीं देती और उस वक़्त का अफ़्सोस क़ियामत के नुक़्सान से हरगिज़ न बचाएगा। ऐ मेरे बेटे ! जल्दी कर, जल्दी कर, जल्दी कर ! (मौत की तय्यारी कर ले)।

रावी कहते हैं : "जो बुढ्ढा मुझे येह वाक़िआ बयान कर रहा था उस ने सिलसिलए कलाम जारी रखते हुवे कहा : उस नौजवान ने हमें अपना ख़्वाब सुनाया और कहा : "मुआमला बिल्कुल वैसा ही है जैसा मेरे वालिद ने बयान किया, मेरा ग़ालिब गुमान है कि मौत ने मुझ पर अपने पर फैलाना शुरूअ़ कर दिये हैं।" फिर उस ने अपना क़र्ज़ अदा किया, कारोबारी शरीकों से मुआमला साफ़ किया, अपने दोस्तों और अहले क़राबत से मुआफ़ी मांगी, उन्हें सलामती की दुआ दी, उन से अपनी सलामती की दुआ का वा'दा लिया, फिर सब को यूं "**अलवदाअ़**" कहने लगा जैसे किसी बहुत बड़े हादिषे से दो चार होने वाला हो। फिर कहा : "मेरे वालिद ने मुझ से तीन मरतबा कहा था : "जल्दी कर , जल्दी कर, जल्दी कर, ।" अगर इस से मुराद तीन घंटे थे तो वोह गुज़र गए, अगर तीन दिन मुराद हैं तो मैं तीन दिन बा'द हरगिज़ तुम्हारे पास न रह सकूंगा, अगर तीन महीने मुराद हैं तो वोह बहुत जल्द गुज़र जाएंगे, अगर तीन साल मुराद हैं तो अगर्चे, येह एक बड़ी मुद्दत लगती है लेकिन येह भी जल्द गुज़र जाएगी, ख़्वाह मुझे पसन्द हो या न हो मौत बिल आख़िर ज़रूर आ कर रहेगी। वोह नौजवान येह कहता जाता और अपना मालो दौलत तक़्सीम करता जाता। जब तीन दिन मुकम्मल हुवे तो उस ने अपने अहले ख़ाना को और उन्हों ने उसे अलवदाअ़ कहा। फिर क़िब्ला रुख़ लैट कर आंखें बन्द कीं, कलिमए शहादत पढ़ा और उस की रूह दारे फ़ानी से दारे उक़्बा की तरफ़ परवाज़ कर गई। उस की मौत की ख़बर सुन कर कुछ ही देर में मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से लोग जम्अ़ हो गए। और आज तक लोगों का येह मा'मूल है कि वोह मुख़्तलिफ़ शहरों और अ़लाक़ों से आ आ कर उस की क़ब्र की ज़ियारत करते और उसे सलाम करते हैं।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

ह़िकायत नम्बर : 469 नुमैर की शहादत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान अशहली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मुझे मेरे वालिद ने ह़ज़रते इब्ने नुमैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़वाले से बताया कि "मेरे भान्जे नुमैर का शुमार कूफ़ा के ज़ाहिदों में होता था, वोह नमाज़ व त़हारत का ख़ूब ख़याल रखने वाला ह़सीनो जमील नौजवान था । कुछ अ़र्से बा'द किसी आ़रिज़े की वजह से उस की अ़क़्ल जाती रही और ह़ालत येह हो गई कि सख़्त गर्मियों में ज़वाल के वक़्त भी साए में न बैठता बल्कि खुले मैदान और सह़रा में सारा सारा दिन गुज़ार देता । सख़्त सर्दी हो या तेज़ व तुन्द आंधी वोह हर मौसिम में रात अपने मकान की छत पर खड़े खड़े गुज़ारता, रोज़ाना उस का येही मा'मूल था । एक दिन सुब्ह़ सुब्ह़ छत से उतर कर क़ब्रिस्तान की त़रफ़ जाने लगा तो मैं ने कहा :"ऐ नुमैर ! क्या तुम रात को सोते नहीं हो ?" कहा : "जी हां ।" मैं ने कहा : "किस चीज़ ने तुम्हें सोने से मन्अ़ कर रखा है ?" कहा : "एक बहुत बड़ी मुसीबत ने मेरी नींद उड़ा रखी है ।" मैं ने कहा : "ऐ नुमैर ! क्या तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरते ?" कहा : "क्यूं नहीं ! मैं अपने ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं और मुसीबतें तो इन्सान पर आती ही हैं । क्या ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद नहीं फ़रमाया कि "सब से ज़ियादा आज़्माइशें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर आती हैं फिर तरतीब वार साह़िबे मर्तबा लोगों पर आती हैं ।"

(السنن الکبرٰی للنسائی، کتاب الطب،أی الناس أشد بلاء، الحدیث۷٤۸۲،ج٤،ص۳٥۲)

येह सुन कर मैं ने कहा : "क्या तुम मुझ से ज़ियादा जानते हो ?" उस ने नफ़ी में जवाब दिया और आगे बढ़ गया । फिर एक सख़्त सर्द रात जब मैं छत पर गया तो देखा कि नुमैर वहां खडा है और मेरी बहन (या'नी उस की मां) उस के पीछे बैठी रो रही है । मैं ने पूछा : "ऐ नुमैर ! क्या अब भी ऐसी कोई चीज़ बाक़ी है जिस की तुम्हें बहुत ज़ियादा ख़्वाहिश हो और तुम उस में कामिल न हुवे हो ?" कहा : "जी हां ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कामिल मह़ब्बत का बहुत ज़ियादा त़लबगार हूं ।

एक मरतबा रमज़ानुल मुबारक की सख़्त सर्द राद में मैं छत पर गया तो नुमैर से कहा : "ऐ नुमैर ! क्या तुम खाना नहीं खाओगे ।" कहा : "क्यूं ।" मैं ने कहा : "मुझे पसन्द है कि मेरी बहन तुझे मेरे साथ खाना खाते हुवे देखे ।" कहा : "अच्छा ! अगर येही चाहते हैं तो खाना ले आइये ।" मैं ने खाना मंगवाया और एक साथ खाया । फ़राग़त के बा'द जब मैं वापस आने लगा तो येह सोच कर मुझे रोना आ गया कि मैं तो जा रहा हूं और मेरा भांजा सर्दी और अन्धेरे में है । मुझे रोता देख कर उस ने कहा : "अल्लाह तआ़ला आप पर रह़्म करे, क्यूं रो रहे हैं ?" मैं ने कहा : "मैं तो मकान की छत तले रोशनी में जा रहा हूं और तुम यहां अन्धेरे और सर्दी में हो, मुझे तुम पर बहुत तरस आ रहा है ।" येह सुन कर वोह ग़ज़बनाक हो कर कहने लगा : "मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ पर आप से कहीं ज़ियादा मेहरबान है, वोह ख़ूब जानता है कि मेरे लिये कौन सी चीज़ फ़ाइदे मन्द है । आप मुझे उस के ज़िम्मए करम पर छोड़ दीजिये, वोह जैसा

चाहे मेरे बारे में फ़ैसला फ़रमाए, मुझे उस के फ़ैसले पर कोई ए'तिराज़ नहीं। मैं ने उसे समझाने के लिये कहा : "तुम क़ब्र के अन्धेरे में क्या करोगे।"

कहा : अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नेक लोगों की रूहों को बुरे लोगों की रूहों के साथ न मिलाएगा। मेरी बात सुनो ! आज रात मेरे वालिद और तुम्हारे वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर मेरे ख़्वाब में आए और कहा : "ऐ नुमैर ! जुमुआ़ के दिन तुम शहीद हो कर हमारे पास पहुंच जाओगे।" नुमैर की येह बात मैं ने अपनी बहन को बताई तो उस ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बारहा मेरा तजरिबा है कि इस की बात कभी झूटी नहीं हुई, येह जो बात कहता है वोह ज़रूर हो कर रहती है।" येह सुन कर मैं ख़ामोश हो गया। वोह बुध का दिन था और हम मुतअ़ज्जिब व हैरान हो कर कह रहे थे कि कल जुमा'रात है और परसों जुमुआ़ है बिल फ़र्ज़ येह कल बीमार हो भी गया और परसों मर गया तो शहीद कैसे होगा ? इसी शशो पंज (या'नी सोच बिचार) में जुमुआ़ की रात आ गई। तक़रीबन आधी रात के वक़्त अचानक हम ने एक धमाके की आवाज़ सुनी, हम दौड़ कर गए तो देखा कि नुमैर फ़र्श पर मुर्दा ह़ालत में पड़ा हुवा है। हुवा यूं कि जब वोह छत पर जाने के लिये सीढ़ियां चढ़ने लगा तो उस का पाउं फिसल गया और गर्दन टूट गई (और इस त़रह़ उसे शहादत की मौत नसीब हो गई) मैं उसे अपने वालिद के पहलू में दफ़्ना कर वालिद साहि़ब की क़ब्र के पास आया और कहा : "अब्बा जान ! नुमैर आप के पास आ गया है और येह आज से आप का पड़ोसी है।"

येह कह कर मैं ग़मज़दा व अफ़्सुर्दा घर आ गया। रात को ख़्वाब देखा कि वालिदे मोह़तरम घर के दरवाज़े से तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! तुम ने नुमैर के ज़रीए़ मुझे उन्स फ़राहम किया। अल्लाह तआ़ला तुम्हें इस की अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए। सुनो ! जब तुम नुमैर को हमारे पास छोड़ आए तो उस का निकाह़ "**हूरे ऐ़न**" से कर दिया गया।"

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हि़कायत नम्बर : 470 ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ख़ौफ़े आख़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ब्दुल्लाह क़ुरशी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی एक अन्सारी से रिवायत करते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आ़बिदों की तलाश में निकले, पहाड़ की चोटी पर एक राहिब के पास पहुंच कर ब आवाज़े बुलन्द उसे मुख़ात़ब किया, लेकिन उस की त़रफ़ से कोई जवाब न मिला। जब कई मरतबा आप عَلَیْہِ السَّلَام ने ब आवाज़े बुलन्द पुकारा तो आवाज़ आई : "कौन है जो मुझे पुकार रहा है ?" फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नबी दावूद हूं।" आवाज़ आई : "अच्छा आप عَلَیْہِ السَّلَام ही वोह हैं जिन के बुलन्द व बाला क़ल्ए़ और

निशान जु़दा घोड़े हैं ?" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "तुम कौन हो ?" कहा : "मैं दुन्या को तर्क करने वाला हूं।" फ़रमाया : "यहां पर तुम्हारा अनीस व रफ़ीक़ कौन है ?" कहा : "हु़जू़र ! आप عَلَيْهِ السَّلَام खुद मुलाह़ज़ा फ़रमा लें।" आप عَلَيْهِ السَّلَام उस के पास गए तो देखा कि वोह एक कफ़न दिये हुवे मुर्दे के पास मौजूद है। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : "क्या येह तुम्हारा मूनिस है ?" कहां : "हां ! येही मेरा मूनिस व मददगार है।" फ़रमाया : "येह कौन है ?" कहा : "इस के सिरहाने एक तांबे की तख़्ती है जिस पर इस के बारे में तफ़्सील लिखी हुई है।" आप عَلَيْهِ السَّلَام ने तख़्ती उठा कर देखी तो उस पर येह इबारत दर्ज थी :

"मैं फ़ुलां बिन फ़ुलां बादशाह हूं, मैं ने हज़ार साल उ़म्र पाई, हज़ार शहर आबाद किये, एक हज़ार लश्करों को शिकस्त दी, हज़ार औ़रतों से शादी की, मेरे पास हज़ार कंवारी लौंडियां थीं, मैं अपनी सल्तनत और ज़िन्दगी की ऐ़शो इ़शरत में मश्ग़ूल था कि मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ ले आए और मुझे ने'मतों से निकाल कर यहां पहुंचा दिया गया। अब ख़ाक मेरा बिस्तर और कीड़े मकोड़े मेरे पड़ोसी हैं।"

येह तख़्ती पढ़ कर आप عَلَيْهِ السَّلَام बे होश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए।

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین ﷺ﴿

❁❁❁❁❁❁

हि़कायत नम्बर : 471 ह़ज़रते ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अज़हर बिन अ़ब्दुल्लाह बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मन्क़ूल है : एक मरतबा जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ह़ज़रते सय्यिदुना इसाम बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास तशरीफ़ ले गए। उन्हों ने पूछा : "ऐ ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم क्या आप अच्छी त़रह़ नमाज़ पढ़ते हैं ?" फ़रमाया : "जी हां।" पूछा : "आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने यूं नमाज़ पढ़ना किस से सीखा ?" फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बिन इब्राहीम علیہ رحمۃ اللہ القدیم से।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "अपनी नमाज़ का अन्दाज़ तो बता दीजिये।" फ़रमाया : "जब नमाज़ का वक़्त क़रीब आता है तो निहायत उ़म्दगी से वुज़ू करता हूं, फिर नमाज़ पढ़ने की जगह पर पहुंच जाता हूं और मेरे जिस्म का हर उ़ज़्व नमाज़ के लिये तय्यार हो जाता है, फिर मैं ख़याल करता हूं कि "का'बतुल्लाह शरीफ़" मेरे बिल्कुल सामने है, मैं मैदाने मह़शर में ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होने वाला हूं। मेरे क़दम पुल सिरात़ पर हैं। जन्नत मेरी दाईं त़रफ़ और दोज़ख़ बाईं जानिब है। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पीछे हैं। और मैं गुमान करता हूं कि बस येह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है। फिर तक्बीर कह कर बड़े ग़ौरो फ़िक्र के साथ क़िराअत करता हूं। निहायत तवाज़ोअ़ से रुकूअ़ करता और बड़े ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ गिड़ गिड़ाते हुवे सजदा

रैज़ होता हूं, बड़ी उम्मीद के साथ तशह्हुद पढ़ता हुवा इख़्लास के साथ सुन्नत के मुताबिक़ सलाम फेर देता हूं। और मैं येह नमाज़ इस हालत में अदा करता हूं कि मेरा खाना और लिबास बिल्कुल हलाल माल से होता है। मैं ख़ौफ़ व उम्मीद के दरमियान होता हूं, मैं नहीं जानता कि मेरी येह नमाज़ क़बूल कर ली जाएगी या रद्द कर दी जाएगी।''

येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना इसाम बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : ''ऐ हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم आप कब से इस तरह नमाज़ पढ़ रहे हैं ?'' फ़रमाया : ''तक़रीबन तीस (30) साल से ऐसी ही नमाज़ पढ़ रहा हूं।'' येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना इसाम बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को गले लगा लिया और इतना रोए कि चादर मुबारक आंसूओं से भीग गई।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रहमत हो.. और.. इन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 472

दर्दभरी हक़ीक़त

अह़मद बिन सब्बाह़ त़बरी का बयान है कि मुझे मेरे वालिद ने बताया : ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد जब खुरासान की त़रफ़ जाने लगे तो मैं उन्हें अलवदाअ़ कहने गया। ख़लीफ़ा ने मुझ से कहा : ''ऐ सब्बाह़ ! मेरा गुमान है कि इस के बा'द तुम मुझे कभी न देख सकोगे।'' मैं ने कहा : ''ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अपनी पनाह में रखे ! येह आप क्या कह रहे हैं ? ब ख़ुदा ! मुझे उम्मीद है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़ैर ख़्वाही के लिये लम्बी उ़म्र अ़ता फ़रमाएगा।'' ख़लीफ़ा ने मुस्कुराते हुवे कहा : ''ऐ सब्बाह़ ! ब ख़ुदा ! मैं मरने के बहुत क़रीब हूं।'' मैं ने कहा : ''ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! अल्लाह तआ़ला मुझे आप पर फ़िदा कर दे, अभी तो आप का जिस्म ताक़तवर व मज़बूत और चेहरा सहीह़ व सालिम है। अल्लाह तआ़ला आप को उन बादशाहों से भी लम्बी उ़म्र अ़ता फ़रमाए जो ज़मानए दराज़ तक दुन्या पर हुकूमत कर गए और आप को ऐसी कामयाबी व कामरानी अ़ता फ़रमाए जैसी हज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन علیہ رحمۃ ربّ الکونین को अ़ता फ़रमाई थी। अल्लाह करे आप कभी अपनी रिआ़या में कोई बहुत बड़ी ख़राबी न देखें।''

येह सुन कर ख़लीफ़ा ने अपने पीछे आने वाले उमरा व वुज़रा को एक त़रफ़ जाने का हुक्म दिया, फिर रास्ते से हट कर एक दरख़्त के पास आए और फ़रमाया : ''आज मैं एक राज़ तुम पर ज़ाहिर करना चाहता हूं, येह राज़ तुम्हारे पास अमानत है, इसे छुपाए रखना।'' मैं ने कहा : ''ऐ मेरे सरदार ! आप अपने भाई से मुख़ात़िब हैं, जो चाहें इरशाद फ़रमाएं।'' ख़लीफ़ा ने अपने शिकम (या'नी पेट) से कपड़ा हटाया तो उस पर ज़ख़्मों के निशानात थे, जिन पर पट्टी बन्धी हुई थी, फिर मुझे कहा : ''क्या तुम जानते हो कि मुझे येह मरज़ कब से है ?'' मैं ने कहा : ''नहीं।'' कहा : ''मुझे येह बीमारी काफ़ी अ़र्से से है, जिसे मैं ने तमाम लोगों से छुपाए रखा सिवाए बख़्तयशूअ़,

मसरूर और **रजा** के। बहर हा़ल बख़्तयशूअ़ मेरे बेटे मामून का मुख़्बिर है, उस से राज़ का छुपना मुमकिन नहीं। इसी त़रह़ मसरूर ने मेरी बीमारी की ख़बर मेरे बेटे अमीन को दे दी है और इन में से कोई ऐसा नहीं जिस का मुख़्बिर व जासूस मुझ पर मुतअ़य्यन न हो। मेरे अ़ज़ीज़ बेटों की येह हा़लत है कि वोह मेरे सांसो को शुमार कर रहे हैं कि देखो येह कब इन्तिक़ाल करता है। इन लोगों की ख़्वाहिश है कि मेरी बीमारी में इज़ाफ़ा हो, मुझे इस बात का अन्दाज़ा इस त़रह़ हुवा है कि जब भी मैं ने उन से तुवाना व क़वी हैकल और मज़बूत अ़जमी घोड़ा त़लब किया तो उन्हों ने मुझे ज़ईफ़ व नातुवां घोड़ा दिया ताकि बीमारी मज़ीद बढ़े। मुझे सब कुछ मा'लूम है लेकिन मैं अपना राज़ उन के सामने ज़ाहिर नहीं करना चाहता क्यूंकि इस त़रह़ वोह मुझ से वह़शत मह़सूस करने लगेंगे। और जब वह़शत होगी तो उन के सीनों में छुपी अ़दावत ज़ाहिर हो जाएगी। ख़ास लोग उन की त़रफ़ माइल हो जाएंगे और आ़म लोग उन से उम्मीद लगा लेंगे। और मैं उन के दरमियान ऐसा ही होउंगा जैसे कोई शख़्स दुश्मनों के दरमियान ख़ौफ़ज़दा होता है। मेरी सुब्ह़ इस हा़ल में होती है कि मुझे शाम तक ज़िन्दा रहने की उम्मीद नहीं रहती और शाम को सुब्ह़ की उम्मीद नहीं होती।"

ख़लीफ़ा की ह़सरत भरी पुरदर्द कैफ़िय्यत व ह़क़ीक़त जान कर मैं ने कहा : "हु़ज़ूर ! उन की इस ह़रकत का बेहतरीन जवाब दिया जा सकता है लेकिन मैं तो येही कहता हूं कि जो शख़्स आप के साथ मक्रो फ़रैब करेगा अल्लाह तआ़ला उसे उसी के मक्रो फ़रैब में फंसा देगा।" ख़लीफ़ा ने कहा : "तेरी येह पुकार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सुन रहा है। अब तू वापस पलट जा, तेरे ज़िम्मे बग़दाद में और भी बहुत से काम हैं।" पस मैं ने ख़लीफ़ा को अलवदाअ़ कहा और वापस लौट आया। येह वाक़िआ़ उन की वफ़ात के क़रीब का है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हि़कायत नम्बर : 473 बा बरकत गुलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान है : ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْکَرِیْم एक शख़्स के ग़ुलाम थे। वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को बेचने के लिये बाज़ार लाया। जब भी कोई शख़्स आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़रीदने के लिये आता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस से पूछते : "तुम मुझे किस काम के लिये ख़रीदना चाहते हो।" हर कोई अपना मक़्सद बयान करता, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हर एक से कहते : "तुम मुझे न ख़रीदो तो बेहतर है।" येह सुन कर लोग वापस चले जाते, इसी त़रह़ एक शख़्स आप को ख़रीदने के लिये आया तो आप ने पूछा : "मुझ से क्या काम लोगे ?" उस ने कहा : "मैं तुम्हें अपने घर का चोकीदार बनाऊंगा।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : "ठीक है, मुझे ख़रीद लो।" चुनान्चे, वोह आप को ख़रीद कर घर ले गया। बस्ती से कुछ दूर जब वोह अपनी ज़रई ज़मीन की त़रफ़ जाता तो उस की जवान बेटियां ह़रामकारी के

लिये चली जातीं। उन की निगहबानी के लिये ही ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيم को ख़रीदा गया था। आज जाते वक़्त उस ने दरवाज़ा बन्द किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बाहर बिठाया और कहा : "घर में मेरी बेटियां मौजूद हैं, मैं ने ज़रूरत की तमाम अश्या उन्हें मुहय्या कर दी हैं, अगर वोह दरवाज़ा खोलने को कहें तो हरगिज़ न खोलना।"

यह कह कर वोह चला गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه निगहबानी करने लगे। कुछ देर बा'द लड़कियों ने दरवाज़ा खट-खटाते हुवे कहा : "जल्दी से दरवाज़ा खोलो।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन्कार कर दिया। उन्हों ने बहुत इसरार किया लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दरवाज़ा न खोला। बिल आख़िर लड़कियों ने पथ्थर मार कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ज़ख़्मी कर दिया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सर से ख़ून बहने लगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने जिस्म और फ़र्श से ख़ून धो कर साफ़ कर दिया और शाम तक दरवाज़े पर बैठे रहे। जब मालिक आया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे कुछ न बताया। दूसरे दिन लड़कियों ने फिर दरवाज़ा खुलवाना चाहा लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन्कार कर दिया। उन्हों ने दोबारा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ज़ख़्मी कर दिया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जिस्म और फ़र्श से ख़ून धो डाला और शाम तक दरवाज़े पर बैठे रहे। जब मालिक आया तो उसे कोई बात न बताई।

तीसरे दिन सब से बड़ी लड़की ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस ह़बशी गुलाम की क्या शान है कि यह मुझ से बहुत ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इत़ाअ़त गुज़ार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब मैं ज़रूर तौबा करूंगी।" यह कह कर उस ने अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली। फिर सब से छोटी ने कहा : "मेरी बहन और उस ह़बशी गुलाम की क्या शान है कि यह दोनों मुझ से बहुत ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करने वाले हैं, फिर मैं तौबा क्यूं न करूं ?" यह कह कर उस ने भी अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली। यह देख कर तीसरी ने कहा : "मेरी दोनों बहनों और ह़बशी गुलाम की क्या शान है कि वोह मुझ से बहुत ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त गुज़ार हैं। बस आज से मैं अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करती हूं।" यह कह कर वोह भी तमाम गुनाहों से ताइब हो गई। जब यह ख़बर बस्ती की दूसरी फ़ाह़िशा औ़रतों तक पहुंची तो उन्हों ने कहा : "फ़ुलां बिन फ़ुलां की तीनों बेटियों और उन के ह़बशी गुलाम की क्या शान है कि वोह हमारी निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा इत़ाअ़त गुज़ार हैं, फिर हम भी तौबा क्यूं न करें ?" यह कह कर उन सब ने भी अपने साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा कर ली और इ़बादत व रियाज़त में आ'ला मक़ाम ह़ासिल किया।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत से षाबित हुवा कि नेक लोगों की सोह़बत और उन का क़ुर्ब इन्सान को नेक बनाने में मुआ़विन षाबित होता है। अच्छों के आ'माले सालिह़ा का नूर बुरों की बुराई की ज़ुल्मत को दूर कर देता है। हमें चाहिये कि नेक लोगों की

सोह़बत इख़्तियार करें, नेक लोगों के इजतिमाअ़ में जाएं ताकि हमारी खाली झोलियां ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दौलते उ़ज़्मा से भर जाएं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه आज के इस पुर फ़ितन दौर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** हमें ऐसा पाकीज़ा माह़ोल फ़राहम करती है कि जिस में रह कर नेकियां करना आसान हो जाता है, गुनाहों से नफ़रत और नेकियों से मह़ब्बत होने लगती है, आप भी अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे "**मक्तबतुल मदीना**" से मदनी इन्आ़मात नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ इन्क़िलाब बरपा होता देखेंगे।)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में — ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो (आमीन)!

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 474 ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तक़्वा

ह़ज़रते सय्यिदुना **जुमैअ़ बिन उ़मैर तैमी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को इरशाद फ़रमाते सुना : "एक मरतबा माले ग़नीमत से चालीस (40) हज़ार दिरहम मेरे ह़िस्से में आए, मैं ने सामान ख़रीदा और मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में अपने वालिदे मोह़तरम, ख़लीफ़ए षानी, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सामान देख कर पूछा : "येह क्या है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे माले ग़नीमत से चालीस हज़ार दिरहम मिले येह सामान उसी रक़म से ख़रीदा है।" फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! अगर मुझे आग की त़रफ़ ले जाया जाए तो क्या तुम येह सामान फ़िदये में दे कर मुझे बचा लोगे ?" मैं ने कहा : "क्यूं नहीं ! बल्कि मैं अपना सब कुछ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क़ुरबान कर दूंगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरे बेटे ! बेशक मैं झगड़े में फंसा हुवा हूं, लोगों ने येह समझ कर कि येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबी और अमीरुल मोअमिनीन के लाडले बेटे हैं, तुम्हें सस्ते दामों सामान बेच दिया हो और हो सकता है एक दिरहम नफ़्अ़ लेना भी पसन्द न किया हो। मेरे बेटे ! सुनो ! अ़नक़रीब मैं तुम्हें ऐसा नफ़्अ़ दूंगा कि किसी क़ुरैशी मर्द से ऐसा नफ़्अ़ न मिला होगा।"

येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आए और कहा : "ऐ अबू उ़बैद की बेटी ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि तुम अपने घर से कोई चीज़

न निकालोगी ।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल बे फ़िक्र रहें, मैं वोही करूंगी जो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाएंगे ।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''चन्द दिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मुआ़मले को छोड़े रखा । फिर ताजिरों को बुलाया तो उन्हों ने चार लाख (4,00,000) दिरहम में वोह सामान ख़रीद लिया । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अस्सी हज़ार (80,000) दिरहम मुझे दिये और बक़िय्या तीन लाख बीस हज़ार (3,20,000) दिरहम ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ भिजवाए और पैग़ाम दिया कि येह माल उन लोगों में तक़्सीम कर दिया जाए जो जिहाद में शरीक हुवे, अगर उन में से कोई फ़ौत हो गया हो तो उस के वुरषा में तक़्सीम कर दिया जाए ।''

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم﴿

हिकायत नम्बर : 475 कुत्ते ने मालिक की जान कैसे बचाई ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : बसरा का एक शख़्स अपने इन्तिहाई गहरे दोस्त और सगे भाई के साथ कहीं सफ़र पर जाने लगा तो उस का पालतू कुत्ता भी पीछे पीछे चल पड़ा । उस ने कुत्ते को भगाया लेकिन वोह साथ साथ चलता रहा, उस ने गुस्से में आ कर पथ्थर मारा, कुत्ता ज़ख़्मी हो गया मगर साथ न छोड़ा । फिर जब वोह शख़्स एक बस्ती के क़रीब से गुज़रा तो दुश्मनों ने उसे पकड़ लिया । येह देख कर उस का दोस्त और भाई उसे दुश्मनों के पास ही छोड़ कर भाग गए । उन्हों ने उसे ख़ूब मारा और ज़ख़्मी कर के एक कुंवें में डाल कर ऊपर से मिट्टी बराबर कर दी । कुत्ता उन पर मुसलसल भोंकता रहा, उन्हों ने कुत्ते को भी ज़ख़्मी किया और वापस चले गए । कुत्ते ने कुंवें के पास आ कर अपने पंजो से मिट्टी हटाना शुरूअ़ कर दी । बिल आख़िर मुसलसल जिद्दो जहद के बा'द उस शख़्स का सर ज़ाहिर हुवा, उस में अभी ज़िन्दगी के आषार बाक़ी थे । कुत्ता उस के मुंह तक मिट्टी साफ़ कर चुका था इतने में वहां से एक क़ाफ़िला गुज़रा जब उन्हों ने कुत्ते को देखा तो समझे कि शायद येह क़ब्र खोद रहा है । मगर जब क़रीब आए तो ह़क़ीक़ते ह़ाल जान कर बहुत ह़ैरान हुवे । उस शख़्स को देखा तो ज़िन्दगी के आषार बाक़ी थे । उन्हों ने उसे फ़ौरन निकाल कर उस के घर पहुंचा दिया । जिस कुंवें में उसे डाला गया था अब वोह कुंवां ''**बिरुल कल्ब**'' के नाम से मशहूर है । किसी शाइर ने इस वाक़िए को अपने शे'र में इस त़रह़ बयान किया :

ے يُعَرِّجُ عَنْهُ جَارُهُ وَشَقِيقُهُ   وَيَنْبُشُ عَنْهُ كَلْبُهُ وَهُوَ ضَارِبُهُ

तर्जमा : उस का सगा भाई और पड़ोसी उसे छोड़ जाते हैं जब कि उस का कुत्ता उसे ज़मीन खोद कर निकालता है ह़ालांकि वोह (कुत्ते को) मारने वाला है ।

हिकायत नम्बर : 476 ## जां निषार कुत्ते की क़ब्र

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ख़ल्लाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد से मन्क़ूल है : एक शख़्स किसी बादशाह से मिलने जा रहा था कि रास्ते में उसे एक क़ब्र नज़र आई जिस पर क़ुब्बा बना हुवा था। वोह क़रीब गया तो एक तख़्ती पर येह इबारत लिखी हुई थी : "येह एक कुत्ते की क़ब्र है जिसे येह पसन्द हो कि इस क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ जाने तो उसे चाहिये कि फ़ुलां बस्ती में चला जाए वहां उसे ख़बर देने वाला कोई न कोई मिल जाएगा।"

येह तह़रीर पढ़ कर वोह मत़लूबा बस्ती में गया तो लोगों ने उसे एक घर का पता बताया। जब वोह बताए हुवे मकान पर पहुंचा तो वहां सो साल से भी ज़ाइद उ़म्र का एक बुढ्ढा मिला। आने का मक़्सद बताया तो बुढ्ढे ने कहा : हां ! मैं तुझे उस क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ बताता हूं, ग़ौर से सुन ! हमारे इस अ़लाक़े में एक अ़ज़ीमुश्शान बादशाह हुकूमत करता था। उसे सैरो सियाह़त और शिकार का बहुत शौक़ था, उस का पालतू कुत्ता हर वक़्त उस के साथ रहता। बादशाह सुब्ह़ो शाम अपने खाने में से उसे खाना खिलाता। एक मरतबा बादशाह ने अपने ग़ुलाम से कहा : "बावरची से कहो कि हम शिकार के लिये जा रहे हैं हमारे लिये दूध में रोटियां डाल कर बेहतरीन षरीद तय्यार कर रखे हम वापसी पर वोही षरीद खाएंगे।" येह कह कर वोह शिकार के लिये चला गया। बावरची ने षरीद तय्यार किया और उस को किसी चीज़ से ढांपे बिग़ैर दूसरे कामों में मसरूफ़ हो गया। अचानक कहीं से एक ख़त़रनाक अज़्दहा आया, उस ने बरतन में मुंह डाल कर दूध पिया और अपने मुंह का ज़हर उस में उगल दिया। कुत्ते और गूंगी कनीज़ ने येह मन्ज़र देख लिया। और बाक़ी किसी को इस वाक़िए़ का इ़ल्म न हुवा। बादशाह ने वापसी पर खाना त़लब किया तो बावरची ने वोही ज़हर मिला षरीद सामने रख दिया। गूंगी कनीज़ ने इशारों से समझाने की कोशिश की, कि इस खाने में ख़त़रनाक अज़्दहे का ज़हर शामिल है, लेकिन कोई भी उस की बात न समझ सका। कुत्ता भोंक भोंक कर समझाने की कोशिश कर रहा था लेकिन कोई न समझा। बादशाह ने कुत्ते के सामने रोटी डाली लेकिन उस ने रोटी को मुंह तक न लगाया बल्कि मुसलसल भोंकता ही रहा। येह देख कर बादशाह ने कहा : "न जाने इसे क्या मस्अला है, इसे अपने ह़ाल पर छोड़ दो।" फिर जैसे ही बादशाह ने खाने की त़रफ़ हाथ बढ़ाया, कुत्ते ने एक लम्बी छलांग लगाई और वोही ज़हर मिला खाना खाने लगा, कुछ ही देर में उस ने तड़प तड़प कर जान दे दी। अब गूंगी कनीज़ ने इशारों से बताया तो सब लोग समझ गए कि इस दूध में अज़्दहे का ज़हर शामिल हो गया था अगर बादशाह इसे खा लेता तो फ़ौरन मर जाता। कुत्ते ने अपने मालिक को बचाने के लिये अपनी जान दे दी थी। बादशाह और वहां पर मौजूद तमाम लोग कुत्ते की वफ़ादारी पर बहुत हैरान हुवे। बादशाह ने अपने वज़ीरों, मुशीरों को मुख़ात़ब कर के कहा : "देखो ! इस बे ज़बान जानवर ने मुझ पर अपनी जान क़ुरबान कर दी। अब येह हमारी त़रफ़ से अच्छी जज़ा का मुस्तह़िक़ है,

इसे कोई भी हाथ न लगाए, मैं ख़ुद इसे उठाऊंगा और अपने हाथों से दफ़्न करूंगा।" चुनान्चे, बादशाह ने उस वफ़ादार कुत्ते के लिये एक क़ब्र खुदवाई और अपने हाथों से दफ़्न कर के उस की क़ब्र पर कुब्बा बना दिया जिसे तुम देख कर आ रहे हो। बुढ्ढे की ज़बानी वफ़ादार कुत्ते की कहानी सुन कर वोह शख़्स बहुत हैरान हुवा।

हि़कायत नम्बर : 477 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर जगह रिज़्क़ देता है

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन हुसैन बिन राशिद علیہ رحمۃ اللہ الواحد से मन्क़ूल है : एक शख़्स अपने कुत्ते की बहुत ज़ियादा देख भाल किया करता, सर्दियों में उसे उ़म्दा चादर में छुपाता और बेहतरीन अश्या खिलाता। मैं ने उस से पूछा : "तुम इस कुत्ते की इतनी देख भाल क्यूं करते हो ?" कहा : "मेरे इस कुत्ते ने मुझे बहुत बड़ी मुसीबत से नजात दिलवाई है। सुनो ! मेरा एक इन्तिहाई गहरा दोस्त था, हम ने काफ़ी अ़र्से तक एक साथ तिजारत की। एक मरतबा जिहाद से वापसी पर मेरे पास बहुत ज़ियादा माले ग़नीमत और बहुत ही क़ीमती सामान था। रास्ते में उस बे वफ़ा दोस्त ने मुझे रस्सियों से बांध कर एक वादी में फेंक दिया और मेरा सारा माल ले कर फ़रार हो गया। मेरा येह कुत्ता भी मेरे साथ था येह उस वादी में मेरे साथ ही बैठा रहा। फिर कहीं चला गया जब वापस आया तो इस के पास एक रोटी थी, इस ने वोह रोटी मेरे सामने रख दी। मैं रोटी खा कर और गढ़े से पानी पी कर वहीं पड़ा रहा। कुत्ता भी सारी रात मेरे क़रीब ही बैठा रहा। सुब्ह़ बेदार हुवा तो कुत्ता नज़र न आया, अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि येह मेरे लिये रोटी ले आया। तीसरे दिन भी येह इसी त़रह़ रोटी लाया और मेरी त़रफ़ फेंक दी, जैसे ही मैं ने रोटी खाने के लिये हाथ बढ़ाया तो मेरे पीछे मेरा बेटा मौजूद था। वोह मुझे इस ह़ालत में देख कर रो रहा था, उस ने रोते हुवे मेरी रस्सियां खोलीं और ह़क़ीक़ते ह़ाल दरयाफ़्त की। मैं ने सारा वाक़िआ़ बताया और पूछा : "तुझे कैसे मा'लूम हुवा कि मैं यहां हूं।" मेरे बेटे ने कहा : "येह कुत्ता हमारे पास आता तो हम ह़स्बे आ़दत इसे रोटी डाल देते। अब की बार जब येह हमारे पास आया तो आप इस के साथ न थे, हमें बड़ी तश्वीश हुई। जब हम ने इसे रोटी डाली तो इस ने उसे खाया नहीं बल्कि उठा कर एक त़रफ़ चल दिया। दूसरे दिन भी इसी त़रह़ हुवा हम बहुत ह़ैरान हुवे। आज जब येह रोटी ले कर आने लगा तो मैं इस के पीछे पीछे चला आया और इस त़रह़ मुझे आप तक पहुंचने की राह मिली।" फिर हम सब अपने घर आ गए। अब मुझे येह कुत्ता अपने अ़ज़ीज़ो और दोस्तों से भी ज़ियादा प्यारा है क्यूंकि इस की वजह से मैं मौत के मुंह से निकल आया हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस त़रह़ चाहता है अपने बन्दों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। वोह ह़कीम व मेहरबान है।

हिकायत नम्बर : 478 बेवफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र हुज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى का बयान है : एक मरतबा हम हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के पास हाज़िर थे इतने में एक शख़्स आया और कहने लगा : ऐ अबू सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيد अभी कुछ देर क़ब्ल हम अ़ब्दुल्लाह बिन अहतम के पास गए, उस का आख़िरी वक़्त था। हम ने पूछा : "ऐ अबू मा'मर ! अपने आप को कैसा मह़सूस कर रहे हो ?" कहा : "ब ख़ुदा मैं अपने आप को बहुत मुसीबत ज़दा मह़सूस कर रहा हूं और मेरा गुमान है कि शायद ! अब ज़िन्दा न बच सकूं, अच्छा ! येह बताओ कि उन एक लाख दराहिम के बारे में तुम क्या कहते हो जो मैं ने जम्अ़ कर रखे हैं ? न तो उन की ज़कात अदा की गई और न ही किसी क़रीबी रिश्तेदार पर ख़र्च किये गए।" हम ने कहा : "ऐ अबू मा'मर ! तुम ने येह दिरहम क्यूं जम्अ़ किये थे ?" कहा : "गर्दिशे अय्याम, अहलो इ़याल की कषरत और बादशाह की त़रफ़ से जफ़ाकशी के ख़ौफ़ से जम्अ़ कर रखे थे।" उस शख़्स की येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "उस ग़मज़दा परेशान शख़्स को देखो जिस के पास से येह आ रहा है। दर अस्ल उस मरने वाले के पास शैत़ान आया और उसे बादशाह की त़रफ़ से जफ़ाकशी, अहलो इ़याल की कषरत और गर्दिशे अय्याम का ख़ौफ़ दिलाया और ख़ौफ़ भी उस चीज़ के बारे में कि जो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस के लिये मुक़र्रर फ़रमा दी है और इस दुन्या में उस की मुद्दते ह़यात भी मुक़र्रर फ़रमा दी है। बख़ुदा ! वोह शख़्स इस दुन्या से इस ह़ाल में जाएगा कि ग़मगीन, मुसीबत ज़दा, मलामत किया हुवा और परेशान ह़ाल होगा।

तवज्जोह से सुन ! तू उस दुन्या से हरगिज़ धोका न खाना जिस त़रह़ कि तेरा मरने वाला दोस्त धोका खा चुका। तेरे पास ह़लाल माल पहुंचा है, माल के फ़ितने से बचते रहना ऐसा न हो कि येह तेरे लिये वबाले जान बन जाए। याद रख ! जो शख़्स माल जम्अ़ करने में लगा रहे और कन्जूसी से काम ले, दिन रात माल जम्अ़ करने की तदबीर में मुसीबत भरे सफ़र और हर त़रह़ का दुख बरदाश्त करे फिर माल को संभाल कर गिन गिन कर रखे, न उस की ज़कात अदा करे, न किसी रिश्तेदार पर ख़र्च करे तो वोह शख़्स ह़सरत ज़दों में होगा। और सब से बड़ी ह़सरत येह है कि कल बरोज़े क़ियामत जब आ'माल का वज़्न किया जा रहा हो तो वोह अपने माल को दूसरे के तराज़ू में देखे। क्या तुम जानते हो कि ऐसा मुआ़मला कब होता है ? सुनो ! येह सब वबाल इस त़रह़ होता है कि इन्सान को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهُ अपने ख़ज़ानों में से माल देता और अपनी राह में ख़र्च करने का हुक्म देता है लेकिन इन्सान कन्जूसी व बुख़्ल से काम लेता और माल जम्अ़ करता रहता है यहां तक कि उसे मौत उचक लेती है और उस का सारा माल वारिष ले जाते हैं, इस त़रह़ वोह अपने माल को ग़ैर के तराज़ूं में देखता है या उसे ऐसी ठोकर लगती है कि संभलना बहुत मुश्किल हो जाता है और तौबा की दौलत भी उस के हाथ से जाती रहती है और वोह ह़सरत ज़दा तौबा जैसी दौलत से भी मह़रूम रहता है।"

(हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आफ़िय्यत त़लब करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें माल के वबाल से बचाए। नेकी के कामों में दिल खोल कर ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। बुख़्ल जैसी ख़त़रनाक बीमारी से हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमारा ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हिकायत नम्बर : 479 फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्साफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा हम अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर थे कि इतने में एक मिस्री शख़्स आया और कहा : "मैं अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पनाह चाहता हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या हुवा ? बिला ख़ौफ़ो झिजक बयान करो।" कहा : "हमारे गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ने मुझे कोड़े मारे हैं और कहा है कि तुम मेरा मुक़ाबला करते हो ? ह़ालांकि मैं दो करीमों का बेटा हूं।" ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी उस मिस्री ने अपनी बात मुकम्मल भी न की थी कि अमीरुल मोअमिनीन ने फ़ौरन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़त़ लिखा : "ऐ अ़म्र बिन आ़स ! जैसे ही मेरा येह ख़त़ तुम्हारे पास पहुंचे फ़ौरन अपने बेटे को ले कर मेरे पास पहुंचो, इस काम में ताख़ीर हरगिज़ नहीं होनी चाहिये।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़त़ मिला तो उन्हों ने अपने बेटे को बुला कर पूछा : "क्या तुम किसी ग़ैर क़ानूनी काम या किसी जुर्म के मुर्तकिब हुवे हो ?" बेटे ने कहा : "ऐसी कोई बात नहीं।" फ़रमाया : "फिर अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तुझे क्यूं बुलाया है ?"

बहर ह़ाल येह दोनों बारगाहे ख़िलाफ़त में पहुंचे। जब अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे को देखा तो फ़रमाया : "वोह मिस्री शख़्स कहां है ? उसे हमारे पास बुलाओ।" हुक्म पाते ही वोह शख़्स आ गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे कोड़ा पकड़ाते हुवे फ़रमाया : "दो करीमों के बेटे को मारो ! दो करीमों के बटे को मारो।" मिस्री ने उसे इतने कोड़े मारे कि वोह शदीद ज़ख़्मी हो गया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर फ़रमाया : "**तुम ने कब से इन्सानों को ग़ुलाम बनाना शुरूअ़ कर दिया है ह़ालांकि उन की माओं ने तो उन्हें आज़ाद जना है।**" फिर मिस्री शख़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : "जब भी तुम्हें कोई तंग करे तुम मुझे ख़त़ लिख देना।"

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

हिकायत नम्बर : 480

शाहे ईरान का लिबास

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र عليه رحمة الله الاكبر से मन्क़ूल है कि जंगे क़ादिसिय्या के बा'द हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अमीरुल मोअमिनीन, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رضی اللہ تعالٰی عنہ की त़रफ़ किस्रा (या'नी ईरान के बादशाह) की तल्वार, क़मीस, ताज, पटका और दीगर अश्या भेजीं। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने लोगों की त़रफ़ देखा तो उन में हज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक बिन जुअ़शुम मुदलिजी رضی اللہ تعالٰی عنہ भी मौजूद थे, वोह बहुत त़ाक़तवर और त़वीलुल क़ामत थे। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "ऐ सुराक़ा ! उठो और येह लिबास पहन कर दिखाओ।" हज़रते सय्यिदुना सुराक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते है : "मेरे दिल में पहले ही ख़्वाहिश थी। चुनान्चे, मैं खडा हुवा और शाहे ईरान का लिबास पहन लिया।" अमीरुल मोअमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मुझे देखा तो फ़रमाया : "अब दूसरी जानिब मुंह करो।" मैं ने ऐसा ही किया। फ़रमाया : "अब मेरी त़रफ़ मुंह करो।" मैं आप की त़रफ़ मुड़ गया तो फ़रमाया : "वाह भई वाह ! क़बीलए मुदलिज के इस जवान की क्या शान है ! देखो तो सही, शाहे ईरान का लिबास पहन कर, उस की तल्वार गले में लटका कर कैसा लग रहा है ! ऐ सुराक़ा ! अब जिस दिन तू ने शाहे ईरान का लिबास पहना वोह दिन तेरे लिये और तेरी क़ौम के लिये शरफ़ वाला तसव्वुर किया जाएगा, अच्छा ! अब येह लिबास उतार दो।" फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ बारगाहे ख़ुदावन्दी عزوجل में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे :

"ऐ मेरे पाक परवर दगार عزوجل तू ने अपने नबी व रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہٖ وسلم को इस (दुन्यवी माल) से मन्अ़ फ़रमाया, ह़ालांकि वोह तेरी बारगाह में मुझ से कहीं ज़ियादा मह़बूब हैं और मुझ से बहुत ज़ियादा बुलन्दो बाला हैं। फिर तू ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को भी इस (माल) से मन्अ़ फ़रमाया, ह़ालांकि वोह तेरी बारगाह में मुझ से ज़ियादा मर्तबे वाले हैं। फिर तू ने मुझे माल अ़त़ा फ़रमा दिया। ऐ मेरे पाक परवर दगार عزوجل अगर तेरी त़रफ़ से येह ख़ुफ़्या तदबीर है तो मैं इस से तेरी पनाह चाहता हूं।"

येह कह कर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ से फ़रमाया : "शाम से क़ब्ल इस तमाम माल को ग़ुरबा में तक़्सीम कर दो।"

अल्लाह عزوجل की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہٖ وسلم

हिकायत नम्बर : 481 ख़लीफ़ा को नेकी की दा'वत

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन अ़ब्दुर्रहमान बग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है : मैं ने सईद बिन सुलैमान को येह कहते सुना : "एक मरतबा मैं हज के पुर बहार मौसिम में मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में था। मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उ़मरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से हुई। ख़लीफ़ए वक़्त, ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد भी उस साल हज के लिये आए हुवे थे। एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उ़मरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के पास आया और कहने लगा : "ऐ अ़ब्दल्लाह ! अमीरुल मोअमिनीन को देखिये उन्हों ने तमाम लोगों को **सफ़ा व मरवा** से दूर कर दिया है ताकि पहले खुद सई करें बा'द में दीगर लोग।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी त़रफ़ से तुझे अच्छी जज़ा न दे, तू ने मुझे ऐसे काम का मुकल्लफ़ बना दिया जिस से मैं बे नियाज़ था।" येह कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **सफ़ा** की त़रफ़ चल दिये। ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد मरवा से सफ़ा की त़रफ़ आ रहे थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पुकार कर कहा : "ऐ हारून ! ऐ हारून" ख़लीफ़ा ने जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा तो कहा : "ऐ चचा ! मैं ह़ाज़िर हूं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "जाओ ! ज़रा सफ़ा पर चढ़ो।" ख़लीफ़ा सफ़ा पर चढ़ गए तो फ़रमाया : "ज़रा ख़ानए का'बा की त़रफ़ देखो।" ख़लीफ़ा ने ख़ानए का'बा की त़रफ़ देखा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "बताओ ! कितने लोग मौजूद हैं ?" कहा : "इन्हें कौन शुमार कर सकता है ? फ़रमाया : "अच्छा ! येह बताओ इन जैसे और कितने इन्सान होंगे ?" कहा : "उन की सह़ीह़ ता'दाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई और कैसे जान सकता है ?"

फ़रमाया : "इन में से हर एक से उस की ज़ात के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया जाएगा और तुझ अकेले से इन तमाम के बारे में सुवाल किया जाएगा। ज़रा ग़ौर कर उस वक़्त तेरा क्या बनेगा ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की येह बात सुन कर ख़लीफ़ा ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने फ़रमाया : "ऐ ख़लीफ़ा ! मैं एक और बात कहना चाहता हूं।" ख़लीफ़ा ने कहा : "जो कहना है कह दीजिये।" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक जो शख़्स अपने माल में जल्दी करता है तो वोह (माल) उस से रोक दिया जाता है, तो जो मुसलमानों के माल में जल्दी करे तो उस का क्या ह़ाल होगा ?" येह कह कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वापस चले आए और ख़लीफ़ा वहीं बैठे रोते रहें। हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان कहते हैं, ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد कहा करते थे : "मैं हर साल हज करना चाहता हूं और मुझे कोई नहीं रोक सकता, लेकिन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अवलाद में से एक शख़्स ऐसा है, जिस की वजह से मैं अपनी येह ख़्वाहिश पूरी नहीं कर सकता, वोह मुझे ऐसी ऐसी बातें कहता है जो मेरे नफ़्स पर बहुत गिरां गुज़रती हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمين بجاه النبي الامين صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 482

मग़रूर बादशाह की मौत

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बहुत बड़ी सल्तनत के बादशाह ने इरादा किया कि मैं अपने सारे मुल्क का गश्त करूं। चुनान्चे, उस ने अपना बेहतरीन लिबास मंगवाया लेकिन वोह पसन्द न आया। फिर उस से उ़म्दा लिबास मंगवाया, लेकिन पसन्द न आया। बिल आख़िर सैंकड़ों लिबासों में से उसे अपनी पसन्द का जोड़ा मिल गया। फिर घोड़े लाए गए तो उन में से कोई घोड़ा पसन्द न आया आख़िरे कार हज़ारों घोड़ों में से उसे अपनी पसन्द का घोड़ा मिल गया। अब बादशाह बड़ी शानो शौकत से लश्कर के हमराह सफ़र पर रवाना हुवा, रास्ते में इब्लीसे लईन ने बहकाया तो ग़ुरूर व तकब्बुर की आफ़त में मुब्तला हो गया और गर्दन अकड़ाए बड़े शाहाना अन्दाज़ में आगे बढ़ने लगा। ग़ुरूरो तकब्बुर की वजह से लोगों की त़रफ़ नज़र उठा कर भी न देखता था। रास्ते में एक ज़ईफ़ व नातुवां शख़्स बोसीदा कपड़ों में नज़र आया, उस ने सलाम किया लेकिन बादशाह ने न तो जवाब दिया न ही उस की त़रफ़ देखा। उस ने कहा : "ऐ बादशाह ! मुझे तुझ से ज़रूरी काम है।" बादशाह ने उस की बात सुनी अन सुनी कर दी। उस ने आगे बढ़ कर घोड़े की लगाम पकड़ ली। बादशाह ने तिलमिला कर कहा : "लगाम छोड़ ! तू ने ऐसी ह़रकत की है कि तुझ से पहले किसी ने ऐसी जुरअत नहीं की।" कहा : "मुझे तुझ से बहुत ज़रूरी काम है।"

बादशाह ने कहा : "अभी तू हमारा मेहमान बन जा ! वापसी पर तेरी बात सुन लूंगा।" कहा : "हरगिज़ नहीं ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे अभी तुझ से काम है।" बादशाह ने कहा : "बता ! क्या काम है ?" कहा : "एक राज़ की बात है, मैं चाहता हूं कि सिर्फ़ तुझे ही मा'लूम हो, ला, अपना कान मेरे क़रीब कर।" बादशाह ने सर झुकाया तो उस ने कहा : "मैं **मलकुल मौत** (عَلَیْہِ السَّلَام) हूं, तेरी रूह़ क़ब्ज़ करने आया हूं।" येह सुनना था कि बादशाह मारे दहशत के थर थर कांपने लगा, रंग मुतग़य्यिर हो गया, उस ने ख़ौफ़ज़दा लहजे में कहा : "इस वक़्त मुझे कुछ मोहलत दे दो, ताकि मैं जिस काम से निकला हूं उसे पूरा कर आऊं, फिर तुम जो चाहे करना।" मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू अपनी सल्तनत को अब कभी न देख सकेगा।" बादशाह ने मिन्नत समाजत करते हुवे कहा : "अच्छा ! मुझे मेरे घर वालों के पास ही जाने की मोहलत दे दो।" मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : "हरगिज़ नहीं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तू कभी भी अपने अहलो इ़याल से न मिल सकेगा।" येह कह कर उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली और उस का बे जान जिस्म घोड़े से ज़मीन पर आ गिरा।

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं सामान सो बरस का पल की ख़बर नहीं
कूच हां ऐ बे ख़बर होने को है कब तलक ग़फ़्लत सह़र होने को है
जल्द आख़िरत बना ले कुछ नेकियां कमा ले कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ज़िन्दगी का

हज़रते सय्यिदुना जरीरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "फिर मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام एक नेक शख़्स के पास गए और सलाम किया, उस मर्दे सालेह़ ने जवाब दिया। मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने

फ़रमाया : ''मुझे तुम से ज़रूरी काम है।'' पूछा : ''बताइये ! क्या काम है ?'' कहा : ''राज़ की बात है।'' मर्दे सालेह़ ने अपना कान क़रीब किया तो उस ने कहा : ''मैं मलकुल मौत हूं, तेरी रूह़ क़ब्ज़ करने आया हूं।'' नेक शख़्स ने कहा : ''ख़ुश आमदीद उस के लिये जिस की जुदाई बहुत त़वील हो गई थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ से दूर रहने वाला कोई शख़्स नहीं जिस की मुलाक़ात मेरे नज़्दीक आप عَلَيْهِ السَّلَام की मुलाक़ात से अफ़्ज़ल हो।'' मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : ''अगर तुम्हारा कोई काम है तो उसे पूरा कर लो।'' कहा : ''आप के होते हुवे मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं और अल्लाह तबारक व तआ़ला की मुलाक़ात से बढ़ कर कोई शै मुझे मह़बूब नहीं।'' मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : ''जिस ह़ाल में अपनी मौत को पसन्द करते हो मुझे बता दो मैं उसी ह़ाल में तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करूंगा।'' नेक शख़्स ने कहा : ''क्या आप عَلَيْهِ السَّلَام को इस बात का इख़्तियार दिया गया है ?'' कहा : ''हां ! मुझे इसी त़रह़ हुक्म दिया गया है।'' नेक शख़्स ने कहा : ''फिर मुझे वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ने दो जब मैं सजदे में जाऊं तो मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर लेना।'' मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : ''ठीक है मैं ऐसा ही करूंगा।'' चुनान्चे, उस ने वुज़ू कर के नमाज़ शुरूअ़ कर दी। जब सजदा किया तो उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो आमीन بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}

जब तेरी याद में दुन्या से गया है कोई   जान लेने को दुल्हन बन के क़ज़ा आई है

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जिस ने आ'माले सालेह़ा के ज़रीए़ अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी ह़ासिल कर के सफ़रे आख़िरत की तय्यारी कर रखी हो उस के लिये मौत का फ़िरिश्ता नवीदे मसर्रत होता है, उस की बेक़रार रूह़ बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में सजदा रैज़ होने के लिये मचल रही होती है। इस के बर अ़क्स जिस ने मौत की तय्यारी न की हो, उसे मौत का पैग़ाम बहुत बड़ा अ़ज़ाब मा'लूम होता है। समझदार वोही है जो आ'माले सालेह़ा का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर के मौत से पहले मौत की तय्यारी कर ले। और येह दौलत अच्छे माहोल में रह कर ही ह़ासिल हो सकती हैं। मौत की तय्यारी का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी भी है। अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कीजिये। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** से मदनी इन्आ़मात नामी रिसाला ह़ासिल कर के उस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मदनी इन्क़िलाब बरपा होता देखेंगे।)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में   ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो ! (आमीन)

हिकायत नम्बर : 483 रिआ़या की ख़बरगीरी का अनोखा वाक़िआ़

हज़रते सय्यिदुना अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : मैं एक रात अमीरुल मोअमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ था। आबादी से बाहर आग की रोशनी नज़र आई, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم शायद वहां कोई क़ाफ़िला ठहरा हुवा है, आओ ! वहां चलते हैं, शायद ! किसी को कोई ह़ाजत हो।" वहां पहुंचे तो देखा कि एक औ़रत ने आग रोशन कर के देगची चुल्हे पर रखी हुई है और उस के क़रीब ही छोटे छोटे बच्चे बुलन्द आवाज़ से रो रहे हैं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : "ऐ रोशनी वालो[1] اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم औ़रत ने कहा : "ख़ैर व सलामती के साथ आ जाओ।" अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़रीब जा कर पूछा : "तुम्हारा क्या मुआ़मला है ?" औ़रत ने कहा : "रात और सर्दी की वजह से हम ने आग रोशन कर ली।" पूछा : "येह बच्चे क्यूं रो रहे हैं ?" कहा : "भूक की वजह से।" फ़रमाया : "इस देगची में क्या है ?" औ़रत ने ग़मगीन हो कर कहा : "हमारे पास खाने को कोई चीज़ नहीं, मैं ने देगची में पानी डाल कर चुल्हे पर रख दी है ताकि इसे देख कर बच्चों को कुछ सुकून मिले और वोह सो जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे और अमीरुल मोअमिनीन के दरमियान फ़ैसला करने वाला है। हमारे ख़लीफ़ा हज़रते उ़मर को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पूछेगा।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! उ़मर को क्या मा'लूम ! तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" कहा : "वोह हमारा ख़लीफ़ा हो कर भी हम से बेख़बर है ?"

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! तुम यहीं ठहरना, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं कुछ ही देर में वापस आता हूं।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه गोदाम में आए, एक बोरी में जव का आटा, चर्बी और घी वग़ैरा डाल कर मुझ से फ़रमाया : "ऐ अस्लम ! येह बोरी मेरी पीठ पर रखो।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! ग़ुलाम ह़ाज़िर है, येह बोरी मैं उठाऊंगा।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मेरी त़रफ़ देख कर फ़रमाया : "जो कहा जा रहा है उस पर अ़मल करो और बोरी मेरी पीठ पर लाद दो।" मैं ने कहा : "हुज़ूर ! मैं उठा लेता हूं।" फ़रमाया : "क्या क़ियामत के दिन भी तू मेरा वज़्न उठा कर चलेगा ? जल्दी कर येह बोरी मेरी पीठ पर रख दे।" मैं ने न चाहते हुवे भी बोरी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की पीठ पर रख दी। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه चले और औ़रत के पास पहुंच कर बोरी उतार कर ज़मीन पर रख दी। फिर जव का आटा, चर्बी और दीगर अश्या हांडी में डाल कर ख़ुद ही उसे हिलाते रहे और ख़ुद ही चुल्हे में फूंक मारते रहे। मैं ने देखा कि उम्मते मुस्लिमा का अ़ज़ीम ख़लीफ़ा, एक ग़रीब व बे सहारा औ़रत और उस के बच्चों के लिये अपने हाथों से खाना तय्यार

1....येह जुम्ला आप की कमाले फ़साह़त पर दलालत करता है, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन को يَا اَصْحَابَ النَّار या'नी ऐ आग वालो ! न कहा बल्कि يَا اَصْحَابَ الضَّوْء या'नी ऐ रोशनी वालो ! कहा।

कर रहा है। और धूवां उस की घनी दाढ़ी से गुज़र रहा है। मैं हैरत की तस्वीर बने येह मन्ज़र देख रहा था। जब खाना तय्यार हो गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने हाथ से बरतन में डाला और उसे ठन्डा करते हुवे कहा : "ज़ियादा गर्म खाना बच्चों को नुक़्सान देगा।" जब खाना ठन्डा हो गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं तुम्हें खाना ठन्डा कर के देता हूं, अब तुम अपने नन्हे मुन्ने बच्चों को खिलाओ और खुद भी खाओ।" अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने हाथों से उन्हें खाना देते रहे यहां तक कि वोह सब सैर हो गए। फिर औ़रत ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए ! तू अमीरुल मोअमिनीन से ज़ियादा ख़िलाफ़त का ह़क़दार है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! अमीरुल मोअमिनीन के बारे में अच्छा कलाम कर और अच्छा गुमान रख। तू जब भी अमीरुल मोअमिनीन के पास आएगी मुझे वहीं पाएगी मैं ज़रूर तेरी सिफ़ारिश करूंगा।" औ़रत को मा'लूम न था कि अमीरुल मोअमिनीन उस के सामने मौजूद है। उस ने पूछा : "ऐ नेक दिल इन्सान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़म फ़रमाए, तू कौन है ?" वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुआ़एं देती रही और पूछती रही, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे अपने मुतअ़ल्लिक़ कुछ न बताया फिर कुछ दूर जा कर चोपायों की त़रह़ चार ज़ानूं बैठ गए और ऐसी आवाज़ें निकालने लगे कि बच्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर खुश हो गए।

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ह़ालत देखी तो मुतअ़ज्जिब हो कर कहा : "ऐ मुसलमानों के अ़ज़ीम ख़लीफ़ा ! आप की शान इस से बहुत ज़ियादा बुलन्द है, येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कैसी ह़ालत बना ली है ?" फ़रमाया : "ख़ामोश हो जाओ ! मैं ने इन नन्हे मुन्ने बच्चों को भूक से रोता देखा था अब मुझे उस वक़्त तक सुकून नहीं मिलेगा जब तक इन्हें हंसता न देख लूं।" बच्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब आ कर खेलने और हंसने लगे, उन का दिल खुश हो गया। फिर जब वोह सो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। फिर फ़रमाया : "ऐ अस्लम ! भूक ने इन बच्चों को रुला दिया था, इन को रोता देख कर मैं ने तहिय्या कर लिया था कि मैं उस वक़्त तक न जाऊंगा जब तक इन्हें हंसता न देख लूं। अब मेरे दिल को सुकून मिल गया। आओ ! वापस चलें।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

नहीं ख़ुशबख़्त मोह़ताजाने आ़लम में कोई हम सा
मिला तक़्दीर से ह़ाजत रवा फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ عنہ सा
मुराद आई, मुरादें मिलने की प्यारी घड़ी आई
मिला ह़ाजत रवा हम को दरे सुल्ताने आ़लम सा
तेरे जूदो करम का कोई अन्दाज़ा करे क्यूं कर
तेरा इक इक गदा फ़ैज़ो सख़ावत में है ह़ातिम सा

(**प्यारे इस्लामी भाइयो** ! इस्लाम और इस के मानने वाले सब से आ'ला हैं, रूए ज़मीन पर ख़ैरख़्वाही की ऐसी अ़ज़ीम मिषाल इस्लाम के इ़लावा और किसी मज़हब में हरगिज़ न मिलेगी। मुसलमानों के इ़लावा काइनात में ऐसा तारीख़ी वाक़िआ़ कहीं न मिलेगा कि बादशाह हो

कर खुद ही अपनी कमर पर बोरी लादे और फिर एक ग़रीब औ़रत और उस के बच्चों की दिलजूई के लिये अपने आप को उन के लिये सुवारी बनाए। येह सब ख़ूबियां सिर्फ़ और सिर्फ़ मुसलमानों को ह़ासिल हैं। दीने इस्लाम ही ऐसी आ़जिज़ी व तवाज़ोअ़ और अ़द्लो इन्साफ़ का हुक्म देता है। येह सब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'लीमो तर्बिय्यत का नतीजा है कि गुलशने इस्लाम में ख़ुलफ़ाए राशिदीन जैसे गुले बे मिषाल खिले, जिन्हों ने अपनी ख़ुश्बू से सारे आ़लम को महका दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर करोड़हा करोड़ रह़मत हो और इन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

हि़कायत नम्बर : 484 एक मज़्लूम की हि़क्मत भरी बातें

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ख़िज़्र عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر अपने वालिद के ह़वाले से बयान करते हैं : मुझे एक हाशिमी ने बताया कि एक मरतबा मैं ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर के दरबार में था। वोह लोगों की फ़रयादें सुन कर उन के लिये अह़कामात जारी कर रहा था। इतने में एक शख़्स आया और कहा : "ऐ अमीर ! यक़ीनन मुझ पर ज़ुल्म किया गया है, मैं चाहता हूं कि अपने ऊपर किये जाने वाले ज़ुल्म को बयान करने से पहले आप के सामने एक मिषाल पेश करूं।" अमीर ने कहा : "जो कहना चाहते हो कहो।"

कहा : "अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ के कई त़बके़ बनाए और उन्हें मुख़्तलिफ़ मरातिब में रखा। जब बच्चा पैदा होता है तो अपनी मां के इ़लावा न तो किसी को पहचानता है न ही किसी और से कोई चीज़ त़लब करता है। अगर उसे ख़ौफ़ मह़सूस हो तो मां की आग़ोश में आ जाता है। जब कुछ बड़ा होता है तो बाप को पहचानता है, अगर कोई उसे तंग करे या डराए तो अपने बाप की पनाह लेता है। फिर जब बालिग़ व मुस्तह़्कम हो जाता है और उसे कोई चीज़ डराती या नुक़्सान पहुंचाती है तो वोह अपने बादशाह की त़रफ़ रुजूअ़ करता और ज़ालिम के ख़िलाफ़ बादशाह की मदद चाहता है। अगर बादशाह ख़ुद उस पर ज़ुल्म करे तो वोह तमाम जहानों के ख़ालिक़ो मालिक, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस्तिग़ाषा करता और उस की पनाह चाहता है। ऐ अमीर ! बेशक मैं भी मख़्लूक़ के इन्हीं त़बक़ों में शामिल हूं। **इब्ने नहीक** ने मेरी ज़मीन के मुआ़मले में मुझ पर ज़ुल्म किया है। अगर आप मेरी मदद करेंगे तो बहुत बेहतर, वरना ! मैं अपना मुक़द्दमा, ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُہٗ की बारगाह में पेश कर दूंगा। अब आप की मरज़ी चाहें तो मेरी मदद फ़रमाएं या मुझे छोड़ दें।" उस शख़्स की येह हि़क्मत भरी बातें सुन कर मन्सूर ने कहा : "अपना कलाम दोहराओ।" उस शख़्स ने दोबारा इसी त़रह़ बयान किया, तो अबू जा'फ़र ने कहा : "सुनो ! सब से पहले तो मैं इब्ने नहीक को मा'ज़ूल करता हूं और उसे हुक्म देता हूं कि वोह जल्द अज़ जल्द तुम्हारी ज़मीन तुम्हें वापस कर दे।"

ह़िकायत नम्बर : 485 मुक़र्रबीन की आ़जिज़ी

ह़िशाम बिन कल्बी से मन्क़ूल है : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम और ह़ज़रते सय्यिदुना औस رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْهِمَا नो'मान बिन मुन्ज़िर के पास तशरीफ़ ले गए। नो'मान बिन मुन्ज़िर ने दोनों को अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा मकानात में ठहराया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को बुला कर कहा : "आप दोनों में से अफ़्ज़ल कौन है ? मैं उसे कुछ इन्आ़मात देना चाहता हूं।" फ़रमाया : "ऐसी बात करना आप के लिये जाइज़ नहीं, क्या आप मुझे "**ह़ज़रते औस**" के बराबर शुमार करते हैं ? वोह तो बहुत अ़ज़ीम इन्सान हैं, उन का सब से कम उ़म्र बेटा भी मुझ से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है।" फिर नो'मान बिन मुन्ज़िर ने तोह़फ़े तह़ाइफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना औस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास भिजवा दिये। फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को बुला कर पूछा : "बताइये ! आप दोनों में से अफ़्ज़ल कौन है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना औस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तड़प कर कहा : "क्या तुम मुझे और ह़ज़रते ह़ातिम को बराबर शुमार करते हो ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी और मेरी अवलाद की मिल्किय्यत में जो माल है, अगर हम सब कुछ ख़र्च कर डालें तब भी ह़ज़रते ह़ातिम के मर्तबे को नहीं पहुंच सकते।" येह सुन कर नो'मान बिन मुन्ज़िर ने दोनों ह़ज़रात को अपने सामने बुला कर कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि मैं ने आप दोनों को मुअ़ज़्ज़म, करीम और सरदार जाना है और आप दोनों ही क़ाबिले ता'ज़ीम हैं।" येह कह कर उस ने दोनों को इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 486 मौत की याद

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَاكِم फ़रमाते हैं : एक मरतबा मुल्के रूम से कुछ क़ासिद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِیْر के पास आए तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "जब तुम लोग किसी को अपना बादशाह बनाते हो तो उस का क्या ह़ाल होता है ?" कहा : "जब हम किसी को अपना बादशाह बनाते हैं तो उस के पास एक गौरकन (या'नी क़ब्र खोदने वाला) आ कर कहता है : ऐ बादशाह ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी इस्लाह़ फ़रमाए ! जब तुझ से पहला बादशाह तख़्त नशीन हुवा तो उस ने मुझे हुक्म दिया : "मेरी क़ब्र इस इस त़रह़ बनाना और मुझे इस त़रह़ दफ़्न करना। चुनान्चे, क़ब्र तय्यार कर ली गई। फिर उस के पास कफ़न फ़रोश आ कर कहता है : ऐ बादशाह ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी इस्लाह़ फ़रमाए ! जब तुझ से पहला बादशाह तख़्त नशीन हुवा तो उस ने मरने से क़ब्ल ही अपना कफ़न, ख़ुश्बू और काफ़ूर वग़ैरा ख़रीद लिया फिर कफ़न को ऐसी जगह लटका दिया गया जहां हर वक़्त नज़र पड़ती रहे और मौत की याद आती रहे। ऐ मुसलमानों के अमीर ! हमारे बादशाह तो इस त़रह़ मौत को याद करते हैं।"

रूमी क़ासिद की येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَدِيۡر ने फ़रमाया : "देखो ! जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मिलने की उम्मीद भी नहीं रखता वोह मौत को किस त़रह़ याद करता है, उसे भी मौत की कितनी फ़िक्र है ?" इस वाक़िए़ के बा'द आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه बहुत ज़ियादा बीमार हो गए और इसी बीमारी की ह़ालत में आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه का इन्तिक़ाल हो गया।

{अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمين بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم}

हिकायत नम्बर : 487 कनीज़ की मह़ब्बत में हाथ जला डाला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास बिन अ़त़ा رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से मन्क़ूल है : एक ह़सीनो जमील नौजवान मेरे ह़ल्क़ए दर्स में आ कर बैठा करता, उस का एक हाथ हमेशा कपड़े से ढका रहता। एक दिन ख़ूब बारिश हुई और हमारे ह़ल्क़ए दर्स में उस नौजवान के इलावा कोई न आया। मैं ने दिल में कहा कि आज इस के हाथ के बारे में ज़रूर पूछूंगा। पहले तो मैं अपने इस ख़याल को दफ़्अ़ करता रहा, लेकिन मुझ से रहा न गया तो बिल आख़िर मैं ने पूछ ही लिया : "ऐ नौजवान ! तुम्हारे हाथ को क्या हुवा ?" कहा : "मेरा वाक़िआ़ बहुत अ़जीबो ग़रीब है।" मैं ने कहा : "तुम बयान करो।" कहा : "मैं फुलां बिन फुलां हूं, मेरे वालिद ने इन्तिक़ाल के बा'द मेरे लिये तीस (30) हज़ार दीनार छोड़े थे, मैं उन से कारोबार करता रहा। फिर मैं एक कनीज़ की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हुवा और उसे छे हज़ार दीनार में ख़रीद लिया। जब उसे घर लाया तो उस ने कहा : "मुझे रूए ज़मीन पर तुझ से ज़ियादा नापसन्द कोई नहीं, तू मुझे मेरे साबिक़ा मालिक की त़रफ़ लौटा दे, जब मैं तुझ से इन्तिहाई बुग़्ज़ रखती हूं तो इस ह़ालत में तू मुझ से फ़ाइदा नहीं उठा सकता।" मैं ने उसे समझाने की ख़ूब कोशिश की, हर त़रह़ की राह़त व ऐ़श का सामान उसे मुहय्या किया, लेकिन वोह मेरी त़रफ़ बिल्कुल भी मुतवज्जेह न हुई, मैं जितना उस से प्यार करता वोह उतनी ही नफ़रत से पेश आती। उस के इस रविय्ये से मेरा दिल ग़मगीन हो गया, मैं किसी भी क़ीमत पर उसे दूर नहीं करना चाहता था। मैं दिन रात उस के ख़यालों में गुम रहने लगा। मेरी येह ह़ालत देख कर मेरी एक उ़म्र रसीदा ख़ादिमा ने कहा : "तू इस के ग़म में अपनी जान क्यूं देता है ? इस कनीज़ को एक कमरे में बन्द कर दे, कुछ ही दिनों में इस के होश ठिकाने आ जाएंगे।"

चुनान्चे, कनीज़ को एक अ़लाह़िदा कमरे में भिजवा दिया गया। अब उस की येह ह़ालत थी कि न कुछ खाती, न पीती बस हर वक़्त रोती ही रहती, उस का जिस्म निहायत कमज़ोर हो गया, ऐसा लगता था कि अब वोह इन्तिक़ाल कर जाएगी। मैं रोज़ाना उस के पास जा कर उसे ख़ुश करने की कोशिश करता, लेकिन वोह मेरी किसी बात का जवाब न देती। चार दिन बा'द मैं ने

कहा : "अगर कोई चीज़ खाने को जी चाह रहा है तो बताओ।" खिलाफ़े तवक्क़ोअ़ वोह मेरी जानिब मुतवज्जेह हुई और कहा : "मैं दल्या खाना चाहती हूं।" मैं उस के कलाम से खुश हुवा और क़सम खा ली कि मैं अपने हाथों से दल्या तय्यार करूंगा। चुनान्चे, मैं ने आग जलाई और देगची में आटा वग़ैरा डाल कर अपने हाथ से पकाने लगा। वोह कनीज़ मेरे क़रीब आ कर बैठ गई और अपनी बीमारी और ग़म के मुतअ़ल्लिक़ मुझे बताने लगी। मैं उस की बातों में ऐसा मगन हुवा कि आग ने मेरा सारा हाथ जला डाला और मुझे ख़बर तक न हुई। इतने में मेरी ख़ादिमा आई और पुकार कर कहा : "अपना हाथ उठा कर देखो ! आग ने जला कर उसे बेकार कर दिया है।" मैं ने चोंक कर हाथ उठाया तो वाक़ेई वोह जल कर कोइला हो चुका था।"

हज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास बिन अ़ता رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उस नौजवान का हैरत अंगेज़ वाक़िआ़ सुन कर मैं हैरत से चीख़ पड़ा और कहा : "मख़्लूक़ की महब्बत में तेरा क्या हाल हो गया है, अगर ऐसी महब्बत ख़ालिक़े हक़ीक़ी جَلَّ جَلَالُهٗ से होती तो कुछ और ही रंग होता।"

हिकायत नम्बर : 488

अनोखी क़नाअ़त

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शबीब عليه رحمة الله الحبيب का बयान है : हर जुमुआ़ को हमारा इल्म का **मदनी मुज़ाकरा** हुवा करता था। एक मरतबा एक शख़्स ने हमारी महफ़िल में कोई मस्अला पूछा। हम उस बारे में बह़्स करते रहे लेकिन जवाब न दे सके। अगले जुमुआ़ वोह फिर आया तो हम ने जवाब बताया और उस की रिहाइश गाह के बारे में पूछा। उस ने कहा : "मैं "हरबिय्या" में रहता हूं।" हम ने कहा : "तुम्हारी कुन्यत क्या है ?" कहा : "अबू अ़ब्दुल्लाह।" हमें उस के साथ बैठने से खुशी होती। वोह हर जुमुआ़ हमारी महफ़िले फ़िक़्ह में शिर्कत करता, उस का आना हमें बहुत अच्छा लगता। फिर अचानक उस ने आना छोड़ दिया, इस त़रह अचानक ग़ैर हाज़िरी की वजह से हम परेशान हो गए। हम ने मश्वरा किया कि हमारा एक रफ़ीक़ हम से जुदा हो गया है उस के बारे में ज़रूर मा'लूमात करनी चाहिये, क्या मा'लूम उसे कोई बड़ी परेशानी लाहिक़ हो गई हो ? अगली सुब्ह़ हम "हरबिय्या" गए और बच्चों से पूछा : "क्या तुम "अबू अ़ब्दुल्लाह" को जानते हो ?" बच्चों ने कहा : "शायद ! आप अबू अ़ब्दुल्लाह शिकारी के मुतअ़ल्लिक़ पूछ रहे हो ?" हम ने कहा : "हां ! हम उसी के मुतअ़ल्लिक़ पूछ रहे हैं।" कहा : "बस वोह आने वाले हैं, आप यहीं इन्तिज़ार फ़रमाएं।"

हम वहीं ठहर गए, कुछ देर बा'द हम ने देखा कि एक मोटे कपड़े का तहबन्द बान्धे एक चादर कन्धों पर ओढ़े वोह हमारी जानिब चला आ रहा था। उस के पास कुछ ज़ब्ह़ किये हुवे और कुछ ज़िन्दा परन्दे थे। वोह मुस्कुराता हुवा हमारे पास आया और पूछा : "ख़ैरिय्यत तो है आज इस त़रफ़ कैसे आना हुवा ?" हम ने कहा : "तुम हमारे दोस्त थे कई दिनों तक मुसलसल हमारे

पास इल्मे दीन सीखने आते रहे, अब कुछ दिनों से तुम नहीं आ रहे है, इस की वजह क्या है ?'' कहा : ''मैं आप लोगों को सच सच बताता हूं, मैं जो कपड़े पहन कर आप की मह़फ़िल में ह़ाज़िर होता था वोह मेरे एक दोस्त के थे, जो मुसाफ़िर था। जब वोह अपने वत़न वापस चला गया तो मेरे पास दूसरे कपड़े न थे जिन्हें पहन कर आप के पास आता, मेरे न आने की वजह येही है, अच्छा ! इन बातों को छोड़ें येह बताइये, आप क्या पसन्द फ़रमाएंगे, मेरे साथ घर चलें और इस रिज़्क़ से खाएं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें अ़त़ा फ़रमाया है।'' हम ने कहा : ''ठीक है ! हम चलते हैं।'' पस हम उस के साथ चल दिये, उस ने एक मकान के क़रीब रुक कर सलाम किया और अन्दर दाख़िल हो गया। कुछ देर बा'द हमें अन्दर बुला कर बोरियों से बनी हुई एक चटाई पर बिठाया। ज़ब्ह़ किये हुवे परन्दे अपनी ज़ौजा के ह़वाले किये, ज़िन्दा परन्दे बाज़ार ले जा कर बेचे और उन से मिलने वाली रक़म से रोटियां ख़रीद लाया, इतनी देर में उस की ज़ौजा सालन तय्यार कर चुकी थी। उस ने रोटी और परन्दों का गोश्त हमारे सामने रखते हुवे कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर खाइये।''

हम ने खाना खाते हुवे आपस में कहा : ''देखो ! हमारे इस दोस्त की मुआ़शी ह़ालत कैसी है ! हमारा शुमार बसरा के मुअ़ज़्ज़ज़ीन में होता है, अफ़्सोस ! हमारे होते हुवे इस की येह ह़ालत !'' येह सुन कर हमारे एक दोस्त ने कहा : ''पांच सो (500) दिरहम मेरे ज़िम्मे हैं। दूसरे ने कहा : ''तीन सो (300) दिरहम मैं दूंगा।'' इस त़रह़ हम सब ने ह़स्बे हैषिय्यत दिरहम देने और दूसरे अहले षरवत से दिलवाने की निय्यतें कीं। जब ह़िसाब किया तो तक़रीबन पांच हज़ार (5000) दिरहम हो चुके थे। हम ने कहा : ''हम येह सारी रक़म इकठ्ठी कर के अपने इस दोस्त की ख़िदमत करेंगे।''

चुनान्चे, हम अपने मेज़बान का शुक्रिया अदा कर के शहर की जानिब चल दिये। जब हम खजूर सुखाने के मैदान के क़रीब से गुज़रे तो बसरा के अमीर मुह़म्मद बिन सलमान ने अपना एक ग़ुलाम भेज कर मुझे बुलवाया। मैं उस के पास पहुंचा तो उस ने हमारा ह़ाल पूछा। मैं ने सारा वाक़िआ़ कह सुनाया और बताया कि हम उस ग़रीब दोस्त की इमदाद करना चाहते हैं। अमीरे बसरा मुह़म्मद बिन सलमान ने कहा : ''मैं तुम से ज़ियादा नेकी करने का ह़क़दार हूं।'' फिर उस ने दराहिम से भरी थैलियां मंगवाईं और एक ग़ुलाम से कहा : ''येह सारी थैलियां उठा लो और जहां रखने का हुक्म दिया जाए, वहां रख कर आ जाना।'' मैं बहुत ख़ुश हुवा और अपने दोस्त अबू अ़ब्दुल्लाह के मकान पर पहुंच कर दस्तक दी, दरवाज़ा ख़ुद अबू अ़ब्दुल्लाह ने खोला। ग़ुलाम और रक़म की थैलियां देख कर उस ने मेरी त़रफ़ यूं देखा जैसे मैं ने उस पर बहुत बड़ी मुसीबत तोड़ दी हो। उस का अन्दाज़ ही बदल चुका था। वोह मुझ से कहने लगा : ''येह सब क्या है ? क्या तुम मुझे माल के फ़ित्ने में डालना चाहते हो ?'' मैं ने कहा : ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! ज़रा ठहरो ! मैं तुम्हें सब बात बताता हूं।'' येह कह कर मैं ने उसे सारी बात बताई और येह भी बताया कि येह माल बसरा के अमीर मुह़म्मद बिन सलमान ने भिजवाया है। बस येह सुनना था कि वोह मुझ पर बहुत ग़ज़बनाक हुवा और घर में दाख़िल हो कर दरवाज़ा बन्द कर दिया, मैं बाहर बेचैनी के आ़लम

में टहलता रहा, समझ में नहीं आता था कि अमीरे बसरा को क्या जवाब दूं। बिल आख़िर येही फ़ैसला किया कि सच ही में नजात है और मुझे सब कुछ सच सच बयान कर देना चाहिये। येही सोच कर मैं अमीरे बसरा के पास आया और सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। मेरी बात सुन कर अमीरे बसरा गुस्से से कांपता हुवा बोला : "मेरे हुक्म की नाफ़रमानी की गई। ऐ ग़ुलाम ! जल्दी से तल्वार लाओ।" ग़ुलाम तल्वार ले कर हाज़िर हुवा तो अमीर ने मुझ से कहा : "इस ग़ुलाम ! का हाथ पकड़ कर उस शख़्स के पास ले जाओ, जब वोह बाहर आए तो उस की गर्दन उड़ा दो और सर हमारे पास ले आओ।" मैं येह हुक्मे शाही सुन कर बड़ा परेशान हुवा, लेकिन मजबूर था, इन्कार न कर सका, मैं बादिले नख़्वास्ता (या'नी न चाहते हुवे) वापस आया और दरवाज़े पर पहुंच कर सलाम किया। उस की ज़ौजा ने रोते हुवे दरवाज़ा खोला और एक जानिब हट कर मुझे अन्दर बुला लिया। मैं ने घर में दाख़िल हो कर पूछा : "तुम्हारा और अबू अ़ब्दुल्लाह का क्या ह़ाल है ?" कहा : "आप से मुलाक़ात के बा'द उस ने कुंवें से पानी निकाल कर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी। फिर मैं ने उस की येह आवाज़ सुनी :

"ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अब मुझे मोहलत न दे और अपनी बारगाह में बुला ले।" येह कहते हुवे वोह ज़मीन पर लेट गया, मैं क़रीब पहुंची तो उस की रूह़ आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर चुकी थी, येह देखें अब घर में इस का बे जान जिस्म पड़ा हुवा है। मैं ने देखा तो वाक़ेई एक जानिब उस की मय्यित रखी हुई थी। मैं ने उस की ज़ौजा से कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! हमारा क़िस्सा बहुत अ़जीब है। येह कह कर मैं अमीरे बसरा मुह़म्मद बिन सलमान के पास आया और सारी बात बताई।" उस ने कहा : "मैं उस की नमाज़े जनाज़ा ज़रूर पढ़ूंगा।" कुछ देर बा'द उस की मौत की ख़बर पूरे बसरा में फैल गई। अमीरे बसरा और दूसरे बे शुमार लोगों ने उस के जनाज़े में शिर्कत की।

*{**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم}*

ह़िकायत नम्बर : 489 मिल्लते इब्राहीमी का पैरूकार

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सुलैमान क़ुरशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی से मन्क़ूल है कि एक मरतबा यमन जाते हुवे रास्ते में मुझे एक ख़ूब सूरत नौजवान नज़र आया, उस के कानों में बालियां थीं, जिन के उ़मदा व ख़ुशनुमा मोतियों की चमक से उस का चेहरा चमक रहा था। वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करते हुवे यूं कह रहा था : "आस्मानों के बादशाह की वजह से मेरी इ़ज़्ज़त व वक़ार है। वोह ग़ालिब व क़ुदरत वाला है, उस में कुछ नक़्स नहीं, उस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं।" मैं ने क़रीब जा कर सलाम किया। उस ने कहा : "मैं उस वक़्त तक सलाम का जवाब नहीं दूंगा जब तक आप मेरा ह़क़ अदा न करें।" मैं ने कहा : "तुम्हारा कौन सा ह़क़ है ?" कहा : "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दीन का पैरूकार हूं। मैं उस वक़्त तक खाना नहीं खाता जब तक एक दो मील चल कर मेहमान तलाश न कर लूं।

आज आप मेरे मेहमान हैं ।'' नौजवान की येह बात सुन कर मैं उस के साथ चल दिया । कुछ दूर बालों का बना हुवा एक ख़ैमा नज़र आया, उस ने क़रीब पहुंच कर बुलन्द आवाज़ से कहा : ''ऐ मेरी बहन ! ऐ मेरी बहन ।'' अन्दर से किसी लड़की की आवाज़ आई : ''**लब्बैक** ! (मैं ह़ाज़िर हूं) मेरे भाई !'' नौजवान ने कहा : ''मेहमान की ता'ज़ीम करो ।''

लड़की ने कहा : ''ठहरो ! पहले मैं उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर लूं जिस ने हमारे हां मेहमान भेजा है ।'' येह कह कर उस ने नमाज़ पढ़ी । नौजवान मुझे ख़ैमे में बिठा कर जानवर ज़ब्ह़ करने चला गया । मेरी नज़र उस लड़की पर पड़ी तो मुझे उस का चेहरा सब से ज़ियादा ह़सीन नज़र आया । लड़की ने कहा : ''मेरी त़रफ़ न देखिये ! मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के शहनशाह मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान हम तक पहुंचा है कि ''आंखों का ज़िना (ग़ैर मह़रम को) देखना है ।'' (سنن ابی داؤد، کتاب النکاح،باب مَا يُؤْمَرُ بِهٖ مِنْ غَضِّ الْبَصَرِ، الحديث٢١٥٢، ص١٣٨١) सुनिये ! मैं आप की बे इ़ज़्ज़ती नहीं कर रही और न ही आप को डांट रही हूं बल्कि मेरा मक़्सद आप को अदब सिखाना है ताकि आप दोबारा ऐसी ह़रकत न करें ।'' लड़की की येह बात सुन कर मैं बहुत शर्मिन्दा हुवा । जब रात हुई तो मैं और नौजवान ख़ैमे से बाहर आ गए और लड़की ख़ैमे में ही रही । मैं सारी रात ख़ैमे के अन्दर से क़ुरआने पाक की तिलावत सुनता रहा, आवाज़ में सोज़ो गुदाज़ था । सुब्ह़ मैं ने नौजवान से पूछा : ''क़ुरआने पाक की तिलावत कौन कर रहा था ?'' कहा : ''मेरी बहन इसी त़रह़ सारी सारी रात इ़बादत करती है ।'' मैं ने कहा : ''वोह औ़रत है और तू मर्द, तुझे उस से ज़ियादा इ़बादत करनी चाहिये ?'' नौजवान ने मुस्कुराते हुवे कहा : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे क्या आप नहीं जानते कि वोही परवर दगार عَزَّوَجَلَّ नेक आ'माल की तौफ़ीक़ देने वाला और वोही इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत देने वाला है ।''

ह़िकायत नम्बर : 490 बा इख़्तियार दरज़ी और ज़ालिम अफ़्सर

क़ाज़ी अबुल हुसैन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वाह़िद हाशिमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह के दौरे ख़िलाफ़त में एक ताजिर का किसी सरकारी ओ़हदे दार पर बहुत सा माल क़र्ज़ था । जब भी मुत़ालबा किया जाता वोह ह़ीले बहाने कर के ताजिर को वापस कर देता । उस ताजिर का बयान है : जब मैं ने देखा कि मेरा माल किसी त़रीक़े से नहीं मिल रहा तो मैं ने अहले षरवत और आ'ला ओ़हदे दारों से बात की, ह़त्ता कि वज़ीर से भी सिफ़ारिश करवाई, लेकिन मुझे मेरा माल न मिल सका । अब सिर्फ़ ख़लीफ़ा तक शिकायत पहुंचाना बाक़ी थी, लेकिन येह आसान काम न था । एक दिन मुझे मेरे एक दोस्त ने कहा : ''आओ ! मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें एक ऐसे शख़्स के पास ले चलता हूं जो तुम्हारा माल वापस दिलवा देगा और तुम्हें

ख़लीफ़ा के पास शिकायत करने की ह़ाजत न होगी। मैं उस के साथ चल दिया। वोह मुझे एक दरज़ी के पास ले गया जो क़रीबी मस्जिद में इमाम भी थे। मेरे दोस्त ने मेरा ह़ाल बयान किया और आने का मक़्सद बताया तो इमाम साहि़ब फ़ौरन साथ हो लिये, हम उस अफ़्सर के घर की त़रफ़ चल दिये। मैं ने अपने दोस्त से कहा : "तुम ने मुझे, अपने आप को और इस ग़रीब दरज़ी को मुसीबत में डाल दिया है। वोह ज़ालिम अफ़्सर तो बड़े बड़े लोगों की बातों पर कान नहीं धरता, वज़ीर जैसे बा अषर शख़्स की सिफ़ारिश उस के सामने कुछ काम न कर सकी, फिर भला इस ग़रीब दरज़ी की बात को वोह क्या अहम्मिय्यत देगा।" मेरी बात सुन कर मेरे दोस्त ने मुस्कुराते हुवे कहा : "तुम ख़ामोशी से देखते रहो होता क्या है ?" मैं ख़ामोश हो कर चलता रहा, जैसे ही हम उस ज़ालिम अफ़्सर के घर के क़रीब पहुंचे, उस के गुलामों ने बड़े बा अदब त़रीक़े से आगे बढ़ कर दरज़ी का हाथ चूमते हुवे पूछा : "आ़ली जाह ! आप की तशरीफ़ आवरी का क्या मक़्सद है ? हमारा मालिक अभी अभी सफ़र से आया है अगर आप हुक्म दें तो हम फ़ौरन उसे बुला लाते हैं और अगर आप चाहें तो अन्दर तशरीफ़ ले चलें और ख़िदमत का मौक़अ़ दें, हमारा मालिक कुछ ही देर में आ जाएगा।" दरज़ी ने कहा : "चलो हम अन्दर चल कर बैठ जाते हैं।"

हम एक ख़ूब सूरत कमरे में बैठ गए। कुछ देर बा'द वोह अफ़्सर आया और दरज़ी को देखते ही बहुत ता'ज़ीम व तौक़ीर करते हुवे बड़े ख़ुशामदाना लहजे में बोला : "हुज़ूर ! अभी अभी सफ़र से वापसी हुई है मैं उस वक़्त तक सफ़र के कपड़े तब्दील नहीं करूंगा जब तक आप के आने का मक़्सद पूरा न कर दूं, हुक्म फ़रमाएं मैं आप की क्या ख़िदमत कर सकता हूं ?" इमाम साहि़ब ने मेरी त़रफ़ इशारा करते हुवे कहा : "फ़ौरन इस का माल इसे दे दो।" अफ़्सर ने कहा : "आ़लीजाह ! इस वक़्त मेरे पास सिर्फ़ पांच हज़ार (5000) दिरहम हैं, आप इस से कहें कि फ़िल ह़ाल येही रक़म क़बूल कर ले और बक़िय्या रक़म के बदले मेरा सामाने तिजारत रहन (गिरवी) रख ले, मैं एक महीने के अन्दर अन्दर इस की रक़म वापस कर दूंगा।" दरज़ी (इमाम साहि़ब) ने मेरी त़रफ़ देखा तो मैं ने फ़ौरन येह शर्त़ क़बूल कर ली। अफ़्सर ने पांच हज़ार (5000) दिरहम और सामाने तिजारत मेरे ह़वाले किया, मैं ने इमाम साहि़ब और अपने दोस्त को गवाह बनाया कि "अगर एक माह के अन्दर अन्दर इस ने मेरी रक़म वापस न की तो मैं अपनी रक़म की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ इस का सामाने तिजारत बेचने का इख़्तियार रखता हूं।" फिर दस्तावेज़ पर दस्तख़त़ हुवे और हम वापस आ गए। मैं अपना ह़क़ मिलने पर बहुत ख़ुश था और ह़ैरान भी था कि न जाने इस इमाम साहि़ब में ऐसी कौन सी त़ाक़त है जिस की वजह से ज़ालिम अफ़्सर इतना मेहरबान हो गया और इस की इतनी ता'ज़ीम व तौक़ीर की। बहर ह़ाल हम वापस दरज़ी की दुकान पर आए, तो मैं ने सारा माल दरज़ी के सामने रखते हुवे कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की बरकत से मुझे मेरा माल वापस दिलवा दिया है, मैं अपनी ख़ुशी से कुछ माल आप की नज़्र करना चाहता हूं, आप इस रक़म में से तिहाई माल या निस्फ़ माल क़बूल फ़रमा लें।"

इमाम साहि़ब ने कहा : "क्या तुम एक अच्छे काम का बदला बुरी चीज़ से देना चाहते हो ? मैं इस में से कुछ भी नहीं लूंगा। जाओ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बरकत दे।" मैं ने कहा : "आ़ली जाह ! मुझे आप से एक और काम भी है।" कहा : "बताओ।" मैं ने कहा : "उस ज़ालिम अफ़्सर के सामने बड़े बड़े लोग बे बस हो गए, लेकिन आप की बात उस ने फ़ौरन मान ली, आख़िर वोह आप की इतनी ता'ज़ीम क्यूं करता है ?" इमाम साहि़ब ने कहा : "तुम्हारा माल तुम्हें मिल चुका है। जाओ ! अब अपना काम करो और मुझे भी काम करने दो।" मैं ने जब बहुत इसरार किया तो इमाम साहि़ब ने अपना वाक़िआ़ कुछ यूं बयान किया :

हमारे घर के रास्ते में एक तुर्की अफ़्सर का घर है। एक मरतबा जब मैं अपने घर जा रहा था तो देखा कि नशे में बदमस्त तुर्की अफ़्सर एक औ़रत को पकड़ कर अपने घर की जानिब खींच रहा था, वोह बेचारी मदद के लिये पुकारती रही, लेकिन कोई भी उस की मदद को न आया। वोह रो रो कर कह रही थी : ऐ लोगो ! मुझे इस ज़ालिम से बचाओ ! मेरे शोहर ने क़सम खाई है कि अगर मैं ने उस के घर के इ़लावा किसी और के हां रात गुज़ारी तो वोह मुझे त़लाक़ दे देगा। अगर येह ज़ालिम मुझे अपने घर ले गया तो मेरा घर बरबाद हो जाएगा और मैं रुस्वा हो जाऊंगी, ख़ुदा के लिये मुझे इस ज़ालिम से नजात दिलाओ। वोह मज़्लूमा इसी त़रह़ फ़रयाद करती रही, लेकिन कोई भी उस की मदद को तय्यार न हुवा। मैं जज़्बए ईमानी की बदौलत उस ज़ालिम की त़रफ़ बढ़ा और औ़रत को छोड़ने के लिये कहा, उस ने एक लोहे का डन्डा मेरे सर में मारा और ख़ूब त़मांचे मारे फिर उस औ़रत को ज़बरदस्ती अपने घर ले गया।

मैं ज़ख़्मी ह़ालत में ग़मगीन व परेशान अपने घर आया, ज़ख़्म से ख़ून धो कर पट्टी बांधी और कुछ देर बिस्तर पर लैट गया। फिर इ़शा की नमाज़ पढ़ने मस्जिद गया और नमाज़ के बा'द तमाम नमाज़ियों को उस ज़ालिम तुर्की अफ़्सर की ह़रकत से आगाह करते हुवे कहा : "तुम सब मेरे साथ चलो ! या तो वोह औ़रत को छोड़ देगा वरना हम उस का मुक़ाबला करेंगे।" लोगों ने मेरी ताईद की और हम उस के घर की जानिब चल दिये। वहां पहुंच कर हम ने औ़रत की रिहाई का मुत़ालबा किया तो उस ज़ालिम तुर्की अफ़्सर के कई ग़ुलामों ने मिल कर हम पर डन्डों से ह़म्ला किया, सब मुझे अकेला छोड़ कर भाग गए, चन्द ग़ुलामों ने मुझे पकड़ कर ख़ूब मारा और शदीद ज़ख़्मी कर दिया। मेरा एक पड़ोसी मुझे उठा कर घर ले आया। घर वालों ने ज़ख़्मों पर दवाई लगा कर पट्टी बांध दी, मुझे कुछ देर नींद आ गई, लेकिन कुछ ही देर बा'द दर्द की शिद्दत से आंख खुल गई। मैं सोच रहा था कि उस बेचारी को किस त़रह़ बचाया जाए, अगर फ़ज्र तुलूअ़ होने तक वोह उसी ज़ालिम के क़ब्ज़े में रही तो उस को त़लाक़ हो जाएगी और उस का घर बरबाद हो जाएगा। ऐ काश ! तुलूए़ फ़ज्र से क़ब्ल ही वोह ज़ालिम उसे छोड़ दे। फिर अचानक मुझे ख़याल आया कि उस ज़ालिम ने शराब पी रखी है उसे अवक़ात की मा'लूमात भी नहीं अगर मैं अभी अज़ान दे दूं तो वोह येही समझेगा कि फ़ज्र का वक़्त हो गया है और वोह उस औ़रत को छोड़ देगा। इस त़रह़ कम अज़ कम उस बेचारी का घर तो बच जाएगा। बस येह ख़याल आते ही मैं गिरता पड़ता मस्जिद पहुंचा और मिनारे पर चढ़ कर बुलन्द आवाज़ से अज़ान दी, और उस तुर्की अफ़्सर

के घर की त़रफ़ देखने लगा। अभी कुछ देर ही गुज़री थी कि बाहर की सारी सड़क घोड़ों और सिपाहियों से भर गई। सिपाही बुलन्द आवाज़ से कह रहे थे : "इस वक़्त अज़ान किस ने दी है?" पहले तो मैं ख़ामोश रहा फिर येह सोच कर कि शायद उस औ़रत की रिहाई पर येह सिपाही मेरी मदद करें मैं ने पुकार कर कहा : "मैं यहां मौजूद हूं और मैं ने ही अज़ान दी है।" सिपाहियों ने कहा : "जल्दी नीचे आओ तुम्हें अमीरुल मोअमिनीन बुला रहे हैं।" मैं उन सिपाहियों के साथ ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह के पास आया। उस ने बड़ी शफ़्क़त से मुझे अपने क़रीब बिठाया और तसल्ली देने लगा, मेरा ख़ौफ़ जाता रहा और जब बिल्कुल मुत़मइन हो गया तो कहा : "तुझे किस ने मजबूर किया कि तू वक़्त से पहले अज़ान दे कर मुसलमानों को धोका दे? ज़रा सोच तो सही कि मुसाफ़िर तेरी अज़ान से धोका खा कर सफ़र शुरूअ़ कर देंगे, रोज़ेदार खाने पीने से रुक जाएंगे ह़ालांकि अभी सह़री का वक़्त बाक़ी है। बता! किस चीज़ ने तुझे इस काम पर मजबूर किया?" मैं ने डरते हुवे कहा : "अगर अमीरुल मोअमिनीन मुझे जान की अमान अ़त़ा फ़रमाएं तो मैं कुछ अ़र्ज़ करता हूं।" ख़लीफ़ा ने कहा : "तुम्हें अमान दी जाती है, सच सच बताओ।"

मैं ने उस ज़ालिम तुर्की अफ़्सर और औ़रत का सारा वाक़िआ़ कह सुनाया और अपने ज़ख़्म भी ख़लीफ़ा को दिखाए। ख़लीफ़ा ने ग़ज़बनाक हो कर सिपाहियों को हुक्म दिया कि "अभी अभी उस तुर्की अफ़्सर और उस मज़्लूमा को मेरे सामने ह़ाज़िर करो।" कुछ ही देर में सिपाही उस तुर्की अफ़्सर और औ़रत को ख़लीफ़ा के पास ले आए। ख़लीफ़ा ने मुझे एक कमरे में भेज कर औ़रत से ह़क़ीक़ते ह़ाल दरयाफ़्त की तो उस ने भी वोही कुछ बताया जो मैं ने बताया था। ख़लीफ़ा ने चन्द क़ाबिले ए'तिमाद औ़रतों और सिपाहियों के साथ औ़रत को उस के घर भेज दिया और उस के शोहर को पैग़ाम भिजवाया कि इस औ़रत के साथ एह़सान और भलाई वाला मुआ़मला किया जाए क्यूंकि येह बेक़ुसूर है अगर इस पर सख़्ती की गई तो सख़्त सज़ा दी जाएगी। फिर ख़लीफ़ा ने मुझे बुलाया और उस तुर्की अफ़्सर को मुख़ात़ब कर के पूछा : "बता! तुझे कितनी तनख़्वाह मिलती है? बता! तुझे कारोबार से कितना नफ़्अ़ मिलता है? तेरे पास कितनी कनीज़ें और लौंडियां हैं? तेरी सालाना आमदनी कितनी है?" तुर्की अफ़्सर ने अपनी कषीर आमदनी और कनीज़ों के बारे में बताया तो ख़लीफ़ा ने कहा : "इतनी ने'मतें मिलने के बा वुजूद तू ने अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की है। क्या तुझे ह़लाल चीज़ें काफ़ी न थीं? जो तू ने ह़राम की त़रफ़ हाथ बढ़ाया। अब तुझे दर्दनाक सज़ा दी जाएगी। ऐ सिपाहियो! जल्दी चमड़े का थैला और चूना ले कर आओ।" चमड़े का मज़बूत़ थैला और चूना लाया गया, उस तुर्की को थैले में बन्द कर के ऊपर से चूना डाल कर हथोड़ों से ज़र्बें लगाई गईं। कुछ ही देर में उस ज़ालिम के जिस्म की हड्डियां टूट गईं और वोह मौत के घाट उतर गया। ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया कि "इस नामुराद की लाश दरयाए दिजला में फेंक दी जाए।"

तमाम फ़ौजी अफ़्सर, वुज़रा व आ'ला ओ़हदेदारान येह मन्ज़र देख रहे थे। वोह अफ़्सर जिस के ज़िम्मे तेरा माल था वोह भी वहां मौजूद था। ख़लीफ़ा ने मुझे मुख़ात़ब कर के कहा : "ऐ शैख़! हमारे इस मुल्क में आप जहां भी कोई बुराई देखें, जहां किसी ज़ालिम को ज़ुल्म करता देखें तो उसे रोकें, चाहे वोह कोई भी हो।" फिर एक बड़े अफ़्सर की त़रफ़ इशारा कर के कहा : "चाहे येह

आ'ला अफ़्सर ही क्यूं न हो, तुम उसे बुराई से रोकना और अगर कोई तुम्हारे ख़िलाफ़ जुरअत करे, तुम्हारी बात न माने तो मुझे फ़ौरन इत्तिलाअ़ कर देना, हमारे और तुम्हारे दरमियान "**अज़ान**" निशानी होगी। तुम वक़्त से पहले अज़ान दे देना मैं समझ जाऊंगा और तुम्हारी आवाज़ सुनते ही तुम्हारी मदद को पहुंचूंगा। जो तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाएगा इस ज़ालिम तुर्की अफ़्सर की त़रह़ मैं उसे इब्रतनाक सज़ा दूंगा। अब जाओ और अपने काम की पाबन्दी करो।" ख़लीफ़ा की येह बात सुन कर मैं वहां से आ गया। सुब्ह़ होते ही येह ख़बर पूरे शहर में फैल गई और हर ख़ासो आ़म को मेरे इख़्तियारात के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम हो गया उस दिन से ले कर आज तक एक मरतबा भी ऐसा न हुवा कि मैं ने किसी को इन्साफ़ दिलवाया हो और उसे इन्साफ़ न मिला हो। ख़लीफ़ा के डर से हर शख़्स मेरी हर बात फ़ौरन मान लेता है। अभी तक दोबारा वक़्त से पहले अज़ान देने की नौबत नहीं आई। येह है मेरा वाक़िआ़।" येह कह कर दरज़ी अपने काम में मसरूफ़ हो गया और मैं घर चला आया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 491 ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह की हि़क्मते अ़मली

अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन ह़मदून का बयान है, एक दफ़्आ़ ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह शिकार के लिये गया, सिपाही अभी पीछे थे। मैं ख़लीफ़ा के साथ था कि अचानक क़रीबी खेत के मालिक ने चीख़ो पुकार शुरूअ़ कर दी। ख़लीफ़ा ने उसे बुला कर शोर मचाने का सबब दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा : "आप के लश्कर के चन्द सिपाहियों ने मेरे खेत से खीरे चुराए हैं।" ख़लीफ़ा ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि "मुजरिमों को हमारे सामने पेश करो।" तीन शख़्सों को लाया गया। ख़लीफ़ा ने खेत वाले से पूछा : "क्या येही वोह लोग हैं जिन्हों ने तुम्हारे खीरे चुराएं हैं?" उस ने इषबात में सर हिला दिया। ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया कि "इन्हें हथकड़ियां पहना कर क़ैद में डाल दो।" दूसरे दिन ख़लीफ़ा ने तीन मुजरिमों को बुलाया और हुक्म दिया कि "इन्हें खीरे के खेत में ले जा कर क़त्ल कर दो।" लोगों को इस हुक्म से बड़ी कोफ़्त हुई कि सिर्फ़ चन्द खीरों की ख़ात़िर तीन जानों को क़त्ल करवाया जा रहा है, लेकिन हुक्मे शाही के सामने किसी को कुछ बोलने की हिम्मत न हुई और तीन मुजरिमों को क़त्ल कर दिया गया। लोगों ने ख़ुफ़्या त़ौर पर इस वाक़िए की शदीद मुख़ालफ़त की, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता बात रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गई। काफ़ी अ़र्से के बा'द एक रात मैं ख़लीफ़ा मो'तज़िद बिल्लाह के पास बैठा हुवा था कि उस ने मुझ से कहा : "अगर लोग हमारे मुतअ़ल्लिक़ कोई बुरी बात कहते हैं तो बताओ ताकि हम अपनी बुराई का इज़ाला करें।" मैं ने कहा : "अमीरुल मोअमिनीन में ऐसी कोई बुराई नहीं।" ख़लीफ़ा ने कहा : "मैं तुझे क़सम देता हूं, सच सच बताओ।" मैं ने कहा : "क्या आप मुझे अमान देते हैं?" कहा : "हां ! तुम्हें अमान है, बताओ ! मुझ में क्या बुराई है?" मैं ने कहा : "आ़ली जाह ! आप ख़ून बहाने में बहुत जल्दी करते हैं, येह बहुत बुरी बात है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब से मैं ख़लीफ़ा बना हूं किसी एक को भी नाह़क़ क़त्ल नहीं किया।"

येह सुन कर मैं ख़ामोश हो गया तो ख़लीफ़ा ने कहा : "और बताओ।" मैं ने कहा : "लोग कहते हैं कि आप ने अपने ख़ादिमे ख़ास अह़मद बिन अबू तै़ब को क़त्ल करवा दिया ह़ालांकि उस की कोई ख़ियानत ज़ाहिर न हुई थी।" ख़लीफ़ा ने कहा : "उस ने मुझे कुफ़्र व इल्ह़ाद की दा'वत दी थी। अब तुम बताओ क्या मैं ने उसे क़त्ल करवा कर बुरा काम किया है? मैं ने उसे उस की बाति़ल दा'वत की सज़ा दी थी इस के इलावा कोई और बुराई बताओ जो मुझ से सरज़द हुई हो।" मैं ने कहा : "लोग उन तीन शख़्सों के क़त्ल की वजह से आप से बेज़ार है जिन्हें आप ने सिर्फ़ चन्द खीरों के बदले क़त्ल करवा दिया था।" ख़लीफ़ा ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! क़त्ल होने वाले तीनों शख़्स वोह नहीं थे जिन्हों ने खीरे चुराए थे बल्कि क़त्ल होने वाले तो ख़तरनाक डाकू थे, उन्हों ने फ़ुलां जगह चोरी की थी, फ़ुलां जगह डाका डाला था, वोह तो बदतरीन मुजरिम थे, येह अ़लाह़िदा बात है कि उन्हें खेत में क़त्ल किया गया। बात दर अस्ल येह है कि जब खेत के मालिक ने उन की शिकायत की और तीन सिपाहियों को पकड़वा दिया तो मैं ने उन्हें क़ैद में डलवा दिया और दूसरे दिन तीन डाकूओं को खेत में ले जा कर क़त्ल करवा दिया और उन के चेहरो को ढांपने का हुक्म दिया ताकि लोग उन्हें पहचान न सकें और तमाम फ़ौज येह जान ले कि जब खीरे चोरी करने के जुर्म में क़त्ल कर दिया जाता है तो बड़े जुर्मों की कितनी दर्दनाक सज़ा मिलेगी, मैं ने ज़ुल्म व ज़ियादती रोकने के लिये येह त़रीक़ा अपनाया था। बाक़ी वोह तीनों जिन्हों ने खीरे चुराए थे वोह अभी तक क़ैद में मौजूद हैं।" येह कह कर ख़लीफ़ा ने उन तीनों को बुलवाया, क़ैद में रहने की वजह से उन की ह़ालत तब्दील हो चुकी थी। ख़लीफ़ा ने उन से कहा : "बताओ तुम्हें क़ैद में क्यूं डाला गया?" कहा : "हमें चन्द खीरों की चोरी के जुर्म में क़ैद कर दिया गया था।" ख़लीफ़ा ने कहा : "अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं तो क्या तुम अपनी साबिक़ा ग़लति़यों से ताइब हो जाओगे?" सब ने बयक ज़बान कहा : "जी हां।" येह सुन कर ख़लीफ़ा ने उन्हें छोड़ दिया और बहुत से तह़ाइफ़ दिये और उन की तनख़्वाहों में भी इज़ाफ़ा कर दिया। कुछ ही दिनों में ख़लीफ़ा की येह बात सारे शहर में फैल गई और ख़लीफ़ा पर नाह़क़ क़त्ल करने की जो तोहमत थी वोह दूर हो गई और ह़क़ीक़त वाज़ेह़ हो गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 492 **बस! अब मैं जवाब का मुन्तज़िर हूं**

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद ह़ातिम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ख़ज़्रवय رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल पिचानवे (95) साल की उ़म्र में हुवा। जब उन पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी हुई तो उस वक़्त मैं उन के पास मौजूद था। किसी ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कोई मस्अला पूछा, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आंखों से आंसू जारी हो गए और रोते

हुवे फ़रमाया : "मेरे बेटे ! पिचानवे (95) साल हो गए मैं एक दरवाज़े को खट-खटा रहा हूं, अब वोह मेरे लिये खुलने वाला है। मुझे नहीं मा'लूम कि वोह मेरे लिये सआ़दत मन्दी के साथ खुलेगा या बदबख़्ती के साथ, बस अब मैं जवाब का मुन्तज़िर हूं।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर नवसो (900) दीनार क़र्ज़ था : क़र्ज़ ख़्वाह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास ही मौजूद थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उन की त़रफ़ देखा और बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू ने रेहन को मालदारों के लिये दस्तावेज़ बनाया। मेरे ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ तू मेरे क़र्ज़ ख़्वाहों को उन का क़र्ज़ अदा फ़रमा दे।"

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अभी दुआ़ से फ़ारिग़ भी न हुवे थे कि किसी ने दरवाज़े पर दस्तक देते हुवे कहा : "क्या येह अह़मद बिन ख़ज़्रवय رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का घर है ?" लोगों ने कहा : "हां ! येह उन्ही का घर है ?" कहा : "उन के क़र्ज़ ख़्वाह कहां हैं ?" येह सुन कर क़र्ज़ ख़्वाह बाहर गए तो आने वाले अजनबी ने सब का क़र्ज़ अदा किया और चला गया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ख़ज़्रवय رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का इन्तिक़ाल हो गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 493

मुख़्लिस बन्दे

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि : एक रात मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के हां क़ियाम किया। जब रात का कुछ हिस्सा गुज़र गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "ऐ जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه क्या तुम सो गए हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं जाग रहा हूं।" फ़रमाया : अभी अभी मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी बारगाह में बुला कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ सरी ! क्या तू जानता है कि मैं ने मख़्लूक़ को क्यूं पैदा फ़रमाया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ मुझे मा'लूम नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो सब ने मुझ से मह़ब्बत का दा'वा किया। फिर मैं ने दुन्या को पैदा किया तो दस हज़ार (10,000) में से नव हज़ार (9000) मेरी मह़ब्बत से ग़ाफ़िल हो कर दुन्या की मह़ब्बत में खो गए। फिर मैं ने जन्नत को पैदा फ़रमाया तो हज़ार में से नव सो (900) मेरी मह़ब्बत से ग़ाफ़िल हो कर जन्नत की मह़ब्बत में खो गए। मैं ने उन पर कुछ आलाम व मसाइब नाज़िल किये तो इन मुसीबतों की वजह से सो में से नव्वे (90) मेरी याद से ग़ाफ़िल हो गए। बक़िय्या दस (10) बचे। मैं ने उन से कहा : "न तो तुम ने दुन्या का इरादा किया, न जन्नत की रग़बत की और न ही मुसीबतों की वजह से भागे, बताओ तुम क्या चाहते हो ?" उन्हों ने कहा : "ऐ हमारे अ़लीमो ख़बीर परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू हमारी चाहत को ख़ूब जानने वाला है।" इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम पर ऐसी

ऐसी आज़्माइशें और मुसीबतें डालूंगा कि जिन्हें बुलन्दो बाला पहाड़ भी बरदाश्त नहीं कर सकते, क्या इस सूरत में भी तुम सब्रो शुक्र के साथ इस्तिक़ामत पर क़ाइम रहोगे ?" अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि अब तक तू ने हम पर जितनी मुसीबतें नाज़िल कीं हम उन सब पर राज़ी रहे और आइन्दा भी हर ह़ाल में तुझ से राज़ी रहेंगे ।"

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ही मेरे मुख़्लिस बन्दे हो ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 494 एक ह़ाजत मन्द और अमीर शख़्स

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन इब्राहीम फ़िहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है कि : एक ग़रीब शख़्स किसी अमीर के पास अपनी ह़ाजत त़लब करने गया तो देखा कि वोह सजदे की ह़ालत में, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़एं मांग रहा है । ग़रीब शख़्स ने कहा : "येह शख़्स तो ख़ुद मोह़्ताज है फिर मैं अपनी ह़ाजत इस से क्यूं बयान करूं ? मुझे क्या हो गया कि मैं उस की बारगाह में अपनी ह़ाजत बयान नहीं करता जो सब की ह़ाजतें पूरी करने वाला है ।" अमीर ने जब येह आवाज़ सुनी तो उस ग़रीब को दस हज़ार (10,000) दिरहम देते हुवे कहा : "येह सारी रक़म तुम्हें उस ने अ़त़ा की है जिस से मैं मांग रहा था । जाओ ! येह सारा माल ले जाओ ! अल्लाह तआ़ला इस में बरकत दे ।"

सलमान बिन अय्यूब का बयान है कि "जब वोह ग़रीब शख़्स वापस गया तो रास्ते में एक कुंवें में गिर गया । वहां कोई ऐसा शख़्स न था जो उस की मदद करता । जब उसे ख़ुलासी की कोई राह नज़र न आई तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ऐ वोह ज़ात कि अ़र्श के किनारों से ज़मीन की सब से निचली तह तक उस के सिवा कोई ऐसा नहीं जो इ़बादत के लाइक़ हो । बेशक तू अकेला ही इ़बादत के लाइक़ है । मेरे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ तू बेहतर जानता है कि इस वक़्त मुझ पर क्या मुसीबत नाज़िल हुई है ? मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ मेरी ख़ुलासी की राह बना दे ।" अभी उस शख़्स के दुआ़इय्या कलिमात मुकम्मल भी न होने पाए थे कि वोह कुंवें से निकल कर बाहर ज़मीन पर आ गया ।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो.. और.. इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم

हिकायत नम्बर : 495 हुकूमत के त़लबगारों को नसीहत

हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन मुहम्मद कुरशी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : साबिक़ा लोगों में से चन्द नेक लोगों ने एक किताब के बारे में बयान किया कि इस में बे शुमार इ़ब्रत आमोज़ बातें और फ़िक्रे आख़िरत दिलाने वाली मुतअ़द्दद हिकायत व अमषाल (मिषालें) हैं। अ़क्लमन्द इस के मुत़ालए़ से आख़िरत की त़रफ़ राग़िब होता और फ़ानी दुन्या से बेज़ार हो जाता है। वोह किताब "**उनत़ूनस**" की त़रफ़ मन्सूब है। "उनतूनस" के बारे में मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक ज़माने के बा'द येह एक बादशाह गुज़रा है, जिस ने तीन सो बीस (320) साल उ़म्र पाई। जब वफ़ात का वक़्त आया तो उस ने अपनी सल्त़नत के तीन नेक व पारसा और साहिबे इल्म सरदारों को बुलाया और कहा : "तुम जानते हो कि मैं अब किस हालत में हूं और मुझे क्या वाक़िआ़ पेश आने वाला है। तुम लोग सल्त़नत के अ़ज़ीम व अफ़्ज़ल लोगों में से हो। मैं नहीं जानता कि तुम तीनों में से उमूरे सल्त़नत के लिये कौन ज़ियादा बेहतर रहेगा ? इस लिये मैं ने क़ौम के बेहतरीन लोगों में से छे (6) अफ़राद को मुन्तख़ब किया है, वोह तुम में से जिसे मुनासिब समझें मेरे बा'द अपना बादशाह मुक़र्रर कर लें। तुम उन के फ़ैसले को ब ख़ुशी क़बूल कर लेना। ख़बरदार ! इख़्तिलाफ़ से बचना वरना तुम ख़ुद भी हलाक हो जाओगे और अपनी रिआ़या को भी हलाकत में मुब्तला कर दोगे।" तीनों ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की उ़म्र दराज़ फ़रमाए।" बादशाह ने कहा : "मौत ज़रूर आनी है इस से बचा नहीं जा सकता। तुम मेरी बातों पर ज़रूर अ़मल करना।" फिर उसी रात बादशाह का इन्तिक़ाल हो गया। जिन छे सरदारों को नए बादशाह के इन्तिख़ाब का इख़्तियार दिया गया था वोह सरदार किसी एक पर मुत्तफ़िक़ न हुवे बल्कि दो-दो सरदार हर एक के साथ हो गए। जब मुल्क के बुज़ुर्गों और हुकमा ने येह इख़्तिलाफ़ देखा तो कहा : "तुम्हारे दरमियान तो अभी से इख़्तिलाफ़ शुरूअ़ हो गया, सुनो ! हमारे मुल्क में एक ऐसा शख़्स है जो सब से अफ़्ज़ल है, उस की हिक्मत व दानाई में किसी को शक नहीं। वोह जिस को बादशाह मुक़र्रर कर देगा वोह बाइ़षे बरकत होगा। जाओ ! तुम उस के पास चले जाओ वोह फ़ुलां पहाड़ पर एक ग़ार में रहता है।

चुनान्चे, उन तीनों ने छे सरदारों में से एक को आ़रिज़ी त़ौर पर उमूरे सल्त़नत का निगरान बनाया और ख़ुद "उनतूनस" नामी राहिब के पास चले गए और ह़क़ीक़ते ह़ाल बयान करते हुवे कहा : "आप हम में से जिस पर राज़ी हो जाएंगे वोही बादशाह होगा।" राहिब ने कहा : "लोगों से दूर हो कर मुझे कुछ फ़ाइदा न पहुंचा। मेरी और लोगों की मिषाल तो उस शख़्स की त़रह है जिस के जानवरों के बाड़े में भेड़िये घुस आए हों तो वोह भेड़ियों से जान बचा कर एक और घर में पहुंचे तो वहां शेर मौजूद हों।" येह सुन कर उन तीनों ने कहा : "हम जिस काम के सिलसिले में आए हैं उस की त़रफ़ हमारे मुल्क के अहले इल्म हज़रात ने राहनुमाई की है, उन की राए है कि आप के मश्वरे में बरकत व भलाई होगी। बराए करम ! आप हम में से जिस को बेहतर गुमान करते हैं उस का तअ़य्युन फ़रमा दें ताकि वोह मुल्क के निज़ाम को संभाल सके।" राहिब ने कहा :

"मैं नहीं जानता कि तुम में से अफ़्ज़ल कौन है ? तुम सब एक ही चीज़ के त़ालिब हो और उस त़लब में तुम सब बराबर हो ।" तीनों में से एक ने सोचा कि अगर मैं इस ओ़हदे से बेज़ारी ज़ाहिर करूं तो शायद मुझे ही बादशाही सोंप दी जाए । चुनान्चे, उस ने राहिब से कहा : "मैं इस बादशाही मन्सब के बारे में अपने दोनों साथियों से हरगिज़ नहीं उलझूंगा ।" राहिब ने कहा : "मेरा तो येह गुमान है कि तेरे दोनों साथियों में से कोई भी तेरे अ़लाहि़दा हो जाने को नापसन्द नहीं करता । अब तुम ही इन दोनों में से जिसे चाहो बादशाहत के लिये चुन लो और मेरे कान में बता दो, मैं उसी को बादशाह बना दूंगा ।" उस ने राहिब की येह बात सुनी तो कहा : "आ़लीजाह ! आप जिसे चाहे इख़्तियार फ़रमा लें मैं येह काम नहीं कर सकता ।" राहिब ने कहा : "इस से तो येही ज़ाहिर हो रहा है कि तुम ने अपनी दस्तबरदारी के क़ौल से रुजूअ़ कर लिया है और तुम अब भी बादशाहत के मुतमन्नी (या'नी ख़्वाहिशमन्द) हो, अब फिर तुम तीनों मेरी नज़र में बराबर हो गए हो । मेरी बातें बड़ी ग़ौर से सुनना ! मैं तुम्हें नसीह़त करूंगा, दुन्या और इस में तुम्हारी मौजूदगी की मिषालें पेश करूंगा । तुम सब समझदार और अहले इ़ल्म हो । मुझे बताओ कि तुम्हारी बादशाहत और तुम्हारी उ़म्रें कितनी त़वील होंगीं ? तुम कितना अ़र्सा ज़िन्दा व बाक़ी रहोगे ?" तीनों ने कहा : "हमें नहीं मा'लूम कि हम कितना अ़र्सा ज़िन्दा रहेंगे ? हो सकता है पलक झपकने की मिक़्दार भी ज़िन्दा न रह सकें ।" राहिब ने कहा : "फिर तुम एक ग़ैर यक़ीनी चीज़ के धोके में क्यूं पड़े हो ?" कहा : "सिर्फ़ इस उम्मीद पर कि शायद हमारी उ़म्रें त़वील हों ।" राहिब ने पूछा : "अच्छा येह बताओ तुम्हारी उ़म्र कितनी है ?" कहा : "हम में से सब से छोटा पैंतीस (35) साल और सब से बड़ा चालीस (40) साल का है ।"

राहिब ने पूछा : "अच्छा येह बताओ, ज़ियादा से ज़ियादा तुम कितना अ़र्सा ज़िन्दा रहना पसन्द करते हो ?" कहा : "चालीस से ज़ियादा ज़िन्दा रहना हमें पसन्द नहीं और न ही इतनी उ़म्र के बा'द ज़िन्दा रहना फ़ाइदा मन्द है ।" राहिब ने कहा : "फिर तुम अपनी बक़िय्या उ़म्र में उस मुल्क को ह़ासिल करने की कोशिश क्यूं नहीं करते जो कभी बरबाद न होगा ? ऐसी ने'मतें क्यूं नहीं चाहते जो कभी ख़त्म न होंगी ? ऐसी लज़्ज़त व ज़िन्दगी को मह़बूब क्यूं नहीं रखते जिसे मौत भी ख़त्म नहीं करेगी ? न वोह ज़िन्दगी ख़त्म होगी, न वहां ग़म व परेशानी होगी न बीमारी । तुम ऐसी ने'मतों के लिये क्यूं कोशिश नहीं करते ?" कहा : "हमें उम्मीद है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हमें येह चीज़ें ज़रूर मिलेंगी ।" राहिब ने कहा : "तुम से पहले भी ऐसे लोग थे जो ऐसी ही उम्मीदें करते थे जैसी तुम करते हो । वोह भी ऐसी ही ख़्वाहिश करते थे जैसी तुम करते हो । उन्हों ने इन्हीं उम्मीदों की वजह से आ'माले सालिह़ा तर्क कर दिये यहां तक कि उन्हें मौत आ पहुंची फिर सज़ा उन का मुक़द्दर बनी और तुम तक उन की ख़बरें पहुंच चुकी हैं । जिसे मा'लूम हो कि साबिक़ा लोगों का क्या अन्जाम हुवा उस के लिये मुनासिब नहीं कि वोह बिग़ैर अ़मल के उम्मीद करे । और येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ है कि जो शख़्स लक़ोदक़ (वीरान) सह़रा में पानी साथ लिये बिग़ैर सफ़र करे तो क़रीब है कि प्यास की शिद्दत से मर जाए । मैं देख रहा हूं कि तुम अपने जिस्मों को हलाक करने के बारे में उम्मीदों पर भरोसा करते हो लेकिन ज़िन्दगी संवारने के लिये उम्मीदों

पर भरोसा नहीं करते, जिस घर की बरबादी का तुम्हें इ़ल्म है तुम उसी के ह़ुसूल के लिये कोशां हो और हमेशा रहने वाले घर को आ़रिज़ी दुन्या की वजह से छोड़ रहे हो। अच्छा येह बताओ कि जिस शहर में तुम ने मकानात व मह़ल्लात ता'मीर किये अगर तुम से कहा जाए कि अ़नक़रीब उस शहर पर एक ज़बरदस्त बादशाह बहुत बड़ा लश्कर ले कर ह़म्ला आवर होगा वोह तमाम इ़मारतें गिरा देगा और शहरियों को क़त्ल कर देगा'' तो क्या तुम ऐसे शहर में रहना पसन्द करोगे ? क्या ऐसी इ़मारतों में रिहाइश इख़्तियार करोगे ?'' तीनों ने कहा : ''नहीं, हम लम्ह़ा भर के लिये भी ऐसे शहर में रहना पसन्द नहीं करेंगे।'' राहिब ने कहा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तमाम बनी आदम का मुआ़लमा कुछ ऐसा ही है, अ़नक़रीब सब को मौत का सामना करना पड़ेगा, दुन्या का हर शहर बिल आख़िर ख़त्म हो जाएगा। हां ! मैं तुम्हें एक ऐसे शहर के मुतअ़ल्लिक़ बताता हूं जो कभी फ़ना न होगा। उस में अम्न ही अम्न होगा। वहां तुम्हें कोई ज़ालिम अपने ज़ुल्म का निशाना न बना सकेगा और न ही कोई जाबिर ह़ाकिम मुसल्लत़ होगा, वहां के फल व बाग़ात कभी ख़त्म व कम न होंगे।''

तीनों ने कहा : ''आप जो कहना चाहते हैं हम समझ गए हैं, लेकिन हमारे नफ़्स तो दुन्या की मह़ब्बत का जाम पी चुके हैं, अब उस दाइमी ने'मतों वाले शहर (जन्नत) का ह़ुसूल इतना आसान नहीं ?'' राहिब ने कहा : ''बड़े सफ़रों की वजह से बड़े बड़े मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होते हैं। तअ़ज्जुब है कि जाहिल और आ़लिम अपने आप को हलाक करने के बारे में बराबर कैसे हो गए। मगर हां ! येह बात है कि जो चोर चोरी की सज़ा से ना वाक़िफ़ हो वोह उस चोर से ज़ियादा मा'ज़ूर है जो सज़ा से वाक़िफ़िय्यत के बा वुजूद चोरी करे। तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो अपनी आख़िरत की भलाई के लिये माल ख़र्च नहीं करता बल्कि दूसरों पर ख़र्च करता है। मैं इस दुन्या के लोगों को देख रहा हूं कि येह अपने लिये आख़िरत में ज़ख़ीरा तय्यार नहीं करते। ऐसा लगता है जैसे इन्हें उन बातों पर यक़ीन ही नहीं जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बताईं और जिन्हें ले कर वोह पाक हस्तियां इस दुन्या में मबऊ़ष हुईं।'' तीनों ने कहा : ''हम इस क़ौम में किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानते जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लाई हुई बातों में से किसी की तक्ज़ीब करता हो।'' राहिब ने कहा : ''मुझे बहुत ज़ियादा तअ़ज्जुब है कि लोग कहते तो येह हैं कि हम तस्दीक़ करते हैं, लेकिन उन का अ़मल उन के क़ौल के ख़िलाफ़ है गोया वोह बिग़ैर आ'माल के षवाब की उम्मीद रखते हैं।'' तीनों ने राहिब से कहा : ''हमें बताइये कि आप को उमूर की मा'रिफ़त किस त़रह़ ह़ासिल हुई ? आप किस त़रह़ दुन्या की ह़क़ीक़त से आगाह हुवे ?'' कहा : ''जब मैं ने इस दुन्या की हलाकत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र किया तो येह बात वाज़ेह़ हुई कि हलाकत चार ऐसी चीज़ों की वजह से होती है जिन में लज़्ज़त रखी गई। और येह चार दरवाज़े हैं जो जिस्म में तरतीब दिये गए हैं। इन में से तीन सर में और एक पेट में है। दो आंखें, दो नथने और गला येह सर के दरवाज़े हैं। और चौथी राह जो पेट में है वोह शर्मगाह है। इन्ही दरवाज़ों से इन्सान पर बलाएं और मुसीबतें आती हैं। फिर जब मैं ने ग़ौरो फ़िक्र किया कि तक्लीफ़ के ए'तिबार से कौन सा दरवाज़ा ज़ियादा ख़फ़ीफ़ है ? तो सब से ज़ियादा ख़फ़ीफ़ दरवाज़ा नथने मह़सूस हुवे क्यूंकि येह ख़ुश्बू और दीगर सूंघने वाली चीज़ों को चाहते हैं। बक़िय्या तीन दरवाज़ों के बारे में ग़ौर किया

तो गले की मशक़्क़त सब से ज़ियादा हल्की मह़सूस हुई, क्यूंकि येह जिस्म का ऐसा रास्ता है जिस के ज़रीए़ से ग़िज़ा पेट तक पहुंचती है। और जब पेट का बरतन भर जाता है तो येह दरवाज़ा बराबर हो जाता है। लिहाज़ा मैं ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात वाले खानों को तर्क कर दिया और सिर्फ़ ऐसी ग़िज़ा पेट के बरतन में डाली जिस से जिस्म सलामत रह सके। फिर मैं ने शर्मगाह की मुसीबत के बारे में ग़ौर किया तो येह बात वाज़ेह हुई कि शर्मगाह और आंखों का तअ़ल्लुक़ दिल से है और आंखों का दरवाज़ा शहवत का साक़ी है और येह दोनों जिस्म की हलाकत का बड़ा सबब हैं। लिहाज़ा मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि मैं इन दोनों मुसीबतों को अपने से दूर कर दूंगा। क्यूंकि इन को छोड़ देना मेरे नज़्दीक अपने जिस्म को हलाकत में डालने से आसान है। ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ के बा'द येही बात सामने आई कि इन मुसीबतों से छुटकारा पाने का सब से बेहतरीन ह़ल लोगों से दूरी इख़्तियार करना है। फिर मैं ने दुन्या वालों को छोड़ा और इस मक़ाम पर इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो गया, इस त़रह़ मुझे गुनाहों की मुसीबत से नजात मिल गई। फिर मैं ने अपने अन्दर चार लज़्ज़तें मह़सूस कीं तो चार अच्छी ख़स्लतों से उन्हें दफ़्अ़ कर दिया।"

पूछा : "वोह लज़्ज़तें कौन सी हैं? और वोह ख़स्लतें क्या हैं?" राहिब ने कहा : "लज़्ज़तें तो येह हैं (1)...माल की लज़्ज़त, (2)...अवलाद की लज़्ज़त, (3)...बीवियों की लज़्ज़त और (4)...सल्त़नत की लज़्ज़त। और चार ख़स्लतें येह हैं (1) फ़िक्र (2) ग़म (3) ख़ौफ़ और (4) उस मौत का ज़िक्र जो लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली है। ह़क़ीक़त तो येह है कि किसी भी लज़्ज़त में कोई ख़ैर नहीं और मौत हर लज़्ज़त को ख़त्म कर देगी और कौन सा घर ऐसा है जो इस मुसीबतों के घर से ज़ियादा बुरा और शर अंगेज़ होगा? सुनो! तुम लोग उस शख़्स की त़रह़ हो जाओ जो अपने शहर से रिज़्क़ की तलाश में निकला तो पीछे से दुश्मनों ने उस शहर पर ह़म्ला कर दिया, वहां के मकीनों को सख़्त ईज़ाएं पहुंचाईं और तमाम मालो अस्बाब पर क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन वोह शख़्स पहले ही अपने शहर से चला गया और इस त़रह़ तक्लीफ़ों और मुसीबतों से मह़फ़ूज़ रहा। सुनो! मुझे अहले दुन्या पर बहुत ज़ियादा तअ़ज्जुब होता है कि वोह ग़म, परेशानी और तक्लीफ़ों के होते हुवे लज़्ज़ात से कैसे फ़ाइदा उठाते हैं? तअ़ज्जुब और शदीद तअ़ज्जुब है उन अ़क़्ल मन्दों पर जो अपने जिस्मों की सलामती नहीं चाहते। ऐसा लगता है कि वोह अपने आप को इस त़रह़ हलाक करना चाहते हैं जैसे "**सांप वाले**" ने अपने आप को हलाक किया।" पूछा : वोह "**सांप वाला**" कौन था? ज़रा तफ़्सील से बताइये!

सोने का अन्डा देने वाला सांप

राहिब ने कहा : मन्क़ूल है कि एक शख़्स के घर में एक सांप रहता था, सब घर वालों को उस के बिल का मा'लूम था। सांप रोज़ाना सोने का एक अन्डा देता जिस का वज़्न एक मिष्क़ाल होता। साहि़बे मकान रोज़ाना उस के बिल से सोने का अन्डा ले आता। उस ने घर वालों को बता दिया कि वोह इस मुआ़मले को पोशीदा रखें। कई माह येह सिलसिला चलता रहा और वोह सोने का अंडा ह़ासिल करता रहा। एक दिन सांप अपने बिल से निकला और उस की बकरी को डस लिया।

सांप का ज़हर ऐसा जान लेवा था कि फ़ौरन बकरी की मौत वाक़ेअ़ हो गई। सब घर वाले बहुत ग़ज़बनाक व परेशान हुवे तो उस शख़्स ने कहा : "हमें सांप से जो नफ़्अ़ हासिल होता है वोह बकरी की क़ीमत से कहीं ज़ियादा है, लिहाज़ा ग़म की कोई बात नहीं।" इस त़रह़ मुआ़मला रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गया। साल के शुरूअ़ में सांप फिर बाहर आया और उस के पालतू गधे को डस लिया, गधा फ़ौरन मर गया। उस शख़्स ने घबराते हुवे कहा : "मैं देख रहा हूं कि येह सांप हमें मुसलसल नुक़्सान पहुंचा रहा है। जब तक येह नुक़्सान जानवरों तक मह़दूद रहेगा मैं सब्र करूंगा इस के बा'द हरगिज़ सब्र नहीं करूंगा।" फिर दो साल तक सांप ने उन्हें कोई तक्लीफ़ न पहुंचाई, तमाम घर वाले सांप से बहुत ख़ुश रहने लगे और इस के मुआ़मले को लोगों पर पोशीदा रखा। फिर एक दिन सांप अपने बिल से बाहर निकला और उन के सोते हुवे ख़ादिम को डस लिया। उस बेचारे ने मदद के लिये अपने मालिक को पुकारा तो मालिक पहुंचा लेकिन इतने में ज़हर की वजह से ग़ुलाम का जिस्म फट चुका था। उस ने कहा : "मैं देख रहा हूं कि इस सांप का ज़हर बहुत ख़त़रनाक है, येह जिसे डस लेता है उस की मौत वाक़ेअ़ हो जाती है। अब मैं अपने घर वालों के बारे में इस से मुत़्मइन नहीं हो सकता कहीं ऐसा न हो कि येह इन में से किसी को डस ले। इसी सोच व परेशानी में कई दिन गुज़र गए। फिर उस ने कहा : "इस सांप की वजह से मुझे माली नुक़्सान हो रहा है लेकिन जो फ़ाइदा इस के सोने के अन्डों की वजह से मुझे ह़ासिल हो रहा है वोह नुक़्सान से कहीं ज़ियादा है, लिहाज़ा मुझे परेशान नहीं होना चाहिये।" इस त़रह़ उस लालची शख़्स ने अपने आप को मुत़्मइन कर लिया।

कुछ दिनों बा'द सांप ने उस के बेटे को डस लिया। उस ने फ़ौरन त़बीब को बुलाया लेकिन त़बीब इलाज न कर सका और उस के बेटे की मौत वाक़ेअ़ हो गई। अब तो मां-बाप को बेटे की मौत का ऐसा ग़म हुवा कि सांप से पहुंचने वाला तमाम नफ़्अ़ भूल गए और ग़ज़बनाक हो कर कहा : "अब इस सांप में कोई भलाई नहीं, बेहतर येही है कि इस मूज़ी को फ़ौरन क़त्ल कर दिया जाए।" सांप ने उन की येह बातें सुनीं तो कुछ दिनों तक ग़ाइब रहा इस त़रह़ उन्हें सोने का अन्डा न मिल सका। जब ज़ियादा अ़र्सा हो गया तो अन्डा न मिलने की वजह से उन की लालची त़बीअ़त में बेचैनी होने लगी। चुनान्चे, वोह और उस की बीवी, सांप के बिल के पास आए, वहां धूनी दी, ख़ुश्बू महकाई और इस त़रह़ पुकारने लगे : "ऐ सांप तू दोबारा हमारे पास आ जा ! हम न तो तुझे मारेंगे और न ही किसी क़िस्म का नुक़्सान पहुंचाएंगे, जल्दी से हमारे पास आ जा।" सांप ने येह सुना तो वापस आ गया और उन की ख़ुशियां फिर लौट आईं। वोह अपने बेटे और ग़ुलाम की मौत को भूल गए और ऐसे रहने लगे गोया इस मूज़ी जानवर से कोई नुक़्सान पहुंचा ही न हो। फिर एक दिन सांप ने सोते हुवे उस की ज़ौजा को डस लिया वोह शिद्दते दर्द से चीख़ने लगी और तड़प तड़प कर हलाक हो गई। अब वोह लालची शख़्स अकेला रह गया, न अवलाद रही और न ही बीवी। बिल आख़िर उस ने सांप वाला मुआ़मला अपने भाइयों और दोस्तों के सामने ज़ाहिर कर ही दिया। सब ने येही मश्वरा दिया कि "इस मूज़ी सांप को जल्द अज़ जल्द क़त्ल कर दे, तू ने इसे क़त्ल करने के मुआ़मले में बड़ी बे एह़तियात़ी बरती इस का धोका और बुराई तेरे सामने कब की ज़ाहिर हो चुकी थी, तू ने ख़ुद अपने आप को हलाकत में डाला है। बेहतर येही है कि जितना जल्दी हो सके इसे क़त्ल कर दे।"

चुनान्चे, वोह शख़्स अपने घर आया और सांप की घात में बैठ गया। अचानक सांप के बिल के क़रीब उसे एक नायाब मोती नज़र आया जिस का वज़्न एक मिष्क़ाल था। मोती देख कर उस की लालची त़बीअ़त ख़ुश हो गई। वोह लालच के अ़मीक़ गढ़े में गिरता ही चला गया, शैत़ान ने उसे बहकाया तो दौलत की हवस ने उस की आंखों पर ग़फ़्लत का पर्दा डाल दिया। वोह सब बातें भूल कर कहने लगा : "ज़माना त़बीअ़तों को मुख़्तलिफ़ कर देता है, इस सांप की त़बीअ़त भी मुख़्तलिफ़ हो गई होगी जिस त़रह़ सोने के अन्डों के बजाए येह मोती देने लगा है, इसी त़रह़ इस का ज़ह्र भी ख़त्म हो गया होगा, लिहाज़ा मुझे सांप से बे ख़ौफ़ हो जाना चाहिये।" येह कह कर उस ने सांप के बिल के क़रीब झाड़ू दी, ख़ुश्बू महकाई, पानी छिड़का तो सांप दोबारा उस के पास आने लगा। अब येह लालची शख़्स क़ीमती मोती पा कर बहुत ख़ुश रहने लगा और सांप की साबिक़ा धोकेबाज़ी को भूल गया। फिर उस ने सारा सोना और मोती बरतन में डाल कर एक गढ़ा खोद कर ज़मीन में दबा दिया और उस पर सर रख कर सो गया। रात को सांप ने उसे भी डस लिया। शिद्दते दर्द की वजह से उस की चीख़ें बुलन्द होने लगीं तो पड़ोसी भाग कर आए और उसे डांटते हुवे कहा : "तुम ने इसे क़त्ल करने में सुस्ती क्यूं कि, और लालच में आ कर अपनी जान क्यूं दे दी ?" लालची शख़्स ख़ामोश रहा और सोने से भरा हुवा बरतन निकाल कर अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के ह़वाले करते हुवे अपने फ़े'ल से मा'ज़िरत की। दोस्तों और अ़ज़ीज़ों ने कहा : "आज के दिन तेरे नज़्दीक इस माल की कोई वक़्अ़त नहीं क्यूंकि अब येह दूसरों का हो जाएगा और तू ख़ाली हाथ चला जाएगा।" कुछ ही देर बा'द वोह लालची शख़्स हलाक हो गया और सारा माल दूसरों के लिये छोड़ गया। लोगों ने कहा : "इस महरूम शख़्स ने ख़ुद ही अपने आप को हलाकत में डाला ह़ालांकि हम सब ने इसे कहा था कि इस मूज़ी सांप को फ़ौरन हलाक कर देना लेकिन मालो दौलत के लालच ने इसे अन्धा कर दिया।"

येह वाक़िआ़ सुनाने के बा'द राहिब ने कहा : "मुझे तअ़ज्जुब है उन लोगों पर जो सांप वाली ह़िकायत जानने के बा वुजूद भी इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते ! ऐसा लगता है कि उन का येह क़ौल कि "हमें उम्मीद है कि आ'माल पर षवाब मिलेगा।" सिर्फ़ उन की ज़बानों तक मह़दूद है क्यूंकि उन के आ'माल इस क़ौल की मुख़ालफ़त करते हैं। हलाकत है उन लोगों के लिये जो जानने के बा वुजूद ग़ाफ़िल हैं, अगर उन को भी वोह शै पहुंची जो "**अंगूर वाले**" को पहुंची थी तो उन के लिये हलाकत व बरबादी है।" पूछा : "हुज़ूर ! "**अंगूर वाले**" के साथ क्या वाक़िआ़ पेश आया हमें तफ़्सीलन बताइये ?"

तीन मज़दूरों का क़िस्सा

राहिब ने कहा : "मश्हूर है कि एक मालदार शख़्स के खेत में अंगूर की बेलें और फलों के दरख़्त थे। उस ने अंगूरों की देख भाल के लिये तीन मज़दूरों को बुलाया और सब को खेत का एक एक ह़िस्सा देते हुवे कहा : "तुम मेरे खेत की ह़िफ़ाज़त करना अंगूरों में से जितना खाओ खा लेना, लेकिन बक़िय्या फलों से हरगिज़ हरगिज़ न खाना, वरना ! तुम पर सज़ा लाज़िम हो

जाएगी। मैं चन्द दिनों बा'द आ कर खेत को देखूंगा, ख़बरदार ! मेरी नाफ़रमानी से बचना और अंगूरों के इ़लावा कोई भी फल हरगिज़ न खाना।" येह कह कर मालिक चला गया। एक मज़्दूर ने तो अपना हर वोह काम किया जिस का हुक्म दिया गया था, उस ने सिर्फ़ अंगूर खाने पर ही इक्तिफ़ा किया और उन दरख़्तों के क़रीब न गया जिन से मन्अ़ किया गया था। दूसरे ने भी खेत की ख़ूब देख भाल की, कुछ दिन तो वोह दूसरे फल खाने से रुका रहा लेकिन जल्द ही उस के नफ़्स ने फल खाने पर उक्साया और उस ने फल खाना शुरूअ़ कर दिये। तीसरे मज़्दूर ने ख़ूब फल खाए और खेत की देख भाल की त़रफ़ बिल्कुल मुतवज्जेह न हुवा, नतीजतन उस के ह़िस्से की खेती तबाह हो गई। जब खेत का मालिक आया तो पहले मज़्दूर का अ़मल देख कर बहुत ख़ुश हुवा क्यूंकि न तो उस ने ममनूअ़ फल खाए थे और न ही काम में सुस्ती की थी। खेत वाले ने उस की ख़ूब ता'रीफ़ की और मुक़र्ररा उजरत से ज़ियादा माल दिया। फिर दूसरे मज़्दूर के पास आया तो उस के काम को देख कर बहुत ख़ुश हुवा लेकिन जब फ़लों में कमी देखी तो कहा : "फलों में येह कमी कैसी ?" मज़्दूर ने कहा : 'मैं ने कुछ फल खाए हैं।" मालिक ने कहा : "क्या मैं ने मन्अ़ न किया था ?" कहा : "मन्अ़ तो किया था लेकिन मुझे आप से अ़फ़्वो दरगुज़र की उम्मीद थी, बस इसी उम्मीद ने मुझे इस काम पर उक्साया।" मालिक ने कहा : "अ़फ़्वो दर गुज़र का मुआ़मला उस वक़्त होता जब मन्अ़ न किया होता, सख़्ती से मन्अ़ करने के बा वुजूद तू ने मेरी नाफ़रमानी की, लिहाज़ा तुझे सज़ा ज़रूर मिलेगी, मगर तुझ पर ज़ुल्म हरगिज़ न होगा, जितना जुर्म उतनी ही सज़ा।" फिर तीसरे मज़्दूर के पास आया तो देखा कि उस के ह़िस्से का खेत बरबाद हो चुका है और अंगूरों की बेल भी ज़ाएअ़ हो चुकी है। मालिक ने ग़ज़बनाक हो कर कहा : "तेरी ख़राबी हो येह मैं क्या देख रहा हूं ?" मज़्दूर ने कहा : "सब कुछ आप के सामने है।" मालिक ने कहा : "मैं देख रहा हूं कि न तो, तू ने खेत की देख भाल की और न ही इस बात से रुका जिस से मैं ने मन्अ़ किया था। इस का नतीजा येह हुवा कि तेरे ह़िस्से का खेत और फल बरबाद हो गए। मैं तुझे ऐसी सज़ा दूंगा जिस का तू ह़क़दार है।"

जब लोगों के सामने इन तीनों का मुआ़मला पेश हुवा तो उन्हों ने कहा : "पहला मज़्दूर कितना अच्छा था कि दियानत से काम लिया लिहाज़ा मालिक की त़रफ़ से अच्छी जज़ा का मुस्तह़िक़ हुवा। और दूसरे ने अह़मक़ाना ह़रकत की अगर वोह सब्र करता और ममनूअ़ फल न खाता तो येह भी पहले मज़्दूर की त़रह़ इन्आ़म व इकराम का मुस्तह़िक़ होता। और तीसरा मज़्दूर कितना बुरा था कि न तो वोह काम किया जो उस पर लाज़िम था बल्कि नाफ़रमानी करते हुवे ममनूअ़ फल भी ख़ूब खाए उस का शर बहुत बड़ा था।

येह ह़िकायत सुनाने के बा'द **राहिब ने कहा :** "दुन्या में तुम्हारे आ'माल की मिषाल भी इन मज़्दूरों की त़रह़ है, रोज़े जज़ा हर शख़्स को उस के अ़मल के मुत़ाबिक़ जज़ा दी जाएगी। तअ़ज्जुब है उन लोगों पर जो लम्बी लम्बी उ़म्रों की ख़्वाहिश करते हुवे, लम्बी लम्बी उम्मीदें बान्धते हैं। मैं ने लोगों में अवलाद को वालिदैन के लिये सब से बड़ा दुश्मन पाया। वालिदैन अपनी अवलाद

की खुशियों के लिये क्या कुछ नहीं करते, येह अपने बदनों को दूसरों की दुन्या संवारने के लिये थका डालते हैं। लज़्ज़त व सुरूर में दूसरों को शामिल कर लेते और फिर "**कश्ती वाले**" की त़रह़ हो जाते हैं।" सरदारों ने कहा : "**कश्ती वाला कौन था** ?" और इस का क्या मुआ़मला था ?"

कश्ती बनाने वाला कैसे हलाक हुवा.....?

राहिब ने कहा : "मश्हूर है कि किसी शहर में एक बढ़ई रहता था। वोह रोज़ाना एक दिरहम कमाता, आधा दिरहम अपने बुढ्ढे वालिद, बीवी और दो बच्चों पर ख़र्च करता और आधा संभाल कर रख लेता। अ़र्सए दराज़ तक इसी त़रह़ मेह़नत व मज़्दूरी कर के वोह अपने घर का निज़ाम अह़सन त़रीक़े से चलाता रहा। एक दिन उस ने अपनी जम्अ़ कर्दा रक़म शुमार की तो वोह सो (100) दीनार से कुछ ज़ाइद थी। उस ने कहा : "मैं तो बहुत ख़सारे में रहा, अगर मैं कश्ती तय्यार कर के तिजारत करता तो आज ख़ूब मालदार होता, अब मुझे कश्ती बनानी चाहिये।" लिहाज़ा उस ने अपना इरादा अपने वालिद पर ज़ाहिर किया तो उस ने कहा : "ऐ मेरे बेटे ! हरगिज़ येह काम न करना, मुझे एक सितारा शनास (सितारों का इ़ल्म रखने वाले) ने बताया था कि तेरा येह बेटा समन्दर में ग़र्क़ हो कर मरेगा और येह उस वक़्त की बात है जब तू पैदा हुवा था।" बढ़ई ने कहा : "क्या उस ने येह बताया था कि मुझे मालो दौलत मिलेगा ?" बाप ने कहा : "हां ! इसी लिये तो मैं ने तुझे तिजारत से मन्अ़ कर के ऐसा काम तलाश किया जिस के ज़रीए़ रोज़ाना उजरत मिलती रहे।" बढ़ई ने कहा : "सितारा शनास के क़ौल के मुत़ाबिक़ अगर मुझे माल मिलेगा तो येह उसी सूरत में मुमकिन है कि मैं समन्दरी तिजारत करूं।" बाप ने कहा : "मेरे बच्चे ! तू अपने इस इरादे से बाज़ आ जा मुझे ख़ौफ़ है कि तू हलाक हो जाएगा।" बेटे ने कहा : "तिजारत के ज़रीए़ मुझे माल तो ज़रूर ह़ासिल होगा, अगर मैं ज़िन्दा रहा तो बक़िय्या उ़म्र ख़ैर से गुज़रेगी, अगर मर गया तो अपनी अवलाद के लिये बहुत सी दौलत छोड़ जाऊंगा।" बाप ने कहा : "मेरे बेटे ! अवलाद की वजह से अपनी जान हलाकत में न डाल।" बेटे ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ अपनी राए तब्दील न करूंगा, मैं तिजारत ज़रूर करूंगा।" बाप मजबूर हो कर ख़ामोश हो गया। बढ़ई ने कश्ती तय्यार कर के उसे ख़ूब सजाया फिर उस में कई क़िस्म का सामाने तिजारत रख कर सफ़र पर रवाना हो गया। एक साल बा'द जब वापस आया तो उस के पास सो (100) क़नत़ार सोने जितनी रक़म मौजूद थी। बेटे को सह़ीह़ सलामत देख कर बाप ने अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया और उस के लाए हुवे माल की ता'रीफ़ करते हुवे कहा : "मैं ने नज़्र मानी थी कि अगर मेरा बेटा इस सफ़र से सलामती के साथ वापस आ गया तो मैं उस की बनाई हुई कश्ती को आग लगा दूंगा।" बेटे ने कहा : "अब्बा जान ! आप ने मेरी हलाकत और मेरे घर की बरबादी का इरादा कर लिया है ?" बाप ने कहा : मेरे बेटे ! मैं ने येह इरादा तेरी ज़िन्दगी और तेरे घर की तादेर सलामती के लिये किया है। मुआ़मलात को मैं तुझ से कहीं ज़ियादा जानता हूं। मैं देख रहा हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे वुस्अ़त दी है अब तुझे चाहिये कि उस की रिज़ा वाले काम कर और उस का शुक्र बजा ला कि उस ने तुझे मुफ़्लिसी से बचा कर अमीर तरीन शख़्स बना दिया

है। अब तू उस की ख़ूब इ़बादत कर, मैं तेरे बदन की सलामती चाहता हूं और मुझे कोई ग़रज़ नहीं। तू मेरी बात मान ले।"

बेटे ने कहा : "मैं चन्द दिन के लिये सफ़र पर जाऊंगा और जल्द ही बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ ले कर आऊंगा।" येह कह कर बढ़ई दोबारा सफ़र पर रवाना हो गया। जब वापस आया तो उस के पास पहले से कई गुना ज़ियादा माल था। बढ़ई ने अपने बाप से कहा : "क्या ख़याल है अगर मैं ने आप की बात मानी होती तो क्या आज मुझे इतनी दौलत मिलती ?" बाप ने कहा : "मेरे बच्चे ! मैं देख रहा हूं कि तू अपने ग़ैर के लिये मेह़नत व कोशिश कर रहा है, अगर तू जानता और ह़क़ीक़ते ह़ाल से वाक़िफ़ होता तो ख़्वाहिश करता कि : "ऐ काश ! मेरे और मेरे इस माल के दरमियान मशरिक़ो मग़रिब जितना फ़ासिला होता।" बेटे ने कहा : "अब्बा जान ! आप येह सारी बातें एक सितारे शनास के क़ौल की वजह से कह रहे हैं। मेरा गुमान है कि उस का येह क़ौल कि "**मुझे माल मिलेगा**" दुरुस्त है और येह क़ौल दुरुस्त नहीं कि "**मैं ग़र्क़ हो कर मरूंगा**"।" येह कह कर बढ़ई ने दूसरी कश्ती बनाने का हुक्म दिया। चालीस दिन में उस का सामाने तिजारत बिल्कुल तय्यार हो गया तो उस के बाप ने कहा : "मेरे बेटे ! इस मरतबा भी मिन्नत समाजत करना तुझे न रोक सकेगा क्यूंकि मैं ने ऐसी निशानियां देख ली हैं कि जिन की वजह से मेरे नज़्दीक सितारा शनास की बात सच हो गई है।" इतना कह कर बुढ्ढा बाप अपने बेटे की जुदाई पर ज़ारो क़ित़ार रोने लगा तो बेटे ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे आप पर फ़िदा करे ! सिर्फ़ इस मरतबा और सब्र कर लें। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे सह़ीह़ व सालिम वापस लौटा दिया तो ज़िन्दगी भर कभी भी बह़री सफ़र न करूंगा।" बुढ्ढे बाप ने कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे यक़ीन हो चला है कि अब तू ज़ाएअ़ हो जाएगा। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस मरतबा तू वापस नहीं आएगा। यहां तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ हो।" फिर बुढ्ढे बाप ने उस की मिन्नत समाजत की और ख़ूब रो रो कर समझाया मगर उस ने अपने बुढ्ढे बाप की बातों पर कोई तवज्जोह न दी और दोनों कश्तियों को ले कर सफ़र पर रवाना हो गया। जब कश्तियां बीच समन्दर में पहुंचीं तो अचानक तूफ़ान आ गया और दोनों कश्तियां आपस में टकरा कर तबाहो बरबाद हो गईं। ग़र्क़ होते वक़्त ताजिर को अपने बाप की बातें याद आ रही थीं वोह सोच रहा था कि मैं ने अपने बाप की नाफ़रमानी क्यूं की ? लेकिन अब मुआ़मला उस के हाथ से निकल चुका था इस त़रह़ वोह और उस के तमाम साथी मअ़ साज़ो सामान समन्दर में ग़र्क़ हो कर मौत के घाट उतर गए।

फिर उस का बुढ्ढा बाप भी चन्द ही दिनों में बेटे की जुदाई के ग़म में इस दारे फ़ानी से कूच कर गया। बढ़ई की सारी दौलत उस की ज़ौजा, बेटी और बेटे में तक़्सीम हो गई। उस की ज़ौजा ने दूसरी शादी कर ली, बेटी और बेटे की भी शादी हो गई। और अब बढ़ई के माल में उस की ज़ौजा (जो की बेवा हो चुकी थी), उस का नया शोहर, उस की बेटी का शोहर और उस के बेटे की बीवी भी शरीक हो गए। हर वोह माल जिसे बद बख़्त लोग जम्अ़ करते हैं उस का येही अन्जाम होता है।"

राहिब ने कहा : "मुझे उन लोगों पर शदीद तअ़ज्जुब होता है जो अपने जिस्म से बुख़्ल करते और दूसरों पर ख़र्च करते हैं। ऐ इन्सान ! तू कम माल पर ही गुज़ारा कर ले, इस से थोड़ी सी तक्लीफ़ तो होगी लेकिन फ़ाइदा बहुत ज़ियादा है। अगर तू ज़ियादा माल के पीछे न पड़ेगा तो मन्ज़िल तक पहुंच जाएगा। अगर कुछ जम्अ़ ही करना है तो अपनी जान के लिये ज़ख़ीरा कर, ग़ैरों के लिये अपनी जान को हलाकत में न डाल, वरना तुझे भी वोही चीज़ लाहिक़ होगी जो "**मछलियों के शिकारी**" को लाहिक़ हुई।" पूछा : "**मछली के शिकारी**" को क्या चीज़ लाहिक़ हुई ?"

मछलियों का शिकारी

राहिब ने कहा : मश्हूर है कि एक शिकारी के जाल में बहुत बड़ी मछली फंसी तो उस ने कहा : "इसे खाने का मुझ से ज़ियादा कोई ह़क़दार नहीं।" फिर उसे ख़याल आया कि येह मछली अपने फ़ुलां पड़ोसी को तोह़फ़ा दे देनी चाहिये। चुनान्चे, वोह मछली को अपने साहिबे हिक्मत पड़ोसी के पास ले गया। उस ने इस की क़ीमत देना चाही तो शिकारी ने इन्कार कर दिया। पड़ोसी ने कहा : "तुम ने येह सब कुछ क्यूं किया ? क्या तुम्हारी कोई ह़ाजत है जिसे मैं पूरा करूं ?" उस ने कहा : "नहीं, मैं कुछ नहीं चाहता, मैं ने तो ईषार की निय्यत की थी।" पड़ोसी ने कहा : "मैं ने तुम्हार तोह़फ़ा क़बूल किया।" फिर उस ने ख़ादिम को हुक्म दिया कि येह मछली उठाओ और हमारे फ़ुलां मा'ज़ूर व मिस्कीन पड़ोसी को दे आओ। जब शिकारी ने येह मुआ़मला देखा तो सर पकड़ कर रह गया और कहा : "अफ़्सोस है उस पर, जिस ने अपनी मछली न खाई और उस के पास पहुंच गई जो उसे सब से ज़ियादा नापसन्द था।" जब साहिबे हिक्मत पड़ोसी ने शिकारी की येह बात सुनी तो कहा : "मैं ने वोह मछली, मिस्कीन पर सदक़ा कर के अपनी मोह़ताजी के दिन के लिये ज़ख़ीरा कर ली है।" शिकारी ने कहा : "वोह कौन सा दिन है ?" ह़कीम पड़ोसी ने कहा : "वोह क़ियामत का दिन है लोग उस दिन अपने अपने ज़ख़ीरों के मोह़ताज होंगे।" येह सुन कर शिकारी बहुत ज़ियादा मुतअ़ज्जिब हुवा और वापस अपने घर चला आया।"

राहिब ने कहा : "मुझे तअ़ज्जुब है इस अम्र पर जिस ने समझदारों और जाहिलों को धोके में डाल दिया। यहां तक कि वोह लम्बी लम्बी उम्मीदों और लालच की वजह से हलाक हो गए, जैसा कि "**यहूदी व नसरानी एक साथ हलाक हुवे।**" पूछा : "हमें बताइये कि उन दोनों की हलाकत किस त़रह़ हुई ?"

यहूदी और नस्रानी की हलाकत

राहिब ने कहा : मश्हूर है कि एक यहूदी और नस्रानी सफ़र पर रवाना हुवे, रास्ते में आबादी के क़रीब कुंवां था और आगे एक वसीओ़ अ़रीज़ सह़रा, जिस की वुस्अ़त चार दिन की राह थी। दोनों के पास मश्कीज़े थे, यहूदी ने अपना मश्कीज़ा पानी से भर लिया, जब नस्रानी भरने लगा तो कहा : "एक मश्कीज़ा पानी हमें काफ़ी है तुम अपना मश्कीज़ा भर कर ख़्वाह मख़्वाह वज़्न में इज़ाफ़ा मत करो।" नस्रानी ने कहा : "मैं इस रास्ते से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ हूं शायद येह एक मश्कीज़ा हमें काफ़ी न हो।" यहूदी ने कहा : "तुम येही चाहते हो कि जब तुम्हें प्यास लगे तो मैं

तुम्हें पानी पिलाऊं ?" उस ने कहा : "हां ।" यहूदी ने कहा : "बस अपना मश्कीज़ा न भरो, जब तुम्हें प्यास लगेगी पानी मिल जाएगा ।" येह सुन कर नस्रानी ने अपना मश्कीज़ा खाली ही रखा ह़ालांकि वोह जानता था कि अ़नक़रीब उसे प्यास की शिद्दत का सामना करना पड़ेगा लेकिन वोह यहूदी के मश्कीज़े की उम्मीद पर पानी के बिग़ैर ही सह़रा की त़रफ़ चल दिया । सख़्त गर्म हवाओं की वजह से बार बार प्यास लगी और बिल आख़िर पानी ख़त्म हो गया ह़ालांकि अभी आधा सफ़र बाक़ी था । प्यास की शिद्दत ने उन्हें निढाल कर दिया, उन्हें अपनी मौत का यक़ीन हो चला था । नस्रानी ने यहूदी से कहा : "हम सिर्फ़ तेरे बुरे मश्वरे की वजह से हलाक हुवे हैं और तू ने येह इस लिये किया कि तुम लोग हमारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बुग़्ज़ रखते हो ।" यहूदी ने कहा : "तेरा नास हो ! क्या तू मुझे ऐसा बुरा समझता है ? भला मैं अपने आप को और तुझे जान बूझ कर हलाकत में क्यू डालता ?" नस्रानी ने कहा : "तू अल्लाह तआ़ला की रह़मत से दूर हो ! तू ने मुझ पर रह़म नहीं किया ।" यहूदी ने कहा : "तेरा नास हो ! मैं ने तुझे मश्कीज़ा भरने से सिर्फ़ इस लिये रोका था कि तेरा गधा बोझ की ज़ियादती से बचा रहे और तुझे पैदल न चलना पड़े ।" नस्रानी ने कहा : "तू ने येह सब काम हम से पुरानी अ़दावत की वजह से किये हैं, मेरे नज़्दीक पैदल चलने की मशक़्क़त, मौत की मशक़्क़त से कहीं ज़ियादा आसान थी । अब हमारी मौत यक़ीनी है और येह बात मुझे ग़मगीन करेगी कि हम दोनों एक साथ मरें फिर कोई नस्रानी आ़लिम गुज़रे और वोह हम दोनों की इकठ्ठी नमाज़े जनाज़ा पढ़े ।" यहूदी ने कहा : "तेरा बुरा हो ! तू इस बात को क्यूं नापसन्द करता है कि हम पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए और हमें एक साथ दफ़्न किया जाए ?" उस ने कहा : "इस लिये कि तू अपने आप को और अपने साथी को हलाक करने वाला है, अब येह जाइज़ नहीं कि तेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए ।"

येह सुन कर यहूदी ख़ामोश हो गया । लक़ो दक़ (या'नी चटयल व वीरान) सह़रा में गर्म हवाएं चल रही थीं और पानी का एक क़त़रा भी न था । प्यास की शिद्दत से मौत उन के सरों पर मंडला रही थी । इतने में उन्हें एक शख़्स नज़र आया जो अपने गधे पर पानी के दो मश्कीज़े रखे हुवे जा रहा था । येह दोनों दौड़ते हुवे उस की त़रफ़ गए और कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! पानी पिला कर हम पर एह़सान कर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाए ।" उस ने कहा : "येह ऐसा रास्ता है जहां पानी मिलने की कोई उम्मीद नहीं ।" दोनों ने कहा : "तेरा दीन क्या है ?" कहा : "मेरा वोही दीन है जो तुम्हारा है ।" उन्हों ने कहा : "हम में से एक तो यहूदी है और दूसरा नस्रानी फिर तेरा दीन हमारी त़रह़ कैसे हो सकता है ?" गधे वाले ने कहा : "यहूदी, नस्रानी या मुसलमान जब अपनी किताब व दीन पर अ़मल न करें और लालच व खोखली उम्मीदों के धोके में पड़ जाएं तो उन्हें वोही चीज़ लाह़िक़ होती है जो तुम दोनों को लाह़िक़ हुई ।" येह कह कर वोह आगे बढ़ गया और पानी का एक क़त़रा भी उन्हें न दिया ।

राहिब ने कहा : "राहे आख़िरत के मुसाफ़िर को चाहिये कि वोह सफ़रे आख़िरत के लिये भी ऐसा एहतिमाम करे जैसा दुन्यवी सफ़र के लिये करता है। इन्सान को येह बात ज़ैब नहीं देती कि न तो गुनाहों से बचे और न ही कभी नेक अ़मल करे, और फिर भी रह़मत व मग़्फ़िरत की आस पर सब नेक आ'माल तर्क कर दे और ख़ूब गुनाह करे। समझदार शख़्स ऐसी ना रवा ह़रकत कभी नहीं करता, मुझे सख़्त तअ़ज्जुब होता है उन लोगों पर जो अपनी बुराइयां मख़्लूक़ से तो छुपाते हैं लेकिन ख़ालिक़े काइनात عَزَّوَجَلَّ से ह़या करते हुवे कभी कोई गुनाह तर्क नहीं करते ह़ालांकि वोह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ रिज़्क़ देने वाला और वोही जज़ा व सज़ा देने वाला है। क्या तुम इस बात से बेख़ौफ़ हो गए हो कि तुम्हें वोह मुसीबत पहुंचे जो "**राहिब**" को पहुंची थी ?" सरादरों ने कहा : हमें बताइये कि "**राहिब**" को क्या मुसीबत पहुंची थी ?"

बनावटी राहिब की हलाकत

कहा जाता है कि एक शख़्स शहद, घी, तेल और शराब बेचा करता था। ख़रीदते वक़्त तो साफ़ सुथरी और ख़ालिस चीज़ें ख़रीदता लेकिन बेचते वक़्त ख़ूब मिलावट करता और महंगे दामों बेचता। उस की दाढ़ी बहुत प्यारी व ह़सीन थी जो भी उसे देखता तो कहता कि तुझे तो बहुत बड़ा राहिब होना चाहिये तेरी दाढ़ी बिल्कुल राहिबों जैसी है। लोगों की बात सुन कर उस शख़्स के दिल में येह बात आई कि "मुझे रहबानिय्यत का रास्ता इख़्तियार करना चाहिये ताकि लोगों में मेरी क़द्रो मन्ज़िलत बढ़ जाए।" चुनान्चे, उस ने अपनी बीवी से कहा : "लोग मेरी दाढ़ी की ख़ूब ता'रीफ़ करते हैं लेकिन मेरे अ़मल से बे ख़बर हैं, अगर मैं रहबानिय्यत का रास्ता इख़्तियार कर लूं तो ख़ूब मालामाल हो जाऊंगा और लोगों में मेरा मर्तबा बुलन्द हो जाएगा। येह सुन कर उस की ज़ौजा ने रोते हुवे कहा : "क्या तू मुझे बेवाओं और अपने बच्चों को यतीमों की त़रह़ कर देगा।" उस ने कहा : "तेरा नास हो ! मैं इ़बादत की निय्यत से कब रहबानिय्यत इख़्तियार कर रहा हूं। मैं तो येह चाहता हूं कि लोगों में मेरा मर्तबा बुलन्द हो और मैं अपनी क़ौम का मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स बन जाऊं।" औ़रत ने कहा : "कहीं ऐसा न हो कि जब तू राहिबों से मिले और तुझे इ़बादत की ह़लावत नसीब हो तो फिर तू भी उन राहिबों की त़रह़ अपने सब घर वालों को छोड़ दे।"

उस ने क़सम खा कर यक़ीन दिलाया कि ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। बिल आख़िर उस ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल होने वाली कुतुब और इन्जील वग़ैरा की ता'लीम ह़ासिल की, सर मुन्डाया और बहुत बड़े गिरजा घर में चला गया जहां राहिबों की एक जमाअ़त पहले ही से मौजूद थी। जब राहिबो ने उस की दाढ़ी का हुस्नो जमाल देखा तो उसे अपना अमीर बना कर गिर्जे के तमाम उमूर उस की निगरानी में दे दिये। गिर्जा घर के तमाम अम्वाल व ख़ज़ानों की चाबियां पा कर वोह अपनी मुराद को पहुंच चुका था। उस ने क़ौम के शुरफ़ा व सरदारों के साथ मेहरबानी व नर्मी का रविय्या इख़्तियार किया तो सब लोगों के दिलों में उस की क़द्रो मन्ज़िलत बढ़ गई। अब इस रियाकार व बनावटी राहिब ने दूसरे राहिबों को ह़क़ीर समझना शुरूअ़ कर दिया। उन की ख़ूराक में कमी कर दी और उन के मर्तबों को भी घटा दिया। फिर एक आ़बिद व शरीफ़ुन्नफ़्स

शख़्स को गिर्जा घर के लिये आने वाली आमदनी पर निगरान मुक़र्रर किया और ख़ुद ऐशो इशरत में मश्गूल हो गया। अच्छा और नर्म व मुलायम लिबास पहनना और शराब पी कर औ़रतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होना उस का मा'मूल बन गया। जब राहिबों ने इस बनावटी राहिब की बद आ'मालियां देखीं तो उन में से एक राबिह ने कहा : "येह फ़ासिक़ व कमीना शख़्स तुम को ज़लील कर रहा है और तुम्हारी वजह से येह फ़िस्क़ पर डटा हुवा है, तुम अपने इस मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो !" राहिबों ने कहा : "हम ने दुन्यवी मालो अस्बाब छोड़ कर अपने आप को इ़बादत के लिये फ़ारिग़ कर लिया है, अब इस बनावटी राहिब की वजह से हम ग़म व परेशानी और उमूरे दुन्या में फंस चुके हैं।" बिग़ैर दाढ़ी वाले राहिब ने कहा : "येह सब कुछ इस लिये है कि तुम लोगों ने उस की बड़ी दाढ़ी देख कर उस के बारे में अच्छी राए क़ाइम कर ली, अब जिस ने मुत्तक़ी व परहेज़गार लोगों को छोड़ कर एक ऐसे शख़्स की पैरवी करना शुरूअ़ कर दी है जो मक्कार व फ़ासिक़ है तो उसे चाहिये कि वोह अपने ऊपर होने वाले हर ज़ुल्मो सितम को बरदाश्त करे।"

तमाम राहिब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुवे कि उस राहिब की इस्लाह़ करनी चाहिये। पस उन सब की त़रफ़ से एक राहिब नुमाइन्दा बन कर गया और उस ने बनावटी राहिब से कहा : "तू ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, तेरे तमाम करतूत तेरे राहिब साथियों को मा'लूम हो चुके हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सज़ा से डर ! बेशक कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्हें वोह आख़िरत से क़ब्ल दुन्या ही में सज़ा दे देता है।" बनावटी राहिब ने कहा : "क्या बड़े बड़े अ़ज़ीम लोगों से ग़लतियां नहीं हुईं ? मैं भी इन्सान हूं मुझ से ग़लती हो गई तो क्या हुवा ?" राहिब ने कहा : "तू बड़े बड़े बुज़ुर्गों की ग़लतियों को जानता है लेकिन उन की तौबा से वाक़िफ़ नहीं ?" रियाकार राहिब ने कहा : "उम्मीद है कि मैं भी तौबा कर लूंगा।" उस ने कहा : "कितने लोग ऐसे थे जो तौबा करने में सुस्ती करते रहे और उन्हें मौत ने आ लिया।" येह कह कर वोह चला गया और रियाकार राहिब सरकशी ही में मश्गूल रहा। फिर उस की हलाकत इस त़रह़ हुई की डाकूओं ने उस बस्ती पर ह़म्ला कर दिया। एक डाकू ने राहिब को इस ह़ालत में पाया कि वोह एक औ़रत के साथ बिस्तर पर मौजूद था। वोह उसे पकड़ कर अपने सरदार के पास ले आया। डाकूओं ने कहा : "अगर येह शख़्स राहिब न होता तो हम इसे मुआ़फ़ कर देते लेकिन अब इस के मुआ़मले में हम हुक्मे ख़ुदावन्दी को मल्ह़ूज़ रखेंगे। क्यूंकि इस ने उन औ़रतों से फ़ाइदा उठाया जो इस के लिये ह़राम थीं।" डाकूओं ने उ़-लमा से उस बदकार शख़्स का हुक्म पूछा तो उन्हों ने कहा : "इसे आग में जला दिया जाए।" चुनान्चे, उसे जलते हुवे तन्नूर में डाल दिया गया इस त़रह़ अल्लाह तआ़ला ने राहिबों को उस बदकार के शर से नजात अ़त़ा फ़रमाई और दुन्या ही में उसे आग का अ़ज़ाब दे दिया। येह उस की उस इ़बादत का सिला था जिस के ज़रीए दुन्या की रिज़ा चाही गई थी। (الامان والحفیظ)

येह ह़िकायत सुनाने के बा'द राहिब ने कहा : "मुझे तअ़ज्जुब है उन मुसीबत ज़दा इन्सानों पर जो सब्र के ज़रीए मदद ह़ासिल नहीं करते लेकिन फिर भी षवाब की उम्मीद रखते हैं। अ़नक़रीब मुसीबत ज़दा पर ऐसा वक़्त आने वाला है कि वोह ऐसी ख़्वाहिश करेगा जैसी "**नाबीना**" ने की थी। सरदारों ने कहा : "**नाबीना**" ने क्या तमन्ना की थी ?"

नाबीना की ख़्वाहिश

राहिब ने कहा : मश्हूर है कि किसी ताजिर ने एक जगह अपने सो (**100**) दीनार दबा दिये। उस के पड़ोसी ने उसे देख लिया और मौक़अ़ मिलते ही सारी रक़म निकाल कर अपने घर ले गया। ताजिर ने जब अपनी रक़म न पाई तो ख़ूब रोया और परेशान हुवा। जब बुढ़ापा आया तो उस की बीनाई चली गई और वोह शदीद मोह़ताज हो गया। जब पड़ोसी की मौत क़रीब आई तो उसे ह़िसाब का ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा, उस ने वक़्त की नज़ाकत को समझते हुवे सो दीनार उस नाबीना को दे दिये। नाबीना को सारा वाक़िआ़ मा'लूम हुवा तो वोह माल मिलने पर इतना ख़ुश हुवा कि पहले कभी इतना ख़ुश न हुवा था। उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाते हुवे कहा : "तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मुझे वोह चीज़ अ़ता फ़रमाई जिस का मैं शदीद मोह़ताज था। ऐ काश ! उस दिन मुझ से सारा माल ले लिया गया होता और आज लौटा दिया जाता क्यूंकि आज के दिन मैं इस का ज़ियादा मोह़ताज हूं।"

राहिब ने कहा : "जो शख़्स येह जानता है कि उसे एक ऐसे दिन का सामना ज़रूर करना पड़ेगा जिस में अच्छे आ'माल की त़रफ़ बहुत ज़ियादा मोह़ताजी होगी तो उसे चाहिये कि वोह आ'माले सालेह़ा का ज़ख़ीरा कर ले। मुझे सख़्त तअ़ज्जुब है उन लोगों पर जो उन बातों पर अ़मल नहीं करते जिन्हें वोह जानते हैं। गोया कि वोह इस त़रह़ हलाक होना चाहते हैं जैसे "**सैलाब वाला**" हलाक हुवा।" सरदारों ने पूछा : "वोह कैसे हलाक हुवा ?"

और वोह ग़र्क़ हो गया.....!

राहिब ने कहा : "इस का वाक़िआ़ कुछ यूं है कि एक शख़्स ने सैलाब आने की जगह अपना घर बना रखा था। जब उस से कहा गया कि "येह बहुत ख़त़रनाक जगह है यहां से हट जा।" तो उस ने कहा : "मुझे मा'लूम है कि येह जगह ख़त़रनाक है लेकिन इस की ख़ूब सूरती व शादाबी ने मुझे तअ़ज्जुब में डाल दिया है।" उस से कहा गया कि "तमाम रौनक़ें और ख़ूब सूरतियां ज़िन्दगी के साथ हैं, लिहाज़ा अपनी जान की ह़िफ़ाज़त कर, अपने आप को ख़त़रे में न डाल।" उस ने कहा : "मैं येह जगह हरगिज़ नहीं छोड़ूंगा।" फिर एक रात ह़ालते नींद में उसे सैलाब ने आ लिया और वोह ग़र्क़ हो कर मर गया। लोगों ने उस का अन्जाम देख कर इस त़रह़ कहा जिस त़रह़ ज़माने वालों ने कहा : "हम पैदा होते और मर जाते हैं और हम में से जो मर जाता है वोह वापस लौट कर नहीं आता।"

राहिब ने कहा : "अगर हम समझदारी से काम लें तो हम भी "**अफ़रौलिय्या**" वालों की त़रह़ हो जाएंगे।" सरदारों ने कहा : "**अस्ह़ाबे अफ़रौलिय्या**" कौन थे ? और उन का मुआ़मला क्या था ?

सफ़रे आख़िरत का तौशा तय्यार करो.....!

कहा : "**उसक़ौलिय्या**" के बादशाह ने एक बहुत बड़ा लश्कर "**अफ़रौलिय्या**" की त़रफ़ भेजा। वहां तक का समन्दरी सफ़र साठ (60) दिनों का था और रास्ते में कोई ऐसा मक़ाम न था जहां से खाने पीने की कोई चीज़ ह़ासिल की जाती। अब जितना सामाने खुर्दो नौश येह अपने साथ ले जाते उसी पर गुज़ारा करना पड़ता। उस लश्कर में दो काहिन भी थे। एक ने कहा : "येह लश्कर सात दिन तक "**अफ़रौलिय्या**" का मुह़ासरा कर के, मिन्जनीक़ के ज़रीए़ संगबारी करता रहेगा और आंठवें दिन उन्हें फ़त्ह़ नसीब होगी।" दूसरे काहिन ने कहा : "ऐसा नहीं है बल्कि येह वहां पर सात दिन मुह़ासरा करेगा और आंठवें दिन वापस आ जाएंगे।" लश्कर वालों ने जब उन की येह बातें सुनीं तो लश्कर के सरदार आपस में कहने लगे : "हमें वापसी का ज़ादे राह साथ ले चलना चाहिये या फ़त्ह़ की उम्मीद पर वापसी के ज़ादे राह के बिग़ैर चलना चाहिये ?" एक क़ौम ने कहा कि : "हमें उस काहिन की बात माननी चाहिये जो फ़त्ह़ की खुश ख़बरी दे रहा है, लिहाज़ा ज़ियादा ज़ादे राह ले जा कर हमें अपने आप को थकाना नहीं चाहिये।" बक़िय्या लश्कर वालों ने कहा : "हम सिर्फ़ उम्मीद पर अपने आप को हलाकत में नहीं डाल सकते बल्कि हमें वापसी का ज़ादे राह भी एह़तियात़न साथ ले चलना चाहिये।" चुनान्चे, उन्हों ने तो आने जाने का ज़ादे राह साथ ले लिया। लेकिन लश्कर के दूसरे गुरौह ने सिर्फ़ जाने ही का सामान साथ लिया। वहां पहुंच कर वोह मुसलसल सात दिन तक क़ल्ए़ का मुह़ासरा किये संग बारी करते (पथ्थर बरसाते) रहे। आठवें दिन दीवार में बहुत बड़ा शिगाफ़ हुवा तो लश्कर अन्दर दाख़िल हो गया, आगे एक और बहुत मज़बूत़ दीवार मौजूद थी। सात दिन हो चुके थे आठवां दिन शुरूअ़ था इतने में क़ासिद आया और पैग़ाम दिया कि "बादशाह फ़ौत हो गया है वापस चलो।" येह ख़बर सुन कर सब वापस हो लिये। जो लोग अपने साथ वापसी का सामान लाए थे वोह तो बख़ैरिय्यत अपने मुल्क पहुंच गए और जिन्हों ने सुस्ती करते हुवे ज़ादे राह साथ न लिया था वोह हलाक हो गए। कहा जाता है कि उन की ता'दाद सत्तर हज़ार (70,000) थी। उस वक़्त से अब तक उन की ह़िकायत बत़ौरे इ़ब्रत पेश की जाती है।

येह ह़िकायत सुनाने के बा'द राहिब ने उन तीनों सरदारों को समझाते हुवे कहा : "इन्ही लोगों की त़रह़ वोह भी हलाक हो जाता है जो आख़िरत के लिये ज़ादे राह तय्यार नहीं करता। और जो ज़ादे राह तय्यार रखता है वोह नजात पा जाता है।" सरदारों ने कहा : "आप का अन्दाज़े तब्लीग़ बहुत अच्छा है। आप की इनफ़िरादी कोशिश बहुत खूब है।" राहिब ने कहा : "कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरे वा'ज़ की मिठास सिर्फ़ तुम्हारे कानों तक मह़दूद हो और दिलों तक न पहुंची हो। सुनो ! क्या तुम नहीं जानते कि जो किताबें ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुईं और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर जो सह़ाइफ़ नाज़िल हुवे उन तमाम में येह बात मौजूद थी कि "तुम्हें उसी की जज़ा मिलेगी जो तुम ने अ़मल किये" पस तुम अपने आ'माल में नज़र करो। अपने बारे में सह़ीह़ फ़ैसला करो ! और मेरे पास से हिदायत पाने वाले

हो कर वापस लौट जाओ।'' राहिब की येह ह़कीमाना बातें सुन कर वोह तीनों सरदार वापस चले आए। फिर बाहम मश्वरे से एक को मुल्क का ह़ाकिम बनाया और सब उस पर राज़ी भी हो गए।

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मक़्बूल बन्दों पर रह़मत की ख़ूब बरसात फ़रमाए और हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस इ़ब्रत आमोज़ ह़िकायत से हमें येह दर्स मिला कि इन्सान को हमेशा अपने अन्जाम पर नज़र रखनी चाहिये, आने वाले वक़्त से पहले तय्यारी कर लेनी चाहिये। समझदार वोही है जो मौत से पहले मौत की तय्यारी कर ले और इस फ़ानी ज़िन्दगी में रह कर ऐसे आ'माल करे कि जिन की बदौलत दाइमी ज़िन्दगी में ख़ूब ने'मतें मिलें। त़वील उम्मीदों के धोके में आ कर आ'माले सालेह़ा को मुअख़्ख़र या तर्क कर देना हरगिज़ अ़क़्ल मन्दों का शैवा नहीं। इन्सान को चाहिये कि आज का काम कल पर न छोड़े, नेकी के काम में हरगिज़ सुस्ती न करे और अपने आप को आख़िरत की बेहतरी के लिये मसरूफ़ रखे। इन तमाम बातों पर अ़मल पैरा होने के लिये इन्सान को ऐसे माह़ोल की ज़रूरत है जहां फ़िक्रे आख़िरत और आ'माले सालिह़ा की ख़ूब तरग़ीब दिलाई जाती हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज के इस पुर फ़ितन दौर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** हमें ऐसा पाकीज़ा और सुन्नतों भरा माह़ोल फ़राहम करती है कि इस में आ कर दिल ख़ुद ब ख़ुद आ'माले सालिह़ा की त़रफ़ राग़िब होता और गुनाहों से नफ़रत करने लगता है। इस पाकीज़ा माह़ोल में ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की अ़ज़ीम ने'मतें नसीब होती हैं। अ़मल का जज़्बा बढ़ता और बद अ़मली से नफ़रत पैदा हो जाती है। हमें चाहिये कि हम भी इस मदनी माह़ोल को अपना लें और **''दा'वते इस्लामी''** के ज़ेरे एहतिमाम सफ़र करने वाले **''मदनी क़ाफ़िलों''** में ख़ूब ख़ूब सफ़र करें, **इजतिमाआ़त** में शरीक हों और **''मदनी इन्आ़मात''** पर अ़मल पैरा हों। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का साया हमारे सरों पर तादेर क़ाइम रखे और दा'वते इस्लामी को दिन दुगनी और रात चौगुनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।)

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में — ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो ! (आमीन)

(آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी इस कोशिश को क़बूल व मन्ज़ूर फ़रमाए। और इस किताब को हमारे लिये ज़रीअ़ए नजात बनाए ! अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हम सब मुसलमानों का ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए। (آمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ علیہ وسلم)

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ،وَصَلَوَاتُهٗ وَسَلَامُهٗ عَلٰى
اَشْرَفِ الْمُرْسَلِيْنَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

مآخذ ومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	قرآنِ مجید	کلامِ باری تعالیٰ	ضیاء القرآن لاہور
2	کنزالایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمدرضاخان علیہ رحمۃ الرحمٰن المتوفّٰی ۱۳۴۰ ھ	ضیاء القرآن لاہور
3	صحیح البخاری	امام محمدبن اسماعیل البخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ المتوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالسلام ریاض
4	سنن ابی داؤد	امام ابوداؤدسلیمان بن اشعث رحمۃ اللّٰہ علیہ المتوفّٰی ۲۷۵ھ	دارالسلام ریاض
5	جامع الترمذی	امام محمدبن عیسٰی الترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ المتوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالسلام ریاض
6	المسند	امام احمدبن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ المتوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت
7	السنن الکبریٰ	امام احمدبن شعیب النسائی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ المتوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
8	الجامع الصغیر	امام جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ المتوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
9	المصنف	امام عبداللّٰہ بن محمدبن ابی شیبۃ رحمۃ اللّٰہ علیہ المتوفّٰی ۲۳۵ھ	دارالفکربیروت
10	کنزالعمال	علاء الدین علی المتقی الھندی رحمۃ اللّٰہ علیہ المتوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
11	موسوعۃ لابن أبی الدنیا	امام ابو بکرعبداللّٰہ بن محمدالقرشی رحمۃ اللّٰہ علیہ المتوفّٰی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ بیروت
12	المجالسۃ وجواھر العلم	ابو بکراحمدبن مروان الدینوری المالکی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ المتوفّٰی ۳۳۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
13	اللآلی المصنوعۃ	امام جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہ المتوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت

क़ब्र की डांट

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जब मय्यित को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उस से कहती है : ''ऐ इन्सान ! तेरी हलाकत हो, तुझे मेरे बारे में किस ने धोके में डाला ? क्या तुझे मा'लूम न था, कि मैं फ़ित्नों का घर, अन्धेरी कोठड़ी, तन्हाई और वह़शत की जगह और कीड़ों मकोड़ों का ठिकाना हूं। तुझे मेरे बारे में किस चीज़ ने धोके में डाला कि तू मेरे ऊपर अकड़ अकड़ कर चलता था, अगर मुर्दा नेक हो तो उस की त़रफ़ से कोई जवाब देने वाला क़ब्र को जवाब देता है और कहता है : ''क्या तुझे मा'लूम नहीं कि येह शख़्स नेकी का हुक्म देता और बुराई से मन्अ़ करता था।'' तो क़ब्र कहती है : ''अगर येह बात है तो मैं इस पर सर सब्ज़ व शादाब हो जाती हूं।'' और उस का जिस्म नूर में बदल जाएगा और रूह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ परवाज़ कर जाएगी।''

(المعجم الکبیر، الحدیث ۹۴۲، ج۲۲، ص۳۷۷۔المعجم الاوسط، الحدیث ۸۶۱۳، ج۶، ص۲۳۲)

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إن شاء الله عزوجل इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of Dawateislami

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

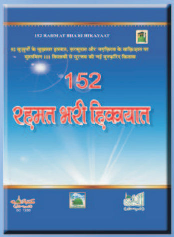

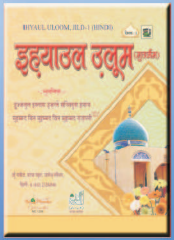

ISBN 978-969-631-095-2
0101071

MC 1286

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net